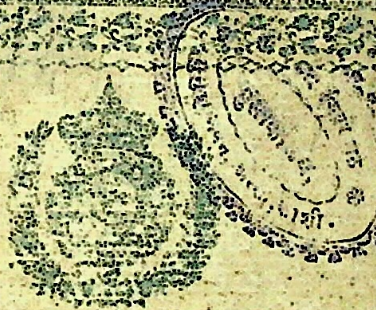


॥ श्री[illegible] नमः ॥

अथ श्रीस्वामी महर्षि दादूजी के सुशिष्य [illegible]

महाराज श्री स्वामी

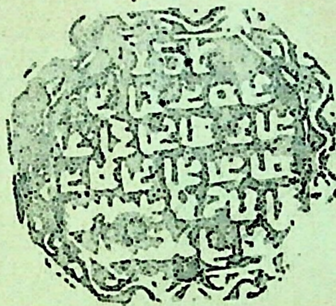
❀ रज्जबजी की वाणी ❀

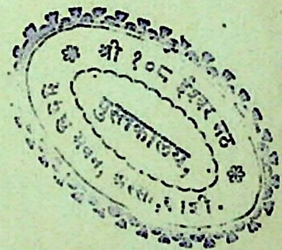
इस अलभ्य और दुष्प्राप्य ग्रंथ को परिश्रम करके शेखावाटी प्रांत के अन्तर्गत [इलाका खेतडी] ग्राम चूड़ी निवासी श्रीमान् शिवनारायणजी सूरजमल नेमाणी ने निज व्यय से संसार के उपकारार्थ छपवाकर प्रकाशित किया.

बम्बई में

पं० श्रीधर शिवलालजी ने अपने 'ज्ञानसागर' प्रेस घर नं० ३६८ [illegible] पं० [illegible] के प्रबंध से छपवाकर प्रकाशित किया.

प्रथमावृत्तिः सम्वत् १९७५ कापी १००० ।




श्री १०८
पुस्तकालय









॥ श्रीदयालवे नमः ॥

अथ श्रीस्वामी महर्षि दादूजी के सुयोग्य शिष्य.

महाराज श्री स्वामी

❀ रज्जबजी की बाणी ❀

इस अलभ्य और दुष्प्राप्य ग्रंथ को परिश्रम कर्ता शेखावाटी प्रांतस्थ के उपदेशानुसार [इलाका खेतडी] ग्राम चूड़ी निवासी श्रीमान् शिवनारायणजी सुरजमल नेमाणी ने निज व्यय से संसार के उपकारार्थ छपवाकर प्रकाशित किया.

बम्बई में

पं० श्रीधर शिवलालजी ने अपने 'ज्ञानसागर' प्रेस घर नं० ३६८ मलमलेया टंक रोड पो० माटूंगा में पं० जनकप्रसादजी वाजपेयी के प्रबंध से छापकर प्रकाशित किया

प्रथमावृत्तिः सम्वत् १९७५ कापी १०००

॥ ओ३म् ॥

॥ भूमिका ॥

उस सच्चिदानन्द आनन्द कन्द मुकुन्द श्रीगोविंद को सहस्रशः धन्यवाद है जिसकी असीम कृपा कटाक्ष से आपके सुकोमल कर कमलोंमें योगीराज महर्षि श्रीदादूरामजीके सुयोग्य शिष्य श्रीस्वामी रज्जबजी महाराजकी वाणी सादर समर्पित है एक समय वहथा कि जबमुद्रण यंत्रालय भारतवर्षमें नहीं थे और इस अभाव के कारण बहुत से हस्तलिखित उत्तम ग्रन्थ लुप्तप्रायं होगये और जिनके पास बचरहे उनको वे नष्ट होजानेके डरसे किसीको दिखातेभी नहीं थे इसी तरह अनेक महानुभावोंके रचित ग्रन्थ भूमंडल से तिरोहित होगये और जिन उदार महाशयोंने अपने उत्तम ग्रन्थ छपवादिये या छपनेको दे दिये वे ग्रन्थ अजर अमर होगये । इसी तरह यह पुस्तकभी अत्यन्त जीर्ण शीर्ण पत्रोंपर लिखी हुई थी और यदि इस समय यह न छापी जाती तो यहभी संसारसे लुप्त होजाती परंतु पूर्ण ब्रह्म परमात्माकी कृपासे, ऐसा न हुआ । योगीराज महर्षि श्रीस्वामी दादूरामजी बडेही उच्च कोटिके आदर्श महात्मा होगये हैं इस बातको सभी सज्जन जानते हैं उनकी प्रशंसा करना सूर्यको दीपक दिखाना हैं उनकी बनाई हुई वाणी श्री दादूजीकी वाणीके नामसे प्रसिद्ध हैं और यह ग्रन्थ मुंबईके ज्ञानसागर प्रेसमें छपभी गया है और अजमेरमेंभी छपगया है। योगीराज महात्मा श्रीस्वामी रज्जबजी इन्हीं महर्षि श्रीदादूरामजीके शिष्य थे इनकी बनाई हुई अमृतमयी वाणी श्रीरज्जबजीकी वाणीके नामसे प्रसिद्ध है प्रायः यहपुस्तक रियासत (जयपुर) किंच मारवाड प्रान्तमेंही दृष्टि

गोचर होता था परंतु न छपनेके कारण वहींके कतिपय साधु महात्माओंको मालूम थी और संसारमें इसका विकाश नहीं होने पाया था । जयपुर प्रांतस्थ शीकर निवासी महात्मा श्रीरामकरणजी पंडितजीके हृदयमें यह उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई कि ऐसे आदर्श महात्माकी वाणी छपजाय और संसारी जीवोंको इससे लाभ पहुंचे तो वहुतही अच्छा हो इन महात्माकी इच्छानुसार परिश्रमकर्ता शेखावाटी प्रान्तस्थ ने इसका छपवानेका उद्योग किया और परिश्रमकर्ताकी आज्ञानुसार अर्थात् परिश्रम कर्ताकी प्रेरणा से ग्राम चूडी(इलाका खेतडी)निवासी सेठ श्रीमान् शिवनाराणजी सूरजमल नेमानी ने निजव्ययसे संसारके उपकारार्थ इस उत्तम ग्रंथको छपवाकर प्रकाशित किया इसलिये आप सर्वथा धन्यवादार्ह हैं । महात्मा श्रीबलदेवदासजी विरक्त किंच महात्मा लालदासजीके पास १ हस्तलिखित पुस्तक श्रीरज्जवजीकी वाणीकी थी इन सज्जनोंने वह मूल पुस्तक देकर अपनी उदारता का परिचय दिखलाया यह दोनोंहीं सज्जन धन्यवादार्ह हैं-परंतु वह पुस्तक अत्यन्त प्राचीन और बडी जीर्णावस्थामें थी और उसके उत्तरभी मारवाडी लिपिके अनुसार पुरानी प्रथाकी थी। यंत्रालयके कर्मचारी इसको स्पष्टतया पढनहीं सकते थे इस लिये बबाई निवासी पं०हीरालालजीने परिश्रम करके मूल पुस्तक से दूसरी कापी उतारकरदी इसवास्ते लेख परिश्रम के लिये आप धन्यवादार्ह हैं-परन्तु कापी बहुत शीघ्रतासे लिखी गई थी इसलिये कातिपय स्थलोंमें भ्रमजनक अक्षर बहुत थे। इस पुस्तकके उत्तरभागमें श्रीस्वामी रज्जबजी कृत ८९ कवित्तभी छपे हैं इनमें कतिपय स्थलोंमें प्राचीन लिपिके कारण अपरिचित शब्दोंका समावेश होनेके कारण महात्मा श्रीरामदासजी

मंडलीश्वर दूबलु धनिया ने संक्षिप्त टिप्पणी करदी है इस से अर्थ समझने में कठिनाई नहीं पडती इसलिये आपको मैं हार्दिक धन्यवाद देताहूं और आशा है कि आप द्वितीयावृति मैं पूर्णसहायता प्रदान करके कृतार्थ करेंगे कारण कि आप इन दोनों ग्रन्थों का अर्थ जानने में प्र० श्रे०में गिने जाते हैं। श्रीरज्जबजीके कवित मयटिपणीके लेख परिश्रम के वास्ते लोशल निवासी विशालसिंहजी वारेटको धन्यवाद देताहूं। इसकी दूसरी कापी नकल करनेमैं सन्त श्रीकेशवदासजी कालाडेरा जयपुर निवासी ने बहुत परिश्रम कियाथा इसलिये मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देताहूं। परंतु मसल मशहूर है कि " श्रेयांसि बहुविघ्नानि " मुद्रणालय में यह पुस्तक छपनेको देने के थोडेही दिन पीछे बम्बई नगरमें श्लेष्मज्वर अर्थात [युद्धज्वर] का वडाही प्रचंड प्रकोप हुआ यंत्रालयके कर्मचारी काम छोड छोड कर प्राण बचानेको भाग निकले उस समय इसका यथावत् काम चलना कठिन होगया, कुछ कापीलिपि दोष कुछ मारवाडी भाषा से कर्मचारियोंकी अनभिज्ञता कुछ संशोधन में अनव धानता आदि कितनेही कारणों से इसके कुछ फार्मोंमें अशुद्धियोंका रहजाना बहुत संभव हुआ है। यह दशा देखकर भिवानी नगरस्थ श्री १०८ रामकृष्णदासजीवैद्य के शिष्य पं० कृपारामजीसाधु वैद्य दादूपंथी को इसका संशोधनका भार सोंपा गया उक्त पंडितजी ने इस कामके निमित्त अपना बहुमूल्य समय प्रदान किया और बम्बई प्रवासके अनेक कष्टोंको सहकर इस कार्यको पूर्ण किया इसलिये मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देताहूं। जिस समय आप बम्बईमें गए तबतक अंग५२बावन साखी२०००दो हजारके लगभग छपगई थी इतना विषय आपकी दृष्टि गोचर नहीं हुआ है

अवशिष्ट ८००० आठ हजार ग्रंथ आपके आने के बाद छपा है उसका संशोधन आपने किया है परंतु इतना परिश्रम उठाने परभी ऐसा प्रतीत होता है कि इस में कुछ अशुद्धियां रहगई हैं इसका कारण जिस मूल कापीसे पुस्तक छापी गईहै उसके अक्षर अत्यन्त भ्रमजनक और लिपिदोष युक्त थे पहचानना अति कठिन था। इस पुस्तकमें जो अशुद्धियां रहगई हैं उनके वास्ते क्षमा प्रार्थना है परंतु सज्जन क्षमाही नहीं करें किन्तु अशुद्धियां बतलाने और पूर्ति करनेके लिये भी कृपा करेंगे और यदि पूर्णब्रह्म परमात्मा ने चाहा तो द्वितीयावृतिमें सब त्रुटियों के दूरकरने का यथासाध्य प्रयत्न किया जायगा।श्रीदयालु समाज साधुगण से हमारी प्रार्थनाहै कि जो सज्जन इस वाणीमें अपनी अच्छी योग्यता रखते हों वह महाशय हमको इसकीद्वितीयावृतिमें सहायताकरके कृतार्थ करेंगे।यहकार्य अशेष दयालु समाजका है।श्रीरज्जबजीकी बाणी को पढकर प्रायः हमारे नव शिक्षित युवक कह उठेंगे कि इस ग्रंथ में फारसी उर्दूके शब्द अधिकाधिकमिश्रित हैं इसलिये उन से यह निवेदन है कि जैसे आजकल अंग्रेजी भाषाका प्राबल्य है और हिन्दी भाषाके साथ अंग्रेजीके शब्दोंका मिश्रण किये बिना कामही नहीं चलता है इसी तरह उस समय भी जब मुसलमानी राज्यका प्राबल्य था तब उर्दू फारसी के शब्द प्रचुरता से काम में लाये जाते थे यही कारण है कि श्रीरज्जबजीकी बाणी में उर्दू फारसी शब्दोंका व्यवहार हुआ है इस मनोहर ग्रंथ की रचना सम्वत् १६२५से वि० सं०१६५० के भीतर ही हुई है।श्रीरज्जबजी का ग्रंथावलोकन से विदित होता है कि श्रीरज्जबजी संस्कृतके पूर्ण विद्वान् थे परंतु लिपि दोष के कारण आज ऐसे उत्तमकविके ग्रंथमें बहुतसी अशुद्धियां पाई जाती हैं इस लिये बहुत से

महानुभावोंका यह आग्रह हैं कि इसकी द्वितीयावृतिमें मात्रा और छन्दोभंगादि दोषोंका निराकरण कर दिया जाय और इसकी क्लिष्टताको दूर करनेके लिये इसकी सुललित टीकाभी कराकर प्रत्येक साखी शब्द व दोहा चौपाई अरिल कवित अष्टकोंके साथ छापदी जाय जिससे कम पढे लिखे हुए सज्जनभी इसका आशय अच्छीरीति से हृदयंगम कर सकें। अतः उनकी इच्छा पूर्ण करनेके लिये इसकी द्वितीयावृत्ति उक्त दोषोंको दूर करते हुए और टीका सहित शीघ्र ही छापनेका दृढ संकल्प किया गया हैं आशा है कि ईश्वर हमारा यह कार्य निर्बिघ्न समाप्त करेंगे। परंतु जिन सज्जनोंमें श्रद्धा और भक्ति है वह काव्यके ज्ञानसे रहित हैं और जो काव्यके ज्ञानसे युक्त हैं वे श्रद्धा और भक्ति से रहित हैं, परन्तु जयपुर राज्यान्तर्गत मलसीसरके सरदार सर्वगुण सम्पन्न और जितेन्द्रिय श्रीमान् ठाकर साहाब भूरसिंहजी में उक्त दोनोंही गुण विद्यमान् हैं अर्थात ठाकर साहाब श्रद्धावान् और भक्तिमान् हैं तथा काव्यके ज्ञानसे सम्पन्न हैं इसीलिये हमको पूर्ण आशा है कि उक्त ठाकुर साहाब से हमको इस पुस्तककी द्वितीयावृतिमें मात्रा और छन्दो भंगादि दोषोंको दूर करनेकी हरप्रकार से पूर्णतया सहायता मिलेगी आशा है कि उक्त ठाकुर साहाब इस तरफ ध्यान देकर अवश्य कृतार्थ करेंगे। आजकल ऐसी उपदेश। पूर्ण पुस्तकोंका प्रकाशित होना अत्यन्त आवश्यक जान और नागरी भाषा की भी ऐसी चेष्टा से उन्नति समझकर आपलोंगोंकी सेवामें समर्पित कीजाती है मैं नहीं कहसकता कि आपलोगोंका मनोरंजन यह पद्य कर सकेंगे या नहीं। यह कोई उपन्यास नहीं हैं जिस में कपोल कल्पित कल्पनाओं की भरमार हो—न यह इतिहास है जिसमें पवित्र भारत के लाल किसी सुयोग्य वीरका वर्णन हो और यह नाटकभी नहीं है जिसमें आपको बढिया गाने और तुकवन्दीका चासनी मिले, किन्तु केवल श्रीगुरुभक्ति, ईश्वर

भक्ति, नीति, सदुपदेश आत्मज्ञानका भंडार है । मैं जहांतक सोचताहूं यह उन भारत सुपुत्रों के लिये,जो आधी और व्याधीसे पीडित हैं सुयश, शान्ति, और सुखके कारण होंगे ।

किमधिकम् ।

दुख दरिया संसारमें । देवतरू यहपद्य ॥ पढैं सुनें ते नर लहैं। सुयश शान्ति सुखसद्य । विनीत परिश्रम कर्ता

[शेखावाटी प्रांतस्थः]

विशेष निवेदन यह पुस्तकें साधु महात्मा तथा सज्जन गृहस्थोंको बिना किसी प्रकारका मूल्य लिये दी जायेंगी ।

पुस्तक मिलनेका पता

श्रीदादूओंका मन्दिर, श्रीदादू वैश्यसमाज

मु० नारनोल, रियासत (पटियाला)

विशेष प्रार्थना—इस पुस्तक की द्वितीयावृत्ति शीघ्रही छपने वाली है द्वितीयावृति मूल्य लेकर दी जायगी और इसके विक्रय से जो द्रव्य संचित होगा वह द्रव्य नारनोल निवासी दादूओंकी इच्छानुसार हरिद्वार कनखल (जि० सहारनपुर) की श्रीदयालु पाठशालामें अथवा निराना फलेराजंकशन के पास के मेले में सन्त सेवामें खर्च किया जायगा । द्वितीयावृति भी आपलोगों को पूर्वोक्त पतेपर मिलेगी छपते ही सूचना दे दी जायगी ।

श्रीमतां कृपाकांक्षी—

विनीत परिश्रम कर्ता (शेखावाटी प्रांतस्थः)

परिश्रम कर्ताकी आज्ञानुसार-आपका दासानुदास—लेखक

पं० कृपारामः साधुः (भिवानी नगरस्थः)

॥ श्रीदयालवेनमः ॥

❀ रज्जबजीकी बाणी लिख्यते ❀

प्रथम स्तुति का अंग।

दादू नमो नमो निरंजनं। नमस्कार गुरु देवतहैं॥ वंदनं सर्व साधवा। प्रणामं पारंगत हैं॥ १॥ सिजदा पूरे पीरकूं। गुरु ज्ञातहि डंडौत॥ रज्जब भय भगवंतकै। सर्व आत्महु नौत॥ २॥ गुरु अक्षर धर साध कवि। सबनि करूं अस्तुति॥ रज्जबकी चक चूक परि। क्षमा करौ हैं सूति॥ ३॥ शरीर शब्दकी येक गति। त्रिविध भांति तनहोय॥ भलेबुरे विचिषय बयन। दोष न दीज्यो कोय॥ ४॥॥

भेटका अंग।

लावि लहा किनहुं नहीं। दीरघ दांतिन कीन॥ रज्जब राम उमंगि करि। सो दादूको दीन॥ १॥ साईं लग सेवा रची। टरयान अपनी टेक॥ तौ दादू सम नहीं दूसरा। दीरघ दास सु येक॥ २॥ दादू दूजा ना गह्या। निवह्या येकहि ठाठ॥ जिन रज्जब लागा नहीं। कंचन गिरकूं काठ॥ ३॥ करामाति कर ना गही। सिद्धि न सूंघी साखि॥ रज्जब रिधि रूठा रह्या। दादू दिलसो अगाधि॥४॥ दादू शूर अजीत गढ। पूरा प्राण प्रचंड॥ रज्जब गुण जैजै करै। हारया सब ब्रह्मंड॥ ५॥ सकल नाग नर निग्रहे। स्वांग्यू शब्द सुनाय॥ रज्जब दादू शेष गति। सु अहि विधि गया न जाय॥ ६॥ दादू दरिया रामजल। सकल संत जन मीन॥ सुख सागर में सब सुखी। जन रज्जब जो लीन॥

॥ ७ ॥ गुरु दादू स्रु कबीर की । काया बही कपूर ॥ रज्जब रीझ्या देखिकर ॥ सरगुण निरगुण नूर ॥ ८ ॥ काया कपूरही लेगये । प्राणीपर मल अंग ॥ रज्जब मिलते देखि यहि । सहज शून्य के अंग ॥ ९ ॥

॥ गुरुदेव को अंग ॥

रज्जब रहियं राममें । गुरु दादू के परसाद ॥ नातर जाता देख तू । जनम अमोलक बादि ॥ १ ॥ दादू दीन दयाल गुरु । सो मेरे सिर मौर ॥ जन रज्जब उनकी दया । पाई निह्चल ठौर ॥ २ ॥ जन रज्जब जुग जुग सुखी । गुरु दादू की हाति ॥ आप समागम कर लिए । वही निरंजन जाति ॥ ३ ॥ गुरु दादू सुं गम बहि । समझ्या सिरजनहार ॥ रज्जब राते राम सूं । छूटे विषय विकार ॥ ४ ॥ गुरु दादू की दृष्टि सूं । देख्या दीरघ राम । रज्जब समझे साध सब । सरया सु आतम काम ॥ ५ ॥ जन रज्जब सुकृत सबै । गुरु दादू का उपकार ॥ मनसा वाचा कर्मना । तामें फेर न सार ॥ ६ ॥ रज्जब सिख दादू गुरू । दिया दीरघ ज्ञान ॥ तन मन आतम ब्रह्मका । समझ्या सब अस्थान ॥ ७ ॥ रज्जबकूं अज्जब मिल्या । गुरु दादू परसिद्ध ॥ व्योरन माया ब्रह्मकी । सकल बताई विधि ॥ ८ ॥ रज्जब रजा खुदायकी । पाया दादू पीर ॥ कुल मंजिल महरम किया । दिल नाहीं दिलगीर ॥ ९ ॥ रज्जब रजमा पाइया । गुरु दादू दरबार ॥ धरै अधर का सुख लह्या । सनमुख सिरजन हार ॥ १० ॥ रज्जब कूं अज्जब मिल्या । गुरु दादू दातार ॥ दुःख दरिद्र तबका गया । सुख संपति सु अपार ॥ ॥ ११ देख्यो पारस परस तूं । लोहे लाभ सु लीन ॥ रज्जब गुरु दादू मिलत । सो गति हमसों कीन ॥ १२ ॥ तलब तसली है

तालिबां। दादूकी दरगाह ॥ रज्जब रजमां पाइये । हाफू कुली गुनाह ॥ १३ ॥ गुरु दादू देखत कटे । जीवके कोटि जंजीर ॥ जन रज्जब मुकते किये । पाया पूरा पीर ॥ १४ ॥ गुरु दादूका ज्ञान सुनि । छूटें सकल विकार ॥ जन रज्जब दूतर तिरहिं । देखै हरि दीदार ॥ १५ ॥ तन त्रिभुवन तम पूरि था । आतम अंध विशेषि ॥ तहां रज्जब सूझ्या सकल । दादू दिनकर देखि ॥१६॥ फाटे परवत पापके । गुरु दादूकी हांक ॥ रज्जब निकस्या राह उस । प्राण मुकत बेबाक ॥ १७ ॥ हरि सिद्धि हीरा भई । बज्र न बेधा जाय ॥ तहाँ गुरु गैला किया । तब सिख सूत समाय ॥ दादू दोसत जीवका । जन रज्जब जगमाँहि ॥ के जिन सिरजे सो सही । तीजा कोई नाँहिं ॥ १९॥ जन रज्जब जगदीश लग । दादू श्रीगुरुदेव ॥ मनसा वाचा कर्मना । तब लग माझी सेव ॥ ॥ २० ॥ गुरु दादूकी दस्त में । जन रज्जब का जान ॥ ज्यों राखैं त्यों रहेंगे । सिदक दिया सु बिहान ॥ २१ ॥ आंदि अंत मधि ह्वै गये । सिद्ध साधक सिरताज ॥ जन रज्जब के जीवकी । गुरु दादू कूं लाज ॥ २२ ॥ दादू के दीदारमें । रज्जब मस्त मुरीद ॥ खिल खाना कुरबानकरि । मुखनै किया खरीद ॥ २३ ॥ गुरु दादू का ज्ञान गहि । रज्जब किया गौन ॥ तन मन इंद्री अरि दलन । मुँहडै आवै कौन ॥ २४ ॥ गुरु दादू का हाथ सिर । हृदय त्रिभुवन नाथ॥ रज्जब डरिये कौनसों । मिलिया साईं साथ ॥ २५ ॥ गुरु दादू की गति गहैं । तासिर श्रीमोटे भाग ॥ जन रज्जब युग युग सुखी । पावै परम सुहाग ॥ २६ ॥ शब्द सुरति गुरु सीख है । मिलैं श्रवण अस्थान ॥ भाव भेट परिदया दते । रज्जब देले जान ॥ २७ ॥ सबसे दे सबसे लिया । सिख सतगुरु

कनें आय ॥ रज्जब महमद मिलापकी । महिमा कही न जाय ॥ ॥ २८ ॥ सतगुरु की सुनि सीखकूं । उपज्या यही बिचार ॥ रज्जब रचे सु रामसूं विरचे। यूंहिं संसार॥२९॥मन समुद्र गुरु कमठऽहै । किया सु महणा रंभ ॥ रज बोते बहुत सुग । अचल न आतम अंभ ३० ॥ गुरु बिन गम्य न पाइये । पिंड प्राण पर वेश ॥ रज्जब गुरु गोविंद बिन । कौन दिखावै देश ॥ १ ॥ गुरु बिन गम्य न पाइये । समझ न उपजै आय ॥ रज्जब पंथी पंथ बिन । कौन दिसावर जाय ॥ ३२ ॥ ब्रह्माण्ड पिंडकी येक गति । पावै खोजी प्रान ॥ उभय ठौर सब अंश है । समझावै गुरु ज्ञान ॥ ॥ ३३ ॥ विविधि भांति बूंटी विथा। वैद्य सु जाणे भेव ॥ त्यूं आसंख्या अनंत विधि । समझावै गुरु देव ॥३४॥ रज्जब अगनि अनंत है । येक आतमा माँहि ॥ सतगुरु शीतल सब विधि । बहु बहनी बुझि जाँहि ॥ ३५ ॥ सतगुरु बिन संदेह कूं । रज्जब भाने कौन ॥ सकल लोक फिरि देखिया । निरखे तीन्यूं भौन ॥ ३६ ॥ गुरु दिखावै शबद में । रमिता रामति और । देखन कूं दरपन इहै । जन रज्जब निज ठौर ॥ ३७ ॥ सतगुरु वा इक बीज है । प्राण पै हम में बोय ॥ रज्जब राखो जतन करि । मन बाँछित फल होय ॥ ३८ ॥ जो प्राणी रुचिसों गहै । उर अंतर गुरु बैन ॥ जन रज्जब युग युग सुखी । सदा सु पावै चैन ॥ ३९ ॥ सतगुरु शब्द अनंत दत । युग युग काटैं करम ॥ जन रज्जब उस पुण्य परि । और नहीं सैं धरम ॥ ४० ॥ सतगुरु के शब्दौं सुने । बहुत होय उपकार ॥ जन रज्जब जगपति मिलै । छूटै सकल विकार ॥४१॥ सुख दाता दुःख भंजिता । जन रज्जब गुरु साधु ॥ शब्द माँहि साँई मिलै दीरघ दत अगाध ॥ ४२ ॥ जेते जीव सुकृती करैं ।

यहि सारै संसार ॥ तेते रज्जब ज्ञान सुनि। साधूके उपकार ॥४३॥ कबीर नाम देव कहि गये। प्रेम पुण्य उपकार ॥ जन रज्जब जे उर धरै। सब दोहे संसार ॥ ४४ ॥ मात पिता का दानले। दिया सबनिका भंग ॥ जन रज्जब जीव में जल्या। ज्ञुग ज्ञुग गुरुदत संग ॥ ४५ ॥ गुरुतरुवर अंग डाल वहु। पत्र बनै फल राम ॥ रज्जब छाया में सुखी। चाख्यूं सरै सु काम ॥ ४६ ॥ रज्जब नर नारी सकल चकवा चकवी जोड ॥ गुरु बैन बिच रैनमें। किया दुहूं घर फोड ॥४७॥ गोविंद गिरा सूरज किरन। गुरु दरपन अति तेज ॥ जन रज्जब सुरता बनी। लगीं तिहाइत तेज ॥ ४८ ॥ गुरु दरजी सूई शबद। डोरा डोरी सोय ॥ रज्जब आतम रामसों। सतगुरु सींवै कोय ॥ ४९ ॥ रज्जब आतम राम बिच। गुरु ज्ञाता सु दलाल ॥ ज्यों चकवा चकवी मिलै सूरज काटै साल ॥ ५० ॥ सतगुरु मेले सूर ज्यूं। आतम बोले गालि ॥ जन रज्जब जल व्है गये। सके न आपौ टालि ॥५१॥ सतगुरु सूर सुभाय। शबद सलिल रसना रसानि ॥ जनकन उदै उपाय। जन रज्जब उनकी धसानि॥५२॥जन रज्जव गुरुकी दया। दृष्टि परापति होय ॥ प्रकट गुपत पिछानिये। जिसहि न दीखै कोय ॥ ५३ ॥ मर जीवै कीम्यंत्रही। मोती आवै हाथ ॥ त्यों रज्जब गुरु की दया। मिलै सु अवि गति नाथ ॥ ५४ ॥ गुरु गोविंदहि सेव तूं। सब अंगहुँ सिख पूरि ॥ जन रज्जब उणती उठै। दुःख दारिद्र सु दूरि ॥ ५५ ॥ सतगुरु शून्य समान है। सिख आभे तिन माँहि ॥ अकलि अंब तिनमें अमित। रज्जब टोटा नाँहि ॥ ५६ ॥ रज्जब वय बनराय विधि। मंधि मन मधुप समिसान ॥ बलिहारी गुरु मक्षिका। यहुं छानो गति छानि ॥ ५७ ॥ माया पानी दूध

मन । मिलै सु सुहृक्रम बांधि ॥ जन रज्जब बलि हंस गुरु । सोधि लही सो सांधि ॥ ५८ ॥ अरक अंब का नास करि । स्वाद रंगतै काढि ॥ रज्जब रचना हंसकी । क्षीर नीर पर बाढि ॥५९॥ संसार सारमें विभूति बहनी । मनसा अग्नि मिलाप ॥ शीतरूप व्है सतगुरु काढे । मिश्रत सुकत सुताप ॥६०॥ प्राण पिंडमें सानियां । पंच पचीसो थोलि ॥ जन रज्जब गुरु ज्ञान बलि । हरिहि मिलाये खोलि ॥ ६१ ॥ जीव रच्या जगदीशनै । बांध्या काया माँहिं ॥ जन रज्जब मुकता किया । तो गुरु सम कोइ नांहिं ॥ ६२ ॥

॥ अरिल ॥

सक्ति सुख अरसात जमहिं तन हेम ज्यों । आतम अंड सु कुंज बँधे बप वारि यूं ॥ सतगुरु सूरज तेज विरह वैशाखरे । परिहां बहने ननद पूरि मिलहिं सुत मातरे ॥ ६३ ॥

सकल करमता लाभ ये । जीव जडयंता माँहिं ॥ रज्जब गुरु कूंची बिना । कबहूँ खूटै नाँहिं ॥ ६४ ॥ त्रिगुण रहित कूंची गुरू । ताला त्रिगुण शरीर ॥ जन रज्जब जिव तौ खुलै । जै जोगी मिलै गुरु पीर ॥ ६५ ॥ सतगुरु रहिता सकल सूं । सब गुन रहिता बैन ॥ रज्जब मानी साखि सो ? उस बाइक में चैन ॥६६॥ गोपी गांठि गुण गातसुर । पोले गुरु समरथ्थ ॥ रज्जब इन बिन और का । तहाँ न पहुँचै हथ्थ ॥ ६७ ॥ रज्जब बांध्या ब्रह्मका । गुरुदेव छुडावै ॥ औरो को यहँ गम्य नहिं । कोइ बीचि न आवै ॥६८॥ रज्जब नीचे कूं ऊंचा करै । भगवंत भांडा फोडि ॥ सो मध्यम उत्तिम किये । सतगुरु आहिं सूं खोडि ॥ ६९ ॥ हमहि बावनें पारसि सतगुरु । कृत करतिह अधिकार ॥ जगदीश ईश व्है जनम्यां दूसरै । इनसूं अबकी बार ॥ ७० ॥ गुरु भांगी के कृत्य

कूं। कृत्य न पूजै कोय ॥ रज्जब रचना रामकी। येही पलटै दोय ॥ ७१ ॥ रज्जब प्राण पषान जड। गुरु मराव किये देव ॥ षट पेखो पिंड पलटै प्रथमहिं। सृष्टि सु लागी सेव ॥ ७२ ॥ षट्र दरशन सलित हुं पड्यूं। आतम लोटी होय ॥ गुरूराज मूरति गढै। सो बंदै सब कोय ॥ ७३ ॥ देही दरिया माँहि। गुरुदेव बसाई द्वारिका ॥ औरहुँ होय सुनाँहिं। नां कोई उन सारिखा ॥ ७४ ॥ बाहर बैठे बाहिर सुख। गुरु सुखि भीतर जाय ॥ रज्जब रीता क्यूं पडै। खोलि खजाना खाय ॥ ७५ ॥ गुरु मुख्य बासा पिंडमें। मन मुख्य व्है ब्रह्मंड ॥ रज्जब भीतर भै नहीं। बाहर खंड डुखंड ॥ ७६ ॥ संतगुरु काढै सकल सूं। तन मन परि लेजाय ॥ जन रज्जब राखै तहाँ। जहाँ निरंजन राय ॥ ७७ ॥ तन मन शक्ति समंद गति। निर्मल नाँव जहाज ॥ बादवान बुधि थंभ चढि। गुरु सारै सब काज ॥ ७८ ॥ गुरु दीरघ गोविंद सूं। सारै शिष्य हु सुकाज ॥ ज्यों रजव मका बडा। परि पहुँचै वैठि जहाज ॥ ७९ ॥ साईं शून्य समीर सम। बाइ बदन गुरु ठाट ॥ परिगाल खालके मारतहूं। रज्जब निपजै घाट ॥ ८० ॥ बसुधा माँहिं बीज हैं। त्यों आतम अंकूर ॥ पै गगन गुरु विरीषा। प्रकट व्है मामूर ॥ ॥ ८१ ॥ अंकुर आगनि सिख सारमें। पै घाट घड्या नाहिं जाय ॥ ब्रह्म अगनि गुरु बकर व्है। जबलग परै न आय ॥ ८२ ॥ ब्रह्मविना अगनि गुरु उर रहै। तहाँ मरै सिख सार ॥ घाट काट सुकठाहिं करि। पुनि पावक सुनि यार ॥ ८३ ॥ सबा तेग अंकुश कुश आतम। पारस है प्रभु पाय ॥ रज्जब पलटै तिनहुँ मिलि। पैगुरु सोनि बंक जाय ॥ ८४ ॥ रज्जब स्वगनै शीनी संतगुरु। सावधान शिष्य जाँहिं ॥ शून्य माँहिं चेतन है। तामें सहज समाहिं ॥ ८५ ॥

गुरु अगसत गगनहिं रहै । सिख संमदर घर बास ॥ रज्जब ऊँचहु कै मिल्यूं । सहजि गये आकाश ॥ ८६ ॥ सतगुरु सूरज ले चढै । सिख सति शलिल सुभाय॥जन रज्जब नर नीर ज्यों । नीचा आपै जाइ ॥ ८७ ॥ रज्जब तावे लोहसूं । बहुत भांति के नंग ॥ महा पुरुष पारस मिलै । कुलि कंचन के अंग ॥ ८८ ॥ गुरु चंदनि चंदन किये । वृक्ष अठारह भार ॥ डाल पान फल फूल का । रज्जब नहीं विचार ॥ ८९ ॥ गुरु पारस पलमें पर्सै । शिष कंचन कर लीन ॥ सो रज्जब महँगे सदा । कुलि कालिवां सुं छीनि ॥ ॥ ९० ॥ रज्जब निपजहिं इंदर गुरु । अद्भू आदर ऐन ॥ पहुप पत्र फल पूजिये । सुर नर पावहिं चैन ॥ ९१ ॥ तिल तालिब गुल पीर मिलि । सुहबति सौंधा होय । जन रज्जब गुजस बिना । कुजद बासन कोय ॥९२॥ देही दरिया नाव सुनाव । बुद्धि विज्ञान विचार सुभाव । रज्जब किया गुरु सब साज । इहि बिधि उतरै पारि जहाज ॥ ९३ ॥ मन समुद्र के बुद बुदे । मनहुँ मनोरथ माँहि ॥ रज्जब गुरु अगसत बिन ' कहो गगन क्यूं जाँहिं ॥ ९४ ॥ प्राण कीट गुरु भंग बिन । ब्रह्म वहम क्यूं जाय ॥ जन रज्जब जुगत बिन । विष्टा रहे समाय ॥ ९५ ॥ रज्जब सतगुरु बाहिर । स्वातिनहुं सिख आश ॥ ज्यों पक्षी पक्षहि बिना । कैसे जाय अकाश ॥ ९६ ॥ गुरु मुख्य मारग' नागहै । मन मुख्य लौं जाय ॥ रज्जब नर निबहै नहीं । बातें कहो बनाय ॥ ९७ ॥ मन मुखि मनिख भूत पशु । गुरु मुख्य ज्ञाता देव ॥ रज्जब पाया प्राणनें । पंच खानिका भेव ॥ ९८ ॥ उड गयंद दा-मणि दुबिंद । पावक दीप असंख ॥ रज्जब राम न सूझई । बिन गुरु ज्ञान सु अंखि ॥ ९९ ॥ दीपक रूपी धरानि व्है । सूरज मय

आकाश ॥ जन रज्जब गुरु ज्ञान बिन । हिरदै नहीं उजास॥१००॥ शिष्य शरीर अंधे अवलि । गुरु नैन निज ठाठ ॥ रज्जब चेले चरन चालि । इष्ट दृष्टि संगि बाँठ १०१ ॥ जै सतगुरु की दृष्टिमें । तौ दूरनि कटले पाल ॥ जम रज्जब दृष्टांतको । कूआ अंडलेनिहाल ॥१०२॥ जै मति गुरुकी दृष्टि में । तौ गंदा क्यों होय॥ जन रज्जब दृष्टांत कूं । कछ्यब अंडहि जोय ॥ १०३ ॥ कछी चखी कूंजी सुरति । अनि पंखी पँखवाय ॥ त्रिविधि अंड ज्यों गुरु शिषहुँ । रज्जब निपजै भाय ॥१०४॥ रज्जब कूंजी काल इल । तौ उत अंडे गालि जांहि ॥ त्यों सतगुरु त्यागै सुरति सौं । तो सिख निपजै नांहि ॥ १०५ ॥ चंचल नग निहचल भया । सतगुरु पकड्या बांह ॥ रज्जब रहिगया शब्द में । ज्ञान कूप मन नांह ॥ १०६ ॥ मन मनसा पांचौ प्रकृति । गुन ग्रासैं गुरु ज्ञान ॥ जन रज्जब सर-वर लहरि । सोखि लिए ज्यों भान ॥ १०७ ॥ आकिल गुरु अग सत है । सिख ससुंद मन लीन ॥ जन रज्जब गुण गण सहित । सुये मनोरथ मीन ॥ १०८ ॥ शिष्य सदा अस्थिर रहैं । सुनि सतगुरु की सीख ॥ रज्जब विषय विकार दिसि । कबहूँ भरहि न भीख ॥ १०९ ॥ जन रज्जब गुरु बयरा सुणि । बिलै होत बय बीज ॥ यथा हाक हनुमंतकी । सुनत होत नर हीज ॥ ११० ॥ मन अहि लहै मांग । रोक्या मोर महंत सुनि ॥ रज्जब रहिगये पाग । सुनि श्रवननि सुनि नाद धुनि ॥ १११॥ रज्जब रहै कपूर मन मिरच सु शब्दोमाँहिं ॥ नहीं तडां बेडी लगै । टयूंट्यो लहिये नाँहि ॥ ११२ ॥ ब्यालौ माँहि बालकहिं बांधे । विद्या कै बलि बादि ॥ गुरु प्रसाद रहै इंद्रयूं में । वाया मंत्र युगादि ॥ ११३ ॥ मन मनसा इंद्री गुण मांखि । हरि सुमरि रखा हरताल ॥ गुरुकी

दया दिनाई पाई । दुख दायूं का काल ॥ ११४ ॥ अहि इंद्रयूं के गिलन कूं । गरुड गुरु उर आनि ॥ मारुत भख ऐसे मरै । जन रज्जब पहिचान ॥ ११५ ॥ पंच तिणे गुरु मुख छये । तौ माया मेष डर नाँहिं ॥ जन रज्जब सो जलहिसा । ज्यूं निकसै परवत माहिं ॥ ११६ ॥ माया पानी पहम घट । निकसै सकल मझार ॥ रज्जब रहै सु कुंभ में । सु घड्या गुरू कै बार ॥ ११७ ॥ सतगुरु साधु शब्द तहँ । बैरागर की खानि ॥ रज्जब खोदि विवेक सूं । तहाँ नहीं कछु हानि ॥ ११८ ॥ सतगुरु पारस पोरसा । अखै अभय भण्डार ॥ रज्जब बचन बमेक धन । लहिये बारम्बार ॥ ॥ ११९ ॥ ज्यूं बहु रतन समंद में । त्यूं सतगुरु शबद घनाढ्य ॥ मर जीवा व्है माँहि मिलि । जन रज्जब बित काय ॥ १२० ॥ मन बच्छा व्है चूंखिये । सतगुरु सुरही जाय ॥ रज्जब पीवै धूंण दे । दीरघ दरवै गाय ॥ १२१ ॥ ससंवेद गुरु ज्ञान में । शिष्य शिक्षा पढिलेय ॥ जैसे दरपन देखते । दरस दिखायूं देय ॥१२२॥ गुरु घरमां है घन घणा । सिख संग्रह्या न जाय ॥ जबलग लक्ष न लेणके । जुगति न उपजै आय ॥ १२३ ॥ बहुत बार बेटे भये । परि पिता न आप॥जन पाया रज्जब जनमें नहीं।जै गुरुमिल्या न बाप॥१२४॥माता पिता असंख्य व्है । चौरासी के माँहिं ॥ रज्जब यहु सौदा घणा । प्रेसत गुरु मेला नाँहिं ॥ १२५ ॥ युवती जातग योनि बहु । चौरासी के बास ॥ जन रज्जब जिवकूं नहीं । सतगुरु चरण निवास ॥ १२६ ॥ मात पिता सुत नारि सूं । विष फल आवैं हाथ॥ जन रज्जब गुरुकी दया । सदा सु साईं साथ॥१२७॥ सतगुरु साधन साधु न छांडिये । जै तू स्याणा दास ॥ रज्जब रहट कहां रहे । जब नां बंध व्है नास ॥ १२८ ॥ सतगुरु साधु जहाज

तजि । विरचे सुरखि दास ॥ जन रज्जब हैरान है । कहां करैगा बास ॥ १२९॥ जन रज्जब गुरु साणपरि । झूंठी मनतर वारि ॥ तौ तीखी कत कीजिये । रे जीव सोच विचारि ॥ १३०॥ जै पंच राति अंतर पड्या । सिख तस्वर गुरु मेह ॥ जन रज्जब जोख्यूं नहीं । तऊ होउ सगेह ॥ १३१ ॥ रज्जब सींचे सतगुरु । हरिलग हरे सु प्राण । सदा सुखी सुमिरन करै । सूकै नहीं सुजाण ॥ ॥ १३२ ॥ शब्द सुरति परसै नहीं ।तब लगि बांधे जोय ॥ रज्जब परसी जानिये । जब बालक बिरहा होय ॥ १३३ ॥ घन बादल बिरखा भई । सींपहिं सरदा नाँहिं । रज्जब उपड्यू ऊपजै । स्वाति बूंद पडि माँहि ॥ १३४ ॥ घटा गुरु आशोजकी । स्वाति बूंद सत बैन ॥ सींप सुरति सरधा सहित । तहां मुकता मन ऐन ॥ आतम आरतवंत है । सतगुरु शब्द सुनाय ॥ रज्जब रुचि कै राचणे । कल मांह रहि जाय ॥१३६॥ सतगुरु वरषै मेघ ज्यों । रज्जब ऋतु सिर आय । शिष्य वसुधा व्है लेय जल । ऊगे अगम अघाय ॥ १३७ ॥ रज्जब रवे सुसारके। चंवक लगै सुधाय ॥ त्यों अकूरी आतमा । सतगुरु मिलै सु आय ॥ १३८ ॥ चेला तवही जानिये । चित्त रहै चितलाय ॥ रज्जब दूजा देखिये । जब लगि आवै जाय ॥ १३९ ॥ शिष्य सही सोई भया । रहै सीखमें सोय ॥ रज्जब श्रद्धा सीख सूं । दूजा कदे न होय ॥ १४० ॥ तालिब. तवही जानिये । रहै तलव उन पूरि ॥ रज्जब सो सहजै मिलै । नांहिं मुरीसद दूरि ॥ १४१ ॥ मुरीद मता तब जानिये । मन मुरीद जब होय ॥ रज्जब पावै पीरकूं । ता सम और न कोय ॥ ॥ १४२ ॥ चेला चित चाहै नहीं । सत्य स्वरूपी बोल ॥ रज्जब गुरु गाफिल भया । रूता देदे रोल ॥ १४३ ॥ गुरु बाइक सब

गोरपर। सिखिसर बना कलि हेठि ॥ रज्जब अणमल में लिये। कदे न निपजै नेठि १४४ ॥ सिखमाँ है सिख सुरति है। गुरु माँहि गुरु बैन ॥ रज्जब य राजी नहीं। तबलगि झूंठे फैन॥१४५॥ गुरु प्रसिद्ध पारस मिले। शिष्य हि खोटा जोय ॥ रज्जब पलटै लोट सब। कंकर का क्या होय ॥१४६॥ सतगुरु चंदन बावना। परस्यूं पलटै काठ ॥ रज्जब चेला चूकमें। रह्या बाँस के ठाठ ॥ १४७ ॥ सतगुरु चिंता मणि मिल्यां। शिष्यमें चिन्ता नाँहि॥ तौ रज्जब कहू क्या मिलै। जै मागैनहि मांहि ॥ १४८ ॥ कल्प वृक्ष गुरुको कह्या। जै कल्पै नहिं दास ॥ जन रज्जब रुचि प्यास विन। निश्चय जाय निराश ॥ १४९ ॥ कामधेनु गुरु क्या करै। जो शिष्य निष्कामी होय। रज्जब मिलि रीता रह्या ॥ मदभागी शिष्य जोय ॥ १५० ॥ रज्जब बरण अठारह बार विधि। सतगुरु चंदन माँहि ॥ १५१ ॥ शब्द वास मिदि सो सबै। अरण्ड वास खल माँहि ॥ १५१ ॥ बिण घडि माल रहटकी भरमें। जल आवै कछु नाँहिं ॥ त्यूं रज्जव चेतनि विन चेला। रीता संगति माँहि ॥ १५२ ॥ रज्जब नरु तरु बीतके। मिलरति सु आयान ॥ मंगल गोटा सुखि फलै। मरकट सुगदन जान ॥ १५३ ॥ काम धेनु अरु कल्प तरुवर। बिना कामना शुभग सरोवर ॥ चाहि विना चिंता मणि क्यादे। त्यूं सेवक स्वामी कना क्याले ॥१५४ अरंड बंस लागै नहीं। गुरु चंदनकी बास ॥ रीते रहे गठीले पोले। रज्जब परमल पास ॥ १५५ ॥ गुरु मिसटै गोविंद भज। शिष्य सतगुरु कूं सेय ॥ रज्जब विझुका खेतमें। चरैन चरनें देय ॥ १५६ ॥ देह दरव्या देत है। दिल दरव्या कोइ नाहिं ॥ रज्जब सतगुरु सो सही। जो दरव्या दे दिल माँहि ॥ १५७ ॥

जीव ब्रह्मसें जो गुरु बाणें । सो गुरु लेय दलाली ॥ जन रज्जबके सी गुरु दक्षिणा खिना । जै शिषकी दिल खाली ॥ १५८ ॥ परकारज किरपन करै । अपने कारज उदार ॥ जन रज्जब गुरु स्वारथी । शिष्य सबकी ये ख्वार ॥ १५९ ॥ चणें चटायुं हुं ऊचौ गुणै । खुंटयूं व्है खलि हाण ॥ यूं रज्जब शिष नीपजै । गुरु जाता पहिचान ॥ १६० गुरु गंगा ठैरे रहै । शब्द सलिल ले जाँहि ॥ जन रज्जब जगि भाव यह । मन मल मंजहि माँहि ॥ १६१ ॥ प्राण पत्र गुरुतर तजहिं । विपत्ति बातकी घात ॥ सो रज्जब नौ खण्डमें । औरन जाति कहात ॥ १६२ ॥ चीनी चूडी ठीकरी । चौथे आतम अंग ॥ रज्जब रेजे रजरले । पै पलटया रूप न रंग ॥ १६३ ॥ षट् दर्शनिके गुरुहुका । आदि गुरु गोविंद ॥ सो रज्जब समझै नहीं । तो सबै जीव मति मंद ॥ १६४ ॥ सतगुरु कूं पूजै नहीं । यद्यपि स्याणें दास ॥ रज्जब आभै बहु चढै । तौभी तलि आकाश ॥ १६५ ॥ रज्जब दीपक लारव परि । कोटि ध्वजा आनंद॥तौ गुरुकी करि आरती । जामें है गोविंद ॥ ॥ १६६ ॥ रज्जब छत्र धरे चौराँ ठरैं । जहां नृपति नर होय ॥ तौ गुरु उर गोविंद है । नख सिख आरति जोय ॥ १६८ ॥ यथा गोद प्रधान कै । बालक राज कुमार ॥ ताकौं रज्जब सब नवें । उस बालिक के प्यार ॥ १६९ ॥ रज्जब कागज पूजिये । वेद बचन विचि आथि ॥ तौ गुरुकूं किन पूजिये । जाकै गोविंद साथ ॥ १७० ॥ जड मूरति उर नाँव बिन । तापरि मंगल.चार॥ तो रज्जब करि आरती । गुरुपरि बार बार ॥ १७१ ॥ सिला सवारी राजनें । ताहि नवैं सब कोय ॥ रज्जब सिख मल गुरु गठे । सो पूजा किन होय ॥ १७२ ॥

साखी १८३
अथ गुरु शिष्य निर्गुण अंग ।

गुरु शिष्य भूखे मिले अभागी । देख्या नाहि मानहु दौ लागी ॥ संतोष नीर नाहीं सोनीरा । ज्यु तृष्ण अंगनि बुझावै बीरा ॥ १ ॥ भूखे गुरु शिख यूं मिले । ज्यो बैसाखे बांस डार ॥ जन रज्जब बोलत घसत । दोऊ जरि बरि छार ॥ २ ॥ चेला चकमक गुरु गति गार । गोष्टि ठुणका अगनिं अपार ॥ मिलत महातम जलणि सु होय । ऐसैं दई न मेली दोय ॥ ३ ॥ सतगुरु सीझ्या पोरसा । सिख साखो सिरि भाग ॥ रज्जब पूरे वीन । गहर रमै अभाग ॥ ४ ॥ रज्जब चेला चख्युहु विन । गुरु मिल्या जा चंद ॥ कूप भई पहुं कुंभनी । क्यूं पाँवहि प्रभु पद ॥ ५ ॥ गुरुके अंगहुं गुरु नहीं । शिष्यान लेंही सीख ॥ रज्जब सौदा ना बण्यां । पेट भरहु करि भीख ॥ ६ ॥ रज्जब राम न रहम करि । अक्षर लिखना भाल ॥ तार्थे सतगुरु नां मिल्या । गुरु शिष रहे कङ्गाल ॥ ७ ॥ गुरु धरि धन व्है पाइये । शिष्य सु सुक्षण लेहि ॥ उभय अभागी एकटे । कहा लेय कहा देहि ॥ ॥ ८ ॥ वैयर सो बैयर मिल्यो । कहो पूत क्यूं होय ॥ त्यों रज्जब सतगुरु बिना । सब खोजा हुंकी जोय ॥ ९ ॥ अजा कंट कुच पै नहीं । क्या पीवै दुहि ग्वाल ॥ त्यों रज्जब सिख सोमगति । गुरु भेषा बे हाल ॥ १० ॥ घर घर दोया देहि गुरु । शिखन सुलझै कोय ॥ जन रज्जब सब लालची । तामे भला न होय ॥ ॥ ११ ॥ शिष्य सारे गुरुकूं मिलै । सेवग सव खाय ॥ रज्जब दोन्यूं यूं मिले । हरिमे कौट समाय ॥ १२ ॥ कुळ चेला चीण भये । गुरुकूं योगम नाहि ॥ रज्जब पैटा पीत सूं । बूढि सुआ यूं माँहि ॥ १३ ॥

साखी १९६ अंग ४

अथ गुरु शिष्य निदान निर्णय का अंग।

सतगुरु सोधिर कीजिये। साहिब सों साचा॥ रज्जब परसे पार व्है। सुणि मनसा वाचा॥ १॥ सतगुरु सोधिर कीजिये। साहिब सों पूरा॥ रज्जब रहता राखिले। गुरु जीवन मूरा॥ २॥ सतजत सुमरन हिरदै साच। सो सतगुरु सिख व्है मनराच॥ रज्जब कहिं परखै गुरुदेव। सेवक हो कीजे ता सेव॥ ३॥ जन सतगुरु मृतक जहाज गति। शिष्य सब जीवत कामाहिं॥ जन रज्जब जोख्यूं गई। भोजल बूडैं नांहिं॥ ४॥ रज्जब काचा सूत सिख। लिपट्या सतर हाथ॥ काल कसौटी देह दिव्य। जलै न साचै साथ॥ ५॥ महापुरुष महुरै बँधे। तालिब काचै तार॥ रज्जब जलहि न जुगल सो। अंतक अगनि मझार॥ ॥ ६॥ कोयल अंडे काग गृह। सुत निपजै परसेव॥ त्यों रजब शिष्य भवकूं। प्रतिपालै गुरुदेव॥ ७॥ गुरु संतोषी शिष्य मई। शिष्यनि क्षत्रनि रीहाहि॥ जन रज्जब तिहि सभाकूं। देखि दृष्टि वान जाहि॥ ८॥ चंद उदय ज्यों चाहि विन। कँवला खिलै अयभाय॥ त्यों रज्जब गुरु शिष्य व्है। तो दोष न दीया जाय॥९॥ चंदन करि बदलै बनी। पारस पलटै लोह॥ तो रज्जब शिष्य काज करि। गुरु ज्ञाता निरमोह॥ १०॥ सतगुरु सूरज शशि हरि संदल। पुनि पेखे त्यूंह माय॥ जेहिं छाया रज्जब पंचहुं प्राण पेखिये। स्वारथ रहित सुभाय॥ ११॥ जेहिं छाया व्है छत्रपति सो हित रहत हमाय॥ त्यों रज्जब गुरु शिष्य गति। दुह में कौन कमाय॥ १२॥ लोहा शिष पारस गुरु। मिले मेळणहार॥ सुंघे सूं मँहगे भये। अण विछिन्न व्यवहार॥ १३॥ महंत मयंक

उदीप तूं। देखै सब संसार ॥ रज्जब राखूं रस परै। उनहिन आख्यूं य्यार ॥ १४ ॥ संत गुरु सलिता ज्यों बहैं । हित हरि सागर मांहि ॥ रज्जब समदी सेवगा । सहज संग मिलि जांहि ॥ ॥ १४ ॥ रज्जब काया काठ में । प्रगटी आज्ञा आगि ॥ गन शिष निकस्या धूम ज्यों । गया गनन गुरु लागि ॥ १५ ॥ ओले अंडे मोति यह । घडै सँवारै कौन ॥ त्यों रज्जब सिख नीपजै । मन वच क्रम गुरु कौन ॥ १७ ॥ रज्जब सतगुरु स्वांतिगाति । बूंदबूंद निजबारिं ॥ मन मुक्तानिपजै तहाँ । नरनिरखो मुनि-हार ॥ १८ ॥ सतगुरु चंबुक रूप है ! शिषसूई संसार ॥ अचल चलै उनकै मिल्यूं । तामे फेर न सार ॥ १९ ॥ पावकरूपा परम गुरु । लाख मई सब लोय । रज्जब दरसानि तिनहुंके । कठिनसें कोमल होय ॥२०॥ कौंसी कणजा काचलग । बँधत ताई माँहिं । जनरज्जब शीतलसमै । अस्तल छोडैं नाहिं ॥ २१ ॥ जीवज़ल हिमगर होत है । सकत सीतकै संग । सो पखान पानी बह्या । गुरु ग्रीषमकै अंग ॥ २२ ॥ ज्यों सावण सोवंती फिराहिं । त्यो शठ सूति संसार॥रज्जब सूधी होयसो । कमणीगर गुरुद्वार॥२३॥ हाथा जोडी गुरु हूं सूं । मुसालिमनसुं मिलाहि ॥ ये यकठे योंहीं कराहिं । औरं हु किये न जांहिं॥२४॥निवाणनिर्णे मटुकी मुकर । सजलसूर प्रतिबिंब रज्जब ॥कफ कहना किये । जागे तहां विलंब ॥२५ ॥ अनिल आगि आनन अनत । पैगि रहिन कंचन कान । रज्जब सेनी सतगुरु । बजर वारिबिधि बानि ॥ २६ ॥ सब गुरु तीरंदाज है । सेवक मन निरसान । रज्जब गुरु कमणैत सो । जाका बैटा बाण ॥ २७ ॥ सेवक मन मे हरी भया । मरद मिले गुरु आम । रज्जब साबत सो सही । जा सूं फल रहिजाय ॥ २८ ॥

तनमनशिष रोगी भये। बैद मिले गुरु आय॥ जन रज्जब सु हकीमहद। जासों बिथा बिलाय॥२९॥ रोगी वैद्य पिछाणिले। बूटी सती सुजान। विथाविलै द्वै परसतै। रज्जब सो पर वाणि॥ ३० ॥ तिणतोय रसतन मिलि। तने तनइया होत। रज्जब जगमें जगमगे। थावरगलिगये गोत॥ ३१ ॥ विविध भांति बूटी बनहुं। बेत्वाल्यावहिं जोय॥ रज्जब रोग तिनहुं हटै। पै वैद बंधना होय॥ ३२ ॥ सबहु नर संसार के। किनहुं कि ये करि याद। सो रज्जब किस कामके। अब दे सो उस्ताद ॥ ३३ ॥ सब संतहुं के सति शबद। जिनमें अलख अभेव॥ अब समझावै जो जिसाहिं। सो तिसकागुरु देव॥३४॥ रूपक पावक दारूगोळी। कहां कहीं सूं होय। पै रज्जब निर्दोष सब। मारै वैरी सोय॥३५॥ षट्दरशनिके रंगरँगी। आतम जल ज्यूं आय। रज्जब सतगुरु सूर ज्यूं। कराणिकरखिलेजाय ॥ ३६ ॥ कूवे वाइ तलावके। धणियूं कछू न होय। जन रज्जब जल जाँहि सूरभे। त्यूं सतगुरु सब कोय॥३७॥ गुरु गाफिल देखत रहै। सतगुरु शिषले जाहि॥ रज्जब पहुंचै गीदज्यों। अति चलतेकै पाय ॥ ३८ ॥ मनकपूर-नाहीं रहै। चित्रचोरके बांधि॥ सतगुरु लेहि समीर ज्यों। गठि-बंध पडै न संधि॥ ३९ ॥ बिबिध बास बहु बंदगी। चले पवन सँगपीर ॥ रज्जब श्रिक सोरंभज्यूं। विरला पहुंचे बीर॥ ४० ॥ सरगुण निरगुण गुरगरट। गाहकशिषों अनेक॥ रज्जब गुरु गोविं-दके। सो चेला कोइ एक ॥ ४१ ॥ विधुबिलोकि बहुलक्षणा। गाहक गुणहु अपार। पै रज्जब सुधा चकोरले। जेहिं बळि गिले अंगार॥ ४२ ॥ चंद चकोराहिं प्रीति है। देखै सब संसार॥ वह सौदा औरै कछू। जहिं बळि गिलै अँगार॥ ४३ ॥ रज्जब महत मयंक कै। चेला होय चकोर॥ इंद्री गिळै अंगार ज्यों। अगनि

करै नहिं जोर ॥ ४४ ॥ येफ गुरु है आरसी । सिखचरित्र अटकै बार ॥ जन रज्जब समा गुरु । काठै अपणोपार ॥ ४५ ॥ सब दिसाति गुरु जळमहीं । अतिगाति निर्मळ माँहि ॥ तिनमें दीसै परै का । बैला दीसै नाहिं ॥ ४६ ॥ बितबोहिथ सब साहका । सतगुरु खेवणहार ॥ उतर पार धनधणीकै जायगा । रज्जब उतरे पार ॥ ४७ ॥ जे काजी काईन पढे । तौ कछु खसमन होय ॥ रज्जब व्याह कराय फर ॥ ब्राह्मणबींदन कोय ॥ ४८ ॥ घटभैण्डार भगवंतका । आतम विततहिं थान ॥ भण्डारी भण्डारमें । जन रज्जब गुरु ज्ञान ॥ ४९ ॥ वजूदस जाना अलहका । जर अंदरि अरि वाहि ॥ रज्जब पीर खजानची । दसतन सकई बाहि ॥५०॥ सिरिया शक्ति शरीर जीवकौं । बसत पराई बीर॥जिसकी तिसहिं चढावता । कुण मागै क्या सीर ॥ ५१ ॥ शरीर शरीर हु उपजहिं । सुरति सींपके माँहिं ॥ पै रज्जब गुरु इन्द्र बिन । मन मुक्ता व्है नाँहिं ॥ ५२ ॥ आदम करि आदम उदै । सीपहि निपजै सीप ॥ पै मन मुक्ता गुरु इंद्रकरि । सतगुरु स्वातिसमीप ॥ ५३ ॥ सतगुरु सावणकी कला । तामें मौज सुस्वाति । तब मोती मन नीपजै । जन रज्जब यहि भांति॥५४॥ जन रज्जब गुरु धरणि परि ॥ शिष्य सारे बनराय । घट प्रमाण रस सब पिवैं । अपणें अपणें भाय ॥ ५५ ॥ जन रज्जब गुरु ज्ञानजळ । सींचे सिख बनराय । लघु दीरघ अरु स्वादविध । व्है अंकुर स्वभाय ॥५६॥ पान फूल ज्यों तरु लगै । त्युं त्रिविधि भांति गुरु शिष्य । फूल वासि तरु गुरु लिये । रज्जब सब विधि पीख ॥ ५७ ॥ बात पात छाया लिये । ज्ञान सुगुल सासि बास । करणी फळ गुरु तरु गहैं । त्रिविधि भांति परकास ॥ ५८ ॥

गुरु तरु शिष लागेसु यूं। ज्यूं डाल पान फलफूल ॥ बात घात यक झडि पडै। येक न छोडैं मूल ॥ ५९ ॥ रज्जब गुरु गृहदीपक दशा। तिनहुन पूरे आश॥गुनतारे भ्रम शीतका। सतगुरु सूरज नाथ ॥ ६० ॥ रज्जब व्यक्त रूप गुरु बहु मिलै। शिष चखियो-तनकोय ॥ ऐकै सतगुरु सूरसम। तिमिर हरै त्रियलोय ॥ ६१ ॥ गुरु अनंत शिष हूं घणे। पै सतगुरु भेटैं भाग। रज्जब रागी बहु मिलैं। पै बिरलहु दीपक जाग ॥ ६२ ॥ बहुते स्वामी सैल सुल। के पारस गुरु जान। रज्जब पलटे लोह शिष। तिनका होय बखान ॥ ६३ ॥ वैद विथामें आपही। रोगी चीन्हैं नाँहि। रज्जब दोन्यूं दृष्टिविन। पचन भये गळि माँहि ॥ ६४ ॥ रोगी कूं भासे उभय। वैदहिं दीसै तीन॥ रज्जब ऐसे गुरु सिखहु। कहु सु क्या मिलि कीन ॥ ६५ ॥ वैद व्यथा बूझै नहीं। पीरन पावै पीर ॥ रज्जब मिलै न नाम सुणि। क्यूं सब दिये बीर ॥ ६६ ॥ आसै क्या अर आव। मन मरकट सुदिखावही। अगले बुद्धि बिन बाँदरे। रज्जब ठौर उठावही ॥ ६७ ॥

साखी २६३ ॥ अंग ५ ॥

अथ गुरु मुख्य कसौटीका अंग।

गुरु ज्ञाता परजा पती। सेवक माँटी रूप ॥ रज्जब रजसूं फेरि करि। घडिले कुंभ अनूप ॥ १ ॥ सेवक कुंभ कुंभार गुरु। घडि घडि काढै खोट॥ रज्जब माँहि सहाय करि। तब बाहिर दे चोट ॥ २ ॥ क्रोधन करहिं सु लाल गुरु। दीसै बहुविधि मार। रज्जब निपजै पात्र क्यूं। बिन कसणी व्योहार ॥ ३ ॥ सतगुरु शंका ना करै ॥. जैसे लोह लुहार। रज्जब मारै मिहरकर। ताय करै

तत सार ॥ ४ ॥ कालबूत कसणी भई । सेवग साठी जान ॥ रज्जब तावै तीरगर। त्यूं सतगुरु की बानि ॥ ५ ॥ प्राणपटहुं उरदू करहिं । झूंठ साँच सासाद ॥ दिवस दिनदडा बहीं । धनि धनि गुरु उस्ताद ॥६॥ काया कद उरदू किया । गुरु उस्तादहिं ताय ॥ शंकठमें शोभा भई। नर देखहु निरताय ॥ ७ ॥ मनरूपा निर्मल भया। सतगुरु सोनी हाट ॥ रज्जब शीशे शब्दसों । कटै कलंकी काट ॥ ८ ॥ ज्यों धोबीकी धमस सहि । ऊजल होय सुचीर ॥ त्यों शिषता!लिब निर्मले। मार सहैं गुरुपीर ॥ ९ ॥ जन रज्जब गुरु गुरुज सही। करहु न सोच विचार। काया पलटै कीटकूं। बिन भ्रंगीकी मार ॥ १० ॥ अरकइंद ज्यों सतगुरू । गुणद्वय अजब अनूप ॥ रज्जब तपते वर्षहीं । शीतल सुधा स्वरूप ॥११॥ सतगुरु सतयुग की अगनि। ताव तेज अधिकार ॥ शिष सोना व्हय सोल्हा। रज्जब कसनी मार ॥ १२ ॥ शिष शंकटमें नीपजे। गुरुहुं सो बंधै गंठ॥ मनमनिंग छेदे बिना । रज्जब बँधै न कण्ठ ॥ १३ कठिन कसौटी नीपज्या । तिसहिं कसौटी नाँहिं ॥ वा सण डरै न वासुदेव । पाका पावक माँहिं ॥ १४ ॥ मन हस्ती मैं मंति सिर। गुरू महावत होय। रज्जब रज डारै नहीं । करै अनीत न कोय ॥१५॥ मन मारुत भख सूधाकिया । सोधीदोन्यू जाडि ॥ कामक्रोध अरु लोभमोहकी । च्यारूं डाढ उपाडि ॥१६॥ मन भजुंग गुरु गारडी। राखै कील करंड ॥ जन रज्जब निर विषकि है। दुष्ट दशन करि खंड ॥ १७ ॥ मनभवंग गुरु गरुड गहि। किया गगनको गौन ॥ जन रज्जब जिवकी पढी । मूंसे गटकै कौन ॥ १८ ॥ अनल पंख गुरुने लिए । पंचतत्व अरु प्राण ॥ ज्यों गगणा गैले उडे। छूटा छित अस्थान ॥ १९ ॥ मनमै मंतू लेगये। गुरू अनल आकाश ॥ सो न छुडाये छूटहिं।

नखसिख किये गराश ॥ २० ॥ सतगुरुसी गणी हाथ ले । मारै भरम विचार ॥ जन रज्जब जाके वणे । सो बैठे तनहार ॥ २१ ॥ ज्ञान खड्ग गुरुदेव गहि । दे सेवक सिर आन । मारतही मोहन मिलै । जे ओडै जिवजान ॥ २२ ॥ सतगुरु साणि सुशबदकी । रसन सुहाथहि देहि ॥ जनरज्जब जगपति मिलै । जे उर श्रवणसु लेहि ॥ २३ ज्ञान गुरज गुरुदेव गहि । गरद किया रण माँहि ॥ जो रज्जब सन्मुख गया । सो फिर आवै नाँहि ॥ २४ ॥ ध्यान धनुष गहि सतगुरू । मारै बायक बाण ॥ रज्जब सावज सर सहित । पडै परस्पर आणि ॥ २५ ॥ रज्जब भलका भावका । सांटी शबद सलाय ॥ काविज गुरु कम्माठगाणीं । मारया तीर चलाय ॥२६॥ सतगुरु शबदसु मार सर । जो फोडै त्रियलोक ॥ रज्जब छेदे सकल गुण । अइ या पैनी नोक ॥ २७ ॥ रज्जब रुचै सु रोस सर । सतगुरु पारस बैन ॥ प्राणी पलटै लोह ज्यों । लागै कंचन अैन ॥ २८ ॥ शिषलोहा पारस गुरु । ज्यों त्यों राम मिलाव । रज्जब भावै रोष रस । परसै कंचन भाव ॥ २९ ॥

अंग ६ साखी ॥ २९२ ॥

अथ आज्ञाकी व आज्ञाभंगीका अंग ।

आज्ञा गुरु गोविंदकी । चलै सुचेलाचार । रज्जब रमतूं मन सुखी । पग पग पूरी मार ॥ १ ॥ आज्ञामें आतम रहै । आज्ञा भानैं भंग । रज्जब सगुरा सीखमें । निगुरा अपणे रंग ॥ २ ॥ पितापूत नरनारिकै । गुरुशिख आज्ञारंग ॥ रज्जब राजा चाकहूं । हुकमहते मनभंग ॥ ३ ॥ सतगुरु सर वर क्या करै । जै शिख फुरी मन खोट ॥ रज्जब बनशी वाम गलि । खैंचलई जब चोट ॥ ४ ॥ रज्जब रमणी रासिभा । कपट सुकट गढमाँहि ॥

शिषसिंध खात पुलायये । गुरु गिरदूषण नांहि ॥५॥ गुरु अगस्त उर चढतही । सिख समंद नाभि जांहि ॥ जन रज्जब उतरे तहां । सो खारे खित मांहि ॥६॥ आज्ञा भंगी मन सुखी । व्यभिचारी व्रत नाश ॥ रज्जब रीता रतीबिन । नाही चरन निवास ॥७॥ आज्ञामें आगे रहे । गुरु गोविन्द हजूर । जन रज्जब दिल दूसरै, ठाहरतै दूर ॥ ८ ॥ आज्ञामें अणमोलहै । मण आज्ञा बढ आध ॥ रज्जब रंगै सुरजामें । बिरच्यू बाल्हे बाघ॥९॥गुरुकी आज्ञामें रहै । सो शिख कोई एक ॥ रज्जब रहै विन रोझ मन । आज्ञा भंग अनेक ॥१०॥ असली आज्ञामें चलै । बाहिर धरै न पाव । रज्जब कपटी कम-असल । खेलै अपणे डाव ॥ ११ ॥ रज्जब रहिये रज्जामें । गुरु गोविंद हजूर । इनकी आज्ञा मेट ते । देखत पड़िये दूर ॥ १२ ॥ गुरूधरती गोविंद जल । शिष तरुवरमधि पोष ॥ रज्जब रसके ठौरतें । दोवि दहूं दिश दोष ॥ १३ ॥ शिष सुगुडी श्रुति डोरिमें । गुरु खिलार हितहाथ ॥ तंतू तूटें तें गई । साबत सांई साथ॥१४॥ ज्यों घोडा असवार बस । चलै पराये भाय ॥ रज्जब अड अपनी गहै । तबै मार बहु खाय ॥ १५ ॥ अंणी आग अहसों असै । गुरु आज्ञामें गौन ॥ जनरज्जब तन त्रास कछु । मनहिं भरावै कौन ॥ १६ ॥ सीता सुरति उलंघिया । रामलीक गुरुबैन । रज्जब रावण कालकर । चल्या न पावै चैन ॥ १७ ॥ रज्जब रजा रजानिकर । अजा जील सैतानि ॥ हुआ फजीहत फरिस्ता । मेट अल्लह फरमान ॥ १८ ॥ रज्जब गुरु गोविंदकी । माया मेघ प्रतिपाल ॥ इन बिरच्यूं राचै बिघन । केवल आतम काल ॥१९॥

॥ अंग ७ ॥ साखी २११ ॥

अथ आज्ञाकारी अंग।

गुरु आज्ञामें शिष्ययूं। ज्युं अदबूझक पाय। रज्जब सेवक सो सही। सर्वस सेवा भाय ॥ १ ॥ गुरु आज्ञा अंगुरे बँधे। चेले चक्री होय। आवै जामे रज्जबै। दूजा नाहीं कोय ॥ २ ॥ सतगुरु सूरज सिख सकिल। आज्ञा आवै जाय। रज्जब रहु हूं इहि जुगति। सेवग स्वामी माँय ॥ ३ ॥ धोमवास बलिबायकैं। सेवग समीर सुजाहि ॥ तसै रज्जब गुरु शिख्यों। सदा सुआज्ञा माँहिं ॥ ४ ॥ हरि आज्ञा माहिं अणसरै। गुरु दिनकर इक्तार ॥ रज्जब शिष सो किरण सम। सदासु तिनकीलार ॥५॥ चंदसूर पाणी पवन। धरती अरु आकाश ।। ये साईके कहेमें। त्यूं रज्जब गुरुदास ॥६॥ पाणी पवन सूर शशिसोधे। धन्य धणी जिन येपर। मोधे॥चूकहिं चकहि न सीख मँझारी। जिन रज्जब तापर बलिहारी ॥ ७ ॥ ज्यूं हलवाई की हाटताजे। माँखी कहीं न जाय ॥ त्यूं रज्जब गुरुशिख बँधे। उडहि न रहे उडाय ॥ ८ ॥ नाव मिठाई विविधि-परि। जहां भरे हद हाट ॥ रज्जब मिलहिं उडावतूं। मिनष माँखी ठाट ॥९॥ रज्जब आज्ञामें ऊभा रहै। आज्ञा बैठे आय। आज्ञामें आया हुआ। आज्ञा ऊठै जाय ॥ १० ॥ आज्ञामें पतिव्रत है। आज्ञा धरम नेम। रज्जब मैं आज्ञा डर चढै। आज्ञा कुशलक्षेम ॥ ११ ॥ आज्ञामें आतम अरथ। आज्ञा ऊरण होय ॥ आज्ञा चलै सु ऊधरे। साध कहैं सब कोय ॥ १२ ॥ आज्ञामें ऊभा रहै। एक मना इक्तार ॥ रज्जब ऊज्जल अनन्य व्है। वह उतरै गा पार ॥ १३ ॥ आज्ञामें अघ ऊतरै। आज्ञा पावन प्राण ॥ सो आज्ञा आठो पहर। जनरज्जब उर आण ॥ १४ ॥ आज्ञामें ऊंची दशा। आज्ञा उत्तम ठौर। उभय एक आज्ञा चल्यो। सो आज्ञा सिर-

मौर ॥ १५ ॥ शिष श्रद्धायों चाहिये। ज्यों वसुधा रतिवंस। रज्जब विरखा गुरुवयन। लिया दशोंदिश कंत ॥ १६ ॥ चेला चेतन चाहिये। ज्यों अक्षर शब्दहि लेय॥ रज्जब शिष श्रद्धा यहै। जू गिरमत जाण न देय ॥ १७ ॥ बावन अक्षर सेवगा। सतगुरु शबद समान ॥ रज्जब दुहुं सों येक व्है। सो गुरु ख्रिसपखान १८ शिख श्रद्धा जंतर घटी। सतगुरु जंत्रक जान ॥ रज्जब रहिये कंद चढि। सकल कला उरठानि ॥ १९ ॥ तेललूण आफूर गुड। पै पाणी सुमेल। त्यों रज्जब गुरुज्ञानमें। शिष सुमतीका खेल ॥ २० ॥ अम्मल वेति सुई मिल एकै। त्यों शिख सतगुरु संग। रज्जब द्वितिया भाव नहिं दरसै। अंग समाये अंग ॥ २१ ॥ आदितिणों रसनी पजी। अंतीतिणों दिल माहिं ॥ रज्जब शिख सतिया मतै। सुगुरु गुण लोपै नांहिं ॥ २२ ॥ मिश्री मन विसरी नहीं। आदू जो उपकार ॥ मीठों सू मीठी भई। ते उतिणा उरधार ॥ २३ ॥ गुरु गूंद शिख समंदका। मिलत महातम जोय ॥ पर फूलित सायर सुगुण। उठत बुदबुदे होय ॥ २४ ॥ गुरु सन्मुख शिष रह सदा। कदे करो मति ओर ॥ ज्यों रज्जब बसुधा विरछ। सुखी दुखी इकठौर ॥ २५ ॥ ज्यों सतगुरु के शबदमें। त्यों चलि शिष्य सुजान ॥ जन रज्जब रहो इसमतै। छाडहु खैंचाताण ॥ २६ ॥ हीरा हेम सोई खरे। जू लागै भाणेभांति ॥ रज्जब चहुंटै गुरु शबद। सो चेला चोखै चित्त॥२७॥ गुरु आज्ञा इंद्री दवन। आज्ञा परिहर काम ॥ रज्जब आज्ञा आपहति। आज्ञा भजिये राम ॥ २८ ॥ गुरु आज्ञा अंजन तजो। आज्ञा अंतर मेट। रज्जब आज्ञा उर बसो। आज्ञा अविगत भेट ॥ २९ ॥ गुरु आज्ञा औतार तजि। आज्ञा अस मन सेव ॥ आज्ञा अठशठ त्यागिये। रज्जब आज्ञासेव ॥ ३० ॥ सात बार

एकादशी। आस उपास उतारि। रज्जब भजिये रामकूं॥ तेतीसूं तसकार॥ ३१॥ गुरु आज्ञा दुनिया तजहु। आज्ञा दरशन त्यागि॥ रज्जब आज्ञा ऐन यहु। पाखंड प्रपंचहु भाग॥ ३२॥ शिष्य सदा सति शबद मांधि। गुरु थिर गोविंद माँहि॥ उभय ऊमर ठाहरु बदीतहीं। तब संचर कछु नांहिं॥ ३३॥ शिष सोई सति शीखमें। गुरु सोई ज्ञान गरक। मन बच क्रम रज्जब कहै। जुगलहु पावै जक्का॥ ३४॥

साखी ३४५ अंग ८

अथ गुरुसंयोगवियोग महात्मका अंग।

सतगुरुपरतखिपरसतै। शिस्मकीशंका जाहि॥ ज्यों दिन-कर सूंदिनदरसै। त्यों निससूझै नाहि॥ १॥ गुरुचंदन जीवत-सुये। बचन बासविच होइ। नरुतरु निपजै परसपर। त्यूं पीछै नहिं कोय॥ २॥ शवदडंक गुरुभिरंगपरि। मारततनमैजंत। उभै उतरू उमै अंग। सुकलानकंटिकमंत॥ ३॥ गुरुहमाइ संयोग शब्दपर। परस्यूं पलटै प्राण। रज्जब विछुडयूं बल घटै। सम-जै संत सुजाण॥ ४॥ सतगुरुसिंह समान हैं। शब्द डंकनख ठौर॥ जीवत जाय गहजोर बर। उतरै बल कछु और॥ ५॥ बाराहबानौहुबकर बल। देखहु दुहूंकेदंत॥ तैसे गुरुमुख शब्द समाणा। मनहु मनावै मंत॥ ६॥ रज्जब जहिं पारै पैदा हुये। पारवती मधिपूत। सोपारा अजहूं घणा। पै पीनहु होत सुत सूत॥ ७॥ निनाणवें कोडिनराधिपति। निपजै गोरख ज्ञान। अब रज्जब एको नहीं। तौ शबदि सता घटि मान॥८॥ जनरज्जब गोदावरी। गोरखगिरासुगाल। मूघेसिध ऊंधी सिला। देखिहुये ततकाल॥ ९॥ उहै शब्द आनन अनंत। कहै सुणें

सबकोय । पै रज्जब उहिं शक्तिबिन । सिद्धसिका नहिं होय ॥१०॥ रज्जब मुये जिवापता । मन्त्री धन्वंतर वैद ॥ वह विद्यावादी अजहुं । परि वह जुकता नहिं कैद ॥ ११ ॥ रतन रसातक परि पठी । ज्ञान गवासु अपार । रज्जब जड़ गढ मानते । गये उठावन हार ॥ १२ ॥ भूतबाव सुनि भूतकी । भूत होत क्या बेर ॥ सोइ बात बहु बदन सुणि । सोन होत तौ फेर ॥ १३ ॥ रज्जब वप वाहक मिलत । कहम करहु बहु फेर । मनसा वाचा कर्मना । हाजिर हाडका हेर ॥ १४ ॥ साधसिंहके शब्दसु संकित । दरश दुखी मनास । रज्जब कही विचारि करि । त्रिविधि भांति कीत्रास ॥ १५ ॥ गुरु अगनी सेवा त्रिविधि । देखि ताप सति माहि ॥ जन रज्जब सुरमामके । एक बंदगी नाँहिं ॥ १६॥ हनुमंत हाक हनुमंत सुख । तौ बहींज अब होय । पै रज्जब ताशवदका । बकता और कोय ॥ १७ ॥ चंबक चरचा गहि गुणगांढ । सुरति सुई रजरिधि काठि ॥ पारस गुरु मिलत गति जोय । बहिसो नावहि साधू होय ॥ १८ ॥ रज्जब सतगुरु जोति जिव । शब्द सही परगास । सिख सोने क्रमकाटका । कहिं मिक होय सुनास ॥ १९ ॥ गुरु नराधिपति सिख उमराव । बचन बीचि प्रति हार सुभाव । घटवधि पटा करै नरनाथ । सोनिधि नहीं शबदके हाथ ॥ २० ॥ ओंकार आतम ओतार । तासों शबद सदा प्रतिहार । इष्टों लगि पोरयों प्रवेश । आगे रज्जब दातादेश ॥ २१ ॥ विवेक जीव बस्ती जहाँ । ब्रह्म वासुदेव माहिं । शबद धोंम व्योमहि गहैं । चुणचकोर सुनाहिं ॥२२॥ मति सुनुकर जडमें दरसैं । चेतनकूं सुख देखै । सोई लाज आतम करै । रज्जब व्है संतोखै ॥२३॥ गुरुचंदन सिख बनय विधि । पैसो

पलटै पास। रज्जब दूरन मूर है। शबद सकल भरवास॥ २४॥ रज्जब पावै दूरसों। शबद बास नरनाग। पै गुरुचंदन पासे गये। शीतल हो हैं सुभाग॥२५॥ रज्जब केशर खेत गुरु। बीज बचन तहाँ जोर। आनि अवनितरविपुलअति। पै सोकण करहिं न फोर॥२६॥ रज्जब सतगुरुसींपसम। शिख है स्वाति सुनीर मन सुकत साधि निपज्ज ही। छुदे न निपजै वीर॥२७॥ सतगुरु सुंदरि सुकतिमधि। सिख सुत सुकता खेत॥ देखो निपजै ठौर नग। जन रज्जब कहि देत॥२८॥ केशर कनक कपूर सुकतमन। यह पैदा यश जोय। खेतनदी है कंलि सुकलि। सुकतिगुरु। ठाहर उतपति होये॥२९॥ पिंडप्राण बिन कुछ नहीं। सूकी काया-काट। त्यूं अनभै विन अनभई। ज्यूं पंडित विन पाठ॥ ३०॥ रज्जब बपु बायकचके। परसुंपुरी पीर। पर कायापरवेशगुरु। मृतक शबद शरीर॥३१॥ गुरुपण्डित अक्षर शबद। आदम अपढन लेश। रज्जब पैठैपीर संग। पर ठाहरपर वेश॥३२॥ जैसे राछ अंकज सब। उस्तादहुं विनजेम। त्यों रज्जबगुरु विन गिरा। मनसा बाचानेम॥ रज्जब पागी विना न पग कढै। देखो धर गिर नीर। शवद खोजतन पंचपर। सूक्यूं निकसे विनपीर॥३४॥ नांव शबद निज नांव है। शबदरूप संसार। रज्जब गुरु खेवट बिना। चढै न पहुंचे पार॥३५॥ परख बिना नाणा न कछु। वैद विन औषधि त्यों रज्जब सतगुरु विमुख। शबद मिलै जिवरद्द॥३६॥ वचन वाट बहुते चली। जीव खडा तहँ आय। रज्जब गुरु भेदी विना। प्राण पंथ कहि जाय॥ ३७॥ रज्जबराजा विन कटक। विणजारहु बिन बैल। त्यों सतगुरुविन शबद दल। बहै न काजकी सैल॥ ३८॥ रज्जब आतमबाज बिन।

गोला नालि न काज । ऐसी विधि गुरु विन गिरा । जो नरविन गजबाजि ॥३९॥ पुस्तक पैगहैं वचन सुबाज । अर्थ असवार गुरु गतिराज । चढे चढाये नाहिं तहँ नाहीं । रज्जब रचना यह दलमाँही ॥ ४० ॥ बैनबाज निजनांवकूं । कहत सुनत जग-माँहि ॥ पै रज्जब गुरु असवारबिन । कारज आवहिं नाहिं ॥४१॥ चाबुक अंकुश शबद सत्य । है गै मनपर धारि ॥ रज्जब गुरु असवार बिन । को काढै पशु मार ॥ ४२ ॥ शबद पुरानी क्या करै । जै गुरु खाडती नाहिं ॥ रज्जब चलैन बैल रथ । समझ देखि मनं माँहि ॥ ४३ ॥ विचार नाथ बायक दिया । लिया सुचेतन नाथ ॥ रज्जब निपजै देखतूं । चेला हाथों-हाथ ॥ ४४ ॥

॥ अरियल ॥

सतगुरु सूरज कांति सुरसम है धणी । शबद सलिल कफ कान गुरु शिष अतिवणी ॥ आदम असम असंख्य तहाँ नहीं यहु कला । पारि हां रज्जब जोग दुर्लभ भाग लहिये भला॥४५॥

॥ साखी ॥

चिदानंद चंद्रसकला ॥ चंद्रमणी गुप संत ॥ उभय मिलत अमृत श्रवै । पीवहिं जीवन जंत ॥ ४६ ॥ शबद बीज करसा गुरू । चेला चकहुं सरूप ॥ नाँव नाजयू नीपजै । मिहर मेघ हरि भूप ॥ ४७ ॥

॥ चौपाई ॥

शब्द आरसी अर्थ सुआगि । सतगुरु सविता सनमुख जागि ॥ आरतिविच आहार अनूप । प्रीतम पावक प्रकटैहिं रूप ॥ ४८ ॥

॥ साखी ॥

गुरुसिख नरनारयों मिल्यूं। ब्रह्मबाल विधि होय॥ शब्द सुकल श्रुति सुंदरयूं। फल पावै नहिं कोय ॥ ४९ ॥ त्रिविध भाँति तरुन्यूंतयें। तिमिर हंत समजाय। सविता सतगुरु आभवैं। पाला अघनिगराय ॥ ५० ॥ रज्जब साध शबद सुरहीरूपै। किये पलट अशुद्ध ॥ अब अरथ घृत काठेविना। दीपक बलै न बुद्ध ॥ ५१ ॥ काष्टलोह पाषाण शबद सति। अगनि अरथ परकास ॥ कौन कामका सौं सरै ॥ सुनहुं बवेकी दास ॥ ५२ ॥ रज्जब शबद समंदमधि। मतमुक्तानिजठौर ॥ सो गुरु मरजीवे बिना। आनिनसकई और ॥ ५३ ॥ शबद साल'ताला जडया। अरथदरब धरिमाँहि ॥ गुरु दिष्टी कूंची बिना। हस्तसुआवै नाँहिं ॥ ५४ ॥ बाइक बादल'अर्थ जल। गुरु आज्ञा सुनि कास॥ बिन संजोगबरिखा बिना। चेले चकाहु गिरास ॥ ५५ ॥ महा पुरुष पारस परसि। पलटहिं प्राण सुधातु ॥ मिलतौं मंगलमौंनिमें। रज्जब तहाँ न बात ॥ ५६ ॥ कह्यासु आयासिखकनें। अकहरह्या गुरु माँहि ॥ रज्जब वह कहिं ओर है। जो सब दिस भावै नाँहि ॥ ५७ ॥ गुरु उकील निज ब्रह्मकनें। शबद रहै संसार ॥ बहु बचनू बहुतै मिलै। विरला सतगुरु लार ॥ ५८ ॥ वो ओंकार आतम क्षीरं। ताहि जमायमथैं घिरत बीरं ॥ वाणीत कर जुदे जीव जाणीं। उलटी मिलै जीवणपै पाणी ॥ ५९ ॥ सीखीसाखि विसाह्या बरा। नाथ बोलै खोटा न खरा ॥ कबीर सोई आखिरसो वैण। जणाजूजूवा चवंति ॥ ६० ॥ कोई जु मेलै केलवणि। अमीर सांईंण्यू हुंती ॥ दादू कह्या आसक अलहके। मारे अपणों हाथ ॥ ६१ ॥ कहाँ आलम औजूदसूं। कहै

जबांकी बात ॥ देवै फिरका दरदका । टूटा जोडै तार ॥ ६२ ॥ दादू साधै सुरतिकूं । सो गुरु पीरहमारा ॥ साचे सतगुरुकी कथा जैसादीपक राग ॥ ६३ ॥रजब बाणी सुर सुणत । जड दिलदीपक जाग ॥ ६४ ॥

साखी ४०८ अंग ९

॥ अथ बिरहका अंग लिख्यते ॥

कबहुं सो दिन होयगा । पीव मिलै गा आय ॥ रज्जब आनंद आतमा । बिधितापतनिजाय ॥ १ ॥ प्राणपिण्ड रगरोम सब । हरिदीशि रहे निहार ॥ ज्यों बसुधा बनराय सों । बिरही चाहै बारि ॥ २ ॥ सांथ शबद श्रवनो सुनें । बिरह बियोगी बनें ॥ तबतें बैंधी आतमा । रज्जब परै न चैन ॥ ३ ॥ बादल बिरह बियोगके । दरद दामिनी माँहिं ॥ रज्जब घटि ऐसी घटा । भैझड भागै नाँहिं ॥ ४ ॥ बिरहणि बिहरै रैनादिन । बिन देखे दीदार ॥ जन रज्जब जलती रहै । जाग्याबिरह अपार ॥ ५ ॥ रज्जब कहिये कौन सों । इस बिरहे की बात ॥ ॥ मानहुं रावण की चिता । अहि निश नहीं बुझात ॥ ६ ॥ बिरहा पावक उर बसै । नखसिख जारै देह ॥ रज्जब ऊपरि रहमकरि । बरसहु मोहन मेंह ॥ ७ ॥ बिरहनि बसुधाकी अगनि । ब्रह्मव्योम क्यों जाँहि ॥ रज्जब बरु बरिखाविना । उरधरी क्यूं ससिरांहिं ॥ ८ ॥ बिरहीवालिक गूंगपशु । कांहिकहै दुःख सुक्ख ॥ रज्जब मनकी मनरही । लहै न मारग सुख्य ॥ ९ ॥ अंतरयही अंतरि घणा । बिचहिं बीचि अपार ॥ माँहैं माँहिन मिलिसकूं । दीरघदुःखकरतार ॥ १० ॥ रज्जब चखिचुखबिछुरकी । नैंनहुं काढै नीर ॥ साईं सुरति सुमेर सम । सुनैंन हुं अटकै बीर ॥ ११ ॥ रज्जब बारह बायरा । बिरह

तेहां मेह॥ बन्दी सों तिनकूजन सुनहिं।फेरै फौन फुहु। मेघ१२॥ दशवेंकुलका नाग है। दरद सुदेही माँहि॥ जनरज्जब ताकै डसै। मंतर मूली नाँहि॥ १३॥ रज्जब विरह भुवंग परि॥ औषधि हरि दीदार॥ विन देखे दीरघ दुःखी। तनमन नहीं करार।१४। भलका भागा भावका। सेवग हुआ सुमार॥ रज्जब तलफै तव लगै। मिलै न मारन हार॥ १५॥ ज्यूं विरहनि वरषी छुटैं। बिहरिं गई तहिं काल॥त्यूं रज्जब तुझ कारनें। विपति माँहि वेहाल॥ १६॥ जैसे नारी नाहबिन। भूलीसकल शृंगार॥ त्यूं रज्जब भूला सकल। सुनि सनेह दिलदार॥ १७॥

॥ अरिल ॥

शक्ति सुख शशि सीर सुधारस वर्षहिं।
पीवत प्राण पियूष सबहि मन हर्षहिं॥
मोमन वाजवसेख विरहवप चांदियां।
परिहार जब रस विष होय उभय सुख बाँदिया॥ १८॥

॥ साखी ॥

रज्जब रुचै न रामविन। सकल भाँतिके सुक्खा॥ भगवंत सहित भावहिं सबै। नानाविधिके दुःख॥ १९॥ जनरज्जब जगदीशविन। ऋतुभली कोइ नाँहिं। शीतहुसन वरषा बुरे॥ विरह विथा मनमाँहिं॥ २०॥ द्विगदुमझारी ऐन। चितचुल्है पावक जरै॥ परी अगनि उतवैन। तौ रज्जब रस इत झरै॥२१॥ रज्जब वहनी बिरहकी। गुणगण अवटैं बीर॥ काया कार कसे हेजरहिं। सुनैंनहुं निकसैनीर॥ २२॥ रोज रेश्मी जे वडहुं। तनमन बांधे घोलि॥ जनरज्जब जो यूं जडे।सुकहां जाहिं कहुं खोलि॥ २३॥ रज्जब चाढे डंगडुखी। बांधे सांकलि सोचि॥

हरिताली ताले जडे। क्यूं निकसै मनमोचि ॥ २४ ॥ रज्जब भैकी भाकसी। करणी कूदै पाय॥ हाथहथकडी हेत की। सरक्या रती न जाय ॥ २५ ॥ इंद्री अनंग न ऊतरै। जै आँख्यू आँसु जाहिं॥ रज्जब मन मोरा भये। महापुरुष महि माँहि ॥ २६ ॥ इंद्री आभे पंचामिलि। घटसूं घटा जुरि आण। रज्जब विषै न वर्षहीं बिरह वाइले जाय ॥ २७ ॥ बिरहे बोहित बैठि करि। तिरिये सुकल समंद ॥ इहिं ठाहर पौहणइहै। पार पहुंचणै बंद ॥ २८ ॥ दुख दिनकरकी दृष्टि करि। नेह नारनभिजाहिं ॥ रज्जब रमिये शून्यमें। यह जुगति जगमाँहि ॥ २९ ॥ रज्जब आज्ञा आनि-मध्य। आतम अंभ निकास ॥ उलटि समावै शून्यमें। पंथी पंथिसुतास ॥ ३० ॥ विरह सूर अतिगति तपै। तनमन मांड मझार ॥ रज्जब निकसै रामजल। बिरहेके उपकार ॥ ३१ ॥ तनमन ओले ज्यूँगलैंहिं। विरह सूरकी ताप ॥ रज्जब निपजै देखतूं। यों आपागाळि आप ॥ ३२ ॥ कायाकाष्टमनुबांधोम। इश्क आगि मिलजाँहि सु व्योम ॥ आदि अंतमधि मुकति सुमाग रज्जब लहिये पूरन भाग ॥ ३३ ॥ नरनारी सब नाज। बिरहा बारू भापकी ॥ रज्जब अज्जब साज। काचे पाके परसतैं ॥ ३४ ॥ दोसत नाहीं दरद सम। जैदिल अंदर होय ॥ जीवसीवयेकै करै जेब सदा हुते दोय ॥ ३५ ॥ विरह अगनि व्है जुगति सूं। आतमसार मझार ॥ कपट कीट फुलि काढि दे। तामहिं फरे न सार ॥ ३६ ॥ समधातु अग्निहिं मिलै। अग्निहिं निकसैकाट॥ रज्जब अज्जब ठौडकूं। वहनि विमल सुवाट ॥ ३७ ॥ तनमन काष्ठज्यूं जरहिं। हेत हुताशनलागि ॥ रज्जबरंग भंगबंकबल। जहां बिरहकी आगि ॥ ३८ ॥ विरहा चोरी पैठि करि। मुंसे

सकल गुनदेह ॥ जनरज्जब कण काढिले। ज्यूं चंबक तजि खेह ॥ ३९ ॥ विहरा विहरै विगातिसूं। फाडै पिंड पिराण ॥ रज्जब रजमा काढिले। विरहाचतुर सुजान ॥ ४० ॥ कमांण कसौटी विरह सर। प्राण चलावण हारं ॥ रज्जब छेदै सकलगुण। यूं अरि हूंहिं सुमार ॥ ४१ ॥ ज्यूं चंबक सिल नाल जटि। अस ऊभा रहि जाय ॥ त्यों रज्जब मनकूं विरह। जै देख्या निरताय ॥४२॥ विरह केतकी पैठि करि। मन मधुकर व्हैनाश ॥ रज्जब भुगतै कुसुम बहु। मरैन तिनकी बाश ॥ ४३ ॥ रज्जब बनशी विरहकी देही दरिया झारि ॥ यूं अगसत आरंभबिन। मनमच्छाले मारि ॥ ४४ ॥ विरही प्राण चकोर है। विरहा अगनि अंगार ॥ रज्जब जारै और कूं। उनकै प्राण अधार ॥ ४५ ॥ बिरही बिहरै बिरह बिन। जे उरि पावक नांहिं ॥ रज्जब यथा समुंद जिव। जीवै ज्वाला मांहिं ॥ ४६ ॥ बिरही स्यावत बिरहमें। बिरहबिना मरि जाय ॥ ज्यूं चूंनै का कांकरा। रज्जब जल मिलजाय ॥ ४७ ॥ इश्क अलावमल गमन। दिल दरौन विचिचौक ॥ रज्जब मजल आसिकां। अजब बिना लंदसौक ॥ ४८ ॥ रज्जब ज्वाला बिरहकी। कबहूं प्रकटै माँहिं ॥ तौसींचो घृत सौच सौं। करम काष्ट जरिजांहि ॥ ४९ ॥ अठार भार विधि आदमी। बिरही बंस विशेषि ॥ तासन हरि परगट। रज्जब अचरज देखि ॥ ५० ॥ पंख पटम्बर पिण्डपरि। माँहि पपीहे प्राण ॥ जनरज्जब दोऊदहैं। दिल दोसत बिन जान ॥ ५१ ॥ साधू सारस सोगकी। स्वांग रहिति सति सूल ॥ जनरज्जब जगि जुगलबिन। त्यागैं जीवसु मूल ॥ ५२ ॥ सूर सतीका जुध जलण। एकहि समैं सुनास ॥ ता ऊपर चारियूं पहर। पहलैं किये बिलास ॥ ५३ ॥ रज्जब कायर

कामिनी। रही विपतिके अंग ॥ सती चली सालि चढनकूं। पहरि पटंबर अंग ॥५४॥ रे प्राणी पति परिहरया। बिहरि जाक्यूं नांहिं ॥ जनरज्जब ज्यों जलगये। पंकतिडी सर माँहिं ॥ ५५ ॥ चकई ज्यूं चकिरत भई। रैनिपरी विचिआय ॥ जनरज्जब हरि पीवकूं। क्योंकर परसों जांहि ॥ ५६ ॥ चकई हूं चकवा मिलै। बातें जानिनिज़ाम॥ रज्जब रजनी अव विहाई। मिलै न आतम-राम ॥ ५७ ॥ विरह अगनि येकै सबहुं। हर दहाडी सुअनेक ॥ भावभिन्न भोजन विविधि। रज्जब रधैहिं बमेक॥५८॥ एक बिरह बहु भांतिका । भावभिन्न विचिहोय ॥ रज्जब रोवै रामकूं। सो जन बिरला कोय ॥५९॥ सकल बोल विरकत भये। गुरु वाइक मनलाग ॥ रज्जब रोवै दरसकूं। यहु सांचा वैराग ॥ ६० ॥ वे परवाही बपूसन । ताऊपर बैराग ॥ रज्जब रोवै इसमतें। तासिरि मोटे भाग ॥ ६१ ॥ मांहिं बहै बहिर कहै। सो सुणि रीझै राम ॥ रज्जब बातोंके विरह ॥ कदे न सीझै काम ॥ ६२ ॥

साखी ४७० अंग १०

॥ अथ प्रीति इकंगप्रत्यक अंग ॥

प्रीति इकंग महा बुरी। दुःखदीरघ दिल होय॥ काहि पुकारै किस कहै। बेली नाँहीं कोय ॥१ ॥ प्रीति इकंगी लागतैं। प्राण पूरै दुःखद्वंद ॥ मरकट सूवाज्यूं बँधै। विनबंधन दिढ फंद ॥ २ ॥ चात्रगमोर पुकार सुनि। कछु मेघ न आवै। तैसे रज्जब रटत है। पिव पारन पावै ॥ ३ ॥ चकोर चाहिचंदन उदै। जीव ब्रह्मत्यूं आहि ॥ नातो येकहिं बारकौ। यहु दुःख कहिये काहि ॥ ४ ॥ देखहु विरह विवेक विन। उपज्या अहमक अंग॥दीपकके दिलही नहीं। रज्जब पचन पतंग ॥ ५ ॥ रज्जब माया ब्रह्म दिसि। जीव

आपसूं जाय ॥ उभै सुवे परवाहवै । नर देखो निरताय ॥ ६ ॥ रज्जब जलणांमंडे संगी । त्यूं इक अंगीप्रीति ॥ दुःख सुखकी पूछैं नहीं । यह है देखौ विपरीत ॥ ७ ॥ औषधि कीजै आपविन । सो लागै कोउ नांहिं ॥ त्यौं इकअंगी प्रीतिहै । समझि देखि मन माँहिं ॥ ८ ॥ आतम औषधि क्या करै । आगै रोग असाध्य ॥ बहुविधि बूटी बंदगी । लागै नांहि अगाधि ॥९॥ बजरन बैधोबी धणी । ब्रह्म बंदगीतेम ॥ रज्जब करुनाकरि थके । रीझै नहीं सुनेम ॥ १० ॥ अकल कलहुंब लिए नहीं । सब भागे जीवजोर ॥ रज्जब रहीसु एकही । दरस दया प्रभु ओर ॥ ११ ॥

साखी ४८१ अंग ११

ब्रह्म अगनिका अंग।

ब्रह्म अगनि सुविचार है । मेल दहै मनमाँहिं ॥ रज्जब रजयूं ऊतरै । अभिअंतरि अधजाँहिं ॥ १ ॥ काया करम काष्ट जरै । ब्रह्म अगनि बिच आनि ॥ पावक प्राण खुलै पावकसूं । रज्जब शून्यसमान ॥ २ ॥ काया काष्ट गुण घण कम । पाणी पावक पाया मरम ॥ ॥ गुरु मुख अगनि ब्रह्मज्ञान । रज्जब बहनि बहन खुलान ॥ ३ ॥ प्रभु प्रभाकर ऐसा हैं । आतम तनतितु आग॥ रज्जब संकट सोवतैं । सोई मुकति जबजाग ॥ ४॥ मन मनसा तत पंचलै । पुनि रज्जब रगरोम ॥ यह जगिजागि जगमगै । ब्रह्म अगनिमाधि होम ॥ ५ ॥ विरह अगनिकी हदहै । ब्रह्म अगनि बेहद ॥ रज्जब रोपै घोस दस । ज्ञान अखंडित गद॥६॥ ब्रह्मअगनि बडवाअनल । तनतोयूं कूं खाय ॥ इश्क आगिकाची कहै । जोबयबारिबुझाय ॥ ७ ॥ तपतिकुण्ड ब्रह्मै अगनि । जिवजल सदा गरम । वासुदेव बलिहीनविरहकी । उन्हें शीतम

रम ॥ ८ ॥ ब्रह्म अगनि श्रुतिसारमें। तावस हैं गुन होय ॥ रज्जब रजतां नीकसै। बसत अनूपम होय ॥ ९ ॥ पंच एक पचीस उभयको। माया माखी खाय॥ ब्रह्म अगनि संजोग तापतें। अजरी तहां न जाय ॥ १० ॥

साखी ४९१ अंग १२

॥ अथ बिरह विभंग अंग ॥

दरद नहीं दीदारका। तालिब नाहिं जीव ॥ रज्जब बिरह वियोग बिन। कहां मिले सोपीव॥ १ ॥ दरद बिना क्यूं देखिये। दरसन दीन दयाल। रज्जब बिरह वियोग बिन। कहां मिलै सोलाल॥ २ ॥ श्रवणो सुरति न पीवकी। प्रेम न लेहि समाय। रज्जब रुचि माँहै नहीं। कहां मिलै सो आँहिं ॥ ३ ॥ नैंनो नेह न नाहका। वहि दिसि दृष्टि न जाहि ॥ रज्जब रामहिं क्यूं मिलै। तालिब नाहीं माँहिं ॥ ४ ॥ रसना रसहन लाइये। हिरदे नाँहीं हेत ॥ रज्जब रामहिं क्या कहै। हम नाहिं भये अचेत ॥ ५ ॥ पिंड प्राण रोगी नहीं। ओषधि नाम न लेहि। तो वैद विधाता क्या करै। दारू दरसन देहि ॥ ६ ॥ दारू चाहे दरद बंद। न रोगा सुन लेय ॥ ओषधि अरथी आतमा। जो माँगै सो देय ॥ ७ ॥

अंग १३ साखी ४५८

अथ भयभीत भयानक अंग।

भै मिलि आतम यौं बंधै। ज्यूं जल सीतहिं लागि ॥ रज्जब अचरज देखिया। कुंभ कायादे त्यागि ॥ १ ॥ समझि शीतलागे जसहि ॥ प्राणी पाणी होय। फूटे महिसारेर है। रज्जब देखो जोय ॥ २ ॥ जैसे जीव जल ठाहरै। रायल काया कुंभ। रज्जब

पिथले बहि चले। देखो आतम अंभ ॥३॥ भै भीत विना भूलै नहीं। देह विदेह न होय॥ जन रज्जब दृष्टांतकूं। कीट भ्रंगले जोय ॥४॥ चंदन संगति चंदनी। पारस कंचन होय। कीटभ्रंग मैं मिलि भये। तौडारि सामि और न कोय॥ ५॥ जन रज्जब साति-गलिए। गरीबी गरकाव। तौ प्राणी प्रानी जमै। मारग व्है सिर आव॥ ६॥ निरभै नटनी पहम पर। बात चढैं भय भीत। त्यूं रज्जब चढि सुरति पर। भै मिलि होइ अतीति ॥ ७॥ ज्यूं जहा जिके थंभ सिरि। रहया कागतजि तेज। त्यूं रज्जब भय भीति व्है। करहु नांवसोहेज ॥८॥जै सांईका सोच व्है। तौ मन फूलै नाँहिं॥ जन रज्जब सिमट्या रहै। ज्यों अजा उभयसिंह माँहि॥ ९॥ रज्जब राम न भूलिये। जे भींच रहै मन माँहिं॥ यादि करनकूं आदमी। या सम और सुजाँहिं॥ १०॥ रज्जब डर घर साधका। महा पुरुष रहै माँहिं॥ तिनके सबकारज सरै। जुबाह-रि निकसै नाँहिं॥११॥ रज्जब डर डेरा बडा। बडे रहैं विचि आय। भै कूंभय लागै नहीं। नर देखो निरताय॥१२॥ भै मिलि सब कारज सरै। भै मिलि निपजै साध। रज्जब अज्जब ठौर डर। डर घर अगम अगाध॥१३॥ भै मधि भूत भला रहै। डर सौ डिगै सुनांहिं। सांचा सोच सहाय कूं। सुनिसुमरै मति मांहि॥१४॥ भाव भगतिकामूल भै। भै करि भजिये राम॥ रज्जब भै मिली अंत व्है। भैमें सीझे काम॥ १५॥ महर कहर ते डरपिये। करत हरत क्या वेर। ताते भय भागै नहीं। रज्जब समझया फेर॥१६॥ मिडक हर सूं डरपिये। व्है बिन दिल दलगीर॥ त्रिविधि भांति त्रासै रहै। रज्जब पूरन पीर॥ १७॥ भयके भंजनमें रहै। सुकृत सरीखा धन्न। जन रज्जब निर्भय भये। दहादिसि निकसै मन्न

॥ १८ ॥ भाव भगति भय बिन नहीं । भय बिन भजै न राम ॥ रज्जब भय विन भ्रष्ट व्है । भै बिन सरै न काम ॥ १९ ॥ रज्जब सब डर निडरकूं । निरभैकूं भय पूरि॥ निरसंसे संसा घणां । परतखि प्रान.हजूर॥२०॥ निडर निलज्ज निश्शंक व्है । पूरि करै अपराध । जन रज्जब जगसों रचैं । परहरि संगति साध ॥ २१ ॥ भै भाग्यूं भूलै भजन । सत संगति रुचि नाँहिं॥ जन रज्जबसेवागई । संसा नांहीं माँहि ॥ २२ ॥ अदब अक्कलिमें पाइये । सरम साफ दिल माँहि । बे अदबी बे सरममें । रज्जब रजमांनाँहिं ॥२३॥ जो तन निपजाती निकरि । तहां न नींतगिसाज । जन रज्जब सुत पंचका । करै कौनकी लाज ॥ २४ ॥

अंग १४ साखी ५२२ ।

अथ विरक्तका अंग ॥

त्यागी ताखेकी दशा ॥ तहां न माया घास । जन रज्जब तब जाणिये । ब्रह्म अगनि परकाश ॥ १ ॥ गृहदारा सुत वित्तसूं । यहु मन भया उदास । जन रज्जब रामहिं रच्या । छूट्या जगत निवास ॥ २ ॥ त्यागी तेगसूं मारिये । रज्जब लंगर लोभ । मनसा वाचा करमना । ते तिहुँ लोकमें सोभ ॥ ३ ॥ रज्जब रहि गया राममें । तजि राम मतिका द्वंद ॥ नभि नीरै परसै नहीं । भया सीपका बूंद ॥ ४ ॥ बयब सुधासो बैर विधि । बिरच्या लग बैकुण्ठ ॥ रज्जब रचै न बिनसता । यहु उरि अंतर अण्ट ॥ ५ ॥ माया काया मनमतैं । बिरच्या प्राण प्रचण्ड ॥ रज्जब न्यारा नांव बलि । नजरि नहीं नौखण्ड ॥ ६ ॥ बिरच्या बरतै वरताणिहिं । तन मन त्री तसकार ॥ जन रज्जब रतनावसूं । यहु विरकत व्यौहार ॥ ७ ॥ रज्जब रूठा रिद्धिसों । सिद्धि सुहावै नाँहिं । इन आगै इनका

घणी। सो बैठा मन माँहि ॥ ८ ॥ पाइ परी पाई नहीं। रिधि सिधि निद्धि ऐन ॥ रज्जब त्यागी ते पुरुष। संतति शकति न सैन ॥ ९ ॥ सुरक्की सिलक सुदा कीढीमा। त्यागत सोच नहीं कछु जीमा। त्यूं विभूति ब्रतणी लै डारी। यों माया सुनिपर सौ न्यारी ॥ १० ॥ सोनैं मुख पीला किया। रूपै किया सुस्वेत ॥ जन रज्जब सुवियोगहीं। जु साधु किया न हेत ॥ ११ ॥ जोंडैके सुख सों रह्या। जड काढी जग माँहिं ॥ रे रज्जब संसारमें। सो फिरि आवै नाँहिं ॥ १२ ॥ रज्जब तूठी त्रिभुवन। कर तो त्रिय तसकार ॥ सो जोगी जसवंत जुग। जगमें जै जै कार ॥ १३ ॥ रज्जब आये रहितमें। अरि अबला अनमेल ॥ तीनि त्रिया तस कारि करि ॥ खेलि चले ये खेल॥ १४॥नर नारी न्यारा भये। निकसि गया नौखण्ड ॥ रज्जब राता राम सों। रही सुमाया मण्ड ॥ १५ ॥ रज्जब त्यागी घर घरानि! पर नारी न सुहाय। अहि अपनी तजि काँचुली। काची पहिरे जाय ॥ १६ ॥ मनसा वाचा कर्मना। गहै न त्यागन हार ॥ 'रज्जब रुचे न ऊधले। उर अबलार अहार ॥ १७ ॥ रज्जब रविकूं दरसतें। अरुचि छोंक चखि नीर ॥ सकति सुन्दरी सन्मुखै। सो गति साधू वीर ॥ १८ ॥ कायर कोटहुं सो गिरहिं। कंध्यहि न लेहि करवाल ॥ त्यों अधपति अबलहुं सुडरि। गहैं गरीबी हाल ॥ १९ ॥ साधु सुतकै जाव नैं। हरि सिद्धि नहिं हेति। पूत नीपजै मातमरि। खोटा खरचरा खेत ॥ २० ॥ बादल बाइ बारि नर मोती। सगुण निरगुण रोखे सग। केलिकपूर बहुरि नहिं आवै। यूं रज्जब बींधा वैराग ॥२१॥ धनिज्यूं निकस्या धोंम ज्यों। रह्या सुनिकरा सीर ॥ रज्जब तीर कमाण ज्यूं। निकसि फिरै बहु वीर॥ २२॥पाणी पारे परि रमहिं।

बामा बैद न दूर ॥ पै उभै न पावै उभै कर । जो व्है गये कपूर ॥२३॥ प्यारे प्राण कपूर है । उभै उडै ममि साथ । येकसुबांमा बैद करि । येक सुनांवहि हाथ ॥ २४ ॥ बिरक्त तापहुं पौंणि की । सो समि कही न जाय । बीज बुहारीकी पाडैंणीं । नर देखहु निरताय ॥२५॥ धौं गति टूटै एकको । सालरि गति सब कोय ॥ रज्जब टूटा सो भला । जो फिरि हरया न होय ॥ २६ ॥ मिहरी सुंगोडी भई । साधु मन भये काग ॥ जन रज्जब जे यों तजै । ताके मोटे भाग ॥२७॥ मूंगौंडी बाईस तजि । त्यूं बैरागी तजि बाम ॥ पंखीकी थरि लीजिये । रज्जबसरै सुकाम ॥ २८ ॥ नारीनैनन देखिये । श्रवणसु सुनिये नांहिं । बैयर बचन न बोलिए । रज्जब रस भंग माँहिं ॥ २९ ॥ माता मेरी सकलहिं । जो जनमीजगि आय । जन रज्जब जननी सबै ॥ कासों विषयक माय ॥३०॥ जा मातामें हमि भये । सो माता सब ठौर॥रज्जब विरच्या यूं समझि । नहीं भजन कोइ और ॥३१॥ सबही माता सब बहन । सब पुत्री करि जानि । रज्जबके रमणी नहीं । समझा सतगुरु ज्ञान ॥३२॥ रज्जब निकसे पूत व्है । पैठे पुरिखन होय॥ नाता माताका रह्या । सो जन बिरला कोय ॥ ३३ ॥ नारीनैनन बिलसिये । सुंदरि स्वपनै त्याग ॥ जन रज्जब जगि वह जती । वंदनीय वैराग॥३४॥ मनसा नारी त्याग करि । मन वैरागी होय ॥ रज्जब राखे जतन यहु । जती कहावै सोय ॥ ३५ ॥ रज्जब दारा देहकूं । परसै पुरिखन प्राण । बालिक विसन न ऊपजै । सो वैरागी जान ॥३६॥ पंच विषय पंचौं रहित । मनसें मनोरथ त्यागि । रज्जब लायक रामकी । यहु उत्तम वैरागि ॥ ३७ ॥ मनसा पंच भरतार तजि । जै वैरागनि होय । रज्जब पावैं परम घर । जहाँ न सुख दुख होय ॥३८॥ जन रज्जब तनसों तरक । मनकी मानें नाँहिं । सो विरक्त

ब्रह्मण्डसें। बैठा निज मत माँहि ॥ ३९ ॥ माया मोहमदनमन मारै। काया कसणी दण्ड ॥ सो रज्जब विरक्त सही। घरहीमें बनखण्ड ॥ ४० ॥ सूकि विरख संसार यहु। पंखी प्राण तजि आस। रज्जब पत्र न फूल फल। त्रिविधि भांति सुख नास ॥४१॥ मृतककूं दवा नहीं। क्या फूके बिन आगि ॥ रज्जब रीते भाव बिन। सो प्राणी दे त्यागि ॥४२॥ रज्जब रीते प्राणमें। हेरि चढै क्या हाथ। बैदन करई बैदगी। मुये शरीरों साथ ॥ ४३ ॥ रज्जब रीता आतमा। जैहिरदै हरि नाँहिं ॥ तहाँ समागमको करै। सूने मंदिर माँहिं ॥४४॥ पिण्ड प्राण बिन कछु नहीं। त्यूं आतम बिन राम। सूंने सदनों शोभ क्या। रज्जब रीती ठाम ॥४५॥ भेडन चाटै भेंडकूं। सुख दुःख व्है भय भीति। रज्जब तैसी ठौर तजि। लै पशु की रस रीति ॥४६॥ रज्जब चाटै भेडसुत। जब लग शुद्ध शरीर। सुरट शुंड पारसि आवतूं। सुखमें लै नहिं वीर॥४७॥ तनमन त्रिगुणी त्याग करि। आतम उनमनि लाग॥ सो रज्जब रामहिं मिल्यूं। घट पट अंतर भाग ॥४८॥ ध्रुव अनाथ व्है नीकस्यो। तब सों सरे सब काज। रज्जब पाया प्राणनें। धरै अधरका राज ॥ ३९ ॥

साखी ५७१ अंग १५

॥ अथ सुखिम त्यागका अंग ॥

बसि अबसि छूटहिं सदा। जनरज्जब रिधिराज॥ पै मन है मनोरथ त्यागणै। महाकठिन यह काज ॥ १ ॥ व्याज राज सब त्याग दे। मूळ मनोरथ माँहिं ॥ जन रज्जब जिय जगत सूं। तबलग छूटै नाँहि ॥ २ ॥ तन सूं विषिया छूटही परि मन सूं छूटै नाँहिं ॥ रज्जब कुसुमल तब लगै। गृह वैराग सुमाँहिं ॥ ३ ॥ रज्जबनारी मोहे नरघणें। नरमें नारि अनंत ॥ महलाइत मन माँहिंली। तजै सुसाधू संत ॥ ४ ॥

॥ अथ मोह मरदन निर्मोही का अंग ॥

ज्यूं सालितहुं संबंधी मिलहिं । त्यूं पंचतत्व परिवार । सो संतति कछु है नहीं । रज्जब समझि बिचार ॥ १ ॥ ज्यूं रज्जब नरनावमें । दशु दिशि बैठे आय । पार गये पंथूं पडें । मोहन बाँध्या जाय ॥ २ ॥ बहु बिहंग बैठे विरखि । पथिक बसैं सराय ॥ रज्जब मोहन बंधहिं । नर देखो निरताय ॥ ३ ॥ बैरी मिल हिं सु बैर विधि । रिणी मिले रिण भाय॥ रज्जब चूकै बैर रिण । पीछे रह्या न जाय ॥ ४ ॥ साति कोटि स्वपने की संपति । माया मोह न बंध । रज्जब राख्यूँ देख तूं । कहा होय जाचंद्र ॥ ५ ॥

साखी ५८० अंग १६

॥ अथ संपति विपति मदहरन का अंग ॥

संपति बिपति सुमद हरन । जामें यहमत होय । रज्जब रिधि आये गये जे । रंग न पलटै कोय ॥ १ ॥ रज्जब संपत्ति विपत्ति-में । साहस येक समान ॥ आतम अंकल अतीत वह । पाया पद निर्वान ॥ २ ॥ मान रहत अरुमानमें । सुमन समदरि देखि । संपति मिलै सो ना वँधै । घटै न विपति विशेषि ॥ संपति में सूधे धसो । विपत्ति मध्य बहु वंक ॥ ३ ॥ रज्जब मन सुमंयकसे । नहिं ईश्वर नहिं रंक ॥४॥ पूजा पुष्टि सूं दीन व्है । विन पूजा बलवंत । रज्जब लीनी बाल बुधि । समझ्या साधू संत ॥ ५ ॥ सँपतिमें सिमट्या रहै । विपति विगारे जोय । साधक लीज्यूं जायकी । गुण नहिं व्यापै कोय ॥ ६ ॥ आकिल अधिरथ शक्ति सलिल लेहिं । तो तन कोमल कोर ॥ रज्जब रहता उभैरेसे । काया कष्ट कठौर ॥७॥ बहु पूजामन लघु भये । सुंदर सेवा दीरघ । रज्जब अज्जब देखिया । महंत महो दधि मघ ॥ ८ ॥

साखी ५८८ अंग १७

॥ अथ लैका अंग ॥

रज्जब ल्यौ मधि लाधिये ॥ लाँबे लोक अनंत ॥ आतमके अंतर उठै। कामनिं पावै कंत ॥१॥ ल्यो लाग्यो लहिये अलह। लौ में लूटि अपार। रज्जब लौ लहिये लक्या उर आनन्द अपार ॥ २ ॥ लौकी लाठी मारि तूं। मींच सुमारी जाय। रज्जब ल्यो बालहिं मिलै। लौमें काल न खाय ॥३॥ रज्जब लौ में लाभ है। लीन हुवा रहु माँहिं ॥ लौमें लत लागै नहीं। और खता मिट जाहिं ॥४॥ जन रज्जब या लोकमें। ल्यो निसतारन हार॥ आदि अंत मधि सुनि महिं। लघु दीरघ लौ लाय ॥५॥ रज्जब लाइकठौर क्यौं। ल्योंमें रहै सुलाज। लघु दीरघ है लागि ल्यो। ल्यो करणी सिर ताज ॥६॥ ल्यो मारग लूटैं नहीं। लोभी लूटणहार ॥ रज्जब पगि लागे चलहिं। परपंची सिरदार ॥ रज्जब लाहा लाभ ल्यों। टूटै टोटा हानिं ॥ सावधान साधें रही। रेजीव जीवनी जानि। ल्यो सुमिरन धुनि ध्यान धरि। चितवनेह करि नाम ॥ ८ ॥ जन रज्जब जपि जिकरि रटि। सुरति सभालैं राम ॥ ९ ॥ बंदेकूं यहु बंदगी। साहिब करना याद ॥ यह सेवा सुमिरन इहै। इहैं जिकरि करि याद ॥ १० ॥

साखी ५९८ अंग १९

अथ सुमिरन का अंग।

राम नाम मूलमंत्र। सत्य नाम निरंजनं ॥ यथा धावै तथा पावै। भजैं भरिये भंजनं ॥ १ ॥ रज्जव वटि जटि नाँवसूं। आठों पहर अखण्ड ॥ सुमिरन बिन सौदा नहीं। निरख देखनो खंड ॥ २ ॥ इसमाया मंडाण मधि। सुमिरन सम कछु

नाँहि ॥ सो अधार उरय राखिये । जन रज्जब जिय माँहि ॥ ३ ॥ बावन आखिर वारिनिधि । मधि रतन रंकार ॥ रज्जब लिया विलोय बित । आतमका आर ॥ ४ ॥ रज्जब भजन भण्डारमें । दीरघ दौलति दोय ॥ इहां सुखी संसार मधि । आगै आनंद होय ॥ ५ ॥ रैणाइर रंकार मधि । मुक्ता रिधि सिधि मांहिं ॥ जन रज्जब मथिजाय कर । रतनहुं टोटा नाँहिं ॥ ६ ॥ साहिबकै घरिसौं जबहुं । सुमिरन समि कोइ नांहिं ॥ रज्जब भाजि भगवंत व्है । सकल बोलता माँहि ॥ ७ ॥ रज्जब बंदा बंदगी । कियूं सरै सब काज ॥ सेवग सेवा करि लहै । सिरि सहित साहिताज ॥ ॥ ८ ॥ अकलि उजास अनंत बल । रिधि सिधि निधि मधि नाम ॥ रज्जब आवहिं शिव शकति । सति सुमिरन जिहिं ठाम ॥ ॥ ९ ॥ रज्जब अज्जब रामधन । बिघन रहित बहु माल ॥ वित बे हद जाकौं मिलै । भाग भले नहिं भाम ॥ १० ॥ तीन लोक चवदह भवन । अरु ब्रह्मड इकीस ॥ सब ठाहर सीझें सुमरि । रज्जब रटि जगदीश ॥ ११ ॥ चार जुग चहुँ वेद सुखि । सबै डिढावहिं नाँव ॥ रज्जब सिद्धि साधिक कहै । यहु सुमिरणकी ठाँव ॥ १२ ॥ षट् दरशन नावैं कहैं । नावैं वेद पुरान ॥ तो रज्जब नामें गहहु । पाया भेद विनान ॥ १३ ॥ सबही वेद विलोय करि । अंति दिढावै नाम ॥ तौ रज्जब जगदीश भजि । इतनाही है काम ॥ १४ ॥ साधु वेद बोलहिं सूयूं । राम कहे सब कीन । जन रज्जब जगि उधरहीं । जो जीव जगपति लीव ॥ ॥ १५ ॥ रज्जब पैठे राममें । सोरट द्वारे होय ॥ मिलिबैको मारग यहै । और न दूजा कोय ॥ १६ ॥ साधु वेद सारे कहै । सब तजि सुमिरन लाग ॥ रज्जब रत रंकार यूं । मसतागि आया भाग ॥ १७ ॥ रज्जब टीका नाम को । वेद कुरान सुदोहिं ॥

यूं तत्ववेत्ता त्यागि सब । हरि सुमिरन करि लेहिं। १८ ॥ नाम लागि नर निस तरहिं । हिंदू मूसलमान ॥ उभय ठौर एकै कही। रज्जब वेद कुरान ॥ १९ ॥ गगन गुडी कुंभ कु पिवै। त्यूं अगमन नर नाथ ॥ तौ तीनो क्या दूरि है। जै रज्जब रज हाथ ॥ २० ॥ एक अलिफ में सब इलम। दुलिकलेव कुरान ॥ हत्या तजि हाफिज भया । जन रज्जब सब जान ॥ २१ ॥ सब इल्मो सिर अलिफहै । कलि कामिल इस माँहि ॥ तू ताभे पै बस्त हो। और कह्या कछु नाहिं ॥ २२ ॥ रंकार अलिफ चहुँ वेदमें । है आतम अर वाहि ॥ रटि रज्जब कण लीजिये। भूलि न कूक सखाहि ॥ २३ ॥ रंकार अलिफ रोटी बडी। रज्जब रुचि सू खाय ॥ भूख भगे भगवंत लग। यह धावण की राह ॥ २४ ॥ रै रीझया रामजी। आलिफ अल्लह अस नाव ॥ रज्जब दोन्यूं एक है। मन बच करम करि गाव ॥ २५ ॥ रज्जव राम रहीम कहि। आदि पुरुष करि याद ॥ सदा सनेही सुमिरिये। जन्म न जावे बादि ॥ २६ ॥ अलह अलह कहतही। अलह लह्या सो जाय ॥ रज्जब अज्जब हरफ है । हिरदै हित चित लाय ॥ २७ ॥ सकल नाँव जीवके सगे। जाय जिगरि रहि जंत ॥ रज्जव राम रहीम रत। मिल्या सुनिर्मल मंत ॥ २८ ॥ नाम अनेको येक हैं। तौ भजि राम रहीम ॥ ज्यूं त्यूं सुमिरै सांइया। जन रज्जब सुफहीम ॥ २९ ॥ नाम अनंत अनंतके। सो सब येक समानि ॥ रज्जब जाणें सो सुमिरि । मन बच करम उरु आनि ॥ ३० ॥ नाम अनेको येक गुण। ज्यों बहु बूंदहुं बारि ॥ जन रज्जब जाहिर कही। नर निरखहुं सुनिहार ॥ ३१ ॥ ज्यों आतम अर वात इक। त्यूही राम रहीम ॥ उदिक आब कछु द्वै नहीं। रज्जब समझि फहीम ॥ ३२ ॥ साहिब सका एक है। राखै नाम अनेक ॥

रज्जब समझे समझती। पूरन परम बमेक ॥ ३३ ॥ रज्जब नाँव सुयेक के। अनंतो कहे अनंत ॥ कोइ सुमिरहु एक फल। बेला वंदत्य महंत ॥ ३४ ॥ सो तू सांई सुमिरिये। वैठ्या ब्रह्म समाधि ॥ रज्जब रामहिं ले उठै। लैलाध्या मधि चाल ॥ ३५ ॥ लीये सूता ले उठैं। सुख ह्रदै हरि नाम ॥ जन रज्जब ज्यों जीव सब। अपने अपने काम ॥ ३६ ॥ ज्यूं योगी मृग सिंह सों। विप्र जनेऊ जानि ॥ त्यूं रज्जब रामहिं गहहु। तक्कि हारिलकी बाणि ॥ ३७ ॥ तन मन ले सुमिरण करै। रोम रोम रटि राम ॥ पूरन जब जगदीश भजि। सरै सुआतम काम ॥ ३८ ॥ सुमिरण सुरति संभालना। अब गति यादि अराध ॥ भजन इहै भूलै न प्रभु। रज्जब निजमया लाध ॥ ३९ ॥ बंदे कूं करि बंदगी। साहिब करना याद ॥ यह सेवा सुमिरन इहै। इह जिकरि करि यादि ॥ ४० ॥ तूंहीं तूंही तनमें करै। इकततत्रिख तिहुं काल ॥ जन रज्जब रुचि सो रटै। भाग भले तिहिं भाल ॥ ४१ ॥ रज्जब प्राण पिण्ड ब्रह्मण्ड मधि। जीव जगत गुरु नाम ॥ संत सजीवनि सो सुमरि ॥ तिनकी मैं बलि जाम ॥ ४२ ॥ नामलेत निर्भय भये। साधू सुर नर शेष ॥ जन रज्जब लै लूटि है। मिनषा देही भेष ॥ ४३ ॥ सदा सनेह रहै सुमिरन सूं। भाग भजनमें भीगाभाव। जन रज्जब जपि जीवन जीया ॥ मिनषा देही पाया डाव ॥ ४४ ॥ सब ठाहर सु उपाधि है। सुमिरनमें सु समाधि ॥ रज्जब गुरु प्रसाद सों। सो ठाहर सुख लाध ॥ ४५ ॥ सुमिरण सतुवा पीजिये। तौ नख सिख शीतल होय ॥ दूजी ठहर दहणि सब। रज्जब देखो जोय ॥ ४६ ॥ सुमिरण शहत सुपीजिये। प्राण पिंड द्वै पोख ॥ रज्जब रोग कहां रहै। भागै अंतर दोष ॥ ॥ ४७ ॥ सुख अनंत हरि नाममें। जाका वार न पार ॥ जन

रज्जब आनंद है । सुमिर यूं सिरजन हार ॥ ४८ ॥ सकल सुखी हरि सुमिरतूं । मनसा बाचा मानि ॥ जन रज्जब रुचि सों रटी । यह जीव जीवनी जानि ॥ ४९ ॥ रज्जब अज्जब काम है । राम नाम रुचि सेव ॥ आठौ प्रहर अखंड रटि । मानिख सुहै देव ॥ सांई सुमिरन सत्य है । सदगति सुमिरन हार ॥ जन रज्जब युग युग सुखी । बकता सुरता पार॥५१॥ सुरति माँहि सांई सुमरि । नाव निरति मधि राखि ॥ जन रज्जब जग उद्धरैं । सतगुरु साधू साखि ॥ ५२ ॥. रज्जब अज्जब यह सता । निशि दिन नांव न भूलि ॥ मनसा वाचा करमना । सुमिरन सांब सुखमूल ॥ ५३ ॥ सुमिरन सब संपात्ति नहीं । धन नहिं ध्यान समान ॥ वित्त यह बारंबार लै । रज्जब रिधि रट जान ॥ ५४ ॥ निमिष मुहूरत नाँव ले । तिल पल सुमिरन होय ॥ जन रज्जब इस उमरिमें । बरिया साफिल सोय ॥ ५५ ॥ सोई बेला सोई घडी । सो छिनमनि रमाति ॥ रज्जब रहिये राम में । और अकारथ जांति ॥ ५६ ॥ सुमिरन में सुकृत सबै । जै मन बच क्रम होय ॥ जन रज्जब चग पति मिलै । भेद न भासै कोय ॥ ५७॥ सब सुकिरत सेवग किये । जब जीव जगपति लीन ॥ रज्जब राम बिसार हूं । विधि बुराई कीन ॥५८ ॥ नांव लेत नेकी उदै । विसरति बदी होय॥ जन रज्जब जाणी जुगति । परताखि विदी सै दोय ॥५९॥ रज्जब तिरिये राम भजि । बूझै राम विसारि ॥ जगपति जाण्यौं जीति है । हिरदै नई हित हारि ॥६०॥ निर्भय प्राणी नांवमें । सो भूले भै पूरि ॥ ज्यूं रज्जब सुखसीन जळ । दुःख दीरघ जब सीन ॥ ॥ ६१ ॥ नाँव नेह सेती भजै । तौ कोई गुण वैरायै नाहिं ॥ वे हरि सुमिरण हेत बिन । तौ इंद्र दग्ध माँहि ॥६२॥ नाज नाव की येकमति । पाणी प्रेम सुयोखि ॥ इन दोन्यूं कै दोय बिन ।

रज्जब रवि गण दोष ॥ ६३ ॥ रज्जब नांव नराधिपति। सकल अंग उमराव ॥ मैले कारिज सिधि व्है। अमिल मडै नहिं पाय ॥ ॥ ६४ ॥ अज्ञान कष्ट अठ सठ सहित। व्रत सु रांजे कीन ॥ जन रज्जब हरि नाम में। मन बच करम जो लीन ॥ ६५ ॥ सुमिरण करै सु शासतर। बुद्धि उपजै सो वेद ॥ विषया तजै व्याकरण। रज्जब पायो भेद ॥ ६६ ॥ असथूल सु अखिर अरथ हरि। काढै पण्डित प्राण ॥ रज्जब ज्ञाता गुणी। सो समझा सोई सुजान ॥ ६७ ॥ अरथ किया तिनि प्रानने। तन मन लायौ ठौर ॥ रज्जब रहिगया राममें। भूलि न भस्र और ॥ ६८ ॥ कौडी कौडिन चाहिये। कह तूं केवल राम ॥ रज्जब दम दम सुमरिये। नहिं दामो सों काम ॥ ६९ ॥ दया रूप नरु तरु मई। पै गुन स्वादु न जाहि ॥ ब्रह्म अगनि निज नाँव विन। रज्जब सुधिन माँहि ॥७०॥ सप्त धातु तन शुद्ध व्है। पण्डित पावक प्रभु नाम॥ रज्जब रज मल ऊतरें। वासुदेव बलिजाव ॥ ७१ ॥ सप्तधातु पलटै सुतन। परसे पारस नाँव ॥ रज्जब कटै कलंक कुल। प्रभु प्रभुता बलि जाव ॥ ७२ ॥ हरि सुमिरत संशय हरै। पाय जाहि सों जाहि ॥ जन रज्जब जगदीश भज। नौंनिधि है जा माँहिं ॥ ॥ ७३ ॥ क्रमहुं क्रम सु नांव निज। जम का जम हरि जाय ॥ रज्जब रटतूं नां रहै। प्राण पिंडके पाय ॥ ७४ ॥ रज्जब बीरजे नाँव निज। रिधि सिधि डाल बतीस ॥ वडै पत्र प्रभुता अनंत। राम नाम फल शीस ॥ ७५ ॥ घट दीपक बाती पवन। ज्ञान जोति सु उजास ॥ रज्जब सींचै तेल लै। प्रभुता पुष्टि प्रकाश ॥ ७६ ॥ नांव निरंजन नीरहै। सब सुकृत बन राय ॥ जन रज्जब फूल फलै। सुमिरन सलि सहाय ॥ ७७ ॥ सुमिरन सेवा मूल है। सब सुकृत शृंगार ॥ रज्जब शोभा सकल की। देखौ सुमिरन हार ॥७८॥

नाँव नाँक बिनु कछु नहीं। सुकृत सबै शृंगार॥ रज्जब रुचै न राम बर। तामें फेर न सार ॥ ७९ ॥ सब सुकृत हैं सुनि सम। एकाएक सुनाम ॥ पिष्टि लागि दस गुन सबै। नाहित नाँही ठाँव ॥ ८० ॥ रज्जब भव समुंद सिर परि धरि ॥ नांव निरंजन नांव ॥ जाया चाहै पारकौं। सौ प्राणी चढि जाँव ॥ ८१ ॥ जय जहाज जल निधि जगत। जीव चढौ कोइ आय ॥ रज्जब पारस परम गुरु। सो पद परसै जाय ॥ ८२ ॥ रज्जब अज्जब देखिये। जय जगदीश जहाज ॥ प्राणी पहुंचे पार चढि। सरै सु आतम काज ॥ ८३ ॥ बोहिथ विन क्यूं समंद लंघिय। औषधि बिन क्यूं रोग ॥ त्यूं रज्जब निज नांव बिहुना। कदे न निपजे जोग ॥ ८४ ॥ ब्रह्म बिरछको सहस जड। सबही औषधि यादि॥ रज्जब रोग कहां रहै। खायर दीज्यो दादि ॥ ८५ ॥ देखि दह दिशि नांहिं मांगै। रज्जब उलटा उनमन लागै ॥ ८६ ॥ सुमिरन सांच उतरि वा पार। नौलख कावरू एक दुवार ॥ समझि सुहागा रूप। सांच सहित सुमिरन करै ॥ रज्जब जुगति अनूप। जाते कंचन करता गरै ॥ ८७ ॥ निहचै परि नावै नहीं। करणी वडा करार ॥ जन रज्जब सब सोधि कर। काढ्या सुमिरण सार॥ ॥ ८८ ॥ रज्जब निहचै नाँव परि। भाव भगति की भीति ॥ सो सुदृढि निहचल रहौ। और सबै भै भीति॥ ८९ ॥ भगति भाव लीठा हरै। चपल चावली जाय॥ रज्जब समझि असमझि क्या। भजन भेखि निरताय ॥ ९० ॥ रज्जब ररंकार सों मैं मैं मनसा नाँहि॥ सदा सुखी सुमिरन करै। महा मगन मन माँहि॥ ॥ ९१ ॥ लिख्या पढ्या सीख्या सुण्या। जीव कह्या जब राम ॥ मनसा वाचा कर्मना। ये ताही है काम ॥ ९२ ॥ पाव नांव छाडै संसारा। अरधै नांव शरीर विसारा॥ पौंण नांव प्रति

त्यागी । सेर नांव सांई श्रुति लागी ॥ ९३ ॥ नींद लागि होई निरमूलै । तौ सुमिरन संगि क्यूंन सब भूलै ॥ पासि पसारा परसै नांहिं । यूं रज्जब न्याराहै माँहिं ॥ ९४ ॥

साखी ६४३ अंग २०

अथ भजन भेदका अंग ।

सब कसणी साधन किये । त्यागी सूर सुजान ॥ जो रज्जब रामंहि भजै । मन मनसा धरि आन ॥ १ ॥ जन रज्जब जंजाल तजि । मन मनसा करि ठाय ॥ करने कूं कहु क्या रह्या । यूं लागा जब नाँहिं ॥ २ ॥ रज्जब राखौं राम में । पंच पचीसूं मन्न ॥ सब से भेटि सुमिरन करै । सोई साधू जन्न ॥ ३ ॥ रज्जब सुमिरै राम कूं । रोंकि दसों दिशि द्वार ॥ नख सिख राखै नाम में । योंही पैला पार ॥ ४ ॥ जन रज्जब जगदीश भज । आतमके अस्थान ॥ सुख सागर सबूह की । अंतरि उघडै खानि ॥५॥ रज्जब भजि भगवंत कूं । तन मन भीतर पैठि ॥ निरमल नैनूं निरखि निधि । नाभि निरंतरि बैठि ॥ ६ ॥ नाभि निरंतरि नांव बिन । राखै भाखे नांहिं ॥ रज्जब सब पडदे उठे । जाके यहु मत माँहि ॥ ७ ॥ नांव निरंजन लीजिये । तन मन आपो गाल ॥ तौ रज्जब रामहिं मिलै । वैठै सालहिं सालि ॥ ८ ॥ नांव निरंजन लीजिये । तन मन आतम माँहि ॥ जन रज्जब यूं सुमिर तूं । परम पुरुष मिलि जाँहिं ॥ ९ ॥ अस्थिर आतम एक पल । रज्जब भजहि राम ॥ मन मोती ज्यूं नीपजै । स्वाति न छत्री नाम ॥ ॥ १० ॥ नहिं सु निकसै आरती । छति सु गायब होय ॥ रज्जब दरपन सती के । परतख दीसै दोय ॥ ११ ॥ रज्जब साधू सन्त राम कहै । पर हरि तन धन प्रीति ॥ इष्ट अभ्यासै उभयकूं । तजि

भज ठीर सरीति ॥ १२ ॥ एक बंदगी विश्वमें। येकै ब्रह्म सु हाय ॥ रज्जब स्ववण स्वंति की। वारि बूंद गुण दोय ॥ १३ ॥ तन सुमरिनढि कूंचडस। रहट रूप उनहार॥ रज्जब सुमिरन शून्य मन। विरखा विपुल अपार ॥ १४ ॥ अराध अराधहु अंतरा। भजनि भजनि बहु भेद॥ रज्जब पावै एक को। नर निज नांव न खेद ॥ १५ ॥ भगवंत भजन सब विधि भला । पाये मनिषा जूनि ॥ रज्जब सुमिरन सो सही । जापरि सरब सूनि ॥ १६ ॥ सुमिरन लागे लोग बहु। परि लहिं नटावी ठौर ॥ रज्जब मिलि रग राम सों। बह अराध कोइ और ॥ १७ ॥ औषधि अकल अराध है। सब संतनिकी साखि ॥ रज्जब रोग न तन रहै। कोई ल्यो पछराखि ॥ १८ ॥ नांव नेह बिन लीजिये। ज्यूं रूखा खाया नाज। रज्जब पुष्टि न प्राण व्है। मरैन जीवनि साज ॥ ॥ १९ ॥ काचे पाये रूखे सूखे । नाव नाज नहि दोख ॥ पै छप्पन भोग सहित जु जीजै । सो कछु औरे पोख ॥ २० ॥ रज्जब भै भगवंत कै। रोम कहै उठि राम ॥ अऊट कोडि रटि रोक फल ॥ येकहिये कहि राम ॥ २१ ॥ ऊचा नीचा होय जग। करि डंडौत निमान ॥ सु रोम रोम रज्जब भया। गुरु गोविंदके कान ॥ ॥२२॥ अठार भार ऊभी भई। आये अबिगति नांव॥ रज्जब जीये रोम रस। सो बोला बालि जांव ॥ २३ ॥ रज्जब माया ब्रह्म का रोम रोम रस पीन ॥ सो बिढै तिन विछुडतैं । जैसें जल विन मीन ॥ २४ ॥ जन रज्जब विछुडत मरि है। जिनके अमल अ-राध ॥ मनसा वाचा करमना। साखी सतगुरु साध ॥ २५ ॥ प्रीति निम्रित प्रभुता प्रभु । चतुर स्थान निक गौन ॥ रज्जब पावैं प्राणपति । भ्रित भगवंत सु नौन ॥ २६ ॥ सरियत सेवं शरीर की । तरी खटे दिल राह ॥ मोहि मारफत कीजिये ।

हकीकत मिल जाह ॥ २७ ॥ धरम जोग ब्रह्मंड मधि । करम जोग पिंड माँहिं॥ भक्ति योग सो प्राण धरि । आगम जोग ठहरा हिं ॥ २८ ॥ मंणिये मोहन नाम सब । सूत समीरन मेरु ॥ जन रज्जब हित हाथ ले । आठों गहर सुफेरु ॥ २९ ॥ अकालि कष्ट सेंही घडै । मणियें नांव अनंत ॥ रज्जब माला मोहनी । सुमिरै साधू संत ॥ ३० ॥ पंच पचीसों त्रिगुण मन । ये मणियें जिन फेरि ॥ रज्जब माला माँयली । जोगेश्वर जय हेर ॥ ३१ ॥ मारुत मोज सु माला मणियें । मनहुं उधारण मंत॥ रज्जब जूना जाप यह । जोगेश्वर सुमिरंत ॥ ३२ ॥ माला घटि मणियें सबै । सुमिरै सांई साध ॥ रज्जब तुच्छतसबीरही । मालां मिली अगाध ॥ ३३ ॥ रज्जब माला माँहिली । जाको सतगुरु देय ॥ सो सुनि कांधै काठका । कबहुँ भार न लेय ॥ ३४ ॥ रज्जब सुमिरन माहिला । माला रहित सु होय । पंच पंचीसों त्रिगुण मन । विरला फेरै कोय ॥ ३५ ॥ विदा होय बाइक बदन । छूटहिं खांस शरीर ॥ तन तब काष्ट करकौनाकै । सुमिरण सुरत सधीर ॥ ३६ ॥ रज्जब उर करि कै भजन । कछु पाडा पडि जाय ॥ यथा रूप या ठौर बिन । गौरी नांव बुलाय ॥ ॥ ३७॥ रज्जब उर करि कै भजन । अंतर द्वै द्वै हाथ ॥ आतम अबला धाम में । बरि बाहरि निज नाथ ॥ ३८ ॥ रंग महल रंकार मधि । रहै जु आतम राम ॥ सो सुख मुख न कहि सकै । सुरति लहै विश्राम ॥ ३९ ॥ रज्जब सुमिरन सदन मधि । धरे अधर के सुख ॥ जै कोइ पैठे प्राणियां । कदे न पावै दुःख॥४०॥ सब अखीर साँई सुमरि । रे दिव्य दृष्टि दास ॥ रज्जब रत रह राम में । त्यूंही प्रान पचास ॥ बावन अबिर करि भजै । बेत्वा बावन

बीर ॥ जन रज्जब सुध बुध का । रहै मर्मैं में सीर ॥ ४२ ॥ रज्जब रहै न नाँव बलि। नेह बिना मन बीर ॥ज्यूं चूनै बिन पाथ रह। रोक्या रहै न नीर ॥ ४३ ॥

साखी ७३६ अंग २१

अजया जापका अंग।

शरीर शब्द अरु श्वास करि । हरि सुमिरन तिहुँ ठांव ॥ जन रज्जब आतम अगम । अजपा इसका नाम ॥ १ ॥ सुख सूं भजै सु मानवीं । दिल सु भजै सुदेव ॥ जीव सूं जपै सु जोति में। रज्जब सांची सेव॥२॥ रज्जब मुखि अक्षर मुख सप्त स्वर। मुख भाषा सुछत्तीस ॥ येतो ऊपरि उर भजन । अन अखीर जगदीश ॥ ३ ॥ नेह निनावें सो किया । ध्यान धरया बिन अंक ॥ रज्जब मनहुं जहाज विन । हणवत पहुंच्या लंक ॥ ४ ॥ रज्जब हंस नाम पंखू सुपकारि । आतम जाय अकाश ॥ येक प्रान पा रामई । उठहिं नांव पर नास ॥५॥ नर नग गुटका सिद्ध तन । पंखों बिना उडंत ॥ तैसे रज्जब नांव विन । नेह मागत जहाँ जंत ॥ ६ ॥ रज्जब हित परिहेद हुई । निरख्या नेह निराट ॥ ते खाया पारवाण मुखि । करी सु ऊबट बाट ॥ ७ ॥ नांव सुई पट प्रान पति । सुरति सनेही त्यागि ॥ रज्जब रज तज काठतो । कौन बसत विचि लागि ॥८ ॥ रज्जब रट तूं जीवहीं । चित चात्रि- ग सम जाय ॥ मक्र वक्र वोलै नहीं । आपहरत हरै आप ॥ ॥ ९ ॥ रज्जब रसनां रहति रस । पावै प्राण प्रवीन ॥ बक्र बिना ज्यूं बारि सुख । रोम रोम ले मीन ॥ १० ॥ रज्जब रसना बो- लई । चहुं इन्द्र्युं चुप चाप ॥ ये पंचों कारिज समथ । यूस अ- बोल्या जाय ॥ ११ ॥ सुख मारुत सेती अगम । सुमिरन सुरत

मझार ॥ रज्जब करसी येक को । अजपा जप व्यौहार ॥ १२ ॥ बकर बैंन बाई रहित । होय सु अजपा जाप ॥ रज्जब मन उन मनि लगै । प्रकटै आपे आप ॥ १३ ॥ मिहरि पतिव्रत मीन मत । दोन्यू नाम न लेहिं ॥ पै होत इष्ट अलाहिदे । नेह मांग जीव देहि ॥ १४ ॥ कछी पछी हेत लेहु । अंडे क्यूं उपजंत ॥ रज्जब राम कहे बिन ऐसे । अजपाजाप करंत ॥ १५ ॥ हरि जी गाहक हेतके । नारायण लेहिं नेह ॥ तौ मनसा बाचा कर्म ना । संतो करहु सनेह ॥ १६ ॥ रज्जब जपि जपि जन थके । अजप जप्या नहिं जाय ॥ अगह अब ज्यूं आरसी । आरव्यूं सो न गहाय ॥ १७ ॥ स्वप्नैं मन सुमिरन करै । लगै नहीं तन ताप ॥ अचेत उदर अरभख वधै । योंहै अजपा जाप ॥ १८ ॥ मन पवन अरु सुरति कूं । आतम प्रकटै आप ॥ रज्जब लावै तत्व सूं । योंही अजपा जाप ॥ १९ ॥ ब्रह्मण्ड पिण्ड मन प्राण ताजि । सुखमें सुरति समाय । रज्जब अजपा जाप यहु । नर देखहु निरताय ॥ २० ॥ सुरता सुई समान है । रज्जब वेद विवेक ॥ अंबलबेत अराध में । उभय बसत व्है एक ॥ २१ ॥ सुमिरण शून्य समान है । आतम अभे अनेक ॥ रज्जब बाइ विचारि मिलि । बाट बटाऊ येक ॥ २२ ॥ नांव लिहारी नांपिगा । नदी नाथ निज नाव ॥ पंथ पथिक मिलि एक व्है । यहु अजपा वलि जाव ॥ २३ ॥ जिसु नुक्तै साहिब श्रवहिं । सही सु अजपा जाप ॥ रज्जब पावै प्रान सूं । जा जीवहि दे आप ॥ २४ ॥ प्रेम प्रीति हित नेह सुयारी । राग महुबति सुरति सँभारी ॥ रज्जब सचि धुनि सुआगै । द्वादशकला लगाणि कूं लागै ॥ २५ ॥

साखी ७६१ अंग २२

अथ ध्यानका अंग।

विभूति भूति भगवंत लगि। जेहं सोहं ध्यान॥ यथा धूम पावक सहित। रज्जब शून्य समान॥ १॥ ध्यान रुध्र खीटौ भया। ध्यान सु लेहु काम॥ तैसे रज्जब ध्यान में। प्राण पलटि व्है राम॥ २॥ रज्जब येकहि ध्यानमें। नरनारायण होय॥ मनसा बाचा कर्मना। कीट भ्रंग ले जोय॥ ३॥ परम पुरुष का ध्यान धरि। जैसे चंद्र चकोर॥ जन रज्जब च्यारौं पहर। मेली पलक न कोर॥ ४॥ काछिव दृष्टि ध्यान धरि। अकल पुरुष की ठौर॥ तौ रज्जब सहजै मिलै। परम पुरुष श्री मौर॥ ॥ ५॥ गऊ जाय वनखंड में। धरै वत्स पर ध्यान॥ या रज्जब व्है राम सों। तौ पहुंचे हरियान॥ ६॥ जैसे नटिनी ब्रतै चढि। धरै कौन विधि ध्यान॥ त्यों रज्जब रमि राम मधि। मिलै प्राया पतिप्राण॥ ७॥ ज्यूं कामिनि सिर कुंभ धरि। मन राखै ता माँहिं॥ त्यूं रज्जब करि राम सूं। कारज बिनसे नाहिं॥ ॥ ८॥ ज्यूं विषयी पर नारि सूं। अति गति माडे ध्यान॥ जन रज्जब जगपति मिलै। यों हरि सूं चित सान॥ ९॥ ज्यूं भ्रंगीका ध्यान धरि। कीट भ्रंग व्है जाय॥ त्यूं रज्जब जिव ध्यान धरि। जगपति माँहि समाय॥ १०॥ पंचतत्व धरि पंच रस। प्राण तत्व धरि ध्यान॥ रज्जब राचे बखानि यहिं। जो जेहि ठाहर ठान॥ ११॥

चौपाई।

ध्यान यादि श्रुति निरत संभालि। सप्त अष्ट पाखंती पाल॥ ॥ १२॥ धरे अधर बिचि ध्यान सु होय। विन ध्यान निकट पा-

वै नहिं कोय ॥१३॥ घ्यान ज्ञान माहै रहै । राम काम तर वारि । रज्जब सचिके हाथ में । जे जाणे सो धारि ॥ १४ ॥

साखी ७७४ अंग २३

अथ नाम महिमाका अंग ।

नमो नाम सम कछु नहीं । साधु वेद मत माँहिं ॥ तीरथ ब्रत न जोग जगि । पढ तरि कहे न जाँय ॥१॥ अरध नाम सम कछु नाहिं । जप तप तीरथ दान ॥ षट्र कर्म कष्ट अरु साधना । समसरि नांव न जान ॥ २ ॥ नांव ठांव रोके ना कोई । जप तप तीरथ दान । रज्जब साधन कष्ट सब । सुमिरन समन बखान ॥ ३ ॥ सकल घरम हरि नाम मधि । जप तप तीरथ दान ॥ ज्यूं रज्जब विरछहु बीजमें । बाहरि दरसै पान ॥ ४ ॥ निश्चल व्है नाँवहि भजै । एक मुहूरत मन्न ॥ ता सम कितमन सब कहै । वेद अरुवेत्ता जन्न ॥ ५ ॥ महंत मुखो सेती सुण्यां । रज्जब भजन प्रताप ॥ ज्यूं माया सूं माया उदै । त्यूं नाम निरंजन आप ॥ ६ ॥ वहु विद्या हूनर बहुत । सुमिरन सम नाहिं कोय ॥ रज्जब गुण गुण सो मिलै । नाई सुनर हरि होय ॥ ७ ॥ अज्ञान कष्ट सब शक्तिमें । सौ सेवा हरि नाम ॥ ज्यूं भ्रित भामति राज धरि । सुत संपति द्वै ठाम ॥ ८ ॥ रज्जब नांव धणी सूं नांवका । दीसै तेज अनंत ॥ क्षीनौ धरि क्षौडा भया । साखी साधू संत ॥ ९ ॥ नाव धणी सुंनांवकी । महिमा अधिक बखान ॥ निज वपु धरितौ बुडि गये । नाव तिरे पाखान ॥ १० ॥ फाटै थंभरु मूरति पिवै । मंदिर मुख दिशि आन ॥ रज्जब धनि धनि नाँव बल । पानि तिरे पाखान ॥ ११ ॥ नांवहिं राखै प्राणपति । अपनी ठौर उठाय । तौ रज्जब ता नाँवकी । महिमाँ कही न जाय

॥ १२ ॥ नर नारायण सों बडा। प्रकट नाँव परकाश ॥ दोन्यूं आगै नांवके। सेवक स्वामीदास ॥ १३ ॥ रज्जब नाँव नराधिपति। अंग अनंत उमराव ॥ दलबल महिमा क्या कहूं। देख्या विपुल बणाव ॥ १४ ॥ जुगि जुगि राखी नांवकी। सकट करी सभाव ॥ रज्जब महिमा क्या कहै। वेदन जानै व्याल ॥ १५ ॥ रज्जब महिमा नाँवकी। नरपै कही न जाय ॥ जाकै बसि दोउ देखिये। खुदरति सहित खुदाय ॥ १६ ॥ नख सिख सूरत सकल मधि। मनसा बाचा मानि ॥ तैसे रज्जब नांवमें। नाव धनि परकानि ॥ १७ ॥ मूल डालतरु बीजमधि। त्यूं जन जगपति नांव ॥ रज्जब रीझ्या देखि करि। बडहु बडी निज ठांव ॥ ॥ १८ ॥ रज्जब एकहि नांवमधि। देखी दीरघ ठौर ॥ संत अनंत समावहिं। अस्थल इसान और ॥ बडहु बडा सांई सही। ताहि वडै सति साधु ॥ दोन्यूं आये नांव में। रज्जब नांव अगाधि ॥ २० ॥ शशि सांई तारे सुजन। ध्रुव रूपी निज नांव ॥ प्रदक्षिण देही श्याम सूं। जनरज्जब वलि जांव ॥ ॥ २१ ॥ साधु सांई शीश परि। नांव सदा सिर मौर ॥ रज्जब रीझ्या देखि करि। अकल कलेजहि ठौर ॥ २२ ॥ रज्जब सुमिरनकी सिफति। मोपै कही न जाय ॥ जाकै बसि दोन्यू भये। खुदरति सहित खुदाय ॥ २३ ॥ नमो नाम सम कछु नहीं ॥ धरै अधर बिच और ॥ जन रज्जब तासों बधे। सौ शकती इकठौर ॥ २४ ॥ नमो नाम महिमा अनंत। बोध न बानी माँहिं ॥ रज्जब कहिये कौन विधि। अकल कह्या नहि जाहि ॥ २५ ॥ रज्जब रंचक भजनकी। महिमा कही न जाय ॥ अरध नाइव उद्धरे। नर देखहु निरताय॥२६॥ आदम ईदम औलिया। गहिये अगह अलाह ॥ सिफती नाँवकी क्या कहूं। बंध अबंधूं बाह ॥

॥ २७ ॥ सारंग श्रवसि सुर सुनंत । मगन होत मन माँहिं ॥ त्यूं जगदीश्वर जाय बसि । जन रज्जब जिव जान ॥ २८ ॥ नांहर जरख सुमंत्र वसि । अबला व्है असवार ॥ तौ नांव लेत नर नेहसूं । क्यूंनां व्है करतार ॥ २९ ॥ जन जगपतिके मध्य मन । व्है दिसि जीव इकनाव ॥ रज्जब राखै नांव मन । तिनकी-मैं बलिजाव ॥ ३० ॥ नांव निरंजन जीव है । सो साधु मधि सास ॥ तौ रज्जब हरिक्यूं रहै । बिन आए उन पास ॥ ३१ ॥ नांव नाज जीवन सबहुं । आदमकी ओलाद ॥ औरहु और अहारहै । देखिर दीज्यो दादि ॥ ३२ ॥ काया काष्टमें बंधी । देखो आज्ञा आभि ॥ सो सुकती व्है रज्जब । नाव अंगारे लागि ॥ ॥ ३३ ॥ करम काष्ट कहु क्या करै । जब प्रकटै पावक नांव ॥ अठारह भार अध दम व्है । बासुदेव बलि जांव ॥ ३४ ॥ प्रतिमा पूजा नांव धरि । नातिरे पाखान ॥ सोई नांवनर उर बस्या । सीझै क्यूं न सुजान ॥ ३५ ॥

साखी ८०९ अंग २४

अथ नांव निरूप आगम अकलिका अंग।

नांव नांव आदम गढी । भरया सु आदम भार ॥ आदम खेवहिं अकलि सूं । आदम उतरहिं पार ॥ १ ॥ धनि धनि आदम अकिल । अकलि कल्या धरि नांव ॥ रज्जब रीझ्या देखि करि । बुधि बंधन बलि जांव ॥ २ ॥ नांव नेह नरकै बंध्या । निराकार निर बंध ॥ रज्जब बंधानि आदम अकलि । अकलहिं बांध्या फंद ॥ ३ ॥ अकलि बडी दी आदमहिं । नाँव निनावहि दीन ॥ अगहु गह्या जिहि बुद्धि सूं । अगल समल करि लीन ॥ ॥ ४ ॥ आदमने अचरज किया । नांव सु दीपक राग ॥ ५ ॥

तिमिर हंतसो उर धरहु । रज्जब जागहिं भाग ॥ साकल आतम रामकौं। नांव रूप निज जान ॥ देखि अबंधू बंधना । जन रज्जब हैरान ॥ ६ ॥ मन उनमन मूसंल उभै । हाथा जोडी नांव ॥ बंध अबंधू बंदगी । हिकमति परिबलिजाय ॥ ७ ॥ नांव सबहिं संतौं धरे । गहि गहि गुन उनमान ॥ यहु रज्जब इस ओरतें । सुमिरनका अस्थान ॥ ८ ॥ सबही नाव सुभावके। काटे अकालि विचार ॥ जन रज्जब गुण गुथि करि । जोडे सहस हजार ॥ ९ ॥ जेतिहि कमती हुकुममें । ये सब तिसके नांव ॥ सब साहिब जिस नांवमें । ताकी मैं बलि जांव ॥ १० ॥ नांव निनावें के धरे । संतों सोधि सुभाय ॥ रज्जब माने रामजी । सु मरियुं करी सहाय ॥ ११ ॥ निराकार का नांव तन । अलिफ अलह औजूद ॥ जन रज्जब यहु गहन गति । मालिक है मौ-जूद ॥ १२ ॥ आकाश अनंग आभै गहै । त्यूं अबिगति रस नांव ॥ रज्जब आवै जहांतै । अवनि सुआतम ठांव ॥ १३ ॥ निकल निनांवा शून्यमें । आभा रूपी नांव ॥ जन रज्जब चित चात्रिगा । जल जीवनि जिस ठांव ॥ १४ ॥ यही महादेवते गये । नीर नांव आकाश ॥ सो सहस गुन हो श्रवै । सम किया फिरितास ॥१५॥ जे कुछ उपज्या माडमें । नांव सबहुके नांहि ॥ रज्जब काटे ज्ञानसों । जो लछिमन उनमानि ॥ १६ ॥ नांवनि नांवैं परिधरया । तापरि नरका नेह ॥ यापरि औरन सूझई । रज्जब देखैं येह ॥ १७ ॥

साखी ८२७ अंग २५

अथ भजन प्रतापका अंग।

सुरग रसातलसे सलग । जहां तहां सब ठांम ॥ जन रज्जब

बंदहि सबै। जाहिरदे हरिनाम ॥ १॥ जिहिं नौबति नांवकी। सो प्रगटै संसार ॥ जन रज्जब जबमगि रह्या। सेये सिरजन हार ॥ २ ॥ रज्जब सुकृति नांवकी । नितनौबति जहां बाज ॥ सो सुनियै सब लोकमें ! ऊची अगम अवाज ॥ ३ ॥ डाकै सुमिरन सुकृतिके। दिल सुदमांमां साज ॥ रज्जब छिपि सब जाइये। व्है सब लोक अवाज ॥ ४ ॥ अतिगति सूधा नांवथा। सो कीया निजदास॥ रज्जब छांना क्यूं रहे। बाणी सुजसु सुवास ॥ ५ ॥ तनमन तिल्ली समान है। नांव निरंजन फूल ॥ जन रज्जब सूधे भये। मिलि सूधैके मोल ॥ ६ ॥ अठार भार विधि आदमी। चंदन चिंतन नाम॥ रज्जब सकल सुगंध व्है। धानि संतनि विश्राम ॥ ७ ॥ मन इंद्रिन परिआतमां। तरुवर नींव सरूप॥ हरि चितवन चंदन परसि। रज्जब पलटि अनूप॥८॥ तनमन आतम लोहकूं। मिल्या सुं पारस नांव ॥ तिनि तीन्यू कंचन किये। सति सुमिरन बलि जाँव ॥ ९ ॥ नांव प्रताप पखान तिरे जल। तौ प्राणतिरे क्यूं नाँहिं॥ रज्जब रास्यूं देखिये। भजन करहु मन माँहि ॥ १० ॥ देवल फेरया चक्र ज्यूं। प्रतिमा पिंडा माँहिं॥ भ्रित माइ भंजन गढ्या। कुलाल सुचिने नाँहिं ॥११॥ रज्जब मंदिर मूरति सुई सम। चंबक चिंतन नांव॥ अचल चले येके मिल्यूं। बधे कौनकी माव ॥ १२ ॥ मंदिर सूं मूरति फिरी। सुई जिलाई गाय ॥ तौ नामदेवके भजनकी। जन रज्जब बलि जाय ॥१३॥ नामदेव दिवसाचै देखौ। भरथ रसूली धना सुखेत ॥ चार्‍यूं चेतनि पूजिये। रज्जब जस्येन हेत ॥१४॥ दास भाव निज दासका। दीपक रागव्यौहार ॥ आसम देव तमहर जगै। धनि जगावन हार ॥ १५ ॥ जै बिन बीजहिं खेती भई। तौ खेतहिं क्या अधिकार॥ जन रज्जब धनि धनि

धना। कहै सकल संसार ॥ १६ ॥ सूकी सूली सौं हरी। भई भरिधरि भाय ॥ जन रज्जब था ज्जुगलमें। परहि कौनकै पाय ॥ ॥ १७ ॥ जलथलि महिय लिख मिखगी। विष बहिनी अहिलाय ॥ रज्जब इष्टन अष्टमैं। बंदहि बंदहिं भाय ॥ १८ ॥ सिलातिराई समंद सिर। बंधी वरुन परपाज ॥ पै रज्जब वंदन समैं। रामचंद्र सूं काज ॥ १९ ॥ लोहि तेलय दिवनां दहै। सतबादी सु शरीर। तौ रज्जब तिहुतंतमें। कौन बंदिये बीर ॥ २०॥ पंसेरी पिछलै पलै। अगलै बीत ब्यौहार ॥ फडका माँडहिं क्यौंन दिशि। वेत्वा करौ विचार ॥ २१ ॥ रज्जब अंडे भावके। पंखी प्राण सुदीन ॥ सेवाके बलिसुत भये। ठाहर कछू न कीन ॥ २२ ॥ तिन तरुबली आगि विन। बान्हिताकै ब्याल ॥ पावक प्रकटै सकल मधि। सोपनिंग परजाल ॥ २३ ॥ रज्जब साधु कविताकी कलां। शब्द सदा परकाश ॥ वही सुतौ वहि देखतौ। उर आस्यूं तमनाश ॥ २४ ॥ रज्जब अज्जब काम है। जै सुमिरै कोई जंत ॥ सकल लोक सिर कीजिये। उर सेवग भगवंत ॥ ॥ २५ ॥ सब विधि नरके कामकूं। नाम निरंजन सत्य ॥ जन रज्जब जौं ज्यों भजै। ताकी मोटी मत्य ॥ २६ ॥

॥ चौपाई ॥

पति परमेश्वर बीरजनांव। अबला आतम रुति रुचि ठांव ॥ ॥ २७ ॥ मेला या सम कोई नाँहीं। विगति वाल ब्रह्म उपजै माँहीं ॥ २८ ॥

॥ साखी ॥

नांव निधारै धारबहु। काटै सांकलि कोडि ॥ रज्जब हदि हथियार यहु। हथियारहुकी वोडि ॥ २९ ॥ रज्जब एकहि जाप

बंदहि सबै । जाहिरदे हरिनाम ॥ १ ॥ जिहि नौबति नांवकी । सो प्रगटै संसार ॥ जन रज्जब जबमागि रह्या । सेये सिरजन हार ॥ २ ॥ रज्जब सुकृति नांवकी । नितनौबति जहां बाज ॥ सो सुनियै सब लोकमें ! ऊंची अगम अवाज ॥ ३ ॥ डाकै सु- मिरन सुकृतिके । दिल सुदमांमां साज ॥ रज्जब छिपि सब जा- इये । व्है सब लोक अवाज ॥ ४ ॥ अतिगति सूधा नांवथा । सो कीया निजदास ॥ रज्जब छांना क्यूं रहे । बाणी सुजसु सु वास ॥ ५ ॥ तनमन तिल्ली समान है । नांव निरंजन फूल ॥ जन रज्जब सूधे भये । मिलि सूधैके मोल ॥ ६ ॥ अठार भार विधि आदमी । चंदन चिंतन नाम ॥ रज्जब सकल सुगंध व्है । धानि संतनि विश्राम ॥ ७ ॥ मन इंद्रिन परिआतमां । तरुवर नींव सरूप ॥ हरि चितवन चंदन परसि । रज्जब पलटि अनूप ॥ ८ ॥ तनमन आतम लोहकूं । मिल्या सुं पारस नांव ॥ तिनि तीन्यू कंचन किये । संति सुमिरन बलि जाँव ॥ ९ ॥ नांव प्रताप प- खान तिरे जल । तौ प्राणतिरे क्यूं नाँहिं ॥ रज्जब रास्यूं देखिये । भजन करहु मन माँहि ॥ १० ॥ देवल फेरया चक्र ज्यूं । प्रति- मा पिंडा माँहिं ॥ भ्रित भाइ भंजन गढ्या । कुलाल सुचिने नाँहिं ॥ ११ ॥ रज्जव मंदिर मूरति सुई सम । चंबक चिंतन नांव ॥ अचल चले येके मिल्यूं । वधे कौनकी माव ॥ १२ ॥ मंदिर सूं मूरति फिरी । मुई जिलाई गाय ॥ तौ नामदेवके भजनकी । जन रज्जब बलि जाय ॥ १३ ॥ नामदेव दिवसाचै देखौ । भरथ रसूली धना सुखेत ॥ चार्‍यूं चेतनि पूजिये । रज्जब जस्येन हेत ॥ १४ ॥ दास भाव निज दासका । दीपक रागव्यौहार ॥ आसम देव तमहर जगै । धनि जगावन हार ॥ १५ ॥ जै बिन बीजहिं खेती भई । तौ खेतहिं क्या अधिकार ॥ जन रज्जब धनि धनि

धना। कहै सकल संसार ॥ १६ ॥ सूकी सूली सौं हरी। भई भरिधरि भाय ॥ जन रज्जब था जुगलमें। पराहि कौनकै पाय ॥ ॥ १७ ॥ जलथलि महिय लिख भिखगी। विष बहिनी अहिलाय ॥ रज्जब इष्टन अष्टमैं। बंदहि बंदहिं भाय ॥ १८ ॥ सिलातिराई समंद सिर। बंधी वरुन परपाज ॥ पै रज्जब वंदन समैं। रामचंद्र सूं काज ॥ १९ ॥ लोहि तेलय ह्विनां दहै। सतबादी सु शरीर। तौ रज्जब तिहुतंतमें। कौन बंदिये बीर ॥ २०॥ पंसेरी पिछलै पलै। अगलै बीत ब्यौहार ॥ फडका माँडहिं क्यौंन दिशि। वेत्वा करौ विचार ॥ २१ ॥ रज्जब अंडे भावके। पंखी प्राण सुदीन ॥ सेवाके बलिसुत भये। ठाहर कछू न कीन ॥ २२ ॥ तिन तरुबली आगि विन। बान्हिताकै व्याल ॥ पावक प्रकटै सकल मधि। सोपनिंग परजाल ॥ २३ ॥ रज्जब साधु कविताकी कलां। शब्द सदा परकाश ॥ वही सुतौ वहि देखतौ। उर आस्यूं तमनाश ॥ २४ ॥ रज्जब अज्जब काम है। जै सुमिरै कोई जंत ॥ सकल लोक सिर कीजिये। उर सेवग भगवंत ॥ ॥ २५ ॥ सब विधि नरके कामकूं। नाम निरंजन सत्य ॥ जन रज्जब जों ज्यों भजै। ताकी मोटी मत्य ॥ २६ ॥

॥ चौपाई ॥

पति परमेश्वर बीरजनांव। अबला आतम रुति रुचि ठांव ॥ ॥ २७ ॥ मेला या सम कोई नाँहीं। विगति वाल ब्रह्म उपजै माँहीं ॥ २८ ॥

॥ साखी ॥

नांव निधारै धारबहु। काटै सांकलि कोडि ॥ रज्जब हादि हथियार यहु। हथियारहुकी वोडि ॥ २९ ॥ रज्जब एकहि जाप

महँ । जल ज्वाला गुणदोय ॥ अठारै भार आतम उदै । जिमि सुजवासा जोय । ३० ॥ रज्जब भागे भजन सुनि । अघ इंद्री गुण चोर ॥ ज्यूं भुजंग चंदन तजैं । तरुसिर बोलै मोर ॥ ३१ ॥ जन रज्जब रामहिं भजै । पाप रहै नहिं संग ॥ ज्यों रूपककी त्रास सुनि । तरुवर तजै फिहंग ॥ ३२ ॥ पालेके पर्वत गलहिं । देखि शूरकी ताप ॥ ऐसी विधि अघ ऊतरहिं । जन रज्जब हरि जाप ॥ ३३ ॥ गुणतारे माया तिमिर । शीत भमर मन चंद ॥ रज्जब सुमिरन शूरसों । सहिज पडे सब मंद ॥ ३४ ॥ रज्जब भजन भानु उर उदतही । असा होय गुन चारि ॥ तमतारे शशि शीतगत । नर देखो सुनिहारि ॥ ३५ ॥ नांव निरंजन उर बसै । तौ कोइ गुण व्यापै नाँहिं ॥ जन रज्जब सर्प विष । गरुड द्वार मुख माँहिं ॥ ३६ ॥ अहि इंद्री आतम डसी । विष नख सिख रह्यो छाय॥ रज्जब मंत्र सुराम रट । तबहीं उत्तर जाय॥३७॥ दूजी दिल व्यापै नहीं । जेहि हिरदै हरि आन ॥ ज्यों रज्जब रजनी भई । देखो देखत भोन ॥ ३८ ॥ भाव भानु भासतमें । तमतारे गुन नाश ॥ जन रज्जब जननी पड्या । फेरि करै परकाश ॥ ३९ ॥ रज्जब उर गिरिकी गुफा । ज्ञान दीप तम दूरि ॥ चित चेतनि सुचिरा कबिन । तहाँ तिमिर भर पूरि ॥ ४० ॥ पैपूजें कुल कालिवा । सकल नांव सूं जांहिं ॥ ज्यू रज्जब मद भंजना । फूटा गंगा माँहिं ॥ ४१ ॥ जाति पांति कुल सब गये । राम नामके रंग ॥ रज्जब लागा लोहज्यूं । पारसका पर संग ॥ ४२ ॥ तांबेके पत्तर बने । लोहेके हथियार ॥ रज्जब पारस परसतें । कुल कंचन व्यौहार ॥ ४३ ॥ संगति साधू शूरकी । आतम अंभ समान ॥ कालिवां कुठौर कस । सुमरन शून्य बिलान ॥ ४४ ॥ रज्जब कागज ठाठके । मसि माँहें व्यौहार ॥ वेद कुरान सु बं-

दिये। जै विचि आया करतार ॥ ४५ ॥ पहिले चंम सूं चूमि-
ये। जै व्याध्यां बीचि मुसाफ ॥ तौ जाति पाति क्या पूछिये।
सुहबति देखो साफ ॥ ४६ ॥ ग्वाल भीलडी सुमिलि खेले।
शंख वजाया कौने काज ॥ साग अरोग्या कौं नेक धरि। नीच
ऊंचकी रही न लाज ॥ ४७ ॥ नाँवहि भजे सुनिरमले। नीच
ऊंच राव रंक। जन रज्जब रस लीजिये। ईष बंक निकलंक ॥
॥ ४८ ॥ साधू चंदन चंदका। बंक बरन कोइ नाँहिं। वह
शीतल रसु गंध वहै। वहिकै गोविंद माँहिं॥ ४९ ॥ कडवी
मीठी तुम्बिका। आमनींबकी नांव ॥ रज्जब तिरिये चहुं
चढी। तौ कुलकी और न आंव ॥ ५० ॥ रज्जब नीच न नीच
कुल ॥ जैमनि उत्तम भाव ॥ खारस मंद सुधारस निकसै।
तौ कुलका कौन कहाव ॥ ५१ ॥ जै मन उत्तम भाव है। तौ
कुलका क्या भेद ॥ जन रज्जब दृष्टांतकूं। यथा मंजारी मेद ॥
नीम धतूरे आक विष। मधु निकसै उन माँहि ॥ रज्जब व्यरवै
अमृत भया। तौ कुल कारण कोइ नाँहिं ॥ ५३ ॥ यथा पद्म-
नी नीच कुल। केशरि विष्टा होय ॥ रज्जव भुगतै राजवी।
कुल कारन नहिं कोय ॥ ५४ ॥ कुल परवंत नाहिं पूजिये। सुत
प्रतिमाकी मान ॥ त्यूं रज्जब रामहिं भजै। गई सकल कुल कानि
॥ ५५ ॥ दीरघ कुल सु अतेरु बूझै। लघु कुल तारिक तारै ॥
सौ रज्जव गुण केसैं मेटैं। जासौं जलनिधि पारै ॥ ५६ ॥ प्रति-
गई पुरानें। परबत प्रत्यक्ष देखो जाय ॥ रज्जब भरम दिनोंका
भागा। पूजा किसकी होय ॥ ५७ ॥ भजन भोर भगवंत लग।
जाति जोर लग देह। जन रज्जब साधू कह्या। जाणै सो करि
लेह ॥ ५८ ॥ प्रथमें कडुवा बीज था। पुनि पाकै सोइ होय ॥
माधि माटा तानि तोरई। रज्जब लीजे जोय ॥ ५९ ॥ रज्जब दादा

दोजगी । पोता पापी होय ॥ दोन्यू बिचि साधू भया । नाहीं अचरज कोय ॥ ६० ॥ आगा खार समंदमें । पीछै हिवाला मूल ॥ जन रज्जब विचि वंदिये । गंगाका अस्थूल ॥ ६१ ॥ कुला सांकल काया कडी । लोंहामें ज्जुब सीखि॥ रज्जब प्रभु पारस परसि । कंचन होत सु देखि ॥ ६२ ॥ राम नामकी गरज सुनि । बेंधै बंसज्यूं भाव ॥ रज्जब रीझ्या देखिकर । अति आतुर गति चाव ॥ ६३ ॥ आतम फल आतुर उदै । यथा आंवली राति ॥ रज्जब अज्जब देखिये । इस अंकुरकी जाति ॥ ६४ ॥ एक आदमी आवलनि । फल पावै ततकाल ॥ अनिसुअ ठार भार निरस । सहजि सुफल सुनिसाल ॥ ६५ ॥ रज्जब हारि रिधि तिनहुंकी । जो जपि जीवत बाल ॥ मालन मूर्वोको मिलै । जे खाये कम काल ॥ ६६ ॥

सोरठा ।

रज्जब भागी भूख । भजन करत भगवंतका ॥ गये सुदारिद्रदुःख । आपति फिरि आवै नहीं ॥ ६७ ॥

दोहा-या-साखी ।

माया छाया पांव तसि । जबतांई सूरज शीश ॥ रज्जब कही विचारि करि । दीसै विस्वावीस ॥ ६८ ॥ रंकार अलिक भीतरि लिखे । कागद कँवल कलूब ॥ अतुल तुला कैसे तुलै । बिचि वैठा महबूब ॥ ६९ ॥ नर नारायण नांवमें । सुमिरन समिये श्वास ॥ भूले भूति विभूतिमें । रज्जब किया विभास ॥ ७० ॥ तिती बार माया सुकृत । नरहरि नांव समाय ॥ रज्जब छूटै लै लकस । लच्छरि में ह्वै जाय ॥ ७१ ॥ रज्जब जाय जिकरि करै । तितिबर जीवहि जाग ॥ सुमिरन भूलै श्वास रहैं । तब सूता पल

लाग ॥ ७२ ॥ नांव विसारण नींद निज। जागण जपि जग-
दीश ॥ मनवच क्रम रज्जब कहै। खैंचत वेहद दीश ॥ ७३ ॥
निष्काम नाम ले नर नारायण। सुमिरत शक्ति सकाम ॥
रज्जब रजतज काटतौं। भजन भेदगति प्रान ॥ ७४ ॥ नांव
विसारै नीद है। गृह बैराग्य सुहानि ॥ रज्जब रटै सु रैन दिन।
सोई जाग्या जानि ॥ ७५ ॥ झूंठ सांचकै संगि सदा। ज्यूं दीपक
अँधियार ॥ रज्जब लोई लै बुलत। तिमिरन आवत बार ॥
॥ ७६ ॥ रज्जब रीता राम बिन। भरघा भजै भगवंत ॥ मनसा
बाचा करमना। नीकै किया निदान ॥ ७७ ॥ माया काया मसि
मिली। प्राणसुपाणी माँहिं ॥ रज्जब सुमिरन सूर बिन। जीव
जल निरमल नाँहिं ॥ ७८ ॥ रज्जब स्याही सुकल करि। सब
अक्षर अस्थूल ॥ नांव निरमल ठैर दोऊ। बाकी मेलै मूल ॥
कुल छिन कैलौं भरी। काया रीठ समान ॥ नांव अगनि उज्वल
उभै। और उपावन आन ॥ ८० ॥ अंभ आतमा घटा घटि।
तबै बीज बलसंग ॥ भाण भजन मिल तौं रजब। उभै अनूपम
अंग ॥ ८१ ॥ वफ बसुधा जीव जल बडे। पंच स्वाद क्रम
कीच ॥ रज्जब नांव निहंग चढि। तब त्तेन तिन बीच ॥ ८२ ॥
काया कुंभनि पैठ तूं। जीव जल स्वाद अनेक ॥ रज्जब भगवंत
भाण मिलि। उभै रूपरस एक ॥ ८३ ॥ शुद्र वैश्य क्षत्र ब्रह्म।
चतुर वरण वे काम ॥ जन रज्जब मध्यम सब। जो सुमिरै नहिं
राम ॥ ८४ ॥ सुख भुज उपजे पेट पग। पडि धरती धर होय ॥
दंत केश विष्टा अरु नख। रज्जब विछुडे जोय ॥ ८५ ॥ पारस
मय मूरति प्रभू। चतुर वरण लोह भाय ॥ रज्जब कंचन होत है।
ठाहर कहीं लगाय ॥ ८६ ॥

साखी ९१२ अंग २७

अथ साधु परीक्षाका अंग ।

रज्जब नर नग सोसही । आतम त्रास नर उजास ॥ जग जलमें बूझै नहीं । सो हीरा हरिदास ॥१॥ महापुरुष पारस परखि । निहचारूप न रंग ॥ प्राण परवाण सु मानिये । रज्जब पलटै अंग॥ ॥ २ ॥ तन मन तेल कडाहविधि । तपता शीतल होय॥ सो साधू श्रिक बावना । रज्जब लीजै जोय ॥ ३ ॥ रज्जब रचना रहितकी । दरस परस दर संत ॥ नमि संजम वाणी विमल । बदन जोति झलकंत ॥ ४ ॥ नर नक्षत्र दोऊ दिपहिं । नांव धजा जिनि सीस ॥ सो रज्जब कैसे छिपहि । प्रकट किये जगदीश ॥ ५ ॥ हरि हीरा हृदय रहै । सो घट छाना नाँहिं ॥ रज्जब दीसै दूर सों । ज्यूं दीवा भोडल माँहिं ॥ ६ ॥ दुर्बल देही दीन मत । रहै रामकै संग ॥ जन रज्जब जगसूं जुदे । ये संतनिके अंग ॥ ७ ॥ सकलि धरै सो छूतगति । कहीं न बांधै मन ॥ जन रज्जब जगसूं जुदे । सोई साधू जन ॥ ८ ॥ आतम कहीं न बंधई । विन सांई अरु साधु । जन रज्जबता संतकी । पूरन बुधि आगाध ॥ ९ ॥ ज्यूं मुख दोष लहै दरपनमें । फूटा मोती माँहिं ॥ त्यूं रज्जब साधूसूं साधु । मनसावाचा छाना नाँहिं ॥ १० ॥ सब घटमें सांई दरसै । बोलै भया विनाण । रज्जब साधू परखिये । कहि गुण कही बंधाण ॥ ११ ॥ रज्जब परखै प्राणकूं । दिलमें देखै जोय ॥ जैसी व्है तैसी कहै । पूरा पारिख सोय ॥ १२ ॥ नख शिख काढै नजरमें । मनमें तलै निरताय ॥ जन रज्जब दे हाथमें । खोटी खरी बताय ॥ ॥ १३ ॥ जीवकी जाणें जौंहरी । परखै सौंज सराफ ॥ जन रज्जब जाणिरु कहै । सो कहणा सब माफ ॥ १४ ॥ रज्जब मन मँडाण-

कूं । विरला परखण हार ॥ नगनाणें अंग अनंत । बहुविधि वित बिस्तार ॥ १६ ॥ अचेत अवस्था नींद नर । यहु चूकणकी ठौर ॥ पै सूतों स्यावति रहै । सो रज्जब सिर मौर ॥ १७ ॥ ज्यूं जागत त्यूं सोवतै । सुविने माँहि सुहोय ॥ रज्जब पारिख प्रीति-की । लगनि कहावै सोय ॥१८॥ तन त्यागी त्रिभुवन भरे । मन त्यागी कोइ एक ॥ रज्जब रैनि सुपनिमें । लहिये विगति बिवेक॥ ॥ १९ ॥ तनि जोगी मन भोगिय । रहति रुपइये खोट ॥ सुपि-नेके सूलाकमें । उघडीपत्री बोट ॥ २० ॥ मन मुक्ता काचे बुरे । माँहि मनोरथ नीर ॥ रज्जब रामजु जुहरी । पाडा लागै बीर ॥ २१ ॥ मनकी मिटी न लालसा । तनिकरि परसे नांहिं ॥ रहनि रुपइ खोट है । तुछ मति तांबां माँहिं ॥ २२ ॥

साखी ९३४ अंग २८

अथ साधु असाधु परिक्षाका अंग ।

सबगुण सधहित साधु हैं । अन साधे सुअसिद्ध ॥ रज्जब पाई प्राणने । पूरी पारिख लद्ध ॥ १ ॥ भगवंत न भूले सो भला । बुरा विसारै सोय ॥ रज्जब काठे मांडमें । भले बुरे चुनि दोय ॥ २ ॥ त्रिगुण तुला ऊपरि तुले । कंकर गुन है कपूर ॥ सेकसमाने शून्य में । येक धरामधि धूर ॥ ३ ॥ धरे माँहिंसु धरमा ऊपजै । सो धरती व्है जाय ॥ रज्जब साध कपूर सूनि । सुत शून्याहिं माँय समाय ॥ ४ ॥ आकार भार दोन्यू दुसहिं । काकर पुनह कपूर ॥ उभै चढै आकाश दिशि । उभै अवनि मधि धूर ॥ ५ ॥ आभे अवनि सु देखिये । त्यूं साधू संसार ॥ येक समाये शून्यमें । येक रहै आकार ॥ ६ ॥ पाणी अरु पाखानके पर्वत पृथ्वी माँहिं ॥ येक समाये सूर फिरि । येक

अवनि सुछाडै नांहिं ॥ ७ ॥ रज्जब पानी पृथ्वीपर पड्या । पृथ्वी पाणी माँहिं ॥ ज्यूं सलिल समाना शून्यमें । त्यूं अवनि आकाश न जाँहिं ॥ ८ ॥ रज्जब सोना शैला सुत । तुले बराबरि तोल ॥ तौ कछु साधन एक व्है । लहै न समसरि मोल ॥ ९ ॥ दोय नांवके दोइ ले । तुला हाथ हरि माँहिं ॥ जड चेतन सुत तहाँ चढै । मोल एक सो नाँहिं ॥ १० ॥ बस्तु बाट दोऊ तुल-हिं । लिपैं छिपैं सो नाँहिं ॥ रज्जब कही विचारि कर । ताकौ तुला सुमाँहिं ॥ ११ ॥ प्राण पलै है प्राणपति । पिंड पलै सु पखान ॥ भाव भार भेलो तुला । बिगता बसतबखान ॥ १२ ॥ साधू सोनेमें जड्या । खोटा पीतल प्राण ॥ जन रज्जब भोंलै विकै । परख्यूं भिन्न विनान ॥ १३ ॥ रज्जब रतनोंमें फटक । रूप रंग मिलि जाय ॥ आगै आधन एक व्है । विकै न सो समि भाय ॥ १४ ॥ खेचर पैडे बंस व्है । साधू मिसरी माँहिं ॥ जन रज्जब जलमिलि जुदे । भिन्न भिन्न व्है जाँय ॥ १५ ॥

॥ अरिल ॥

संतोंमाँहिं असंतन भूलि समावई । कपटी दीजै काढि कपटि न भावई ॥ ज्यूं पानोंमें पान चुनौती आँनरे । परिहां रज्जब दीजे डारि लगे जब खांतरे ॥ १६ ॥

॥ साखी ॥

ऊपरि संत असंत सम । अंतरि अंतर होय ॥ रज्जब पाणी ईखका । रूप येक रस दोय ॥ १७ ॥ साधु मिसिर मधुर मन । फोकट फटक पखान ॥ जन रज्जब रंग येकसे । चारकूं भिन्न विनान ॥ १८ ॥ साधू पारस परम निधि ॥ और सिला संसार ॥ जन रज्जब बदि एकसे । गुन गति भिन्न विचार ॥ १९ ॥ साधू

कोयल काग जग । दरस येक उनमानि ॥ जन रज्जब बोले विगति । अरु खान पान पहिचान ॥ २० ॥ निरमोल न गतिमें ताग ज्यूं । ईख चढवे खल ॥ रज्जब अहि चंदन मिलै । गुन गति चोरै खेल ॥ २१ ॥ उलटा चलै सु औलिया । सूधी गति संसार ॥ जन रज्जब यूं जाणिले । इनका यहै विचार ॥ २२ ॥ विषै बाई बंसी व्है वहै । बप बादल वितनास ॥ जन रज्जब उलटे बहैं । तिनकी उरधरि आस ॥ २३ ॥ संसारी अरु साधुका । पाया भेद विनाण ॥ रज्जब पारस जल तिरै । बूडै सोई पाखान ॥ २४ ॥ साधू हिरदा शून्य सम । मुकता मल न रहाय ॥ और सकल उर धरमई । बहुविधि विघन उपाय ॥ २५ ॥ संसारी राकेश उर । सांई दरसै माँहिं ॥ साधू दिल सूरज मई । प्रति बिंब पडै सु माँहिं ॥ २५ दरपनमें दीपक द्रसै । दीवै दरपन नांहिं ॥ यूं संसारी अरु साधु कै । व्यौरा उरहु सुमाँहिं ॥ २७ ॥ अंग अंग मिलै नहीं । गुण लखिरण गत गात ॥ तौ रज्जब क्यूं होयगा । साधू समकथि बात ॥ २८ ॥ बादला बंदे शीशपर । सूके सजल अपार ॥ रज्जब रतरी तो नहीं । धन्य जु बरसन हार ॥ २९ ॥ आंखि उठाहर उभै । येक समानि सुनाँहिं ॥ येक दुरंजन समा वही । उगल गलै इक माँहिं ॥ ३० ॥

साखी ९६५अंग २९

अथ साधु महिमा का अंग ।

रज्जब साधु अगाध है । कहिये कौन समान ॥ देखो शिव शक्ति सहित । सेवक व्है तहां आनि ॥ १ ॥ सकल धरे ऊपरधरया । सांई अपना साध ॥ रज्जब महिमा क्या कहै । अस्थल अगम अगाध ॥ २ ॥ कीयें में नाँहीं किया । साधू सम कोइ

और ॥ आय समाना इन्हुमें । इनकूं दीउर ठौर॥ ३ ॥ साधू दिल साँई रहै । हरि हिर दैमें साध ॥ रज्जब महिमा क्या कहै । ठाहर उभै अगाध ॥ ४॥ साध अगाध अगसत है । सांई सुधा समंद ॥ उभै समाने उभै उर । रज्जब रही न बूंद ॥ ५ ॥ वृक्ष बीज मिश्रित सदा । सेवक स्वामी तेम ॥ पाला पानी होत है । पुनि पाणी वै हेत ॥ ६ ॥ माया ब्रह्मने जोकिया । सो उन बाहरि नांहिं ॥ रज्जब अगाध अगाध दिल । उभै समाने माँहिं ॥ ७ ॥ साधु सकति कपूर गति । अकल कला यहि भौन ॥ सगुण निर्गुण होत है । मिलि परमारथ पौन ॥ ८ ॥ अकार भार छाया अरु बास । जन कपूर के च्यारु नाम ॥ अंजन पलटि निरंजन होई । यहगति बूझैं विरला कोई ॥ ९ ॥ साहिब सूं साधू बडे । साधू बडा न कोय ॥ रज्जब देख्या गुरु दृष्टि । सबनींके करि जोय ॥ ॥ १० ॥ सेवक स्वामी येक व्है । ता ऊपरि अधिकार ॥ यथा वुदबुदा वारि सिर । देखै सब संसार ॥ ११ ॥ स्वामी सेवक शिर धरया । आदू अद्भुत बंध ॥ रज्जब पेख्या पहम परि ॥ पुत्र पिताके कंध ॥ १२ ॥ स्वामी करि सेवक बडे ॥ नाही अचरज कोय ॥ रज्जब तरुफर सीसपर ॥ प्रत्यक्ष देखो जोय ॥ १३ ॥ भगवंत भोमि ऊपर दरसैं । वंदे वृक्ष सुभाल ॥ सो रज्जब परमारथी । सब प्राणिहुं प्रतिपाल ॥ १४ ॥ सांई शून्य समान है । वंदे बादल जोनि ॥ तिन माँहै व्है देहे प्रभू । चौरासीकी यूनि ॥ ॥ १५ ॥ आतम माँहै ऊपजै । शवद सविता शीश ॥ रज्जव रीझ्या देखिकर । त्यूंही जन जगदीश ॥ १६ ॥ साधोके हित सृष्टि यहु । सिरजा सिरजन हार ॥ यथापिता पुत्रहु निमित्त । सुरमकरहिं संसार ॥ १७ ॥ खलक मुलक खेती करी । खालिकखसम सु साथि ॥ तामें कण जण नीपजा । हरि हाली के हाथि ॥ १८ ॥ भजन भोमिजन कन उद्यम ॥ समां

घणी कै हौय ॥ यहु खेती सुख दायकी। बूझै विरला कोय ॥ ॥ १९ ॥ भगत भेट भगवंत है। जे कछु हरिधर माँहिं ॥ परि बंदा पैठा बंदगी । सु कछू कबूलै नाँहिं ॥ २० ॥ नांव निनावै कै धरै ! काही सुसेवा ठौर ॥ तार्थे रज्जब रामकै । साधू सवा न और ॥ २१ ॥ रज्जब भगत भण्डारमें । राख्या नांणा नांव ॥ तौ देखो भगवंत घर। साध सिरोबनि ठांव ॥२२॥ व्यौम विराजैं धू धरैं ! पाताल पन्नगपति संत ॥ रज्जब मंडण मांडिके। मनबच करमन सु महंत ॥ २३ ॥ मात महीमाधि पैठि करि। सुमिरै सुखदेव शेष ॥ रज्जब छिप्यू न बित छिपै । प्रकट भये सब देस ॥ २४ ॥ अकलि अलय उनमानि तुच्छ। जो कछु कहै बनाय ॥ रज्जब सांई साधुकी। महिमा कही न जाय ॥ २५ ॥ रज्जब महिमां साधुकी।. मोपै कही न जाय ॥ आदि अंत माधि-मांझमें । जो निबहै इकभाय ॥ २६ ॥ एक रंग राता रहै। दूजै रंगरुचि नांहिं ॥ जन रज्जबता संत सम। को कहिये कलि माँहिं ॥ २७ ॥ बंदे एक खुदायके। आदि अंत माधि अब ॥ जन रज्जब मस्तक धरै। मनवच क्रमसों सब ॥ २८ ॥ शुक्र सूर-विधु बृहस्पति । पंचमि धूदरिस्य देख ॥ वंदनीक सब देखि-यहि। अचला चलन बशेख ॥ २९ ॥ साधू सूरज सारिखे। दृष्टि इष्ट संगिदेश ॥ रज्जब रास्यूं राजवी । जहाँ करहिं परवेश ॥ ॥ ३० ॥ समझै सोनै सारिखे । सो महिगे महि माँय ॥ रज्जब प्यारे पहमपर। जहाँ जगतमें जाँय ॥ ३१ ॥ साधू उदै सूरज कला। गुणतारे तम नाश ॥ रज्जब रारि खुलैं सबै। चखि चेतानि परकाश ॥ ३२ ॥ लेखैमें सब आइया । जे कछु उपज्या आय ॥ रज्जब राम अलेख हैं। अरु साधू लख्य न जाय ॥ ३३ ॥ रज्जब अगह अगाध अध । सांई साधू दोय ॥ और सुबंधे वंदिमें।

चौरासी लख जोय ॥ ३४ ॥ विरछा बीज बसुधा पडहिं । बीज रहै बप जाय ॥ त्यूं सति साधूगति शकति । नर देखो निरताय ॥ ॥ ३५ ॥ अनेको मिलि एककी । सरभरी करी न जाय ॥ रज्जब साधू सूरसम । नर न छित्र निरताय ॥ ३६ ॥ स्वर्गलोक साधू सदन । वेत्वा वैकुण्ठ स्थान ॥ रज्जब अज्जब ठौरये । जहां भजन भगवान ॥ ३७ ॥ हरि मंदिर साधू हृदय । जहां रहै निज अंग ॥ सो चित्त चित्रशाला बनी । कवि कह सकै न रंग ॥ ३८ ॥ चौदह विद्या चतुरई । दहणा रथ दे धाय ॥ साधन कष्ट सबै करै । परि साधन हुवा न जाय ॥ ३९ ॥

साखी १००४ । अंग ३०

॥ अथ तीरथ सत्संगका अंग ॥

साधू सलिता शब्द जल ॥ यहि गंगा कोइ जाँय ॥ रज्जब रजमल ऊतरैं ॥ मन भागीरथि न्हाय ॥ २ ॥ साधू तीरथ जान जल ॥ बिरला पावै कोय ॥ रज्जब यहु अठ सठ अगम । भागि-परावत होय ॥ २ ॥ महंत मुखे मंदाकिनी । वाणी वारि प्रवाह ॥ गगन गंग निर्मल वहै । मन मज्जिन करि नाह ॥ ३ ॥ चिदानंद के चरन निज । साधूके उरमाँहिं ॥ पेखौ पतिके पगनिकूं । ठाहरि और सुनाँहिं ॥ ४ ॥ ज्ञान गंग तहँतैं चली । प्रान प्रवीन सुना-हिं ॥ रज्जब पाय सु जुगनके । जीव जडे सुजाय ॥५॥ ज्ञान गंग पर देही देवल । मूरति आतम राम ॥ इहां सांपड़ो सेय प्राणपति। सरहिं सिरोमणि काम ॥ ६ ॥ सति तीरथ सत्संग है । वारि वि-मल विचि बोध । रज्जब रजमल ऊतरैं । बेत्वा वदन सुसोध ॥७॥ सत्य तीरथ सत्संग है । जल जगदीश्वर नाँम ॥ दान पुण्यको बहु किये । रज्जब अठसठि ठाँम ॥ ८ ॥ तीरथ आतम राम है

परसे पारस होत॥ जन रज्जब पहुँचे बिना। अघउतरें नहिं कोय॥ ॥ ९॥ चरणाबिंदते प्रकटी । साधु हृदय मँझार॥ रज्जब गंगा ज्ञानकी। मन मल मज्जन हार॥१०॥ साधु सलिता ज्वाव जल। मन मल मज्जन होय॥ रज्जब रजयूं ऊतरै ॥ उर अंतरि अघ धोय॥ ११॥

साखी १०१५ अंग ३०।

अथ साधुसंगति परम लाभका अंग।

साधू संगति शुठि भली। घडे माँहिं घडि लेय॥ रज्जब सौंजि सँवारि करि। जीव माँहि जिव देय॥ १॥ जैसे चंदन बावना। वेधि गया बनराय॥ त्यूं रज्जब पलटै सबै। साधू संगति आय॥ ॥ २॥ लोहा पारस परसतूं। रुद रूस व्है जाय॥ रज्जब रज ज्ञाता भया। साधू संगति आय॥ ३॥

सोरठा।

पारस परसत लोह। सौंधेसे महँगा भया। तौ क्यों न करीजे मोह। रज्जब साँचे साधुसों॥ ४॥

॥ साखी॥

रज्जब पारस परसतें। लोहा पलट्या गोट॥ त्यों निरधन धनवंत मिलि। अवितसाविता होत॥ ५॥ रज्जब लघु दीरघ मिलत। मानि महावत जोय॥ यथा तक्र पै परसतूं। जावणहु दधि होय॥ ६॥ रीते संगति भरिहुंकी। जेहु ही भूरि सुभाग॥ देखि दस गुन होत हैं। सुनि सु एकहिं लागि॥ ७॥ भवसागर संसार यह। साधु शुद्ध जहाज॥ रज्जब परसैं पार व्है। कठिन सरै यहु काज॥ ८॥ रज्जब निमधे रामजी। साधू जन सु जहाज॥ काढहिं शकति ससुंदसें। प्रभु प्रकटे परकाज॥ ९॥ ज्यूं नाले

मिलि नापिगा । सांध सभापति नीर ॥ त्यूं रज्जब रामहिं मिलै । सतसंगति बहुबीर ॥ १० ॥ रज्जब पारस चुंबकलोह मिलि ॥ पुनि चंदन बनराय ॥ जट पलटै म्रितग चलहिं । त्यूं सतसंगति आय ॥ ११ ॥ ज्यूं सिल सूकी नदीमें । जडी तुंविका बेल ॥ सो रज्जब सहजैं तिरै । त्यूं सतसंगति मेल ॥ १२ ॥ तन मन सिमटै सहजही । जो सतसंगति होय ॥ जन रज्जब दृष्टांतकूं । बेलि लजालू जोय ॥ १३ ॥ साधू चंदन बैन बासतैं । कुल काष्ठ गये रोग ॥ रज्जब देखहु देखतै । भयेदेवगति जोय ॥ १४ ॥ रज्जब पटैल जीव सुध । साधू संगति आय ॥ पारस लोहा यह पलटि । श्रिक चंदन बनराय ॥ १५ ॥ स्वर्गनसीनी जगत ज हाज । दीरघ दुर्भिक्षमें ज्यूं नाज ॥ दुखकी दारू ज़ीवन जडी । रज्जब संत समागम घडी ॥ १६ ॥ रज्जब साधू दरसतैं । साहिब आवै याद ॥ आवन पूजै उस पलहिं । देखिर दीज्यो दादि ॥ साधुके दांति मति नहीं । सोई आवै हाथि ॥ रज्जब और न देखिये । देता देसी याथि ॥ १८ ॥ सदा अभूली भूलिये । भूल्या आवै यादि ॥ यहु रज्जब सत्संग फल । देखिर दीज्यो दादि ॥ ॥ १९ ॥ रज्जब साधु दानि सम । दिया किसीका नांहि ॥ मनसा बाचा करमना ॥ समझि देखि मन माँहिं ॥ २० ॥ जों दत जीवहिं जीवदे । तहि पसारि प्रभु दूरि ॥ रज्जब साधु नाव देहिं । सुन रही करै हजूर ॥ २१ ॥ चिदानंदका चिंतवन ॥ चौरासीमें नांहिं ॥ जन रज्जब सो साधू पाइये । साधू संगति माँहिं ॥ २२ ॥ नांव नांव साधू करनें । बूडत लेहि चढाय ॥ महिमा उस उपकारकी । रज्जब कही न जाय ॥ २३ ॥ शब्द संदेशा नालहत । साधन कनजो जीव ॥ तौ रज्जब रह चलती नहीं । प्रांनन परसत पीत ॥ २४ ॥ परम पुरुष पारस परसि । साधू सोना होय ॥

तौ रज्जब सतसंग सूं । मिलत न बरजौ कोय ॥ २५ ॥ साधू वाणी छाह हमाई । भागहुं पडे शीशपर आई ॥ देखत दोन्यू पाँवहि राज । रज्जब होंहि सकल सिरताज ॥ २६ ॥ साधू संदल पारस पारा । भ्रंगी छाँह हमाई ॥ रज्जब मनतन पलटणों । भागहुं मिलहिं सु आय ॥ २७ ॥ हइ बेहदकै बीचि हैं। साधू संत दलाल ॥ सौदा आतम रामसूं । इनकारि व्है दरि हाल ॥ २८ ॥ रज्जब अज्जब काम है। साधू जन संसार ॥ जिन मिलते मोंहन मिलै। प्राण पुरुष है पार ॥ २९ ॥ रज्जब अज्जब रूप। साधू जन संसार मधि ॥ जेहिं मिलि मिलहिं अनूप। सकल बोल कारज सिधि ॥ ३० ॥ असंख्य लोक आतम फिरै। तौसी साधु न होय ॥ जन रज्जब सत्संग बिन । सीझ्या सुन्या न कोय ॥ ३१ ॥ भाव भगति सतजत जुदे। अंगिन आवहिं अंग ॥ रज्जब रीति आतमा। एक बिनासत संग ॥ ३२ ॥ भंजनीक भीव ज्यूं देगयै । उर गिरमें लै लात ॥ रज्जव सेझै ज्ञान जल। पगि पगि तीरथ जात ॥ ३३ ॥ बैन बूंद ज्यूं वर्षहिं । साधू घट घन घोर ॥ रज्जब उर धर नीपजहिं। न्यौसावहिं कुल कोर ॥ ३४ ॥ साधू सम बरषै सुधा। पीवहिं प्राण पियूष ॥ रज्जब सुख सुरता लहै। निकसैं दारिद्र दुःख ॥ ३५ ॥ अंब न चढहिं अकाश दिशि । बिन आदित अगसत ॥ त्यूं रज्जब सत्संग बिन । हरि आवै क्यूं हस्त ॥ ३६ ॥ मुकत महोदधि वारि बादलहु । पारस लहिये पथरों माँहिं ॥ त्यों साधूमें साँई दीसै। अन्य ठाहरो अन्यवित नांहिं ॥ ३७ ॥

साखी १०५२ अंग ३१

अथ साधुका अंग ।

बादल बंदे एकगति । शून्य सुधारस लेंहिं ॥ जन रज्जब जल उमगि करि । सरवि सबनि सुख देंहिं ॥ १ ॥ शून्य सलिल सो लेत हैं । बादल वेत्ता बीर ॥ पीछै परमारथ करहिं । देहिं सबहुं सोनीर ॥ २ ॥ साधूजन संसारमें । आभैका औतार ॥ सींचि समावै शून्यमें । आवैं पर उपकार ॥ ३ ॥ मिनषादेही खेत क्षिति । माहैं प्राण किसान ॥ रज्जब साधू घटघटा । वरव्यू नेपै जान ॥ ४ ॥ बादल बंदे एकगति । वाणी विरखा होय ॥ जन रज्जब संसारमें । पावै सुगरा कोय ॥ ५ ॥ बादल विधि बंदे किये । शून्य सुधारस भाय ॥ कलि कुलालके पातरज्यूं । अगहन अंब गहाय ॥ ६ ॥ बादल बंदे एकगति । सकल अधर ज्यौ हार ॥ जन रज्जब जग सूं जुदे । परसै नहीं बिकार ॥ ७ ॥ साधू आभै सारिखा । सदा शून्यमें बास ॥ रज्जब आवहिं वहम परि । निहकासीर निरास ॥ ८ ॥ ब्रह्मंड पिंड सूं नीकसै । आभे आतम होय ॥ सदा समाने शून्यमें । बादल बंदे दोय ॥ ९ ॥ साधु सुधाके कुंड हैं । अवलोकहिं दिल माँहिं ॥ तहिं अमृत आतम अमर । सोपीवहु क्यों नांहिं ॥ १० ॥ साँई सौंपी साधुकूं । औषधि अमर अराध ॥ जीया चाहै आइल्यो । संत सजीवनि लाध ॥ ११ ॥ रज्जब सुरही सृष्टिमें । शशि साधू पै थान ॥ तिन जनकूं ठाहर इहै । करहु सुअमृत पान ॥ १२ ॥ स्वारथ पैठे सांकडें । चौरासी लख प्रान ॥ परमारथको एक को । रज्जब संत सुजान ॥ १३ ॥ साधू घट मानहुं घटा । सरविहि तहां सुकाल ॥ रज्जब ये बरषै नहीं । परतखि तहां दुकाल ॥

॥ १४ ॥ जीव ब्रह्म साधू करै। ज्यूं पारससे सोना होय ॥ अनि
प्राण पखाण असंख्य है । पै तिनहुं न पलटै कोय ॥ १५ ॥ बा-
वन सौंन बराबरी। व्है न अठारह भार ॥ वह सुगंध सबकूं करैं।
त्यूं साधू संसार ॥ १६ ॥ मति सुपातर मन उदिक भरि। तन
तिष्टेमें राखि ॥ रज्जब ताता हेम है। सोरा साधू साखि ॥ १७ ॥
साधू शीतल परसतैं । जलता शीतल होय ॥ जन रज्जब दृष्टां-
तकूं। चंदन सर्पोहिं जोय ॥ १८.॥ साधू सूरज सोधिले। पर-
गट गुप्त हरिनीर ॥ रज्जब पीवै जीव सुधि। शब्द सरोवर तीर ॥
॥ १९ ॥ ऊपरि साधु कठोर गति। जैसी विधिना लेर ॥ अंतरि
गतिकोमंलमतै। जन रज्जब विचि हेरि ॥ २० ॥ बाहरि साधू
बिघन गति। ज्यूं चंदन भुजंग ॥ जन रज्जब विचि जोइले।
शीतल बास सुगंध ॥ २१ ॥ बाहर साधू सीपगति। मैली तानि
जोति ॥ जन रज्जब बिचि जोइले। मुकता हल मोती ॥ २२ ॥
साधू सकणां माँहिं मन । ज्यूं मकेकी ज्वारि ॥ जन रज्जब जो
रव्यूं गई। पंखी सकै न ख्यारि ॥२३॥ ऊपर कोमल बेर विधि।
तौ पंक्षी चूथिलै जांय ॥ रज्जब रहुना रेल गति। कुंदन कोमल
माँहिं ॥ २४ ॥ संत सिंघाडा.नारियल। कोमल कठिन सुदेख ॥
रज्जब राखा:बितका। बावै क्रिया विशेष ॥ २५ ॥ पानी पिया
पौन सुखि। तिरखा तरुणी गुण होय ॥ भाई कृत भाई किया।
नाहीं अचरज कोय ॥ २६ ॥ तनु तनुके काम कूं। पंचों प्रीति
अपार ॥ पिंड ब्रह्मंड विलोकतैं व्यौरा लहै विचार ॥ २७ ॥
जब दीवै दीवा दरस । तब तलके तम नाँहिं ॥ यूं साधू साधू
मिलत। अगम असंक्या जाँहिं ॥ २८ ॥ यार यार सूहै सही।
ज्यूं हाथलि धौवै हाथ ॥ मुख मोहन परसन चलैं। साफ होय
करि साथ ॥ २९ ॥ आतम निपजे अंडज्यूं। बैठे साधि बि-

हंग ॥ रमतूं पंखै परि रमैं । तप्ति निवारन अंग ॥ ३० ॥ बैठै साधु विहंग मति । आतम अंड सुदान ॥ रज्जब रमतौ सुखसर वहिं । पक्षी प्राण सुजान॥३१॥ परम पुरुष पंखै सुपरि । सुमिरत सरवत सुशीर॥ रज्जब प्रकटै जो जहां। ओरन निकसैं बीर॥३२॥ काया काठसुकूं उठहिं । मथतौ गोष्टि आगि ॥ रज्जब सर सेन्या निजल । जलहि नहीं सो जागि ॥ ३३ ॥ साधू गुस्सा जल चोट ज्यूं । मारतही मिट जाय ॥ रज्जब परसै परस पर । रहै नहीं ठहराय ॥ ३४ ॥ साधू जन जैसुरति करि । अथवा गाली देय ॥ रज्जब तिहिरि सिवारनै । रस माँहै करि लेय ॥ ३५ ॥ सब जंग जाणें पलकमें । जै साधू करै कछु ओर ॥ ज्यूं रज्जब सूरज ग्रह-ण । सब समझै सब ठहर ॥ ३६ ॥ जो जन सदा अडोल था । सोई है चकचाल ॥ तौ रज्जब जाणें जगत । ज्यूं आया भौ जाल ॥ ३७ ॥ भगति भाव बैठे फिरहिं । साधू सरवाणि कंध ॥ दुनिया दिशि देखँहि नहीं । रज्जब अंधी अंध ॥ ३८ ॥

साखी १०९० अंग ३२

अथ मिहरी मुहूरतिका अंग ॥

मिहरि मुहूरतमें लखी । जब सांई सिरजे साध ॥ प्राणहु सेती प्रीति अति । रज्जब रहम अगाध ॥ १ ॥ मिहरि मेदनी सो सही । जे महपरि बरसे मेह ॥ त्यूं नेहनिशानी नरहरिहिजै । मैले साधु सनेह ॥ ७ ॥ मिहरि भौज देणा दिया । जबहिं मि-लाये साध ॥ रज्जब संगति तिनहुकी । जीव जन्म फल लाध ॥ ॥ ३ ॥ मिहरि मुहूरति जानिये । जब सांई मैले साध ॥ रारि श्रवण रसना रचै । कोटि कटै अपराध ॥ ४ ॥ मिहरि मुहूरत जानिये । जब सांई मैले साध ॥ नाम सुधारस पाइये । किरपा

अगम अगाध ॥ ५ ॥ साधु संगति सुमिरनसुकीरति। मिहरि सुहरति होय ॥ रज्जब अज्जब मुकति फल। पावै विरला कोय ॥ ॥ ६ ॥ जब जगदीश दयाकरै। तब साधु समागम होय ॥ जन रज्जब अघ ऊतरैं। कर्मन लागै कोय ॥ ७ ॥ मिहरि सुहूरति माहमें। काया कुंभ सु होय ॥ रज्जब दुहुंमैं द्वै ठहरैं। जीवजल देखो जोय ॥८॥ मिहरि सुहूरति आदमी। माहे सुहूरति कुंभ ॥ जन रज्जब शीतल उभै। देखो आतम अंभ ॥ ९ ॥ रज्जब महरि सुहूरति ऊपजै। महमति मही महंत ॥ ज्यों मुक्ता होय न स्वाति बिन। समझो साधू संत ॥ १० क्रिया कहर समीप थे। जब सिरजि सिंधारी सृष्टि ॥ रज्जब अगम सुगमि भया। गुरु दादूकी दृष्टि ॥ ११ ॥

साखी ११०१ अंग ३२

अथ प्रसिद्ध साधूका अंग ॥

सकल प्राण परबत जलैं। आपा अगनि सुलागि ॥ रज्जब साधू हिमगिरी। तहाँ न प्रगटै आगि ॥ १ ॥ रज्जब जगजलता मिलै। साधू शीतल अँग ॥ चंदन विषव्यापै नहीं। जौ कोटि कभिदै भुवंग ॥ २ ॥ ताकूं कछु व्यापै नहीं। जो समझ्या मन मांहि ॥ रज्जब रज परसै नहीं। जै कंचन परिहग जांहि ॥ ३ ॥ ज्यूं सब सरिता समुद्रहिं मिलैं। फिरै न खारा साव ॥ तैसे रज्जब साधुगति। क्यूं भानै कोई भाव ॥ ४ ॥ साधू चंदन वावना। नतरु लावहि भास॥ आदम भार अठारकी। तिनहिं न परसै पास॥ ॥ ५ ॥ परसि साधु पारस भई। लोहा रूपी लोग ॥ रज्जब आपन पलटहिं। औरहु पलटण जोग ॥ ६ ॥ चंदन सरप मिले अमिल। मणि भुजंग मणितेम ॥ त्यूं रज्जब साधू असध। लखि न मिलैन

नेम ॥ ७ ॥ जोक न लागहिं पोरसहिं । घुण नाहिं भखै अँगार ॥ त्यूं रज्जब साधू शकति । लियहिन शिशन बिकार ॥ ८ ॥ दीपग हीरे लालका । द्रुरम चित्रांम सुबेलि ॥ तैसे रज्जब साधु हैं। मारुत माया न पेलि ॥ ९ ॥ लोभी लोहा चलि बिलैं । अहि चंबुक चित्राम ॥ निरिहाई कंचन भई । नरनिहचल निहकाम ॥ ॥ १० ॥ बीज बाय बादल चपल। पै शून्य न चंचल होय ॥ त्यूंही जगपतिमें जगत। अहल हलावै कोय ॥ ११ ॥ रज्जब साँई शून्य सम। कोई बिरला साध ॥ सो सबमें न्यारा अकल। पूरन बुद्धि अगाध॥१२॥ शून्य स्वरूपी साधु हैं। पंचतत्व तिन माँहिं ॥ रज्जब रहै सुएकठे । लिपैं छिपैं सो नाँहिं ॥ १३ ॥ रज्जब मनसा बीज सूं। डरहि न साधू शेष ॥ अकलि अवनि सिरपर सदल। पिसण नहीं परवेश ॥ १४ ॥ अष्ट धातुकाया कुल परबत। मनसा मही सुमाँहिं ॥ रज्जब साधू अनल सम। कुश कंटक कोई नांहिं ॥ १५ ॥ तारहुं परि तोरानहीं। दाम-निकालव लेश ॥ चपला करि चमकैं नहीं। रज्जब रबिरा-केश ॥ १६ ॥ इंद्री अहि सु अंगार हैं। साधू मोर चकोर ॥ यह अहार येही करहिं । और थकित यहि और ॥ १७ ॥ आ-तम अंभ अवानि अस्थलपरि। उदै प्रकीरति प्राण ॥ रे रज्जब रजतलितत तोय । तहाँ न दोय निशान ॥ १८ ॥ तनमन धनका देत हैं। पुनिधका पंच भूत ॥ रज्जब इनमें ठाहरै। सो आतम अवधूत ॥ २० ॥ मन महँ मनोरथ भेटि करि। दिल राखै सु दुरस्त ॥ रज्जब काल कुभावकूं। पूरा प्राण पुरुष ॥२०॥ तन माँहै तन तैं जुदा । मन माँहैं मन दूर ॥ इद्रयूं माँहि अला-हिदा। रज्जब साधू सूर ॥ २१॥ ब्रह्मण्ड खण्ड मनसा मुक्त। सोई

सिरोमणि साधु ॥ जन रज्जब नर नीपज्या । अविगति भाव अगाध ॥ २२ ॥ मीच माँहि स्यावत रहैं । नर नारायण हेत ॥ जन रज्जब ता संतका । हरि बलिहारे लेत ॥ २३ ॥ जहिं ठाहर बोलै शब्द । तहां धरै तनमन ॥ रज्जब रहै त्यहि कहति मिलि ! निपज्या साधू जन ॥ २४ ॥ आतम कणसु पकाइये । ब्रह्म अगनि क माँहिं ॥ अबिगति आदम मुखि पडै । सो फिरि आवै नाँहिं ॥ २५ ॥ बालपणै बोलै नहीं । योबन युवती त्यागि ॥ रज्जब बिकल न वृद्धपन । उरि न अवस्था लाग ॥ २६ ॥ देखहु ध्रुव प्रहलाद दिसि । सनकादिक शुकदेव ॥ रज्जब रहे सुयेक रस । आदि अंत मधि सेव ॥२७॥ रज्जब ग्रबिन व्यापी गर्भकी । पिंडन परस्या प्राण ॥ आन घटहुं उरझ्या नहीं । शुकदेव संत सुजान ॥ २८ ॥ आप उपाये अमल जन । तहां न माया मैल ॥ रज्जब रज परसैं नहीं । जैसे सोवन सैल ॥ २९ ॥ सकल रचकहु परि चक्कवै । करै न चिंत्या राज ॥ रज्जब रोटी रुध्रमें । अनि अधिपति दुख साज ॥ ३० ॥

साखी ११३१ अंग ३४

अथ मायमधि मुक्तिका अंग ॥

मणि भुजंग ज्यूं ये रहै । गुणगति भिन्न विचार ॥ जनरज्जब अैसे रहै । साधू यहि संसार ॥ १ ॥ जनरज्जब रवि शशि सदा । रहै शून्य अस्थान ॥ येक महलि येका नहीं । देखो गति मति आन ॥ २ ॥ लोई रंगिराचै नहीं । सूत सदा मधि सेत ॥ जनरज्जब जन यूं जुदे ! नहीं धरै सुंहेत ॥ ३ ॥ दरपनमें सब देखिये । गहिबेकूं कछु नांहिं ॥ त्यूं रज्जब साधू जुदे । माया काया माँहिं ॥४॥ जिते चित्रचंद वै महलि । तितै छांहमें नाँहिं॥

त्यूं माया सब साधु परि । सो बनहीं उर माँहिं ॥ ५ ॥ रज्जब रिधि थोडी बहुत।साधु मगन न होय॥ज्यूं बादलि सूझै सजलि। बीज बुझै नहिं जोय ॥ ६ ॥ सोखै पोखै सूरज्यूं । संकटि आवै नांहिं ॥ त्यूं रज्जब साधू जुदे । माया काया माँहिं ॥ ७ ॥ रज्जब सूरनमें लाज लगैं । तजि नहिं निर्मल होय ॥ बरतणि बरतें साधु यूं । रंग न पलटै कोय ॥ ८ ॥ साधू सूरज सारिखा । आदि अंत मधि लाल ॥ रज्जब रहता एक रस । तिमरन परसै साल ॥ ९ ॥ रज्जब बेत्वा बीज़ुली । घटसूं घंटाके माँहिं ॥ शकति सलिल न्यारे निकटि । लिपै छिपै सो नाँहिं १०॥ बडवानल अरु वज्रकूं । पाणी परसै नाँहिं ॥ यूं रज्जब रहते पुरुष । मिलै न माया माँहि ॥ ११ ॥ रज्जब पुरुष पद्दम पहरै सदा । अंबर भार अठार ॥ बाहर देखैंबाहिले । माँहि नगिन व्यौहार ॥ १२ ॥ आभे अंबर शून्यने । वोटेकेतीबार ॥ बागोंमें बाहरि खडी । रज्जव समझि विचार ॥ १३ ॥ रज्जब साधु सिर ठामकई । दसबागेतनधार ॥ ब्रह्मभोमिरस पीजिये । मनकन निपाजि अपार ॥ १४ ॥ बसन तजे दुर वासना । असनतजे उर आस ॥ यूं भूखे नंगे रहैं । जनरज्जब निजदास ॥ १५ ॥ रिधि सिधिमें न्यारे रहै । भुगता भगवंतामें हाय ॥ रज्जब भुगते राम मिलि । सब संपति तिन साथि ॥ मिलती मिलहिन संतजन । पाई परसै नांहिं ॥ १६ ॥ रज्जब रुचै न राशिपर । सो विरकत मन माँहिं ॥१७॥ नरनारी रोटी दुपड । ज्ञान घीव घव मांहिं ॥ रज्जब सीझें येकठे । लिपैं छिपै सो नाँहिं ॥ १८ ॥ शक्ति सलिल माँहै रहै । विरकत बीज समान ॥ ज़न रज्जब माँहैं मुकत । येक मेक अरु आन ॥ १९ ॥ अंधके ओछे अंभ मधि । अंबुजकै आनंद ॥ रज्जब रवि शशि सन्मुखी । विघन नहीं व्रत बंध ॥ २० ॥

शंभु है शुलप शक्कति है सुक्त । पाया साधू खोज ॥ जैसे रज्जब बारिमधि । शशि सु सुरति सरोज ॥ २१ ॥ रज्जब रचै न रिद्धि सूं । विधुजन विरचैं नांहिं ॥ महापुरुष माया सुकति । बैठे हरि पद माँहिं ॥ २२ ॥ ऊणाति ऊंधी सूधी संपत्ति । बपि बाती दर सांहिं ॥ रज्जब प्रीति मिलि पांवक झली । ब्रह्म व्योम दिशि जांहि ॥ २३ ॥ अंकुर अगनि सारंग अहर । सुरसुख दिशि आ-काश ॥ यूं रज्जब साधू सुरति । शक्ति तजे शिव पास ॥ २४ ॥ ज्यूं है फहम फरासका । त्यूं है साधु सुजान ॥ उभै अवनि उकरी सुखै । बधैं सुदिसि असमान ॥ २५ ॥ मुदित न माया आवतैं । जाती सगति न सोग ॥ रज्जब रिधि मधि यूं सुकत । भावी कर-हिं सुभोग ॥ २६ ॥ शक्तिरूप आये गये । साधू रस रंग येक ॥ सो रज्जब माया सुकत । पाया परम बमेक ॥ २७ ॥ माया का-यामें सुकत । आतम गुणहुं अतीत ॥ सो भगता भगवंत सम । जन रज्जब तत्व जीत ॥ २८ ॥ रज्जब तनमें मन सुकते रहै । बरताणि बँधै सु नांहिं ॥ पंचम दृष्टि देखै उन्हैं । माया काया माँहिं ॥ २९ ॥ रज्जब कार्ढे देह दधि । मन माखन सु विलोय ॥ छाजन भाजन छाछिमें । उभै न येकठ होय ॥ ३० ॥ रज्जब मायामें सुकत । सांई साधू होय ॥ यथा सिख गुरु ज्ञानके । गति मति येकै होय ॥ ३१ ॥ बाहर रहु भावै वरण मधि । पा-थरि भिदै न तेह ॥ त्यूं रज्जब माया सुकत । नांहिं शक्ति सनेह ॥ घर बाहर माया सुकत । जैशक्ति सुरतिमें नांहिं ॥ ३२ ॥ रज्जब रूखे चोपड्यो । तेलनके सों मांहिं ॥ ३३ ॥ रज्जब येक विचार बलि । माया मधि सुकति ॥ मिलै अमिल ज्यूं तेलजल । असैं साध शक्ति ॥ ३४ ॥ संलिङ शक्ति उलटे चलै । मीन सुनेश्वर मांग ॥ रज्जब मायामें सुकति । यहु उत्तम वैराग ॥ ३५ ॥

परवाने पांनी पहुप दिल । उभै अंबनिधि माँहिं ॥ रज्जब शशि सांई सुरति । सलिल शक्ति यूं नांहिं ॥ ३६ ॥ समझी सुरति सुसीप । शक्ति समुदरमें रहै ॥ रज्जब स्वाति समीप । उदति उदक सोना गहै ॥ ३७ ॥ साधशक्ति मधियूं रहै । ज्यूं अंबुज अंब थान ॥ मिलै अमिल रज्जब कहै । साखी शशिहर भान ॥ ३८ ॥ रज्जब मायामें मुक्त । ज्यूं जंतरके तार ॥ सकल राग मांहै नहीं । बेत्वा करो विचार ॥ ३९ ॥ साधू दोयज चंदपरि । सबकी आंवहि आंखि ॥ मन मयंकसो मोह बिन । दई दृष्टि नहिं नांखि ॥ ॥ ४० ॥ रिधि रहित अथवा सहित । नर निसतारा नांहिं ॥ साखी शुकदेव जन कहै । देखो दोन्यूं ठांहिं ॥ ४१ ॥ जनपद पाया या जनकनें । माया मधि मुकति ॥ रज्जब कहै विदेह बि-द । साखी साधु संत ॥ ४२ ॥ माया मधि मुकतका । भूतन जानै भेव ॥ रज्जब राजा जनक गुरु । शिष्य भया शुकदेव ॥ ॥ ४३ ॥ रज्जब बारि विभूतिमें । बारुण मनगर काब ॥ नाक भाव ऊपरि द्रसै । तौ बूझा बदहु न जाव ॥ ४४ ॥ सुरति सीप संयम गह्या । देही दरिया मांहिं ॥ यूं रज्जब मिश्रत मुकत । माहै मांहै नांहिं ॥ ४५ ॥ सारंग सींप ग्रस्तका । शून्य सलिल सूं सीर ॥ त्यूं रज्जब तीजै सती । द्वै द्वै निपजै वीर ॥ ४६ ॥ नर नलनी द्वै द्वै गुनें । शक्ति सलिल सम गेह ॥ परमारथ स्वारथ इनहुं । सांई सूर सनेह ॥ ४७ ॥ इकग्रही अरुक्त करहिं । माया मध्य उदास ॥ जन रज्जब रामहिं मिले । कोटि कुटंतर दास ॥ ॥ ४८ ॥ येक जोगमें भोग है । येक भोगमें जोग ॥ येक बूढहिं बैरागमें । इकतिरहि सो ग्रहीलोग ॥ ४९ ॥ अनल पं-खिकी आखि अवनपरि । सींप सरोज सुरति अकाश ॥ ऊंचे नीचका भरम भागा । रज्जब, सोधत आसा आस ॥ ५० ॥ खग

खाली दीसै उरै। रज्जब पृथीपास ॥ सस सिंधुरले उडै। अनल पंख आकाश ॥ ५१ ॥ सिलहु सहत असिलहुं आगै। यैतैं पहुं-च्या जाई ॥ जन रज्जब है हदव है। महँगे मोलि विकाय ॥ ॥ ५२ ॥ सकल सृष्टि सिर शेषके। माया मुद्रा मांहिं ॥ रज्जब भारीकै भजनि। हलकै पूजै नांहिं ॥ ५३ ॥ मारुत भख पति मरजीवहुं। मटी महोदधि उन सिरोहुं। बोझ बात अनिमीं-च। होडन व्है नरनीच ॥ ५४ ॥ मोर चकोर महंत भख। विख बहनी रवि भूति ॥ अनि कंटै अरु आंचकथ। तिहुं होत म्रित सूत ॥ ५५ ॥ सर्प शक्ति विषनां चढै। गरुड द्वार मुख नांव ॥ दुहुकूं दोष न दोयका। दुहुंनी भरैं जिहि ठांव ॥ ५६ ॥ रैणां इर रिधि मधि धासि। मोहन मुकता लेहिं ॥ मरजीवा मुनिसहज कृत। और तहां जीव देहिं ॥ ५७ ॥ झया पाती मरजीवे। पैठै दरिया मांहिं ॥ इक मुकता ले बाहुडै। यक मरमधि आवै नाहिं ॥५८॥ बीज बारि मांहै अबुज। अन्य बहानि बुझि जाय ॥ ज्यूं रज्जब तारू अतिर। दीसे जगेजल मांहिं ॥५९॥ तेरू अण तीरू पडै। सकति सु सलिता हेर ॥ उभै अभ्यासै अंभमें। पै तिरण बूझणै फेर ॥ ६० ॥ सूरसती संसारमें। अलग सलग दरसंत ॥ त्यूं रज्जब साधू सकति। नमो निरंतर मंत ॥ ६१ ॥ येक काम निहकामहै। सकल साधना येह ॥ रज्जब सो सीझ्या सही। वह बनि रहौ कि सिंह गेह ॥ ६२ ॥ जड विहूण जल मंझली। जीवै पाणी मांहि ॥ त्यूं अतीत आसा रहित। परि आलम न्यारे नांहिं ॥ ६३ ॥ अमर बेलि जड़बिन हरी। भरी डाला सो पान ॥ त्यूं रज्जब माया मुक्त। संतति सकति सुआन ॥ ६४ ॥

॥ अरिल ॥

बे दाने की बौलि फूल फल व्हैं सदा । त्यूं निरिहाइ नर पास सकल माया सुदा ॥ बीज गये गुरु ज्ञान नसो ठाहर रही । परिहां रज्जब रहते रिधि सिधि मैं सही ॥ ६५ ॥ रज्जब रिद्धिहि दुहागदे । दियाँ भगति सुहाग ॥ उभै येक घरमें रहैं । अभगा सहित सभाग ॥ ६६ ॥ रज्जब सति यहु जतीसुपोखिये । नर निरखो निरवाह ॥ फूटौ सारैं ऊबरैं । अवलोकहु सु अवाह ॥ ६७ ॥ ररौ अक्षिर मात्रहुं भरया । मम्मैं मात्रा नांहिं ॥ रज्जब अज्जब राम लगि । वंदनीक जग माँहिं ॥६८॥ आतम अक्षर माया मात्रा । अरथ लगै परवान ॥ रज्जब विमुखे वै अरथ । उभै सुमिथ्या जाण ॥ ६९ ॥ रज्जब अरथ लगै अखिर सखर । केवल मात्रा संग ॥ त्यूं रिधि रहित अथवा सहित । अविगति भाव अंग॥७०॥ मानहुं मात्रा संगिसदा । आखिर अरथ अस्थूल ॥ रज्जब छिकि छूटे विना । उभै न विनसे मूलि॥७१॥ रज्जब दामनि देह निज । चमक मनोरथ मांहिं । सो बीजल वय गिरेविन । अगनि सुलागै नांहिं ॥ ७२ ॥ त्यूं शेष नाग सुकदेव गति । अवनि उदरके मांहिं ॥ त्यूं रज्जब रिधि मधि सबै । भजनि ब्रह्म व्है जांहिं॥७३॥ धरी धरेमें है सदा । बप बरतनि दिढ बंध ॥ रज्जब रिधि रहिता भजन । सो समझै नहिं अंध ॥ ७४ ॥ अंबर आभौंकूं मिलहिं। जन रज्जब रज रूप ॥ बसुधा वस्तर एक व्है । पतिबदल अमल अनूप ॥ ७५ ॥ माया पानी मीन जग । मरहि नीरकै दोष ॥ जनरज्जब अहि आडिगति । जल थल महि संतोष ॥ ७६ ॥ अतीत अडवै सारिखा : खपता खेत समान ॥ रज्जब विछु का वणि रहै । नांहि खैचातानि ॥ ७७ ॥ पक्षी उडहिं प्रकाशकूं ।

आभै अवनि मिलाहि ॥ रज्जब रहै सो तहाँ । बहुडि घरि जांहिं ॥ ७८ ॥ रज्जब सत्य शब्द नर नगसही । रहती सुमादातास ॥ कंतकलित बिन क्यूं रहै । समये सुंदरि पास ॥ ७९ ॥ ज्वरा जीवकूं लै चलै । जह मति आवै जाई ॥ आरंभ गृह वैरागके । नर देखो निरताई ॥ ८० ॥ येकहुं कूं खांसी भई । येकहुं कूं भयाखैन ॥ वह दिन कहुं चहुं जायगा । वहि पचि मरना अैन ॥ ८१ ॥ रज्जब चंचलता द्वै भांतिकी । देखि उदधि बमेक ॥ तब निकसे चवदह रतन । अब निकसै नहिं येक ॥ ८४ ॥ येक सांचमें झूंठ है । येक झूंठमें सांच ॥ रज्जब लीजे मांहिली । तजि सुंहडै की बांच ॥८३॥ येकरंगमें रोस है । येक रोसमें रंग ॥ रज्जब समझो भावना । आतम भंग अभंग ॥ ८४ ॥

साखी १२१५ अंग ३५

अथ विचारका अंग।

रज्जब सत्य विचार सूं । पारंगत व्है प्राण ॥ सो समझाया सतगुरु । समझ्या शिष्य सुजान ॥ १ ॥ रज्जब यहि संसारमें । बोहिथ बडा विवेक ॥ जो बैठे सो उद्धरे । युग युग प्राण अनेक॥ ॥ २ ॥ काया माया भाडसूं । काटै अकलि विचार ॥ रज्जब राखे जीवकूं । सन्मुख सिरजनहार ॥ ३ ॥ देखो सूक्ष्म स्थूल- कूं । न्यौरै बुद्धि विचार ॥ रज्जब रजतज काढहिं । नमो अक- लि व्यौहार ॥ ४ ॥ सप्तधातु धरतीमें सानी । त्यूं आतम आकार ॥ रज्जब अष्टों रजरली । कठणे कौसुविचार ॥ ५ ॥ रज्जब रिधि विधि त्यागिये । शकति समझि सुलगंति ॥ बालि वि- भूति बिहरी सुकति । पूंछ साधू पंति ॥ ६ ॥ काया काठ दधि दरिया धन । ब्रह्म अगनि घृत काठि रतना ॥ बंध मुक्त सो

जुगतहिं होय । रज्जब बलि छूटै नहिं कोय ॥ ७ ॥ समझि बिना सुरझै नहीं । सुरति सूतर छानि ॥ चैन न उपजै सुरझि बिन । रज्जब समझि सुजान ॥ ८ ॥ जीव पड्या यूं गुणहुमें । ज्यों गोरख धंध ॥ जन रज्जब कोइ कोठवें । सुरझावै फंद ॥ ॥ ९ ॥ रज्जब सेरी समझका । सुदा सुरतिमें होय ॥ तो मुकता तिहुंलोकमें । बंधण नांहीं कोय ॥ १० ॥ समझि सुखौंकी राशि है । सब संतनि आधार ॥ रज्जब ज्वाला जलकरै । शीतल बडा बिचार ॥ ११ ॥ रज्जब बिमल बिचारसौं । विष अमृत व्है जाय ॥ सदा सुखी आनंदमें । हिरदै दुख न सन समाय ॥ ॥ १२ ॥ काया माया मांझसूं । मुकता करै बमेक ॥ तोले तीनूं लोककौं । रज्जब कूंची येक ॥ १३ ॥ रज्जब बाइक बाज परि ॥ जांण राइ असवार ॥ ताकै बस बसुधा सबै । तामैं फेर न सार ॥ ॥ १४ ॥ चित चैतनि छाजा अगम । बैठै ज्ञान विचार ॥ रज्जब रामति रामका । सो देखै दीदार ॥ १५ ॥ रज्जब ज्ञान विचार येह । जाप जिकरि ठहराय ॥ जैसे भोढलकै भुवनि । दीवा बुझि नहिं जाय ॥ १६ ॥ समझि समावै शबदमें । परखै प्राण प्रवीन ॥ जाणिर पैठे जोतिमें । रज्जब दोंलै लीन ॥ १७ ॥ रज्जब अकलि इनायत । अकलकौं प्राणी जो पावै ॥ सो काया माया मांझसौ । गुंज्या नहिं जावै॥१८॥ विचार बगहरी टालिये । तौटलैकूं बाइक चोर ॥ रज्जब उबरै आतमा । बैठि अकलकी ओट ॥ १९ ॥ पाखाण बाणं बाइक बुरे । ज्ञान सुं गैंडे ढाल ॥ रज्जब बाहबमेक मिलि । चेतनि चोटैं टालि ॥ २० ॥ वय बसुधामें विघन वहु । सुटालैं येक विचार ॥ रज्जब पडै न प्राणपरि । इस मायाकी मार ॥ २१ ॥ जनरज्जब नट साधकै । साधन सुमति

बात ॥ द्वै निकसै बहु अण्यूमें । चोट न लागे गात ॥२२॥ ज्यों नट निकसै अण्युंहूं में । अंगहि लावै नांहिं ॥ त्यों रज्जब कठिवा कठिन । महंतमसौदे माँहिं ॥ २३ ॥ शब्द बोलणा सभामें । सतरंज का सा खेल ॥ रज्जबकीया मातमत । दुरलभ दुरजन पेल ॥ २४ ॥ शब्द गहैं समसेर । प्राणी पाइक की कला। टालैं घालैं हेलर । सकल खिलारोंमें भला ॥ २५ ॥ रज्जब बाइक बाजपरि । चढै सु बावन बीर ॥ संसारि समंद ऊपरि चलै । ले पहुंचावै तीर ॥ २६ ॥ मनसा नटनी बैन बरत चढि । खेलै कला अनूप ॥रज्जब चलतौ धरणिगगनाबीचि । रीझंहिं बेत्वा भूप॥२७॥ वितसंबिती केलवणि । साध बेद संतार ॥ सौंधी सों भँहघी करी। नमो केलवण हार ॥ २८ ॥ शब्द केलवणि कलिकलै । गिरा-गुपत गतिजाणि ॥ रज्जब मोहै रामजी । सुणिवेतहुं की बाणि ॥ २९ ॥ छोटे मोटे शबद सुणि । समझ्या बहि नहिं जाय ॥ शबद शोर ज्यों श्रवणि लगि । अरथि विचारि समाय ॥ ३० ॥ भली बुरी संसारकी । साधु दिल न समाय ॥ यारी छेके नीरज्यूं । जनरज्जब चलि जाय ॥ ३१ ॥ जब गाफिल गुफतार व्है । तब हाजी तइयार ॥ और कहावन कीजिये । रज्जब इहै विचार ॥३२॥ चंचल बैन श्रवण सुनि । सुनिजन पकडै मोन ॥ साधू छांह सु-मेरकी । रज्जब झिगै न पौन ॥ ३३ ॥ जाण पणेंका जीव है । जै छूटै बंकबाद । समझि समावै शून्यमें । ज्ञान गुरुपरशाद ॥ ॥ ३४ ॥ यथा नगारा चोट सुनि । हिमगिरि करै उपाधि ॥ जनरज्जब यूं जाणि यँहिं। तहाँ मौनव्रत साधि ॥ ३५ ॥ जहाँ बोलै बीर रदै तह हांडै । ये लखवीसूं मांग्या ॥ जनरज्जब तिनमें तब बादै । तब बालक बण छाडया ॥ ३६ ॥ सबै दिशावर उठि-

गया । जबै दृष्टि उठि जाँहिं ॥ ज्यों रज्जब पलकौ मिल्यो । दिन दीसै कछु नाँहिं ॥ ३७ ॥ भला न आवै मिलहिं तजि । बुरा बुरौं बसिजात ॥ जनरज्जब जगि जीवसौं । आइकहै क्यों बात ॥ ३८ ॥ साधु चोर भाई उभै, छाडि येक घर जाँहिं ॥ रज्जब सुख दुःख वश पडैं । सो फिरि आवै नाँहिं॥३९॥ अज्ञान उद्र माँहैं पड्या । लहै न ज्ञान निकास ॥ रज्जब अरभख अबधकी । कहु क्या कीजै आस ॥ ४० ॥ तन मन सूनें समझि बिन । सांई साधन येक ॥ रज्जब उजड अकलि बिन । बसती नहीं बमेक ॥ ४१ ॥ शक्ति रूप संसार सब । समझ्या कोई येक ॥ रज्जब भूत विभूतिमें । बिरलोभी न बमेक ॥ ४२ ॥ जनरज्जब मन शून्यकूं । अज्ञान सूं आभूवेर ॥ तो आतम आदित्र सहित । बय ब्रह्मंड अंधेर ॥ ४३ ॥ तहाँ औषधि अकलि है । समझि समीर सुहेर॥ मनसा बाचा कर्मना । और न बूढन फेर ॥ ४४ ।

साखी १२५९ अंग ३६

॥ अथ पृथ्वी पुस्तकका अंग ॥

रज्जब बसुधा बेद सब । कुलि आलम सुकुरान ॥ पंडित काजी वै थडै । दफ्तर दुनिया जान ॥ १ ॥ सृष्टि शास्त्र हैं सही बेत्वा करै बखान ॥ रज्जब कागद क्या पढै । पृथ्वी पुस्तक जान ॥ २ ॥ ब्रह्म वेद ब्रह्मंड यहु । कीया सकल कुरान ॥ रज्जब मांड मुसाफकूं । बाँचैं जान सुजान ॥ ३ ॥ रज्जब कागद कुंभजी । आतम अखीर रूप । ब्रह्म वेद वेत्वा पढै । अकलि सु अजब अनूप ॥ ४ ॥ चतुर खानकी काया कागद । आतम अक्षर माँहिं ॥ यहु पुस्तककोउ विरला बांचै । घटि घटि समझि सुनांहिं ॥ ५ ॥ कागद काया कुंभनी । दफ्तर दुनी दिवान ॥ रज्जब आलम

इलम यहु । समझै सोई सुजान ॥ ६ ॥ प्राण पिंड ब्रह्मंडतैं । उपजे च्यारूं वेद ॥ ये रज्जब सुर मूल हैं । भेदी पावै भेद ॥७॥ पंच तत्व पुस्तक मई । जिनमें नाना भेद ॥ रज्जब पंडित प्राण सो । जो बांचै यहु वेद ॥ ८ ॥ कारण पंचों तत्व हैं । कारज च्यारूं वेद ॥ जनरज्जब जग जाणिसो । जो पावै यहु भेद ॥९॥ बपमें बारह स्कंध वेद । प्राण पवन मधि पाया भेद ॥ पंच पचीस सिथारे शाह । कायां ऐन कला सुलाह ॥ १० ॥ रुग रुंचि चलै जुजरचाखि जोवै । श्याम श्रवण सुनै भाषा भेद ॥ उदर अथर-वण सब कोई जाणै ॥ रज्जब रचे बप सुचत्र वेद ॥ ११ ॥ अठार भार ओषधि सबै । वेत्ता वेद लहंत ॥ त्यूं पृथ्वी पुस्तक मई । सुखि सुखि बदति महंत ॥ १२ ॥ विष अमृत आकार आत्मा । उभै उभै सुमंझार॥रज्जब बसुधा वेद सुवैदक । वेत्ता वेद विचार । पानें पुस्तक येकके । हिंदू मुसलमान । सबमें विद्या येकही । पढै सु पण्डित प्राण ॥ १४ ॥ तनमन ज्योतिष कथा । गरग सुगहरे ज्ञान ॥ गहण सहित गैणागिणी । रज्जब किया निदान ॥ १५ ॥ कागद मसिके अक्षरै । पाठक प्राण अनेक॥ रज्जब पुस्तक खंडका कोई पढैगा येक ॥ १६ ॥

साखी १२७५ अंग ३७

अथ सद्गति सैझेका अंग।

शरीर सरोवर बुद्धि जल । शब्द मीन व्है माँहिं ॥ रज्जब पहिले थे नहीं । पीछे मेले नाँहिं ॥ १ ॥ बहुतें सरसरिता भरै । बादल बारंबार ॥ तैसें रज्जब साधगति । वेद भेद तिनिलार ॥२॥ जल अनंत आकाशमें । पृथ्वी परि परिवाण ॥ साध वेदयों अंतरा । जनरज्जब पहिचान ॥ ३ ॥ साधूसेंके कूपजल । निगम

कलस हैं चारि ॥ जनरज्जबता नीरकी । सब पण्डित पणिहार ॥४॥ आसिक शैर समंद हैं । मसक कुरान कतेब ॥ कुलिका जिसके भये । रज्जब समझि है सेव ॥ ५ ॥ साधू सागर शब्दके । बुद्धि विवेककी खानि ॥ जनरज्जब वाणी बिबिधि । सब संतनि सौ जानि ॥ ६ ॥ साधु भूमि निज ज्ञानकी । पुरान अठारह भार॥ रज्जब ज्यों थी त्यों कहीं । तामें फेर न सार ॥ ७ ॥ चित चेतनि की बात है ॥ चारों वेद कुरान ॥ जनरज्जब सो मानिये । तजि-ये तिनका थान ॥ ८ ॥ बारि बुद्धि माहै उदै । सफुरी शब्द समान ॥ इहि प्रकार वाणी विविध । समझै साधु सुजान ॥ ९ ॥ परबत प्राणहुं सौं चलै । सलित शास्त्र सब ॥ अंब अकलि अद्यापि यों । यूंही रज्जब अब ॥ १० ॥ सैलहुं सों सलिता चली। गुरु पीरहु सौं प्राण ॥ उदधि अविगतिकौं मिलहिं । दसा दरसन निधान ॥ ११ ॥ बाइक बादल ज्यों उडहिं । आतम शून्य मँझारि ॥ वेद कुरान घटा मिलहिं । अरथ सु अंब अपार ॥१२॥ ज्यों दीप राग रज्जब करै । त्यों तनसेझै ज्ञान ॥ तहां बहुबहनी बनैं लेहिं ॥ होहि न येक समान ॥ १३ ॥ गैलौ गोलाना चलै । गोलै गैला होय ॥ रज्जब ढाहै बुरजकूं। फेरि सुहरादे सोय॥१४॥ तुरकी तेग कुरान है । श्रुति हिंदू हथियार ॥ जनरज्जब अनभै गुरज । जाकै दहदिशि धार ॥ १५ ॥ रज्जब वेद कुरान गहि । जूझण आए शूर ॥ ज्ञानी अनभै गजागहि । मारि किये चकचूर ॥ १६ ॥ रज्जब तुरकी तीर है । वेद बाणकी धार ॥ अनभै वाणी गैब गज्जु । त्यों त्यों करै शुमार ॥ १७ ॥ रज्जब रहता गढपति । बहतौं मांड्या घेर ॥ उकतिकलेखै गज चलै । बहुत सुये इस फेर ॥ १८ ॥

साखी १२९२ अंग ३८

साधु मिलाप मंगल उत्साहका अंग।

रामसनेही जब मिलै। तबहीं आनन्द होय॥ जनरज्जब सो दिन भला। तासम औरन कोय॥ १॥ साधु समागम होतही। जीवं जलणि सब जाय॥ जनरज्जब जुग जुग सुखी। दुःख नहिं लागै आय॥ २॥ शलिल जडहूं उडें। पाये इन्दर आवाज॥ तौ सन्मुख किन चालिये। आवत मुनिसिरताज॥ ३॥ अति उछाह आनंद अति। मन मंगल सुकल्यान॥ रज्जब मिलै तो संतजन। सुखसागर दरसान॥४॥ साधू सदनि पधारतै। सकल होंहि कल्यान॥ रज्जब अघ उडुगनदुरहिं। पुनि प्रकटै ज्यों भान॥५॥ भाग भोमि अस्थल उदै। आवहिं साधूसंत॥ जनरज्जब जागि उद्धरै। जपि जीवनि भगवंत॥ ६॥ जिन देखे दुःख दूरि व्है। मिलता मंगलचार॥ रज्जब रहिये संग तिन्हि। बिबिधि बहानू लार॥७॥ आँख्या आनंद श्रवण सुख। मठा मंगल सुअगाध॥ जनरज्जब रस रंग व्है। मिलतौं साधू साध॥ ८॥ साध दरसनैं नांठरै। शब्द अस सुनिकान॥ रज्जब मेला मन मिल्यूं। सब ठाहर सुखसान॥ ९॥ रज्जब आँखि कान अडवी मिटी। सुन्या सु देख्या नैंन॥ उभै ठौर आनंद भया। चारूं पाया चैन॥ १०॥ मंगल शक्ति समान सब। सो मंगळ सु अगाध॥ रज्जब सो तब पाइये। जब घर आवे साध॥ ११॥ और सकल सुख सुगम है। यहु सुख अगम अगाध॥ रज्जब रसन न कहि सके। जो सुख मिलतौ साध॥ १२॥ साधु समागम सुखकौ। कहियेको समरत्थ॥ रज्जब सब उनमानकी। जो कहिये सब कत्थ॥१३॥ जब दीपै दीवा दुसै। तब तलके तम नाँहिं॥ यौं साधू साधू मिलत।

अगम असंक्या जाय ॥१४॥ यार यार सौं हैं सही । ज्यूं हाथहिं धोवै हाथ॥ सुख मोहन प्रसन चलैं । साफ होइ करि साध॥१५॥ परम पुरुष पारस परसि । मन लोहैं व्है फेर ॥ रैनि दिवस वेला नवलि । रज्जब राखू है फेर ॥१६॥ जनरज्जब अज्जबदशा । राजा परजा रूप॥ आनंद परि आवहिं सबै । परवानि पात्र पुरुष॥१७॥ अदभूमें आदम उडै । देखि औदसा देस ॥ रज्जब परवनिपरि पुरुष । शुभ ठाहर परवेश ॥ १८ ॥

साखी १३११ अंग ३९

अथ चर्नोदक प्रसादका अंग ।

चरनोदक परसादकन । मुख न पडै मतिमंद ॥ तौ रज्जब अंतर रहा । कहिये गुरु गोबिंद ॥ १ ॥ चरनोदक परसादयूं । जै कोइले सत भाय । ज्यूं रज्जब मुखि मैल तौं । दुख दारू तें जाय ॥ २ ॥ परसादी गुरु देव दे । बमुख रहा पुनि पीर ॥ तौ रज्जब कृपा करम । सुखी सौख इहिं सीर ॥ ३ ॥ कुमति काट ऊपरि फिरै । भये अवनि औलाद ॥ सो रज्जब पलटै नहीं । पारसमें परसादि ॥ ४ ॥ उडहिं सु बातहिं बात । सो मनिक मांटी निकण । तामैं धरम न धात विषै । वायु बसि है बहै ॥ ५ ॥ ज्यूं नारा नर धोवतें । कंचन किरची मेल ॥ तैसें रज्जब साधके । चरनोदक मैं खेल ॥ ६ ॥ कंचन किरची पाइये । नर न्यारेकूं धोय ॥ रज्जब पुणै पहाडके । बितन लाभै कोय ॥ ७ ॥ सरवी सोवन सैलतें । तिन सीलतों रजहेम ॥ रज्जब लैहै न ओर नहि ! मनसा बाचा नेम ॥ ८ ॥ बेरवां वैरागर मई । निकसै लाल अनूप ॥ रज्जब सुग्ध सुरसद थली । क्या पावै खणि कूप ॥ ९ ॥ सतगुरुके परसादमें । भाव भगति करतार॥ रज्जब वामां व्यंदलै। बालक होत न

बार ॥ १० ॥ सतगुरुके परसादमें । रज्जब दोष न कोय ॥ यथा कामिनी बाँझकै । बालककदेन होय ॥ ११ ॥

साखी १३२२ अंग ४०

अथ दास दीरघका अंग ।

रज्जब चारी सुर सुरह । सुरतरु सीचणहार ।। पूजे साध प्रसिद्धिकूं । सू दातारों दातार ॥१॥ साधू पारस पोरसा । चिंतामणि दातार ॥ तहाँ रज्जब भ्रित भीख बिन । सो गति अगम अपार ॥ २॥ सती जती सों है बडा । सुखदाई सब जंत ॥ रज्जब सीचै इन्द्र ज्यूं । निहकामी निजमंत ॥ ३ ॥ सेवक सांई सारिखा, आसबिना जो दास ॥ बैरागर वैराग बसि । रज्जब रहै निरास ॥ ४ ॥ सृष्टिसहित सांई लिया । साधूनें उर माहिं ॥ उभै समाने दास दिलि । तौ सेवक सम कोउ नांहिं ॥ ५ ॥ जन रज्जब जल दल निमति । जती सतीकै जाय ॥ भगवंत सहित भोजन किया । बड भागी भ्रित भाय ॥६॥ भले बुरे भूलै नहीं । आतम दृष्टि दास ॥ रज्जब नाते नांवकै । सबकूं देय गरास ॥ ७ ॥ रज्जब उपजै दयादिल । तनमें साधन चोर ॥ ज्यूं इन्द्र उधारण देखई । सरऊसरकी ठौर ॥ ८ ॥ सरवर तरवर सतीकै । सुरठाहरमत येक । रज्जब जलदला समदृष्टि । योंहि बडा बमेक ॥ ९ ॥

साखी १३३१ अंग ४१

लघुताका अंग ।

विचबडाई में नहीं । बडा न हूं ज्यों कोय ॥ छाप लई लघु आंगुरी । रज्जब देखो जोय ॥ १ ॥ लघुकूं वंदै लोग सब । लघुकूं लेहिं सुगोद ॥ जन रज्जब जोयानजरि । देखो शशि सुकोद ॥ २ ॥ अनल पंख पावै नहीं । सो मधु मांखी लेय ॥ रज्जब रज

गजनां लहै । सुमींठा मसि यहि देहि ॥ ३ ॥ माताहि मुश्कल मोघजल । पूत करत पै पान ॥ रज्जब यूं लघुता लई । देखि दई का दान ॥४॥ लघु कै बस दीरघ सदा । देखो पणिचपि नांखि॥ रज्जब अज्जब साखि यहु । मन वचक्रम उर राखि ॥ ५ ॥ सकल समंद उलंघि करि । दीरघ गया न कोय ॥ पवन पुत्र पहुँच्या तहाँ । जनरज्जब लघु होय ॥ ६ ॥ मोटा मूलि न जांवई । राम राज दरि जोय ॥ रज्जब पैठै लघु तहां । तिसहि न बरजै कोय ॥ ७ ॥ मोटे डल फूटैं सही । मानि मैज तल आय । रज्जब रजका क्या करै । ऊपरि व्है फिरिजाय ॥ ८ ॥ गुरुबीज बड सारिखा । शिष्य शाखा विस्तार ॥ रज्जब अज्जब देखिया । लघु दीरघ व्यौहार ॥ ९ ॥ वारि बूंद रूपी सुशिष्य । गुरु समुद्र उन हारि ॥ रज्जब रचना रामकी । लघु दीरघ सुविचार ॥ १० ॥ गुरु बृहस्पति शुक्रसे । शिष्य सब देव दैत्य ॥ ज्यूं मंदिर पर कलश लघु । अति सुंदर शोभत ॥ ११ ॥ सब औतारोंके गुरु । देखो आदि अतीत ॥ रज्जब पांई प्राननें । लघु दीरघ परतीत ॥ १२ ॥ रज्जब चेले चक्कवै । गुरु गरीब तीस ॥ उनकूं उस दरबारकी । उनमाँ है करि आस ॥ १३ ॥ मुरीद मुल्क सल्कक्के । देखो राहर शल ॥ रज्जब अज्जब सुख न यहु । सुनि सब करौ कबूल ॥ १४ ॥ सत जत सुमरनकी येका । जैमल होइ न माँहिं ॥ सो रज्जब रामहिं मिलै । सांसा कोई नांहिं ॥ १५ ॥ ग्रबिन गिरवर ठाहरैं । आतम अंभसमान ॥ रज्जब आवहि उभ्र भलि । नम्री भूतनिवानि ॥ १६ ॥ नरहरि आवहिं नीरज्यूं । नमरी भूत निवानि ॥ रज्जब अज्जब दीनता । छह दरसनिकहिछांनि ॥ १७ ॥ गरीब निवाज गुसाइयाँ । बिसर जबरदन होय ॥ निरखी नीच कुल पदमनी । साखी भरैं सब कोय ॥ १८ ॥ मिंहदी चंदन चाहिकरि । काजल

सुरमा जोय ॥ पग छाती नैनहुं चले। रज्जब नान्हें होय ॥१९॥
साधु केशरि अंग। कसत घसत ओपम बढै ॥ रज्जब रचना
अंग ॥ तिलक छंद मस्तक चढै ॥ २० ॥ नान्हौ सौ नान्हें हुए।
बारीकहुं बारीक ॥ सो रज्जब रामहिं मिले। जो चाले लघुलीक
॥ २१ ॥ महा महीमनकूं मिले। सूखि मसाई आय ॥ जन रज्जब
पति परखिये। आया सकल उठाय ॥ २२ ॥ बारीक मिंही-
झीणहुं परै। शुन्य समान न कोय ॥ जन रज्जब तासौं मिलण।
तब तैसाही होय ॥ २३ ॥ निशारूप जर देखिये। सांई शूर
सुभाय ॥ उभै सुभावै आयसौं। जै रज्जब रजनी जाय ॥ २४ ॥
अकल कलै आपा उठै। दीनहुं दीनदयाल ॥ रज्जब परचा प्राण
पति। होता है इस हाल ॥२५॥ रज्जब अपणें लाभकूं। टीकूं ठंगि-
डंहौत ॥ जग जगदीशर पाइये। मही महंत निनौत ॥ २६ ॥
रज्जब रज ऊंची चढी। तौ तामैं क्या वितवीर। साँई सौंपी शकति
सब। नीचा चलातौ नीर ॥२७॥ रज्जब ताकी तराजु वहि। पुनि
पले निरताय ॥ भारी नीचेकूं झुकै। हलुके ऊँचे जाय ॥ २८ ॥
तरुवर सुफल सजल अति आभे। मानस सगुन नवै निज दास॥
जन रज्जब फल जल गुन छूटैं। तीन्यूं ऊंचे जाँय अकाश ॥२९॥
रज्जब झरते धुकि धरनी मिलहिं। अझर सु ऊंचे जांहिं॥ उभै
अंग आभै लियो। किरपन झिपाला माँहिं ॥ ३० ॥ जड नीचहुं
ऊंचे गये। रज्जब नर तरु साखि। मनसा वाचा करमना। तातें
लघुता राखि ॥ ३१ ॥ आपै चढि नीचा गया। उतर्यूं ऊंचा
जाय ॥ ज्यूं रज्जब करवेणपरि। निनिनाद निरताय ॥ ३२ ॥
परमारथी पनींगपति। सृष्टिभार सिर लीन ॥ तौ रज्जब प्रभु वहम
परि। नांव तिनहुंके कीन ॥ ३३ ॥ गुण डोरी नीची खिचत।
जन दीपै आकाश ॥ रज्जब उलटे पेचकूं। समझै समझ्या

दास ॥ ३४ ॥ नीचे ऊंचे थान परि। बैठत भारी भेल॥ फूसकेण सो समंद सिरि। पगतलि नग निरमोल ॥ ३५ ॥ मीठी मती महंतमति। कण जण निपजै मांहिं॥ फोकट फूले खार छै। रज्जब नेपै नांहिं॥ ३६ ॥ सुकचिकली इरतर लगै । अलग सु फूलाणे फूल॥ तौ रज्जब सिमट्या रही। ज्यूं छूटै नहिं मुल॥३७॥ मातंग महोदधि नीपजैं । मुकता उभै मँझार ॥ रैणसूर गरबै नहीं। गरबै गजसु गँवार॥ ३८ ॥ साधूमत दीपक बुझै। ब्रह्मयूं बढाई बाब॥ रज्जब रामहुं जोतिकूं । तौ लघुता जतन उपाव॥ ॥ ३९ ॥ अधपाति आभै अवनि अतीत । झुकि झुकि मिलहिं अज्जब रस रीत॥ गरब गरद जो जाय अकाश । तो सब नांवे धरैं सुनितास॥ ४० ॥ रज्जब राम उमँगि करि। आप सहित दे सरब॥ तऊ दास दिल दीन मत। गणता होय न गरब॥४१॥ सलल संठ सगुड गठी। खांडतरो भइताहि॥ मिश्री व्है सुखतिण लिया। रज्जब कही न जाय ॥ ४२ ॥ रज्जब लहुडहु आदरहिं। तिनसम बडा न कोय॥ बूंदहुं छठे समुंदजा । देखि बुदबुदा होय॥ ४३ ॥ नीचे ऊंचे आवहिं। दाल भात दिसिजोये॥ जन रज्जब अज्जब कही। तलैंसु ऊपरि होय ॥ ४४ ॥ गरीब निवाज गुसाइयाँ। पुनि निवाज नरपति॥ रज्जब सींप गजेंद्रहूं। मुकता देय सुसत्ति॥ ४५ ॥

साखी १३७६ अंग ४२

॥ अथ गर्वगंजनका अंग ॥

आदित आगि इंद्र अरु उडगण । दामनि दमक सुमूंदि॥ रज्जब जगत जोति बलभागे। लाई जींगनीं पूंदि ॥ १ ॥ रे रे केशरि अगर तूं । नकरि मान गुमान ॥ हरीवास सु गुदामें।

मैल मँझारी जान ॥ २ ॥ ब्रह्मा शारद अखिरधर । मानन करि यौ कोय ॥ मूये श्वानके पूंदमें । चारि बेद ध्वनि होय ॥ ३ ॥ गिरिवर गरब न कीजिये । सप्त धातु धन जोरि ॥ तांवा निकसै पंखमें । लागी पूंदन मोर ॥ ४ ॥ विष हरै नर विष करै । अति गति मोलि विकाहिं ॥ बडे पहाडकी धातु सब । मोर धातु सम नाहि ॥ ५ ॥ गांडर जडहु सुगंध मिठाई । तौ वावन बल छाडि॥ लघुकूं दीरघ दीन दत । पदयूं पदई बाढि ॥ ६ ॥ लघु तिणके मदिनाजकी । दीरघ द्रुमहुं सुऔर ॥ गरब गंजन गोविंदजी । काल द्वन किस ठौर ॥ ७ ॥ इंद्र धनुष रंगकाढिन गरबी । जैसो काढै किरकाट ॥ रज्जब राम रूप दिय सर भरी । बधी कौंनकी आंट ॥ ८ ॥ तेज तत्वकूं दीध ललाई । सो बूढडी भ्रम भानि ॥ रज्जब रक्त वर्ण सब रोये । कोनरूप कहां सान ॥ ९ ॥ शशी समंद गरव्यो कहा । जो मधु मांखी मांहिं ॥ तुममें सुधा शहत अंजरीमें । गरब रह्या कछु नांहिं ॥ १० ॥ अमी कुंभ वैकुंठमें । शशिमें सुधा सुठौर ॥ सोई सिरज्या श्रय सुखी । अलष दिखा-यो और ॥ ११ ॥ अजब बंधन पुस्तक किया । जोतिग ठौर उठाय ॥ आगम कह्या ये बाळनें । सो रह्या न जोतिगराय॥ १२॥ जोतिग जुगति न जानहिं । खांडर वारलिरेत ॥ सो कीडीकी मति लही । ढूंढ्य कणूके केति ॥ १३ ॥ कीडीसूं कुंजर डरै । सोवै सूंडि समेटि ॥ गज गुमान तबका गया । मानमकोडे मेटि ॥ १४ ॥ स्यंधुर डरपहिं सिंहसे । ताहि सुमाछर खाँहि ॥ पौरुष रह्या न पंचमुख । मांनसु मरह्या माँहि ॥ १५ ॥ मोटी काया सुगध जीव । आदम छोटा साज ॥ दीरघ देह्यो दर पहरै । लघु देही सिरताज ॥ १६ ॥ दरप रह्या दरियावका । उडिगि उदधि आरोग्य ॥ रज्जब रजसूं कहां रही । पच्या अभोगी

भोगि ॥ १७ ॥ नाल खाल नौसे लियूं । नदीनाथ गरजाय ॥ सो अगम सत अचवन किया । तो माति कोई गरबाय ॥ १८ ॥ एक सूर तारे अनंत । देखि दरस दबिजांय ॥ रज्जब गरब न कीजिये । बैठि सु विधु घणमांहि ॥ १९ ॥ परिवार यूरि तारे अनंत । चंद रहै तिन मांहि ॥ रज्जब पकड्या राह जब । सगौ सग्या कुछ नांहि ॥ २० ॥ गरीब निवाज गंजन सांई । उभै बिडद परि बांधी बांई ॥ रावहि रंक रंककूं राजा । सब विधि समरथ पूरन काजा ॥ २१ ॥ गरब गंजन गोविंदजी । सदा गरीब निवाज ॥ उभै अंग अविगतकनैं । बहै बिडदकी लाज ॥ २२ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश सूर शशि । इन्द्र लगै असवार ॥ रज्जब रथ परि घुरहु न शंकट । गर्भ चढै भये ख्वाह ॥ २३ ॥ हंस गरुड विरख बाज मृगमद । ये रथ सुर असवार ॥ रज्जब तिनकूं विघन न व्याप्या । गरब गादह परिभार ॥ २४ ॥ खढे चढे प्राणहु चढे । चढे सुदिल दीवान ॥ रज्जब पाले पीटि यहि । चढे विगरबी गुमान ॥ २५ ॥ चौराशी किसपरि चढी । पशु पाले दिनरात ॥ रज्जब रामाईं ना मिली । हम रीझे इस बात ॥ २६ ॥ न्याव नीति सब ठौर सुप्यारी । रज्जब दीसै तीन भौन ॥ प्यारे चढे चाकरी पूरे । तिनके पट्टे उतारे कौन ॥ २७ ॥ बैठे रथों देवता सारे । सो सब कहौ कहाँ थे झारे ॥ रज्जब सेवक सेवा माँहिं । तिनके पट्टे उतरें नांहिं ॥ २८ ॥

॥ कवित्त ॥

ब्रह्मा वाहन हंस । विष्णुके वाहन खगपति ॥ शंकर वाहन बैल । मूंसे परि मँढे सु गणपति ॥ कार्तिक स्वामिकै मार । शक्ति सहित सिंह विराजै ॥ हयगज सूरज इन्द्र । शशिरथ सारंग साजै ॥

सुर सबहिन प्यारे पहुंण। तिनके कजन बीगडे ॥ जे रज्जब आपै चढै। ते परले बिमुख पडै ॥ २९ ॥ रज्जब रीति बंदगी। जबलग आपा माँहिं ॥ मनसा बाचा करम। साहिब मानें नाँहिं ॥ ३० ॥ वपुछांडी वाराह की। करहु न गरब गुमान ॥ रे रज्जब यूं जानिले। जेतुं चतुर सुजान ॥ ३१ ॥

साखी १४०८ अंग ४२

अथ करुनाका अंग ॥

आदि अंत मधि हमबुरे। हमसों भला न होय ॥ रज्जब ज्यों साहिब खुशी। सो लक्षन नहिं कोय ॥ १ ॥ रज्जब हमसों हम दुःखी। तौ राम सुखी क्यों होय ॥ अजा अजुगति कण्ठ कुच। खस मन पीवै चोय ॥ २ ॥ बंदै मैंसों बंदगी। जामें सुख नहिं लेश ॥ रज्जब सिरिकी ठौरथी। तहां न दीजियेहि केश ॥ ३ ॥ रज्जब सम अधमें नहीं। तुम प्रभु अधम उधार ॥ उभै अंगमें फेर क्या। कीजै कृपा विचार ॥ ४ ॥ रज्जब पापी पहम परि। रोम रोम रुचिपाय ॥ कृपा करो तो उद्धरे। सेवग सुतहरि बाय ॥ साध साध सबको कहै। मैं साध्या कछु नाँहिं ॥ पंच पचीसो त्रिगुण तन। मनर मनोरथ मांहि ॥६॥ तुम जोगी सेवक नहीं। मैं मद भागी करतार ॥ रज्जब गुण नहीं बापजी। बहुत किये बिभचार ॥७॥गुनहूं माँहैं गलि रह्या।गाफिल हुवा गँवार॥रज्जब शठ समझै नहीं। साहिब सुनहु पुकार ॥ ८ ॥ तनमन सेझा पापका। अरु इंद्री अघखानि ॥ रज्जब पूछै रामकूं। सजा सुकौनें काम ॥ राम कसौटी सब सुलय। रज्जब पाप अपार ॥ सजा न सूझै साँइयों। मोसम तोदरबार ॥ १० ॥ उदरि उदरि ऊंधे रहे। सहि शंकट सब मौन ॥ रज्जब जग जामे मुये। सजा देहुगे कौन ॥

॥ ११ ॥ विपति नहीं प्रभु विमुख सम । सो सिरजी मम सीस ॥ अब रज्जब सों ऐस करि । कांरिसौ क्या जगदीश ॥ १२ ॥ बद अमली क्या बदन दिखावैं । बंदेका मुहँ काला ॥ प्रभुजी दरशन उज्जल दीजै । क्या बैठे देताला ॥ १३ ॥ करुनामें करुना करौं । देखहु दीन दयाल ॥ रज्जब रीता रहा बिन । तुम पूरन प्रतिपाल ॥ १४ ॥ स्तुठि सेवक विनती करै । चेरौ चवै पुकार ॥ रज्जब दुहुमें एकहै । समरथ सिरजन हार ॥ १५ ॥ चोर जार बटपार व्है । पापी करै पुकार ॥ रज्जब राम दयालु है । सो अघ मेटण हार ॥ १५ ॥ येकमार परि मौज व्है । इकमार मिहरि सौं जाय ॥ रज्जब सों करि शेश रसि । भगवंत आवौ भाइ ॥ १७ ॥ कालर-सूल पटाल है । न्यारी निपट निवाज ॥ पै रिजकन मैटें रामजी । कीहै कीहै लाज ॥ १८ ॥ रज्जब सन्मुख विमुखकूं । बरा विसंभर देय ॥ कीये की लज्जावहै । गुन अवगुन नहिं लेय ॥ १९ ॥ सुकति मुकति अनि सीपसां खुले । जल जलनिधि इक भाय ॥ मँहगे सौहँगे रज्जब । व्है अंकुर सुभाय ॥ २० ॥ गुनहींकूं मारों धणी । अपणे हाथसुआय ॥ अंतिकाल आनंद व्है । दरसमु देख्या जाय ॥ २१ ॥ विडद विहारी बाहुडै । बाहुडि बहिये लाज ॥ रज्जब केरिये मारिये । ये सांई सिरताज ॥ २२ ॥ गर्व गंजन गोविंदजी । मुनि अनाथके नाथ ॥ रज्जब केरिय अंठि-ये । ये व्यापक भीर बाथ ॥ २३ ॥ तनमन पंचों चोर है । बासि आवहिं नहिं बाज ॥ इनके गुनहनि मारिये । ये सांई सिरताज॥ ॥ २४ ॥ दीन दयालु दया मयी । सदा दीनके पास ॥ रज्जब की फरियाद सुनि । मेटहु मेरी त्रास ॥ २५ ॥ कला अनंत कनं-त कन । आत्मकन नहिं येक ॥ रज्जब राम रिझावनां । लहिये

नहीं बमेक ॥ २६ ॥ रज्जब अज्जब राम है । कहे सुनेमें नाँहिं ॥ यहु अशुद्ध अंतःकरण । वह देखै दिल माँहिं ॥ २७ ॥ गरीब निवाज गुसांइयां । गुरु गरीबों दास ॥ रज्जब चूक जु हमें हुमें । नहीं गरीब गुनपास ॥ २८ ॥ रज्जब विनती परिब्रह्म । करुणामें सु विरुद ॥ पुकार सुन्यू प्रभु बाहरू । पैमै सुरथूकौं रद ॥ २९ ॥ घरमें पारस लोहथा । परिलै लाया नांहिं ॥ मनसा वाचा करमना । चूकपडी मुझ माँहिं ॥ ३० ॥ निहथ्था आयानांवका । परिनांव न आया ॥ रज्जब रजतज काटतूं । प्राणी पछिताया ॥ ३१ ॥

साखी १४३९ अंग ४४

अथ विनतीका अंग ।

सकल पतित पावन किये । अधम उधारन हार ॥ बिरद बिचारो बापजी । जन रज्जबकी बार ॥ १ ॥ रज्जब ऊपरि रहम करि । हरिजी दीजे हाथ ॥ नांता राखो नांवका । नरक निवारन नाथ ॥ २ ॥ लाखो माहै सो लखै । जाका लीजै नांव ॥ सो रज्जब मुख्य नाम है । देखो नेबलि जांव ॥ ३ ॥ रज्जब टेरै रैन दिन । क्यों बोलै नहिं कंत ॥ कै तुम्ह अब मौनी भये । कै तुम चाहौ अंत ॥ ४ ॥ जै तुम राम बुलाय ल्यो । तौ रज्जब मिलसी आय ॥ यथा पवन प्रसंग व्है । गुड्डी गगनकूं जाय ॥ ॥ ५ ॥ बिन आधार आकाशकूं । कहौ बेलि क्यों जाय ॥ त्यूं रज्जब निरधार है । साहिब करौ सहाय ॥ ६ ॥ देही दूत रमन अतिर । मौज मनोरथ माँहिं ॥ विषम बारिनिधि राम बिन । रज्जब तिरिये तांहिं ॥ ७ ॥ इन्द्री अनंग अगार है । काया कपडै माहि ॥ बप बस्त्र वाप बँचै । नहीं तो उबरै नांहि ॥ ८ ॥ साहिब राखै मौंडमें । साहिब पिंड मझार ॥ साहिब राखै औरमें । औरन

राखन हार ॥ ९ ॥ सुते सुतहिं खुलावहिं । माता पिता जगाइ ॥ त्यूं रज्जब सों कीजिये । भगवंत आवो भाइ ॥ १० ॥ बाहरि कहिये कौनसों । माहें मुशकिल काम ॥ अंतरि अंतर मेटिये । अंतर जामी राम ॥ ११ ॥ रज्जब कीडा नरकका । ब्रह्म कवलि क्यों जाय ॥ भगवंत भ्रंगी रूप है । जेनहिं लेहिं उठाय ॥ १२ ॥ भ्रंगीनें भ्रंगी करी । कीट किरत कछु नांहिं ॥ त्यों रज्जब सों कीजिये । क्या देखो हम माँहि ॥ १३ ॥ बालक विष्टामें पड्या । सु आपन उज्वल होय ॥ जन रज्जब माता पिता । जै सुत ले-हिन धोय ॥ १४ ॥ जंगमजी जोडे बँधे । थावर महीसु माँहिं ॥ बाबाके बंध बाबो खोलै । आप खुले सो नाँहिं ॥ १५ ॥ बालक-कै बल रोजका । पडि लुडि करै पुकार ॥ रज्जब सुतमें शकति यहु । समरथ सिरजन हार ॥ १६ ॥ बाबा माँहु बीनती । बेला ब्रंभू होइ ॥ जो मिरतक माता पिता । सो सुत धरहिं न द्रोह ॥ ॥ १७ ॥ जबतब तुमतें होहिगा । जाना राइजीव काज ॥ रज्जब ज्यूंथी त्यूं कही । श्रुनि श्रवणों सिरताज ॥ १८ ॥ रै नाइर रिधि मधि परै । बोहिथ वेत्वा साथ ॥ रज्जब पहुंचै पार-तौ । जै खेवहिं अनिल आध ॥ १९ ॥ मो मन अघ सागर सही । तुम प्रभु हो अघसत ॥ रज्जब के अपराध अति । मिटै न बानि हरि असत ॥ २० ॥ तन मनको धोवै धणी । बुद्धिके वि-विधि विकार ॥ रज्जब कारम ऊतरै । तुम्हतें सिरजनहार ॥ ॥ २१ ॥ प्रीतम प्रकटो ताप ज्यों । प्यंडते प्राण छुडाय ॥ मारि मिलाओ आपमें । जन रज्जब बलि जाय ॥ २२ ॥ संतहु आत्म राम विचि । माया पुटि भरि पूरि ॥ रज्जब टालै कौन विधि । जैहरि करहित दूरि ॥ २३ ॥ जो दिनकर अरु दृष्टि विचि ।

आभा आडा होय ॥ रज्जब कीजे दूरि क्यों । हिकमति चलै न
कोय ॥ २४ ॥ हरिहमजांम मोमन मुकर । माया म्यान करि
माहि ॥ सुख सुख देखहिं काढिकर । नही तौ काढै नाहि ॥२५॥
जै तुम राखो तो रहै । सेवक सदा समीप ॥ रज्जब त्यागे सांईयाँ ।
तौ बहुत पडै बिचि दीप ॥२६॥ दरसहि द्वारै राखिये । हरि हित
आख्यो हेर ॥ बंदेकी यहु बीनती । घरि घरि बारिन फेरि ॥२७॥
जीवकृत जगदीश कन । जाया कठे न जाय ॥ रज्जब जबलग
रामजी । आपन करै सहाय ॥ २८ ॥ कुलि कसणी करतूतिकर ।
करम कंद नहीं जाय ॥ रज्जब निबडै रहम सूं । भगवत आये
भाय ॥ २९ ॥ रज्जब ब्रह्म विहंगकै । आतम अंड समान ॥ यै
बाबासे ओ नहीं । तौ क्यूं निपजै तन जान ॥ ३० ॥ चौतीस
गढहु माँहै जड्या । जन रज्जब जट प्राण ॥ वंदी तुम्हारी तुम्हतैं
छूटै । साँई सुनहु सुजान ॥ ३१ ॥ सदा सजीव जलकी वृत्ती ।
देखत नीचा जाय ॥ रज्जब सांई सूरसम । ऊंचा लेहिं उठाय ॥
॥ ३२ ॥ अजा जील दिल माँहैं बैठा । भली न उपजण पावै ॥
साहिब अपणां कोल विचारौ । तौ जीव तुम्हपै आवै ॥ ३३ ॥
सदन साँई सारिखा । पैहरि हिरदैकी लेहि ॥ टोटी कहतो मात
पित । बालहि रोटी देहि ॥ ३४ ॥ रज्जब दे बाल विधि । बोलहिं
बुध्दि उनहारि ॥ यै अंतरजामी मात पित । मनकी लेहिं वि-
चारि ॥ ३५ ॥ रज्जब खीराखीर मधि । मुँहडै खारा स्वाद ॥
यूं बोलन जाणे विचि विमल । ताका तजि अपराध ॥ ३६ ॥
अनंत अनौलेते अघौ । तौन उधरते संत ॥ जन रज्जबकी बीन-
ती । मानहु अणामंत ॥ ३७ ॥ भूलचूक भगवंतकी । भिरतहु सु
मंगल चार ॥ रज्जब रजतज काटतूं । ठैहै सेवक सिमार ॥ ३८ ॥

नांव अलेख अलेख कहावै । लेखा लेत नहीं बनि आवै ॥ बाप
बिरदकी बहिये लाज । रज्जब के सीझै सबकाज ॥ ३९ ॥ बंदे-
की जो बंदगी । लेखै बदी सोय ॥ अरज बीनती ब्रह्मसूं । रज्जब
कहि विधि होय ॥४०॥ नांहीं सुं नांही उदैं । है सो हे सा होय॥
रज्जव कामहु वीनती । साहिब देखो जोय ॥ ४१ ॥ रज्जब
आंखि आतमां एकगति । फूटे सारे गोत ॥ पै प्रभु पालहिं पलक
परि ॥ टंकत दुविधिन होत ॥ ४२ ॥ जोगी जटहि लगाइले ।
टूटा सारा केश ॥ त्यूं रज्जब सो रामकरि । यहां नहीं लव लेश ॥
भले बुरे छूटैंन प्रभु । जे लागे निज आग ॥ घटधारीहुं लै चलै।
लूली लंगडी टांग ॥ ४४ ॥ सुरही सुत मिरतगरुचा । तापरि
सरवै खीर ॥ तौ त्यागहुगे कौन विधि । भगत वत्सल व्रद भीर
॥ ४५ ॥ ब्रह्म गाय वंदासु बच्छ । मूरा मूरति गोर ॥ सकति
सीर सरवहिं सदा । घटी कृपा नहिं कोर ॥ ४६ ॥ भाव भोजकी
दामनी काया । खँडेलै ख्याल ॥ बावा बागड स्यों धस्या ।
रज्जब किये निहाल ॥ ४७ ॥ रज्जब गुनहिं आदिका । अंति ल-
गेहू सोय ॥ माधि माधि मक्ति करत हौ । कहु छूटण क्यों
होय ॥ ४८ ॥ मैं मेरा पाया सुदा । मनक्रम विश्वाबीस ॥
रज्जब खोटा तू सही । तौ त्यागहिं जगदीश ॥ ४९ ॥ गैरी पाडे-
के चलहिं । बिकैं वितके साथ ॥ रज्जब तूं खोटा सही । जुहरि
पकडै नाहिं हाथ ॥ ५० ॥ रज्जव गुनाहिं जीवजंट । अपराधी सु
अपार ॥ मिहरि तुम्हारी ऊबर । साचा सिरजन हार ॥ ५१ ॥
मीरां मुझमें क्या खता । जे तुम विसरै वाप ॥ अब रज्जब परि
रहम करि । दै अघमोचन जाप ॥ ५१ ॥ बदी विस्याही बहुत-
की । नेकी नेक न लीन ॥ जन रज्जब जग आयकर । कहो कहा

हम कौन ॥ ५३ ॥ जब काजी वजूद किया । तबका चढ्या क-
लंक ॥ अब रज्जब सो राम मिलि । मेटीजै अघ अंक ॥ ५४ ॥
जुग अनंतका रूठना । भानहुं आतम राम ॥ रज्जब लम्बा शेष
अति । नहीं भलों का काम ॥५५॥ रज्जब आया चूकता । सदा
चूकही माँहि ॥ पै प्रभु तुम्ह चूकहु सुक्यों । मुझहि उधारो नाँहिं
॥ ५६ ॥ कै तुम काट्या गुनहुं परि । पैहुं नरपरकाश ॥ पागि
परसावौ परम गुरु । दुरि दुखियहु दास ॥ ५७ ॥ भला बुरा जैसा
किया । तैसा निपज्या जीव ॥ यहु तुम्हरा तुम्हकूं मिल । तुम्ह
क्यों मिलै न पीव ॥ ५८ ॥ जांणि लिया खोटा खरा । सोब फिरै
नहिं साँई ॥ तो रज्जब है पुत्र तुम्हारा । करस्यौ कहां गुसाँई ॥
॥ ५९ ॥ त्यों साहिब सन्मुख सदा । बंदा विमुखाकदीम ॥
तौ रज्जब सों रोस क्या । कीजे फहम फहीम ॥ ६० ॥ ममक्त-
क्ति हैरानहरि । हूंहैरान हरिहेत ॥ रज्जब से पापिष्टकूं । रिज-
करहमकी देत ॥६१॥ हम समानि गुनहीं नहीं । तुमसम बकसन
हार ॥ उभै अंगमें फेर क्या । कीजे कृपा विचार ॥ ६२ ॥ रज्जब
रूठा रामसूं । मिलि रामतिके अंग ॥ गुण ग्राही गोपालजी ।
तऊमयेनहिं भंग ॥ ६३ ॥ पीडा पंचों तत्वकूं । रोगी रार वि-
केश ॥ तौ आदमकूं ऐब क्या । रज्जब किसा अंदेश ॥ ६४ ॥
सब सुखदाई सुधा श्रवै । सोई कलंकी चंद ॥ तौ आदममें ऐब
क्या । अचरज क्या गोविंद ॥ ६५ ॥ ऐबदार आकार सब ।
औजुद सहित अखांहि ॥ शशि सूरज औगुन भरे । इंद्र उदधि
दासि चाहि ॥ ६६ ॥ त्रिविध भांति तरुन्यूंतपै । द्यौस जन्म
निस नास ॥ रज्जब रवि रावयूं निरखि । इकरस भये निरास ॥
॥ ६७ ॥ पन्द्रह तिथी सोलह कला । ब्रतें शशिसुशरीर ॥ तौ

रज्जब आदम एक रंग । रहै कौन विधि बीर ॥ ६८ ॥ रज्जब सबदिन एकसे । कदे न आवै कोय ॥ त्रिविधि भांति तरुन्यू तपै । लघुदीरघ शशि होय ॥ ६९ ॥ तुम पूरण प्रतिपालजी । औगुण दिसा न देखि ॥ रज्जब बूझै रामजी । लीजै काटि अलेख॥ ॥ ७० ॥ सुतमें शत अपराध व्हैं । पर पिता न पूछै बात ॥ त्यूं रज्जब अवगुण भरचा । क्यों त्यागहुगे तात ॥ ७१ ॥ सलिता साधू स्यंघ हरि ॥ उभै उभै दिशि जांहि ॥ रज्जब रिधि रहिता सहित । इष्टसु बिरचैं नांहिं ॥ ७२ ॥ नदिया नर मैले वहैं । भरि जोबन मै मंत ॥ रज्जब रज देखै नहीं । ईसो उदधि अनंत ॥ नदी बहत नरनींकसे । तिणां गह्यै वह लाज ॥ त्यूं रज्जब क्यूं बूझसी । जु बैठा नांव जहाज ॥ ७४ ॥ नांव बिनानगनी-पजैं । हीरा मोती लाल ॥ तौ रज्जब सुमिरन सहित । सोकिन होत निहाल ॥ ७५ ॥ नांव छेद नखभरि पड़ै । पांणी भरिये आय ॥ तौ रज्जब तनक्यूं रहै । जाकौ दह दिशि राय ॥ ७६ ॥ जथाकटोरी घडीकी । बूडि जाय तुच्छ छेक ॥ तौ रज्जब तनक्यूं रहै । जुदहै दिशि भरै विशेष ॥ ७७ ॥ जतसत सुमिरन करनं-का । हरि दाता है दान ॥ रज्जबकी यहु बीनती । मुशकल करण असान ॥ ७८ ॥ प्रभुपर पूरण मोजतें । सतजत सुमिरण होय ॥ रज्जब पावै रहमसूं । और न दाता कोय ॥ ७९ ॥ रोय धोय अं-जल किये । दृग देखन हरि हेत ॥ अब रज्जबकूं रहम करि । काहेन दरसन देत ॥ ८० ॥ जैसे मिनषा देहही । त्यूं प्रभु दै दीदार ॥ यहु रज्जबकी बीनती । कीजै फेर न सार ॥ ८१ ॥ मनिषा देही मोजदी । मिहरि मिलाए साध ॥ अब रज्जबकौं दरसदे । दीरघ दत आगाध ॥ ८२ ॥

तुम जोगी तुम क्या करी । हमहुं बतावहु पीव ॥ सेवक ल्यावै सोधि करि । भेट तुम्हारी जीव ॥ ८३ ॥ तुम लायक तुम्हनां करी । हममें बसत अनूप ॥ तौ भेट भली ल्यावै सुक्या । जगमोहन जगभूप ॥ ८४ ॥ छाया भूत खवीसकी । आतम भूत समान ॥ तौ तुम्हें भजत भगवंतजी । जीव रहैकी आन ॥ ८५ ॥ पडत अघौडी झाड जब । काठै कुचला सुअंग ॥ तौ रज्जब किन पलटिहै । लागत राम सुरंगि ॥ ८६ ॥ मनकी चाही मति करो । सुनि आतम अरदास ॥ सब तुमकूं मालूम है । जो है जाके पासि ॥ ८७ ॥ जीवकूं भावै जगत गुरु । तन मन विषै विकार ॥ यहु अडवी आठों पहर । मेटहु सिरजनहार ॥ ८८ ॥ कै मनकी दुरमति हरै । कै मनकूं प्रभु मारि ॥ जन रज्जबकी बीनती । हरि हमकूं निसतारि ॥ ८९ ॥ तन मनकूं दीजै सजा । रहै रजामें नांहिं ॥ रज्जब रोकै कौन विधि । आप आपकूं जांहिं ॥ ९० ॥ जै तुम राखो तो रहै । सांई सुनहु सुजान ॥ आतम आभैमें रहै । मनवांबीज समान ॥ ९१ ॥ दरिद्र सदा दिलमें रहै । बहुत जुगोंका बास ॥ रज्जब मौज महंत बिन । व्हैनाणे का नास ॥ ९२ ॥ सरबंगी सब अगदे । तौ सुख सब विधि होय ॥ रज्जब मौज महंतकूं । बिरला पावै कोय ॥ ९३ ॥ अन मांग्यावोदर दिया । त्यूं प्रभु देहु अहार ॥ रज्जब पडै न नंदमें । कीये की करि सार ॥ ९४ ॥ बाबा कबकी बीनती । हमकूं करि करतार ॥ भूत उपाया भूख दे । तौ कियेकी करिसार ॥ ९५ ॥ कीये पर करना सबै । यापर बरती साज ॥ भूत भये भगवंत सूं । तौ भूखोंकी बाज ॥ ९६ ॥ पल पल अंतर होत है । पगि पगि पडिये दूरि ॥ बचन बचन बीचै पडै । रज़्जब कहां हजूरि ॥ ९७ ॥

सज्जनजन इच्छा सू यूं । सु रहिये सदा हजूर ॥ पै कठिन कर्म पिछले अबळ । सु पग पग पाडत दूर ॥ ९८ ॥ अंतरही अंतर घणा । आडे लोक अनंत ॥ रज्जब पावै कौन विधि । प्रभु पावन लग जंत ॥ ९९ ॥ अंतहकरण अनंत रिपु । बैरी बहु बळवंत ॥ रज्जब छूटै कौन विधि । बिन सहाय भगवंत ॥ १०० ॥ आरत हर हरि-नाम तुव । रज्जब हरनहिं राय ॥ कै विरद विसाऱ्या बापजी । कै हरि कह्या न जाय ॥ १०१ ॥ रज्जब राग सुनाकटै । बिनदारू दीदार ॥ मुख दिखलावो मिहरिकरि । ज्यूंजीव होयकरार ॥ १०२ ॥ सारंग बूंद समंद है । सून्य सलिल तुछ छंट ॥ रज्जब टेरै हेहरी । येते परि क्या अंट ॥ १०३ ॥ मिनखा देही देतही । पैपरि आणीसारि ॥ अब दाव भाव करि नांवदे । रज्जब उतरै पारि ॥ १०४ ॥ मंदिर मिनखा देह दी । तौ कळस कवल दिख-लाय ॥ प्रभु परिपूरण मोज परि । जनरज्जब बलि जाय ॥ १०५ ॥ सब संतनके कामकूं । साहिब सदा सकैज ॥ तौ रज्जब परि रहम-करि । राखो जन पदलज ॥ १०६ ॥ पंचतत्वकों पेटदे । प्रभु परि सब आश ॥ रज्जब रुचि दे मिलनकी । क्यूं कीजे सुनिराश ॥ १०७ ॥ रज्जबकूं दीजे रजा । तेरा नाम लिवाय ॥ मौज मया परि कीजिये । बंदा बलि बलि जाय ॥ १०८ ॥ करतों यादि अनंतकूं । अनंतै आवै यादि ॥ सांई करी सहाय यहु । जनम न जाई बादि ॥ १०९ ॥ रज्जब टंक निवाजिये । पूरण करो पसाव ॥ और कछू मांगूं नहीं । तेरा दरस दिखाव ॥ ११० ॥ रज्जब की अरदास यहु । और कहै कछु नांहिं ॥ मोमनलीजे हेहरी । मिलै न माया मांहि ॥ १११ ॥ नांव विनाजो ओर है । सो मांग्या मतिदेहु ॥ रज्जब चरनों राखिये । हरि अपना करि लेहु

॥ ११२ ॥ रुचि मांहै रहता रहो। जातां जीवतें जाय ॥ आदि अंत मधि यूं सदा। यहु रज्जब कै भाव ॥ ११३ ॥ चिदानंद चितमें रहौ। मनमोहन मनमांहिं ॥ रज्जब ऊपरि रहम करि। अरि उर आवै नांहिं ॥ ११४ ॥ भाव इहै उरमें बसों। परम पुरुष श्री मोर ॥ रज्जब कै सुख ऊपजै। सत्रन पावहिं ठौर ११५॥ सुरति मांहिं सांई रहौ। शकति सु आवहु जाय ॥ मनसा बाचा करमना। यहु रज्जब कै भाय ॥ ११६ ॥ रज्जबकी यहु बीनती। सांई सुनि देहादि ॥ दिलि बैठो दीवानजी। और न आवै यादि ॥ ११७ ॥ अवलाया दिन आवई। अवि गति कीजै सोय ॥ रज्जबकी यहु बीनती। तुम्हतें सब कछु होय ॥ ११८ ॥ आदि यादि आवै नहीं। अंतरि रहै अनादि ॥ रज्जब सूं यहु कीजिये। जनम न जाई बादि ॥ ११९ ॥ साहिब सूं यहु बीनती। पडदा सकल उठाय। तो रज्जब तुह्मकूं मिलै। नलि आया नहिं जाय ॥ १२० ॥ रज्जब कूं दीजै रजा। तेरा नावरिलाय। बाबा मानों बीनती। बंदा बलि बलि जाय ॥ १२१ ॥ सतगुरु सांई साध-विचि। पडदा करी न पीव ॥ रज्जब सहती और सब। यहु दुख सहा न जीव ॥ १२२ ॥ रोम रोममें रमि रह्या। रमिता राम विचारि ॥ सीप सुरति संतोषयूं। कहां पुरुष कहँ नारि ॥ १२३ ॥ मोमन मोर सु मींडुका। चाहै मोहनमेह ॥ रज्जब रटिये सुगध मति। इन उन कौन सनेह ॥ १२४ ॥ जन रज्जबके जीव कन। सो न कराई नाथ ॥ जाऊ परि तुम रोषकरि। छाडहु सेवक हाथ ॥ १२५ ॥ जे तुह्मकूं भावहि भली। जे तुह्म जानहु जान ॥ रज्जब पावै रहम सों। दया करहु दीवान १२६॥

साखी १५६४ अंग ४५

अथ संतसहाय रक्षाका अंग।

सब ठाहर रक्षा करै। गुरु गोविंद सहाय। जनरज्जब जोख्यूं नहीं। विघ्न विलै व्है जाय ॥ १ ॥ शब्द सुरति आतम अंग। घँर,दर उर अस्थान ॥ रज्जबकी रक्षा करो। सब ठाहर रहमान ॥ २ ॥ रज्जबकी रक्षा करो। कदे न होय अकाज ॥ जोतैं राखै सो रहै। ये सांई सिरताज ॥ ३ ॥ पंचभूत मन दैंतका। धक्का टालिदयाल ॥ रज्जब ऊपर रहमकर। राखिलेहु रछपाल ॥ ४ ॥ तन मन मतैं मनोरथों। भ्रितभंजन ये भानि। रज्जबकी अरदास यहु। हरि जी हरिये हानि ॥ ५ ॥ जनरज्जब जगजीव। रक्षा व्है गुरु बैन ॥ विविध भांतिटालैं विघन। सदा सुपावैं चैन ॥ ६ ॥ रज्जब करि रक्षा करो। नांव निरखि उरमाँहिं ॥ बाईस राखी बालकी। ज्यु चांदी छुथै नांहिं ॥ ७ ॥ मनिष मौज देही मँगतहूं। केवलकी रतिकाज ॥ तौ रज्जब जगदीशकरि। उनहिं न इन समिलाज ॥ ८ ॥ प्रभु याके सबठौरहैं। काचे सेवक भाय ॥ जनरज्जब जानिरकही। साध बेद निरताय ॥ ९ ॥ मारुत मोडि महाबली! काढ्या ओरहिं मांगि ॥ रज्जब ऊपर रहम करि। अविगति टाली आगि ॥ १० ॥ विषम बार बारह चढे। धाये आए धाम ॥ झल माँहै जल रूप है। रज्जब राखे राम ॥ ११ ॥ अंतकके उरमाँहिं सूं। काटे अबकी बार ॥ रज्जब सूं अज्जब करी। काल हरन करतार ॥ १२ ॥ ब्रह्म बाहरू देखि करि। सींच गई मुँह मोडि ॥ रज्जब तूरू आवका। कोई सकै न तोडि ॥ १३ ॥ रज्जब बप बनखंडमें। बैरी उठे अपार ॥ तहां राम रक्षा करी। मुये सुमारणहार ॥ १४ ॥ अरि उरमें पोरस

पिसठा। विघन रहे मुरझाय ॥ ब्रह्म बाहरू रूप आवतां। बैरी गये विलाय ॥ १५ ॥ गुरु गोविंदने करी सहाय। अब यहु जीव न मारया जाय ॥ दोय दयादेखी दिलमाँहीं। रे रज्जब कोई डर नाँहिं ॥ १६ ॥ पारब्रह्म पूरी करी। हितकरि पकड्या हाथ ॥ रज्जब राख्या रहमकरि। मीच मिटाई नाथ ॥१७॥ जो तैं राखे सोरहे। जुगि जुगि साधूसंत ॥ सोई रज्जब से करी। मालिक मौज महंत ॥ १८ ॥ महापुरुष की मौजका। कहिये कहा बखान ॥ रज्जब दतकी मति नहीं। जोदे पिंड परान ॥१९॥ षोडस चौंस करणने पाये। सो रज्जबकूं बहुत बधाये ॥ रोम रोम उपज्या अति औज। लघु सेवा परि दीरघ मौज ॥ २० ॥ दया मिहरि किरपा करीम। त्रंभू भये दयाल ॥ बंदेकन बंदगी कराई। मेटे मेरे साल ॥२१॥

साखी १५८५

अथ पीव पिछाणका अंग।

रज्जब सांई शून्यमें। आभावो ऊंकार ॥ सो माया उपजै खपै। पाया भेद बिचार ॥ १ ॥ औतार सु आभोंकी कला। सरगुण निरगुण माँहिं॥ आदि नरायण शून्य सम। लिपै छिपै सो नांहिं ॥ २ ॥ आदि निरंजन सत्य है। अंति निरंजन सोय ॥ बिचि अंजन बपबधि बधै। रज्जब धीजन कोय ॥ ३ ॥ औतारूं अटकै नहीं। जै व्है स्याणां दास ॥ ज्यूं रज्जब आकाश बिचि। आभोंका आकाश ॥ ४ ॥ चात्रिग चित अटकै उरैं। तकि आभे आकार ॥ अवलोकहिं शशि आदिनराइन। जिनही पिऊख सुध्यार ॥ ५ ॥ जै शशिकीया सेवगहुं। राख्या ऊंची वोर ॥ तौ बारिज बिगसे नहीं। चाहि न भिटै चकोर ॥ ६ ॥ सप्त अष्ट आगे मँडे। रज्जब समझै साध ॥ सगुण निर्गुण नेह न न्यारे। पू-

रण बुद्धि अगाध ॥ ७ ॥ देखो सीपसरोज दिशि । कौन भांतिकी भूख ॥ वहनदी नाथ तजि नीरले । वह्न पीवै स्नु पिऊख ॥ ८ ॥ येक ब्रह्म दूसरी माया । ताहि परै गुरु तत्व बताया ॥ स्याणें सिखों तहाँ मन लाया । ज्ञान अकलि का अंत सुआया ॥९॥ सबका कारण आदिनरायण । कारिज में औतार ॥ रज्जब कही विचारि कर । तामें फेर न सार ॥ १० ॥ उदै अस्त नहिं कारण कहिये । कारिज आवै जाय ॥ यहुथी अगम सुगम सब गुरुकी । ज्यूंथी त्यूंसमझाई ॥ ११ ॥ कारण अमर कारिज मरई । ताथें वेत्वा अंतर करई ॥ प्राण पिंड नहिं एक समान । सत्य असत्य उभै पहिचान ॥ १२ ॥ जाती मांहि सफाती न्यारे । सिज दैसूं पहिचान ॥ ज्यूं हुनर राग जीवमें जोलै । करत अलापत जोलै ॥ १३ ॥ निरगुण सरगुण सौं परै । जोति अजो त्यूं दूरि ॥ जांण अजाणत जांणही । सकल रह्या भर पूरि ॥ १४ ॥ ज्यूंद्वै दरपणमें दसमुख दीसै । त्यूं दुबिधा दसराम ॥ जन रज्जब दसमें नहीं । दोसत येक सरै सब काम ॥ १५ ॥ परशुराम अरु राम चंद्र । हुए सुयेकहि बार ॥ तौ रज्जब छे देखि करि । को कहिये करतार ॥ १६ ॥ नांव अनंत अनंतके । बसत येक उर जानि । रज्जब दस दूणें चतुर । सुउरि बैठै नहि आनि ॥ १७ ॥ कर लकुटी फेरतें कुंडाला । नर नरसिंह भये इक काला ॥ रज्जब भोले भरमहिं नेता । चूकहि चकई नही तत्वबेता ॥ १८ ॥ अनेक जुगल मनने किये । पैठिर नींद निवास ॥ पै तिहुठौरन प्रापती । सुनहुं बमेकी दास ॥ १९ ॥ पंचतत्व सब ठौर है । सबघट सबही माँहिं ॥ रज्जब माया विस्तरी । ब्रह्मसु कहिये नाँहिं ॥२०॥ यह सब बाजी नटकी । करि ख्येल्या षट्अंग ॥ रज्जब मानी

जगत जट। सुतन कहौं पित भंग ॥ २१ ॥ रज्जब षट्ट अंग ख-
लक कन। परि खालिक कह्या न जाय ॥ चंद सूर पाणी पवन।
धर अंबर निरताय ॥ २२ ॥ रज्जब जीव जोति मधि ओतरै।
जीवै माया मांडि ॥ पैठै उठै आतमा। हलै चलै सो नांहिं ॥
॥ २३ ॥ रज्जब माया ब्रह्ममें। आतम ले अवतार ॥ भूत भेद
जानें नहीं। सिरदे सिरजन हार ॥ २४ ॥ सरगुण सब कुछ दे-
खिये। निरगुण सुनि अस्थान ॥ रज्जब उभै अगम तत्व। समझो
संत सुजान ॥ २५ ॥ जोति उदै तमनाश व्है। त्यूं तम आए
जोति ॥ तौ रज्जब क्यूं बरनिये। अकल सुइनकै पोति ॥ २६ ॥
तिमिर उजालै सुपरै। है कछु कह्या न जाय ॥ रज्जब रीझया ब-
सत तहि। जो नाहिं सब दिस माय ॥ २७ ॥ बो ऊंकार ये आ-
तमा। ब्रह्मंड पिंड प्रवेश ॥ रज्जब चलि चहुं ठौर सों। आगै अवि-
गति देश ॥ २८ ॥ दीपकहू हिन घरधणी। बासण व्है न कु-
म्हार ॥ शशि सूरज साहिब नहीं। यूं आतम ब्रह्म विचार ॥
॥ २९ ॥ लोहा व्है न लुहार। सोंना सोनी होय कब ॥ त्यूंही
आतम राम। चित्र चतेरहि देखि अब ॥३०॥ घट घट माँहै पंच
हैं। पंच पंचमें प्राण ॥ पै इनकूं ब्रह्म न बोलिये। गुरु गोविंदकी
आण ॥ सब औतारों आकार तजि। भये निरंजन रूप ॥ सोहं
सेवें पण्डितहु। निरगुण तत्व अनूप ॥ ३२ ॥ सगुण निरगुण
येक हैं। तौ झगड्या कछु नांहिं ॥ येहथलेवा कर दाहिनैं।
देखो व्याह सु नांहिं ॥ ३३ ॥ आदि नरायन सत्य है। निगमें
पुकारहिं च्यार ॥ तौ साधूकूं क्या कहूं। पण्डित पढि सु विचारै ॥
॥ ३४ ॥ काया कुंभ जीव जल दरसै। शशि सूरज प्रति बिंब॥
घट फूटे दिन कर गये। अभ्यासत अर अब ॥ ३५ ॥ अंकोंआ-

रसी अर उदै । अगनि अपरबल अंग ॥ रवि रेजे रविही मिलै । जन रज्जब जब भंग ॥ ३६ ॥ व्यापक बहनी व्यौमकी । अंथरप अगनि औतार ॥ मिलहिं सु अंतरि ध्यान व्है । तौहै नांहि उर धारि ॥ ३७ ॥ उइनै सु काढै अंभकूं । उन्हि सु काढै प्राण ॥ त्यूं औरो आटे कहूं । मनवच क्रम करि मान ॥ ३८ ॥ एक सरोग जीवहु लगे । तहाँ औषधि औतार ॥ ब्रह्म बेद न्यारा रहै । बिथा विधसणहार ॥ ३९ ॥ अनेक रोग करि मिश्र उपावै । अनेक औषध साण ॥ बिथा सु बूंटीकेसिरि दीजैं । हरै करै सो न्यारा ॥ ४० काम उमीले सुं करै । अलख लखावै नांहिं ॥ पडदे सूं प्रभुजी कहै । जीव न समझै मांहिं ॥ ४१ ॥ पंच तत्व आडे दिये । काम करै कृपाल ॥ अलख उसीला लख्या न जाय । लोक लोइणू पडेण लाल ॥ ४२ ॥ चेत निनें जड जीव जगाया । लोग कहैं परमेश्वर आया ॥ रज्जब देखि कला पहु उरै । अकल पुरुष याहूतें परै ॥ ४३ ॥ गऊ गराबके जीव जगाए । जगत कहै जगदीश्वर आये ॥ अगम अगाध साध कोइ जाणें ॥ सो रज्जब उर यह आणें ॥ ४४ ॥ विंपुखन पावक पावई । शशि सूरन प्रति व्यंब ॥ आंखि आरसीनां लहै । अवलोकति मधि अंग ॥ ४५ ॥ औतार आतमां आरसी । आदि नरायन दीप ॥ रज्जब एक अनेक विधि । येदीपक दीप उदीप ॥ ॥ ४६ ॥ आतम दीपक जोति हरि । भावतेलतहां पूरि ॥ रज्जब पूजि प्रकाशकूं । भूलि न पडिये दूरि ॥ ४७ ॥ प्रति व्यंब पर ब्रह्मसुजाना । दरपन अंब आतम अस्थाना ॥ तबै ठीकरी देखै देसा । रज्जब लहैं न सोलवलेशा ॥ ४८ ॥ जड जाही गहै चेतन नहीं । समझे समझो बीर ॥ ज्यूं सुरही थणहुं

बिन। सबठाहर नाहिं खीर ॥ ४९ ॥ देखो अविगति उदधितें औतार सुनाले नीर॥ रज्जब रतन न पाइये। सुकृति न सुकृता वीर ॥ ५० ॥ सांई सोवन मेर सूं। औतार नापिंगा धार॥ सिद्ध सबहु का तिनहिंमैं। रज्जब धोवै संसार ॥ ५१ ॥ येक अविगतिने किये। पैदा प्राण अनेक॥ रज्जब जीवहिं जोर घटि। सबतैं होयन एक ॥ ५२ ॥ अविगति वो ओंकार बिचि। अंतर रहै सो जाय॥ रज्जब जीवहुं ज्याव बहु। पैज्वाबहु जीव न होई॥ ५२ ॥ शबद् न समझै आलही। आतमराम अगम॥ रज्जब कही बिचारि करि। नेतो कहै निगम ॥ ५४ ॥ शबद समाना येक गुन। आतम कला अनेक। बचमन पूजै बोलसैं। रज्जब समझि बमेक ॥ ५५ ॥ जन्म अजन्मेंके कहैं। अपणें जाणें नांहिं॥ रज्जब समझि न शब्दकी। बकै बिकल बुधि मांहिं॥ ॥ ५६ ॥ जीव ब्रह्मकरि बोलिए। गुण लखिण सो नांहिं॥ रज्जब बाइक बादि यहु। समझि देखि मन मांहिं॥ ५७॥ रज्जब देख्या अमरमर। अचिरज येकहिं अंग। बिनसैं बोलत बुदबुदे। साहिब शब्द अभंग ॥ ५८ ॥ है नांहिं कै मांहि है। देखो अचिरज अंग। जनरज्जब हैरानयूं। भोले भंग अभंग ॥ ५९ ॥ शबद सु सारा प्यारा लगै। पै जलप्या जीवन होय॥ तसैं आतमराम अभ्यासै। फेर मार नहि कोइ ॥ ६० ॥ दिनकर दरपन दुरमनिमें। अगनि सुनांहीं एक॥ इक निरहार अहार इक। इक बपि बंदि बमेक ॥ ६१ ॥ सांई सूरजकी अगनि। सब प्राणहु प्रतिपाल ॥ दिल दरपन औतार वासुदेव। तिन्य तन तनुकाजाल ॥ ५२ ॥ जीव ज्वाला बेपि बनि बँधे। इहि ठाहर यहुहाल॥ सांई सूरुचि एक है। पै क्रम काजर नांहिं ॥ रज्जब

जीव ज्वाला मई। मलमासि निकसै नांहिं ॥ ६३ ॥ आदि नर-यन आदित रूपी। दीपक देई देव॥अंतक आंधी सुखते बिनसै। रज्जब पाया भेव ॥ ६४ ॥ औतार अगानि औजूद द्वार। संजोग सहित सो करहि विहार ॥ असन उठै अंतक बसि होय। ताकी कला न दीसै कोय ॥६५॥ संजोग सहित भानें घडै। तेता सब औतार ॥ रज्जब रचै वियोग बय। वह कहिये निरंकार ॥ ६६ ॥ आंदि नरायण अकलि है। कला रूप औतार ॥ आदम आतम बादि विधी। बेत्वा करो विचार ॥ ६७ ॥ अकल कला कारिज है। सों सिरी सिरजनहार ॥ रज्जब जीव घटधरि करै। सो कछु भिन्न विचार ॥ ६८ ॥ देवलि मूरति गाइजल। फेरि पाइ जीद-सेज ॥ रज्जब रजतज काटतूं। निरखि सु निरगुण हेज ॥ ६९ ॥ सूकी सूली सौं हरी। बीज धनाकै खेत ॥ रज्जब दिवमें देखिये। निपट निरंजन हेत ॥ ७० ॥ गुरु सुतमारिज्य लाइये। नर सुत होंहि पखान ॥ रज्जब ओतारों रहित। गोरखगिरा बखान ॥७१॥ जोगेसुरज सुनिकं सहित। सकल निरंजन दास ॥ रज्जब परचै प्राणपति। औतारों सुनिरास ॥ ७२ ॥ पुकार लगे प्रकटे प्रभु। रजू भये तजि रूठ ॥ सो समसरि सब ठौर थे। आंवणजाणां झूठ ॥ ७३ ॥ बाध्या बांधे कूं भजै। मुकति होन की आस ॥ सो रज्जब कैसे खुलें। यहि झूठेवे सास ॥ ७४ ॥ रज्जब जो जामें मरै। ताका तजिये बास ॥ हसहि अमर सो क्या करै। जु आप फिरै गरभबास ॥ ७५ ॥ उधरया कहिये जीवसो। जहि जामण मृत नांहिं ॥ तौं रज्जब आवै ब्रह्मकूं। उत्पति परलै मांहिं ॥ ७६ ॥ एक कहै औतार दस। एक कहै चौबीस ॥ रज्जब सुमिरै सो धणीं। जो सबही कै शीस ॥ ७७ ॥ अबिचल

अमर अलेख गति। सकल लोक सिरताज ॥ जन रज्जब सो सिर धरया। जा सिरि और न राजि ॥ ७८ ॥ चंद सूरपानी पवन। धरती और आकाश। जिन साहिब सब कुछ किया। रज्जब ताका दास ॥ ७९ ॥ जा घरमांहि असंख्य घर। अजों सु सुकता ठौर ॥ रज्जब सेवक तहिसदन्य । जासम सीर नहीं और ॥ ८० ॥ रज्जव उदै अस्त त्रिगुणी भगति। इनका यहै सुभाय। निरगुण निहचै एक रस। नर देखो निरताय ॥ ८१ ॥ त्रिगुण रहित त्योरी चढ्या। निरगुण निरख्या नैन ॥ रज्जब राता ठौर तहिं। कदे न होय अचैन ॥ ८२ ॥ आकार इष्ट जिन आतमहुं। पै निहचै निरकार ॥ कहतौ कर ऊंचे करहिं। नीचे सेवणहार ॥ ८३ ॥ निराकार सूं नरहुं कै। मन वच क्रम सनेह ॥ सब को देखै शून्य दिसि। रज्जव गये सुमेह ॥ ८४ ॥ रज्जब जाण अजाणका। निराकार सूं हेत ॥ प्राण चलै पिंडहिं तजत। देखो जरि सुदेत ॥ ८५ ॥ निराकार ऊपरि धरया। पंच तत्व आकार। उड गण इंद अकाशतलि। पाया भेदविचार ॥८६॥ सून्य स्वांति सद जलहिसों। निपजहि मोती मन्ना ॥ बाजि बारिन दोष है। समझो साधू जना ॥ ८७ ॥ शंख साखुले सींपसु कौडी। काया कुंभनी नीर ॥ पै मन मुक्ता विन सुनि स्वाति जल। रज्जब हूं हिनवीर ॥८८॥ अधर अंभेले मोरडी। होइ सपूछा मोर ॥ सोई मदन ले मही सूं। सो सुत होइल डोर ॥ ८९ ॥ अधर अंभ सारंग ले। सारै सालि संतोष। अनि पंखी पीवहिं पहम। त्रिखा न भाखै दोख ॥ ९० ॥ धरचा उपज्या धरै सौ। धरे सु पावै पोख ॥ आतम उपजी अधर सूं। अधरै मिलै संतोष ॥ ९१ ॥ चौरासीमें बप विबधि। वो ओंकार जीव

जीव एक ॥ सीन्या शरीरों मिलि चल्या ॥ जगपति ज्युं शबमेक ॥ ९२ ॥ सीजी पूंगीबांसुली । बाजहिं कुंभ सुभौन ॥ सहनाई शंखभेरि । नादज्यु बाइक पौन ॥ ९३ ॥ विहंग बाग घडियाल सुनौबत । सहनाई सुनिबात ॥ शरीर सुभाव सिंगारौ समझे । सप्तभांति परभात ॥ ९४ ॥ षट्दर्शन षट्पंथ शास्त्र । गैबी माग सुमाँहिं ॥ सपतौ चलता देखिये । सांई शहरि सु जाँहिं ॥ ९५ ॥ कोई आया कूदि करि । कोई बंधि करि पाज ॥ रे रज्जब लंका लई । किया आपणा राज ॥ ९६ ॥ स्वयंसिद्धि तत्व पंच है । ब्रह्मबिना ब्रह्मंड ॥ तौ रज्जब यहुको करै । बंधमुक्त जिवप्यंड ॥ ९७ ॥ नीचौनीचाहै धणी । ऊंचो ऊंचा सोय ॥ जनरज्जब बिचि सब धरया । उस बाहरि नहिं कोय ॥ ९८ ॥ सरबंगी सबगुण लिए । अण अंग अंग अनेक ॥ जनरज्जब जीहूं रच्या । अपणें का जिनयेक ॥९९॥ सो वनम्रिगन मैं रच्या । तौ क्यूं मारण जांहिं ॥ तेते मैं सीताहरी । खबरि नहीं यहु माँहिं ॥ १०० ॥ सीता सील सुला किया । दिबदे आनी जब ॥ रज्जब जांणी रामकी । सकलाई तब सब ॥ १०१ ॥

साखी १६८६ ।

बलबमेकका अंग ॥

बे कल्यू बल देखि करि । जीव किया जगदीश ॥ जो रज्जब जामें मरे । सोहं मधरैन सीस ॥ १ ॥ सौपी सिधकारिज करै । शोभासिरी औतार ॥ रज्जब भूले भेद विन । ताहि करै करतार ॥ २ ॥ शक्ति सिद्धि अष्टरिद्धिका । जोर मिलै जिव माहिं ॥ बलि बिलोकि कहिये ब्रह्म । पै परमतत्व येनाहिं ॥ ३ ॥ येकूं कूं बल बहु दिया । येक किये बलहीन ॥ रज्जब दोन्यूं जीव है । जग

पतिके आधीन ॥ ४ ॥ गोवर्द्धन धार‍्या कृष्ण । द्रोणागिरि हनुमंत ॥ शेष सृष्टि शिर परधरी । को कहिये भगवंत ॥ ५ ॥ पृथ्वीभार अपार अति । सदा शेष कै शीश ॥ रज्जब कहताना सुण्यां । नर नागहिं जगदीश ॥ ६ ॥ सप्त सिंधु रौले उठै। अनल पंख आकाश ॥ रज्जब सो भी जीव है । वेत्वा करो विमास ॥ ७ ॥ देखहु बली विभूति बल ॥ गढ गोलै सुउडाव । तौ माया जहां जीविती । जोरहि कहा कहाव ॥ ८ ॥ जीव जोर जड है न कछु । लेचालै सुअकार ॥ बलहिं देखि बहँके जगत। ताहिकहै करतार ॥ ९ ॥ चौरासी लखि थान उथेलै । बंदहु बिपल सुबल ॥ रज्जब रजमल नालग्या । धन्य धूंधलीमल ॥१०॥ मनसा सुई जिवावहीं । प्राणहु देहि पैवान ॥ दिलद्दारहुंकों फेरई। सबलौं सबल सुजान ॥ ११ ॥ समीर शेषमनसा मही । मनुवां मेर सुमांहिं ॥ साध उठावै ये सकल । औरहु यह बल नांहिं ॥ १२ ॥ पृथ्वी अपतेज वायु आकाश । पंचोंतत्व उथेलहिंदास ॥ मांड तलैं सौं ऊपरि आवहिं । तेनकेवल बरिकाहि बतावहिं॥१३॥ रज्जब माँहै बल सुमहाबली । बाहरि बल बलवंत ॥ बाहर देखै बाहिले । भीतरि साधू संत ॥ १४ ॥ शकल सिद्धि मानहुं ध्वजा ॥ औतार आतमासीस ॥ रज्जब अज्जबदेखिये । जहां धरैं जगदीश ॥ १५ ॥ नाहर नेत भुजंगमणि । हीरा जीगन जोय । रज्जब रणी जगमगै । सोबल द्योसन होय ॥ १६ ॥

साखी १७०२

औतार अतीत महात्मका अंग ।

औतार कुंभप्रति व्यंबपरि । आदि नारायण भान । रज्जब दरपन दास दिल । अगनि उदै पहिचान ॥ १ ॥ औतार मंद

ऊजल उभै। आया अैब सुहोय ॥ रज्जब उडिगन अनिनजन। कष्ट कलंक न कोय ॥ २ ॥ अरक इंद औतार विधि। सोखै पोखै प्राण ॥ रज्जब उडै अतीत गति। साखी भूत सुजान ॥ ३ ॥ अरक इंद औतार तळि। ऊपरि ऊडग अतीत ॥ रज्जब लघुदीरघ लखे। पदयों उपर मतीत ॥ ४ ॥ रज्जब सुन्यान सूरज शशि। अचया सोज अगसत ॥ यों अवतार अतीतका। लह्या भेद बल बसत ॥ ५ ॥ रज्जब बंदहिं वृहस्पति। शशि सूरज सुर और। यूं अवतार अतीतबिचि। लखिं दीरघलघुठौर ॥ ६ ॥ रज्जब माया ब्रह्म विचि। बलिवंत ठौर अतीत ॥ ताकै बसि दोन्यू सदा। रह्या सकल तत्व जीत ॥७॥ दत गोरख हनुमंत प्रह्लाद। ससत्रों पडे न सुनिये साद। मारे मरहि ना सिद्ध शरीर। क्यसन कहि बसिये कहिं तीर ॥ ८ ॥

साखी १७१०

साक्षी भूतका अंग ॥

मायामें माया मुकत।साक्षी भूत सुजान॥है नाहीं मांहै रहति। रज्जब पद निरबान ॥ १ ॥ अठार भार मिश्रत अगनि। साद हुं परसै नाहिं ॥ ऐसे आतम राम है। मिल्या अमिल सबमाहिं ॥ अठार भार अगनी अलाप। सदा सुस्वादै माहिं ॥ परमतत्व पंचमाधि। पूरण परसै नाहिं ॥ ३ ॥ अमिल मिल्या सब ठौर है। अकल सकल सबमांहि ॥ रज्जब अज्जब अगहगति। काहून्यारानांहि ॥ ४ ॥ सरब गीत सबविधिये। सब प्रसंग हूं पूरि ॥ रज्जब सांई सकल मैं। अरु सबहिनतें दूरि ॥ ५ ॥ शून्य तरोवर ऊड फल। डाल व्यंटतहिं नांहिं ॥ अलग सलग यूं आतमा। रज्जब अति गति माहिं ॥ ६ ॥ येक अनेकोंमें मुकति।

अनेक येकमधि आन ॥ जन रज्जब इस पेचकूं । हेरि हुए हैरान ॥ ७ ॥ शून्य समानी पंचमें । पुनि पंचोंमूं सुक्त ॥ रज्जब आतम राम यूं । अलग सलग सुमत्त ॥ ८ ॥ ज्यूं शून्य शकल माँहै जुदी ॥ त्यूं सांई साक्षी भूत ॥ यूं रज्जब मिश्रत मुकति । सो समझै अवधूत ॥ ९ ॥ रज्जब सांई शून्यमें । आतम याभहुरंग ॥ पंचभांति दरस इनहुं । निरमल निरगुन नहंग ॥ १० ॥ रमितारामज्युरमि रह्या । सकल आत्मों मांय ॥ अरस परस न्यारा रहै । कोई गुण व्यापे नांहि ॥११॥ अठार भार बहु भांतिकी । तामधि स्वाद अनेक ॥ रज्जब अज्जवता बनी । हरि हरि पालसुयेक ॥ १२ ॥ सब नांहीं सब पाइये । दरपन हरि दीदार ॥ रज्जब ऐसा अंग निज । तामें फेर.न सार ॥ १३ ॥ प्रतिव्यं बगडेन उघडै । देखो दरपन मांहि ॥ त्यूं सज्जन माया ब्रह्म । है सुजीवमें नांहिं ॥ १४ ॥ दरपन रूपी राम है । निर- दोर्षी निरधार ॥ सकल मांडबिच देखिये । रज्जब रती न भार१५॥ अकल अंग उर आरसी । तहां भ्यासै भाव सुमुख ॥ रज्जब देखि सु आपकूं । दिल पावै दुख सुख ॥ १६ ॥ मजलसि का मोती ब्रह्म । मुकता मांड सुमाँहिं ॥ रज्जब दीसै दिल सकल । छिपै छिपै सो नांहिं ॥१७॥ दरपन दरिया प्रभु । देव दृष्टि पणिहार ॥ रज्जब रुचिकलसों भरे । मुख सुख सलिल विचार ॥१८॥ सकल मांड सो दूध गति । गुडके गति गोपाल ॥ रज्जब पीभारी नहीं । उगलि न हलुका लाल ॥१९॥ रुचि नांहि अरु सब भखै । रुचि है कछू न खाय ॥ रज्जब ऐसा राम हैं । जैसा अगनि सुभाय ॥ २० ॥ काठेंहिं तोडै काठपरि । अगनि चोटमें नांहिं ॥ रज्जब गुणसूं गुण बिलै । निरगुण न्यारा मांहि ॥ २१ ॥ आतम लोहा

कूटिये । गुण देही घंण मार ॥ रज्जब रमिता अगनि में । ताकूं दुःख न लगार ॥ २२ ॥ प्यंड प्राण दोन्यूं तपहिं । जथा कडाही तेल ॥ रज्जब हरि शशि ज्यूं रहै । अगनि मध्य नहिं मेल ॥२३॥ रज्जब आतम अंभके । पिसन सुअंतक पौन ॥ परि शून्य सरूपी सांइयां । तिसहिं धकावै कौन ॥ २४ ॥

साखी १७३४

समरथाईका अंग ।

सूरज रूपी सांइयां । साधू सूरज क्रांति ॥ उभै करता करैं भी । जनरज्जब विनतांति ॥ १ । बावनी वदलै बनीयबय । नरपति छाह हमाय ॥ रज्जब कृत मकलाये भासै । यूं अकर करै गतिलखी न जाय॥२॥ शशि मंडळ सूरजपरै । पेखै भार अठार ॥ कीतमकन ऐसी कला । करता घटि न विचार ॥ ३ ॥ श्रिक सवितासु अलाहिदे । पलटै अदभू आँखिं ॥ रज्जब नर नरपति भये । छांह हमाई सुपांखि ॥ ४ ॥ तनमन बाइक हूं बिना । माया करै सुकाम । रज्जब सिरजी सीखियूं । सब गुण रहिव सु राम ॥ ५ ॥ शशि सूरिज सु हमहिं संदलहि । सति समरथ गति दीन ॥ तौ रज्जब दातार न टौरै । कौंन कला सो हीन ॥ ६ ॥ महल मसालै विना उपाये । ब्रह्मंड खंड ठाहर उभै ॥ याही तें समरथगति जानी । साहिब सेती व्है सबै ॥ ७ ॥ काया सौं छाया भई । परि कायाका क्या अंस ॥ तैसे रज्जब देखिये । पार ब्रह्म सों अंश ॥८॥ प्रभाकरी प्रतिबिंब परि । ब्रह्मजीव पहिचान ॥ कहा सुझरि झांई भई । समझो संत सुजान ॥ ९ ॥ सब पृथ्वी प्रतिबिंबपरि । प्रभू प्रभाकर जानि ॥ तौ रज्जब हरि हंसमें । हेरि हुई कछु हानि ॥ १० ॥ अचल चलावै सबनिकूं । आप न

चंचलहोय॥ रज्जब खपैन खेवटा। वोहिथ विचरै जोय॥११॥करता हरता दुहुनिका। अरु दोन्यूं हूं तैं दूरि॥ निरालंब न्यारा रहै। सब ठाहर भरपूरि ॥ १२ ॥ प्यंड सरोवर प्राणजल। सांई सूर शरीर ॥ रज्जब काढैकैद कनि। बिचि बितराखै बीर ॥ १३ ॥ निराकार न्यारा राखै। निज अंग मांहि न मेलै॥ अगम अगाधि अविगति आपै। अकल अगोचर खेलैं ॥ १४ ॥ काया कमर काष्टमें घुण। जल हित जलचर जोई॥करता किये सु कौनबिधि। सो समझै नहिं कोई॥ १५ ॥ जड तत्वोंमें जीव जड। तनमन साज्या सास ॥ यहु विद्या बाबाकनें। आवै न आतम पास१६॥ नर नारायण में रहै। सदा सुकाल दुकाल॥ कबहीं सृष्टि उपावहीं। कबहूं सबके काल ॥ १७ ॥ रज्जब रसायणीं। सेवग सरवस लेइ। पैश्रीसिरजि सिंहारनी। विद्या किसहिन देइ ॥ १८ ॥ जन रज्जब जामण मरण। घरि घरि आथि अनाथि। आदमकूं सौंपीं नियें। राखी अपणें हाथि ॥ १९ ॥ पंचतत्वमें वाहि करि। बांधे आतमराम ॥ रज्जब दिया न और कों। घट घडणेंका काम ॥ २० ॥ घडै विनासै सकल में। अनंतलोकि अविगति॥थापि उप्यापै सांइयां। जन रज्जब सब सत्य ॥ २१ ॥ ब्रह्मांडपिंड बादलमई। करि न विनासतबेर॥ रज्जब हूं नरहरि हुई। करन हरनदिसि हेर ॥ २२॥ अकल अकालि परि सब धरया। वो ऊंकार अकार॥ रज्जब स्वना अगह गति। नमो नियावन हार ॥२३॥ हिंकमतिकी घडियाल घट। दीवा घरी सुदेह ॥ तीन्यूं आतमकी अकलि। रज्जब अचरज येह॥ ढोल दमामें जंत्र साज। नहिं चलावहि आंतस बाज ॥ जड चेतन यहूं वइ चलाए। त्यूं आदम बनाए ॥ २५ ॥ बिसियर में बिसरूप है। मुख अमृत मणि

नांव ॥ रज्जब रचना बलि गया । कौण बसत कहि ठांव ॥ २६॥ देखो श्रोणति सीरव्है । सीरयलटि श्रोणति । रज्जब रीझ्या देखि करि । नमोनियंतामति ॥ २७ ॥ तृणमें कन कनमें सुतृण । करता कुदरत धन्य ॥ रज्जब रचना अगह गति । कहि को समझै मन्य ॥ २८ ॥ अंडिसु पंखी ऊपजे । पुनि पंखी मधि अंडि । ब्रह्म वृद्धि वेत्वा विथक । क्यूं जोडे जीव प्यंडि ॥ २९ ॥ पाणी मांहि अगनि राखिये । अगनि मध्यसो पानी ॥ रज्जब रचना अगहकी । बारिविजूरी सानी ॥ ३० ॥ सान मास करैं ऊन्हालो । ऊन्हाले बरसालौ । रज्जब कहें सुनो रे जीवहुं । अकरन करन संभालौं ॥ ३१ ॥ पाणी मैंते पावक निकसैं । पावक मैं तैं पाणी ॥ रज्जब रचना अगहगति । काहू जाय न जांणीं ॥ ३२ ॥ ज्यूं दिनकर शशिदीपकरि । सकल दृष्टि आधार ॥ तैंसे रज्जब राम विन । तनमन घोरंधार ॥ ३३ ॥ रज्जब गुडी अनंत कैं । येक पवन आधार ॥ त्यूं तन मन आतम रामबलि । हलै चलै संसार ॥३४॥ ज्यूं जल केवल मीन सब । मगन मुदित तामांहिं ॥ तैंसें रज्जब प्राणपति । न्यारे जीवें नांहिं ॥ ३५ ॥ परम तत्व प्राणमें बैंठ्या । पंचों तत्व चलावैं ॥ समझहिं अगम सुगम समझे कौं । गुरु प्रसादि सुपावै॥ आदि कया सो भी भया। मधिक करे सो होय ॥ अंति करे सो होइया । रज्जब समरथ सोय ॥ ३७ ॥ रज्जब रच्या सुनाभया । राम रचैं सोहोय ॥ यूंअविगति पहिचानिये । करता और कोय ॥ ३८ ॥ सांई समरथ सब कौं । श्यामसेत सब होय ॥ जन रज्जब दृष्टांतकूं । विरध बालकै जोय ॥ ३९ ॥

साखी १७७३.

मूलारंभका अंग।

ज्यूं जलबीरज जलचरहुं। अवनि अठारह भार ॥ पीछैं बीरज बाजतै। यहु मत मूल विचार ॥ १ ॥ ज्यूं बोले सब अंभमें। त्यूं पाणी करिप्यंड ॥ रज्जब उपजै आपसूं। अजौं सतिनके अंड ॥ २ ॥ जन रज्जब आतम अवलि। यहु बित अबिगति दीन ॥ और तत्व तत्वों भये। करन हार यूं कीन ॥ ३ ॥ वो ऊंकार सों आतमा। पंच तत्व करिपिंड ॥ यहु भ्रामक भागासु यूं। इति विधि सब ब्रह्मंड ॥ ४ ॥ ब्रह्म मूल बाइक का। बाइक परिये तत्व ॥ तत्वों करि अस्थूल अंग। यहु बाबै का मत्त ॥ ५ ॥ आकाश अबिगति तै उरै। आतम वोऊंकार ॥ पंचतत्व विरषाविपुल। शकति समंद तनधार ॥ ६ ॥ बप बुद बुदातामे बहुत। उत्पति अनंत अपार ॥ अकल अकलि आदित किरणि। आतम विधि व्योहार ॥ ७ ॥

साखी १७७९

चौरासी निदान निरनैका अंग।

बिरछि बीज फिरि आवई। पत्र प्यंडसो जाय ॥ तौ चौरासी क्यूं मिटैं। नर देखो निरताय ॥ १ ॥ तन सुसूतडा जीव कण। फिरि उगैं धरमांहिं॥तौ चौरासीं रज्जबा। मिटती दीसै नांहिं॥२॥ पंख जाय अंडा फिरि आवै। तौ चौरासी कोण मिटावे ॥ येक चंद मांहैं गुण दोन्यूं। प्रत्यक्ष पेरव अमावसपून्यूं ॥ ३ ॥ बारि जाय बीरज फिरि आवे। मूंत मदनकैं मधि लखावे ॥ पिंड सु पाणी प्राण अनंग। तो आवणजाणां भग अभंग ॥ ४ ॥ दोजक मांय बुरोंका बासा। भले भिसातिकूं जाय ॥ नरग सरग स्याबति

हुए। सब चौरासी मांय ॥ ५ ॥ काचा कण उगले इळा । पाका पृथ्वीखाय ॥ त्यूंही आतम राम रुचि। नर देखो निरताय ॥६॥ सूरज हूं जामैं मरे। उदे अस्त दुःख दोय ॥ जग चखिसे चौरासी भुगतैं। रज्जब राखौं जोय ॥ ७ ॥ चंद सूर तारे फिरैं। तो आतम क्यूं नाहिं राहिं ॥ इनकूं भवते देखिकर। रज्जब खरे झरांहिं ॥८॥ तारहुं की गति देखिये। कुलि आतम अर वांहिं ॥ सांई फेरे फिरे। रज्जब झरपे चाहिं ॥ ९ ॥ बादल विजुली पाणी पौन। निशि वासर इन हूं कूं गौन ॥ पल पल मांहिं सु जामैं मरै। ये चौरासी चारयों फिरैं ॥ १० ॥ आवण जाणां किसी न भावैं। परि साहिब कूं कहि को समझावे ॥ अरजदीनकी सुनिये सांई। जीव जगतमें फेरो नांहिं ॥ ११ ॥ पै मरदी सुपराये सारैं। खुद मरदी कछु नांहिं ॥ बंदा बंदीवान है । हाजिर हुकम सुमांहिं ॥ १२ ॥ जे कुछ खुशी खुदाइकी। बंदों करी कबूल ॥ गाफिल और बिचारहीं। सो रज्जब मछभूल ॥ १३ ॥ भेज्या जाहि बुलाया आवै। सो सेवग साहिब मनभावै ॥ अपणी खुशी पडैगा दूर। हुकम मांहिं हाजिरसु हुजूर ॥ १४ ॥ येक परगनो भेजिये। येक राखिये पासि ॥ रज्जब बंदे हुकममें। कहां जांहिं सो नासि ॥ १५ ॥ भेज्या जाय बुलाया आवै। चाकर चकरि चित्त सुभावै ॥ गलमें झोरि पराये सारै। जीव जडसु कहा विचारै ॥ १६ ॥

साखी १७९५

आज्ञा साहिबीका अंग।

आप खुशी आया नहीं। अपणी खुशी न जाय ॥ तौ सब सारै और कै। रज्जब रजू रजाय ॥ १ ॥ फेरया चौरासी फिरै।

राख्या कहीं न जाय ॥ यह इनके सारे नहीं । जे कछु खुशी खुदाय ॥ २ ॥ गीदन गोइ चपलमति । प्रबसि दुहूं दिशिजाय॥ त्यूं रज्जब मन गोइ हैं । जे कछु रामरजाय ॥ ३ ॥ रज्जब राखे रामजी । सूमन रहे ठहराय । पै चिदानंद बिन चित्तकी । चंचलता नहिं जाय ॥ ४ ॥ शक्ति शीत जीवजल बंधे । मुक्त सुआदित देखि ॥ बंध मुक्त हम दिसि नहीं । उभैं सुहसत अलेखि ॥ ५ ॥ चतुर खान घोडे सुघट । जीव अमर असवार बारगीर बाजहुं चढे । हुकम सुहरि व्योहार ॥ ६ ॥ पवंग पतंग पतंग पुनि पावहिं । बारगीर असवार ॥ उतरैं चढैं सुहरि हुकमिं । घोडे मरहुं हजार ॥ ७ ॥ साहिबके घर बसत बहु । बासणका बस नाहिं ॥ रज्जब बाहै घर धणी । पडै सुपातुर मांहिं ॥ ८ ॥ पंच खानिके प्राण सुपातुर । बांही बसत करै प्रगास ॥ भीतरि होय सु बाहर आवै । फेर सार नांहीं नर आस ॥ ९ ॥ हैहै गैरारी सब चित्रपहिं । पुनि प्यादे असवार ॥ रज्जब मनन मनोरथों । सारै सिरजन हार ॥ १० ॥ इन्द्री आभे अवनि अ-कार । आतम अंभसु इनहुं मँझार ॥ राखे रहै बुलाए आवहिं । ज्यों अविगति आदित मनभावहिं ॥ ११ ॥ आज्ञा आतममें धऱ्या । पंच तत्व आकार ॥ सांई सौयन सेवक छाडै । छोडावै करतार ॥ १२ ॥ होतब आज्ञा भावी भव चित । सोई होती जाय ॥ तां ऊपरि कहणा न कछु । नर देखो निरताय ॥ १३ ॥ पत्थरमे पैदा किये । पारस हीरा लाल ॥ त्यों आदम सों ओलि-खा । साहिब किये निहाल ॥ १४ ॥ संपति विपति आव लघु दीरघ । रज्जब रहै हुकम हरि मांहिं ॥ दाता देय सूमगति पावै । यहु इसका सारा कछु नाहिं ॥ १५ ॥ सिरज्या सिरजन हार-

का । सोई जीवकूं होय ॥ सुख संपति दुख विपतिकूं । मेट न स-
कई कोय ॥ १६ ॥ हुक्म हुवा सो होयगा । पै तुमभी करो कबू-
ल ॥ तेरा किया न होय कछु । भोला भरम न भूल ॥ १७ ॥
आज्ञा अलख अलेख की । आतम लखै न कोय ॥ जीव जाण्यां
यूंही रहै । साहिब करै सो होय ॥ १८ ॥ सबघट घटा समानिहै ।
ब्रह्म बिज्जुली मांहि ॥ रज्जब चिमकै कौनमें । सो समझै कोइ
नांहिं ॥ १९ ॥ अकल गाय दह दिसि अनंत । सरगुण निरगुण
स्थान ॥ दया दुहावै औरकी । दुहै न जान अजान ॥ २० ॥
शक्ति सलिल रहै शून्यमें । जाण अजाण न लेय॥ जग दाता देणे
मतैं । तबजल मांहै करि देय ॥ २१ ॥ जा जीवसूं जगपति
खुशी । तासौं जगत दयाल ॥ रज्जब रुचै न रामकूं । तासौं सबही
काल ॥ २२ ॥ आकार सबै औषधि भई । जैवा बाहै वैद्य ॥
रज्जब नहिं तबस्तु विस । करन मते ना थैद ॥ २३ ॥ सकल
सिद्धि नो निधि सहित । मिली अमिल व्है जाहि ॥ काजिल सबै
अकाजकी । जै प्रभु आज्ञा नांहि ॥२४॥ शब्द गहै अरथों लहै ।
करणी करत अभूल ॥ पै रज्जब रसतौ पडै । जै हरि करै कबूल ॥
॥ २५ ॥ राम रिजक इक ठौर दे । मिलि इक ठौरे खांय ॥ रज्जब
सेबल व्है जुदा । आप आपके जांय ॥ २६ ॥ गात गोटिके रूप
हैं । बाजीगर निज नाथ ॥ बखेरि मेल तौ बेरक्या । ये सब उन-
के हाथ ॥ २७ ॥ किन नक्षत्र शशि सँग किये । किन किया
सूरज एक ॥ यहु रज्जब सब रजापर । समझौ बडा विवेक ॥
॥ २८ ॥ आज्ञा थी त्योंही हुवा । आज्ञा होता जाय ॥ ज्यों
आज्ञा त्यूं होयगा । जो कछु खुशी खुदाय ॥ २९ ॥ नेति नेति
निगमो कहै । अगम अग्राही जु बसत ॥ क्रपा उन्हौंकी वै मिलैं ।

छलबल चढै न हसत ॥ ३० ॥ पिंड प्राणके गुणों न गहिये। अगम अगोचर बसत ॥ केवल दया दरसन पइये। छलबल च-ढैन हसत ॥ ३१॥

गैबीका अंग।

गहरी बात सु गैबमें। गुरु शिष टोटा लाभ ॥ रज्जब अलख अलेख फल। देखहु गाभर आभ ॥ १ ॥ क्या पारस परमारथी। क्या लोहे में लोभ ॥ अमिल मिलाए रामजी। इनकूं आई शोभ ॥ २ ॥ मनुष्यके मनमें नहीं। नाही हाथि हमाय ॥ गैब मांहिं छाया पडै। नर नरपति व्है जाय ॥ ३ ॥ जीव दरिद्री जुगहुका। धनपति बायन आप ॥ माल मिल्या बहु गैबमें। भागे शक्ति संताप ॥ ४ ॥

अनभै अगोचर अंग।

पक्षी उपनां पंखतै। पेट प्रगट परि पान। रज्जब गिरत रुसिरी बस्या। किरण उदै भयो भान ॥ १ ॥ बसुधा बीज बीजसूं बसुधा। यहि विधि किरखि सु होय ॥ रज्जब खलक खबरि नहिं पावै। बूझै बिरला कोय ॥ २ ॥

साखी १८३२ अंग ५५

मधिमार्ग निजस्थान निर्णयका अंग।

तनमन में मारग मिल्या। सतगुरु दिया दिखाय॥ जन रज्जब रमि राह उस। परम पुरुष कने जाय ॥ १ ॥ रज्जब अज्जब घाट है। मिनषा देही मांहिं ॥ सुरति निरति मधि ऊतरै। पछितावै सो नाहिं ॥ सुरति सांस मधि ऊतरै। नजरि खुले नाभि थान ॥ सो आतम देखे ब्रह्म। परचे पहुंच्या प्राण ॥ २ ॥

बाट बहै ब्रह्मंडकी । बंटाऊ सु अनेक ॥ रज्जब प्राणी पिंडमें । पंथ चलै कोइ एक ॥ ४ ॥ पंथ पोवका पिंड महिं । प्राण पृथ्वी पथि जाय ॥ रज्जब रामहिं क्यों मिलै । ढूंढै बने वित मांय ॥५॥ बाहर ढूँढै बावरे । भीतर भेदी प्राण ॥ रज्जब आतम रामकेन । समझो संत सुजान ॥ ६ ॥ अंजर्यामी उर बसै । साधू दिया दिखाय ॥ रज्जब ढूंढण मांहिंले । बाहर किधों जाय ॥ ७ ॥ मांहें सोधो मांहिले । आतम अंतर जोय ॥ रज्जब तनमन लेरमें । सुभीतरि कहिये सोय ॥ ८ ॥ इक अठ सठ तीरथ फिरहिं । इक दहणा रथ देत ॥ रज्जब भ्रम भवमें पडे । समझा नहीं संकेत ॥ ९ ॥ उणचासकोडि अहि निशि फिराहिं ॥ चतुर प्रहर शशि भान । रज्जब उभे चलाक अति ॥ अविगति नाथ न जान ॥ १० ॥ अइट हाथ रमिबा अगम । सुगम रअण उणचास ॥ रज्जब भीतरि भरि लहै । बाहरि व्है बुद्धि नास ॥ ॥ ११ ॥ जन रज्जब उणचास फिरि । अंति रहै उरवार ॥ नाभि नासिका हाथ इक । निरखि नैन नरपार ॥ १२ ॥ सप्तद्वीप नो-खंड फिरि । हाथ चढै कछु नांहिं ॥ रज्जब राजमां पाइये । आये उरघर मांहिं ॥ १३ ॥ अस्थल उर आछ्या अगम । नाभि निराली ठौर ॥ यहु इकांत रज्जब रहौ । ताकहु गुफा न और ॥ ॥ १४ ॥ रज्जब रस एकांतका । एकांती कूं होय ॥ प्राण पसारे में पड्या । सो सुख लहै न कोय ॥ १५ ॥ नाभि नासिका बीच ब्रह्म । मेला मनिषा देह ॥ सब तीरथमें कै सहित । रज्जब रमि करि लेहै ॥ १६ ॥ नांभि अस्थानिक नाभि है । पंखी प्राण सु जांहिं ॥ अनल आतमा ठाहरै । शून्य सुमण्डल मांहिं ॥ १७ ॥ अनल अतीत चले अति आतुर । तासम गवन न होय ॥ जन

रज्जब यूं जगत उलंघै । बूझै विरला कोय ॥ १८ ॥ अंतरि लांघै लोक सब । अंतरि औघट घाट ॥ अंतरजामीकूं मिलै। जन रज्जब उर बाट ॥ १९ ॥ रज्जब रहणां शून्यमें । शब्द सदनमें आय ॥ मनसा बाचा कर्मना । नर देखो निरताय ॥ २० ॥ आतम शून्य समान है । देही दरिया मांय ॥ मुख मोहन मुकता तहां । मनमें रजावै जाय ॥ २१ ॥ रज्जब बयबसुधा विरचि । निकसै नाभिनहंग ॥ आगै अबिगति नाथ है । सदा सुरति सुख संग ॥ २२ ॥ मन तुरंग चेतन चढै । पवनि पंखि सो जाय ॥ रज्जब बैठै शून्यमें । मांहै मिलै खुदाय ॥ २३ ॥ सुरति समावै पिंडमें । पीछै मनमें जाय ॥ आतम अंतरि व्है रमै । आगै मिलै खुदाय ॥ २४ ॥ आतम थान मुकाम सूं । मक्का मदीना माबूदपरै ॥ जिकरि जहाज बैठि तिंहि जंगल। रज्जब हाजी हज्ज करै ॥ २५ ॥ रज्जब राह रसूलका । पैंडा पंजर मांय ॥ उलटे चलि औजूदमें । मरद मुसाफिरजांय ॥ २६ ॥ बेजवांजा करि करि जान जमीरमें । पीरकी पंदियति पाइये मांहिं । रज्जब बखाइबातूंनि यहु बंदगी ॥ तरीख तराहत जरीत कोई जाय ॥ ॥ २७ ॥ बिन रसनां रामहिं रटै । आतम अंतरि आय ॥ रज्जब पढैं पीवके । चित चेतनि कोइ जाय ॥ २८ ॥ किसमकै मह मूदगया । महादेव किस थान ॥ रज्जब चलिये पंथि उसि । पंथी प्राण सुजान ॥ २९ ॥ पंथी मांहै पंथसो । बाट बटाऊ मांहिं ॥ जन रज्जब मध मांहिले । विरले कोई जाहिं ॥ ३० ॥ रज्जब वेद बतावै बाहिली । सिद्ध शरीरों माहि ॥ द्वै विधि सेवा एककी । यो दासो बणती नाहिं ॥ ३१ ॥ रज्जब साधू सेव शरीरमें । संसारी बारै ॥ अंतर बसुधा व्योम सम । यहु भेद विचारै॥ ॥ ३२ ॥ ज्यों शिश्न स्वादनांकेनहूं । त्यों सर्व स्वादनभि

भिथान ॥ रज्जब सविसकोसघर । समझो संतै सुजान ॥ रज्जब मन पवन शशि सूरसम । आतम बसहि अकाश ॥ तन तोयं प्रति बिंबपीर । बीचि नहीं अभ्यास ॥ ३४ ॥ साधू खंगमध शून्यमें । दौरे दिसि गोपाल ॥ जन रज्जब देखे जगत । चलै कौन यहु चाल ॥ ३५ ॥

साखी १८६७

अथ आतम निरणयका अंग ।

रूई तार तत्व पंच है । विगति विनौला प्राण ॥ जन रज्जब यहु जुगत्यूं । अंकुर आतम सान ॥ १ ॥ पंच पचीसों सूई जड । चेतन चंबुक प्राण ॥ जन रज्जब जानी जुगति । समझै संत सुजान ॥ २ ॥ बिभौ बारि ब्रह्मी सहित । बाइव्योमजड अंग ॥ जन रज्जब जाणी जुदी । आतम अकलि सुरंग ॥ ३ ॥ जैसै आभै अंभ है । अक्षर शब्द समान ॥ तैसे रज्जब शोधतैं । लहिये पिंडहि प्राण ॥४॥ आतम परखी पिंड मधि । पंच पची सहुं जान ॥ ब्रह्म बिचारन मावई । वेत्वा वेद बखान ॥ ५ ॥ अवनीही अंभहि चाहे । तेजहि तेज अहार ॥ बाइहिं बाइ गगन हित गगनहिं । आतम अकलि अधार ॥ ६ ॥ तत्व तत्व मिलि जीवहिं । तत्व तत्व बिन नास ॥ रज्जब आतम राम यूं । जोग बजोग विमास ॥ ७ ॥ रज्जब पिंड पलै ब्रह्मंडमें । तत्वहि तत्व अहार ॥ प्राण पोखिये भजन ज्ञानसों । विरला पोखणहार ॥ ॥ ८ ॥ रज्जब रचना अगहगति । अद्भुत बात अगम ॥ परि दीसै बीरखा बंदगी । इन्द्र धनुष आतम ॥९॥ राहु केत रास्यूंहि परिहि । रवि राकेश प्रकास ॥ त्यूं रज्जब विचि बंदगी । आतमराम अभ्यास ॥ १० ॥ मनबच क्रम रज्जब कहै । सुनहुं बमेकी दास ॥ शक्ति सूरजन आथवै । तब आतम परकाश ॥ ११ ॥ पिंडन

पृथ्वी पेख्यवै । प्रभू प्रभाकर अंग ॥ रज्जब उभै अभ्यासहीं । आतम अंगसुसंग ॥ १२ ॥ छह दर्शन शत छिद्र हैं । माया मंदिर माँहिं ॥ तहां सूक्ष्म गुणकण दरशहिं । नहींतदीसै नांहिं ॥ १३ ॥ हरि मारग मनमें अलह । ज्यूंनिसदिन हर आकाश ॥ यहु दरसै साधू शबदि । वहदामिनी प्रकाश ॥ १४ ॥ आदित आगि आरसीलहिये । सुधासुचंद्र चकोर ॥ यों अलखलखावै आपसों । रज्जब लीनहु वोर ॥ १५ ॥ सिकली गरु अरु हंस साधकन । देख्या व्यौरन बंग ॥ सार सुनीर शरीर मधि । काढै सूक्ष्म अंग ॥१६॥ जुरे जीव ऐसे रहैं । शून्य सुसांई मांहिं ॥ सविता सतगुरु सो द्रसै । लिपे छिपै सो नांहिं ॥ १७ ॥ पंच तत्वके पंच रंग । प्राणरूप कछु और ॥ रज्जब कहसी एकको । जाका पहुंच्या त्यौर ॥ १८ ॥ स्याम गगन वाई हरी । तेज रक्त सों अंग ॥ जल ऊजल पृथ्वी जरद । आतम औरै रंग ॥ ॥ १९ ॥ रज्जब आतम रामका । बरणत बर्णेन रंग ॥ वै अविनाशी और गति । कहिये सो सब भंग ॥२०॥ पंच तत्व आकार है । परम तत्व निराकार ॥ रज्जब ऊभा उभै बिचि । आतम वो ओंकार ॥२१॥ आतम वो औंकारमें । सरगुण निरगुण अंग ॥ रज्जब प्रगटे पिंड व्है । गुपत गातसो भंग ॥ २२ ॥ रज्जब काया कोलि मति जुगति मिली । निराकार आकार ॥ आतम अन्य कपूर गति । तामै फेरन सार ॥ २३ ॥ अक्षर आभै चढि रमै । आतम अंभ अकाश ॥ और इकंग अकारमें । गम्यन गगन निवास ॥ २४ ॥ गोली गोलै तीरकै । बल लागै कहिं ठांव ॥ तैसे रज्जब प्राण पिंड संगि । हरि हिकमति बलि जांव ॥ २५ ॥ प्राणहिं पवन मीनकूं पाणी । रज्जब जीवनि बहिज पिछाणी ॥

समझ्या समझै सुलझी बात । जडजीव कनजांणो नहिं जात ॥ ॥ २६ ॥ का-ा कपूर इन्द्री आभै । प्राणी निरगुणि गुण लाभै॥ रज्जब रचना अगह अपार । बिरला बूझै बूझण हार ॥ २७ ॥ निरगुण सगुण होत है । पंच तत्व अरु प्राण ॥ जन रज्जब इस पेचकूं । समझै साधु सुजान ॥ २८ ॥

साखी १८९५

ज्ञान प्रचैका अंग ।

नैंनों अंजन ज्ञान निज । सब भागे संधि साल ॥ ज्यूं रज्जब सिरि लाल धरि । सब दिशि देखै लाल ॥ १ ॥ पीत बाइजब दृष्टि व्है । तब पीला संसार ॥ त्यूं रज्जब रामहिं मिल्यूं । सब दिशि सिरजन हार ॥ २ ॥ जै पाइन पैजार व्है । तौ बसुधा भरि चाम ॥ त्यूं रज्जब रामहिं मिल्यूं । बाहिर भीतर राम ॥ ज्यूं सैल सुदामा गत भये । द्वै द्वामानिकै मांहिं ॥ त्यूं रज्जब रामहिं मिल्यूं । देही दीसै नांहिं ॥ ४ ॥ नांइ निहागि चढै नाहिं दीसै । प्राणसुपंखी जोय ॥ रज्जब साईं सूर समाईं । काया छाया दोय ॥

अरिल्ल ।

ज्यों लोहा व्है लाल । सु पावक परसतै ॥ त्यूं रज्जब मिलि राम । सु सांचे दरसतैं ॥ उभै एक उनहार नहीं कछु भेदरे । परिहां मिलै बसत बल होय । सुकियान खेदरे ॥ ६ ॥ परचा दीपक रागबसि । तिमिर हूंत जीव जोति ॥ रज्जब प्रगटै बसत बल । सेवक स्वामी योति ॥ ७ ॥ परचै आतम राम गति । मिलै बसत बल होय ॥ रज्जब पाई पारिखा । फेर सार नहिं कोय ॥

ब्रह्म मिल्या तब जानिये। जब तनमन लक्षग नांहिं॥ रज्जब आतम राम विचि। और न भ्यासै मांहिं॥ ९॥ मनसा बाचा करमना। जै जीव पीवसें होय॥ रज्जब आतम रामगति। दृष्टिन दीसै दोय॥१०॥ लोभ मोह लागै नहीं। क्रोधन जागै काम॥ रज्जब नहीं सु जीवगति। प्राणी प्रत्यक्ष राम॥ ११॥ पारिख पूरी ऊतरै। सो परचा परवाण॥ गुणगति गातिन पाइये। तौ बादि बक्यासो जाणि॥ १२॥ पंचपचीसिन त्रिगुण मन। लछी गुणगत दोय॥ सो रज्जब माया मुकत। ब्रह्म समान सोय॥ ॥ १३॥ कलि कदूब काया हैं। सुर माया अस्थान॥ त्रिगुण तजै तातै रहै। यहु प्रचा प्रवाणि॥ १४॥ हंस लोह पारस प्रभु। मिलत महातम जोर॥ रज्जब पलटैं परसतें। सौंघा महँगा होय॥ ॥ १५॥ प्राण प्रीति जाग्या रहै। हरि हित हिरदै मांहिं॥ कलित अंध कंतहिं मिली। यद्यपि देख्या नांहिं॥ १६॥ विद्या बिबधि विदेश बहु। बचन न व्यौरा लेश॥ रज्जब पावे प्राण तब। ज़बहिं करै प्रवेश॥ १७॥ श्रवण सुखी साचे शबद। रारि रूपसत जोय॥ रज्जब परवानै पति। मिलत बसत बल होय॥ ॥ १८॥ कीट भृंग भृंगी परसि। दीये दीया जोय॥ तौ रज्जब रामहिं मिलत। क्यों न बसत बल होय॥ १९॥ प्रथम पवन प्रकाशही। दूजै देवैं बैंन॥ तीजे मन मनसा द्रसै। चौथे आतम ऐन॥ २०॥ ठौर पांचसी प्राणपति। विरला देखै नैन॥ बिन परचै सब पंगु है। प्रचै प्राणी पार॥ जन रज्जब साची कही। तामै फेरन सार॥ २१॥ लोह काठका काष्ट घणहुं। आरोगे विचि आग॥ त्यों रज्जब आस्या गुणहुं। ज्वाला जोति न जाग॥ २२॥ रज्जब रहैन शून्य थल।

चेतनि चेतनि जाय ॥ शब्द शोरज्यों श्रवण लग। अरथ विचार समाय ॥ २३ ॥ सौदा करणा. शून्यमें। तहां कछु सूझै नांहिं ॥ रज्जब बित बिन जैत हो । बड व्यौपारो माँहिं ॥ २४ ॥ रज्जब निकसे मात मँहिं। सुतकीडी कण काज ॥ सो पावूं पैंठे पहम। सुफल भये सब साज ॥ २५ ॥ रज्जब बूंद समंदकी। कित सरकै कहँ जाय ॥ साझा सकल समंद सों। त्यूं आतम राम समाय ॥ ॥ २६ ॥ रज्जब रैनि अचेतमें। दीपक ज्ञान प्रकाश ॥ यै आदित अविगति । इनका कहा उजास ॥ २७ ॥ उर आंगण आच्छया किया। ज्ञान बुहारी फेर ॥ रज्जब प्रभु आंवन समैं। यहैा इकंति अयेर ॥२८॥ बुद्धि विचारकी चालनी। त्रिगुणी तुस सब छांनें ॥ आटा अंतःकरण भया शुद्ध। करी चालनी कानें ॥ ॥ २९ ॥ अविगति अंब आतम फल लागै । नीच ऊंच अंतर भ्रम भागै ॥ मुख भुज पेट पांइगति येकै। पारस पिंडन भिन्न बमेकै ॥ ३० ॥ सब ठाहर सम सूरि प्रभु। ज्यूं मिसरीका गात॥ ता माहैं दुबिधा कहै। सो सचझूठी बात ॥ ३१ ॥ श्रिक सुगंध शीतल सब ठाहर। विपन विभेदन काया कोई ॥ तौ रज्जब जो सदा येक रस। चतर भांतिकै संतनि होय ॥ ३२ ॥

साखी १९२७ अंग

परचा भोले भावका अंग।

भोले सों भोले प्रभु । स्याणें सूं स्याणें ॥ जन रज्जब साधों सिधों। इहि भांति बखाणें ॥ १ ॥ स्याणें हूंसों स्याणें प्रभु। भोले सों भोले ॥ बालक बुद्धि विन बाला है। अंतर पट खोलै ॥ ॥ २ ॥ स्याणें याणें होत है । बाप पूतकी लार ॥ बाणी बोलै तोतरी। उस बालककै प्यार ॥ ३ ॥ प्रचंड प्रीति बुद्धि बालकै।

पिताहि नचावै नांच ॥ जन रज्जब ज्यों जीवकूं । खेल खिलावै पांच ॥ ४ ॥ देखो थूनांमां प्रहलाद । बालपमें पाई तिन दादि ॥ भोले नांव लिया सब नांखी । वेद भेदमें नजरन राखी ॥ ५ ॥ परचा भोले भावका । परचा करै सहाय ॥ परचा पारस विना दरसै । परचा रहै समाय ॥ ६ ॥ कौंण गुणहुं सूंनांव सुंवारें । केहि विधि बही मिठाई ॥ सो समझै ।बिन सकति घटि कछु । जिन प्राणहुं ले खाई ॥ ७ ॥ नांव भेद गुण कछून जाणें । भोले भावस लीन ॥ तिनसों बाबे बेरन लाई । जो मांग्या सो दीन ॥ ८ ॥ पात्रोंमें पाणी जम्या । पात्रोंके उनहार ॥ तैसें रज्जब प्राणपति । भाव भजन वपु धार ॥ ९ ॥

साखी १९३६ अंग ६०

हैरानका अंग।

नोब सीवं बिन सूं घने । शिव शक्ति अस्थान ॥ रज्जब मुक्ता मिति बिना । हेरि हुए अस्थान ॥ १ ॥ शून्य स्वरूपी सांइयाँ । रज्जब आभा माँहिं ॥ प्रगट गुप्त दहदिशि फिरा । पारस पावैं नांहिं ॥ २ ॥ इकसांई अरु शून्यके । आदि अंतमधि नांहिं ॥ सोधण हारे सब थके । जन रज्जब ता मांहिं ॥ ॥ ३ ॥ प्रथम शून्यको संग्रहै । को साधैता मांहिं ॥ को पावै वा बस्तुको । जो रज्जब है नांहिं ॥ ४ ॥ अकल न आवै अकलिमें । सकलन शबदि समाय॥ज्यों रज्जब कुंभि कुभारकै । शून्य जल लियान जाय ॥ ५ ॥ अंतन लहै अनंतका । आतम आवैं जाहिं ॥ ज्यो रज्जब सुख मकरमें । प्राणी पावै नांहिं ॥ ६ ॥ पंच तत्वसो प्यंडकारि । प्राण बणैं जो माँहिं रज्जब रचना अगह गति। समझे समझे नांहिं ॥ ७ ॥ पंच तत्वसों प्यंडकारि । मांहि समोया

प्राण ॥ रज्जब रचना रामकी । सिध साधिक हैरान ॥८॥ रज्जब रचना रामकी । रामति अनंत अपार ॥ जांण जांण जाणें नहीं । मनमति व्है न विचार ॥ ९ ॥ कहीं भांति यहु कछु किया । सो कोई न जानै जान ॥ रज्जब रहिगये देखिकर । हरि हिकमति हैरान ॥ १० ॥ अनजाने जाने कहैं । जानसु कहै अजान ॥ रज्जब साधु वेद सब । हेरि हुए हैरान ॥ ११ ॥ असंख्य काव्य वाणी बहुत । निगम कहत मम भोल ॥ तौ रज्जबको कहैगा । ब्रह्म सरीखा बोल ॥ १२ ॥ ब्रह्मन मावै बुद्धिमें । बरन्या बैनन जाय ॥ ज्ञान गिरागहले हुए । ठगके लाडू बाय ॥ १३ ॥ जिन जिन जाण्या जगत पति । सो जाणिर भये अजान ॥ रज्जब दीप उदीप क्या । जब प्रकटया निज भान ॥ १४ ॥ काया उपजी क्रम कही । बुद्धि वेद बखाणें ॥ पै आतमकी उत्पतिकों । जीव ज्वाब न जानें ॥ १५ ॥ जीव किया किस वस्तुका । सो जीव न जानें ॥ सब समझें समझें नहीं । करतारै जानें १६ ॥ जीवजड भांडा भेद न जानें । कांहेका कीनां आकार ॥ रज्जब अगम आतमों आगे । यहुजानें करता कुंभार ॥ जीवन जानें जीवकी । कहि काहूं कीन्ह ॥ तौ रज्जब इस बुद्धिसों । ब्रह्म कौन बिधि चीन्ह ॥ १८ ॥ जीवहिं पूछै ब्रह्मगति । यहु अचरज हैरान ॥ जो आपहिं जाणें नहीं । तिन अविगति क्यों जान ॥ ॥ १९ ॥ जबलग जीव जाण्या कहै । तबलग कछू न जान ॥ जन रज्जब जाण्यांतबै । जाणिर भये अजान ॥ २० ॥ जेतहु जान्या जगत गुरु । ते सब भये अजान ॥ रज्जब देखहु देखतौं । वेदहु नेत बखान ॥ २१ ॥ रज्जब तब सब जांणियां । जाणिर भये अजान ॥ मनसा बाचा कर्मना । गुरु गोविंदकी आन ॥

॥२२॥ अकलि अनंत रहै होइ भोला। तासम सृष्टि नहीं निरमोला ॥ रज्जब अज्जब कहिये वाहि। साध वेद बोलै औगाहि ॥ ॥ २३ ॥ किरतम करतहिं क्या कहैं। आतम राम अगम ॥ रज्जब बाण्यू बल मिथ्या। जै नेतों कहै निगमं ॥ २४॥ बेत्वाथ। कहिं विचार करि। दानें व्है नादान ॥ वेद कुराननकी मति पावाहिं रज्जब है हैरान ॥ २५ ॥ अकलाहिं कला कलै नहिं कोई। निरगुण गुणनगहावै ॥ रज्जब जीव कृतसब थाके। मिहरि आपणी आवै ॥ २६ ॥ करतार अलख करणी अलख। अलख आतमा देव ॥ रज्जब अलखोंमें पड्या। क्यूं लख कीजै सेव ॥ २७ ॥ अलख अलख सबको कहै। सो लहिये क्यों पीव ॥ पै रज्जब यहु पुण्य अगम। जुकौन तत्व हे जीव ॥ २८॥ अविगातिने अविगाति किया। जै देख्या निरताय ॥ रज्जब अकिया को कहै। कियान समझा जाय ॥ २९ ॥ आतम आतमकी अकली। अवलोकी नहिं जाय ॥ तौ रज्जब यहु विषम है। करणी खबरि खुदाय ॥ ३० ॥ जीवन जाणें जीवकूं। तौ जगपति जाणे कौन ॥ अकह ठौर कहनान कछु। रज्जब पकरहु मौन ॥ ३१ ॥ ज्योंघुण काष्टरुनाजमें। तरुवरमें फल जोय ॥ रज्जब कीट पखानमें। कुदराति लखेन कोय ॥ ३२ ॥ अण देख्या तो क्या कहैं। देख्यूं कहान जाय ॥ रज्जब हरि हैरान है। नांही शबद समाय ॥३३॥ रज्जब रसनां रहति रस। प्यंड परैकी बात ॥ सो सुख वहै न प्राणपति। जीभ कितीयेक मात ॥ ३४ ॥ जीव ब्रह्मके खेलकी। सुख रुखबरनहि वैन ॥ जन रज्जब जुजथा जुगाति। सु आनन उदै न अैन ॥३५॥ अकलन कलिये आतमा। मनमत मध्य समाय ॥ रज्जब सुख रुख बोलिये। सो नहिं

शब्द समाय ॥ ३६ ॥ रज्जब सहि साहिनांणके। शिसु ससि दिया दिखाय ॥ तैसें सांई शब्दमें। मुख रुख बरणी जाय ॥ ॥ ३७ ॥ आतमजे कछु उच्चरैं। सब अपणां उन्मान ॥ रज्जब अज्जब अकल गति। सो किनहूं नहिं जान ॥ ३८ ॥ रज्जब आदम सुत शबद। व्हे आतम उनहार ॥ अकह कहेमें आनिये। सुनि पटन होय करार ॥ ३९ ॥ बंदे उपजै बंदगी। बालिक बामा नांहिं ॥ रज्जब भाग अभागकी। आखों चीन्हे नांहिं ॥ ॥ ४० ॥ रज्जब मति मृतिका अनंत है। बहुतै काव्य कुंभार ॥ शब्द पात्र बहुघडि गये। घडसी और अपार ॥ ४१ ॥

साखी १९७३

अथ पार अपार अंग।

फटक सिलहुं सुखबिन महल। तामा है बहु वसत ॥ आंरण्यूं कूं आसान है। मुशकल चढै तौ हसत ॥ १ ॥ रज्जब बय बिल्लोर पाखान घर। मुख मुदित मध्य राम ॥ ज्ञान दृष्टि सुलभ दरश। दुर्लभ प्रसन काम ॥ २ ॥ खालि करवीर समुंद्र है। पीकरि होयन पार ॥ रज्जब रंचक चाखतं। सेवक रत्थान वार ॥ ॥ ३ ॥ रज्जब बय बिल्लोरैमें प्राणपति। ज्ञान दृष्टि दरशाय ॥ सेवककूं संतोष वे। पैं ब्रह्मन बस व्है जाय ॥ ४ ॥

साखी १९८१

थकित निहचलका अंग॥

रज्जब निश्चल बंदिये। देखो दूधि सिजोय ॥ भूवै हिंदू तुरक की। मांथा वहि दिशि होय ॥ १ ॥ ध्रुवकूं देय प्रदक्षिणां। उदै गयंद अरु भानु ॥ रज्जब निश्चळ बंदि यहि। अरथ इताही जानु॥

॥ २ ॥ जन रज्जब चंचल सबै। उडग आतमा जोय ॥ नोल
छनि छिन्ननौ खंडमधि । ध्रुवज्यों निश्चल कोय ॥ ३ ॥ नो
लच्छिन छिन्न चंचल सबै । शशि सूरज तिन मांहिं ॥ रज्जब ध्रुव
निश्चल किया । और किये यूं नांहिं ॥४॥ रज्जब मैली चपलता ।
निश्चल निर्मल प्राण ॥ हल चलंजल दीसैन सुख । अस्थिर
शब्द रसान ॥ ५ ॥ अस्थिर अमल चपलता मैली । आतम
अंभ समान ॥ रज्जब जोये जीव जाले । नीकै किया निदान ॥
॥ ६ ॥ जबलग इद्रयूं चपलता । तबलग मैला प्राण ॥ रज्जब
पंचों स्थिर है । निर्मल संत सुजान ॥ ७ ॥ निहचल निजसूं
निकट है । चंचल चरनों दूरि ॥ जन रज्जब जाती जुदा । रहता
राम हजूरि ॥ ८ ॥ अघ उतरे अस्थिर भये । आतम रामहिं
लीन ॥ रज्जब रहता राममे । बहता बसत सुमीन ॥९॥ निश्चलमें
निश्चल रहै । चंचल चंचलमांहि ॥ जन रज्जब जाणी जुगत ।
यामें मिथ्या नांहिं ॥ १० ॥ स्थिर मांहै स्थिति स्थिर रहै ।
चंचल होता जाय ॥ रज्जब दरिया देहकी । येकै गति निरताय॥
॥ ११ ॥ आरंभै करता अघ चढै । चंचलता फल चीन्ह ॥ थकित
होतथा कहि करम । यहै कमाई कीन्ह ॥ १२ ॥ विन सेवा
सेवा करी । जब जीव निश्चल होय ॥ जन रज्जब इस पेचकूं ।
बूझै विरला कोय ॥ १४ ॥ चंबूक चित्रिन चपऌ व्है । उभैथ
कित ग्रहि विधि ॥ सूई सुरति सरकै नहीं । मिलि पारस प्रसिद्धि
॥ १४ ॥ लोहा पारस औषधि सार । सो सरकै नहिं चंबुक
प्यार ॥ त्यूं रज्जब आतम रामहिं मेल । शक्ति थकाति भागा भरम
खेल ॥ १५ ॥ रज्जब राम समुद्र मधि । फिराहिं सुरीते कुंभ ॥
बोलचाल बाई बिथक । भरेसु अविगति अंभ ॥ १६ ॥ घरागि

रतर निश्चल बहुत । निश्चल कोई नांवजन रज्जबता संतकी मैं बलिहारी जाँव ॥ १७ ॥ मायामें निश्चल सबै । चौरासी लाखि जोय ॥ रज्जब अस्थिर ब्रह्ममें । सोजन बिरला कोय ॥ १८ ॥ नांव रहै हरि नावमें । जीव जगपति मांहिं ॥ रज्जब दोय ठंहरसु थिर । तीजी दीसै नांहिं ॥ बाइस बैठि जहाज सिरि । बारि निधी मधि जाय ॥ रे रज्जब तहांतै उडै । बैठैगा कहां आय ॥ २० ॥ रज्जब बायस बोध बिन । बोहिथ बैठे आय ॥ सो जहाज निधि मधि चला । काग कहां उडि जाय ॥ २१ ॥

साखी २००२

आसै आसण अंग ।

जहां प्रीति तहां जाय जीव । रंग भये अस्थूल ॥ जन रज्जब दृष्टांतकूं । कली कटै ज्यूं फूल ॥ १ ॥ नीर नरहै सुमेर सिर । नीचै निकसै आय ॥ त्यूं रज्जव इस जीवकी । जहां प्रीति तहां जाय ॥ २ ॥ प्रीति प्राणकूं लेगई । कालाका पाले जाय ॥ जन रज्जब गति आगली । सुअब्र देखी निरताय ॥ ३ ॥ साध शरीरहिं छोडई । परि जीवन छोडैहि जाय ॥ रज्जब रट ऐसैं रही । ज्यूं मृग गेतानि ताय ॥ ४ ॥ मन मोती नरकी कला । बिगासि बैधै निर सँघ ॥ गलिनि कसैं कलि कष्ट सुखि । भगति भामनी बंधं ॥ ५ ॥ मनयारा मोती नर अंग ॥ निकसत होंहिं सदा सुए भंग ॥ पुनि सारे सावत होंहिं सोय ॥ तीन्यूं मांहिन बिन स्या कोय ॥ ६ ॥ ये सखीनां पावकका । धूम व्योम दिसि जाइ ॥ असैं मनउन मानि लगै । तौ जीव रहै तहां जाय ॥ ७ । जहां मोहबत मन्नकी । प्यंड प्राण तहां जांहिं ॥ रज्जब तीन्यूं एकठे ।

कबहुं बिछुटैं नांहिं ॥ ८ ॥ आसै आसणं होत है । जहा रहै हित भाय ॥ देखो दीपक. रागकी अगनि सुदीवै जाय ॥ ९ ॥ रज्जब मतकूं मतमिलै । ज्यूं जड टूटी आल ॥ दीन्हों पंडि दूजे नहीं । जै बीतैं बहुकाल ॥ १० ॥ शरीरही सूधै नही । औषधि रोगहिं जाय ॥ त्यूं आसै आसण होत है । नरदेखो निरताय ॥ ११ ॥ ब्रह्म सुमिरतौं माया लहिये । माया खरचत राम ॥ रज्जब समझा ज्ञानमें । भाव भेदका काम ॥ १२ ॥ माया माँहैं ब्रह्म पाइये । ब्रह्म मध्यतै मायां ॥ फलैसु मनकी कामना । रज्जब भेदसु पाया ॥ १३ ॥ सबजीव माया ब्रह्म मध्य । उभै आतमा पूरि ॥ रज्जब दुरिसु दिल्ली नहीं । हिरदै हितसु हजूर ॥ १४ ॥ माया मिलि माया भये । ब्रह्म मांयतें जंत ॥ यूंजीव सीव सब सकति माधि । प्राण पलटण मंत ॥ १५ ॥ शिवकूं मिलत शक्ति मधि । शक्ति मिलत शिव माँहिं ॥ आसै आसण जीवका ॥ जुगलसु बिछुटै नाहि ॥ १६ ॥ भावै भूत विभूति व्है । भाइ भूत भगवान ॥ रज्जब समझी जीवगति । आसै आसण जान ॥ १७ ॥ हरि हरि. सीधा होत जिव । मेला हित चित माग ॥ उभै येक संदेह बिन । रज्जब जासों राग ॥ १८ ॥ इत विभूति अनभूत उत । भूत भाव विचि भेद ॥ रज्जब मेला आस दिशि । नींकै कियान खेद ॥ १९ ॥ ब्रह्माण्ड पिंड बाणी व्यवधि । उदै अस्त व्है नाश ॥ रज्जब: रहसी प्राण पहिं । भाव भेद संगि दास ॥ ॥ २० रज्जब अज्जब भावनां । करता दीपक राग ॥ तन तिनु चीरन चाखई । सो दीपकहीं लाग ॥ २१ ॥ मांगे मिलहिन शिव शकति । मोलिन लिये जांय ॥ रज्जब राखो लालसा । आसण आसण मांहिं ॥ २२ ॥ जोमति सोगति होयगा । साध

वेद सब साखि ॥ मनसा बाचा कर्मना ।जन रज्जब रुचि राखि ॥
॥ २३ ॥ शब्द शुन्य सब ठौर । शकति सहित सांई रहै ॥ रज्जब
रुचि सिरि मौर । गांहन करि गाहक गहै ॥ २४ ॥ कमठ कौडि-
ला आदि अहि । मरजीवार सुराल ॥ रज्जब जल निधी दै डुबी ।
लेहिं जिनहिं जो व्याल ॥ २५ ॥ अहार औषधि आश्र । मआवै
भार अठार॥ मधु मडचर मेला मनहुँ । रज्जब रुच व्योहार ॥२६॥
पहुप पत्र समदी सहत । औषध फल अरु आग ॥ गूंद दूध गुंठली
छाया । भाव भूषतहि लाग ॥ २७ ॥ अपणी अपणी चुणि कूं
चौरासी चेतानि ॥ रज्जब ले से मांड में । जोहै जाकै मनि ॥२८॥
इस ब्रह्माण्ड बजार में । बहुत बसत बणाव ॥ जन रज्जब ले जीव
सो । जाकै जासों भाव ॥ २९ रज्जब रामति राम में । भहुतें भरे
भंडार ॥ पै आसै आसण अणसरै । तामै फेर न सार ॥ ३० ॥
आसै आसण होयगा । जाका जहां करार ॥ जन रज्जब जाणी
जुगत । तामें फेर न सार ॥३१॥ रज्जब बुरी न वेदकन । औषधि
अकलि मँझार॥ पै रोगी राखै कामकी । जासों व्है उपकार॥३२॥
मन मानकस्या धोम ज्यों । सांई शून्य समान ॥ अंस अंसकन
जायगा । प्राणी पावक जान ॥ ३३ ॥ रतन रिधि निधि सिधि
सु पदारथ । मुकति भगति हरि राज ॥ रज्जब रुचै सु लेहु भज ।
जाकै जासों काज ॥ ३४ ॥ ब्रह्मजीव काया करम । लिखे जु
लच्छी मांहिं ॥ रज्जब रुचै सु लेइ जिव । दातहि दूषण नांहिं॥३५
विविधि भांतिकी बंदगी । दीसै मांड मझार॥गाहक गौंकी लेयगा ।
रज्जब रुचि व्यौहार ॥ ३६ ॥ देव सेव बहु मांझमें । मंझी न मेटी
जांहिं ॥ रज्जब रुचसी प्राण पहि । जाकै जो मन मांहिं ॥ ३७ ॥
जो दिलमें सौदागरी । उन्हीं सुं सौदा होय ॥ रज्जब विचि व्यौ-

पार बिन । बाहर विणज न कोय ॥ ३८ ॥ लखिण लोक असंख्य कुल । घटि घटि नगर बसंत ॥ उभै येक अंग मिलि रमहिं । जन रज्जब जगमंत ॥ ३९ ॥ जाति पांति सबको करै । सगौं सगाई होय ॥ त्यौं सुकृत सुकृत मिलै । कुकृत कुकृत जोय ॥ ४० ॥ मैलू मैलि मिलि रसरंगा । मैले ऊजल बने न संगा॥कन्ह गायकै कनै न आवै । पसूहु पेखि मांहिली पावै ॥ ४१ ॥ बक्कर बरि व्है नीकसै । पैठे श्रवण सु द्वार॥ रज्जब मिलि यहि सगौं सों । बाकी फिरहुं हजार ॥ ४२ ॥ तीरथ प्रीति सु मीन व्है । मूरति कीट पखान ॥ हेत हुताशन समंद जीव । आसै आशन जान ॥४३॥ बगुला हुद मोर तन । साका सुकल सु स्वांग ॥ रज्जब प्राई प्राण नें । मन बच क्रम जो मांग ॥ ४४ ॥ बोक बकर डाढी बडी । रींछ सु डाढी रूप ॥ रज्जब रट बिन रोम बल । प्रसनतत अनूप ॥ ॥ ४५ ॥ निरगुण सरगुण रूप द्वै । अवनि आतमां मांहिं ॥ नांव नीरसों पुष्टि व्है । आसै आसण जांहिं ॥ ४६ ॥ नाद नीर बर्षा विपुल । प्राण पहम भरिपूर॥रज्जब काठहिं जातिके । प्रकृति प्राण अंकूर ॥ ४७ ॥ लिखे फटकडी पहम सों । कागद कवल सु मांहिं, नीर नादसौं मींजतै अखिर उघड सु: जांहिं ॥ ४८ ॥ फहम फटकडी सुं लिखे । काया कागद मांहिं ॥ रज्जबभीगे जुगति जल । अखिर देखे जांहिं ॥ ४९ ॥ रज्जब दरदि संतरसौं चले । मत मांगहुं पडि प्राण ॥ नगर नांव आये सबै । मेला रुचि घर जान॥ ५० ॥ रज्जब मनिषा देही मुकति सुख । आसै बासा होय ॥ चौरासी विष बंदि सब । सरकि सकै नहिं कोय ॥ ५१ ॥

साखी २०५३

अंतकालि अंतरा व्यौरा का अंग।

कृष्ण दुर्वासाकै शबदि। जल जमुना दई बाठ॥ त्यूं अंतर अंतक समै। पुनि नृसिंह सु ठाठ॥ १॥ भाव भोमि हल चल व्है। काल कष्ट भ्वै चाल॥ धरम धात धक्का नहीं। जन रज्जब थिर झाल॥ २॥ रज्जब राह केत रवि रूप लिये। पै जल चल लई न जाय॥ त्यूं अंतक बासिबय दरसै। आतम भाव समाय॥३॥ रूई बनौले खोसिये। ज्यूं चरखी तलि आय॥ त्यूं प्यंड प्राण जम कारि जुदे। विचि विति लिया न जाय॥ ४॥ बासे अण बासे पिलहिं। तिल तज कोल्ह काल॥ खलह लिखुसि नखस बुई। तेल उचा खुलि खाल॥ ५॥ नांव नाज आवै नहीं। अंतक समये काल॥ जन रज्जब जोख्यूं नहीं। जय कोठै होय सुकाल। ॥ ६॥ सदा अमावस ना रहै। सदा न राह गिरास॥ तैसे संकट काल सुनि। पुनि रज्जब प्रकाश॥७॥ महंत मोदधि मांहि थिर। चंचलता तानि तीर॥ रज्जब रीझया देखि करि। दोय स्वभाव शरीर॥ ८॥ रज्जब साधू धूपते। आसण अधर अकाश॥ पै तन तो यों की लहरमें। ते ऊचपल अभ्यास॥ ९॥ प्यंड प्राण ज्यूं हालई। विपति वातकी घात॥ महा पुरुष मन मूल मत। सो अस्थिर दरसात॥ १०॥ खंड खंड पिंडह करै। परि प्राणहिं परै न राय॥ त्यूं बिघन समय बाणी बिकल। पै हेत हत्या नहिं जाय॥ ११॥ कालनींद काया गहै। परि मन पवन बस नांहिं॥ त्यूं अंतर अंतक समै। रज्जब समझया मांहिं॥१२॥ शून्य समीर न फटि रहै। गोली गोलै गौन॥ तैसे रज्जब प्राण पति। तौ अंतकि अंतर कौन॥ १३॥ अंतकि पडै न अंतरा। जासों जीव

की प्रीति ॥ मींन माग जल चोट तकि। मिलि जाणी रसरीति। ॥ १४ ॥ देही छारा दहम व्है। अंतकि लागै आगि ॥ प्राण पंखि बसि नां चलै। देखि जांय उडि भागि ॥ १५ ॥ अंतक मनहुं पाहुणी आग। प्राण लोह सों रहै न लागि ॥ आरंभ उठै उदंगल आइ। सु रज्जब रहै नहीं ठहराय ॥ १६ ॥ रज्जब फिरत फिरत त्यौंरी फिरी। जथा तनें कुछ सुद्धि ॥ सोधि शरीर देखै भरमत। भोला भोली बुद्धि ॥ १७ ॥

साखी २०७० अंग ६५

प्रति ब्रता को अंग।

पति ब्रताकै पीव बिन। पुरुष न जनम्या कोय ॥ त्यूं रज्जब रामहिं रचै। तिनके दिल नहि दोय ॥ १ ॥ आन पुरुष परसै नहीं। दोष न दे भरतार ॥ तौ रज्जब रामहिं भजो। तेतीसों तसकार ॥ २ ॥ सुर नर देवी देवता। सब जग देख्या जोय ॥ रज्जब नाहिं रामसा। सगा सनेही कोय ॥ ३ ॥ नक्षत्र रूप निर जर सबे। पैतमन नैन नर नाश ॥ रज्जब रवि रमिता द्रसै। जै न करै प्रकाश ॥ ४ ॥ यथा नापिगा नीरले। सिंह सभापति जाय ॥ त्यूं रज्जब सरबंसले। सौ यौं साहिब माय ॥ ५ ॥ रज्जब रमिता राम तजि। जाय कहां किस ठौर ॥ सकल लोक येकै धरनी। नाहिं साहिब कोइ और ॥ ६ ॥ रज्जब राजी एकसूं। दूजा दिल न समाय ॥ देखो देही येकमें। द्वै जीव न है आय। ॥ ७ ॥ येक आतमा राम इक। एकै हित चित होय ॥ दूजा दोसत क्यूं करै। दिल दिये नाहिं दोय ॥ ८ ॥ पनिंग रहै पाताल में अनल पंख आकाश ॥ त्यूं बंदे बसतहिं लगे। दासा तनमें दास ॥ ९ ॥ दुनियां दिल दरपन मई। सबे रूप सम भाय। मोमन

भया सुदाज सिल । मित्र मोर दरसाय ॥ १० ॥ रज्जब माया ब्रह्म मधि । ठीक पावै है ठौर ॥ निहचै बिन नरहरि निकट । बैठण लहै न और ॥ ११ ॥ येक मिल्यूं सारै मिलै । सब मिल मिल्या न येक ॥ तातैं रज्जब जगत तजि । बूझो बडा बमेक ॥ १२॥ दौजक भिस्त्यहि क्या करै । जो अलह के यार ॥ रज्जब राजी येकसौं । कामिलि इहै करार ॥ १३ ॥ भिसतिन भावै आशिकूं । दीन दुनी रुचि नांहि ॥ रज्जब राते रब्बसौं । येक बस्या मन मांहिं ॥ १४ ॥ वैकुंठहिं बीं दै नहीं । सो विषिया क्यूं लेहि । रज्जब राते रामसौं । औरहिं उर क्यूं देहि ॥ १५ ॥ सिंह न सूंघै घासकूं । जो बहुते होहि उपवास ॥ त्यूं रज्जब दीदार बिन । कछू न चाहै दास॥१६ दरस बिना जो दीजिये । सो ले मूरख दास ॥ वैकुंठ सहित बसुधा मिल्यूं । रज्जब रहा उदास ॥ १७ ॥ रज्जब रिधि सिधि निधि सबै । लह्य लह्या कछु नांहिं ॥ जब लग आतम रामसौं । मेला नाहीं मांहिं ॥१८॥ असंख्य लोक रिधि सिधि सहित । जीवहिं दे जगदीश॥रज्जब रीति रामबिन । आतम विश्वा बीस॥१९॥ रीति रामति राम बिन । खलक सु खाली खेल ॥ सुरपुर नरपुर नाग-पुर । कदरज क्रीडा खेल ॥ २० ॥ रज्जब जाहिं खडी जड घणी । सो सूकै ततकाल ॥ डाभ उन्हाले में हरया येकै मूल पताल ॥२१ रज्जब बरखत वन हरया । तृण तरुवर गति दोय ॥ इक सूकै इक सजल अति । उभै उन्हाले जोय ॥ २२ ॥ अठार भार विधि आदमी । मही सु मनसा बंधि ॥ शब्द सलिल जड जांणिबा । हेरि लहै सो सांधि॥२३॥रबि शशी गहिये गगन में। पनिंग गह्या। पाताल ॥ रज्जब रहिये सराणि कहीं । जुम्बै धूजैं भ्वै चाल ॥ २४ ब्रह्मा विष्णु महेशकै । शरनै कुशल न कोय ॥ तौ रज्जब तेतीस ताजि । रावण हार सु जोय ॥२५॥ शिव सिर गहया सु चंद्रमा ।

ब्रह्मा रह्या न वेद ॥ राम कृष्ण रमणी गमी। रज्जब पाया भेद॥ ॥ २६ ॥ गोपी लूटी कृष्णकी। रावण ले गयो सीत ॥ रज्जव रहिये शरण केहि। सुनिज भये भयभीत ॥ २७ ॥ सीता शील सु लाछिया। घर आनी देदिब्ब ॥ रज्जब जानी रामकी। सक-लाई तव सब्ब ॥ २८ ॥ शिव सिरपर शशि संग्रह्या। राह केतने आय। तो शरणै तेतीस में। रज्जब किसकै जाय ॥ २९॥ रइयाति रमिता रामकी। तेतिसहुं शिरताज ॥ बास बसे बलवंतके। जा सिर और न राज ॥ ३० ॥ चाकर राम रहीम के। अविनाशी का दास ॥ सुरनर शोधे से सलग। उर न औरकी आश ॥३१॥ पैग के बर सब परिहरै। मालिक सो मोहीत। रज्जब फारिक कु-छि सों। मकसूदी रस रीत ॥ ३२ ॥ साहिब सों पैदा भये। सा-हिब सौना पैंद। रज्जब तिसकी बंदगी। दूजे की क्या कैद॥३३ फरज खुदाई की बंदगी। सुनति किसकी होय। रज्जब यूं हैरान है। कछु साहिब है दोय ॥ ३४ ॥ कहै निमाज खुदाय की। नवैं सु मक्के और। रज्जब यूं हैरान है। कुछ अल्ह पैण गौर॥३५ रज्जब साईं सुमिर तूं। सिध साधि सबै असा। जैसे सलिता स-मंद सों। अचई आनि अगसा ॥ ३६ ॥ डाल पान फल फूलकैं। जड सींचै संतोष। त्यूं रज्जब रामहिं भज्यूं। सुरनर धरहिं न दोष ॥ ३७ ॥ ..ब संतनको राशि हरि। सोई पूंज उर: धारि। यूं रज्जब सब सेइये। गुरुमुख ज्ञान विचारि ॥ ३८ ॥ जैसी विधि पै पान करि। घीव दही तक्र पीन। तैसी विधि हरि सूं मिले। सो रज्जब सबद भीन ३९ ॥ साईं में जो आइया। साधू दिल सु समाय। ज्यूं रज्जब आखिर पैठ। लगमी बांची जाय ॥ ४० ॥ पहम पड्या पाणी पिवहिं। पक्षी प्राण अनेक ॥ रज्जब अंभ अकाश का। सो सारंग ले येक ॥ ४१ ॥ जतन सींप सुत काग है। यूं

मन राखै सोध। सलिल शक्ति परसैं नहीं। पूरण बुद्धि अगाध ॥
॥ ४२ ॥ चात्रिग का पति ब्रत गहैं। सीर स्वांतिही मांहि। रज्जब
सर सलिता भरे। ताकूं भावैं नांहि ॥ ४३ ॥ पानी सूं पति ब्रत
गहि। मीन रहै मनलाय। रज्जब खेलै बहुत विधि। बाहर कढे न
जाय ॥४४॥ गहि पति ब्रत पाखाण का। आगि रह्या उरलाय ॥
रज्जब जुगल भै भये। पैं पाणी मिल्या न जाय ॥ ४५ ॥ छाया
रूपी ब्रत गही। रही जु चैतनि लागि। रज्जब दुःख सुख संग सो।
कढे न जाई भागि ॥ ४६ ॥ ज्यूं जल मीन भुजंग मणि। दोऊ
पति ब्रत मांहिं ॥ मीन मुदित औरै जलै। सर्प और मणि नांहिं।
रज्जब ताकहुं तोरही। पहुप प्रीति परि जोय ॥ शशि सज्जन संगि
जीवते। सूर समैं शिर खोय ॥ ४८ ॥ सूरज वंशी कमलनी।
शशि देखे कुमिलाय। त्यूं रज्जब बरतै रामसूं। दूजा दिल न स-
माय ॥ ४९ ॥ सींप समंदहि पीठि दे। मुख कीन्हा दिशि मेह।
रज्जब बिरची बारि निधी। स्वाति बूंद कै गेह ॥ ५० ॥ रज्जब के
ली सींप सारंग के। स्वाति बूंद आधार। छांट छांठ में छानिले।
धन्य पति ब्रत व्यौहार ॥ ५१ ॥ सींप विभीषण का बरत। बरतहुं
पाल्या अंक ॥ तौ स्वाति मुकत उनकूं दिये। उन्हीं सम पौलंक।
॥ ५२ ॥ सारंग सींप सरोज के। पति ब्रत देखहु दीण। त्यूं
रज्जब रहि रामसौं। ब्रह्मंड खंड दै पीण ॥ ५३ ॥ रज्जब दोसत
दीपका। शशि संतोष न भान। जासौं रहता सौं रजू। लघु दीरघ
नहिं जान ॥५४॥ लघु दीरघ समझै नहीं। प्राण प्रीति तहां जाय॥
देखि दिवाकर कूं तजै। दीपि पतंग समाय ॥ ५५ ॥ सुहागै सुं
नां मिलै। कंचन अमिल कपूर। देखो किहिं ठाहर निकट। किहि
ठाहर सौं दूर ॥ ५६ ॥ आखिन सिदुक निहचा निरसिग। अडिग
अडोल अविहड दिल बँध ॥ येक पति ब्रत अखंडित प्रीति ! नांव

अनंत एक रस रीति ॥ ५७ ॥ जिन बातों साहिब खुशी । रज्जब राजी होय । पति ब्रता सो जानिये । जाकै येक न दोय ॥ ५८ ॥ तन मनकी मेटैं खुशी । आतम आज्ञा मांहिं । सो रज्जब रामहिं मिलै । उरमें और सु नांहिं ॥ ५९ ॥ संतति आभों शून्यकी । तोय तरुण बमेक । त्यूं रज्जब रमि रजा में । अपणी दोय न येक । ॥ ६० ॥ साधू चलें सु राम रुचि । अगम अगोचर भाय । रज्जब रतसों रत्त व्है । बिरतौं निकटि न जाय ॥ ६१ ॥ रज्जब मिलते सों मिलै । अन मिलते न मिलाय । सांई साधू येक गति नर देखो निरताय ॥ ६२ ॥ अण मिलतों सों अण मिलै । मिलतौ सेती मेल ॥ यूं रज्जब जनकी दशा । पति बरता का खेल ॥ ६३ ॥ रज्जब येकूं येक है । अनेकों अनेक । सांई सेवक येक मत । यहु पति बरत बमेक ॥ ६४ ॥ येक सो येक दूजे सों दूजा । रज्जब राम खुशी यहि पूजा । रोजा राखै द्वार दस । बरत करै बसि पंच । जन रज्जब निज नेम यहु । लगै नहीं जम अंच ॥ ६६ ॥ बरत न छाडै रामकूं । बरत न भुगतै काम । बरत न मद मांसहि भखै । नवै न निरजन धाम ॥ ६७ ॥ गंठ जो जोडा ज्ञान करि । हथले वाहरि हेत । रज्जब भामनि भामने । भांवरि भरि भरि लेत ॥ ६८ ॥

साखी २१३८

श्रवंगी पति ब्रता का अंग।

सूरज देखे सकल दिशि । चालिबे कूं दिशि येक त्यूं रज्जबहीं रामसों । यहु गहि बरत बमेक ॥ १ ॥ गिरद फिरै इक दिशि गवन । चितव चकर की चाल । त्यों रज्जब सब दिशि समझि । पाया पंथ निराल ॥ २ ॥ प्राण पवन सब दिशि फिरैं । गवन गवान कूं होय ॥ जन रज्जब चलि और यहु । बिगति बधूला जाय ॥ ३ ॥ ढोल बोल सब दिशि मसि । करी सैन दिशि सैल ।

जन रज्जब सरबग मिली । गही गिरा गुरु गैल ॥ ४ ॥ रज्जब बुद्धि बूंटी ब्रह्मंड खंड । रमि रमि राग सब अंग । यहु सरवंगी पति बरत । हरि विछोह दुःख भंग ॥ ५ ॥ रज्जब निजजन मांपिगा । सब दीशि फिरती जाहिं ॥ बेत्वा बंक न बींदहीं । फिरि धर दरिया मांहिं ॥ ६ ॥ त्रिविधि भांति जीव रंग धरे । धनुहर देखि अकाश । पै येकै ठाहर एकसों । अविगति आभौं पास॥७॥ पोसत पहुपों बहु बरन । अमल अकारों येक । तौ भेखों भोला न कछु । बेत्वा करौ बमेक ॥ ८ ॥ जन रज्जब बपु बहु वरन । जलचर देखो जोय । नीर नेह अरु तिरण गति । सबकी येकै होय । देखो सुरही संतजन । तिन तनु रूप अनेक । पुनि पैय्यारैं शंखि कै रज्जव दरसै येक ॥ १० ॥ षट्र दर्शन पंखै स्वपर । बहु बरनैं वहु बीर । रज्जव अज्जव यहु मता । सुमिरन येक समीर ॥११॥ अधपति लावै अरगजा । सकल सुगंधों सानि । त्यों षट् दर्शन सों खुशी भेद भजनकी मानि ॥ १२ ॥ छप्पन भोगन संव जो विना छत्रपति थाल । त्यों षट्दर्शन खलक सब । भाणे भावभित भाल ॥ १३ ॥ सोई चकवै नरपाति । ज्ञान चक्र हुंदै हाथ । ससत्र सब दिशि गम गवन । सरवंगी सब नाथ ॥ १४ ॥ पति बरता परमारथी जो नरु तर सामि रूप ॥ सबकूं सुख दे सवदि फालि । सदा सु दिढ ग्वै भूप ॥ १५ ॥ रज्जब आतम बाल सुरत जड । ब्रह्म मोमिरस लेय ॥ सकल तत्व बेले बधैं । सो भरसन फल देय ॥ १६ ॥

बिभि चारका अंग ।

बिभि चारि जीव बांधि बिन घटमें नहीं बमेक ॥ जन रज्जब याति छाडि करि धके खांहि अनेक ॥ १ ॥ जैसै कीलाकी चका ।

खैंच्या दश दिशि जाय ॥ रज्जब रामहिं क्यूं मिलै। यहि विभिचारी भाय ॥ २ ॥ मकरी चकरी तारपरि। अहि निशि आवै जांहि ॥ मन मनसा ऐसे फिरहि। कैसें पति पति यांहिं ॥ ३ ॥ नैनहुँ बैनहुँ श्रवणि करि। जै कतहुँ चलि जाय ॥ तौ रज्जब नारी नाह बिन। मार सरोतर खाय ॥ ४ ॥ निश्चा छाडै नामका। आन धर्म उरधार ॥ सींप स्वाति मधि सिंधु जल। मन मुक्ता व्है ख्वार ॥ ५ ॥ सुखि मानें मनमें अमिन। दिल दुविधा नहिं जाय ॥ रज्जब सीझै कौन विधि। इहि विभिचारी भाय ॥ ६ ॥ रज्जब रही न मीन बिन। पीहर अरु सुसराल ॥ सो सुकली माने नहीं। बचन बडों की बाडि ॥ ७ ॥ नारी पुरुष न नेह। दुःख दुहाग निशदिन भरै ॥ रज्जब कौन सनेह। सती भई शठ भावले। ॥ ८ ॥ तानि पति बरता मनि मूरखी। लखै न पिव प्रसताव ॥ रज्जब रूठे से रहे ॥ उभै सु सारी आव ॥ ९॥

रस का अंग।

रज्जब रमि रमि रामसों। पीवै प्रेम अघाय ॥ रसिया रसमें व्है रह्या। सो सुख कह्या न जाय ॥ १ ॥ निर्मल पीवै प्रेम रस। पल पल पोखै प्राण ॥ जन रज्जब छा क्या रहै। साधू संत सुजान ॥ ॥२॥ परम पुरुष में पैठिकरि ॥ पीवै प्राण पियूष ॥ रसिया रसमें है रह्या। अरु रसहीकी भूख ॥ ३ ॥ रसना लागी राम रस हिलि मिलि व्हैता माहि॥जन रज्जबसो स्वाद सों। कबहुं छूटै नांहिं ॥४॥ अविगति अलख अनंत रस। पीवै प्राण प्रवीन ॥ जन रज्जब रसमें हुवा। निकसीन जाई भीन ॥ ५ ॥ हरि दरियामैं मीन मन पीवै प्रेम अगाध ॥ महा मगन रसमें रहै। जन रज्जब सो साध॥ ॥ ६ ॥ रज्जब रहैंन देहमाधि। मगन मुदित व्है जाय ॥ लूण गु

णिज्यूं नीरमें । तामें क्याठह राय ॥ ७ ॥ अमल अमोलिक नांव का । साध सदापी वंत ॥ मसत बसतमें हो रह्या । जुगि जुगि सो जीवंत ॥ ८ ॥ रज्जब अज्जब रामरस । पाया गुरु परसाद ॥ पोख्या प्राण पियूषसों । छूटैं बाद विवाद ॥ ९ ॥ रज्जब दुनिया हद्दमें । साधू जनबे हद्द ॥ जाति पांति देखै नहीं । पीया हरिरस मद ॥ १० ॥ गुन औषध मिश्री स्वमन । सेव मुल्लिक समलाय। रज्जब प्याले प्रीतिकर,आतम राम पिलाय ॥ ११ ॥ मति मिसरी जीवजल घुली । प्राण पियूष समान ॥ अमृत पीवहिं आतमा । कोई ल्यों तहां आनि ॥ ॥ १२ ॥ काया कुंडा भरि लिया । भावै भंग समान ॥ कुत कुंदन जानकी । रज्जब रुचिरस पान ॥ १३ ॥

प्रेमको अंग ।

नोल छिन छिन नौधा भगति । रज्जब रजनां मांहिं ॥ प्रेम प्रभावकरि ऊगतै दृष्टि सु दीसै नांहिं ॥ १ ॥ बिविधि बंदगी वयसु विधि । प्रेम पाणकी ठौर ॥ जन रज्जब तिसजीन बिन । सबगुण मृतक और ॥ २ ॥ नवौ खंड नौधा भगति दशवीं दशवे द्वार ॥ प्रेमला छिगनें प्रभुजी । तिलक दिया संसार ॥ ३ ॥ रज्जब पावक प्रेम है । कंचन आतम राम ॥ गालि मिलावैं दुहिनकों । प्रेम करैये काम ॥ ४ ॥ प्रेमप्रीति हितनेहकूं । रज्जब दुविधा नांहिं ॥ सेवक स्वामी एक व्है । आये इसघर मांहिं ॥ ५ ॥ प्रेम प्रीति हित नेहकी । रज्जव ऊबट बाट ॥ सेवकको स्वामी करहि । सेवक स्वामी ठाठ ॥ ६ ॥ अम्मल बेतसु औषधि प्रेम । मोमन सारसूई संत नेम ॥ पैठै मांहिंसु जांहिं बिलाय । गुणहै गात नहीं निरताय ॥ ७ ॥ दाख

बंदगी सब भली। बेइाना है प्रेम। रज्जब दरया बीज वेन। जैसे ओला हेम ॥ ८ ॥ प्यार प्रीति हित नेहसु मुहब्बत। पंचनाम येक प्रेम ॥ उभै अंगएकठ करहिं। मनसा बाचा नेम ॥ ९ ॥

साखी २१८५ अंग ७०

अथ सूरातनका अंग।

सांई सींतिन पाइये। शातौं मिल्यान कोय॥ रज्जब सौदा रामसों। सिरबिन कदेन होय॥१॥जबलग सिरडारै नहीं।तजैंतनकी आश॥ तबलग रामन पाइये । जन रज्जब सुणि दास ॥ २ ॥ जन रज्जब रज रेख। राखै सोरिणमें भरहै। जुध करता जगि देखि। सुरज साखि सारेकहैं ॥ ३ ॥ जैसा धूरिणमें रहै। खंड खंडकरि गात ॥ सो रज्जब रामहिं मिलै। सुरनर आये जात ॥ ४॥ साहिब सन्मुख पावदे । तासम कोई नांहिं ॥ जन रज्जब जगपति मिलै। सिर साटै जग मांहिं ॥ ५ ॥ जैसें सूरा शीशले। कोट्यूं मांहै जाय ॥ त्यूं रज्जब हरि नाममें। सिरदे शूर समाय ॥ ६ ॥ महा शूर सुमिरण करै। सिरकी आश उतारि ॥ जन रज्जब तासंतकूं। प्रत्यक्ष मिलै मुरारि ॥ ७ ॥ हरि मारग मस्तक धरै। कोई एकपूरा दास ॥ सो रज्जब रामहिं मिलै। कदेन जाय निरास ॥ ८ ॥ सति संध्योरा हाथिले। काट्या मोह अराय ॥ जन रज्जब पीवकूं मिली। देखो देहज राय ॥ ९ ॥ जहि रचनामें शीशदे। सोई काम अडोल॥ जन रज्जब जुगि जुगि रहै। सूर सती सत बोल॥ ॥ १० ॥ साध सराहै सो सती। जतीजो जुवत्यूं जान ॥ रज्जब साधू सुरका। वैरी करै बखान ॥ ११ ॥ माया काया जातिलग। धर्मन छाडेंहिं धीर ॥ रज्जब सारे साहसी। बेत्वा बावन बीर। ॥ १२ ॥ हरिके मारग चलनका। जेकुछ है चित चाव। तो

रज्जब त्यागो जगत । दैतन मन सिर पांव ॥ १३ ॥ ज्ञान खड्गते तीस हत । होय चकवै प्राण ॥ जन रज्जब नौखंड परि । बाजै तबल निशान ॥ १४ ॥ निरति नालि दारू दरदि । गोला बाइ-क ज्ञान ॥ कुमति कपाटर करम गढ । जन रज्जब यूं भान ॥ ॥ १५ ॥ साधू लडैकमंध व्है । पहल शीश उतारि ॥ जन रज्जब मारै मुवा करै मारहीं मारि ॥ १६ ॥ लडै पडै बहुडयूं चढै । सूर करै संग्राम ॥ जन रज्जब जोधार जीव । महा अडीले ठांव ॥ ॥ १७ ॥ दिन प्रतिकैसों काटिये । बैठि रहै सो नाहिं ॥ रज्जब साचा सूरिवा । यहुल छिनजा मांहिं ॥१८॥ शरीर सफर तबका किया । जब गाजी असवार ॥ सौ रज्जब कैसें फिरै । खिल खानैं बेजार ॥ १९ ॥ प्यंड प्राण संकल्प करि । सूरि चढै संग्राम ॥ जन रज्जब जगकूं तजै । ग्रहदारा धन धाम ॥ २० ॥ सती सरोतरि रामकहि । मरण उरै मरि जाय ॥ जन रज्जब जग देखतूं । ज्वाला माहि समाय ॥ २१ ॥ साहिब सन्मुख पावदे । पीछा पलकन देख ॥ रज्जब मुडतौं मारिये । भीयहु लाजै भेख॥ ॥ २२ ॥ घरि आंगण बाजारमें । बांका सबको होय ॥ रज्जब रणिमें बांकडा । सोजन विरला कोय ॥२३ ॥ रज्जब आतिगति सूधा देखिये । सूर शहरकै मांहिं ॥ काम पहयू व्है केशरी । रिणमें मावै नाहिं ॥ २४ ॥ सीधू सुरसरवनू सुनत । सूरस नाहन माय ॥ रज्जब भागे जतन सब । व्है गया ओरहि भाय ॥ ॥ २५ ॥ रामरी आँण छे राममें लहू नहीं । वहले बीजूका सूक हीजे ॥ रजवा राम नौछा मिनवे गलौ । कहौनैं वले व्है काल जीजै ॥ २६ ॥ सेवक सूरा सिंह मनि । बिरच्यू करै विहंड । जन रज्जब डरपै नहीं । पडतू अपणूं प्यंड ॥ २७ ॥ मरबे मांडी ऊतरया । पूरा पाइक होय ॥ रज्जब रावत क्यूं टलै । आडा

आवो कोय ॥ २८॥ सुभट शूर जेती तजै। तेती बहुडीन लेय॥ जन रज्जब पूरा पूरुष। पाछा पगक्यूं देय ॥ २९ ॥ आसंध बिनन कवाल परि। सूरा खैंचैं नाक ॥ जन रज्जब आसंघे तब। छिन छिन होय निसांक ॥३०॥ रोही पोबत करज लै। तबसूंदरिफूकें हाथ ॥ जन रज्जब आसंघैं तब। भरै सलै सौं बाथ ॥ ३१ ॥ ज्ञान खड्गतले शीशदे। ब्रह्म अगनिमें सत ॥ लरि बाजरिबा आवभरि। कौंन गहै यहुमत ॥ ३२ ॥ शूरसती साहस सुलय। निमाडि जांहिपल माहिं ॥ साधू जुधसु आवभरि भारत छूटैं नांहि ॥ ३३ ॥ शूर सती संग्राम येकपल। साध लडै भरि आव ॥ रज्जब मन मनथ सिरि। घालै निशिदिन घाव ॥ ॥ ३४ ॥ संग्राम सदा मन जीवकूं। अहि निशि होय अखंड ॥ रज्जब जांणें जोध जन। पूरा प्राण प्रचंड ॥ ३५ ॥ जगत जुध जरिबा सुगम। पलमें पिंड प्रहार ॥ पैजोग संग्रामर ब्रह्म अग-नि सत। रज्जब अगम अपार ॥ ३६ ॥ सब शूरों सिर शूरिमां जेजी तेगुण जोध ॥ जन रज्जब झूमार सो। ताका उत्तम बोध ॥ ॥ ३७ ॥ बहुत शूर बहु भांतिके। जोध बडे जगमांहिं ॥ जो रज्जब मारै मदन। तासम कोई नांहिं ॥३८॥ मन इंद्री जिनबस करी। मारचा मदन भुवंग ॥ सो रज्जब सहजें मिलै। परम पुरु-षके संग ॥ ३९ ॥ माहै मारै गुणहूं कूं। बाहरि जगसौं जुद्ध ॥ जन रज्जब सो शूरिमां। रोपिर ह्याकुल शुद्ध ॥ ४० ॥ बहुविधि मारै बहुत गुण। तोडे तीन्यूं साल ॥ जन रज्जब सो अमर व्है। जीत्या अपनां काल ॥ ४१ ॥ पंच अपूष फेरि करि। घरि आणे सो शूर ॥ साहिब सौं साचा भया। रहसी सदाहजूर ॥ ४२ ॥ पंचों इन्द्री निर्दली। तिन खाया संसार ॥ जन रज्जब सो सूरि मां। प्राण उद्धारण हार ॥ ४३ ॥ संचपचीपों त्रिगुण मन।

मैं वासा भर पूर ॥ ये अरिदल जोईदले। सो प्राणी सति सूर ॥
॥ ४४ ॥ रूप्यो बिना रिपु क्यूंटले। सूर सत्य करि जोय ॥
रज्जब जोधा जतिणां। हाँसी खेलन जोय ॥ ४५ ॥ सूरा रहै
संग्राम चढि। अरि इंद्री आदि मारि ॥ जन रज्जब युध जीतिये।
ज्ञान खड्गकर धारि ॥ ४६ ॥ ज्ञान खडग जबकर धरै। तब अरि
मरै अज्ञान ॥ जन रज्जब संसार सों। यों पग माँडे प्राण ॥ ४७॥
सतगुरुके साचे शबद। ज्ञान खड्गकर साहि ॥ रज्जब रहै सनाह
कद। प्रेम पाणदे नांहिं ॥ ४८ ॥ भेख पाखि भावै नहीं। भरमै
भुजा गल भानि ॥ रज्जब रुपि भागैं नहिं मरद मंडै मैंदान
॥ ४९ ॥ रज्जब मरद मंडैमैदानमें। सिरकी आश उतारि ॥
अंग उघाडै अगम गति। बानां बखतर डारि ॥ ५० ॥
टीका साधू सूरका। साच बाच मुखि धाव ॥ चरचा चोट चतुर
दिसा। आगैं भाव सुपाव ॥ ५१ ॥ जैर सूर संग्राम दिशि।
साहिब सूंदे पीठि ॥ तौ रज्जब सरबसगया। पीछै भला अदीठि
॥ ५२ ॥ रज्जब सती समाध सिल। जीवहि ले भाजै ॥ तौ
हांसी तिहु लोकमें। दोऊ कुल लाजै ॥ ५३ ॥ सूरडिग संग्राम
शिर। सती चलै सत छाडि ॥ तौ भट चारण बिरद ताजि। तबै
उठें मन भांडि ॥ ५४ ॥ कायरकूं ब्रह्मा इये। बहुरि लडै सो
नांहिं ॥ रज्जब बिचलै देखतां। फिरका नांहिं मांहिं ॥ ५५ ॥
सूर सती अरु संतकै। मरणै मंगल मांड ॥ रज्जव गुर मुख
मोडतूं। भूत भगत करै भांड ॥५६॥ रज्जब कायर सूरनें। प्रगट
गुप्तकी खोडि ॥ येकै करकरि हाहडे। दूजे मूंछ मरोडि ॥ ५७ ॥
सूर बिना संसार सों। बिरच्या कदेन जाय ॥ रज्जब कायर कोटि
मिलि। बाहरि धरैंन पाय ॥५८ ॥ शब्द सुरति पंचों मिल्यो।
रज्जब कटै विकार ॥ यथा जेवडी कूपासिल। बिहरै बारुं बार ॥

॥ ५८ ॥ जैमन पवन मिलि लीन व्है । तौ प्राण पिसण प्रहार ॥ ज्यूं कणिजा रेतहिं मिल्यूं । रज्जब काटै सार ॥ ६० ॥ रे रज्जब हरि संधि । हारि जीत दोन्यूं भली ॥ तातै खेलै अघाय । करिउ छाह आणि दरली ॥ ६१ ॥ धीरज धरणां कठिन हैं । विषम दुहेली बार ॥ रज्जब रिणमें रुपि रहे । सब आसंधि मर मार ॥ ६२ ॥

शिकारका अंग।

चेतन चीता हाथले । मूंठि मनपर डारि ॥ रज्जब शैल शिकार करि । मन मृगातकिमारि ॥ १ ॥ पंच पचीसों मारिये । मन मनसा पुनि मार ॥ रज्जब बय बनखंडमें । खेलहु शैल शिकार ॥ २ ॥

साखी २२४९।

शब्द परीक्षा।

एक शब्द माया मई। एक ब्रह्म उनहार॥ रज्जब उभै पिछाणि उर। करहु बैनव्यौहार ॥ १ ॥ कौडी लाल शबद है । सहँघे महँगे बोल ॥ माधि मनिगन समि बैन बहु । पावहि बित सुमोल ॥ २ ॥ सुख मंदिर टक सालपे । नांणें शब्द सुजान ॥ दमडे खुडदे सुहरलौं । बिकसैं बित उनमान ॥ ३ ॥ कोडी तांवा रूपा कंचन । नग नांणें लग लाल ॥ त्यूं रज्जब बाइक विविध । फेर मोल अरुमाल ॥ ४ ॥ प्यंड प्राण वहमी पवै । तहांस प्रयेक खानि ॥ रज्जब कंचन लोह लगि । शब्दसु बित हिजानि ॥ एक शब्द राजेंद्रमें । येक प्रजै उनहार ॥ बैनहूंमें व्यौरा बहुत । परखै परखन हार ॥ ६ ॥ रज्जब काया कुंभकूं । परखै प्राण

प्रवीन ॥ सारेका सारा शब्द । फूटा वाणी हीन ॥ ७ ॥ बेत्वा बीज समान है । वांणी बोध प्रकाश ॥ रज्जब बोलि विगास तूं । श्रवण नैंनतम नाश ॥ ८ ॥ इंद्रगाज बोली बडी । वाणी बीज विशेष ॥ येकहिं तिमिरन दूर व्है । येकहिं सबकछु देखि ॥ ९ ॥ जगत जाणि जीगण जुगति । बेत्वा बीज समान ॥ जन रज्जब चमकहि उभै । बल पौरषन समान ॥ १० ॥ दामनि दमाकि दिशावर दीसै । जैंगन चमक सु ग्वाडि ॥ तैसै बाणी बंदहि सुबंधे । जैसि जिनमे बाडि ॥ ११ ॥ चिडी चीलकूं कुरलै । समन होंहिं सुर जोख ॥ इकनीडै इक नगरमें । इकशत योजन पोख ॥ १२ ॥ ग्वाडी गमिसींगी शबद । शंख शब्द अति शोर ॥ अधिक अतिकर नालका । त्यूं कवि काव्यौं फोर ॥ १३ ॥ आतम आभाजल शबद । निकसै निर्मल नीर ॥ पृथ्वी पड्या पिछाणिये । रज्जब रजसों सीर ॥ १४ ॥ पंच तत्वपर स्या शबद । पृथ्वी पड्यासु नीर ॥ रज्जब तबहीं जाणिये । सघण स्वादसों सीर ॥ ॥ १५ ॥ बहते रहते शब्दकी । रज्जब इहै विचार ॥ बहता बोलै गुणहिंमें । रहता निर्गुण सार ॥ १६ ॥ रज्जब शाह दिवालिये । आध कहै सुख येक ॥ ये उनकै बसतै सु पाइये । उनकै बात अनेक ॥ १७ ॥ बचन बराबरिके कहै । तौभी धीरजन कोय ॥ रज्जब रथहुंसु भारभिन । खोजयेकसा होय ॥ १८ ॥ बादल बाइक जल अरथ । बरिखा शून्यमन मांहिं ॥ रज्जब गरद गुमान रज । उभै ठौर धुइ जांहिं ॥ १९ ॥ रज्जब शब्द समीर सम । बोध बारि निधि जान ॥ तहां वैर बाई चलै । उठैन गरद गुमान ॥ २० ॥ दोषन उपजै किसीकै । सुनत शब्द निरदोष ॥ बकताके बंधन खुलै । अरु सुरता व्है मोष ॥ २१ ॥ २१ ॥ काया व्हेलि सुक्तिही सुक्ति । शब्द स्वांति जल पोष ॥ सुर भानोंयूं

उपजै। वहां दखल नाहिं दोष ॥ २२ ॥ गवन गांवनैं बातबल। विषै बाइकी आंधीं ॥ रज्जब रजतज काठतौं । मारुतकी गति लाधी ॥ २३ ॥

ज्ञान परीक्षा अंग ॥

साचे झूठे ज्ञानका । पाया शिख माग ॥ रज्जब राग अनंत है। परि दीवा दीपक जाग ॥ १ ॥ रज्जब पतिंग पतंग नर। पंख ज्ञान परकाश ॥ यकपु रिधि दीपक पतण। इकश्रव सांई पास ॥ ॥ २ ॥ रज्जब सरना कर गहे । ज्ञान खड्ग षट्र खान ॥ प्रान ईसाले उठै।सो कोई औरै प्रान ॥३॥ जोमत काढै मांडसूं। ले राखै हरि थान। रज्जब बिचि उळझै नहीं। सोई उतम ज्ञान ॥ ४ ॥ रज्जब रिधि रजमें पडे। हंस अंसमुत सार ॥ सोमत चंवक नींकसै। ज्ञान गराबमु धार ॥ ५ ॥ सप्त धातुका ज्ञान तजि। अगम अष्टवां लेह ॥ रज्जय राखै राममें। तोडै त्रिगुण सनेह ॥ ६ ॥ जन रज्जब उरि अष्टवां । बोध बस्या मन मांहिं ॥ सप्त धातुके ज्ञानकूं। करन कबूलै नांहिं ॥ ७ ॥ पतिंग पतंग पिपीलिका। तीन्यूं पंख प्रकाश ॥ येक सिरक शीतलकूं मिले। येक भये तनि नास ॥ ८ ॥ बाइक बादल ज्यूं उठहिं। सप्तरंग सिरि पाग ॥ रज्जब परखै पारखु। मस्तक मोटे भाग ॥ ९ ॥ सृष्टि दृष्टि आवै नहीं। परम ज्ञान परकाश ॥ ज्यूं रज्जब रविके उदै। तमतारे गुन नाश ॥ १० ॥ निर्मल ज्ञान उदै भये। नरनारी हित नांहिं ॥ रज्जब रत रंकारसूं। मिलन माया मांहिं ॥ ११ ॥ ज्ञान गुमानहिं काटिदे। काम क्रोधका काल ॥ रज्जब काटै सकल गुण। आतम करै निशाल ॥ १२ ॥ रज्जब गंगा ज्ञानकी। क्रमरेतीनिरु काय ॥ पाप वहाडों फोडती । हरि समुद्रकूं जाय ॥ १३ ॥ ज्ञान बायु

संग उडिगये । कर्म कपूर अपार ॥ रज्जब जीवहु लुका भया । उतर्‌या अमितसु भार ॥ १४ ॥ रज्जब शक्ति सलिल आकाशतैं । काया केलिमें आय ॥ बसत येक गुण तीन व्है । कथा कपूर कहाय ॥ १५ ॥ मुख फानूस रसन है बाती । बन्ही बैन जोति तहँ राती ॥ काजर कपट उजास विचार । चतुर भांति दीपक व्यौहार ॥ १६ ॥

प्राण परीक्षा अंग ।

ज्यों आभा आदित्यकी । करी मंदगति ज्योति ॥ त्यूं रज्जब आतम भई । मिलि मायाकै गोति ॥ १ ॥ जो प्राणी माया मिलै । सो मायाका रूप ॥ रज्जब राता रामसौं । सो निज तत्व अनूप ॥ २ ॥ ईष अफीमहिं दोयगुण । पाणी येकै आथि ॥ रज्जब गुण गति व्है गया । मिलि तोयं तिनि साथ ॥ ३ ॥ मन चंचल माया मिलै । निहचल लागैं नांहि ॥ जन रज्जब पाया परखि । देख्या दोन्यू ठायं ॥ ४ ॥ माया अग्नि समुद्र हरि । आतम बुद्धि विचार ॥ रज्जब रिधि पडतो पचन । हरिसंग आवै अपार ॥ ५ ॥ मनमैला मंदिर सुतन । तबलग है अपराध ॥ आतम अस्थल आवतै । निर्मल सुरति सु साध ॥ ६ ॥ रज्जब बसुधा विष बडों । अविगति ईख समान ॥ देखो गुणगति होत हैं । जीव जलजा मधि सान ॥ ७ ॥ आदि पुरुष आदित्यसो । जीवजल आवैं जोय ॥ रज्जब पैठै बपबनी । स्वाद सीरसम होय ॥ ८ ॥ तिमिर उजाला शून्यमें । जैसे निशदिन होय ॥ त्यू आतमा अचेत चेतना । रज्जब देखहु जोय ॥ ९ ॥ पंच तत्वसों मिसरत माया । छाणे ब्रह्म समान ॥ वो ओंकार जीव आतमा । बंध मुक्ति गति जान ॥ १० ॥ देख्या सुण्या सु बीज है । मनसा

मही मझार ॥ रज्जब उगैनींद जल्हि। फूलै फलै अपार ॥ ११ ॥ स्यंगा सुण्या जागै मदन । सुंदरि आवै चित ॥ रज्जब सूतूं दिन पडै । पीछै व्है विपरीत ॥ १२ ॥ रज्जब मन फूलै फलै। सुनि सुनि सरगुण बात ॥ निर्गुण सुणितों झडि पडै । डाल फूलफल पात ॥ १३ ॥ जहिं घटसर्गुण बीज व्है । तेहि निर्गुणन सुहाय ॥ रज्जब बरख्यूं बन बधै । जोय जवासा जाय ॥ १४ ॥ धरै अधर द्वै बातै ठाणी । जिनि ज्यूं सुणीसु बैठि बखाणी । रज्जब पशू भषैका जोय ॥ देखो बैठि उगालै सोय ॥ १५ ॥ सतगुरु शब्द सुनी बुवा । प्राण पटी तरवार ॥ जन रज्जब कसिली जिये। अंगहुं अंग विचार ॥ १६ ॥ रज्जब आभे अकलिके । बैंनबूंद बुद्धिवंत ॥ अंकुर उदै आतम अवनि । पषिर पोखै संत ॥ १७ ॥ साच मांहिं सतयुग बसै । कलि युग कपट मझार ॥ मनसा बाचा कर्मना । रज्जब कही विचार ॥ १८ ॥ जबलग भूखन नामकी । तबलग रोगी जान ॥ जन रज्जब या जीवकी । यहु पारिख पहिचान ॥ १९ ॥ ज्यों जहमतमें जीवकों । जल दल रुचैं न मांहि ॥ त्यूं रज्जब रोगी जुदा । सत संगति रुचि नांहिं ॥ २० ॥ नर नारायण नांवमें । सुमिरण समय साक्ष ॥ भूले भूत विभूतमें । रज्जब किया विभास ॥ २१ ॥ तितीवार माया मुक्त । नरहरि नांव समाय ॥ रज्जब छूटै लैलकस । लछीमें व्है जाय ॥ २२ ॥ रज्जब जाय जिकरि करै । तिती बार जीव जाग ॥ सुमिरण भूलै सास जिहिं । तवसूता पल लाग ॥ ॥ २३ ॥ नाम विसारण नींद निज । जप जागण चगदीश मनवच कर्म रज्जब कहै । खैंचत वेदहदीश ॥ २४ ॥ रज्जब रैणी आव लग । सुमिरण लागै सास ॥ नींदन भूला नांव हरि । जो

जाग्या निजदास ॥ २५ ॥ नाँव बिसारे नींद है । गृहवैराग्यसु हानि ॥ रज्जब रटैसु रैन दिन । सोई जाग्या जानि ॥ २६ ॥ सब सूते सुमिरण विमुख । जागेकी कहै बात ॥ रज्जब घोरै रैनिमें । कै सुपनें बरडात ॥ २७ ॥ साधहि शंकट नांदिया । परख्या पूरा प्राण ॥ ज्यूं ताव तोल सुलाकन लाग्या । खरा रुपया जाण ॥ २८ ॥

साखी २३१६ अंग ७५

गुप्त गोपीजीव प्रकट परीक्षा अंग ।

वारि बूंदमधि विभौधरी । नख सख रोमर छेद ॥ नकसन लहि येहि नीरमें । प्यंड पूरण सर्व भेद ॥ १ ॥ अंड मनोरथ बात विहंग । नारि नपुंसक निरखि नर अंग ॥ जैसें बीति मूंठिन मही । गोपीजन जाणी प्रकट सही ॥ २ ॥ उडग आतमहुं कौन पिछाणें । जैस खान सुरति सनेह ॥ रज्जब प्रकटयू पृथ्वी जाणें । तबन दुरैते बेहें ॥ ३ ॥ पराजु प्राणहुं सों परै । प्रस्य पसंती होय॥ बीचि विचारो मध्यमां । बोलि बैखरी सोय ॥ ४ ॥

प्रकाश परीक्षा अंग ।

दशों द्वारदह शिर सुमित । येक बात सब ठौर ॥ जीवकी उपजी जीभमें । बकतर बदैन और ॥ १ ॥ उरि उपज्यूं अहरघो उदै । समझो साखी शेष॥यूंही माया ब्रह्मरत । मो क्रितकेशहि केश ॥ २ ॥ पंचतार जंतर चढें । सोलह स्वर मृदंग ॥ सुर मंडल स्वर बहुत हैं । बाजत येकहि अंग ॥ ३ ॥ सुर मंडल सूरी रहै । सब-रग तारसु साज ॥ रज्जब रागसु येक है । जो जाणे सुनि वाज ॥ ॥ ४॥ पगर पांणी पलव चलहिं । जीव जिम्या इक राग ॥ रज्जब निरखहु निरमती । निरति कारीका माग ॥ ५ ॥

साखी २३२५ ।

अपारिखका अंग ।

परख विहूणां परहरै । परम पदीरथ मन्न ॥ जन रज्जब रीते रहे । त्यागि अमोलक धन्न ॥ १ ॥ विन पारिख आधै नहीं । कंचन काँच समान । रज्जब रोटी को रतन ॥ लखै सु लाभ निहान ॥२॥ महँगी सौं सौंहगी करी । सौंहगी महँगी होय । रज्जब रोस न कीजिये । पारिख नाहीं कोय ॥ ३ ॥ जै जग नांख्या मूरिखौं । तो कछु घट्या न मोल ॥ तैसे रज्जब साधगति । कहा खुशै जग बोल ॥ ४ ॥ थापै उथपै परख बिन । खोटा खरा सु नांहिं ॥ जन रज्जब ऐसे बणिज । हानि हुई घर मांहिं ॥५॥ खोटा खरा न जानिये । पारिख नांहीं मांहिं ॥ ज्यूं सुपने संपति विपति। उभै सत्य सो नांहिं ॥ ६ ॥ क्या कहणा सुनि कीरलिये । भोलै भूलि सु भाख ॥ रज्जब बूडे परख बिन । देखो देखत लाख ॥७॥ प्राण पचन व्है परख विन । करै अनीति अनंत ॥ रज्जब देखै दे सकल कूं । गिणे न संत असंत । ८ ॥ मूरख हरख्या हंसहत । पर कीरत हती न जाय ॥ त्यूं रज्जब साधू सुजस । रह्या सकल जग छाय ॥९॥ कनक थाल हरिनी सैलसुत । कीजै कहा बखान । मिसरिन उतरयों मोल तै । चढ्या न अरघि पखान ॥१०॥ परख विना प्राणी दुखी । ज्यूं अंधा बिन नैन ॥ रज्जब धक्के दसों दिशि । पगि पगि नाहीं चैन ॥ ११ ॥ ज्यूं गोरख गोदावरी । पुरखौ परख्या नांहिं ॥ जन रज्जब जाणे विना । कौंण हुई उन मांहिं । ॥ १२ ॥ तन मन सुर गुरु गोविंदा । पापूं पाये नांहिं ॥ रज्जब जीव न्यारा निकट । पारिख नाहीं मांहिं ॥ १३ ॥ कौडी कौडे बहुत न पावहिं । जै मुहरो में पैठी । मुहरन उतरी मोलतैं । कौ-

ज्या मांहैं बैठी ॥ १४ ॥ जाचंद न जानें रंगकी । कोटि भांति समझाय ॥ काळा पीला ऊजला । उन देख्या नहिं आय ॥१५॥ रज्जब जाने रंगकी । जो देखि हुवा है अंध । पैसो क्या बूझै बरण की । जो जनम्या जाचंध ॥ १६ ॥ पहप गौतली ताबिये । माथै महँदी मेल । रज्जब यहु गति जीवकी । बिन पारिखका खेल॥१७॥ तरु हरिहर नर शीशपर । पहप बिराजै दास ॥ सो कैसे पग चांपिये । रज्जब परम सुवास ॥१८॥ जलचर जाणें जळचरा । शशि देख्या जल मांहिं ॥ तैसें रज्जब साधुगति । मूरख समझै नांहिं ॥ ॥ १९ ॥ प्रति बिंब पिंडसूरज परि साधू । सलिल शक्तिके मांहिं॥ रज्जब वंधेहु जाल जळचर । त्यूं गहि येते नांहिं ॥ २० ॥ नर पंखी पंखी कहै । साधू सूरज जोय ॥ तौ रज्जब तिस भांणमें । पंखीकी गति कोय ॥ २१ ॥ साधु शब्द प्रति बिंबसम । सूनों शून्यन सूझ ॥ अकल अकाश अभ्यासही । कैब बारि जहां बूझ ॥ २२ ॥ परख बिनां पाखाणकूं । पूजैं पामर प्राण ॥ रज्जब खोटामां हिसों सोउर अंध अजान ॥ २३ ॥ रज्जब बिना गोविंद दश । परख बिना पति कोटि ॥ बिन जान्यूं जारहीं भजै । रज्जब मोटी खोडि ॥ २४ ॥

साखी २३४९ ।

अज्ञान कसौटीका अंग ।

अतिगति आतुर देखिये । नांव विमुख बहु दौर ॥ रज्जब भरम्या चाकज्यूं । अंति ठौरकी ठौर ॥१॥ रज्जब दौरे नांव बिन । चल्यूं चल्या सो नाहि ॥ मनसा बाचा कर्मना । रह्या भुवन गति मांहि ॥ २ ॥ नांव निरंजन छाडिकर । गहै कसौटी रूप ॥ जन रज्जब अहि निशि चलै । अंतर है रबि चकूप ॥ ३ ॥ बहुतै चलै

बिचार विन । ज्यूं घाणीका बैल ॥ जन रज्जब च्यारूं पहर । कटीकोस नाहिं गैल ॥ ४ ॥ कोटि कष्ट केवल सुजल । नांव सुधारस नीर ॥ हंस अंशले क्षीरका । समझि करहु सो सीर ॥ ५ ॥ अज्ञान कष्ट सब शक्तिमें । धिवसेवाहरि नाम ॥ ज्योंभृत भामिनी राजघरि । सुत संपति द्वै ठांव ॥ ६ ॥ कूकस कष्ट अज्ञान अगनि । नांव नाज कण अेन ॥ रज्जब भोजन भजन बिन । तुसहु सन्निपतिन चैन ॥ ७ ॥ अज्ञान कष्ट खोजे मिलै । आत्म अबलहिं आय ॥ पै रज्जब भरजन भरतार बिन । हरिसुत जण्यां न जाय ॥ ८ ॥ षट्कर्मी साधन करै । कर्म गलित नाहिं होय ॥ रज्जब सहज समाधि बिन । सीझया सुण्यान कोय ॥ ९ ॥ हठ अज्ञान न हरि मिलै । ज्ञान गलितजै नांहिं॥रज्जब कहीं बिचार कर । समझै समझो मांहिं ॥ १० ॥ गुरु गोबिंदर गऊ लगै । नांहि अराधे जांहिं॥रज्जब साधन संकटै । सोन मिलै महि मांहि॥ ॥ ११ ॥ समंदन सलितों पूंछई । सीप स्वाति दिश जात ॥ त्यूं शरीर नादयू निकस । सुमरन सुरतिक रात ॥१२॥ पशुपिंड सूई सुरत ! चरिगया चेले संग ॥ चंबक नांव शरीर श्रवण धरै । फोडिसु निकसै अंग ॥ १३ ॥ बसुधा बंबई बाडितै । व्यालहिं काढें नाद ॥ तौंतनतैं सुरति सु सुमिरन निकसै । और झूठबक्क बाद ॥ १५ ॥ अज्ञान अष्ट सूने सदन । नहीं नरहरि निरताय ॥ नाम धाम बसता सदा । सुमरयूं करी सहाय ॥ १५ ॥ सांई पैठा सांकडै । सुमरयों करी सहाय ॥ रज्जब रत रंकारयों । बिग हुन्य बंधी बाय ॥ १६ ॥ रज्जब भेरा नांवका । करहु निबंध्या सूलि ॥ ताबिन करहिं सु और कछू । भूंदू पडेसु भूलि ॥ १७ ॥ बीरज ब्रह्म विचार है । जोग जुगति प्रतिपाल॥ रज्जब थिर चंचल पवन। नांवनी रविन काल ॥ १८ ॥ तन मारै मननासुवा । देखो

भूतम सान ॥ अज्ञान कष्ट आतम सुयूं । जन रज्जब पहिचान ॥ ॥ १९ ॥ भूखौ मारि भुवंग तन । लिया अनील अहार ॥ रज्जब जोगी यहि जुगति । बध्यासु विष अहंकार॥ २० ॥

अरिल ।

अज्ञानी कसि देहन मनकूं मारि है ॥ ज्यूं संकट मधि श्रप । विषहि अधिकार है ॥ तैसै शठहठ देखिन कबहूं कीजिये ॥ परिहां रज्जब परखौं प्राण । प्रपंच नधीजिये ॥ २१ ॥ ग्यार सिरोजे ब्रतबंध । कणि कणि तिणका काल ॥ सो रज्जब क्यूं करहिगे । प्राणहुंकी प्रति पाल ॥ २२ ॥ जंत्र तार तत्व पंचतनि । रचि जंक्र सुर भौन॥ रज्जब तंति उतारि करि । राग बजावै कौन॥ ॥ २३ ॥ बाइ बिना बेहिथ थकित । त्यूं सुमिरन विनं सास॥ रज्जब रचनां रामकी । समझ विवेकी दास ॥ २४ ॥ पवन प्यंड पोरस गया । गिरडी चाटे बीर ॥ चाकी चूनन पी सिये । रज्जब रोकैं नीर ॥ २५ ॥ जलदल निगलै पौंनसौं । बाहर काढै पौंन ॥ तौ रज पैंडा पौनका । प्राणी बंधे कौन ॥ २६ ॥ गोरख ज्ञान अनंत अपार । मारुत बिना क्यूं करे बिचार ॥ प्राण प्रमोधे बाइ तोडी । निरखि नरेशानि नांण वै कोडी ॥२७॥ मोटी बाई वंदिये । यथा मसकमें पौन ॥ गुनह गार छूटे फिरै । कारिज सरै सो कौन॥२८॥बाई बंधहि बेगुनहिं । उलटि करैं बिकटंक ॥ गुनह गार छूटै फिरै । यूं लागै यम दंड ॥ २९ ॥ रज्जब अविगति नाथकूं । मिलैन बाई बंध । आंटा पडै तमी चव्है । कै कुष्टी है अंध ॥ ३० ॥ पौंन साध पार्णी उडहिं । तौ पंखी परि पेख ॥ बाई बंध लिहंगकूं । व्योंमन मिल्या अलेख ॥ ३१ ॥ करी पवनकी साधनां । नट भांडहुं भर पूरि ॥ रज्जब रीते रामबिन । वसत

रहीसो दूरि ॥ ३२ ॥ रज्जब अज्जब नाम ताजि। साधे सकल
रसास ॥ परम तत्व पावै नहीं। प्राणी जाय निराश ॥ ३३ ॥
साधन पूछै साधना। साध कहै समझाय ॥ जन रज्जब निजनांव
बिन। नर निरफल सो जाय ॥ ३४ ॥ रज्जब पौंन मांनैकै सा-
धिवै। मूंसेकी सीगोर ॥ सास शब्द शंकट पडे। नहीं ज्ञानकी
कौर ॥ ३५ ॥ चंदसूर पाणीं पवन। धरती अरु आकाश ॥
रज्जब अस्थिर देखिये। कहु किन साध्या सास ॥ ३६ ॥ सुमिरण
जाकी सुरतिमें। सो साधन सूधै नांहिं ॥ परम तत्व मनमें ब-
स्या। पचहिन पंचों मांहि ॥ ३७ ॥ सुकल सासकै बंधतैं।
सुरत बँधीता मांहिं ॥ ज्यूं रज्जब जल हेम करि। शीतसु न्यारा
नांहिं ॥२८ ॥ जीव जवारेकी अणी। बसत बूंदबय येक ॥
सुरति तिणें नहीं दोय सिर। रज्जब समझि विवेक ॥ ३९ ॥
अनल अंड ओले उडग। अरक यंद त्यूं मन्न। रज्जब रहै सु
ज्ञानगुरु। अनलन अट कहि जन्न ॥ ४० ॥ रज्जब वो ओंकारकै आ-
शिरै। तनमन पंचों तत्व ॥ काचे पाकैं शब्दमें। आदि अंतयहु
मत्त ॥ ४१ ॥ रज्जब प्रथम पंचका पेड है। ओओंकार सु आदि ॥
अजोसु सीझै सुर शबद। पौन साधिये वादि ॥ ४२ ॥ सकल
पसारा शब्दका। रहै शब्दही माँहिं ॥ जन रज्जब इस पेचाबिन।
तनमन बंधन नांहिं ॥ ४३ ॥ वो ओंकार आतम शब्द। कथा
नीति निर बरति ॥ रज्जब पंचों पीठिदे। यहुंत जीव पर बरति ॥
॥ ४४ ॥ रज्जब अटकै पंचमें। सोपर बरती ज्ञान ॥ निरख रती
न्यारा करै। ले जाय शुन्य अस्थान ॥ ४५ ॥ बयबाई बलि जीवकै।
आएन अबये जाँय ॥ तौ रज्जब ताजि भजनकूं। उलझिन साधन
माँहि ॥ ४६ ॥ बयबाई बलि जीवकै। बंधेन खुलसी भूलि ॥ तौ रज्जब
हित आवकै। साधन कराहि सो भूलि ॥ ४७ ॥ आज्ञा वस

बाई बहैं । ब्रह्म पिंडके पौन ॥ रज्जब राखै रामजब । तबसु चलावैं कौन ॥ ४८ ॥ रज्जब शून्य रूपी जीवमें जड्या । पवन रूप गुरु देव ॥ यहु गुप्ति गांठ देखो लिबा । भूतन जानें भेव ॥ ॥ ४९ ॥ रज्जब मारुत रोकिबा । अब प्रपंच उपाय ॥ बाबा खोलै बाय बय । तब सुनबंधी जाय ॥ ५० ॥ नादन छोडै नाभिकूं । व्यंद सकल बय मांय ॥ कौन चढावै कहांकूं । सूरज समझै नाँहिं ॥ ५१ ॥ नाद व्यंद नखसख भरया । ज्यूं काष्टमें आगि ॥ कौन चढावै कहांकूं । सोध्या शीशपर पाग ॥ ५२ ॥ मदन बीज मस्तक रहै । कहींन ठाहर और ॥ तौ रज्जब सुत अंगमें । क्यूं निपजै सब ठौर ॥ ५३ ॥ बीरज बीबा चित्रका । अरभक अंबर भासि ॥ रज्जब उनमें नकस है । प्रकटै सोही क्रांति ॥ ५४ ॥ किस नाडीमें बसत है । किस नाडीमें नांहिं ॥ रोम रोममें रमि रह्या । रज्जब नख सख माहिं ॥ ५५ ॥ सुर मंडलसु शरीर यहु । रज्जब रग सबतार ॥ रभै रागमें एक व्है । माया ब्रह्म विचार ॥ ५६ ॥ काया तरुवर नीबका । जीवजल जुगति सु मांहि ॥ रज्जब रग डातल्यूं फिरयूं । निर्मल मीठे नाहि ॥ ५७ ॥ बपुब सुधा बन राइतें । आतम अंभ निकाश ॥ रज्जब सुमिरण सूरसूं । स्वाद रूप गुणनाश ॥ ५८ ॥ सर वरसूं सूकै कमल। उलझिन भौन रामन ॥ साधन परै बताइया । नांव निरंतर धन्य ॥ ५९ ॥ नाडी चक्रसु पिंडमें । प्राण मध्य नहिं सोध ॥ रज्जब जाणां जीव परै । यहगहि उत्तम बोध ॥ ६० ॥ दार देहमें चक्ररग । पावक प्राणसु नांहिं॥रज्जब राह तिनहुं परै । साधू सुरतिसु जाहि ॥ ६१ ॥ चक्रहुं चित अटकै नही । खोडि सहित षट् स्थान ॥ रज्जब रज व्है जांहिंगे । मनउन मनलै सान ॥ ॥ ६२ ॥ आंख्यूं अंजन बाहिया । सतगुरु, सोधि विचार ॥

भरमन भासै साधकूं। सूमरचा नाव अधार ॥६३॥ धोखे धुनि मुनि छोडकर । सोधै नाडी चक्र ॥ रज्जब भूले नांव निधि। टलतौं खाइ टक्र ॥ ६४ ॥ चक्रभँ वर जीवजल पडहिं। देही सलिता थान ॥ रज्जब उभैन भासहीं। पैठै भजनसूं भान ॥ ॥ ६५ ॥ काया कोठे कँवल रग । चक्र शोधमन मान ॥ रज्जब रहसी क्यूं तहा । चहांन ये अस्थान ॥ ६६ ॥ नाडी चक्रन सास मन। ब्रह्मंड पिड नहिं ठौर ॥ जन रज्जब जुगि जुगि रहै। सोठाहर कोई और॥६७॥अहिनिशि मन उन मनमें राखी। नाडी चक्र साखि सुनि राखी ॥ साधु वेद सुमिरण कहैं सार। रज्जब रटै सो उतरै पार ॥ ६८ ॥ साधन सूनें साधना। आतम व्है अनि आश॥ जन रज्जब ताजीवके। नांइ नहीं बे सास ॥ ६९॥ निहचा नांहीं नांव परि । जै कष्ट आदरहि और॥ सूंनां साधन-में परचां। लहैन ठांवीं ठौर ॥ ७० ॥ देही देशोंमें पडचा । करम कुलखण काल॥ नांव नाज नरघर नहीं। प्राणहुंकी प्रतिपाल॥ ॥ ७१ ॥ कपट कसौटी ठग विद्या । आयै भरी उपाधि ॥ कायर सूरा सूंम ठग । भ्रमि भ्रमि काया साधि ॥७२ ॥ अज्ञान कसोटी कोटि विधि। काया कसहि अनैक॥ रज्जब निपजै साधमन । सो समझै कोइ येक॥ ७३ ॥ कष्ट करामाति पाइये। संकट उपजै सिध॥ तपतें राजा होत है । नरक जाणकी विध॥ ७४ ॥ रज्जब शठहठ छा डिदे। कारिन कामना कष्ट ॥ न्याव नीति मधि-पां वदे । नष्ट मसीतजिनष्ट ॥ ७० ॥ हठकारि मांगैं हरि-कनें । दाता दुष्टहिं देय ॥ पैं स्वादन उपजै बादपरि। क्याली येमें लेय ॥ ७६ ॥

सेवा निषफलका अंग ।

शक्ति सलिल बहु विधिखरचि । सांई सूरसुलेय॥नांइ अरथि और लगे । सोपलटा नहिं देय॥१॥सप्त बार अठ सह सहित । पुजि प्रब देई देव ॥ सब पूजा प्रभुकूं चढै । सेतग निरफल सेव ॥२॥ रज्जब भाव न भोमिसों । पै धन धरतीखाय । यूं अनहित थितिलेय प्रभु । जीव जड निष्फल जाय ॥ ३ ॥ जड पातरूं परूसिये । देखो चेतनिखाय ॥ त्यूं बासन ब्रह्मंडकै । बाबा लेय उठाय ॥४॥ भाव अभाव गराई गोविंदे । आगै सुरविधि छान । समझि भोल भूल हरि भासें । दाता दे त्यूं दान॥५॥रज्जब सन्मुख विसुरवकी । शक्ति सृष्टि धरि लेय ॥ विलोकि विभिषण रावणहिं । देखो क्या क्या देहिं ॥ ६ ॥ निरप डही नौखंड पारि । जांहिं सुसूर समंद ॥ सगुण सेय निर्गुण मिलहिं । अइया सुरूम बंध॥७॥सब दिशिशी शनवाइये । मस्तक मांटी मेलि ॥ त्यूं धोक धरेकी अधराहि लागे। रज्जब अज्जब खोलि॥८॥तुपक तीर दस दिशि चलहिं।पडहिंघु पृथ्वी जाय॥त्यूं रज्जब ध्यावहिं धरे । पूजा अधर समाय॥९॥ रज्जब भाव बिना भगवंत में । चौरासी लखजंत॥सर्वसले सर्वसें जुदा । अलग सेलग सु अनंत ॥ १० ॥ रज्जब कोई नां करै । धोम व्योम कै वाय ॥ पै अग्नी तेज अकाश कूं । सहज आपही जाय ॥ ११ ॥

गर्भ सिद्धांतका अंग

अहीर ओडि आकार कै । भोजन भजन अहार । पुष्टि प्रति पगि पति लगैं । तामें फेरन सार ॥१॥ रज्जब लगै पन्यंग पगि । नख सख पीडा प्राण ॥ तौ सुमिरण की साँईयां । समझै क्योंन सुजान ॥ २ ॥ आतम कँवल कमोदिनी । शशि सूरज करतार ॥ बिचि बाद लौंसों नां बंधै । प्रीति प्रीतम हुं पार॥ ३ ॥ सप्त खणों

मधि शुन्य एक । त्यूं ब्रह्मंड इकीस ॥ खंण्ड दुखण्ड न शुन्य-के । रज्जब बिस्वा बीस ॥ ४ ॥ जब लग जीव देखैं नहीं । चैतन ब्रह्म बदन । तौ रज्जब क्या कीजिये । सूने शुन्य सदन ॥ ५ ॥ तली हथेली केश घर । सूने सदन अपार । बिलोकि बाल देखे सुकिन । त्यूं बहु शुन्य विचार ॥६॥ रज्जब करुणा कुंजके । अलग सलग भये अंड ॥ तौ संत सुरति साँई बिनां । अटकै किस ब्रह्मंड ॥७॥ शुन्य शरीर न सुरतिमें । पंच तत्व सौं पीठि ॥ लोकहुं अवलोकै नहीं । परम तत्व पर दीठ ॥ ८ ॥

साखी २५४४

उपदेश चिंतावणीका अंग ।

रज्जबकी जै बंदगी । जेती जीव सूं होय । जो साहिब सौंपी नहीं । तासौं बल नहिं कोय ॥१॥ मिनखा देही दिन उदै । जन रज्जब भजि तात । चौरासी लखि जीवकी । देही दीर घरात ॥२॥ बित ऊपर बीती पडी । नर नारायण देह ॥ जन रज्जब जगदीश भज । जन्म सुफल करि लेय ॥ ३ ॥ रे प्राणी पासा पडया । मिनखा देही मांहिं ॥ जन रज्जब जगदीश भज । अय ओसर भी नांहिं ॥ ४ ॥ आदम सेती औलिया । नर नारायण होय ॥ मुक्ति द्वार मिनखा जनम । रज्जब वा दिन खोय ॥ ५ ॥ हरि सुमिरन की ठोर यहु । मनिखा देही मांय ॥ सो ठाहर सौंपी तुझै । रज्जब समझे नांहिं ॥६॥ इन्द्री दमि सुमिरण करै । यहु सम दम सुध माग ॥ जन रज्जब जो जीव चलै । ताके मोटे भाग ॥७॥ शरीर सुसाचा मैण मति । ब्रह्म अगनि औटावहु धात ॥ जार दुगारौगाभा ज्ञान । मूरति उपजै पद निर्बान॥८॥दया न दीसै

दृष्टिमें। देह दयाका मूल ॥ रज्जब सुमिरण सारिखा। अज्जब बण्या अस्थूल ॥ ९ ॥ सकल भजनकी ठौर है। मिना खादेही माहि ॥ रज्जब जीव जाणें नहीं। कहै दया कछु नाँहिं ॥ १० ॥ मनिखा देही मौजदी। सत जत सुमिरण काज ॥ रज्जब मारिन मांजरै। सौंजदईसिरताज ॥ ११ ॥ चौरासी सौं काढिकर। जब दी मिनखा देह ॥ राम कछु राख्या नहीं। रज्जब समझि सनेह ॥१२॥ देणा था सो सब दिया। जब दीमिनखा देह॥तब सुक्रितकी सौंजयहुं। हरि सुमिरण करि लेह ॥ १३ ॥ सत जत सुमिरण कौं दई। मिनखा देही जान ॥ जन रज्जब जग जोनि बहु। परि इनतिहु थोकूं हानि ॥ १४ ॥ रज्जब नरहरि मिलणकूं। मिनखा देही ठोर ॥ चौरासी तन चाहि हूं। ऐसी मिलै न और ॥ १५ ॥ सांई अपणी सौंजकूं। किया आदमठाल ॥ रज्जब जीव जाणें नहीं। भूला निपट निराल ॥ १६ ॥ इक नेकी अल नांव कूं। नर नारायण कौन ॥ सो हरि हित समझै नही। तौ रज्जब मति हीन ॥ १७ ॥ जन रज्जब जग आइ जिय। लहि आदम औलाद ॥ सत जत सुमिरण भूल हूं। जन मग माया बाद॥१८॥ मिनखा देह अलभ्य धन। जामें भजन मंडाण॥सौ सुदृष्टि समझै नहीं। मानुख मुगध गंवार ॥१९॥ एक अलिफ कौं यहु किया। आदमका औ जूद॥रज्जब समझो यहु सुखन। मालिक हैं मौ जूद ॥ २० रज्जब इस ओ जूद में। सैंन सुलग है सौख ॥ सब सूरति सुबि हानकूं। तहां नहीं पड जौख ॥२१॥ रज्जब इस औ जूदमें। इसकइलम मांमूर ॥ आसिक सूं अस नांव है। फासिक सौं सब दूर ॥२२॥ रज्जब रीताहु नहीं। गुरु गोविंद सुमाँहिं ॥ अखै अभै भंडारकूं। काहे विलसै नाँहिं ॥२३॥ मनिष देह माया ब्रह्म। जै कोई लेय कमाय ॥ यहु दीक्षा उपदेश यहु। आगै कह्या न जाय

॥२४॥ बिरचैबसुधा बंदि तैं। मुकति मध्य परवेश॥ यहु दीक्षा दुत्रत्रिण। यहु अंतिम उपदेश ॥ २५ ॥ तन धन ल्याया जन्म तैं। मरत गया सों खोय। सुक्रित मालम मधि किया। जो आ-गैकूं होय ॥२६॥ प्राण पांणि पूजीसु पिंड। मूलसु मिनरवा देह॥ रज्जब सौदा राम सूं। यहि औसर करि लेय ॥२७॥ आदम देह अलभ्य धन। पाई पूरण भाग॥ तौ रज्जब भगवंत भज। हरि सुमिरण लौ लागि॥२८॥रज्जब रतन हूं सौं भरी। मान हुं मनिषा देह ॥ रे नर निरधन होयगा। चोरासीके गेह॥२९॥मानिषा जन्म राम बिन हारा। मान हुं पारस पीसि पहुमिपरि डॉरा ॥ सेवा सोना तिनहु न होय। या सम हानि नहीं कलि कोय॥३०॥हीरा लाल मनिष तन देहा। पिसण पीसि करि डारैखेहा। वहमांटी नांही वहगोला। रज्जब चेतनि देखै भोला ॥३१॥ काम धेनु कल्प तरु जाना। मिनखा देही नांहिं समाना॥ सब स्या बाति सबहीं सब पावै। रज्जब विन सै सोनलखावै ॥३२॥ पारस पोर सकल पत्र। कामहु धेनु कहात॥ मनुष्य देह माधो मिलत। सुमाहिमांक हीन जात॥ ३३ ॥ मनुष्य देह माया मइ। धरया अधर बिच धन॥ इहि छूटयूं छूटै उभै। समझै समझै जन्म ॥ ३४ ॥ काया कागद पर लिखै। ब्रह्म बिलायत मांहि ॥ रज्जब पिंड पटे पडयूं। दरस दिसावर नांहिं॥३५॥ हांनि न मिनखा देह सम। जब जीवकने सू जाय। भजन बिमुख भंजन मिलहिं। चौरासी निरताय ॥३६॥दरिद्र दिवाला जीव अनंत। मनिषा देही जात॥चौरासी जामण मरण! चहुंदि शिचेटें खात॥ ३७ ॥ रज्जब अज्जब साज यहु। अज्जब सेती लाय॥ मनुष्य देह यहु मौज महा निधि। नर देखो निरताय ॥ ३८ ॥ तन मन ज्वा ब्रजीवकी। सकति न सकता खोय॥जिसकी तिसकूं दीजिये। तौ पल स्याबतिहोय॥३९॥

मनिष देह मिग हरी तज्या । कायरजीव निरताप॥स्याम काम आया नहीं । ऊन मिलो तोहि आय॥४०॥रज्जब तजि ब्रह्मंड कूं । पिंडहिं दीजे पीठि ॥ मन मनसा सों काढि कर । आगै धरिये दीठ ॥४१॥रज्जब छाडहुं स्वाद सुख । तनकी यारी लाग ॥ मनह मनोरथ मेटिकर । परम पुरुष सों लाग ॥ ४२ ॥ रज्जब बिरचहु रूप रंग । रहुन बपु शरीर ॥ मनकी मेटहु कामना॥ पहुंचूं पैली तीर ॥ ४३ ॥ रज्जब त्यागहु त्रिगुण यूं । तिहूं ठौरसों सोधि ॥ माया काया कल्पनां । निकसै प्राण प्रमोधि ॥ ४४ ॥ तनतें त्यागहु त्रिगुणता । मनहूं मनोरथ मेटि ॥ रज्जब जीव ब्रत छाडिकर । प्रथम पुरुषकौ भेंटि ॥.४५॥ ब्रह्मंड पिंड मनमां झतै । काढण सुरति विषम ॥ आतम परै अलाह है । मेलि यहां नहि जम ॥४६॥ ब्रह्मंड पिंड उलझै नहीं । रहैन सूखि मदेश ॥ रज्जब नरनिरगुण भया । निरगुणमें पर वेश ॥ ४७ ॥ रज्जब निजब पिबांय दइ । तब रिधि रस नहिं मीठि ॥ जन रज्जब मनक्रमं बचन । प्राणी प्रत्यक्ष दीठि ॥ ४८ ॥ पडदे बिचि पडदा करै । तिसहिन पडदा कोय ॥ जन रज्जब जबदीशका । दरशन देखै सोय ॥ ४९ ॥ हरि सीधी हरनां कहै । सोई प्राण प्रसिद्ध ॥ रज्जब मुकता नीपजै । जैसी परहित जलनिधि ॥ ५० ॥ ब्रह्मंड पिंड टलिनीकसै । मन इंद्री तजि जाय ॥ तौ रज्जब ताजीबकूं । आगै मिलै खुदाय ॥ ५१ ॥ पिंड प्राण आगै धरै । भावसु पाव अगम ॥ रज्जब सुरति समाय सुख।जहांन जोरा जम॥५२॥ब्रह्मंड पिंड प्राणी तजहुं । अगम अगोचर खेल ॥ रज्जब येहै शुन्य घर । सुरति सु सांई मेल ॥ ५३ ॥ बयसौं बिरकत होतही । तब त्यागै ब्रह्मंड ॥ रज्जब इसही उलघतैं । लांघी माया मंड ॥ ५४ ॥ तन त्यागै प्राकृति तजी । मनहुं मनोरथ मेटि ॥ रज्जब जीवन जीव

बुद्धि। आगै अविगति भेंटि ॥ ५५ ॥ तनमन आतम सूं अग-
म। सेवा सुरति सु जाय ॥ भक्ति वंदगी करितहां। सुखमें
रहै समाय ॥ ५६ ॥ संसार शरीर सखिमतनों। चौथै त्यागै
जीव ॥ चतुरथ नितजि आगै रमई। सुरति सु पावै पीव ॥५७॥
तनमन इन्द्रि उग्र हैं। आतम आगै जाय ॥ जन रज्जब सोई
सुरति। सुखमें रहै समाय ॥ ५८ ॥ मिलै नहीं मंडाण सूं ॥ तन-
मन न्यारा होय ॥ जन रज्जब इस पेचकूं। बूझै बिरला कोय ॥
॥ ५९ ॥ ब्रह्मंड पिंड न्यारा रहै। पंच तत्व सों प्रीति ॥ रज्जब
पाया पंथ प्राणनें। परम तत्व पर दीति॥६०॥ रज्जब हसती मन
चलै। चलहु ब्रह्मदर बार ॥ मुजरै ढीलन कीजिये।समया समझि
विचार ॥ ६१ ॥ रज्जब दिलके तखतसूं। और उतारौ आन ॥
मनसा वाचा कर्मना। ज्यूं बैठै दीवान ॥ ६२ ॥ येकन पावै एक
बिन। तूंव्है रह्या अनेक ॥ जग त्यागे जगपति मिलै। रज्जब
समझि विवेक ॥ ६३ ॥ अनेकों येकै कही। वेत्ता बारंबार ॥
रज्जब चाहै लछि बरै। तौलछीत सकार ॥ ६४ ॥ येकहिं मिलै सु
येक व्है। त्यूं मिलि सातहुं सात ॥ अजों पंच व्है छाडिदे। ज्यूं
रसि आवै बात ॥ ६५ ॥ ब्रह्म ब्रह्मं डोंदो षदे। बंदों सों करै
राग ॥ यहुतन तजैन तृण कुटी। तौ आदम बडे अभाग ॥
॥ ६६ ॥ निकसे काया काठ सौं। बंदे बादल होय ॥ रज्जब
पाया तो तिनहुं। सुंनिसुधारस सोय ॥ ६७ ॥ रज्जब रचिये
राममों। तो तजिये संसार ॥ देखो तरुफल नांल हैं। बिना भये
पतझार ॥ ६८ ॥ जगतजिमिजनकन उदैं। इनमें इनकी ओधि
जन रज्जव सीझण समैं। कुलि काढिये सु सोध ॥ ६९ ॥ रज्जब
तनमन मांहके। तजिकुसंग भज राम ॥ यहु दख्या उपदेश
यहु। सरैसु आतम काम ॥ ७० ॥ रज्जब अज्जब यहु मता।

तजि विषिया भजि राम ॥ यहु दख्या उपदेश यहु। सरै सु आतम काम ॥ ७१ ॥ रज्जब निरविष सुरति करि। सांई सन्मुख राखि ॥ सीझणमें सांसा नहीं । सतगुरु साधू साखि ॥ ७२ ॥ अंब अवनि आका शतैं। निकस्यूं करै सुकाल॥ येदोनों तत्व-मांहि मरहिं जब । रज्जब प्रत्यक्ष काल ॥ ७३ ॥ शरीर सैल अरु समंद तलि। जीव धातनग चंग ॥ काटिकैद करि धनपति। नहीं रादाछिद संग ॥ ७४ ॥ व्यौम बिरछ अहनि असम। आ-तम अगानि अपार॥ रज्जब पंचती प्रकटे पावक। तबही व्है उ जियार ॥ ७५ ॥ घटघडियालरझालरि सुरगे। शंख शब्द सह नाय॥ षट बाजे षटदर्शी नहुं। यती प्रभात बताय॥ ७६ ॥ पैडी पंच तीनपर पैडी । सप्तै अष्ट सिवांण ॥ रज्जब चढै सु कोठि में। ऊंचा अगम दिवाण ॥ ७७॥ जन रज्जब पंचों धजा। चढेसु मेरु सिर बाध ॥ सिद्ध साधक देखैं सबै। कोई साधु आरा धि ॥ ७८ ॥ तनमन ऊपरि अमल करि । बैरी पंचम जाय ॥ रज्जब शक्ति सुमेर सिर। नाम निशान बजाय॥७९॥रज्जव सतगुरु सैलतें। शब्द सिला आवंत ॥ मन समुद्र सिरिपाज करि। रोम रावन नहिं हंत ॥८०॥ शब्द सिला रंकार जटि। मन समुद्र सिरि पाज ॥ रज्जब रावन रोम हति। काया कंचनी राज ॥८१॥ आतम रथ है रामको। आतमकारथ देह ॥ येरथ देखहुं सागडी। परम सयानप येह ॥ ८२ ॥ जैसी संतति शकति सूं। तैसी शिव सों होय॥ तौ रज्जब रामहिं मिलै। कदेन दीसै दोय॥ ॥ ८३ ॥ जैसे मन माया मिलैं। जीव ब्रह्मयूं मेल ॥ रज्जब बहु रिन पाइये। यहु औसरयूं खेल॥८४॥रज्जब मनरमनोंरथों। मेला अचल अभंग ॥ ऐसे आतम राम हित।सदा सु सांई संग॥८५॥ रज्जब आभे अंत्रका । देखो शुन्य सनेह ॥ अैसें आतम रामसूं।

सीख्या दख्या येह ॥८६॥ ज्यूं जलदल सूं जीवका। अतिगति मंत्रा चार ॥ त्यूं रज्जब करि रामसूं। सरैं सीख निज सार॥८७॥ ज्यूं कामी कामण भजै। त्यूं निहकामी राम। मन बंछित फल नींपजै। जन रज्जब यहि धाम ॥ ८८ ॥ मन पवन शशी सूरकूं। राहु केतु व्है लाग। रज्जब पकड नपेच यहु। सुनिले सीख सभाग ॥८८॥ रज्जब राहु अरु केतु व्है। रवि राकेशहिं लाग। आतम उड गस्यु उड रहे। मस्तक आया भाग ॥ ९० ॥ रज्जब चलिये राह उस। जेहिं पंथी पहुंचे साध। निज मत मघ उडि गवन करि। जे है बुधि अगाध॥९१॥रज्जब रीझ्या ठौरकहि। जहां जगतकी मीच॥चेति चमकहि चालहि नहिं। बैठि रह्या क्यूं नीच ॥९२॥ रज्जब मरणा सुंह आगै खडा। बूढेकों तब सेख। अबतो सों कहु क्या कहें। रे आंधा कछु देख॥९३॥काया कुंभ जलसों भरया। ज्ञान तेल परिपूर। मारुत बाती शब्द उजाला। अचेत तिमिर व्है दूर ॥९४॥ दशों दिशा मन फेर करि। जहां उठै तहां राखि। जन रज्जब जगपति मिलै। सत गुरु साधू साखि ॥९५॥ जाहि जाहिगै सोंमनउदै। तहां असत करि वंधि॥ रज्जब रहिये रामसों। मन उन मनिलै संधि॥९६॥ जैसे छाया कूपकी। फिरि घिरि निकसै नांहिं। जन रज्जब यूं राखिये। मन मनसा हरिमांहि ॥९७॥ रज्जब सब गुण सारिवये। जै मनराध्याणोर ॥ ९७ ॥ मनव चक्रमसी झ्यासही। जै उरि उठैन और॥९८॥मनसा चकमक चिन गज्यूं। उठत बुझाये सुख। जन रज्जब प्रकटयूं पिछै। बहुत दिखावै दुःख॥९९॥ पावक यहि प्रचंड है। बैरी बन बयमांहिं ॥ सो रज्जब सूते भले। जागे कुशल सु नांहिं ॥ १०० ॥ सुमिरन करै सं बाहिमन। तन हिन सरकण देय। रज्जब अज्जब काम यहूं। जन्म सुफल करि लेह ॥ १०१ ॥ श्रवणनयन नासिके

करि पाही । पंच दूण मत येक समाई । मिलि चलणोंका होय सनेह । तौ यह सीख इन हुकन लेह॥१०२॥ अंधों कन उपदेश ले। पार्थ पीवकै आव । रज्जब डग मग सोधि करि । पीछे धरै सुपाव ॥ १०३ ॥ साध सबूरी स्वानकी । ली जै करि सु-विवेक ॥ वै घर बैठा येक कै। तूं घर घर फिर हि अनेक ॥१०४॥ स्वान सबूरी अति भली । आदम घर अख्त्यार ॥ मिनरव तजि मालिक महल । मांगै मुलक अपार ॥ १०५ ॥ रज्जब अहिं अहरचूं उभै ! देखो दे उपदेश ॥ मो मति गति गहि करि करो । गुरु गृह शिष्य प्रवेश ॥१०६॥ देख्या मुँह मुँहडे कीलार । रज्जब इुंमीह श्रप विचार । त्यूं सत गुरु शिष्य येकशरीर ॥ पैचे तनि जट व्योरा बहुबीर ॥ १०७ ॥ मुरीद मुरदा परिरग साल । गुफत मबु जरग अजब मिशाल ॥ १०८ ॥ रज्जब काढो शुन्य सत । पीवै प्राण प्रवीण । इहि औषधि आरोग्य व्है । नरवसरवरोगसु भीन ॥१०९॥ श्रवणों बानी रसनरटि । नैनौं निज अंग सोधि । नास बास हरि पद कवल । रज्जब निज प्रमोध ॥ ११० ॥ साबुण सु-मिरण जल सत संग । सुकल कृत करि निर्मल अंग ॥ रज्जब रज उतरै इहि रूप।आतम अंबर होइ अनूप ॥ १११ ॥ अघ सागर अनीति अंभमें।आतम अंतर भीन । सो सुकाइ सविता सुमिरण सों । पाणी पाप सुछीन ॥ ११२ ॥ प्राण पिंड तत्व पंचका । मन मनसामल धोय । नांव नीरजल ज्ञानकै । गृह सब पावन होय ॥ ११३ ॥ पहिले तन करि बंदगी । पीछै मन गहि मूल । रज्जब राचै रामसे । जैसें सुरज फूल ॥ ११४ ॥ सप्त समंदों जोतिरै । सोतिरु संसार ॥ रज्जब अज्जब काम यहु । प्राण सुरिस व्है पार ॥ ११५ ॥ रज्जबकूं अज्जब कह्या । मेरे नांइ सु लागि । सकल पसारा झूठहै । मनब चक्रम तजि भागि ॥ ११६ ॥ रज्जब अज्जब

यहु मता। सब तजि भजिये राम। सिध साधक संसारमें। सब सीझे इस काम ॥ ११७ ॥ रज्जब रटिये रैंन दिन। राम नाम इक तार ॥ फिर पिछे पछितांहुगे। यहु औसर यहु बार ॥ ११८ ॥ रज्जब अज्जब काम है। सिर साँई कूं देहु। मिनषा जन्म सुमौंजनिज। बहु रिन औसर येहु ॥ ११९ ॥ यहि औसर सांण यहु। सतजत सुमिरण होय ॥ सो रज्जब जुग जुग सुखी। तासम औरन कोय ॥ १२० ॥ अबकै जीते जीत है। अबकै हारे हार ॥ तौ रज्जब रामहिं भजो। अल्प आयु दिन चार ॥ १२१ ॥ अल्प आयुबहु विघ्न बिचि। अतिगति अहम कमन्न ॥ रज्जब अज्जब यह समों। करै सुकृती धन्न ॥ १२२ ॥ आदमकै सिरकर धरया। अविगति करणा याद ॥ इसकायायहु कामना। नहीतो निरफल बाद ॥१२३॥ रज्जब रोवहुरैन दिन। कीजै तौवह त्राहि ॥ राम बिसारण रोगकूं। औषधि यूंहि आहि- ॥ १२४ ॥ राम विसारण रोग जीव। औषधि करणा याद ॥ रज्जब वैद्य बतायदी। देखिर दीज्यो दादि ॥ १२५ ॥ रज्जब कुदराति देखि खुदायकी ॥ खालिक किये यादि। सास शब्द लागे रहैं॥जनमन जाई बादि॥१२६॥रज्जब अंज्जब अकलि यहु। सो साहिबकी यादि। सो साहिब बिसार तूं। बिबिध बुद्धिको बादि॥१२७॥ माया तजि ब्रह्महि भजै। येतेको सब ज्ञान। रज्जब मूरख चतुर व्है। मनउन मनलै सान ॥१२८॥ मनवच क्रमतिर शुद्ध व्है। मायातजि भाजिराम। जन रज्जब संसारमै। एताही है काम ॥ १२९ ॥ रज्जब भजिये रामकूं। तजिये कामरु क्रोध॥ निर्मलकूं निर्मल मिलै। योंही निज प्रमोध ॥ १३० ॥ औषधि अविगति नामले। पथ्य प्रहरै बिकार॥रज्जब जोगी यहि जुगति। काटै रोग अपार ॥ १३१ ॥ रज्जब भजिये रामकूं। तजिये यहु

संसार ॥ ऐसी बिधि कारज सरै । भेटै सिरजन हार ॥ १३२ ॥ चिति चेतन व्है देखिमन । मिनखा जनमन हार ॥ जन रज्जब जगदीश भजि । उल्टा अनलवि चार ॥ १३५ ॥ कपट करहु सोंडारि दै । नेकी निरमल साहि ॥ रज्जब दुबिधा दूरकरि । हाथ हरीकूं बाहि ॥ १३५ ॥ भांति भांतिका गर्व तजि । गुरुमुख होहि गरीब ॥ रज्जब पावै पीरकूं । निर्मल नेकनसीब ॥ ॥ १३६ ॥ तन त्रिभुवन मनमैं भरया । सो काढै सब छान ॥ रज्जब राखै राम तहां । काम किया तहि मान ॥ १३७ ॥ भज नेकूं भगवंत है । तजणेंकूं प्रणात ॥ करणेंकूं उपकार करि । इहि औसर इहि गाति ॥ १३८ ॥ मनुष्य देह माया सहित । पाई पूरण भाग ॥ तौ रज्जब गुरु साधुकी । सेवा दृढ करि लाग ॥ ॥१३९॥ सेवक कन सेवा शक्ति । घर आए गुरुसाधु ॥ सुसमय सुकृत लेहु करि । जैहै बुद्धि अगाध ॥ १४१ ॥ रज्जब दोसत जीवके । साँइ मतगुरु साधु ॥ यहु सीख सुणि सेयसौ । जैहै बुद्धि अगाध ॥ १४२ ॥ हरि भजतूं तजतूं विषय । करतूं साधू सेव ॥ रज्जब यहि रहै चालतूं । मिनष सों व्है देव ॥ १४३ ॥ गुरु गोविंदरु साधुकी । होय चरन रज रैन ॥ मनबच क्रमका रज सरैं । सुनि रज्जब निजवैं न ॥ १४४ ॥ रज्जब रज होय संतकी । जासुख निकसै राम । साधू सेती मिली रहो । तौ सरसी सब काम ॥ १४५ ॥ रज्जब रहिये रजामें । साधु शब्द सिर धार ॥ मनबच क्रम कारज सरैं ॥ कदेन आवै हार ॥ ॥ १४६ ॥ दास दयामे देवके । बाणी बंवसु होय । रज्जब बाजे हरि हुकम । भूल पडो मत कोय॥१४७॥मनउन मन लागा रहै माया मध्यन जाय । ब्रह्म अग्निमें जारै बीजहीं । बहुरि उगै नहि आय ॥ १४८ ॥ रज्जब राखै मीचमन । हरिकूं भूलै नाँहिं ।

यहु दख्या उपदेश यहु ॥ माधोके मत माँहिं ॥ १४९ ॥ राग करोहु रंकार सों । अलिफ अराधों मन्न ॥ रे रज्जब संसारमें । औरन ए साधन्न ॥ १५० ॥ बहु विद्यारु विभूति बहु । बहु सुंदरसु कुलीन ॥ रज्जब चहुमें चूक यहु । सुमिरण सुकृत हीन ॥ १५१ ॥ विभूति भूतबहु विध बध्या । चहु चक्र वैराज ॥ भजन विमुख विद्या सबै । सो रज्जब केहि काज ॥ १५२ ॥ बुद्धि विद्यारु विभूति बहु । हैंगै हेम अपार ॥ जन रज्जब वे काम सब । जै भजैन सिरजन हार ॥ १५३ ॥ रज्जब रिधि जीवकूं दई । राम रहम करि राग ॥ पद्दा लहे परि पीठिदे । मस्तक बडे अभाग ॥१५४॥ रज्जब उल्लु आदमी । रारि मई रिधि जान ॥ प्रकट प्रभाकर पुनि दिशि । जै पलकनें खोलै प्राण ॥ १५५ ॥ रोग रहित मिनखाजनम । हरि सिधि घरि ठाठ ॥ तापर रामन सुमिरिये । तौ रज्जब भूलानि राठ ॥ १५६ ॥ चित्रांम सकल बाजी चिहर । भोला देखिन भूल ॥ बिचि बाजीगर सत्य है । सो पकडी मन भूल ॥ १५७ ॥ यह ठग बाजी ठगकी । ठग्या सकल संसार ॥ तूं रज्जब देखैहि सु जिनि । जैन ठगावण हार ॥ १५८ ॥ रज्जब अज्जब काम यहु । हरि सुमिरोहित लाय ॥ उलझन अलि अल आसिरै । जौ दीसै सो जाय ॥ १५९ ॥ सव जगजाता देखिये । रहता कोई नांहि ॥ जन रज्जब जगदीश भजि ॥ समझि देखि मन माँहिं ॥१६०॥ जल तरंगकै जीवणें । गाफिल कहा गँवार ॥ पीछै हीप छिताहुगे । रज्जब राम सँभार ॥ १६१ ॥ प्राण पवन व्है पलकमें । छिन मांहैं चालि जाइ ॥ रज्जब सु समयूं समझि । बहिला बार न लाइ ॥ १६२ ॥ पाणी पाणन ठाहरै । प्राण पिंडयूं जांणि ॥ तौ परमार्थ पायजल । बात कही निज छाणि ॥ १६३ ॥ मनुष्य देह दामनि दमक । बेगा

बेगि सुजाय ॥ रज्जब देखो हरि दरस । ढीला ढीलन लाय ॥ ॥ १६४ ॥ तनपुन गिरह गाफिल असाति । ज्यूब सलिलके झाग ॥ दल बादल सब झूठ हैं । रज्जब पहरी राग ॥ १६५ ॥ रज्जब मृगजल मांड सब । मांनहु मिथ्या जग्ग ॥ देखणकूं दरिया वहै । तहांन पाणी नग्ग ॥ १६६ ॥ राम बिना सबझूठ है । ज्यूं सुपनें सुख होय ॥ रज्जब जागें चलि गया । कछून देखे जोय ॥ १६७ ॥ रामबिना समझू ठहै । मृग तृष्णाका रूप ॥ रज्जब धावै नीरकूं । जहां जायतहां धूप ॥ १६८ ॥ सीतकोट अरु भडलिका । तीजै सुपिना सैंन ॥ रज्जब यूं संसार है । नहीं सुदीसै ऐन ॥ १६९ ॥ रज्जव बादल बुद बुदे । तीजे जलके झाग ॥ चतुर खांडि चखि देखिये । है नाँहीं भरम भाग ॥ ॥ १७० ॥ रज्जब सुपना शक्ति सेन । मन मिथ्या देखैसु मेन॥ जागि देखि दीसै सुनांहीं । रेमन मूरख समझि मांहीं ॥ १७१ ॥ सुरनर देई देवता । सूता सुपने माँहिं ॥ जो रज्जब रामतिरचै । सोजागै कोइ नाँहिं ॥ १७२ ॥ गुदडी ज्यों गृहके लगै । तिन विछुरत क्यावेर । रज्जब संतति शकतिकी । हठ वोर दिशि हेर ॥ १७३ ॥ रज्जब रज घर वासतन । शिशुरामति संसार । सो मंदिर रचि मेटहूं । तो कहू किती येक बार ॥ १७४ ॥ जन रज्जब रज्जु अपजगै । यूं जाणें संसार॥तिन हिन संख्या विषचढै । ओषधि प्रेम विचार ॥ १७५ ॥ जन रज्जब सुपिनां जगत । सूता देखैं सत्य ॥ जाग्यू मिथ्या भूत सब । नींद सुन्यारी मन्य ॥ १७६ ॥ रज्जब शीशेका सलिल । तैसा यहु संसार । स्वर्ग नरक फिरता रहै । युग युग बारंबार ॥ १७७ ॥ ब्रह्म बिछोह वियोग न उपजै । मींचन आवै याद । रज्जब रीता प्राणसो । जन्म गमाया बादि ॥ १७८ ॥ मिथ्या तन मन बानी प्राणी। रज्जब

भजै न राम ॥ सौंज सिरोमनि मिनखा देही । बादि गमी बेकाम ॥ १७९ ॥ कौल चूक जीव आदिका ॥ भूला भूंदू बाच ॥ रज्जब झूठा रामसों । सोक्यूं बोलै साच ॥ १८० ॥ जगपति जीव जुदे किये । तबके झुठे जाणि ॥ अबही साच बोलहीसुक्यूं । पडी झूठकी बाणि॥१८१॥ प्राण पिंडकी संतति झूठी । तौ साव कौण सों होय । रज्जब मिथ्या माया मेला ॥ जिनिरूपतीजै कोय ॥ १८२ ॥ साचने झूठी करी । सो साची क्यूं होय ॥ रज्जब देखो दिव्य दृष्टि । मन साबाचा जोय ॥ १८३ ॥ रोमन रूठा नटका । करि दिखलाए खंड । यूं मिथ्या रामति रामसति । ब्रह्म रचे ब्रह्मंड ॥ १८४ ॥ चतुरखानि बाजी चिहर । सकल पसारा झूठ ॥ रज्जब ज्यूं थी त्यूं कही । रजूं होह भाव रूठ ॥ १८५ ॥ चावल किये धूलिके । पंख परेवा कीन्ह । झूठ दिखाया साच करि । बिरले पुरसां चीन्ह ॥ १८६ ॥ सुपिनाको साचा नहीं । नहीं मिछन मधि नीर ॥ शीतकोट कोटहु नहीं । त्यूं वसुधा सववीर ॥ १८७ ॥ बनिकैं वछ काया कुमति । मरकट मनहिं सुमींच॥रज्जब सोन उपाड ही । बैठै मूरख सींच॥१८८॥ मोह मूंजके जेवडहु । गांठ दई है घोलि ॥ रज्जब छांटै पैमि जल । निकस्या चाहै खोलि ॥ १८९ ॥ कुल कुंटुब थोहरि बिडा । नख सख कांटे बीर ॥ श्रोणत सीरपर सत पडै । स्वारथ वहत समीर ॥ १९० ॥ जग थोडा थोहरि बिडा ! कुमति सु कांटहुं पूरि ॥ बुद्धि वस्त्र फाटैं निकट । रज्जव निकसहु दूरि ॥ ॥ १९१ ॥ कुल कटुंबकै बछवनी । मन मरकट तहां जाय ॥ साध शब्द मानैं नहीं । मरसी मूंठ खुजाय ॥ १९२ ॥ कुल कुटुंब कलि युगसही । कालि कलणेंकी पांव ॥ रज्जब बिरच्या यूं समझ । ताथैं तहांन जांव ॥ १९३ ॥ छाजन भोजन विषै रस ।

जीव लहै जगबास ॥ रज्जब पायें पान सुर । पिरथी विरछप लास ॥ १९४ ॥ उद्यम उभैन कीजिये । मन मूंसा सुणि येह॥ बाति चुरावत करंड काटि तूं कुशलु सु नाहीं देह ॥ १९५ ॥ मन मरकट माया चिरमा तृष्णा शीत न जाय॥ यापरि बांदर बिंद मिलि । सगा सगेकूं खाय ॥ १९६ ॥ मांडे मादुरीकूं धवै । खलक खलावर पिंड ॥ रामविमुख बाई बलै । रज्जब इहि ब्रह्मंड ॥ १९७ ॥ काटे केशो कृष्ण पख । मैन रैन मधि चोर ॥ रोम सेत रजनी सुकल । तजितसकरता भोर ॥ ॥ १९८ ॥ रज्जब रजक बुढा वने । हेरि दिखाया हेत ॥ चीर चीहुरकी स्यामता । धोय करी सब सेत ॥ १९९ ॥ सत सुकृत सुमिरन करत । बिलंब न कीजे बीर ॥ गुरु गिरवर गहरे तिरत । रज्जब गहिये धीर ॥ २०० ॥ रज्जब महंत महीपती नर सुतरु । जड सेवक संसार ॥ मालीसम मुंह आगिले । मूल हुं सींचणहार ॥२०१॥ सतगुरु साँई साध शब्द । बंदनीक चारु ये हद । रज्जब समझे समझो मांहिं। इन उपर थापणकूं नांहिं॥२०२॥ रिणन उतारया रामका । पिंड प्राण जिन दीन । रज्जब तिनहिं उधार दे । मन बच क्रमसों छीन ॥ २०३ ॥ पंच पचीसों त्रिगुण मन । कीडे काया मांहि ॥ रज्जब राखै साधये । जूवह खुलावै नांहिं ॥ २०४ ॥ सफरी सासन सलिल सुरिरन मधि । बास कुबुद्धि वपि विलै न होय ॥ जोई जात रज्जब जल जयसौ । मारि पकावै बिरला कोय ॥ २०५ ॥

साखी २७४५ ।

शरणका अंग।

शरणा साँई साधका । पकडरहीरे प्रांण । तौ रज्जब लागे नहीं । जम जालिमका बांण ॥ १ ॥ सतगुरु सांई साधुकै । शरणें

धका नांहिं। काल चोटकूं ओट यहु। समझि देखि मन मांहिं ॥२॥ शरणां लीजे साधुका। शरणा गहि गुरुपीर। रज्जब खांडा लाखका। रहै म्यानमें वीर ॥ ३ ॥ साचेके शरणें बचै। सूत पान दिव देत ॥ तो रज्जब सुनसा चका। शरणा क्यों नहीं लेत ॥ ४ ॥ शार्दूल सिंहनीं घुरसहित। रहै शैल शरणाई ॥ तौ रज्जब शरणां बडा। नर देखौ निरताई॥५॥जल निधिमें जलचर बडे। तौ सौ योजन देह ॥ सोभी शरणें सलिलकै। मंन मत मांनी येह ॥ ६ ॥

अरिल्ल।

वृक्षही जाइू बिहंग। असणि कैही आवतै। तूं तकि आतम राम डरीज मरावतै। बोले होय उबार सुशरणां चाहिये। परि हां रज्जब कहीं विचारि। पठैगा साहिये ॥७॥ प्राण सुशरणें पिंडकै। पिंड सुशरणैं प्राण। शरणेंका शरणें सुखी। रज्जब समझि सुजान ॥८॥ उदर आसरै ऊपज्या। प्राण पठंगै मांहि। सौ शरणा क्यो छाडही। मूरख समझै नांहिं ॥ ९ ॥ अगनि आश्रय काष्टकै। काष्ट सुशरणें आगि। जुदे होत जीव सूं गये। रहै येकठे लागि ॥ १० ॥ अठार भार अधि यारकूं। देखो दीप करवाय। सो रज्जब शरणें बिना। बायु लागि बुझि जाय ॥ ११ ॥ तिहूं कालताकैं शरण। तन मन काचे जांनि। आश्रम विन अंतकु उदे। प्राण पिंड व्है हानि ॥ १२ ॥ देई देव दरखत रहै। यूं दल हरिया पीर। रज्जब बोले झाडकै। घास बधै है बीर ॥ १३ ॥ अनल पंख पंख्यों पडी। पै शरणें रहै अकाश। सो अहार उडती करैं। डरपै धरती बास ॥ १४ ॥ तकै दिशाकूं आसिरा। शरणां छोडै साध। ताकौ क्या प्रमोधिये। मूरख बुद्धि अगाध ॥ १५ ॥

कालका अंग ।

काल किसी छोडै नहीं । सुरनर सब ब्रह्मंड । जन रज्जब दृष्टांतकूं । यथा अग्नि बनखंड ॥ १ ॥ काल न छोडै ज्ञानगुण । वेद पढै जो च्यार । जन रज्जब मंजार ज्यूं । पढ्या अपढ सुकुमार॥२॥ रज्जब रहै नराज बल । छूटै रंकन होय । जमज्वाला नरतर सुतृण। क्यूं करि बंचै कोय ॥ ३ ॥ साहिब बिन साहिब किया । सो रज्जब सब जाय । काल सहित सब कालमुख । जै देख्या निरताय ॥ ४ ॥ रज्जब रहै न कोय । सबकूं मरना है सही । काल कँवल जगजोय । भूख भरव मेन्ह कही ॥ ५ ॥ रज्जब कोल्हु कालकै । सब तन तिली समान । सो उबरै कहि कौन विधि । जो आए विचिरवान ॥ ६ ॥ निशदिन जामण मरणमें । चंद सूर आकाश ॥ त्यूं जीव सहित सब सान्य करि । काल करै इकग्रास ॥ ७ ॥ जैसें शशिकें सकल दिशि । मझ मँडै आकाश ॥ त्यूं रज्जब रहसी नहीं । पिंड प्राणकै पास ॥ ८ ॥ ज्यों आभा आतुर उठैं । विलै होत नही बार॥ त्यूं रज्जब तन काल बसि । छिनमें होसी छार ॥ ९ ॥ जैसें श्रावणकै समै । धनुष उदै आकाश । रज्जब पलटै पलकमें । त्यूं तन छिनमें नाश ॥ १० ॥ दाम निदम कहिं देखले । केतक वेर उजास ॥ त्यूं रज्जब संसाररमें । अस्थिर नांहीं बास ॥ ११ ॥ जैसे अहरिणी उशन परि । बूंदविलै है जाय ॥ त्यूं रज्जब देही दशा । हरिभजिबारन लाय ॥ १२॥ यहु तन जलका बुद बुदा । अल्प अधूरी आव ॥ रज्जब रतीन ठाहरै । तापरि कहा चवाव ॥ १३ ॥ जन रज्जब संसारमें रहसी रंकन राव ॥ सब घटना ता देखिये । वोलौं कीसी आव ॥ ॥ १४ ॥ कीरिहि करि क्या कीजिये । अतिगति वोछी आव ॥

जन रज्जब जोरव्यूं घणी । जरा विपति जम राव ॥ १५ ॥
आभों परि अस्थल नहीं । बिहंगन बैठा जाय ॥ तो रज्जब संसार
मधि । आतम क्यूं ठह राय ॥ १६ ॥ आदित अंतक देखतूं ।
बोले ज्यूं अभिलाख ॥ अठार भार आगिहि मिलत । पानफूल
फल राख ॥ १७ ॥ कहा इंद्रासन इंद्रको । कहा पहम पुनि राज॥
जै रज्जब जीजै नहीं । तौ जगत्र कहिं काज ॥ १८ ॥ रजधानी
सब लोककी । पावै विश्वाबीस । सो रज्जब झूठी सबैं ॥ जै जम
आमिर सीस ॥ १९ ॥ लघु दीरघ आवसु अलय । जै सिर ऊपर
मीच ॥ रज्जब रामसं भालिये । ढीलन कीजै नींच ॥ २० ॥ चंद
सूर पाणी पवन । धरती अरु आकाश ॥ ये रज्जब जोख्यूं भरे ।
खलक सहित षट्नाश ॥ २१ ॥ आवन्या तरुवर कटै । अहि
निशि बहै कुहाड । जन रज्जब सो क्यूं रहै । जो आया बिचि
दाड ॥ २२ ॥ आवरव्या सरवर घटै । मानें मनि खन मीन ॥
जो रज्जब माता जगत । माया मोहमद पीन ॥ २३ ॥ कडी जडी
तलि जालकी । मीन मुदित जल माँहि । त्यूं रज्जब त्यागी जरा ।
जीवहि सुझै नांहिं ॥ २४ ॥ रज्जब काया कूपमें । आव अधारै
नीर । रहट रैंणि दिन घाडि घडी । भरिये सलिल समीर ॥ २५ ॥
रज्जब तन तरकसतें जात है । श्वास स्वरूपी तीर ॥ माँगे मिलैन
मोलि सो । अरये निघटे बीर ॥ २६ ॥ घडी घडी करती रहै ।
पट प्राणींकी आव ॥ रज्जब रेजा कछु रह्या । सोतूं ध्वजा चढाव॥
॥ २७ ॥ रज्जब धवणि लुहारकी । त्यों सुर नासिक दोय ॥
भजन विमुख पावकि पवन । देखो दहम सु होय ॥ २८ ॥
जीवी ऊपर जतन बहु । टूटी टूटे सब ॥ कहना था सो यहकहा ।
मनवच क्रम रज्जब ॥ २९ ॥ जीवी ऊपर जतन बहु । आवहिं
अनन्त उपाव। रज्जब रामसु कांढिले । तब थाके सब डाव॥३०॥

होती आव उपाव बहु । औषधि यतन अनेक ॥ सो सरकावै साँइयों । तबतहि कामन येक ॥ ३१ ॥ जीव जतन बहुते करैं । क्यूंही मरिये नांहिं ॥ रज्जब रोकै बाहिली । मारण हारा माँहिं ॥ ॥ ३२ ॥ जुगति जतन सारे रहे । जबजम पकड्या शीश ॥ रज्जब धन घाणि यूं लिया । कहा करैं ते तीस॥ ३३॥ शक्ति शाक्ति सौं नीकसी । कहै औरकी और॥ रज्जब काढ्या धन धण्युहु । उठी आतमा ठौर ॥ ३४ ॥ छसै सहंस इक बीस विरिया । मारुत मागम हंत ॥ रज्जब अहनिशि उठि चलै । कहु कैसें सु रहंत ॥ ॥३५॥ अहुंठ कोडइ कइ उभै । इते मागमध येक ॥ रज्जब जीव जलक्यूं रहै । काया कुंभये छेक ॥ ३६॥ रज्जब रज मारुत लगी। बपुसु बघुला हेर ॥ गात बात गत गांठिकूं। कहु छूटत क्या बेर॥ ॥ ३७ ॥ रज्जब रुकसें घाट सब । काल कष्टतन भौंन ॥ शास शब्द संकट परै । तव सुमिरैगा कौंन ॥ ३८ ॥ रज्जब रामन सुमिरिये। मिलै सकल संजोग ॥ तब सुमिरौगे कौन विधि । जब बपि बाइ बिजोग ॥ ३९ ॥ विषमे व्याधि क्यूं टालिये । कठिन कालकी चोट ॥ रज्जब केशरि काढिसी । धाय गही हरि ओट ॥ ४० ॥ काया माया मांझ सब । सकल जीवकूं काल ॥ रज्जब काढै कौन विधि । यहु अंतर गति साल ॥ ४१ ॥ चिंत्या चित्तकु काल है । मनह मनोरथ मींच ॥ रज्जब जानैं राम बिन । यहु जो रामन नींच ॥ ४२ ॥ काम कल्पनां कोटि विधि । मींचि मारियन मौज॥जन रज्जब बजीव क्यूं रहै । दोखि दहदीशि फौज॥ ॥ ४३ ॥ मनकुं रंग कित जाय चलि । चेतनि चीता काल ॥ रज्जब पटकै पलकमें । काटै करि करि छाल ॥ ४४ ॥ जैसें सुसा शिकारमें । बंचनै कानहुं ओट ॥ त्यूं रज्जब हम होयकर । क्यों

टालै जम चोट ॥ ४५ ॥ अंतक आतम राम विचि। अंतर नांहीं कोय ॥ जोख्यूंकी जाय गहवही। जतन वहीतें होय ॥ ४६ ॥

साखी २७९५

सजीवनीका अंग।

अमर मिलै आतम अमर। बिछुरत विनसै सोय ॥ रज्जब रहेसु यूं रहे। सब संतन दिशि जोय ॥ १ ॥ जग जीवनि जीवै सदा। तामें ताका दास ॥ जन रज्जब जोख्यूं गई। कदेन होय विनाश ॥२॥ ज्यों पावक झल शून्यमें। त्यूं पर आतममें प्राण॥ रज्जब मारै काल क्यूं। ज्ञुनि कसीन छोई आंन ॥ ३ ॥ रज्जब शून्य ठाहरें शून्यमें। तबही आनंद होय॥चेत निचेन निकूं मिलै॥ कालन लागै कोय ॥ ४ ॥ सबकौं सुरति उठाय कर।जोपैसै प्रभु माँहिं। जन रज्जब सो कालशर। क्यूंही आवै नाँहिं ॥५॥ रज्जब साधू शून्य व्है। शीश सबहुं ताले देय ॥ अंतक भय उसकूं नहीं। अकल आपमे लेय ॥ ६ ॥ शून्य सजीवनि उरि अमर। रसनां रहते माँहिं। जन रज्जब आंख्यूं अखिल ॥ प्राणी मरैसु नांहिं ॥ ७ ॥ अडग सुरति आठौ प्रहर। अस्थिर संगि अडोल ॥ सो रज्जब रहसी सदा ॥ साखी साधू बोल ॥ ८ ॥ अरि इन्द्री आपा गये। अंतक उठ्या अनंग ॥ रज्जब जीवै जीवसों। काढ्या कर मकु संग ॥ ९ ॥ रज्जब मूये जमारते। बिनसै बैरी पंच ॥ तब ताकूं लागै नहीं। जरा मरण जम अंच ॥ १० ॥ सुरति मांहिं सांई सदा। याद अखंडित होय॥सो रज्जब आतम अमर ॥विघन न व्यापै कोय॥११॥ मनउन मनले राखिये। परम शून्य अस्थान। तौ रज्जब लागै नहीं। जम जालिमका बान ॥ १२ ॥

नांव ठांव निर्भय सदा । सुमिर सजीवनि संत ।। जन रज्जब लागै नहीं । तहां जोरजम जंत ।। १३ ।। प्राण पिंड ब्रह्मंड मधि। नांव शून्य रभै दुरंग ।। रज्जब चढ चव्य बास करि। जम जीतै नहिं जंग ।। १४ ।। नर निर्भय हरि नाममें । यहुगढ अगम अगाध ।। रज्जब रिपु लागै नहीं। सदा सुखी तहाँ साधु।। ।। १५ ।। नांव ठांव निज जीवकूं । सदा सजीव निबास ।। रज्जब रहिये ठौर तिंहिं । षट्ऋतु बारहमास ।। १६ ।। बसै निनां वां नांममें। तातै लीजै नाम ।। जन रज्जब तारं धरकी । मैं बलि हारी जाऊ ।।१७।। रज्जब अज्जब ठौर है । सुमिरणमें ठहराय ।। अमरसु आदम आतमा ।। सुखमें सुरति समाय ।। १८ ।। रज्जब मन पंचों पिसण । लूटैं देही देश ।। इनबलि वंतोंपास छुडावै । बलवंत प्राण नरेश ।। १९ ।। इन्द्री हाथिन आवई। सु अंतकि गह्यान जाय ।। रज्जब आतम राम सम ।। नर देखो निरताय ।। २० ।। प्रबल पिंडपति शाहपति । पंच पिसण लिये साथ ।। रज्जब पैठै ज्ञान गढ । सो प्राणी चढैन हाथ ।। २१ ।। गुण इंद्री प्रकृतिकै। प्राणी पडैन बंदि ।। जो रज्जब रामहि भजै। ज्यु बैठ्या ज्ञान गिरंदि ।। २२ ।। काल कटक देखत रहै। और सकल दुख द्वंद ।। जन रज्जब देखत गया। चढि गिरिवर गोविंद ।। २३ ।। गुरु गिरिवर बिहडे नहीं । प्राणी पगहू सयांण ।। मिलै न स्वारथ शाहकूं। आतम अनां मिराण ।। २४ ।। मिलैन स्वा रथ शाहकूं । त्यागि दई पखि दोय ।। ज्ञान गिरा दोमें रहै । रज्जब राणां होय ।। २५ ।। रज्जब उदधि ज्ञानमें मीनमन। सूर शक्ति तप अंग ।। उभैन दगदाहिं उभैतन । पाया शीतल संग ।। २६ ।। रज्जब शूर शरीर विधि। आतम अकलि सु अंभ ।। सो सोधें देखत सबै। सोझै मीरसु थंभ ।। २७ ।। पात शाह पहरै

भया। तब देशहु डर नांहिं ॥ रज्जब चोर कहा करै। जै राजा चेतनि माँहि ॥२८॥ श्रवणि द्वारि द्वै दुरंगि दिलि। चढे शब्द साथंत। रज्जब रिपु मारे सुमधि। बाहर विघनन जंत ॥ २९ ॥ रज्जब साधू जो घमत। जे बैठे जीव माँहिं ॥ सो निर्भय नो खंड में। पिसण छुगंजै नांहिं ॥ ३० ॥ साधु शब्द अमृत अचै। अमर होत आतम ॥ पीवै प्राण पियूष यहु। जीवन लागै जम ॥ ३१ ॥

साखी २८२६ अंग ८५।

अथ जीव ब्रह्मकी अंतरायका निर्णय।

रज्जब जीव ब्रह्म अंतर इता। जिता जिता अज्ञान ॥ है नांहिं निर्णय भया। प्रदेका परवान ॥ १ ॥ जान जगत गुरसल गहै। अलग अजान अचेत ॥ रज्जब नीडे दूरका। समझि कह्या संकेत ॥ २ ॥ पून्यू पूरा चांदणा। अमा वस अंधियार ॥ रज्जब समझि असम झका। याकी बीचि व्यौ हार॥३॥ शब्द न समझै आतमहिं। त्यूं आतम राम अगम ॥ रज्जब कही विचारि कर। नेति कहै निगम ॥ ४ ॥ प्राणसु पेई लोहकी। पती पारसता मांहिं ॥ रज्जब तनसुख सों मठी। काचन होत सु नांहिं ॥ ५ ॥ रज़ब राम बडहु बडा। कोइन सारिख जोट ॥ सो सुमेर सांई छिप्या। तन तिण केकी ओट ॥ ६ ॥ रज्जब चाकर पिंडके। चौरा सीलख प्राण ॥ सब आतम उलझी यहां। आगै लहैन जाण ॥ ७ ॥

अथ उनमानीक अंग।

रज्जब कीजे बंदगी । जेती जीवतें होय ॥ जो साहिब सौंपी नहीं। तासों बलनहिं कोय ॥ १ ॥ रज्जब राखहु बंदगी । जेलघु दीरघ होय ॥ ज्यूंकर अंगुली हालतां । दागन देवै कोय ॥ २ ॥ सौको सांसातल चलै । लहै मोजसा बास ॥ लरि कहुं लौन उतारिये । उभौं होत उल्हास ॥ ३ ॥ रज्जब अजरी अनलका । एक उडाणन होय ॥ त्यों सुकृत सुमिरण सबै । वित उन मानसु जोय ॥ ४ ॥ कीडी कुंजर अनलका । येक नहीं उनमान ॥ बोझ उठावै बलयथा । समझो संतसु जान ॥ ५ ॥ एको जानी गहम गति । एकों मिलैसु आय ॥ इक राहके तुज्यों गिलि गये। शशि सूरज निरताय ॥ ६ ॥ कीडी कण अवनी अहि मांथै । बलउन मान उठा वहिं बोझ ॥ त्योंही भाव भक्ति भगताजन । जन रज्जब पाया निज सोझ ॥ ७॥ उन मान चल्यूं दीसै भला। बिन उनमान खराव ॥ रज्जब कही विचार कर । वहुरि वडहुं काजवाव ॥ ८ ॥ रज्जब रहनकी जिये । जो कछु रजमां होय ॥ ये सांई अरु संतजन । बुरा नमांनें कोय॥ ९ ॥ कौन भांति साहिब खुशी । जो जीवन जाने ॥ पै रज्जब कीजै बंदगी । अपने उन मांनै ॥ १० ॥ जिते अंग उन मानके । तेते जीवहुं पास ॥ जो साहिब सों पीवही । सो पावै क्यूं दास ॥ ११ ॥ संत्रोठाहर सब कहिगये । साच बाच कवि राव ॥ ऊंटन गरजै इन्द्र सम । अपणां करै स्वभाव ॥ १२ ॥ हणवंत डाण कहु कौणदे । कोदे बावन बीख ॥ पैंजीव जुलणि बाढे नहीं । रज्जब देखहु लीख ॥ १३ ॥ फणहि सु फौरी आव लणि । वधि बहिला

इत बास ॥ तौ अलफ अठारह भार कछु । निरफल रहैन कास ॥ १४ ॥

साखी २८४७।

निरपक्ष मध्य अंग।

रज्जब तांबा लोह पक्षि। पारस है प्रभु नाम ॥ परसेसेंकंचन भये। यहु निरपक्षि निज नाँव ॥ १ ॥ फकर जाति खुदायकी। उभैनै रीतिर वेश ॥ रज्जब अलह ज्यों रहै। सो सचा दर बेश ॥ ॥२॥ ब्रह्म जाणै सो ब्राह्मण है। सोदै सैयद होय ॥ रज्जब राखी बहहुनें । फेरसार नाहिं कोय ॥ ३ ॥ ब्रह्म वाणिज जिव ब्राह्मण। सोदै सैयद होय ॥ वेद दुराणोंमैं कही। छूटै गाफिल गोत ॥ ४ ॥ वो ओंकार सांठी शकति। कलम अंट कुल दोय ॥ रज्जब अलफ अती तजू। सो बंदे सब कोय ॥ ५ ॥ द्वै पख बीरज दाळि है। बिचि अंकूर अतीत ॥ सो रज्जब ऊंचा चल्या। यहुतीजीरस रीति॥ ॥ १६ ॥ सं सार समुद्र पवि सीपद्वै । मधि मुकता सु महंत ॥ सो रज्जब उर सिर धरै । ब्रह्म आदिपर यंत ॥ ७ ॥ संसार श्रप मंडाण सुख। परव जाज्यूं विष होय ॥ तहां मुनी मणिनी पजे। निरपख निर विष सोय ॥ ८ ॥ जैनेकसाईकी छुरी। पारस परसी आय ॥ रज्जब देखो देखतां। कुल कंम कुलि कटि जाय ॥ ॥ ९ ॥ हिंदु तुरक हसेब करि। दोनों देखो जोय ॥ जन रज्जब बरती रती। सूपावै बिरला. कोय ॥ १० ॥ हिंदू पावै गांवहीं। वोही मुसल्मान ॥ रज्जब रजमां रहमका। जिसकूं देरहि मान ॥ ॥ ११ ॥ चंदशूर पाणी पवन। आभै उडगम झार॥ मधि बासी प्रतिपाल महि । धर अंबरसुनियार ॥ १२ ॥ चंदशूर पाणी पवन। आभे उडग अतीत ॥ धर अंबर परसैं नहीं। यहु जीती

रस रीति ॥ १३ ॥ पग पृथ्वी मस्तक गगन । जीव रहै नाभि स्थान ॥ पक्ष्य पोखै निरपख रहै । आतम संतसुजान ॥ १४ ॥ जडमत छाडसु जीमि घर । ताजि अभिमान अकाश ॥ रज्जब राहिये बीचि बस । षट् ऋतु बारह मांस ॥ १५ ॥ आकाश रूप अबिगति तरू । बईये बंदहुं ठाम ॥ पंच तिर्णे रज्जब रचे । मध्य मनौहर धाम ॥ १६ ॥ माया बिन मरि जाइये । माया पायूं मींच ॥ जन रज्जब जीवन मतै । जुब दुजन बैठै बीच ॥ १७ ॥ देही दीपक जोति जय । सुगति माधि ठहराय ॥ शक्ति समीर सु बहु बिन । जन रज्जब बुझि जाय ॥ १८ ॥ शक्ति सुता तौ बहन है । श्रीपति पत्नी मात ॥ तासौं रंगन रूठणां । रिद्धि सिधि सों कैसी घात ॥ १९ ॥ रज्जब साबुण सलिलका । सुनहुं सनेही हेत ॥ देखहु हिंदू तुरकके । बसतर कराहिं सु सेत ॥२०॥ अनंत नांव प्रभु पहप है । प्राण पाणि पखिदोय ॥ रज्जब कराहिं सुगंध सो । हिये हाथ णे जोय ॥ २१ ॥ रज्जब महा देवकूं आदम कहिये । गोरखतन सुहाजी ॥ इष्ट एकद्वै द्वै पखहुं । किस रूठैं किस राजी ॥ २२ ॥ रचाहि नहिं दूतुर कसे । विदुजन बरि चों नांहिं ॥ नारायण रूपी सुनर । निर पख न्यारे मांहि ॥ २३ ॥ रज्जब साधू शूरका । मरणा व्हैमैदान ॥ पशु पक्षी पिंडाहिं भखै । नांहीं गोर मसाण ॥२४॥ गोरमसाणहिं तिनहुंको । जेर पडे संग्राम ॥ रज्जब शोभा सब रही । अवसें आयाकाम ॥ २५ ॥ रज्जब हिंदू तुरककी।रिणि नाही रस रीति॥कृत काया सुखि सुचदैं।भोले व्है भय भीत ॥२६॥ पहम पवन मिलिए कव्है । अवन उदिकता मॉँहिं ॥ रज्जब तुरकन पाइये । हिंदू कोई नांहिं ॥ २७ ॥ कै परम तत्वसों प्राण है । कै परम तत्वकै मॉँहिं ॥ रज्जब सोधे उभय घर । हिंदू तुरकसु नांहिं ॥ २८ ॥ सुनता सेती बापथा । माके

बींधे कान ॥ दोनों बिचि बालक भया। तहां नहीं नुक्सान ॥
॥ २९ ॥ सुनति सेवा यथा। बेटा हिंदू होय ॥ रज्जब कहिये
तुरक क्यों। कल्यान आवै कोय ॥ ३० ॥ हिन्दू गति हिरदै
नहीं। तुरक तमा कछु नांहिं। रज्जब बंदे बसतके। कहा घुसै इन
मांहिं ॥ ३१ ॥ हिंदु गति हिंदू खुशी। तुरक जु तुरकी माँहिं॥
रज्जब आशिकएक के। तिनकै दून्यूं नांहिं ॥ ३२ ॥ हेत
निकारि हिन्दू धर्म। तजि तुरकी रस रीति ॥ रज्जब जिन पैदा
किया। ताही सों करि प्रीति ॥ ३३ ॥ रज्जब हिंदू तुरक तजि।
सुमि रहु सिरजन हार॥ पखा पखी सों प्रीति करि। कौन पहुं-
चा पार ॥ ३४ ॥ द्वै पख दारा त्याग करि। प्राणी लैबै राग॥
जन रज्जब सौनी पजै। तासिर मोटे भाग ॥ ३५ ॥ दोन्यू
पख सों कणि रहीं। जब जीव जोगणि होय ॥ जन रज्जब किलि
किलि मिटी। नांवन लेबै कोय ॥ ३६ ॥ एक हित ज्यूं एक
बल बांधै ॥ घरमें होय उपाधि। जन रज्जब परिहरि पख
दोन्यूं ॥ सहजै होय समाधि ॥ ३७ ॥ खैंचा तांण द्वै द्वै मिटी।
तब घरमें आनंद ॥ ज्यूं रज्जब काढ्या रही। सहिज गये दधि
दंद ॥ ३८ ॥ लोहा जलि पावक परसि। क्षिति सलिल पाखाण।
रज्जब उभै अलाहिदा ॥ समझ्या सत्य बखाण ॥ ३९ ॥ रज्जब
चलै महंतमुनि। मधि मतकै मागि ॥ शीत उष्ण मन बनद तैं।
दोन्यू दीसै आगि ॥ ४० ॥ जन रज्जब परिव पैठत। पड़ै विसजता
प्राण ॥ निरपखि मिलि निरदोष व्है। साधू संत सुजान
॥ ४१ ॥ पक्षा पक्षी मध्यापि शुनता। प्राण हुं दुविधा द्वंद।
जन रज्जब निरपक्षनर। निरबैरी, निरद्वंद ॥ ४२ ॥ पक्षा पक्षीमें
पिशनता। निर पखि मन निरबैर। मनसा बाचा करमन॥रज्जब
कहीन गैर ॥ ४३ ॥ पाप पुण्य मूरख चतुर। झूठी जाति कुजा-

ति । जन रज्जब सोवै नहीं । जोन्ह अंधेरी रात ॥४४॥ हिंदू सेवै मूरतहीं । मुसलमान सुमौर । रज्जब मुरदे मानि येहिं । जगजिंदा किस ओर ॥ ४५ ॥ जै देवलि मिलैद यालुजी । अस मालिक मिलै मसीत ॥ तौ रज्जब अण मिलनको । यहु सब कैरस रीति ॥ ४६ ॥ द्वै परव थापैं दोय दिशि ॥ करै अष्टदिशि निंदि । रज्जब सांई सकल दिशि । देखि दसौं दिसि बंदि ॥ ४७ ॥ देवल पासि मसीत व्है । दोयन णहै दोय ॥ रज्जब राम रहीम कहिं । बोलै विघनन कोय ॥ ४८ ॥ पीपल बड बाढहि नहीं । हिंदू तुरकफहीम । तौ रज्जब क्यूं मारिये । कह तू राम रहीम ॥ ४९ ॥

साखी २८९६ ।

विवेक समता अंग ।

घरमैं दीपक देखिये । पावकपरस्यूं एक॥यूं समझे एकै हुए । रज्जब संत अनेक ॥ १ ॥ एक सरोवर सब भरैं । भाव भिन्न घरि जांहि ॥ रज्जब सब मिलि एक व्है । उलटे सरवर मांहि ॥ २ ॥ एकै कंचन काटि करि । बहु भूषण करि जांहि ॥ रज्जब भान्यूं मिलि गये । ताके ताही मांहिं ॥ ३ ॥ साँई सबका एक है । सब समझै तामांहिं ॥ जन रज्जब रामहिं भजै । तिनकै दूजा नांहिं ॥ ४ ॥ सब संतनका एक मत । जैसा अगनि स्वभाव ॥ जन रज्जब जग एकसी । दह दिशि देखो जाय ॥ ५ ॥ षट्र दर्शन सरिता वहै । देखत दशदिशि जाय ॥ रज्जब रहसीससुद्रमें । फिरि घिरि दरिया मांय ॥ ६ ॥ काष्ठ लोह पाखानकी । अगनि उजागर एक ॥ त्यूं रज्जब रामहिं भजै । सो नहिं भिन्न विवेक ॥ ७ ॥ रज्जब रहते जगतसों । सुलझे एकै जाणि । बहु काष्ठके

धूम ज्यों। मिलै शुन्यमें आनि ॥ ८ ॥ यथा अठारह भारकी। विनस्यूं सबकी खेह ॥ त्यूं रज्जब रामहिं भजै। सो सब एकै देह ॥ ९ ॥ माया मांटी सूं घडै । बपु बासण सु अनेक ॥ रज्जब रिधि रजनांव बपु। अरथ शोधतां एक ॥१०॥ कृत्रिम कुंभ मत छिद्र बहु। मांहि जोति जग मौर ॥ रज्जब प्राण पतंग परि। आइ परैं इकठोर॥११॥जन रज्जब समता आका। मनिष देव सनमान॥ धरणी गगन पाणी पवन। साक्षी शशिहर भानु ॥ १२ ॥ चंद सूर पाणी पवन। धरती अरु आकाश। देव दृष्टि दुविधानहीं। सब आतमइखलास ॥ १३ ॥ जगन्नाथकी हांडी समता। भोजन भेद सुनांहि ॥ नींच ऊंच अंतर सुउ ठाया। दृष्टि आत मामांहिं ॥ १४ ॥ षट् दर्शनमें खानका। पतरि भेदना कोय ॥ रज्जब जन्में तिनहुंमें। सोन्या राक्यूं होय ॥ १५ ॥ रज्जब अज्जब काम यहु। जो किसहीकन होय ॥ समता घर बैठे सुरति। कदेन देखै दोयं ॥ १६ ॥ षट् दर्शन सरिता बहै। देखौ दश दिशि जाय ॥ सांई समुद्र सु सन्मुखी । उभै उभै अंगमांय ॥ १७ ॥ नारायण अरु नगरकूं। रज्जब पंथ अनेक। कोई आओ कहीं दिशि। आगै अस्थल एक ॥ १८ ॥ है गय्या दुहुं पंथ बहु। रथि बैठयूं मघएक ॥ रज्जब नरहरि नगर निज। पहुंचे प्राण अनेक ॥ १९ ॥ व्यापक वैसी बोलता। पाणी वैसी पिंड। रज्जब सैं पिछाणिये। इन बैसों ब्रह्मंड ॥ २० ॥ हिंदू तुरक उदै जलबूंदा। कासों कहिये ब्राह्मण सूदा॥ रज्जब समता ज्ञान बिचारा। पंच तत्वका सकल पसारा ॥२१॥ चौरासी लख संपदा। सानी सकल शरीर ॥ जन रज्जब घटि घटि इती। तूं पूछै के बीर ॥ २२ ॥ चौरासी लख संपदा। करी विश्वंभर लोय ॥ रज्जब रची बखानिये। औरों करैसु होय ॥ २३ ॥ जैसिन्या ब्रह्मंडमें।

सोई पिंड पहिचान ॥ रज्जब निकसे शब्द माधि। पंथ पड्या यूं जाणि ॥ २४ ॥ महंत दीपक सुहीरमें। सब दिशि सम प्रकाश ॥ रज्जब धु कहिं न एक रुख । सुनहु सनेही दास ॥ २५ ॥ षट् दर्शनमें सब मिलै। पौणि छतीसों आय ॥ जैसें सप्त समुद्रमें। नौंसै नीर समाय ॥ २६ ॥

मेलग अंग।

आसों गहिये पंच मिलि। त्यूं पंचों मिलि राम ॥ जन रज्जब मेला भला ॥ मेलै सरैसु काम ॥ १ ॥ श्रवण नैंन सुनाशिका। अधर दंत करपाय ॥ रज्जब निरखत नौजुगल । मोह्या मतै मिलाय ॥२॥ अंट सुलेषणि दोय सिरि। कारिज काले एक ॥ त्यूं रज्जब द्वै मिलि चलै। योंही वडा विवेक ॥ ३ ॥ पंच तत्व करि घट भया। प्राण करैं तहां राज ॥ रज्जब विखरैं बहु विघन। आतम होय अकाज ॥ ४ ॥ पंच मिलै मधु ऊपजै। पंच मिलै मद्दु होय ॥ रज्जब पंचे पंचमें । बिगता बिगतिसु जोय ॥ ५ ॥ रज्जब इक अजरी बजरी मिलहिं । इक मधुरिख मधुठौर ॥ मेला देखिन सुगध मिलि । मेल मेल रस और ॥ ६ ॥ एक पाकि पलटी व्है पमई। एक पाकि पुनि पीव ॥ रज्जब पाक हुं फेर बहु। नर निरखौ सुनसीव ॥ ७ ॥ पंच तारजंतरचढै। सोलह सुरसु मृदंग ॥ सुरमंडल सुर बहुत हैं। बाजत एकहि अंग ॥ ८ ॥ रज्जब घणों घणें नहीं । जै मन एकहि रंग ॥ ज्यूं सोलहसुर तूरके। मिलि बाजैं इक संग ॥ ९ ॥ तूंबी समझो आतमां। तिराहिं सुपक अनेक ॥ सो संगति क्यूं छोडिये। रज्जब समझि विवेक ॥ १० ॥ एकहु मांहिं अनेक हैं । है अनेकोंमें एक ॥ रज्जब पाया संगका। पूरण परम विवेक ॥ ११ ॥

साखी २९३३ अंग ९०

अथ दयानिर वैरताका अंग ।

सुख्य दया निरबैर व्है । सब जीवहुं प्रतिपाल ॥ तौ रज्जब तिन प्राणनें । मेल्या मंगल माल ॥ १ ॥ निरबैर होत बैरी नहीं । चौरासीमें कोय ॥ रज्जब राखत औरकूं । अपणी रक्षा होय ॥ २ ॥ चोटन काहूं कूं करै । तो चोटन इसकूं होय ॥ जन रज्जब निरबैर सौं । बैर करै नहिं कोय ॥ ३ ॥ विघन उटालत औरके । अपने विघन सुजांय ॥ नेकीसोंनेकी बधै । समझ देखि मनमांय ॥४॥ नरानिर वैरी होतही । सब जग वाका दास ॥ रज्जब दुबिधा दूर गई । उर आए इकलास ॥ ५ ॥ निरबैरी नौखंडमें । साधु सुहिरदी होय ॥ तौ रज्जब तिहुं लोकमें । बैरी नांहिं कोय ॥ ६ ॥ चौरासी लख जीव परि।साधू होय दयाल॥रज्जब सुखदे सबनिकूं। तन मन कर प्रतिपाल ॥७॥ इसके मारणकी नहीं । तौ इसहिन मारै कोय ॥ कुशल बांछतां और की । अपणें कुशल सुहोय ॥ ८ ॥ दया तरुवर धर्म फल । मन सामही सुमांहिं ॥ महरि मेघहरि निपजै । रखवारे फल खांहिं ॥ ९ ॥ राग दोषका सोंक रही । सबमें साहिब जानि ॥ रज्जब बुरा न बांछिए । छाडि देहु गतबाणि ॥ १० ॥ विभूति वा करि तनि लगै । थन सुगलै थनै चारि ॥ यूं साधु असाधु इक ठौर है । नर निरबैर निहार ॥ ११ ॥ रज्जब व्है निरबैरता । तौ बैरी कोइ नाहिं॥मनसा बाचा कर्मना । यूं समझी मनमांहिं ॥ १२ ॥ नाम सगौती बोलिये । कहिये तेमां अंश ॥ सो रज्जब क्यूं खाइये । प्रत्यक्ष अपणा बंश ॥ १३ ॥ गोसपंद गांवमें समादरज । हम सीरे सब भाई ॥ रज्जब अैन अजीज बोलिये । गाफिल गोसत खाई ॥ १४ ॥ षट् दर्शन

अस्खलककूं। खोडि खात मद्य मांस ॥ रज्जब सोचन दिल दया। है आपापर नाश ॥ १५ ॥ पंचवखत जो बांगदे। वह तो दीनीं बार ॥ सो सुरगाक्यूं मारिये। काजी करो विचार ॥ १६ ॥ मुसलमानकूं मारना। सुरगा माफिक नांहिं ॥ पंचौं विरियां बांगदे। मुलौं समझौ मांहिं ॥ १७ ॥ बंदनी कबाराहसु बंदिए। मुल्लां सुरगा मारै ॥ दोन्यूं दृष्टि बिहुणें दीसैं। इष्टौं कौन विचारै ॥ १८ ॥ कुलमें मोहित मालिक है। सब हूं मै सुबिहान ॥ रज्जब बायूं जाणि जाहीर। रहममें रहिमान ॥ १९ ॥ मुल्लांमन बिसमल करौ। तजहु स्वादका घाट ॥ सब सूरत सुबिहानकी। गाफिल गला न काट ॥ २० ॥ घात घाटकौं करै जाहिर। कहैं हक हलाल ॥ रज्जब बायहु बंदि पकडे। जाहि पचि भै माल ॥ २१ ॥ सबमें साँई मांस सुखाई। तौ निज ग्यान नजरमें नांहीं ॥ जाहि भजैताही सौंबैर। रज्जब नांहिं कही कछु गैर ॥ २२ ॥ तन मंदिर मूरति मधि आतम। फोडे फूटैं दोय। उभै उजाड एककेकी जैहि। खसम खुशी क्यूं होय ॥२३॥ बक्र तिणां लिये नीकसैं। खून खताखित योभ ॥ तौ घास गास जिनिमुख सदा। तिन मारयौं क्या शोभ ॥ २४ ॥ घुंण हांडीमें घुलि गया। मांखी सहनकमांहि ॥ रज्जब खाइ कबूल करि। मैं मुरदारी नांहिं ॥ २५ ॥ मछलीकीनतकबीरकी। घुण किन किए हलाल ॥ अंडे किन बिसमिल किए। सब खांणेंका ख्याल ॥ २६ ॥ अजाजील अरु आदमही। देखि अदावति आदि ॥ दोष लागि है दिशि विमुख। जनम गमाया बादि ॥ २७ ॥ रामचंदरमां नंदहीं। बैर बान भई मींच ॥ तौ रज्जब दोषन राखिए। समझि मनवांनींच ॥ २८ ॥ रज्जब कीडी कुंजर सबनिसौं। मेटि वैरता मंत। पीडा देत पखाणकूं देखहु हजरति दंत

॥ २९ ॥ कृष्णदेवकी बहन लघु । हती कंस कीर खीज। रज्जब दामीनि दोष तहीं । कासौं पडैसु बीज ॥ ३० ॥ हिरना कश्यप अरु होलीही । भये पिसण प्रहलाद ॥ साधू मारत ते मुए। तजहु बैरता बाद ॥ ३१ ॥ राहु केतु शशि सूरका । देखहु वैर विरोध ॥ इहै जानि निरबैर रहु । रज्जब निजपर मोध ॥ ३२ ॥ दोष दोषसौं ऊपजै । नर देखो निरताय ॥ राहु केतु शशि संग रहैं । सप्तन क्षत्रसु भाय ॥ ३३ ॥ रज्जब अज्जब काम है । जैहूजे निरदोष । पडैन बंधण बैरता । मानहुं दूजे मोष ॥ ३४ ॥ रज्जब अज्जब काम है । जोदिल न दूखाया जाय ॥ यहां खलक उसपर खुशी । आगै खुशी खुदाय ॥ ३५ ॥ हंस हते हत्या सही । परि आदम अध अधि काय ॥ रज्जबं देखहु नरहि डसि । पनिग पूंछ गरि जाय ॥ ३६ ॥ राग दोष दीरघ उदधि । पंच दोय लघु लार ॥ जन रज्जब उतरत उभै । सप्त सुगम नरपार ॥ ३७ ॥ रज्जब अज्जब यहु मता । सबमों रहनिर बैर ॥ उदधि उपाधिन डर पिये । जोंख्यूं जल जीब पैर ॥ ३८ ॥ औगुण ढाकै औरके। अपने औगुण नांहिं ॥ रज्जब अज्जब आतमा। निर बैरी जग मांहि ॥ ३९ मारचा जाय तो मारिये । मनसा बैरी नांहिं॥जन रज्जब सौ छाडि करि । मारणकूं कछु नांहिं॥ ४० ॥ मारण हारा मारिये । कीजैं नहीं उपाधि॥जन रज्जब यूंजी तिये ॥ घटका बैरी साधि ॥ ४१ ॥ काहूपरि चढिये नहीं। मनक्रम विश्वावीस ॥ रज्जब रथ तलि कृष्णके। सोई पंखीपर शीस ॥ ४२ ॥ पग पहुण प्रभुजी दिए । अतिगति होय कृपालु ॥ रज्जब तिनहुं चल्या फिरै । निरबैरी सु दयालु ॥ ४३ ॥

दया अदया मिश्रित दोष।

समरथ मारि जिला वणे । दोष दयामें जाण ॥ अमरसजी बनि राखतूं । बेत्ता करौ बखाण ॥ १ ॥ पुनिसु पाणी स्वाति-का । सुरति सु सीप मझार॥पाप पणिगा खारजल । मत सुकता मिलिखार ॥ २ ॥ खहर खहर सों मिलतही । खल हल होय सुखाश ॥ बेकीमतसु बदी बंधै । नेकी होतसु नाश ॥ ३ ॥

चौपाई।

ज्योंमिश्रीमांहि घोलि विष पीजै । त्योंसुकृतमें कुकृत कीजै ॥ ४ ॥ दया मध्य दुष्टता ऐसी ।ज्यों घरमां हिंसो डायणि वेसी ॥ १ ॥ पुन्य पिसणताए कठे । तबलग धरमन कोय ॥ भाई हति भाईकूं पोखे । समझें बहु दुख होय ॥ ॥ ५ ॥ महरि कहर माँहै मिली। तौखैर खैरिमें नांहिं । यहु रज्जब अज्जब कहीं । स-माझि देखिमन माहिं ॥ ६ ॥ पुण्य प्रभाकर उदयकूं । पाप प्रचंडसु राह ॥ अंग उजास सुगिल तहें । चखि त्रिभुवन तन बाह ॥७॥ सुतसु कृतकूं गिलत हैं।सांपानि सुधि बिनदास॥पुण्य माधिपा पहि करत । प्राणी जाय निराश ॥ ८ ॥ सुकृतमें कुकृत कुचिल । ज्यूं शशिमध्य कलंक ॥ पुण्य पियूष सों प्राण पोखिये। बपुहुबुराई-बंक ॥ ९ ॥ धरम अस्थानक करमनसोभै । यथा नैन माधि फूल । आतम खांखि अँधियारा भइला ॥ कहिये कहासु सूल ॥ १० ॥

दुष्ट दयाका अंग।

देखहु दुष्ट दयालु गति । ज्यूं बालक पितुमात॥रज्जब काढै मारि सुख । मूरख मांटी खात ॥ १ ॥ सकल प्राण प्रीतम किये।

परहरि कुमति कुसंग ॥ रज्जब कै रस रोस यहु। दुष्ट दयाका अंग ॥ २ ॥ फकिर बायूं सूं रहम करि। बद अमलौं सौं बैर ॥ मिहरि गुसामख सूदजु। रज्जब के नाहिं गैर ॥ ३ ॥ मनि दयाल सुखिदुष्ट गति। यथानीव संयोग ॥ रज्जब कडुवा पीवतां। पीछै काटै रोग ॥ ४ ॥

साखी २९९० ।

कवला काढ अंग ।

रज्जब रिधि रतनों मई। मन समुद्रके माँहिं ॥ कोई जन काढै कमठ व्है। नहीं तनिकसै नाहिं ॥ १ ॥ कवला कालीये कहै। सो देही दह माहिं ॥ कोई ऐक काढै किसन व्है। नही तनिकसै नाहिं ॥ २ ॥ माया माणि मनमुकर सुखि। दुल भिलेणी दोय ॥ रज्जब ठौरसु विषम है। वेत्ताकाढै कोय ॥ ॥ ३ ॥ बीताविरज पारा मई। काया कूप माधि बास ॥ साधू सूंदर परसतूं। बाहर व्है प्रकाश ॥ ४ ॥ आकाश अवनि अरु उदधि अष्टकुल। माया राखी माँहिं ॥ हुकमाहिमत्यूं कर चढै। नाहित लहिये नांहि ॥ ५ ॥ जन रज्जब जल जीवमें। सिरिपट सीर समान ॥ विषम वारितै काढि करि। हंस करै कोई पान ॥ ॥ ६ ॥ मनते माया काढणी। ज्यूं बदहीतें खीव ॥ जन रज्जब बलि बुद्धि उस। महा विवेकी जीव ॥ ७ ॥ कंचन किरची चूणि ले रजमें। पारै पूरि विवेक ॥ तैसे मनते माया काढै। साधू कोई ऐक ॥ ८ ॥ माया मधु विधि काढहीं। मति सागर मधु रिख ॥ तिनकी सरभरि करनकूं। रज्जब बिरला पख ॥ ९ ॥ मन माया मिश्रित रहै। यथा अकालिमें राग ॥ रज्जब रागी ऐकको। दूत दीपक धुनि जाग ॥ १० ॥ काया कुंभनीमै रहै। शक्ति सर्प

औतार ॥ साधू ग्याता गारडी । इनके काढण हार ॥ ११ ॥ मनवां रावण रिधि सुपराण । आसै आदित मांहिं धराण ॥ कब कोई जीवल खमण होय । माया मारि उतारै सोय ॥ १२ ॥ शक्ति सजीवनि जडी ज्यूं । दुर्लभ लईन जाय ॥ कोल्यावैह नुमंत ज्यूं । उरगिरि साहित उठाय ॥ १३ ॥ मनसु मरुस्थल देश सम । शक्ति सलिल अति दूर ॥ साध सगर से काढही । औरों कढैन झूरि ॥ १४ ॥ मन समुद्र माया मुक्त । सुरति सीपके मांहिं । साधू मरजी वें विना । रज्जब निकसै नांहिं ॥ १५ ॥ ज्यों अपछारहा आकाशमें । त्यूं हरि सिद्धि हिय जानि ॥ रज्जब सूरसु संतपरि । उभैं ऊतरै आनि ॥ १६ ॥ नर उराहि मागिर ज्यूं झरैं । साधू सूरज देखि ॥ जन रज्जब तप तापमें । बिगता विगति विशेष ॥ १७ ॥ संसार सूई ज्यों उठि मिलै । साधू चंबक मांहिं ॥ सहारा किसहीका नहीं । बाबै वसत सुबाहि ॥ १८ ॥ माया मन मिसरत सदा । नखसख सानी राम । रज्जब रिधि काढणि कठिन । महासु मुशकिल काम ॥ १९ ॥ जन रज्जब नर नाजमें । उभै ठौर भरपूर ॥ पै बाणी पाणी भेईये । तौ निकसै सकति अंकूर ॥ २० ॥

साखी ३०१० ।

अथ सुकृतिका अंग ।

सकल जोग जीवकूं मिलै । कर सुकृत किन होय ॥ रज्जब पहरै पुण्यकै । नकरि नींद कछु जोय ॥ १ ॥ माया काया कारवी । प्राणहिं प्रहरी जाय । तार्थे रज्जब समै सिरि ॥ सुकृत लीजै लाय ॥ २ ॥ रज्जब पावक प्राणंका । अंत निरंतर बास ॥ तौधन काढो धौम ज्यूं । पहले धरौ अकाश ॥ ३ ॥ जेतां सुकृत कर

लिया । तेता प्राण अधार । जन रज्जब धन धाममें । पीछै चलैन लार ॥ ४ ॥ सुकृत संबल कीजिये । इहिं औसर यहि देह ॥ जन रज्जब यहु सीख सुणि । परमा रथ करि लेह ॥ ५ ॥ गृह दारा सुत वित्तकी । यहु सब झूठी आथि॥जन रज्जब रहसी इता । सुमिरण सुकृत साथि ॥ ६ ॥ शरीर सहित सब जायगा । कहूं कहाँ लग और ॥ जन रज्जब जगदिश भजि । कछु सुकृतको दौर ॥ ७ सकल पसारा झूठका । झूठी जगकी आथि ॥ रज्जब रहसी जीवकन । सुमिरण सुकृत साथि ॥ ८ ॥ सुकृत सिंहही देखितूं ॥ कुकृत जाहीं कुरंग ॥ ज्यों रज्जब रविकी किणीं । तम तुंगनि व्है भंग ॥ ९ ॥ पुण्य प्रभा करके उदय । पाप पुलहिं ज्यूं तार ॥ मन बचक्रम रज्जब कही । तामहि फेरन सार ॥ ॥ १० ॥ धर्म सुकृति कर्मकी । पुण्य पिसाण हैं पाप ॥ एकसु अंतक ऐकको । रज्जब रचेसु आप ॥ ११ ॥ रज्जब ताला पापका। पुण्य कूंची कर राखि ॥ जीव जड्या ऐसैं खुलै । साधु वेदकी साखि ॥ १२ ॥ मनसा मैली पाप करि । पुण्य प्राणी करि धोय ॥ सुमिरण साबुण लावतां । रज्जब ऊजल होय ॥ १३ ॥ अनंतजु आतम कनैं । जुग अनंत नहि जाहिं ॥ धर्म राय देखत चलैं । पाप पिंड पल मांहिं ॥१४॥ तुपक तीर बरछी बहैं । कठिन कालकी चोट ॥ रज्जब कछु लागै नहीं । सत सिप्रकी ओट ॥ ॥ १५ ॥ सत्य यहुका सत रहत है । विघनम विघनों मांहिं ॥ प्रत्यक्ष पेखि पद्ग लिका । पावक परसै नांहिं ॥ १६ ॥ आतम जननी ऊपजै । सुकृत सुतम णिमथ॥जम ज्वाला मातहु टली । राज काज समरथ ॥ १७ ॥ खैर खैरिमां है रहै । या परि औरन खूब ॥ रज्जब करि रंजसि नहीं । मिहर वान मह बूब ॥ १८ ॥ पापीकी पीडा टलै । लेत पुण्यको नाम॥सो सुकृत किन कीजिये ।

रज्जब अज्जब काम ॥ १९ ॥ चंद सूर गगनहिं गहै। दान पुण्य महि थान ॥ रज्जब देणा अति भला। जैहिं छूटै शशि भान ॥ ॥ २० ॥ सुकृत सुत जीवै सदा। द्वै उपकार सहेत ॥ पितासु जस राखै यहां। जहां सुरुचि फल देत ॥ २१ ॥ पुण्य पारस है कल्प तरु। कामधेनु धरजु ध्वनि ॥रज्जब पलटहि प्राण पति। माँग्या मिलैजु मानि ॥ २२ ॥ साँई सुकृत सन्मुखा। साधु वेदकी साखि ॥ सत संतोषजु प्राण पति। सत्य पुरुष उरि राखि ॥२३॥ सोचरहित सुकृत करहिं। सो सुख लैहैं अच्यंत ॥ रज्जब माया ब्रह्मकी। फलैकामना मंत ॥ २४ ॥ सुकृत सुख सबैं सदा। कुकृत दुःख दातार ॥ अब आगै आतम कनें। कदेन छाडै लार॥ ॥ २५ ॥ फिरि आवै तो खैर खजाना। प्रभुकृत रहत पुण्य उपकार ॥ संकटमें सुकृत सगा। मित्र सनेही दोषत पार ॥२६॥ हरिश्चंद्र हेरि गहिये धर्म। मनन डुलाओ कोय ॥ रज्जब रहतों सत्यके। शक्ति सकल फिरि होय ॥ २७ ॥ अहुंठ हाथ हरि हेत दे। तौ पावै उण चास ॥ जन रज्जब जीवकी फलै। सांई दासों दास ॥ २८ ॥ परमा रथमें पिंडदे। सो पृथ्वी पति होय ॥ तिन रोमहुं राजा मिले हिं। नांहीं अचरज कोय ॥२९॥ रज्जब सुखमैं मेलिये। सो सहंस गुन होय ॥ तौ छाजन भोजन साधकों। देतन संको कोय ॥ ३० ॥ खैरि कहै सतरी गुणी। दति सहस गुण लाह ॥ रज्जब बोलै चूकि चकि। जै चह रोटयूं प्रसि शाह ॥ ॥ ३१ ॥ जे आप उतरि रथ देत हैं। परमा रथके प्यार ॥ तौ विविधि भांति बाहन मिलहि। हयगयनर असवार ॥३२॥ सकल करहु परि करनकै। कनक देनका राग ॥ तौ रज्जब पाया तिनहुं। हाथों ऊपरि दाग॥३३॥परमारथी पनिंग पति।सृष्टि भार सिर लीन ॥ तौ रज्जब प्रभु पहमपरि। नांव तिनहुंके कीन ॥

॥ ३४ ॥ ब्रह्मंड बडा परमा रथी । तौ आव बडी दीरब्घ ॥ ये पिंड प्राण सब स्वारथी । बेगि मरै सो अब्ब ॥३५॥

अरिल्ल ।

नेकी ऊपरि धानि बदी धकसु बोलै । घट घट ब्रह्म बसंत तिनहुं सुख पाटसु खोलै ॥ पुण्य पापका फेर सुपलटा आइया परिहां देखो चक्र बदंति सुश्रवणिं सु नाइया ॥ ३७ ॥ रज्जब अवनि अकाश बिचि । सतजत थंभसु दोय॥यों मंदिर आधार यहि ॥ बिरला बूझै कोय ॥ ३८ ॥ षट्र दर्शन अरु खलककी । लेणीं हुवा दुलंभ ॥ रज्जब रहै असंख्य युग । रोप्याकी रति थंभ ॥ ॥ ३९ ॥ परमारथ पृथ्वी बुवै । विभूति बीज हरि हेत ॥ रज्जब रुचि भरिनी पजै । सत्य पुरुषका खेल ॥ ४० ॥ अतीत अवनि हाली सती । बाहो सुकृत बीज । भूखा भोजन करि खडो । समिन होय द्यो धीज ॥ ४१ ॥ रज्जब धरती धरमकी । बाहो बीज विभूति । मेघ मिहरि मीरां कौं ॥ आवै साखसु सूति ॥ ॥ ४२ ॥ षट् दर्शन दल हुआके । सत्य पुरुषके संग ॥ रज्जब विघनन व्यापई । आडा सुकृत अंग ॥ ४३ ॥ रज्जब पावक पापकी । जालै पिंडै प्राण ॥ परम पुण्य पाणी यहासि । शीतल साधु सुजान ॥ ४४ ॥ कुकृत कर्मकु आगिमें । सब जग जलि मठ होय ॥ रज्जब सुकृत समुद्र माधे । तिसहि नहीं डर कोय ॥ ॥ ४५ ॥ रज्जब सुकृत सुकुल पखि । आतम अनकन पोख । कुकृत अंध अधार निशि । भागे भ्रामक दोष ॥ ४६ ॥ रज्जब कुकृत काल ताजि । सुकृत समैंसु आव ॥ मनसा बाचा कर्मना । जी जीवणका आव ॥४७॥ खैर खजाना जीव कन । पिंड पडत पुण्य साथ । सो रज्जब किन कीजियें । धर्म आपणें हाथ ॥४८॥

पिंड पडै पुण्यनां पडैं। परलै पचन न होय॥रज्जब संगी जीवका। सुकृत सिवायनकोय ॥ ४९ ॥ माल मुलक सब जायगा। सगे शरीर सहेत ।जन रज्जब रहसी धरम ॥ जो दिया हरि हेत ॥ ॥ ५० ॥ सौदा यहि संसारमें सुकृत सम नाहिं कोय ॥ रज्जब सो किनकी जिये ।जो आगैकूं होय ॥ ५१ ॥ रज्जब करतां धरमकूं। धुकपुक चित इन आन ॥ आगैकूं सब लई है। रे प्राणी पर वाणि ॥ ५२ ॥ रज्जब ढीलनकी जिये। दासा तन करि दास ॥ संत सुकृत दीसैं सबल। शिव शक्ति बसि जासु ॥ ५३ ॥ संबल सुकृत सो साखैर । रज्जब कह्यासु नाहि गैर ॥ खरच खजाना पुण्य करि हाथ। जो वित चले जीवकै साथि ॥ ५४ ॥ तंदुल कोपी दोवटी । रोटी पइसा पोट॥जन रज्जब सुकृत बंध्या। सम सरिकूं नाहिं जोट ॥ ५५ । रज्जब सांई लग सुकृत सदा। सुखी सुकृती होय ॥ पलटा पूरे पुरुषका । मेटिन सकई कोय ॥ ॥५६॥ दुखित सुदामा क्या दिया। तिमर लंग क्या दादू। भलै भाय पात्रहुं पड्या ।खानि उघाडीं आदू ॥ ५७ ॥ द्रुपति सुदामा दादू दतबी। तिमर लंगका त्याग॥रज्जब पात्रजु पूजते। भूतहूं भूरि सभाग ॥ ५८ ॥ पंच भरतारि पुनिका। कहा सुदामा दीन ॥ जन रज्जव लघुदान पुरि ।बडहु बडी परकीन ॥ ५९ ॥ देखि सुदामां द्रोपदी । दान तन कतुछ कीन ॥ तापरि ताके कनक घर। वाहि आमित पट दीन ॥ ६० ॥ देणां सब ठाहर भला। जे कछु दियाजु जाय। ताहि मांहि विशेष यहु। जुखरचै भगवंत भाय ॥ ६१ ॥ हरि हित दस बंधखर चतू। आवै दसासु द्वारि ॥ रज्जब राजा चोरजम। ले हरि सकैन मारि ॥ ६२ ॥ सर्वस्वदीजतो भला । नहीं तो दस बंध काढि ॥ रज्जब अज्जब बात यहु। बहुत कहैं क्या बाढि ॥ ६३ ॥ अतीत अवनि हाति

सती । बीज बिभूति संभालि ॥ कर सुकतों सुकती किरखि । भूल्यों मुदित हांगालि ॥६४॥कृपन सुगल थनां दानि थनि । अजासु उकरि मांहि ॥ जन रज्जब श्रवते सुफल । नीझर निर फल जांहि ॥ ६५ ॥ रज्जब दुवा फकीरकी । राजेश्वरकों दान ॥ उभै ठौर अघ ऊतरै । मनबच क्रम करि मांन् ॥६६॥ रज्जब अशन बसन अधपति उदिक । साधू दान असीस ॥ सती जती बांछै भला । भला करैं जगदीश ॥६७॥ जे आशिक अलाहके । सोई अतीतूं यार । ज्यूं रज्जब हित बींदके ॥ होत बरातयूं प्यार ६८ ॥ खाणकी सब खलककनैं । खुलावण-कीजु नांहिं ॥ खालिक सबहुं खुला वई । कैखालिक कामई पांहिं ॥ ६९ ॥ सुख दिये सुख पाइये । दुःख दियेदुःख होय ॥ उभै अंगनांकै अनंत । जन रज्जब करि जोय ॥ ७० आतम संभल सोभजग । तीजैं सुख दायक । जन रज्जब सुरकाम ॥ व्है । करि सुकृत लाइक ॥ ७१ ॥ पेट भरया बहु पुण्य करि । धाये धरसु धन्य । रज्जब भूषन भासही । युग युग तिनकै मन्य॥ ॥ ७२ ॥ रज्जब रट रोटी भली ॥ सुकृत सालण लाय । आरति अहरी सु लीजिये । भूख युगनकी जाय ॥ ७३ ॥ रज्जब पोखे पुण्यके।सदा सुखी दरशंत॥दुःख पावै नहिं दिल दया । सुख दाई मनि मंत ॥ ७४ ॥ चतुर प्रहर संतोष व्है । पेटभरै निज अंग । परमारथ परकै दिये । भूख सदाकी भंग ॥ ७५ ॥ परमार्थ पुण्य पोरसा । पाया प्राण पसाव ॥ रज्जब साबति भाव सिर । घटै न खरचो खाव ॥ ७६ ॥ जीव दया जगदीश दत । तब सुकृत सुत होय ॥ तौ रज्जब पुण्य पूतकूं । पावै बिरला कोय ॥ ७७ ॥ रज्जब जीवन जडी न जीव कन । राखी रामजु गोय ॥ दई देय सो पाइये । सुमिरण सुकृत दोय ॥७८॥ परमारथ परलोक धन ।

स्वारथ है संसार ॥ जन रज्जब जांणिर कही । तामांहिं फेरन सार ॥ ७९ ॥ मिनषा देही मोजमें । द्वै करि लीजे मन्न ॥ रज्जब परलोककूं । सुमिरण सुकृत धन्न॥८०॥ सतकी चेरी लक्ष्मी । आदि कहैं सबकोय । जे दरिद्रतो सत्यनहीं । सत्यसं लक्ष्मी होय ॥ ॥ ८१ ॥ रज्जब रिधि चंचल सदा । जैसै बर बिन बाम । पुण्य पुरुष सुन्दरि शकति ॥ नित निश्चल तेहिं धाम ॥ ८२ ॥ रज्जब सदन सरोवर शक्तिजल । शुक्ति मोटी राखि । विभूति बारि ज्यूं ठाहरै ॥ सब संतनिकी साखि ॥ ८३ ॥ सूमहुं सों रिधि रूठिकरि । हेरि छुडावणि हाथ॥ रज्जब राती सखी संगि ॥ भुवाँन छोडै साथ ॥ ८४ ॥ रज्जब रिधि लोहू भरचा । तौ सुकृत सिरही छुडाहि ॥ इहिं कारी करि ऊबरै । नाहीं तो मरि जाय ॥ ८५ ॥ आरंभ मार अपारले । तौ रिधि रुधिर भराय ॥ ताको जीवन जुगति यहु । सुकृत सांगी लाय ॥ ८६ ॥ रज्जब कवला सही कपूर गति । मनबच क्रमहै नांहिं ॥ मोहन हित मिरचों रहै । नांहि तौ उडि जांहिं ॥ ८७ ॥ शक्ति सुमति अपणें घरि आवै । कुमतिजु परघर जाय ॥ मंगल गोटा कैथ फल । नर देखो निरताय ॥ ८८ ॥ सुमति सत्य सुकृतमें । शक्ति रहै ठहराय ॥ कुमति कुसंग कुलक्षणहुं । देखत लच्छी जाय॥ ८९ ॥ धरे मांहिं कर अधरहि पहुंचै । जो बितजीवन्नु ढावै ॥ काया माया छाजन भोजन । भावसु भगवंत भावै ॥९०॥ रज्जब राखोरिधिकूं । भाव भगति भंडार ॥ भण्डारी भगवत भलै । कोई सकैन टारि॥ ९१ ॥ रज्जब राखो भावकूं । खैर खजानां मांहिं ॥ खालि कतहां खजानची । ख्यामति खलहल नांहिं ॥ ९२ ॥ रज्जब रिधि बहती सबै । रहता सुकृतधन्न॥मन साबाचा कर्मना॥सो कछु कीजे मन्न॥९३॥ माल धणी अरु मालकूं । मालकमिलतूं ऐक ॥ जैसें पावक पर

सतै। कणकूक सनबिवेक ॥ ९४ ॥ धन धणी धणि यहुं चढै। हुएसु होते चाहि ॥ कण कूकस न्यौरा नहीं। पावक परसै मांहिं ॥ ९५ ॥ कै हरि सुमिरहुं धरै। कैसे ऐकोई संत ॥ जन रज्जब द्वैकामकी। बाकी और अनंत ॥ ९६ ॥ साधू घटि व्है आदरै। असन बसनकूं राम ॥ रज्जब रिधि आई अरथ। और गई बेकाम ॥ ९७ ॥ अंतरजामी गरभगति। साधू संदरिमांहिं ॥ रज्जब जायें एक कै। दून्यूं पोखे जांहिं ॥ ९८ ॥ ब्रह्म बिरछ धरती धरया। जडसुं जती उंणहार ॥ सेव सलिल मालीसतो। सींचत फलदीदार ॥ ९९ ॥ रज्जब साधू पूजिये। साहिबकी जै यादि ॥ दुनियामें व्है कामकी। बाकी कीसब बादि ॥ १०० ॥ दत गोरख महमद चौबीस। बोधहुं बोध धरे गुरुशीश ॥ दरसन दुनी अतीत अराध। रज्जब साधू मांहिं अगाध ॥ १०१ ॥ षद्र दर्शन चहुं वेद मधि। पूजा भाधि प्रसिद्ध ॥ इनिसे यूं सेया धणीं। बोधि बताई बिधि ॥ १०२ ॥ अंघ्रिपरूपी आतमां। परमार्थ सब ठाठ ॥ रज्जब रिधि सुकृत लगी। सत पुरुषोंकी बाट ॥ १०३ ॥ बैरागर परमारथी। सुकता देय समंद॥त्यूं सत पुरुषोंकी शकति। परमारथीजु यंद ॥१०४॥ विविधि घटा सुकृति श्रवहिं। धरम सुधरती आइ ॥ रज्जब नौखंड नीपजै। दुखदारिद्र सुजाय ॥ १०५ ॥ माया बरषैमेघ ज्यूं। महंत मही-परि आप ॥ अतीत अठारह भार लेंहिं। परमार्थमैं जाय ॥ १०६ ॥ रिधि रहट ज्यूं बहत है। पुरुष पारीछै पूरि॥ खलक खिता खट् खेत मधि। पीवाहिं तन तिणदूरि ॥ १०७ ॥ मकै मदीनें द्वारिका। जीव गया जगन्नाथ ॥ पगहुं पहुंचै प्राणियां। जो लौंच चलैन हाथ ॥ १०८ ॥ पग चलाय पृथी चल्या। हसत चालि हिर दै जीव ॥ रज्जब चरहु चरहु परि। कर कृत पहुंचै

पीव ॥ १०९ ॥ परमारथ पंथी ले गये । शक्ति मिलाई सीव ॥
रज्जब करतां श्याम धरम । द्वैदत पाया जीव ॥ ११० ॥ रज्जब
पावहिं प्राण यहि । साधोंके घरमाँहिं ॥ सुकृत नसीनी स्वर्गकी ।
सती पुरुष चढि जाहिं ॥ १११ ॥ पुण्य पंथ बैकुंठका । पुण्यात्मा
सुजाँहिं ॥ भागौं भाग सुपाइये । साधू मंडल माँहिं ॥ ११२ ॥
शीलवंत सुमिरणकरै । अरु सुकृतकी बाणि ॥ रज्जब मनिषा
जन्मका । फल पाया तिनि प्राण ॥ ११३ ॥ रज्जब रिधिमें एक
फल । जै परमारथ होय ॥ नहीं तो निर्फल निरखिये । बिन
सुकृत महुं लोय ॥ ११४ ॥ रज्जब कुकृत गिरगिजा । करि
टोलणसु सुगम ॥ सुकृत नालि सुशैलसिर । ले जाणीसु अगम
॥ ११५ ॥ रज्जब राम कहै दे रोटी । यापरि तऔर नहीं मोटी ॥
जती सती सीझै इहि ठौर । बाकी वहु बेकामीं और ॥ ११६ ॥
बछ जता सुरही सती । पैरूपी पुनि होय ॥ जन रज्जब इस दरहुके ।
दूधन दत्त बिलोय ॥ ११७ ॥ सति उधरै धर्म सत्य । जती नांव
जत राखि ॥ रज्जब यह दोन्यू भली । सब संतनकी साखि ॥ ११८ ॥
भाव भगति वैराग मधि । शकति भगति सुगिर सत ॥ रज्जब
कही विचार कर । सो धिर साधू मत ॥ ११९ ॥ सतियही सुकृत
चाहिये । जती अजच संतोष ॥ रज्जब दोय विन दोयके । दीसै
दीरघ दोष ॥ १२० ॥ जति तृष्णा सति सूमगति । द्वैठाहर द्वै
भार ॥ जन रज्जब साची कही । तामैं फेरनसार ॥ १२१ ॥ रज्जब
रीती माला रहटकी । पाणी पुण्यन कोय ॥ सतजत घडि बाँधे
बिना । कहने पै क्या होय ॥ १२२ ॥ दान पुण्यजु गृही धरम ।
वैरागी जत जाय ॥ जन रज्जब द्वै कामकी । बाकी सकल
बलाय ॥ १२३ ॥ सरवर तरुवर सतीके । सुरठाहरमत एक ॥
रज्जब जलि दलि समदृष्टि । योही बडा बिबेक ॥ १२४ ॥

॥ अरिल ॥

बैरागी रबिहंगदास दुझि आवहिं। माया छाया ठौर सबै सब पावहिं ॥ उभैन राखहि अंग भंग नहिं जाहिरै। परिहां रज्जब रोपै राम जुगलजग मांहिरै ॥ १२५ ॥ सतीजु तरूवर जतीखग। बैठे आय बिहंग ॥ रज्जब अज्जब यहु मता। सबसों एकहि रंग ॥ १२६ ॥ पंच दोय पूजैं परमारथ । आतम राम सगाई ॥ शिश्नुन सनेह सुस्वारथ सौदा। मनबच क्रमसुठ गाई ॥ १२७ ॥ षट् दर्शन देखैं खुशी। जगजीवन भावन मोचनं ॥ रज्जब पैखे पंच द्वै। सती संपत्रये लोचनं॥१२८॥खलक्कखिताखट खेत मधि। बाहौ सुकृत बीज ॥ रज्जब निपजै भाव भरि। जैन होय यूं धीज ॥ १२९ ॥ षट् दर्शन षट् खेतभल । जगत जिमी मधि जान ॥ ग्यारसि बारसि बाहिये। निपजै एक समान ॥ १३१ ॥ धारा तीरथ धारतलि। देस दिसंतरि नांहिं ॥ त्यूं रज्जब सुकृत भजन। समझि देखि मनमांहिं ॥ १३१ ॥ जीव जीमीं सों जीत है। जयजल उभैन प्रकाश ॥ रज्जब चढतन चढि चढै। उत्तरत प्रकट प्रकाश ॥ १३२ ॥ अवनि भेट आकाशकूं। अंभ अलोय सुजाय॥तापरिजु प्रभू व्यौम व्है। विपुल सुवरिखै आय॥१३३॥ रज्जब देले एककूं। परमेश्वरके भाय ॥ मनमुख माया खरच तूं। सबका सरबस जाय ॥ १३४ ॥ जन रज्जब रिधिरामबिन। स्वारथ खरच्यूं हानि ॥ सुकृत सेवा साधुकी॥ यहु परमारथ जानि ॥ १३५ ॥ रज्जब रिधि स्वारथ गई ! सोठग चोरहु लीन ॥ भगवंत भोग क्यूंनींबडै। हरिहित कदेन दीन ॥ १३६ ॥ हाली भोलै भोगभरि। क्यूं छूटै जीव जांणि ॥ त्यूं रज्जब रिधि रामबिन। स्वारथ खरच्यूं हानि ॥१३७॥ हाली छूटै भोगभरि।

खत्री सहिसिर धारि ॥ जतीसतीसीझै सुयूं । रज्जब समझि विचार ॥ १३८ ॥ कर सासती जती रजपूत । उभैं रामराज अंग में भूत ॥ ग्रहीजु भोग भरै भंडार । बैरागी खायसीस उतारि ॥ १३९ ॥ गाडी गांठि गिली गई । गाफिल कोया साथ ॥ रज्जब रिधि तेतीरही । जुहरि हित खरची हाथ ॥ १४० ॥ रज्जब आतम अवनि परि । बाणी वर्षा होय ॥ उभै अंकूरन भासही । तौ बीज विघन है कोय ॥ १४१ ॥ साधू दरशन देखतैं । दगजु दुरै दिल मांहिं ॥ बीज बल्यासो जाणिये । जोब रव्यूं उगै नांहिं ॥ १४२ ॥ दरशन दाहा देखि करि । मुखाँ कँवलकुमिलाय ॥ तौ रज्जब तिहि दास द्रुमि । सेवा फलको खाय ॥ १४३ ॥ रज्जब सेवा संतकी । मन मैलै करि कीज ॥ सो कृषि कैसें नीपजै । भूंनिजु बाहा बीज ॥ १४४ ॥ दया धरमजो दिलमें नांहिं । गहला ग्यान अग्यानू मांहिं ॥ यूं आंगाक्यूं हो इनसामां । रज्जब आय गया बेकामां ॥ १४४ ॥ स्वारथकी गांठै खुली । सुनिसत गुरुकी शाखि ॥ परमारथ पची हुवा । साधु वेद कहैं शाखि ॥ १४६ ॥ सुमिरण सेवा शब्द मधि । सुकृतका अस्थान ॥ सुर मंदिर सोधैं चलै । रज्जब संत सुजान ॥ १४७॥ रज्जब सत सुकृत विना । सूनें शहर शरीर ॥ अनसन अतीतन पाइये । भूखा जाय फकीर ॥ १४८ ॥ सतीबिना सूने शहर । सती सगाई नाश ॥ रज्जब ऊजडवो दरहुं । अशन अतीत निराश ॥ १४९ ॥ जती सतीकूं पूछई । सबकूं देय बताय ॥ बसंतीमें बसती उहै । नर देखो निरताय ॥ १५० ॥ बसती बंदे ऊजड और । आए गएन पावहिं ठौर ॥ सुफल वृक्ष खगछ न्याबास । निरफल तरुवर जांहिं निराश ॥ १५१ ॥

अंग ९५ साखी ३०६१ ।

दान निदान पुण्य प्रवांणका अंग ।

रज्जब धरिये धर्मकूं । सारे बासरण मांहिं ॥ फूटे भैजोख्यूं घणी । हरि परि पहुंचै नांहिं ॥ १ ॥ जन रज्जब जेहि पात्रमें । दहदिशी दीसै दाय ॥ पाणी पुण्यन मेळही । तबही निकसै जाय ॥ २ ॥ रामविमुख ऊषर सबै । साधु शिरोमणि खेत ॥ जन रज्जब तहां बीजिये । रामराय कणहेत ॥ ३ ॥ रज्जब सुरही श्रपसमीं । पात्र कुपात्रहिं जोय ॥ वहि तृणचरि अमृत श्रवै । वहि अमृत विष होय ॥ ४ ॥ ठौर कुठौरन देखही । इंद्र उदार सुजोय ॥ पै रज्जब निपजै भवै भली । त्यूं ऊषर नहि होय ॥ ५ ॥ खार समंद मुक्ता मुकति । कंदलीक सरि खेत ॥ रज्जब निपजै ठौर । जल । त्यूं पात्र पुनि देत ॥ ६ ॥ सेबेकूं साचा गुरू । भजिबेकूं भगवंत । जल दलकूं ये जीव सब । यहु रज्जब निजमंत ॥ ७ ॥ रज्जब जलि दलि समदृष्टि । सेवा समझे होय ॥ बुद्धि बेटी गुरुविदकौ । जान्यूं देयन कोय ॥ ८ ॥ गुरु पूज्यों गुरु पूजिये । गुरुपू जणकी आस ॥ रज्जब अज्जब यहु कही । सुनहु सनेही दास ॥ ९ ॥

अथ सुकृत निदान अंग ।

तन मन मारै नाम लै । बंदा ब्रह्म समान ॥ दया धर्मका दूजाडेरा । रज्जब किया निदान ॥ १ ॥ रज्जब दीया पाइये । निर वैरयूं निरबैर ॥ तबलग चांकरचूक चाकरी । तन मन किया न घेर ॥ २ ॥ रज्जब दिया पाइये । मारया मारै आय ॥ यहु सौदा संसार मधि । साहि बलियान जाय ॥ ३ ॥

अथ निरबैरी नरमिलाप अंग।

पौंणि पौणिकी कहै न पौंणी। सहरि बसै सब कोय॥ निरबैरी नर नगर बिराजै। मेला जन मिन होय॥ १॥ खानै बहुत खानि सुलतांनों। देखि दरोगहु दोष न कोय॥ कांमि कमेंती निशिदिन लागै। निरबैरयूं मेला नहिं होय॥ २॥ आरभि अटकै आदमीं। सरक्यारतीन जाय॥ निरबैरी न्यारे रहै। क्यूं करि मिलै सु आय॥ ३॥ नरनांपि गनिर बैर जीव जल। हरि सहंस सौं आए॥ बिचि बिगते आतम अंभ दींसै। सांई सूर समाये॥ ४॥ तन तरकसके तीरथे। दह दिशा चलाये॥ सोफिरि बहुरिन मिलि सकै। कछु रोसकसाये॥ ५॥ विविध भांतिकी बंदगी। बहु सेवग लाये॥ साहिब सबमें पैठि करि। सब ठौररजाये॥ ६॥

पात्र कुपात्रका अंग।

पात्र कुपात्र पिछानिये। जैसीरजे करतार॥ रज्जब उनमें रामजी। उनमें विषय विकार॥१॥ विषय विरंचि रामहिं रचै। सारा साधू पात्र॥ जन रज्जबसो पूजिये। सेवा सुफल सुजात्र॥ २॥ जन रज्जब ज्यूं ईख विषि। त्यूं पात्र कुपात्र विशेष॥ पाणी पुण्यसो सींचिये। क्या क्या निपजै देखि॥ ३॥ खलक खबर बिनखारछा। बैन बीज बलि घूरि॥ रज्जब बुधि बसुधा मधुर। उपजै अरथ अंकूर॥ ४॥

साखी ३१८३।

सेवाका अंग।

सेवा सोनां सोलहां। निपजै तन मन मांहिं॥ यहु प्राणी

खित खानि यहु। तेहि घर टोटा नांहिं ॥ १ ॥ खालिक खिदमति खूबखित । बैरागरकी खानि ॥ राम रतन तहां नीकसैं। सोठाहर उरिआन ॥ २ ॥ परमारथ पारस परसि। हंस लोह व्है हेम ॥ जन रज्जब जाणिज्ञु कही। मनसा बाचा नेम ॥ ३ ॥ विविध भांति वित बंदगी। कठिन करि नहिं जात ॥ सेवाके बस साईंयाँ। सुरनर किति एक बात ॥ ४ ॥ रज्जब सेवा बंदगी। दिलि दाता तन होय ॥ सतगुरु सांई साधु सुर। ताकै बसि सब कोय ॥ ५ ॥ रज्जब अज्जब काम है। मनबच बंदा होय ॥ तौ बंदौं बंदा धणी । छान्यां छावै सोय ॥ ६ ॥ बंदौं बंदा है धणी। हरि दासोंका दास। सेवक घर सेवक सुण्या। रज्जब बिरद प्रहास ॥ ७ ॥ भगत बछल भगवंतजी। सुबिन ऐ दासों दास ॥ बहु वलिवंती बंदगी। विरले बंदौं पास ॥ ९ ॥ माया ब्रह्म महंत महीपति। मुलिक मसकति मान। रज्जब बालहिं बंदगी॥मनबच करम करि जान ॥ १० ॥ ऐक मनां दृढ ऐक सौं। तौ क्यौंन निवाजे देव ॥ अंडेसौं बचे भए। रज्जब साची सेव ॥ ११ ॥ खलक मुलक सब सौं मिलै। माया मसकति मांहिं ॥ तथा बंदगी ब्रह्म प्रापति। कुल कारण नहिं कोई नांहिं॥१२॥ विविध वंधायू ब्रह्म पाइये। किरत अनेकौं कोला ॥ अण समझे कूंउलटी लागे। समझेकौं सब सौंला ॥ १३ ॥ महा मोहन बंदगी। मोहै सांई साध॥रज्जब मिहयां क्या कहै। सेवा सदन अगाध ॥१४॥ रज्जब सेवई यार साँईया । सेवाकै बसि साध ॥ जीव सीव सेवा रचे। सेवा महल अगाध ॥ १५ ॥ मनबच क्रमतिरसुद्ध है। मिलै प्राण पति दोय ॥ सेवाकर हाजर हुआ । सेवा हाजर होय ॥ १६ ॥ सेवा करि अकलही कलै। सेवा अवंध बधाय ॥ रज्जब सुरनर सेव बसि । सेवा बडी खुदाय ॥ १७ ॥ बडा बडी

सो बंदगी। जापरि रीझै राम ॥ तो सेवा समकौन है। संतसु धारण काम ॥ १८ ॥ सेवक भाव सो सुरतिमें। सदा रहै ठहराय ॥ यहु बंदेकी बंदगी। आगै खुशी खुदाय ॥ १९ ॥ सेवग मिलैन बिछुडै। जबादिल सेवा माँहिं ॥ रज्जब रच्यासु बंदगी। एक दूसरा नाँहिं ॥ २० ॥ ब्रह्म बंदगीमें सदा। सेवामें सब सिद्धि ॥ खिदमतिमें अजमति रहै। रज्जब पाई विधि ॥ २१ ॥ रज्जब बैठी बंदगी। बंदेके दिल माँहिं ॥ सेवक सेवामें गरकं। सो फल चाहै नाँहिं ॥ २२ ॥ साँई पद सब त्याग करि। सेवकसेवा लेय॥रज्जब मँहैगी रामसों। सो सेवा नहिं देय ॥२३॥ साँई सेवा सो छिलि। सो किसही नही देय ॥ जुग प्रति पालत जुग गये। अरून अघाने सेय ॥ २४ ॥ बाबा देहिन बंदगी। बंदे करहिं कलाय ॥ तौ सेवा समको नहीं। जापरि झगडे आय ॥ २५ ॥ रज्जब जीवन जडीन जीवकन। राखी रामजु गोय ॥ दे देवैतो पाइये। सुमिरण सुकृत दोय ॥२६॥ खिदमति खूबही खूब है। सेवा सब सुख रासि ॥ बडौ बडेहूं बंदगी। जन रज्जब जिस पासि ॥ २७ ॥ साँई सेवै सबनिकूं। साँई कों कोई नाँहिं ॥ मनसा बाचा कर्मना। मैं देख्या मन माँहिं ॥ २८ ॥ रज्जब बेटी रामकी। भगतिसु सेवा अंगं ॥ रिधि सिधिनिधि लौंडी सबै। आवै जिनके संग॥२९॥रज्जब बेटी बंदगी। जाई सिरजन हार॥ जा जीवकूं सो दीजिये। रिसि सिधि बांधी लार ॥३०॥ साची सेवा बंदगी। जापरि रीझै राम ॥ दरस परसदासों मिलै। सेव करीझै काम ॥ ३१ ॥ भगवंत हरि भावै भगति। सो सांई मानी सेव ॥ ब्रह्म कबूली बंदगी। रज्जब पाया भेवं ॥ ३२ ॥ भाव गराही बंदगी। परि किसकैं सो भाव ॥ जापरि अन खानहु रुचै। खेवे काढ्ढे चाव ॥ ३३ ॥ नांव ठांव निज चाल है।

भाव भगति भोजन ॥ यूं प्रसाद लेहिं प्राण पति। देहिसु साधू जन्न ॥ ३४ ॥ प्याले नांव नौबा तके। सीर सनेह पिलाय ॥ रज्जब यहि सेवा करत। साँई बलि बलि जाय ॥ ३५ ॥ सेवा संकट बंदगी। दासा तन दुःख होय ॥ रज्जब भृतभय भीत गति। आसंघि सकै न कोय ॥ ३६ ॥ रज्जब भंजन भावका। सदा रहै भगवंत ॥ जो पंचत्वके पिंडमें। जुगति सु जोड्या जंत ॥ ॥ ३७ ॥ भाव भगतिके भवनमें। गुरु गोविंद व्है साधु ॥ जन रज्जब बडभाग भिख। यहु मन महल अगाध ॥ ३८ ॥ माया मनिख उपावही। हूनर करि सुहजार ॥ त्यूं रज्जब हरि दर्शकूं। सेवा भांति अपार ॥ ३९ ॥ अनेक भांतिकी चाकरी। चाकर चतुर अनेक ॥ रज्जब पावै राजकन। माया मुद्रा ऐक ॥४०॥ बहुत टांगरे बहुत अंग। बणि जै बणियां जीव ॥ रज्जब आरंभै यहि अरथ। लाभसु लछी पीव ॥ ४१ ॥ जीव महाजन अंगटां गरे। करि आए वणि ऐका साज ॥ रज्जब बणिजकरैं व्यापारी। केवल साईं संपति काज ॥४२॥ बिबिध भांतिके बहुत अंग। जीव सौदागर भाय ॥ एक बणिज वित टूटई। एक बणिज बधि जाय ॥ ४३ ॥ बिबिध शास्त्र सैन्या बिबिध। बिधिध सु आयुध राज ॥ इक भंग इक भागई। ऐकसु आवहि काज ॥ ४४ ॥ नौधा करि नर निसत रहि। ऐक ऐक गुण राखि ॥ रज्जब सोसी झैसुणै। वेद वोदकी साख ॥ ४५ ॥ सकल गुणहुं संयुक्त जन। सोतौ आपै आप ॥ पै ऐक सुलखाणि होय मानि। ताहिन तीन्यूं ताप ॥ ४६ ॥ बारह सोळह दुख हैं। राहके तुकी छांहि ॥ रज्जब ग्रह उग्रह सभै। सकल खुला खुलि जांहिं ॥ ४७ ॥ रज्जब राखो बंदगी। जे लघु दीर्घ होय ॥ त्यूं कर अगुरी हालतौ। दागन देवैं

कोय ॥ ४८ ॥ रज्जब रहनकी जिये। जै नुकता निज होय॥ साच ठेलतूं सत्रहरि । बुरा जहै सब कोय ॥ ४९ ॥ केशर कर कांटा चुभ्या। काढ्या किसहीं प्राणि ॥ सेवा मानी सिंहनें। तौ भृत्य गति सत्य जाणि ॥ ५० ॥ रज्जब कुरडी खोरै कूकडी। केवल कणहीं काज ॥ चुगै चुगावै चीटु लौंहु। काढिसु रोडी नाज ॥ ॥ ५१ ॥ गुरु मतनाई जांव धर। भाव बीज बहु बाहि ॥ रज्जब हरि भरि देहिगे। हाली जीवकी चाहि ॥ ५२ ॥ नांव नाज निज बाहिये। ऊगै सेवा घास ॥ रज्जब सोवयूं काटिये। सहंस्र गुणी कण आस ॥ ५३ ॥ गुरु सेवा सिख प्राणकी। सिष्य सेवा गुरु गात ॥ रज्जब दोन्यूं दास हैं। नही स्वामीकी बात ॥ ५४॥ अंतर यामी गुरु भगति! साधु सुंदर माँहिं ॥ रज्जब जाए ऐक कै। दून्यू पोखे जाँहिं ॥ ५५ ॥ पंचों पोख्यूं पोखिये । देखा घट घट प्राण ॥ तैसै रज्जब रामजी। दीवान्यूंदीवाण ॥ ५६ ॥ साधू निर्मल आरसी। हरि आभों बिन भान॥ रज्जब भोजन भाव बिचि। अन खानोंसौं खान ॥ ५७ ॥

साखी ३२३९ अंग १०० ।

सेवा सुमिरणका अंग।

आरंभ करतन हरत हैं। अबलाका आधान ॥ तौ सेवा सुमिरण क्यूं घटै। समझौ संतसु जान ॥ १ ॥ संकट नांहीं शेषकूं। यद्यपि सिरपर सृष्टि ॥ रज्जब भंगन भजन माधि। परमा रथमें दृष्टि॥ ॥ २ ॥ वृक्ष बधी रतनां घटै । मिटहिन फलहि सु पोख ॥ तौ रज्जब भृत्यकृत करत । भजनन उपजै दोष ॥ ३ ॥ बादल विद्या धर फिराहिं। पारि बरिन विद्या छीन ॥ तौ टहल करत टहलै नहीं। जै हरि उरसों लीन ॥ ४ ॥ गुरु सेवा गोविंद भजन।

उभै बात बित ऐक॥ रज्जब बीरज दालि द्वै। अंब अंध्रिपा ऐक ॥ ५ ॥ गुली बंध द्वै दालिकै। बीज्यूं वृक्षसु ऐक ॥ त्यूं सुमिरण सेवा धणीं। रज्जब समाझि विवेक ॥६॥ सुमिरण सुकृत सों भला। सब काहुका होय ॥ रज्जब अज्जब उभै गुण। करतन संकहु कोय ॥ ७ ॥ जन रज्जब गढ ज्ञानकै। दीसै द्वै दरबार ॥ ऐकै सुमिरण संचरै। ऐक पुण्य व्यवहार ॥ ८ ॥ जहां सुमिरण सुत उपजैं। तहां पै परमारथ होय ॥ रज्जब देखो दृष्टि सौं। सदा समीपी दोय ॥ ९ ॥ जहां सुमिरण सुत उपजै। तहां दासा तन दूध॥ मनबच क्रम रज्जब कही। बात विमल तिर शुद्ध ॥ १० ॥ सुत सुमिरण जीवन जुगति। पै परमारथ पोख॥ रज्जब देखौ देखिये। द्वैकै द्वैबिन दोष ॥ ११ ॥ औषध बिन पथ्य क्या करे। पथ्य बिन औषध बादि ॥ यूं सुमिरण सुकृत अ-मिल। उभैन पावहिं दादि ॥ १२ ॥ जीव जगत गुरु नांव नि-ज। यूं सुकृत रूप शरीर ॥ उभै मिलत आनंद अमर। मिरं तगि अमिल सु बीर ॥ १३ ॥ ब्रह्म आतमा सुमिरण सेवा। जग पति जोडा साज॥ इनहिं मिलत सुनिसुख सुत उपजै। अमिल तहां दुःख राज ॥ १४ ॥ सेवा सुमिरण पाव प्राणके। हरिके मारग जोग। इन चरणों चलि जाय ब्रह्म पूरि। बिचि बल बिरह बियो ग ॥ १५ ॥ तबलग मात्रा कामकी। दोषहु आखिर संग ॥ जन रज्जब रामहिं लगे। सकल सुकृती अंग ॥ १६ ॥ राज काजको देखि यहि। चतुरंग सैन्या संग ॥ तैसै रज्जब नांवकन। सकल सु कृती अंग ॥१७॥ श्रीमण्डलकूं तार बहु। सो सुर साधुन साज॥ त्यूं रज्जब सुकृत सबै। नांव निरूपन काज ॥ १८ ॥ सुकृत सेन सुगंध सब। मिलै अरगजा होत ॥ रज्जब लाय कनां वहीं। नांव निरपती गोत ॥ १९ ॥ रज्जब पंखी नांव परि। पंख सबै सुकृत॥

उभै अंग ऐकै भए। अगम अकाशहि जत ॥ २० ॥ सकल प्राण पति साँईयां। त्यूं सुकृत पति नांव ॥ उभै अंग लागै इनहुं। जन रज़्ब बलि जांव ॥ २१ ॥

साखी ३२६०।

सत जत सुमिरण मिश्रित अंग।

सत जत सुमिरण सारिखा। जीवकै समान और ॥ वह सुख दाई प्रवृति है। वह पहुं चावैं ठौर ॥ १ ॥ सतसुख दाई जति जतन। नांईं लगै निस्तार ॥ जन रज्जब जग जीवकूं। तीन सगे संसार ॥ २ ॥ नर निस्तारा नांव लगि। पुनि राखै सतजत। रज्जब कही विचार कर। सोधिर साधू मत ॥ ३ ॥ सीझै सीझै सीझसे। सतजत सुमिरण माँहिं। मनसा बाचा कर्मना। चौथी ठाहर नांहिं ॥ ४ ॥ सहति सहित सुमिरण करै। सतवादी अरु शूर ॥ रज्जब तिनसों रामजी। कहो किती एक दूर ॥ ५ ॥ सुमिरण सुकृत शील ब्रत। जिनकूं देकर तार ॥ रज्जब पाई मौज सुर। धन्य जन्म अवतार ॥ ६ ॥ रज्जब जतमें जोग सब। धर्मदया अ-स्थान। नांव ठांव निर्गुण रहै। मनवच क्रम करि मान ॥७॥ सत जत सुमिरणमैं रहै। सांई साधू दोय ॥ जातिन जोवै जगत गुरु। ठाहरि डेरा होय ॥ ८ ॥ धन्य शरीर सुकृत करहिं। जप तपके प्रति पाल ॥ रज्जब पाई मोज सुर। भागभलेतेहि भाल॥ ॥ ९ ॥ रज्जब सुमिरै रामजी। सतजन सुमिरण साज ॥ मनवच क्रमता रहित रहि। जगजस निधि सुजहाज ॥ १० ॥ शील रहै सुमिरण गहै। सत्य संतोषण नेह ॥ रज्जब प्रत्यक्ष रामजी। प्रकट भये तेहि देह ॥११॥ ऐक रहतर रंकार रत। तीजै सतीसु होय॥रज्जब पाई मौजसुर॥तासम औरन कोय॥१२॥ हरि हृदयन

बिसारिये। इन्द्रयूं राखि जतन ॥ रज्जब सतजत मांहिले। पाए प्राण रतन ॥ १३॥ इन्द्रयूं जत हाथों सती। मुख मीण उर नांव॥ जन रज्जबता संतकी। मैं बलि हारी जांव ॥ १४ ॥ द्रग दर्शन साधू सुखी। रसना ररंकार। रज्जब आतम राम रुचि। ते बिरला संसार ॥ १५ ॥ साच बाच मांहैं सदा। शीलसिसिनठ हराय ॥ रज्जब ररंकार जन। महिमा कहीन जाय॥ १६ ॥ साच सहित सुमिरण करै। सत वादी जीवजंत्र ॥ रज्जज रीझा देखि करि। नमोनमो निज मंत्र ॥१७॥ जतमत माँहे पाव द्रढ। सुमिरै सांई नांव ॥ रज्जब सत सुकृत लिए। ताकीमै ब्रलि जांव॥ ॥ १८ ॥ सुमिरण सुकृत साच बाच गुरु। प्राण सनेही पंच ॥ रज्जब रहिये सगहुमें। तौन लगै जम अंच ॥ १९ ॥ सम्पूर्ण सुकृत शील साचसों। साहिब हासिल होय ॥ चारि युगजु चारयूं सगे। रज्जब देखो जोय ॥ २० ॥ सुमिरण सुकृत श्रवण धरि। साचजु शील प्रवेश॥चारि पदारथ प्राण गहि। यहु उत्तम उपदेश ॥ २१ ॥ भाव भगति सुकृत लिए। जै जत सुमिरण होय ॥ मिनखा देही चतुर फल। पावै बिरला कोय ॥ २२ ॥ आदमकी औलादकूं। बडे चाहिंयें काम ॥ साच सहित सत जत लिए। रज्जब सुमिरै राम ॥ २३ ॥ मिनखा देही चतुर फल। भाव भगति जत जाप॥ रज्जब दीए रामजी। आदमकू ये आप ॥ ॥ २४ ॥ भाव भजन भामां रहित। पुनिले सत संतोष ॥ पंच पदारथ पाइये। रज्जब लहिये मोष ॥ २५ ॥ दया धरम निर्वैरता। साचर सुमिरण मांहिं ॥ पंच पदारथ कर चढै। रज्जब टोटा नांहिं ॥ २६ ॥ रिधि सिधि निधि मुक्ति सहित। रतन पदारथ सब्ब ॥ रज्जब पावै रामसौं। जीव जुसुमिरै अब्ब॥ २७ ॥ भाव भगति जतसत संतोष। ज्ञान ध्यान धीरज ध्वनि मोख ॥ क्षमा

दया दासा तनलीन। रज्जब राम चौदह दीन ॥ २८ ॥ भाव भगति गुणज्ञान गरीबी। साच शील संतोष॥दयाधर्म पति व्रत क्षमां नित ॥ है पारिख प्रभु पोष ॥ २९ ॥ वपुबल विद्या बुद्धिबल। बलत बली बल राम ॥ रज्जब पाए पंचबल क्यूंन सरै जिव काम ॥ ३० ॥ पिंड उपना पाज कुलि। प्रांग गुहनत मधि ॥ रज्जब पाई मौज हुर ॥ पामर क्या देहि बधि ॥ ॥ ३१ ॥ रज्जब अजब बन्तुकी । साहिबजीका नाम ॥ मिनष देहका फल मिल्या। यही औरपहि ठांव ॥ ३२ ॥

साखी ३२०१।

रत विक्तका अंग।

जा मायामें जग खुशी । साधूके दुख सोय ॥ रज्जब रजनी एकमें। घूघू चकवा जोय ॥ १ ॥ जा जलसों वन वृक्ष व्है। सोही जवासे हानि ॥ रज्जब रिधि जीवनि सबों। साधौं मिति कही जानि ॥ २ ॥ रज्जब सुख संसारका। साधूके दुःख हानि ॥ जीवहु जीवनिमीचसुनि । रत विरक्त गति जानि ॥ ३ ॥ साधु असाधु यों शक्ति मधि । ज्यूं मराल जल मीन ॥ रज्जब दीसै भिन्न गति । होतहुं अंमस्तु भीन ॥ ४ ॥ रज्जब ऐक पूत माताहिं भखे। ऐक मात सुत खाय॥विभूति सुबिछुनि व्यालनी। नर देखो निरताय ॥ ५ ॥ जो तत्व चौरासी चरै। ताकूं चुगै चकोर ॥ ऐसैं माया मानिष सुनि । देख्या द्वै दिशि ठौर ॥ ६ ॥ चौरासी लख जंतसु संत चकोर हैं। बन्हि प्रकट विभूति बहुत आतम दहैं॥ ऐकहु अंन अहार ऐक संघारिये। परिहां ऐकहु जीवन जडी। ऐक पुनि मारिये॥७॥ बरतणि बरतैं साधु सिद्ध। सोई शक्ति संसार॥ रज्जब रिधि जीवनि तिनहुं। मानि मानि

भिन्न बिचार ॥ ८ ॥ मायाकेत्यागे मिनख। आपद वंत अपार॥ रज्जब चलहि विभूति तज।। ते बिरला संसार ॥ ९ ॥ रज्जब रूठा रिद्धि सों। कोई कोटिमधि ऐक ॥ मनमाया सों मिलि चलैं। एसे प्राणी अनेक ॥ १० ॥ शक्ति शूर सम देखिये। नर नैंनासु अनेक ॥ उभै उभै अंग मिलि चलैं। तहां घूघू कोई ऐक ॥ ११ ॥ चौरासी चेतन है। माया मेघकी पोख ॥ जन रज्जब सोजग जुदे। दोन्यूं उपजैं दोष ॥ १२ ॥ रज्जब मन माया बँधे। ज्यूं अहि कठिन करंड ॥ त्यागीतारवाक्यूं बँधै। जामै अगनि प्रचंड ॥ १३ ॥ माया दीपक देखिकर। नैंन नरों ठहै पोख ॥ तहां ऊंदरे पतंग जीव ॥ तिनकूं उपजै दोष ॥ १४ ॥ काया काष्ठ प्राणी पावक। सांई शून्य समान ॥ इन दोन्यूं पलटै सो पावै। तीजै पद निर्बान ॥ १५ ॥ अरवाहि तले औजूदकै। तबलग माया रूप ॥ प्राण पुरुष जब पिंडपरि। तब निज तत्व अनूप॥ १६ ॥ वो ओंकार उपरी शक्ति। बूढे प्राण सँवार। रज्जब रिधि आतम तलै। ते तिरि लंघे पार ॥१७॥ काया मशक विणे जल भरिया। यहुजल जलमैं भारं ॥ सो रीतिकर भरों ज्ञान दस। रज्जब उतरौ पारं ॥ १८ ॥ काया सिर धरि बूडिये। तनता लेढे तिरि झाय ॥ जन रज्जब यूंजानिले। जीवन मरन उपाय ॥ ॥ १९ ॥ रज्जब बूढे आतमां। सिरपर सिला शरीर ॥ सो बपु बोहिथ पाव तलि। तिरिये जलगंभीर ॥ २० ॥ हंस अंस देही टलै। मिलै सुमाया मंड ॥ पिंड प्राण न्यारे भए। सहजितजे ब्रह्मंड ॥ २१ ॥ प्राण पिंड पहराइये। तबहीं सकल उपाधि ॥ न्यारे नारायण कला। सहजैं होय समाधि ॥ २२ ॥ गुड महुवा अरु बेर जड। अगनि उकक मिलि मद्य ॥ ऐ रज्जब न्यारे निर्मल। संगति हीसों रद्द ॥ २३ ॥ नर नारीका बंध दृढ। मुक्ता

मदन खुलान ॥ रज्जव समझ उभय घर। संकट मुक्त सुजान ॥ ॥ २४ ॥ ऐक गया निज काम करि। ऐक गयाबेकाम ॥ रज्जब एक विमुखे बसत। ऐक सन्मुखे राम ॥ २५ ॥

अथ सुमति कुमातिका अंग।

रज्जब मन माया सब ठौर है। परि सुमति कुमतिका फेर ॥ वहपहुंचावै स्वर्गकूं। वह नरकन जांता वेर ॥ १ ॥ सुमति पंथसो स्वर्गका। उत्तम ऊंचे जांहिं ॥ दुरमति मारग दुरमति। रज्जब नर किस मांहिं॥ २ ॥ दुरमति दिल दीरघ दुःखी। सुमति सदा सुख राशि। जन रज्जब जो दूर कहिं। देखौ साकल बिमांस ॥ ३ ॥ कुमति कुकरमहु कूद है। सुमति सुकृतहुं मूल ॥ जन रज्जब जानी जडी। उभै ऐक अस्थूल ॥ ४ ॥ रज्जब बंटा भावके। गुण अवगुण सुखिलार ॥ ऐकहुं जीत्यूं स्वर्ग व्हे। ऐकहु नरक वि-हार ॥ ५ ॥ आदमईदम ओलिया। आदमईदम होय ॥ सूरौ स्वान मनिष सही। रज्जब लक्षण जोय ॥ ६ ॥ रज्जब दास भाव सुत सुमतिका। मोहै आतम राम ॥ कुमति कूखि अभि मान व्है। माबेटेबेकाम ॥ ७ ॥ पंच तत्व सों धर्म व्है। पंच हीतत्व करम॥बरतणि ज्ञान अज्ञानकी। रज्जव लह्या मरम॥ ८ ॥ इंद्री आभे ऊनवन। तबलग खिवणि खिवाहिं ॥ समझि शुन्य सुतकै फिरै। मनसा बीज बिलाहि ॥९॥ आतम अंभ अकारमैं। तवलग नीचे जांहिं। जन रज्जब तन त्यागतै ॥ उभै अकाश समांहिं ॥ १० ॥ अनल अंड अज्ञान. गति। तवलग नीचे जांहिं ॥ रज्जब पाए ज्ञानपर। उलटे शुन्य समांहिं ॥ ११ ॥ अंडा अवनिन छाडई। बिना पंख परगास ॥ रज्जब रहसी रज पड्यां। गामिन गगन निवास ॥ १२ ॥ तेरू तोयं तिर चलै। अतेरू जल

बूडि ॥ कुट पंखीं पृथ्वी पड्या । स पंखां जांय उडि ॥ १३ ॥ अचेत अंगलोहामई । छित छाडै नहिं अंग ॥ रज्जब सो रज त्यागिदे । चेतन चंबक संग ॥ १४ ॥ रज्जब नरक नहोनिह्चकामको । तापरि करहुन बाद ॥ देखौ दुरमति धीबिनां । दोजकनेही दमाद ॥ १५ ॥ स्वरग स्थाने सुख नहीं । दुःख नहिं दोजक माँहिं ॥ रज्जब शीतल तपति जीव । आपदशा लेजाहिं ॥१६॥ अग्नि अज्ञानी देखिये । ज्ञानी शीतलनीर । रज्जब दोन्यूं ठौरका । न्यौरापाया बीर ॥ १७ ॥ दुरमति दारूसों भरे । बपुसु बांन विधि माँहिं । रज्जब त्रिगुणी जरे विन ॥ निहचल उभैसु नांहिं ॥ १८ ॥ कठिन कुमतिकी गाठि है । दई मुगध मन घोलि ॥ जन रज्जब सो सुमति बिन । कोई सकेन खोलि ॥ ॥ १९ ॥ मूंजजेवडीरु सुग्ध मति । गांठि गर्वकी देय ॥ जन रज्जब खोलण मतै । तामस तोयं भेय ॥ २० ॥ कूवै कछप कोल घरि । त्यूं कुमति सुकाया मांहि । जन रज्जब तीन्यूं ठहे । कबहूं उबरै नाँहिं ॥ २१ ॥

शक्ति उभै गुणी अंग ।

माया बेडी बेडी माया । हरिसिद्धिका भेद सुपाया॥नरकन शीनी स्वर्ग विवान । रज्जब रिधिके दोय बखान ॥ १ ॥ स्वारथ परमारथ शकति । तौ धीरगमाया धन्य ॥ रज्जब रुचैसु काढिल्यौ । जोहै जाकै मन्न ॥ २ ॥ परमारथ यहुपै मिलै । स्वारथ पडै अहार ॥ रज्जब त्रिगुणी तिल्लीमें । समाझि करो व्यवहार॥ ३ ॥ थोडा थोडा कौन दिशि । चढि चौगन खिलाय ॥ यूं स्वारथ परमारथहिं । शक्ति चलै समभाय ॥ ४ ॥ माया ब्रह्म ब्रह्म सोई माया । काया काष्ठ भेदसुं पाया ॥ जागें जोति सोवतैं कठें ।

समझै नांहिंसो मूरख शठैं ॥ ५ ॥ अठार भार उभै गुणी । हरि सिधी गुण दोय ॥ याहीमें जीवनिजडी । याही सुमिरत होय ॥ ६ ॥ इक बहनीरविभूतिमें । दोदो गुण इनदोय ॥ एक बधै यक बालि यह । बनि बपु देखो जोय ॥ ७ ॥ रज्जब माया मन सम । बैरी मीतन कोय ॥ कूकृत उपजै इनहुंसों । इनसों सुकृत होय ॥ ८ ॥ जिव्हा रूपी जीव है । दांत मईसु शक्ति ॥ येस सत्र रसना हये । समझचा साधु मत ॥ ९ ॥

साखी ३३४८ अंग १०१ ।

मायाजड चेतन अंग ।

रज्जब जड चेतनदरशै । गुरुग्यातहुके संग ॥ लोहा पारस मिरतग जीवसे । परसत पलटै अंग ॥ १ ॥ नर नगमादा थाव रजंगम । विछुरे बहुरि मिलाहिं ॥ यूं माया मूई जीवती देखहि । मुनिवर नैंनहुं मांहिं ॥ २ ॥ हाथा जोडी मूसलमेलै । चंबक सुई चलावे ॥ जन रज्जब जडचेतनि दीसहिं । जे सतगुरु दिख लावै ॥ ३ ॥ रज्जब बसुधाबीज जड । मिलतौं चेतनि होय ॥ तौ दीसैं सब जीवतें । मूवा नांहि कोय ॥ ४ ॥ काचा ऊगै कुंभनी । पाका काया माँहिं ॥ जलदल दीसैं जीवते । कहो कौन विधिरवाहिं ॥ ५ ॥ माया अमर मरै नहीं । बाली बलन घटाहिं॥ रज्जब रिधि दारूदसा । दगध सुगंध उडाहिं ॥ ६ ॥ सितिया शक्ति समानहै। संकट स्वादसु पुष्टि॥माया मिश्री मरदत दीपही । दोखै कोदिव दृष्टि ॥ ७ ॥ रज्जब ओषधि रोग लडाई । जडों माँहिं चेतनि गति पाई॥तौ मूवै मूवासों कोई नांहिं । जिवनगति दीसै सब मांही ॥ ८ ॥ पंचतत्व जीवहिं सदा । आतम अमर अनादि ॥ जन रज्जब बिछुरहिं मिलहिं । मूए कहैं सुवादि ॥ ९ ॥

ब्रह्मकाम ब्रह्मंड सुचेतनि । रज्जब रजा सुहोय ॥ मूई जीवति मांडूकूं । बूझै बिरला कोय॥१०॥ माया मनसामरैनकबहूं । जाल्यूं भूत होत है अबहुं ॥ जड चेतनि देखी हरि सिद्धि । मूई जीवतौ खोय सुगिद्धि॥ ११ ॥ गुड महुवा अरुबेरि जड । जिमि ज्वाला मिलिमद्य ॥ यूं पंचतत्व मिलि माया जाकी । जीव करनकूं रद्द ॥ १२ ॥ रज्जब मूई न मृतिका । अदभू ऊगै मांहिं ॥ अंतक सुखि अबला भए । तनै तनैईया नांहिं ॥ १३ ॥

मायाका अंग ।

रज्जब आतम राम बिचि । कनक कामिनी कोट ॥ यहु आडा अंतर इहै । यहु पडदा यहु ओट ॥ १ ॥ माया बांध्यूं मन बंधै । खोल्यूं खुलता जाय ॥ रज्जब ग्रह उग्रह कह्या । नर देखो निरताय ॥ २ ॥ ब्रह्मांड छिप्या फूलहु तलैं । केतक बढे सुजोय ॥ त्यूं लघु मया दीरघ ब्रह्म । परजीवसु आडी होय ॥ ३ ॥ मन माया सों बंधि करि । निश्चलकदेन होय ॥ रज्जब पिंडा चाकरी । अस्थिर सुण्यान कोय ॥ ४ ॥ रज्जब माया मिलत दुःख । बिछु-रत विहरै प्राण ॥ करवत सेती सांणकै । आंवण जांणैं ज्यान ॥ ५ ॥ बांणि अनारवित आए फाटैं । नीर गएपर फाटैं ताल । त्यूं रज्जब संपत्ति विपत्ति । मनकूं करैं विहाल ॥ ६ ॥ रज्जब रिधि बाहिली रमतही । जीव मांहिला जाय ॥ तौ मन माया मीन जल । नर देखो निरताय ॥ ७ ॥ रज्जब राचैंहि रिधिसों । मिलहिं मानवीं आय ॥ बिरचै सोई विभूति विन । जब संकति सदनसों जाय ॥ ८ ॥ धर धामनि यहु पुरुष गति । सोवन सुत उनहार ॥ रज्जब जातगजारकैं । भरमि भूलि भरतार ॥ ९ ॥ माया मारै मींच व्है । विणबाछीही आय ॥ रज्जब सिध साधिकडसै । सो-

टाली नहिं जाय ॥ १० ॥ जो माया मुनिवर गिलै । सिध साधिकसे खाय ॥ तामायासों हेत करि । रज्जब क्यूं पतियाय ॥ ११ ॥ एक गए नट नांचिकर । एक कछे अब आय ॥ जन रज्जब इक आयसी । बाजीरची खुदाय ॥ १२ ॥ माया तरुवर पत्रघट । इक उपजै इक जांहिं ॥ रज्जब पूरण दशोंदिशि । रीती कबहूं नांहिं ॥ १३ ॥ ज्यों सूरिज दीसै समुद्रमें । मीन मरै नहिं कोय ॥ त्यूं रज्जब माया मगन । हरिगुण लिपत होय ॥ ॥ १४ ॥ पडदा परबत पलकका । उभय एक करि जांण ॥ जन रज्जब जोंख्यूं इहै । हरि देखणकी हानि ॥ १५ ॥ नांमरदों भुगती नहीं । मरद गए करि त्याग । रज्जब रिधि कारी छुयूं । पुरुष पाणी नहि लाग ॥ १६ ॥ चेरीके चेरे किये । चौरासी लक्ष जंत ॥ तौ रज्जब कहि कौन है । शक्ति समान महंत ॥ १७ ॥ रज्जब शक्ति सुमेरु सम । चरण चकुहु दृढ बास ॥ सोठाहर छोडै नहीं । छाया निसनर नास ॥ १८ ॥ मौनगदी परि होत हैं । चाकर मनिखाखानि ॥ सो सब एक समान हैं । रज्जब फेरन जानि ॥ १९ ॥ माया मुख बोलै नहीं । सदा लिए चुपचार ॥ रज्जब बकते सब फिरैं । इसमौंनणिकी लार ॥ २० ॥

साखी ३३८१ ।

शक्ति शिवशोध अंग ॥

ब्रह्मंड पिंड प्राणी सहित । यहु सब रिद्धि शरीर ॥ रज्जब पावै कौन विधि । शक्ति समुद्रसु तीर ॥ १ ॥ ब्रह्मंड पिंड जीवजोति लाग । मधि माया सुररूप ॥ रज्जब निकसै कौन विधि । रिधि छाया हरि कूप ॥२॥ वोओंकार आतम सहित । तन मन शकति शरीर॥रज्जब न्यारा रिधिसैं । कौन कौन विधि बीर ॥३॥ ब्रह्मंड

पिंड मांहै रहै । पुनि मन मनसा मांहिं ॥ रज्जब रमहिं सुरिधिमें । बाहरि कहिये नांहिं ॥ ४ ॥ लागीसो त्यागी तबहि । मोहि कहो समझाय ॥ एक ब्रह्म दूसरी माया । यहु संशय नहिं जाय ॥ ५ ॥ जन रज्जब मन शून्य सम । बादलमें सु विभूति ॥ सगुण निरगुण संगिसो । क्यों काढिये सुसूति ॥ ६ ॥ माया बादल बारि गति । आतम शुन्य समान ॥ सरगुण निरगुण शक्ति व्है । रज्जब रिधि सान ॥ ७ ॥ ज्यूं कूकस कणमे रहै । त्यूं मामा माधि प्राण । जन रज्जब यहु जुगलयूं । करै कौण विधि छाण ॥ ८ ॥ ज्यूं कायहि छाया लगी । क्यूंही छूटैं नांहिं ॥ त्यूं रज बिरक्त रज्जबा । दीसैं माया मांहिं ॥ ९ ॥ पाणींमें प्रतिबिंब देखिये । नहींत दीसै नांहिं ॥ रज्जब जीव जीवै सुयूं । माया काया माँहिं ॥ १० ॥ शक्ति सलिल मांहै प्रसै । प्रति बिंबही परि प्राण ॥ जबलग व्है नांही नही । समझौ संत सुजान ॥ ११ ॥ शरीर सुखी व्है शक्ति माधि । औरै देयगरास ॥ बिन माया घरि घरि फिरै । छाजन भोजन आस ॥ १२ ॥ पिंड प्राणमें माया सानी । ज्यूं आटे मेंलूण ॥ सुमिरण सितया स्वाद ढांकिये । मिली सुकाढै कौण ॥ १३ ॥ रज्जब बाल विभूतिके । मूलसु तनमन माँहिं ॥ कोटि बार काटयूं अटक । जड निकसै सो नांहिं ॥ १४ ॥ शुन्य स्वरूपी साँईयां । बादलमें सु विभूति ॥ रज्जब प्रकटै गुप्त व्है । सदा रह यहि सूति ॥ १५ ॥ सलिल शरमें सरगुण निरगुण । पुनिह पेख तू प्राणी ॥ जीव ब्रह्ममें ऐसें दीसै । प्रगट गुप्त गति जाणी ॥ १६ ॥ जीव ब्रह्ममें सरगुण निरगुण । तबलग माया मानि ॥ रज्जब रजतज काढतों । एकमेक भिन्न जानि ॥१७॥ जीव ब्रह्ममें तबलग माया । एकमेक भिन्नभेद सुपाया ॥ ज्यूं शुनि माँहै आभेनीर । सरगुण निरगुण होहिं शरीर ॥ १८ ॥

पान फूल फल सब गए । तरुन सूसूके अंग ॥ रज्जब गत जामण मरण । छाया माया संग ॥ १९ ॥ दीसै बाहरि भीतरि बैठी । जांमण मरणसु आगै पैठी ॥ माया जीव जीवसोई माया । रज्जब छूटै न छूटै काया ॥ २० ॥ काल कायासों काढई । पै माया कढै न मन्न ॥ सौ विक्रत व्है कौन विधि । समझो साधू जन्न ॥२१॥ स्वपनें तजै शरीरकूं । तौ तन गया न त्याग ॥ त्यूं विक्रतसु विभूति मधि । जै देखहि जीव जागि॥२२॥एक ब्रह्म दूसरी माया। जीव सीवका भेद सुपाया ॥ शक्ति समुद्र जीव जल चरा । भरम पुकारै बाहिर परा ॥ २३ ॥ तन मन मनसा जीवलग । यहु माया मरजाद ॥ रज्जब बसुरतिनए तजैं । त्यागी कहैं सुवाद ॥ २४ ॥ शक्ति सौंज सब देखिये । ब्रह्मंड पिंड लग प्राण ॥ रज्जब रटबिन षट् दरश । मायामें सब जाण ॥ २५ ॥ षट् दर्शन अरु खलक सब । मायाके मुख मांहिं ॥ रज्जब निर्गुण मिले बिन । न्यारा कोई नांहिं ॥ २६ ॥ रज्जब गुण इंद्री सब दंत है । मायाके मुख मांहिं ॥ सुरनर चावैनाज ज्यूं । कोई छूटै नांहिं ॥२७॥ नगन रहो वसतर पहरि । माया मींच ज्यूं खाय ॥ भजन विमुख छूटै नहीं । रज्जब उभय उपाय ॥ २८ ॥ सिंहनी शक्ति सिंहजिमि । चौरासी चुनि खांहिं ॥ नांगहु बागहुंनां डरहिं । गूदडि गुदरिन जांहिं ॥ २९ ॥ सकति सिंहनें सिंह जम । सुमिरण मंत्र किलांहिं ॥ रज्जब दशा छतीस धरि । बलि- वंतै बैरीखांहि ॥ ३० ॥ रज्जब खाए व्याल विष । उघडे टंकेन वोत ॥ तैसै माया मींच मुनि । जै जायजीनही होत ॥ ३१ ॥ काया माया सारिखी । आतम आपा ऐन ॥ रज्जब जीव जीवमें रहै । तबलग परैन चैन ॥ ३२ ॥ अस्थूल छलावैका गया । भूत रह्या मन मांहिं ॥ तबलग जीव जीवै नहीं । रज्जब कुशल सुनाँ

हिं ॥ ३३ ॥ मांनि बाइ संगयूं गये । मनकपू रक्त कीन ॥ ज्यूं खग खोजन पाइये । लहैनको मगमीन ॥ ३४ ॥ खानि मांनि-नीचैं दबै । सोनर निकसै नांहिं ॥ जन रज्जब जीव मूढ गति ॥ मिलै मींचकै माँहिं ॥ ३५ ॥ मान मेरनीचे फिरहि । मन पवन शशि सूर ॥ रज्जब सोय उलंघनें । दून्यू दून्यू दूर ॥ ३६ ॥ निश वासुर नीरहिं गहै । आदित्य रूप अरूप ॥ त्यों रज्जब रुचि रिद्धि सों । भेष भिखारी भूप ॥ ३७ ॥ मानि गुपत जन शून्य का । माया प्रकटै नीर॥ तृष्णा आरणकै तपैं । तिनकी मेटन पीर ॥३८॥भाँति भांति की भूख बहु । रिधि सिद्धि पूजा मानि॥कोटि कष्ट तापर करहिं । हरि दर्शनकी हानि ॥ ३९ ॥ जोमत सुखमें माया मँडाण । सुवाहरि कान धरै जीव जाण॥ सबसुर त्यों मधि शक्ति समाणी । बाणन हार इसी विधि वाणी ॥ ४० ॥ शून्य शरीरसु ब्रह्मका । लागी अंगविभूति ॥ रज्जब रिधि विधि सों बनी । क्या कहियेजुस्तूति ॥ ४१ ॥ मन पवन शशि सूर सम । मनसा लच्छी मेर ॥ रज्जब देहि सुरैन दिन । प्रदच्छिन चहुँ फेर ॥ ४२ ॥ माया फेर अरधहीं फिरही । मन पवन शशि सूर ॥ तौ रज्जब कहिको चढै । शक्ति शैल सिर दूर ॥ ४३ ॥ अग्नि पनहिं अलाहिदी । अमर वेलि जड हीन ॥ त्यों रज्जब माया मुकत । ज्यों रज्जब बिन मीन ॥ ४४ ॥ कंचन किरची सोधिये । पारा राखि मँझार ॥ तौ जीवत जीव कैसे तजै । रज्जब देख विचार ॥ ४५ ॥ रज्जब गृही राखै गृह मधि । वैरागी वपु माहिं ॥ धातुसु प्यारी सबहुकों । कोई त्यागै नाहिं॥ ४६ ॥ शून्य सलिल मधि शैल तलि । सांई धरी सकत्य ॥ रज्जब रिधि राखी जतन । नमोनारायण सत्य ॥ ४७ ॥ एक ब्रह्म दूसरी माया । जीव सीवका भेद सुपाया ॥ भजत कमला अभज बला

य । रज्जब रिद्धिन निकस्या जाय ॥ ४८ ॥ चरण कमल प्रभुके सुमरि । आतम कमला होय ॥ रज्जब प्रगटे बस्तु बल । परि लोहा अगनिसु दोय ॥ ४९ ॥ परम जोति बस जोति बहु । सो सो सब शक्ति स्वरूप ॥ रज्जब हीझा देखकर । एक मेक भिन्न भूप ॥ ५० ॥ माया सों माया विरचि । प्रभु पान दिशि जाय ॥ चरण कमल कमला रहै । सो आडी बैठी आय ॥ ५१ ॥ माया छाया ब्रह्मतरू । रहिये डग पग पूरि ॥ रज्जब वर बनिता बनी । करै कौनसो दूरि ॥ ५२ ॥ चरणहु संग सदा रहै । कमला कलित कदीम ॥ सो रज्जब रिधि क्यों रहै । हरिपद भजत फहीम ॥ ॥ ५३ ॥ चरण कमल कमला रहै । तहाँ मुनीश्वर जांहिं ॥ नेति नेति सारे कहैं । मतिगति मायामांहिं ॥ ५४ ॥ काची पाकी शक्ति कन । अकल कल्या नहिं जाय ॥ तौ रज्जब रिधि माधि सबै । नर देखो निरताय ॥ ५५ ॥ कौंला कला असंख्य है । परखैं जौहरी संत ॥ जन रज्जब पारिख बिना । भामा कहै भगवंत ॥ ॥५६॥ ब्रह्मा विष्णु महेशलौं । मायाके अवतार ॥ रज्जब कौंला अगम है । जामें कला अपार ॥ ५७ ॥ वो ओंकार करि प्रगट है । अंतक अंतरि ध्यान ॥ रज्जब रिधि आभा भई । सांई शून्य समान ॥ ५८ ॥ अलछि कला लछिही रहैं । जीवजड जाणैं नांहि ॥ ब्रह्म वदैं जिस ठौरकों । सो सब माया मांहिं ॥ ५९ ॥ त्यागन हारे त्याग करि । भागि भजनदिशि जांहिं ॥ रज्जब यूं छूटै शक्ति । सो सुख सुरति समाहि ॥ ६० ॥ चरण कमल कमला रहै । हमहूं सुमरे सोय ॥ रज्जब फलसी भावकी । पै रिधि दूरन होय ॥ ६१ ॥ भांलैं भिन्न भिली सब ठाहर । विभूति भूतमें सानी ॥ पंचतत्व मन मनसा मिश्रित । विचार चालनी छानी ॥ ६२ ॥ रज्जब स्याही शक्ति मधि । अम्ब आतमा

सानी ॥ सो सूरज सांई छनहिं । मनवच कमकरि मानी ॥ ॥ ६३ ॥ सब अंगहु सब अंग मिलि । सेवक स्वामी एक ॥ रज्जव रिधि लांवै सोइ । बंदा ब्रह्म विवेक॥ ६४ ॥ रे रज्जब रिधि रै निरवि । चलहिं कौन बिधि टालि ॥ तिमर उजालै सो परै । कोनिकसै निरबालि ॥ ६५ ॥ शक्ति सीव विकृत निकट । इत को कहुवै नाहिं ॥ रज्जब कही विचार कर । समझि देखि मन माहिं ॥ ६६ ॥ माया सो करण ब्रह्म । समझी साधू साखि ॥ रज्जब रिधि आतम सहित । क्या राखहिं क्या नाखि ॥ ६७ ॥

साखी ३४४८ ।

अथ स्वार्थका अंग ।

ज्यों हारैं जोरव्यों नहीं । पूत महत हो पीर ॥ जन रज्जब बालक उभय । पर स्वारथ होवै वीर ॥ १ ॥ रज्जब स्वारथ सब लहैं । यहि सारे संसार ॥ लोभसु लाँबे जेवडों । बाँधि लिये सब लार ॥ ॥ २ ॥ रज्जब स्वारथ ठग ठगे । चौरासी लख प्राण ॥ तनमन धन सबका लिया । कहिये कहा बखाण ॥ ३ ॥ स्वारथ बस शंकट सवै । स्वाद सहावै मार ॥ रज्जब रोटी दोवटी । दुःख दाई संसार ॥ ४ ॥ स्वाद सनेही जीवका । जीवन छोडै स्वाद ॥ तबलग सहसीमार सब । कहा किऐ बकवाद ॥ ५ ॥ रज्जब स्वारथ सांणि संगि । परमारथ माणि नाश ॥ मिश्री माधि विष पीजिये । ताकी कैसी आश ॥ ६ ॥ दिन दीपक कर लीजिये । खानिसु पैठण काज ॥ सो बाहरि किस कामका । जहां रज्जब रवि राज ॥७॥ रज्जब रवि राके शबिन । राख्यूं हुंत महर आश॥ सप्त दोष दीपहि बसहि । पै तुमानि तोरा ताश ॥ ८ ॥ आप स्वारथ मनवे गव्है । परमारथ पग पंग ॥ रज्जब पहुंचै ठौर क्यों ।

भाव भगति सो भंग ॥९॥ गुरु सेवा जेतीज्ञु सुख । स्वारथ शब्द दों लेत ॥ रज्जब नर निपजै नहीं । जैसे कालर खेत ॥ १० ॥ जन रज्जब संसारमें । स्वारथ बस सब कोय ॥ ज्यूं सुरही सुतसी रबिन । माता निकटन होय ॥ ११ ॥ स्वारथकी सर कारमें । यहु सारा संसार॥मनसा बाचा कर्मना । तामें फेरन सार ॥ १२ ॥ षट्द दर्शन अरु खलकका । जलदल मेला सुखि ॥ रज्जब भज नर भोगकूं । पीछै आवै रुखि ॥ १३ ॥ जलदलमेलासुखि है । और सबै तिनि पिष्टि ॥ षट्द दर्शन अरु खलककी । खायें खुलहिं सुदृष्टि ॥ १४ ॥ अशन बसनके असिरै । आदमकी औलाद ॥ राम काम पांवण लहण । जोग भोगकी दादि ॥ ॥ १५ ॥ शब्द सुखी व्है आतमा । अस निबसनि आकार ॥ रज्जब पावै प्राण द्वै । तौ अनमिन छाडै लार ॥ १६ ॥

अविश्वास तृष्णाका अंग ।

तीन लोक मनहूं मिलै । तृष्णा तृप्तिन होय ॥ रज्जब भूखे देखिये ! सुरपति नरपति जोय॥१॥जे जीवलोकि अश खिलै । तौ भरैन भूख भंडार ॥ जन रज्जब क्षुधा घणीं । नांहीं धापण हार ॥ ॥ का धरिपत्र पाहिका । भरयान भरसी कोय ॥ रज्जब रीता देखिये । सो पूरण नहिं होय ॥ ३ ॥ तृष्णां तृषितहिं मरै । माया भुक्ति खाय॥ जन रज्जब उरकी अगनि । सु मुँहडै कही न जाय ॥ ४ ॥ जन रज्जब तन तालमें । माया मेघ जल जाय ॥ सो दीसै सूका सदा । तृष्णा बम्बई मांहिं ॥ ५ ॥ बडवानल तृष्णा रहै । मन समुद्रके सीर ॥ रज्जब सोखै माडके । माया रूपी नीर॥६॥बडवानल ब्रणि बपु व्यापती । रावनि चितांचित मन माँहिं ॥ ज्वालामुखी जगमगे मनसा । रज्जब काहि बुझाई जाँहिं

॥ ७ ॥ असंख्य लोक अहार करि। कालसु धापै नांहिं ॥ बडे घटहुं क्षुधा बडी। बडवानल वपु मांहिं ॥ ८ ॥ तनकी क्षुधा तनक तुच्छ। खायें सेर अघाय ॥ रज्जब रोटी जीभि समि। मनकी भूख न जाय ॥ ९ ॥ अवख्या पूरी हुवै। पै पूरा होइ न मन्न ॥ भूख न भागै भूतकी। रज्जब विछुरे तन ॥ १० ॥ रज्जब रुचि दिनदिन बधै। रहैन रिधि सौंथाकि॥ भूत प्राण भूखे सबै। भावतौ लगीं भडाकिं ॥ ११ ॥ तृष्णा अगनि बुझाइए। दुनिया दारू आनि ॥ जन रज्जब जीवयूं जलै। मति मूरख सब जान ॥ १२ ॥ आदि अंत मधि मांझि रहि। तृष्णा तनमन पूरि ॥ रज्जब यूं संतोष सुख। जीवसूं रह्याहु दूरि ॥ १३ ॥ उदक उदधि काष्ट अगनि। जीव सकल जम खात ॥ शिशन संतोषन विषय रस। तृष्णा तृप्ति न जात ॥ १४ ॥ तृष्णा स्वारथ लोभ अरु लालच। मांगण माया जाहिं ॥ रज्जब चारयूं लाज बिन। भूखे भांडहु मांहिं ॥ १५ ॥ तृष्णा त्रिगुण कुनारि द्वै। मिल्यूंन मंगल होय ॥ रज्जब राम भरतार विन। भूख न भागै कोय ॥ १६ ॥ चौदह विद्या विविध कृत। ऐक उदरकै काज ॥ रज्जब भरहि सु रामयूं। वैकरहि किएकी लाज ॥ १७ ॥ तनमन घटतो यह बधै। नरवर केश तृष्णाय ॥ जन रज्जब हैरान है महि मां कहीन जाय । १८ ॥

तृष्णा विश्वासका अंग।

तृष्णा तरुल तरंगिनी। जहां बहै जग जेर ॥ जन रज्जब निर्भय भए। चढि संतोष सुमेर ॥ १ ॥ बहुते जक बेसास बिचि। अज कजहां तहां पांहि ॥ रज्जब सुख संतोषमें। दुख दीरघ तहां

चाहि ॥ २ ॥ मांगत मासानामिलै । त्यागत आवै हाथ ॥ विभू ति भूत ऐसें बणी । रज्जब बाणी नाथ ॥ ३ ॥

साखी ३४८५ अंग १११।

बिश्वास संतोषका अंग।

सबही बस विश्वासकै । माया ब्रह्म सहेत । सो रज्जब सों गह गही । सतगुरु कह्यासचेत ॥१॥ जन रज्जब विश्वास गहि । सब साहिब परि राख॥विश्वासी वस्तुहि मिलै । यूं सत गुरुकी साखि॥ ॥ २ ॥ ज्यूं आज्ञा त्यों होइगा । यूं बरतणि व्यवहार ॥ तातै रज्जब रामकी । तूजनि छाडै लार ॥ ३ ॥ रे रज्जब विश्वासगहि । तकि तरुवरकी बाणि ॥ सिदक सबूरी ऊपरैं । ज्यूं जल बरषै आणि ॥ ४ ॥ चौरासी लक्ष जीवका । राम रिजक भरि देय ॥ जन रज्जब विश्वास गहि । सो सांई सुणि सेय ॥ ५ ॥ स्वामी सेवकहो रह्या । यहि सारे संसार ॥ रे रज्जब विश्वासगहि । मूरख हियान हार ॥ ६ ॥ चौरासीकी चूणिदे । प्रभु प्राणहुं प्रति पाल ॥ रज्जब सोनविसारिये । जो सबकी करै संभाल ॥ ७ ॥ रज्जब रोटी दोवटी । देहै दीन दयाल ॥ तौ आशा तजि औरकी। वेत्ता ब्रह्म संभाल ॥ ८ ॥ जिन जननीके उदरमें । तेरीकी प्रति पाल ॥ सो अब क्यूं भूलै तुझे । परि तूभी तिसहि संभाल ॥ ॥ ९ ॥ आरंभ बिना आहार हे । उदर मांहि अबिगति॥यहै समझि संतोष करि । रज्जब अज्जब मति ॥ १० ॥ उदर मांहि उद रहि भैरै । पावै अरभक पोख ॥ सो दाता सिरपरि खडा । रज्जब गहि संतोष ॥ ११ ॥ उद्यम नांहीं उदरमें । तहां करी प्रतिपाल॥ सो अब क्यूं भूलै तुझे । रज्जब दीन दयाल ॥ १२ ॥ बल वाहस नही वदिमें । विभै बिना वितनास ॥ बुद्धि रहित बयमें सुबय ।

तब तोहि दिया जुग्रास ॥ १३ ॥ शैलशिलामे देत है । आरंभ विना आहार ॥ तौ रज्जब विश्वासका । छौडै मति व्यवहार ॥ ॥ १४ ॥ अगम ठौरसु आहार दे । संकट सारै काज ॥जन रज्जब विश्वास इस । उसहि कियेकी लाज ॥१५॥ आरंभ विना आहार दे । गै अनलहि गोविंद ॥ तौ रज्जब रोवै पेटकूं । हरि अराध मति मंद ॥१६॥ रज्जब मोटे मच्छ अति । सोयोजनसु शरीर ॥ तेऊ पेट पूरण भरैं । तौ गहि विश्वास मन बीर ॥ १७॥ भजन विमुख भोजन लहै । चौरासी लख जूणि ॥ तौ रज्जब सुमिरण सहित । तिनकूं कैसी ऊंणि ॥ १८ ॥ अशन अकाशी असंख्यकूं । पाताल्य पूरि प्रसाद ॥ महीसु मुकता करि धरया । सुतुझैनक रसी याद ॥ १९ ॥ असंख्य लोक बह्मंडके । वोदर उदधि निवान ॥ रज्जब पूरै ठौर सब । तुझैन देई खान ॥ २० ॥ असंख्य लोक प्रतिपाल हरि । सकल किएकी चिंत ॥ तौ रज्जब भूखासु क्यूं । जो साँई करि मिंत ॥ २१ ॥ साहिब सबकूं रिजकदे । बंदे कूं तब सेखि ॥ रज्जब रहु विश्वास बिचि । करण हार दिशि देखि ॥ २२ ॥ जुडया विपति अरुमीचसी । मिलै अबांछी आय ॥ तौ रज्जब विश्वास गहि । रिजक कोन पैजाय ॥ २३ ॥ रज्जब रागन रोगसों । मींचमुहब्बत नांहि ॥ यूंही माया सुनिरहै । पै सिरजी आवै मांहिं ॥ २४ ॥ रज्जब रोगन छाडई । मूकै मानि खन मींच ॥ तौ वैरिजक कहां जायगा । समझी मनवांनीच ॥ ॥ २५ ॥ अन बाँछीही आवसी । जरा विपाते अरु मीच ॥ त्यूं माया मिलसी तुझै । मनमति कल्पै नींच ॥ २६ ॥ ज्यूं अहि कठिन करंडमें । मूं सापैसा काठि॥ जन रज्जब भोजन बन्था । अरु निकस्या वहि बाठि ॥ २७ ॥ सिर्ज्या आवहि स्वर्ग सों । जळ थल कैटसु काल ॥ रज्जब रहैन निन रुच्या । खाया होय उखाल॥

॥ २८ ॥ अनल अंडज्यों ठौर बिन । नहीं पौखपंख पाव ॥ जन रज्जब सोनींपजै । तौ पूरण पूरा गांव ॥ २९ ॥ कूंजी कूरम अनलके । अंडे देखो जोय ॥ रज्जब राखै सोकहां । तौक्यों विश्वासन होय ॥३०॥ उदर दियासो आहार देयगा । गला बनाया गाले काज॥रज्जब चंच चूणिकूं सिरजी । किये कियेकी सबकूं लाज ॥ ॥ ३१ ॥ असंख्य लोक अंतक सहित । भोजन दे भगवंत ॥ ता पूरण सों प्रीति करि । सोच करै क्यूं संत ॥ ३२ ॥ असमान जिमीं अंबर अरपि । आभे भार अठार ॥ बागेदे ब्रह्मंडकूं । पिंड हि कहा विचार ॥ ३३ ॥ नोनिधि जाके नांवमें । सब संतनिकी शाखि ॥ जन रज्जब सो सुमिरिये । कहा करै वित राखि ॥ ३४॥ दह दिशि देबेकूं खडा । दीनांनाथ दयाल ॥ रज्जब यूं जाण्यूं कटे । वित बंधनके साल ॥ ३५ ॥ वैरागी वित क्या करै । जो विश्वासी होय ॥ रज्जब मच्छ मसकसों । जलहि न जोया कोय ॥ ३६ ॥ ब्रह्म व्यौम दिशि देखहीं । साधू सारंग होय ॥ जन रज्जब विश्वास यहु । नजरिनिवाणन कोय॥३७॥रोटी मोटी करि धरी । बावै वसुधा माँहिं ॥ रज्जब दीसै दसों दिशि । कहो कितियक खाँहिं ॥ ३८ ॥ करतार कमाऊ जिनहुकै । तिनकै क्यापरवाहिं ॥ सदा सुखी आनंदमें । जिनकै जुगि जुगि वै अरवाहि ॥ ३९ ॥ करतार कमाऊ जिन घरहुं । तिनकै कैसी हानि ॥ यूं बैठै विश्वासमें । सबकछु देसो आनि ॥ ४० ॥ नहीं तहाँ तै सब किया । रज्जब पिंडरु प्राण ॥ यो अब भूलै क्यूं तुझै । करि संतोष सुजान ॥ ४१ ॥ पूत पांगुला पेटमें । आरंभ अशनन आश ॥ पुष्टि पराए पगानिपर । बिघन नहीं बे सास ॥ ॥ ४२ ॥ असंख्य लोक आतम भरी । सबकी करै संभाल गुण अवगुण देखैनहीं । कीयेके प्रतिपाल ॥ ४३ ॥ जडबा

सण जडका वडया । रीतारहैन सोय ॥ कुंभ कुंभार कमाऊ दोन्यों । सो पूरन किनहोय ॥ ४४ ॥ मात पिता माया ब्रह्म । बालकबंदा कंध ॥ मोह मिहरिमें ये सदा । यूं विश्वास निरसंध ॥ ॥ ४५ ॥ साधू सुखिया समैमें । दुःखीन होंहि दुकाल ॥ रज्जब जिनके रामजी । सदा करै प्रति पाल ॥ ४६ ॥ रज्जब रहै विश्वास में । बादी तहाँ बिभूति ॥ सदा सुखी सुमिरन करहिं । सब बिधि आई सूति ॥ ४७ ॥ रामकाम जिनके करै । तिनके कारिज सिद्ध ॥ जन रज्जब विश्वासपरि । बनि आई सब विद्धि ॥ ४८ ॥ निश्चयकर रज्जब कही।सुनहुं सनेही दास॥बिन परचै परचा भया॥ जब आया विश्वास ॥ ४९ ॥ धरे अधरका मूल है। नांव निरंजन पास ॥ जन रज्जब विश्वास इस । करैं कौनकी आश ॥ ५० ॥ मनिष मनिषकूं सेवतूं । सुख सम्पति यहि भौन ॥ जो रज्जब रामहिं भजै । तिनकै टोटा कौन ॥ ५१ ॥ चिंता अणचिंता भरै । उदरकौं अविगति ॥ तौ रज्जब विश्वास गहि । सोधिर साधू मति ॥ ५२ ॥ मांग्या अण मांग्या मिलै । सुजीवकूं जगपति कीन ॥ बंदेबेपरवाह यूं । भूलिन भाखै दीन ॥ ५३ ॥ चाकर अण चाकरलहैं । बरा विश्वंभर देय ॥ पूरण पूरै सकलकूं । सो पलटा नहिं लेय ॥ ५४ ॥ साधु सबूरीमें रहै । बिहकामी गनि राश ॥ तौ रज्जब तादास घरि । सांई होय सुदास ॥ ५५ ॥ निहचलमें निहचल रहै । निजजन नांव निवास ॥ त्यूं रज्जब माया ब्रह्म । होंहि दास घर दास॥५६॥ मातपिता माया ब्रह्म । चौरासी प्रतिपाल ॥ परि संतोषी सुत ऊपरै । दून्यू सदा दयाल ॥ ५७ ॥ आश उलटि तृष्णा तजै । संतौषी हरि साथ ॥ रज्जब सोबेसास में । सर्वस आया हाथि ॥ ५८ ॥ जे बंदे बिच सिदक व्है। तौ भेजें बिसि पार॥ जन रज्जब राजिक मिलै । रिजक सबै तहिं लार

॥ ५९ ॥ सहज सबूरी साच लै । सुमिरै निरमल अंग ॥ तौ रज्जब रामहिं मिलै । सब संपति तेहि संग ॥ ६० ॥ जैजीव बैठै सिदुक घरि । साहिबकै दरबार ॥ तौ रज्जब बाकी कहा । पीछै पलै हजार ॥ ६१ ॥ विश्वासी बैठ्या रहै । हरि भेजे सो खाय ॥ रज्जब अजगरकी दशा । चालि कतहूं नहिं जाय ॥ ६२ ॥ भावै कुंभहिं कूप भरि । भावै भरोसमंद ॥ जन रज्जब परवान परि । अधकी चढैन बूंद ॥ ६३ ॥ अन विश्वासी आतमा । करै अनेक उपाय ॥ रज्जब आवै हाथ सो । जोकछु राम रजाय ॥ ॥ ६४ ॥ लिखी लक्षमी पाइये । अरपी आवै सो होय ॥ रज्जब ग्रह बैरागमें । घटै बधै नहिं दोय ॥ ६५ ॥ रज्जब नरतरु शीशपर । माया मधु बिधि होय ॥ आवत जात अचिंतमें । दोषन दीजै कोय ॥ ६६ ॥ आवै अजाची बरतणि लेय । खायसु पहिरै औ रहिं देय ॥ यहु रज्जब संतोष स्वरूप । चलहि मुनीश्वर चाल अनूप ॥ ६७ ॥ रज्जब माया छायासें सदा । लघु दीर्घ व्यवहार ॥ अचिग आश अस्थूल विधि । यहु साधू मतसार ॥ ६८ ॥ चीरी चिंतन घटि बंधी । लघु दीरघ भया लेख ॥ तौ रज्जब कहु दोष क्या ॥ करण हार दिशि देख ॥६९॥ रज्जब जवलग यहुमता ॥ करै कहै मानि चाहि ॥ तबलग नहिं विश्वास गति । तिहु बिधि यहु पाहिं ॥ ७० ॥ जन रज्जब करि बेरह्या । कहिबे थकित निराश ॥ तब तृष्णा तनमन गई । पूरा पुष्ट बिश्वास ॥ ७१ ॥ रज्जब मानि अबंछ सुहदै । अज्जब पुनि काया कृतनाश ॥ यूंपरि कौडी कोडि होय । वह विश्वासी दास ॥ ७२ ॥ रज्जब रहु विश्वासमें । मनवच क्रम तिर शुद्ध ॥ ताऊपर तोहि रामदे । सो माता का दूध॥ ७३ ॥ त्रिभुवन तन तृष्णा परै । शुन्य संतोष सुथान ॥ रज्जब पहुंचै मींच मग । कोई विश्वासी प्राण ॥ ७४ ॥ तृष्णा

तिरै तरंगिनी । स्वारथ स्वाद समंद ॥ सो पहुचै संतोष पुरि । जन रज्जब निर द्वंद ॥ ७५ ॥ शक्ति समुद्र हुकै परै । सुनि संतोष सुथान ॥ मनबच क्रम तृष्णा रहित । सो पहुचै कोई प्राण ॥ ॥ ७६ ॥ संतोष सदन तव पाइये । जब तृष्णा तन नाश ॥ ब्रह्मंड पिंड सेती जुदा । जन रज्जब विश्वास ॥ ७७ ॥ संतोष सबूरी अगम घर । गुर पीरहु अस्थान ॥ बेसासतवक्कलमें रहै । निह चाहुर सहि मान ॥ ७८ ॥ बेदा नहि बंदे मिलै । बीज रहित बिन चाहि ॥ रज्जब फिरि ऊगै नहीं । गयेसु जन्म निभाय ॥ ॥ ७९ ॥ रज्जब धाये ध्यान हरि । भूत भूख भई भंग ॥ भूरि भाग भै भै सुखी । उठैसु उन्नति अंग ॥ ८० ॥ जन रज्जब जीब सब तज्या । जबमनआधरी धोय ॥ भूति भार भासै नहीं । करता करैसु होय ॥ ८१ ॥ रज्जब आशा मैल मन । नि-रमल सदानिराश ॥ आगै खुशी खुदायकी । यहु बेत्ता विश्वास ॥ ८२ ॥ जै कोई धूरि उठाइले । धरती धोखा नाहिं ॥ जानें कितले जायजा । मेरी सुझहीं मांहिं ॥ ८३ ॥ रज्जब रज रिधिए कहै । बसु धामें विश्वास ॥ विभूति भूतको ले चलै । धरया धरै कै पास ॥ ८४ ॥ वस्तुन मिलै विश्वास बिन । बहुविधि करो उपाव ॥ रज्जब रतीन पाइये । भावो दश दिशि जाव ॥ ॥ ८५ ॥ जैहिरदै विश्वास व्है । तौहरि हिरदा मांहिं ॥ जन रज्जब विश्वास बिन । बाहरि भीतरि नांहिं ॥ ८६ ॥ पेटभरैं बहु पाप करि । पापी प्राण अनेक॥अशनहीजु आरंभ बिन । आतम लहैसु एक ॥ ८७ ॥ अविश्वास आरं करि । मग मगले हि अहार ॥ अशन बसन विश्वास बिचि । निहकामी व्यवहार॥ ८८ ॥ आश निराशी अशनका । सुनहु ठनेकी बोल ॥ पडै पंचमुख पंजरै । पान्नग पिटारै खोल ॥ ८९ ॥ षट्दर्शन अरु खलक सब । दीरघ

स्वामी दास ॥ जन रज्जब विश्वास बिन । जन सत मांहिं निरा स ॥ ९० ॥ बैराग्यूंकी बरात ऊतरी । सेबग सतीयूं सीस ॥ जैसे तरुफरु पंखी पावहिं । बिधि बानी जगदीश ॥ ९१ ॥ बराति उतरी ठौर जहि । बरात हांसौं लेह ॥ बिन आज्ञा देशीन कोइ । दोषकिसीमत देह ॥ ९२ ॥ हाथ सबै हरि हाथमें । कृपण कृपा-लहु एक ॥ दोष देयकहु कौनकूं । पाया परम विवेक ॥ ९३ ॥ जादिन ज्यूं राखै प्रभू । तादिन त्यूं रहिये ॥ रज्जब दुःख सुख आपणां काहू नहि कहिये ॥ ९४ ॥

साखी २५७९

अचिंत विश्वासका अंग ।

बैराग विश्वंभर परि मंड्या । करि चिंता चित नाश ॥ विहंग पोडन विहंग सिरि । देखे उडत अकाश ॥ १ ॥ उडग अतीत अकाश आश बिन । भारन काहूं देहि ॥ रज्जब मिले अशंख्य एकठे । रिजक राम पहिं लेहि ॥ २ ॥ बैराग सु बादल सम सदा । सकल अधर व्यवहार ॥ लागे सांई शून्य सों । भूतहि देहिन भार ॥ ३ ॥ अठार भार एक अवनि परि । त्यूं आतम अविगति ॥ यूं रज्जब चिंता उठी । जब आई यहुमति ॥ ४ ॥ जलनिधि मेंजल चर विविध । पै कासिर काका बोझ ॥ त्यूं रज्जब तन रामपरि । समझै नहीं सु रोझ ॥ ५ ॥ रे रज्जब राके शकन । सदासु मंडल तार ॥ किसकी चिंता कौनकूं । किसका किस परि भार ॥ ६ ॥

निरीहाइ निरबान अंग ।

रज्जब पाई प्राणनें । नांव निरंतर लूटि ॥ पाप पुण्यकी ताखडी । गई हाथ सों छूटि ॥ १ ॥ पुण्य किए पुनि पावई । देणें लेणा

होय॥ रज्जब यहि सौदे रहे। शून्य समाने सोय॥ २॥ लेबेका लालच नहीं। नहीं देबेकर तार॥ रज्जब अज्जब मुक्त मत। जीव ब्रह्म उणहार॥ ३॥ भली बुरी भावै नहीं। परसै पापन पुण्य॥ सो रज्जब रामहि मिलै। सहजि समाने शून्य॥ ४॥

विवेक सास मधुकरी अंग।

रज्जब मीठी मधुकरी। मेरे मनि भाई॥ सिध साधक जोगी जती। जगि मांगी सुखाई॥ १॥ भूय भूत मिलि भीखकूं। तब सुभिस्तकों जाय॥ तोन मेहणां मधुकरी। नर देखौ निरताय॥ २॥ येकहुं कोपी ऐकहुं पैसा। ऐकहुं तंदुल रोटी। महाम संदौ भीख आदरी। मांनि मधुकरी मोटी॥ ३॥ जे औसर सिरि सिलककूं। भूपति मांडै हाथ॥ तौ रज्जब कछुरंक गति! राजा दारिद्र साथ॥ ४॥ छाजन भोजन देह लग। सिध साधक सब लेहि॥ जन रज्जब परवान परि। मन मनसा नहिं देहिं॥५॥ छाजन भोजन देहलग। जाबिन रह्यो न जाय॥ रज्जब अधिक उपाधि है। तासौं मन न लगाय॥ ६॥ जन रज्जब रथ रहटिया। पुनह पखावज जोइ॥ काष्ठहूं वाँगेसे चलैं। तौं विन ब्रतनी नहिं कोइ॥ ७॥ छाजन भोजन दे भगवंत। अधिक न चाहै साधु संत॥ रज्जब यहु संतोषी चाल॥ मांगहिं नाही मुलक अरु माल॥ ८॥ मन बिन माया संगि रहै। मन बिन मिहरी जाय॥ यहु रज्जब मुनिवर मता! नर देखो निरताय॥ ९॥

साखी ३५९८ ।

संयम कसौटीका अंग ।

काया कुंदन सारखी । हरि सोनी कसि लेय ॥ जन रज्जब ताए बिना । दर्शन द्रव्यन देय ॥ १ ॥ कसि कसिलिए कामके । नर निर्मल निरताय ॥ जन रज्जब जगि मागि रहै । महिमां कही न जाय ॥ २ ॥ नरत्तर नालाम रह । ब्रह्म वासुदेव माँहिं ॥ बिन सूकै सोख्यंत बिन । रज्जब प्रकटे नांहिं ॥ ३ ॥ तन तूंबा सोख्यंत बिन । धुनि सुान मांहिन होय ॥ रज्जब गूंगागूंद भरि । बाजत सुन्यान कोय ॥ ४ ॥ जंतर मांहैं निकास करि । जंतर चढै सुजाय ॥ रज्जब पाईनाद निधि । लोहा कसनी आय ॥ ५ ॥ रसना निकसी पाठमें । जंतरि निकसे तार ॥ रज्जब मुखि जंतरि चढे । श्रवहि सुधा अपार ॥ ६ ॥ कंगही करवत शीश सहि । तब साहैं सिरि जाय ॥ तौ रज्जब जाणीं जुगाति । तन मन कसि हरि भाय ॥ ७ सिर कटाय लेखण चढी । कर कागद अरु कान ॥ रज्जब यहि विधि पाइये । परम पुरुष निजथान॥ ८॥देखहू जाय कुंभार घरि । निपज्या कसणी खाय ॥ रज्जब रज पगतलि सदा सुसिरपर बैठी आय ॥ ९ ॥ कागदकूं दीकागहीं । कोल्हू निरखि कुंभार ॥ त्यूं रज्जब कसणी गुरू । लखिसु लुहार सुनार ॥ १० ॥ दुःख भंजन दुःख पाइये । यद्यपि है दिल माँहिं ॥ ज्यों काष्ठ मैं कष्टविना । पावक प्रकटै नांहिं॥ ११ ॥ दाख चुहारे रस रह्या । जेसुकचेसु शरीर ॥ यूं रज्जब सर्वस रहै । तन मन सिमटयूं बीर ॥ १२ ॥ संतहि शोभा सिमट तूं । जतकूं जतन सुजोत ॥ रज्जब रसरंग रहतिमें । यथा सीप माधि मोति ॥ १३ ॥ रज्जब रेशम मनका । संकटि सूधा तार ॥ ये दोन्यूं बांधे भले । खुल्यों होय

सुखवार॥१४॥ पसरयूं पागि पागि मारहै। सिमटयूं सौं नहिं सोय॥ जन रज्जब दृष्टांतकूं। मन कच्छप दिशी जोय॥१५॥ अस्थूल उदधि ज्यो पीजिये। आतम होय अगस्त॥ जन रज्जब ऐसी कला। खेलि गहै कोई बसत॥१६॥ पाप ताप लंघनि घटाहिं। तौ रज्जब व्रतराखि॥ रज्जब रोग विषम व्है। वैद्यहै वेत्ता साखि॥१७॥ जल दल खैंचेतन मरै। मन मारै गुरुज्ञान॥ रज्जब ये यों जीतिये। साधू कहै सुजान॥१८॥ काया मारै स्वाद तजि। मन मारै भजिनाथ॥ रज्जब गढ घेरे बिना। गढ़पति चढै न हाथ॥१९॥ नींद सुबेटी नाजकी। नाज नींदका पूत॥ रज्जब साधो जोरकूं। जुगल साधि अवधूत॥२०॥ रज्जब निकसै धात धर। महा मसकती द्वार॥ तौ कष्ट बिना क्यों उद्धरै। आतम यहि आकार॥२१॥ तनकसणी निह काम मन। द्वै घट द्वै कोपीन॥ जन रज्जब यहु रहति गति। आतम रामहि लीन॥२२॥ उन मन लागे मनसधै। शब्द सधै सुविचार॥ रज्जब तनितामससधै। विरला साधन हार॥२३॥ शंख शुक्ति मुक्ता सहित। सदा महोदधि दानि॥ ये रज्जब चौदह रतन। सो संकट द्वैआनि॥२४॥ मन ययंक मोटे भये। मैले मुलिकन मानि॥ क्रम कलंक कसतौ कटै। सब जग वंदैजानि॥२५॥ काया काच निर्मल करै। चश्में सरीखा होय॥ जन रज्जब पडदा उठ्या। पीवकूं देखै सोय॥२६॥ कुमति कटैं करमो घटै। काम क्रोधका नाश॥ जन रज्जबवा जीवकै। प्रत्यक्ष व्है प्रकाश॥२७॥

अरिल।

अज्ञानी अरु भेष मोहमन अंतरा। इन चत्तुरकरमिजाय नर किसु नांहिं पंतरा॥ खुद्या नांवर गोत आवठिक देतरे। परिहां

रज्जब रटिजटि रामसु चहुं समेत तरे ॥ २८ ॥ आतम उगि रहै चंद ज्यों। काया कलंक न जाय ॥ जन रज्जब यूं आवलग। निर्मल नांव कहाय ॥ २९ ॥ दुखकारि दुनियां देखिये। दुख-कारि मिलै सुदीन ॥ जन रज्जब सुख दुख परै। सुताकित पावस कीन ॥ ३० ॥ दुखकारि माया पाइये । दुख कारि ब्रह्म दयाळ ॥ तौ रज्जब दोन्यू दशा। दुख दीसैं प्रतिपाल ॥ ३१ ॥ मेला माया ब्रह्मका। दुख दीसै निजदास। तौ रज्जब सुणि सुखकी। मनहिन कीजै आश ॥ ३२ ॥ कवळा कंतर केतगी। कंठि कमल सुवास ॥ आदम अलि आवै तहां। तजि बसीसकी आश ॥ ३३ ॥ मकर सीपमैं मगत सिरि । मुशकिल सुकता लेत ॥ त्यूं रज्जब माया ब्रह्म। दुखि दर्शनसो देत ॥ ३४ ॥ मुख सुखमांहिन मार अंग दिखलावहीं। चाकी उर गुर पैठि सुआय पिसावहीं ॥ भैदा मनहीं छनाय बिबिधि व्है व्यंजनां। परिहां रज्जब राम रसोई सुनिमन रंजनां ॥ ३५ ॥ मिहर मगरि मंदिर रहै। सुखसंबूह सुखद्वार ॥ कुपा कसौटीकै परै । तामैं फेरन सार ॥ ३६ ॥ रज्जब संकट मधि संतोष व्है । बिपति बीच विश्वास ॥ दुःख विन-सुख लहिए नहीं । समझि सनेही दास ॥ ३७ ॥ फाके शेख फरीदके। करसी कौन फकीर ॥ रज्जब रजमांयों लिया। जाहिर होय जहीर ॥ ३८ ॥ प्रहलाद कसौटी पूरिली। देतहुं भानी भोळ ॥ रज्जब अडिगसु अगनिमें । निकस्या नांव अडोल ॥ ३९ ॥ रज्जब अज्जब काममें। मोतलही मनसूर ॥ यूं अलह आशिक हुवा। जाहिर जगत दूर ॥ ४० ॥ सरवस दे सरवस लिया। साधू सांई अंग ॥ रज्जब अज्जब काममें। बंदों बदल्या नंग ॥ ४१ ॥ रज्जब औसिरका मसिर । मरने मुलिक बखान ॥

ज्यों नक्षत्र निशी टूट तों। दख सकल जहांन ॥ ४२ ॥ औसर बिनकी मींचगत। ज्यूं दिन टूटा तार। रज्जब उभै अलोप लोप व्हैं। दीसैं नहीं लगार ॥ ४३ ॥ सेवग सेवा संकट्या। सुंदरि सुत जावंत ॥ रज्जब पीडा परमसुख। भृत भावमानि भावंत ॥४४॥ रज्जब यूं त्यूं मूल है। बंदि बंदिगी माँहिं ॥ यूं सेवा संकट सहैं। साधू सरकैंहि नांहिं ॥ ४५ ॥ कठिन कसौटी नींपज्या। चितभया चूनैं भाय ॥ सोमत मंदिर छाडै नहीं। गुरू सिलावट लाय॥४६॥ सेवा संकट सब सहै। सेवक अपने शीश ॥ सोभाए भगवंतकूं। रज्जब विश्वाबीस ॥ ४७ ॥ दिबमांहै दिब होत है। भोलहुं भोला भाग ॥ रज्जब रजमल ऊतरै। दिलहूं धुपि गए दाग ॥ ४८ ॥ तनमन इंद्री आल है। कूट्यूं रंगिये प्राण॥ विन कूट्यूं कोरे रहैं। जन रज्जब जीव जान ॥ ४९ ॥ तनमन तापड कूटिये। कूट्यूं कागज होय ॥ बिन कूट्यूं कोरे रहैं। जन रज्जब जागि जोय ॥ ॥ ५० ॥ तनमन लोहा कूटिये। ताए व्है तरवार ॥ जन रज्जब ताए बिनां। खडगन होय विचार ॥ ५१ ॥ तनमन मांटी पीटकर। कोइ घडै कुम्भार॥जन रज्जब कूटे विना। कुंभन होय गँवार ॥ ५२ ॥ कूट्यूं चित चावल भए। बिन कूट्यूं सब साल॥ रज्जब रज सबकी गई। इस कूटणकै ख्याल॥५३॥ज्यूं बाजी गरकूं मिलै। मन मरकट विन माल ॥ जन रज्जब खेलै तबै। जब मारैं बारंबार ॥ ५४ ॥ मनमेंगल मारे बिना। कहो मरारि क्यूं जाय ॥ रज्जब मिलै महा बतहि। जबही मार बहु खाय ॥ ५५ ॥ रज्जब सूता पांव पल। पीटै निद्रा नाश ॥ तोंमन सूता जुगनि-का। सो क्यूं जागै बिन त्रास ॥ ५६ ॥ रज्जब रोग असाधिकूं। औषधि कसणी देत ॥ जैसे पिट्टी पवंगकै। केश कृष्ण व्है श्वेत ॥ ५७ ॥ पंच रंग रोम पवंग परि। संकटि श्वेत अनूप ॥ रज्जब

पलटै प्राणयूं । पीडा पारस रूप ॥ ५८ ॥ शंकट सुलय शरीर लग । दुर मति दगधै देह ॥ मनउन मनलेराखिबा । कठिन कसोटी येह ॥५९॥

साखी २६५७।

मृतकका अंग।

भौजल बूडै जीवतां । ममतामेर उठाइ ॥ रज्जब मृतकमें बिनां । सुहलुकातिरता जाय ॥ १ ॥ मै आये माया भइ । मैं नाहीं तब नांहिं ॥ रज्जब मुक्तामै बिना । बंधन मेंहीं मांहिं ॥ ॥ २ ॥ असगयं दवोहिथ चढै । मूरख ले शिरभार ॥ त्यूं रज्जब सब रामपर । मैतलिमरै गँवार ॥ ३ ॥ मरजी वा मिलि मांहिं जल । सिरि समुद्रनाहिं भार ॥ जै रज्जब सिरि कुंभले । तो दुःख होय अपार ॥ ४ ॥ जै आंखिन देखै आपकूं । तौ दीसै सब ठौर॥ त्यूं रज्जब आपा उठैं । परम तत्वमें त्यौंर ॥ ५ ॥ जन रज्जब जीवके परै । जगपति मिलिसी आय ॥ कहणां थासो सब कह्या । अबकछु कह्यान जाय ॥ ६ ॥ जबलग जीवमें जीवणां । तबलग जीवनें कोय ॥ रज्जब मरणें मिलिगयूं । तबकछु होय तो होय ॥ ॥७॥ जबलग तुझमें तू रहै । तबलग तेरस नांहिं ॥ रज्जब आपा आपिदे । तौ आवै हरि मांहिं ॥ ८ ॥ अपना पडदा आपही । मूरख समझै नांहिं ॥ रज्जब रामहिं क्यूं मिलै । यहु अंतर इस मांहिं ॥ ९ ॥ मरणैं मांहै जीवणां । जीवणमें मर नांहिं ॥ रज्जब जीवण त्याग कर । जीवणमें मन लाहि ॥ १० ॥ मरणैंमा हैं मिली रही । जीवनमें जन जाय ॥ रज्जब जीवण त्यागिकर । जीवणमें मनलाय ॥ ११ ॥ मरिबां सुंहडै कहणकूं । जीवन मूरि निधान ॥ रज्जब रहे सुमरि रहे । ऐसें समझि स यान

॥ १२ ॥ ज्यों ज्यों तनमन मारिये । त्यों त्यों जीवै जीव ॥ इस कसणी कल्याण है । रज्जब रज्जे पीव ॥ १३ ॥ जो जीवत मृतक भये । तिनहिं कालभय नांहिं॥ रज्जब रहै सुराम व्है । सदा सजीवनि माँहिं ॥ १४ ॥ जं साधू मृतक भये । तिनकै बल नहि कोय ॥ जन रज्जब दृष्टांतको । जली जेवडी जोय ॥ १५॥ रज्जब दीसै ऐकसें जीवन मृतक दास ॥ विन दीपक दीपक यथा । हीरे का प्रकाश ॥ १६ ॥ जैसे मारे सारसों । महा कटैतन रोग ॥ त्यों रज्जब मृतक मिलयूं । लहै अमर जिव जोग ॥ १७ ॥ मारे पारे परसतां । ताम्बा कंचन होय॥ त्यूं रज्जब नरनीपजै । मिली मृतक जग जोय ॥ १८ ॥ मर जीवहि मानें जगत । बसुधामें यहि बंदि ॥ तामें फेरन सार कछु । देखो दूजका चंद ॥ १९ ॥ पाणी पिंडीमें सुख मिश्री । बपु बसतर तहि ताज ॥ जन रज्जब चहुं चढि चल्या। मृतक पाया राज ॥ २० ॥ जिमि सुजड मत आप नंग । तामस तेज बाय बक अंग ॥ रज्जब गगन डिंभ अ-भिमान । ये गुन मेटे ब्रह्म समान ॥ २१ ॥ अवनि मांहिं अंकर। आप मधि उत्पत्ति ॥ तेज सुतन तावै भरया । मारुत है सुर मति ॥ २२ ॥ व्योम बडाई बादल हूं । बर्षा बीजसु बास ॥ ब्रह्म पिंडकी ऐकगति । आनंद आत्म नाश ॥ २३ ॥

साखी ३६८० ।

साच निर्भयको अंग ।

साचेकूं संकट नहीं । सब भागे दुःख द्वंद ॥ रज्जब जग जग दीशमें । तहां तहां आनंद ॥ १ ॥ साचा दिब दाझै नहीं । जल जोख्यूं नहिं कोय ॥ जन रज्जब जगदीश लग । साच सरखरूं होय ॥ २ ॥ बहुत भांति केझूठ बहु । काम पडयूं कुलि काच ॥

रज्जब राखो सोरती । कंचन किरची साच ॥ ३ ॥ रज्जब सीझैं साचमें । हिन्दू मुशल मान ॥ दोउदिब दाझै नहीं । यूं आयाई मान ॥ ४ ॥ सांई सम सरि साच है । देखो जादिल मांहिं ॥ विघन नव्यापै तिन बपुहु । जल ज्वाला डर नांहिं ॥ ५ ॥ कोल चूक जीवनां भया । सतबादी संसार ॥ कहि आया त्यों करत है । तो दोसन देकरता ॥ ६ ॥ झूठ वधै बनखंड ज्यों । दीसै बहु विस्तार ॥ रज्जब साचा अगनिमें । कटै परस पछार ॥ ७ ॥ झूठ दिखावै बहुत व्है । ज्यूं जाडेका कोट ॥ रज्जब रतीन रहि सकै। साच शूरकी चोट ॥ ८ ॥ रज्जब रहैन रोपि । झूठचल्या सुनि साचभै ॥ ज्यूं उडगण गए गोपि । उदय होत आदित्यके ॥ ९ ॥ रज्जब ऐकल शूर साति । झूठे नवल खतार ॥ पलक मांहिं पै माल व्है । दीसै नहीं लगार ॥ १० ॥ साच सजादे झूठकूं । जुगि जुगि बारंबार ॥ रज्जब रोसन कीजिये । तामै फेरन सार ॥ ११ ॥ प्रतखियै कसमी नहीं । सुनिसु पिलैकी कोडि ॥ रज्जब साति असातियूं । देखिये जीवमें जोडि ॥ १२ ॥ तारहु तोरा तबलगै । जबलग रविन प्रकाश ॥ रज्जब रतीन रहि सकै । देखि दिवाकर त्राश ॥ १३ ॥ साच सूतसो काणि कट । साधूजन सुतधार ॥ रज्जब काढैं बंकबल । तायैं फेरन सार ॥ १४ ॥ साच आरसी देवगति । करै कौनकी कान ॥ कहि दिखलावै होय ज्यों । आपा प्रसमि जान ॥ १५ ॥ साधू शशि हर शूरकै । आपा परसमि भाय ॥ रज्जब रंग प्रकट करैं । अरु अपगुण देहिं दिखाय ॥ १६ ॥ दीपक देख जुतिम रली । हीरैके सों नांहिं ॥ रज्जब सत्य असत्यकै । उभै अंगयेमांहिं ॥ १७ ॥ साच शब्द खांडे घटा । जाकै द्वै दिशि धार ॥ रज्जब बकतेकैबहै । सुरता होय सुमार ॥ १८ ॥ साधू बक्ता वंशगति । सत्य शब्द विचि आगि ॥ जन रज्जब

सुरता बनी । करम जलेतेहिलागि ॥ १९ ॥ रज्जब दार दरणी पत्थर पंडित । साधु सारहरि हंस ॥ चतुर ठौर बहनी बचन । केहि विधि बरतै बंश ॥ २० ॥ साचा बोलै इंद्रज्यूं । सब बाणीं सिरताज ॥ रज्जब छलवल शब्दका । तासिर करैन राज ॥ २१ ॥ ॥ २१ ॥ सती शब्दके शीशपर । झूठन पावै ठौर ॥ रज्जब शशि सोलहकला । तापरि चढैन और ॥२२॥ अधिक अठारहसों नहीं । पासों मांहै डाव ॥ तैसे रज्जब साच सिरि । झूठन चढै चढाव ॥ ॥ २३ ॥ जन रज्जब नांणां खरा । मांनें नौखंड मांहि ॥ खोटेकूं डालै खलक । यामें निन्दा नांहि ॥ २४ ॥ नर नांणें पाडै भरे । मोलन पावहिं मूलि । ज्यूं रज्जब तुलि कांणिकी । सदा बहावै धूलि ॥ २५॥ साच चलै गाए कको । परि सत्यन बोला जाय॥ रज्जब रसनां घाटमें । झूठ रह्या घर छाय ॥ २६ ॥ मुख झूठा भाखै नहीं । बोलण लागा साच ॥ आमदनी अविगतिकी । रज्जब पलटी बाच ॥ २७ ॥ साचहिं सुण्यूं सुखी व्है साचा । झूठे दिल दुख होय ॥ रज्जब साचा साच बखाणै । फेर सारनहिं कोय ॥ २८ ॥ चोरीकी तहां चोर है । नांहीकी तहां नांहिं ॥ रज्जब पकडै झूठ परि । दहैन सो दिबमांहीं ॥ २९ ॥ देही दखलन दिबका । जे ऐक साचलघु होय॥तौ रज्जब क्या भूतभय।जेहि सति सुमिरण दोय ॥ ३० ॥ भजन विमुख घटिसाच व्है । ताहिन दिब दुख देत ॥ तौ रज्जब तिनकूंनडर । जहां सुमिरण साचसहेत, ॥ ३१ ॥

साखी ३७११ ।

परम साचका अंग ।

मायारूपी साच बहु । आतम ठगहिं अनेक ॥ रज्जब सोन

ठगा वही। जिनकै परम विवेक ॥ १ ॥ ऐक साच अंजन मई। नहीं निरंजन मेल॥ रज्जब रलेसु झूठमें। तार्थें सत्यहु ठेल॥ २॥ साच साच मधि छाँणतूं। तत बितकर चढि जाय॥ रे रज्जब जनजौहरी। कहु क्यूं खोटा खाय॥ ३ ॥ रज्जब साच स्वरूपी झूठ व्है। पैठहि प्राणहुं मांहिं॥ आंख्यूं अनतसु नीकसै। नहीं तो निकसै नाहिं॥ ४ ॥ साच साचतें अगम है। बिरला बूझै कोय॥ रज्जब परमविवेक बिन। घट घट समझ न होय॥ ५ ॥ साचहि मिलै सु साच व्है। झूठहि मिलैसु झूठ॥ जन रज्जब साची कही। भावे रीझि भावै रूठि ॥ ६ ॥ दिव दाझै नहिं साच है। मिलैन अविगति नाथ॥ सीझा सीझा सब कहैं। रज्जब देखिसु हाथ॥ ७॥ कामधेनु तरु सुर सहित। पारस पोरस साच॥ रज्जब रिधि सिद्धि निधि सबै। भजन विमुख कलि काच॥८॥ करामांति करम कामना। बंदे बंदाहिसु नांहिं॥ रज्जब रजतज सोधतूं। मेलसु जतमत मांहिं॥ ९ ॥ दस अवतार देई देवा। देखि दुनी रंग राच॥रज्जब रीझन तूं वहां। इन तें परेसु साच॥१०॥ साचा साहिब मरैन जामै। झूठा आवै जाय॥ रज्जब सतगुरु सति सुलागै। साधुसुले निरताय॥ ॥ ११ ॥ पंचों करि परसै नहीं। परमेश्वर विन आन॥ रज्जब रोजा ब्रत सती। संकट ओर समान॥ १२ ॥ रज्जब दीजै दान सिर॥ सतजत सुमिरण पैठि॥ घास मतुलिन धरम पुनि। तोले तु लासु बैठि॥ १३ ॥

कृपणका अंग।

जे सूरन व्है सूंठि। सप्त धातु गाडयूं बढै॥ तौं सुकृत धरि मूंठि। ज्यूं रज्जब रामहि चढै ॥ १ ॥ रज्जब धन घर गाडतूं।

मन गाड्या माहि मांहिं ॥ जीवित पैठै गोरमें । सो प्राणी निकसै नाहिं ॥ २ ॥ कँवला कवल सू गाडतू । सुकृत बासन होय ॥ सूम सखी अरु पहप परि । गुप्त प्रकट करि जोय ॥ ३ ॥ मोनणि मधि माया रही । गुपचुप किनहुन जाण ॥ आतम राम हिं सौं पतां । घट घट होय बखाण ॥ ४ ॥ पहुपहमीं अंतक अगनि । विघन चौर ठगि लेत ॥ सूम भण्डारी सत्यका । धणि यहु गिणि गिणि देत ॥ ५ ॥ रज्जब सूम सनेही सत्यका । खित खित भुजन मजोर ॥ जम ज्वाला बेली विघन । पगन पुण्यकी ओर ॥ ६ ॥ पहुपहमीं जम चोटकूं । कृपण कमावै आथि ॥ रज्जब धुकैन धरम दिशि । जो संबल व्है साथि ॥ ७ ॥ शठम सदा संजम रहै । इद्रयूं परसै नांहिं ॥ तनडिगतो धनकूं धका । मतकौडे कछु जांहिं ॥ ८ ॥ सूमसगा नाहिं जीवका । आपा परन सनेह ॥ रज्जब दुःख दे देहकूं । सुकृत करैन गेह ॥ ९ ॥ सूम समाया सांकडै । सदा जतन सब वोडि॥ रज्जब रोक्या रिधिका । रह्यासु तनमन मोडि ॥ १० ॥ सूम समाईका धणीं । बहु जरणा घट मांहिं ॥ जन रज्जब रिधिकै जतनि । लडैसु बोलै नांहिं ॥ ११ ॥ रज्जब सूकरसु सूम व्है । बैठा झारी मांहिं ॥ नरपति फोड्या नैंन गुरु । पै पुनि छोडया नांहिं ॥ १२ ॥ सुमिरण सुकृत दिशि चलत । बैरी विघन अपार ॥ आडो सलिता सूमगति । प्राण पुण्य कोइ पार ॥ १३ ॥ सुमरणसुकृत बरजहीं । सो बैरी बटपार ॥ शब्दन सुणिये सूमका । रज्जब मांथै मार ॥ १४ ॥ रज्जब सुकृत करैन करण देही । यहुसूमहूका सूल ॥ पैंडा मारै पुण्यका । परम पापका मूल ॥१५॥ पच्यासीका पूत है । सूमसु इहिं संसार॥ गाडीं साडीमें रह्या । निकसै कौंन विचार ॥ १६ ॥ सूम मतेके सूतसौं । बांधै माया पंल ॥ ब्रह्म व्योमक्यूं जांहिं ।

उडिग।पंखी प्राण असंख्य॥१७॥स्वर्ग धामधर मिष्टका।पापी नरक समाय॥जन रज्जब जत जोति दिशि। सूम सर्प कहां जाय॥१८॥ स्वर्ग सदन सुकृत रहै । कुकृत नरक निवास ॥ रज्जब संशय सूमका। कहां करैगा बास ॥ १९ ॥ जन रज्जब श्रम सूमकरि कृपणकमाई कोडि ॥ स्वारथ परमारथ नहीं। गये मालमन वोडय ॥ २० ॥ आलम अंघ्रिपमें द्रसै। सूमसू सूकी डाल॥ परमारथ सोभान तरु। सो जम चूल्है जाल ॥ २१ ॥ रज्जब मायाके फल सूमकै । कदेन आवै हाथ॥ स्वारथ परमारथ नहीं। तीजै चलैन साथ ॥ २२ ॥ सूमहि यहांनवहां कछु । बातजु बिणठि मूल ॥ रज्जब धनि धर गाडतूं। तुरत कियातिन धूल॥ ॥ २३ ॥ ज्यूंगतराडापै पुत्र दिन। त्यूं सूमाहीं सुकृत नाश॥ रज्जब रीते उभय दिशि. । निहचै जाय निराश॥ २४ ॥ देखहु कृपण कूप मधि। माया छाया होय ॥ जन रज्जब बेकाम बहु। व्यौसावै नहिं कोय॥ २५ ॥ रे रज्जब रिधि सूमकी। व्यभिचारी आधान॥ धणि यहु कामिन आवही। मनबच क्रम करि मान॥ ॥ २६ ॥ शक्ति सदनमें बाढतूं। हरखे संचक हेर॥ ज्यों जहाज जलसों भरै। तब बूडत क्या बेर॥ २७ ॥ शक्ति शीतके कोटकूं। सांचिक देखिसिहाय॥ रवि सुत किरणीन सूझही। सुनहि नहीं करि जाय॥ २८ ॥ कोई जोडि सुपनें पड्या । जगि देखि कछु नांहिं ॥ तैसै रज्जब सूमगति । यूं समझो मनमांहिं॥ २९ ॥ गजमोतीरु भुजंगमणि । तीजैसूमसु हाथि ॥ रज्जब सुर मारे विनां । मायाचढैन हाथि॥ ३० ॥ द्रुमईके द्रुम सारिखी। कृपणकीकोपीन ॥ रज्जब रिधि चाहयों कढैं। पुनि पानी सोहीन॥ ॥ ३१ ॥ सूमसुचेरा लक्ष्मीका। हस्तन सकई लाय॥ पुण्य पुरुष श्री मोर है । खरचै सदासु खाय॥ ३२ ॥ कृपण कंचन

धन धरया। हस्तन लावै हेर ॥ तौ रज्जब सुणि सखीनें। संच्या सोवन मेर ॥ ३३ ॥ रज्जब आए काल। सुकृत सामें विन चले॥ सूम सदा बेहाल। भूखेस्तु चौसी डुले ॥ ३४ ॥ रज्जब काढें कूप जल। घटेन निर्मल नीर। विन काढ्यां पांणी सिडै। पीवैन कोई बीर ॥ ३५ ॥ सूमबि छोह शिव शक्ति। यहि दुखिको सहि दोय ॥ रज्जब सिध सराय जहि। सोबक्ष पकिन होय ॥ ३६ ॥

साखी ३७७० अंग १२०।

साच चाणकका अंग।

सब दिशि उलझे बहुत हैं। तनमन सुलझ्या ऐक। रज्जब जीव जंजालमें। जिह्वा बहुत बिबेक ॥ १ ॥ मुखि मुकते मनमे बंधे। ऐसे कपटीकोडि ॥ रज्जब विरक्त बरकसों। रहे विषैवष जोडि ॥ २ ॥ ब्रह्मण्ड पिंड मांहे बंधे। छाजन भोजन बंध ॥ रज्जब मनमन साजडे। मुंहडे कहैं अबंध ॥ ३ ॥ बातहु मुकते गात बंध। सुहक ममाया मांहिं ॥ सफरी सूवा जाल पियर। सिर निकसे धड निकसै. नांहिं ॥ ४ ॥ शरीर चलै संसार गति। शब्द सुझाता रूप ॥ रज्जब बातें त्योमकी। विषय विचारा कूप ॥ ॥ ५ ॥ रज्जब बित बारि बैली तरफ। बातौं परै प्रकाश ॥ शक्ति सूरका ऐक मत। सुनहु बिबेकी दास ॥ ६ ॥ शब्द मांहि औरै कहै। सुरति मांधि कछु और ॥ रज्जब मैली आतमां। लहैन निर्मल ठौर ॥ ७ ॥ तनतुपकजीवतो बची। शब्द सकल दिशि शोर ॥ जन रज्जब गोली सुमन। गमन करै कहिं वोर ॥ ॥ ८ ॥ मन भुवंग सिरि शब्द मणि। विषैसु विष नहिं जांहि॥ रज्जब देखि उजास उहि। मारि मारि जीव खांहि ॥ ९ ॥ देही दरसण बंधा वहिं। ज्ञानी अक्कलि अगाध॥ रज्जब रस रीतिहि लिए।

मुश्किलहूंणां साध ॥१०॥ रज्जब नगनव खंड किये । धरिसु अष्ट विधि ध्यान॥मन मुक्ता गलमोल व्है।कहो कौंन यहु ज्ञान॥११॥ मन अस्थिर करणां कठिन।रोकि दसों दिशिमुख।अष्ट ध्यान धरि अष्ट मधि । इहै भंग इह रुख॥ १२ ॥ प्राणी पातुर लोह कै । कावितु कली चढाय॥ कसत घसत सो उघडै । गताबित दग दरशाय ॥ १३ ॥ रज्जब नांव सुपानों मुख रंग्या । पै मन लालन होय ॥ तबलग रत्त अरत्त है । समझा समझै कोय ॥ १४ ॥ बाणी रंगि बेचैं बहुत । मै प्राण रंग्या नहिं जाय ॥ तबलग रहते रंगमें । रज्जब कहां समाय ॥ १५ ॥ इक बकता है सुईसम । इक सुरता समताग ॥ रज्जब बागा बंदगी । लागि रहै तेहि भाग ॥ १६ ॥ बादल ज्यूं बाइक मिले । गराजि सुमारे गाल ॥ रज्जब चमकै बीजबल । बर्षावित विनकाल ॥ १७ ॥

अरिल ।

विक्त जोतिज्यूंरैनि अगनिसी देखिये । त्यूं करनी बिनकाव्य सुनीरविशेखिये ॥ देख्या सुन्यासुनांहिं दोऊधर सोधतें । परिहां रज्जब उभै असति सुण्या सतबोधतें ॥ १८ ॥ विक्त जोति कृतहीन कवि । दृष्टि देखि सुणि झूंठ ॥ रज्जब उभै असत्य हैं ; रजू होह भावै रूठ ॥ १९ ॥ रज्जब कथिए ज्ञानग्रह । सो सुणिमरैन कोय ॥ जैसे बादलबीजुली । चमकै विघन न होय ॥ २० ॥ ग्रह उठावै गिराकर । तनमनका नहिं जोर ॥ तौ रज्जब कहु क्या सरै । शब्द किए बहु शोर ॥ २१ ॥ शब्द संग्रह काव्यकथ । सब सुपिनेकी आथि ॥ करणी ततवित जागतू । रज्जब चलैसु साथि ॥ २२ ॥ मत मंडल मांडें मँडे । मन मयँकनभि थान ॥ खांडिक लंकन तिन मिटै । मनबच क्रम करि मान ॥ २३ ॥ आतम आ-

दित्य एक गति। बाणी पाणीं मांहिं ॥ रज्जब अज्जब आगि है। बुझती दीसै नांहिं ॥ २४ ॥ मुख मीठे जलमुकरज्यूं। पै ज्वाला में अंग ॥ रज्जब कदेनकीजिये। तिन कपटयूंका संग ॥ २५ ॥ मुख साधू मनमें असाधु। परि हरि कपटी मंत ॥ रज्जब देखै द्विपिदरश। दोइ मतहुं चौदंत ॥ २६ ॥ कह्या सुण्यां कइ्डीन कछु। जै करणीं कण नांहिं ॥ रज्जब तबलग काल है। समझि देखि मनमांहिं ॥ २७ ॥ करणी कण कूकस कथकब। साधू संत कहैं सो सब ॥ ज्यूं वातहि बात दामके गेहूं। इहां कथा क्यूं सुणीन केहुं ॥ २८ ॥ कहे सुणे कछु व्है नहीं। जै कछु किया न जाय ॥ रज्जब करणीं सत्य है। नर देखो निरताय ॥ २९ ॥ बकतहुं विद्या बक्र लग। सुरतहुं श्रवनौद्धार ॥ ज्यांनन गिर पैठा नहीं। उरनि किया व्यवहार ॥ ३० ॥ शब्द सलिल संबूह सों। वपु बादल भरिपूर ॥ बोध बारि परसे नहीं। मन सादा मिनि दूरि॥ ३१ ॥ रज्जब रहति सुघरय रही। प्रघरि गईक हति॥ मूर्ख मुल्यन जानई। समझ्या समझै सत्य ॥ ३२ ॥ महा कवीश्वर पण्डिता। बातें जान प्रवीण ॥ रज्जब नांहीं कामके। जैं साधू अंगहीन ॥ ३३ ॥ अरथ किए बहु भांतिके। परि अरथुन किया बीर। रज्जब बातें परैकी। आपण वेली तीर ॥ ३४ ॥ पढैं पढावें औरकूं। पण्डित प्राण अनेक ॥ मन समझावै आपणां। सो रज्जब कोई एक ॥३५॥ सतजत सुमिरण करणकूं। मनबच क्रम नहिं आश॥ जन रज्जब जगि आयकर। सो जीव गए निराश ॥ ३६ ॥ मन लागै नहिं नांवसूं। बातैं ब्रह्मसु होय ॥ रज्जब मनकी लगन बिन। सीझ्या सुण्यान कोय॥३७॥ जन रज्जब चित चोरटे। बोलैं साधू वैंन ॥ देह दशा उरिऔर दशा। यहु ठग विद्याऐन ॥३८॥ रज्जब पदहुन पहुंचै परमपद।

साखी भरहिन साखि ॥ इस लोकहुं इस लोकमैं । जै मन सक्या न राख ॥३९॥ गुण गालनकूं एककूं । गुण गायनसु अनेक ॥ रज्जब कही विचार कर । समझो बीर बिवेक ॥ ४० ॥ कविकथ कागद नांव परि । पढि गुणि बैठे जांणि ॥ पै करणीं कष्ट जहाज विन । रिधि निधितिरहिन प्राण ॥ ४१ ॥ सतजत सुमिरण नांगह्या । विद्या वेत्ता बीर ॥ पाठौं पारन पाइये । रज्जब वैली तीर ॥ ४२ ॥ करणी कठिनसु बंदगी । कहणी सब आसान ॥ जन रज्जब रहणी बिना । कहां मिलै रहिमान ॥ ४३ ॥ तन मन आत्म रामसूं । ये जोडे नहिं जाहिं ॥ तौ रज्जब क्या पाइये । शब्दों जोडे मांहिं ॥ ४४ ॥ करणीं सोंकाठै रह्या । कथणी कों हुशियार॥ रज्जब रामहिं क्यूं मिलै।सकल बक्या व्यभिचार॥४५॥ समझिन अपणें कहेकी । बकै विकल बुद्धि मांहिं ॥ रज्जब सूते के शब्द । जागेकी गति नांहिं ॥ ४६ ॥ कथणीं कथ्यूंन मन मरै । नवैं ननोंकी कोर ॥ ज्यूं रज्जब बराडत सुणीं । बित्तन छोडै चोर ॥ ४७ ॥ सीत भरम गुण गुदडी दाव्या । बोलै घर घरमाँहिं ॥ रज्जब रोगी रारिन खोलै । चोर डरैहि यूं नांहिं ॥ ४८ ॥ रज्जब कथ्यूनमन मरै । अरि गुणडरपहिं नांहिं ॥ जैसें सिंह परवरणकै। पंखि बैठै सुखमांहिं ॥ ४९ ॥ करणीं बिन कथणीं निबल । नहीं ज्ञान मन गंठि ॥ जन रज्जब ज्यूं सिंहनख । बांध्या बालक कंठि ॥ ५० ॥ पेहिपपानगति ज्ञान है । सु ऊगै पहिमिन प्राण ॥ रज्जब ज्ञाता गहन कों । तजै नहीं गत बाणि ॥ ५१ ॥ पढि पढि हुएसेह से । शूलों भरचा शरीर ॥ रज्जब मारै औरकूं । आपन बेधै बीर ॥ ५२ ॥ उर अनरथ मुंहहै अर्थ । कहूं कहा सो होय ॥ जन रज्जब रीते रहे । काजी पंडित जोय ॥ ५३ ॥ दसपद साखी शिष्य कहि । फिरि फिरि मांडै सींग ॥ रज्जब साधोंसोंअडै ।

देखो बिगडे धींग ॥ ५४ ॥ ज्यों नृत्यकारी नांचहूं। काढै रूप अनेक ॥ त्यूं रज्जब सब कहणकूं। कीर बेकूं नहिं एक ॥ ५५ ॥ बात मांहि जो देखिये। गात मांहिसो नांहि ॥ तो रज्जब सो शब्द सुणि। सुरता क्यूं ठहराहिं ॥ ५६ ॥ रज्जब विद्या घर बहुत। लिए अविद्या साथि ॥ तमझें चलै विरागची। गहैं विराकहि हाथि ॥ ५७ ॥ रज्जब पुस्तक पढहिं सिर धरैं। पण्डित प्यादे जोय ॥ पाठ पंथ तन पेट लग। दरस देश अनि होय॥५८॥ साख्यूं सांसानां चुकै। पदौंन पदमें जाय ॥ रज्जब कहि सुणि देखिया। नर देखो निरताय ॥ ५९ ॥ अकल अकलिसों जानिए। पै जीव सीव नहिं होय ॥ जतसत सुमिरण बाहिरा। सीझ्या सुण्या न कोय ॥ ६० ॥ रज्जब बरणें बैन बपि। जपि जीवन नहिं जाँन ॥ मांनहु ग्राहि जगहन गति। गहैंन शशिहर भान ॥ ६१ ॥ ब्रह्मण्ड पिंड क्यों व्यौरही। बातौं करि सुविशेखि ॥ रज्जब बोले बोध बालि। बिरला कहसी देखि ॥ ६२ ॥ रज्जब आई बातमैं। हाथमांहिं निधि नांहिं ॥ सो रीता सुणि रिधि बिन। समझि देखि मनमांहिं ॥ ६३ ॥ रज्जब पार सचित्रका। मांड्या सोवन मेर ॥ त्यूं कथणीं करणीं बिना। हाथि चढै क्या हेर ॥ ६४ ॥ पद पावकमें लिखि लिया। तौ घराति मिरनजाय ॥ रज्जब दीपक रागकूं। जैन सुनावै गाय ॥ ६५ ॥ भगवंत भजन बिन झूठ सब। प्यंड ब्रह्मंड बखान ॥ रज्जब दत बाजी चिहर। देले मिथ्या जांण ॥ ६६ ॥ पाठो दरसै नांव सब। परि ठांवन परसै प्राण ॥ तबलग ततवित दूरि है। समझैं संत सुजान ॥ ६७ ॥ राग माल लिखि राग न आवै। भागल लिखि तें राजन पावै ॥ पिंगल लिखेन पिंगल उपजै। यूं शब्दसीखि कहि साधन निपजै ॥ ६८ ॥ शालि सहस्र मण कूटिये। ऊखल

मूसल मांहिं ॥ रज्जब दोन्यूं बरतिये । प्रातात प्रज कछु नांहिं ॥ ६९ ॥ पकवान पकाए बहुत बिधि । कडछकडाही मांहिं ॥ रज्जब दुःख दोन्यूं सहैं । स्वादसीर कछु नांहिं ॥ ७० ॥ लाखको टिलेखण लिखैं । लहैन लक्ष्मी लेश ॥ कलम कमानै औरकूं । देखहु यहु उपदेश ॥ ७१ ॥ बैद्य बंदिये बपुबिमल । बूंटी बीचि विलाय ॥ एक दलाली यहु नफा । नर देखो निरताय॥ ७२ ॥ मन गोली पहुंचे पहल । पीछे शब्द अवाज ॥ यूं करणीं सौं कथणीं लगी । तिनके सीझे काज ॥ ७४ ॥ ज्यूं कथणी मुखसैं कथै । त्यूं करणी व्है मांहिं ॥ तौ रज्जब साची कथा । कहे भिन्न जो नांहिं ॥ ७५ ॥ एक कह्या साही मतैं । कहै किया नहिं जाय ॥ तबलबाजनीकैं कहै । रज्जब कहि करि जाय ॥ ७५ ॥ श्वान शब्द सुणि श्वानका । बिन देखे भुसि देय ॥ त्यूं रज्जब साखी शब्द । जै देखि निरखि नहिं लेय ॥७६॥ परवार बोल्या पाहरू । सो बोल्या परवाणि ॥ रज्जब सुनहै सुणिसहंस । भूके मिथ्या जाण ॥ ७७ ॥ रज्जब बोले वेषबरि । यथा स्वानखड खाय ॥ वहि आशंकानां उठै । वहि नहिं उदर भराय ॥ ७८ ॥ रज्जब टूंटहुकी पहुंचा छडी । कोई गह्यान जाय ॥ त्यों भाव भक्ति उपजै नहीं । अज्ञानी बक बाय ॥ ७९ ॥ हीरेजी गण सर्प मणी । आगि नहीं रंग आगि ॥ यूं ज्ञानविनां गति ज्ञानकी । तिणगुण जलहिन जागि ॥ ८० ॥ मानहुं मृतक पूत जणि । क्या हरषै पितु मात ॥ त्यूं रज्जब कछु वैनहीं । ग्यान गही गतवात ॥८१॥ सीखे शब्द कबीरके । दिल बांध्या कहीं नांहिं ॥ मनसा बाचा कर्मना । वहि निगुरामन मांहिं ॥ ८२ ॥ गुरुबिन सीखी बहु गिरा । ज्यूं कारण विनकंत ॥ कलितहुं मांहिं कलंक यहु । निकसै लेतहु अंत ॥ ८३ ॥ जन रज्जब गुरुबिन गिरा । सीखैं

अनंत अपार ॥ बहु पुरुषौं पुरषै नहीं । गणिकाका अवतार ॥ ८४ ॥ शब्द सकलके संगि रहैं । गुरुएकै नहिं शीश ॥ रज्जब यहु विश्वाम्रता । मनवच विश्वावीश ॥ ८५ ॥ बहु बापौं बापै नहीं । वेत्ता बालहिं जोय ॥ त्यौं निगुरे बैरागकै । ठिक्क ठाहरनहिं कोय ॥ ८६ ॥ नित्य नियम पति बरतकी । नर निगुरे उरिनाश ॥ रज्जब विश्वा बाळ विधि । पिता पूतनहिं आस ॥ ८७ ॥ उभै अरथ जाणें नहीं । कहत सुनतभई सांझ ॥ सो रज्जब निरफल गये । ज्यों नरनारी बांझ ॥ ८८ ॥ निगुरी बाणीं खुदरी लूण । ताहिन मौलिविसाहै कौन ॥ गुरुमुख शब्द सर्व रसस्वाद । मोलि बिकावै सुलाकैसु आदि ॥ ८९ ॥ नर नक्षत्र दीसहीं अनंत । उदित अमावस रैन ॥ पहुंचै पौन प्रकट तुछ । अभ्यासै नाहिं सैन ॥ ९० ॥ बैराग बधू लै ज्यूं उठै । अल्प अधूरी आव ॥ रज्जब रहै न उसमतै । मत मारू नहिं पाव॥९१॥ च्यारि खानि चौरासी भरम्या । रज्जब रह्यान माँहिं ॥ पैखानि पांचमी पगन ठाहरै । निगुरा निहचल नांहिं ॥९२॥तन फेरे चहु खानि फिरि । पंचममें गुरुदेव ॥ मूरख मर्म न जानही । गडी फेरणीं टेव ॥ ९३ ॥ कागरखे सुरपाख इक । भोली पूजै लोय ॥ मीं रज्जब मारै सबै । करणीं नांहीं कोय " ९४ ॥ दस राहै देखै दुनी । नील टांसकूं नैन ॥ तौ कहा खलकले बाहुडी । काख गपाया चैन ॥ ९५ ॥ गडवीचारण राजा भाट । ढोली राणां उलटा ठाठ ॥ रज्जब स्वामी सुधनसार । ज्यूं भिषित भ्रमिककह्या दातार ॥ ९६ ॥ ज्यूं देखा देखी पंथ सिरि । पाथर कीजै ढेर ॥ त्यूं रज्जब संसार ठग । रतीन समझै फेर ॥ ९७ ॥ ज्यूं देखादेखी वृक्षकूं । चींधी बांधैं लोग ॥ त्यूं रज्जब समझैं नहीं । झूठा जगका जोग ॥ ९८ ॥ हुए गुदाडिये जाट ज्यूं । जोगन आया हाथ ॥

जन रज्जब फुलें फलैं । जड युवती धर साथ ॥ ९९ ॥ दशा औदशा दूरि करि । दिलपर साहिब राखि ॥ जन रज्जब रजमां नांवमें । साधु बेदकी साखि ॥ १०० ॥ जन रज्जब रीति रहति । नांव बिनां क्या होय ॥ सिंहलद्वीप जतीघणे । सीझ्या सुण्या न कोय ॥ १०१ ॥ त्यागीकूं लागी घणीं । माया मेछग मन्न॥ यहु भीहुनर देखिये । ससझे समझो जन्न ॥ १०२ ॥ माया मृग उलटे चढहिं । बिकृत बधिक सुभाय ॥ विभूति उडावहि सन्मुखी । जड चेतनिठगरवाय ॥१०३॥ उदास्तु अहेडी वधी । साधु सुधसु नांहिं ॥ भूत विभूत उडावहीं । मृग माया फंद मांहिं ॥१०४॥ आतम ओढे लोक सब । ऊपरि नग्न शरीर ॥ रज्जब रचना कपटकी । संतन मानैं बीर ॥ १५ ॥ रज्जब बसुधा व्योम विच । सूर दिगंबर रूप ॥ सरसलिता आसे सबै । सोखे बापी कूप ॥१०६॥ रज्जब अंड अवस्था नग्ननर । नांगहु नांगे नांहिं ॥ दगहुं दिगम्बर देखि यही । बहुत पंख पट मांहि ॥ १०७ ॥ रे रज्जब मन नांवसों । लागे सुधन होय॥तौ दिग अम्बर पहरिकर । सीझ्या सुण्यान कोय ॥ १०८ ॥ तन नागा बहुतै करैं । मन नागा नहि होय ॥ रज्जब मन नागे विना । कारिज सरैन कोय ॥ १०९ ॥ सकल दिगम्बर देखिये । चौरासी लख जीव ॥ बागे गाठि बंधण नहीं । बहुकिन पायापीव ॥ ११० ॥ मानहुं कपडेकांचली । ताजिसु नग्न नरनाग ॥ रज्जब नख शिख विषभरे । ठाहर उभै अभाग ॥ १११ ॥ नागे पटनाहर फिरै । फिसण पशुहतिखाय ॥ मिहरि मांहि मौजे पहरि । मुगलों छोडी गाय ॥ ११२ रज्जब चुपडे अशन अति । वसन सुरूखे रंग ॥ मनवच क्रम कपटी कला । केसों केसे अंग ॥११३॥ रज्जब नांवहि सुख विरक्त बहुत । कोई सीझे नांहि ॥ चौरासी सब

चीर बिन । कनकन गांठयूं मांहिं ॥ ११४ ॥ बप बागहु वि-
रच्या सही । ज्यूं सलिल उतारहि झाग ॥ तौ रज्जब मनबं छुतै ।
सकल सलिल भए त्याग ॥ ११५ ॥ बागे त्यागे नरहुनें । ज्यूं
तरुबर पतझार ॥ दिनदस नागे देखिये । पुनि ढांके व्यवहार ॥
॥ ११६ ॥ उघडयूं ढक्यूंन हूलि मिलैं । प्राण पारखू साध ॥ तिर
सुधूं तिरसुद्ध व्है । रज्जब बुद्धि आगाध ॥ ११७ ॥ निस नागे
नरकन रहै । दिन देखे त्यूं देव ॥ भोजन समये गुरु नगिन ।
भिक्षु दिगंबर सेव ॥ ११८ ॥ दाम भाम माँहै रहति । आदम
अदभू ठाठ ॥ रज्जब रामन पावही । भूले भजन सुबाट ॥
॥ ११९ ॥ कायासूं कामिनि तजी । मन भुगतै रण वास ॥
रज्जब बयबन खंडमें । चाहै कनक अवास ॥ १२० ॥
वाहरि बंध वैराग कै । भीतर गहीसु लोग ॥ रज्जब रामहि
क्यों मिलहि । यहि पाखंडी जोग ॥ १२१ ॥ काम कलणि
माँहैं कले । गाफिल गलज्यूं गात ॥ रज्जब बीधे व्याधिमें । सुख
सु रामकी बात ॥ १२२ ॥ दिये दामन कर चढै । बिना उपासि
उपाधि ॥ अनदीये सु अतीतले । कपट कसौटी साधि ॥ १२३॥
कपट कसौटी ठगविद्या । आसण अधर कराय ॥ रज्जब लोभी
लालची । सकल धरेके भाय ॥ १२४ ॥ प्रमन माया लेणकौं ।
विविध कसौटी कीन ॥ रज्जबजीव रीतारह्या । कहा मुग्ध
मति हीन ॥ १२५ ॥ मनतन मरद्या मानिकैं । करीमींचलग
नींच ॥ रज्जब आतम रामकै । तउन भागा बीच ॥ १२६ ॥
रज्जब कौडी नांग हैं । करि दासौमैं बास ॥ ज्यूं जलमीनन सुखि
पिवैं । बिन तोयं तन नास ॥१२७॥ मीन मुनेश्वर होय करि ।
रहे दास दह कोस ॥ रज्जब पंखी प्राणकूं । जलनिधि लेत सरोस
॥ १२८ ॥ रज्जब दासों माँहै बास करि । स्वामी स्वान विशेष ॥

अयाचक ग्रहगहि रह्या । भुसै अतीतौं देखि ॥ १२९ ॥ आ
दमईदम सारिखा । देखरभुसैफकीर ॥ चौरासी मांहै नही ।
दूजा वहि सम बीर ॥ १३० ॥ दासदेस दिलमे गहे । देह दि
गंबरहोय ॥ माडर झाई भांड मत । मुझमानें सब कोय ॥
॥ १३१ ॥ औंधे कर पाणीं घडे । सूधी कीनी आस ॥ त्याग
दिखावैं जगतकौं । कैं ताल परवास ॥ १३२ ॥ गहैं सग
रथी गूदडी । तजै निगरथी नीर ॥ रज्जब रचना कपटकी । पाखंड
म्यांड्या बीर ॥ १३३ ॥ अमर बेलि सम ओलिया । जमी जगत
निरमूल ॥ रज्जब पलहि सुनर तरहु । छूटणकी नहिं मूल ॥
॥ १३४ ॥ जड बिहूंण जल मंडली । जीवै पाणी मांहिं ॥ ज्यूं
अतीत आशा रहित । परि आलमन्यारे नांहिं ॥ १३५ ॥ तीन
दामकी चूकणी । मुहरहि चूकणजाय ॥ त्यूं रज्जब साधहि अस
ध । शब्द चुभोवै आय ॥ १३६ ॥ लोहैं सोना छेदिये । लोहै
कंचन तोल ॥ पै रज्जब रजतज काढतूं । सरभरि लहैन मोल ॥
॥ १३७ ॥ साध असाधों सों सकै । भूलिन हूज्यो भेटि ॥ कीडी
सों कुंजर डरै । सोवै सूंडि समेटि ॥ १३८ ॥ मयंद सूंडरपै माछ
रहुं । देखो कदरजमांहिं ॥ ऐक पूंछकै झाटकै । केते मारे जांहिं
॥ १३९ ॥ सोधी बिन सिध देखिये । सांई पावै नांहिं ॥ सुरति
बँधी रिधि सिधि सों । फिरि आए कलि मांहिं ॥ १४० ॥
माया माहिं मिल्या मन खेलै । काहि वेकूं सुख केवल
राम ॥ सांई नांहि मिलै इन बातें । रज्जब सरधान ऐकै
काम ॥ १४१ ॥ माहै माया चाहिये । ऊपर भए उदास ॥
रज्जब रामहिं क्यूं मिलैं । ध्यान धरेके पास ॥ १४२ ॥ बाहरि
सो विरक्त भए । भीतरि भूख अनंत ॥ जन रज्जब जगयूं ठगहिं ।
बहुरि कहावैं संत ॥ १४३ ॥ ब्रह्म मिल्याभी चाहिये । अरु माया

सों काम ॥ जन रज्जब कहु क्योंमिलै। अंतर जामी राम ॥ ॥ ॥ १४४ ॥ रज्जब काया कूपमें। करक कामनां मांहिं ॥ जब लग सो निकसै नहीं। तौ जल काढे कछु नांहिं ॥ १४५ ॥ सूतें सुपिनां बिलसियें। जागे व्है योगींद्र ॥ रज्जब सीझै कौन विधि। मनवा मैले मंद्र ॥ १४६ ॥ घरि बनिपसु माणस रहै। उभैन पलटहि अंग ॥ यहु रज्जब भागा भरम। फिरहिन नाणें नंग ॥ ॥ १४७ ॥ पशु प्राणी पलटहिं नहीं। घरब निवासा झूठ ॥ रज्जब रीते राम बिन। रजू होहै भावैरूठ ॥ १४८ ॥ वणि जारे बिच रहिं सदा। बनिये बैठे हाट ॥ रज्जब चंचल अचल गत। सुरति सकातिकी बाट ॥ १४९ ॥ करहि कीरतन प्रेमसों। माया देखि मजदूर ॥ जन रज्जब ऐसी भगति। हरिसों नहीं हजूर ॥ १५० ॥ रज्जब भाडेकी भगति। करहि कलंकी जीव ॥ भजन बेचि पेटहि भरैं। कदेन मानें पीव ॥ १५१ ॥ हरिजस बेचै पेटकूं। वै मंद भागी जानि ॥ जन रज्जब नर मोलका। मोल कराया आनि ॥ ॥ १५२ ॥ रिधि सिधि तजि वैकुंठ लग। भगतिहि बांछै साधु ॥ जन रज्जब सोबेचिये। मोटा व्है अपराध ॥ १५३ ॥ नांवदीं बेचत बिकत है। नांव लिहारी प्राण ॥ अन बेचेसु गुलाम है। नांव धनी अब जाण ॥ १५४ ॥ नीरनहे गनांवमें। मोल तोल तिन नेत ॥ देण हार भूखेसु देहिं। भाग सभागे लेत ॥ १५५ ॥ बालय बंदसें तुल्य ताइके। बाजीगर सु महंत ॥ रज्जब लोभी लालची। मिलैसु माया मंत ॥ १५६ ॥ कलि रीझै कपिकी कला। वित बाजीगर खाय " रज्जब इस पाखंडकी। महिमां कहीन जाय ॥ १५७ ॥ जीव बाजीगर डाकसु सुख। आसण कला अपार ॥ रज्जब आया भूखले। मंगिण यहि संसार ॥ ॥ १५८ ॥ तनहि नचावहि जीव बहु। मनहुं मुनीश्वर प्राण ॥

रज्जब मनकी निरती बिन । मौजदरशवदान ॥ १५९ ॥ बाजै गाजै ऊपरै। मन मगनी होय जांहिं॥रज्जब रीझै गाय सुनि। शब्द भेदही मांहिं ॥ १६० ॥ रज्जब रागी रागके । उरग मिरग मन मांहिं॥ स्वरसाटै सिर देत हैं। रीझे सुणेसु नांहिं ॥ १६१ ॥ खुडके खाईमे पडै । शठ सूवर मति हीन ॥ त्यूंही आवहीं जालमें। डलडंमक सुणिमीन ॥ १६२ ॥ त्यूंहीं कलि जुगकरण बसि। कराखि कुला हल लीन ॥ रज्जब सूनें सोरखू। संसारी बसि कीन ॥ १६३ ॥ ज्यूं हांडी अदहण सुजल। त्यूं बाजे सब राम ॥ नाज नांव बिनझूठ सब । भूखहुं मरहिं अभाग ॥ १६४ ॥ सूवा सारो संग्रहे । सुणि सुणि मीठा बोल ॥ रज्जब वाणीं बसि पडे। घरि घरि बेचै मोल ॥१६५॥ डूमनरपै माँगता। संसारी अरु साधु ॥ रज्जब भाजे चाहि चख। भीतरि भूख अगाध ॥ १६६ ॥ रज्जब डरिये डूमसौं। अतिगति खोटा खूम ॥ भिश्त छाडि दोजग चल्या। देखिसु धुमता खूमि ॥ १६७ ॥ मंगित मन ठाहर नहीं। नित तृष्णा मगि पग ॥ सब दिरकी चिगता देखिये। तौ कहिये जाचिग ॥ १६८ ॥ मंगित गति माहै नहीं। मंगिण गिण्यान जाय ॥ रज्जब राखै कौन विधि। नरदेखो निरताय ॥ १६९ ॥ नांव भिखारी आरति आर । रसणी पुराणी रोप्या सार ॥ रज्जब सती सुधौरी डरै । जाचत छेद पुडै मति करै ॥ १७० ॥ लाल चलक्ष्मीकौं चले। लाजपछमनी लेय ॥ मंडित चढ्याहिंडोलनै। पगन धीर धर देय ॥ १७१ । रज्जब दान देह आधीन वाहक। मृत भीत प्रभेद। मांगतै व्है मींच समयौ। भिन्न नाहिन भेद ॥ ॥ १७२ ॥ ऐक बोलते अति भले। इकइन बोले कछु नांहिं ॥ रज्जब नर नाले रज्यूं । मौंनी चीकटे माँहिं ॥ १७३ ॥ मौंनी साखि मांगे नहीं। सैंनौं चाहे सोय ॥ परि रज्जब पर पंचकूं। साध

न मानें कोय ॥ १७४ ॥ शंख शब्द फिरि यादि है। सींगी नाद पुकार ॥ रज्जब रोवहि पेटकूं । मति कोई करै संभार ॥ १७५ ॥ केते मुरगे बांग देहिं । रासभ पूरैं शंख ॥ किन उनकूं पूरा दिया। रेमन मूढ नझंख ॥ १७६ ॥ मद पीवत माया गमैं। मतिवाले मति खोय ॥ काले पाणीं घर गया। सकल पुकारैं लोय ॥१७७॥ दारू धक्का दैत्यका। पी परसें मनि नाश ॥ तौ रज्जब यहि जुगल मिलि। जीबेकी क्या आश ॥ १७८ नांव भंग भंगै करै। पोसत पाणी नेह ॥ रज्जब राच्यूं बसि करै। विरच्यूं पाडै देह ॥ १७९ ॥ अमल अमल अपणां करै। मनसा महीमँझार ॥ रज्जब प्राणीं प्रजपरि। पीडा दुख अपार ॥ १८० ॥ अमली अमली कहत है । सो क्यूं मिलसीआय ॥ रज्जब भाषा भेदकूं। नर देखो निरताय ॥ १८१ ॥ सोफी नांव बुलाइये । अमलन छूटै कोय ॥ रज्जब बिरद बिसारि करि। बैठे रतनसु खोय ॥ १८२ ॥ नांव परोहित हित परै। चूक बडी चित मांहिं ॥रज्जब नांव प्रतापकी। महिमां जाणें नांहिं ॥ १८३ ॥ लांव ज्योतिषी सब कहैं। सूझै ठीकन ठांव ॥ ज्यूं अंधसंतोषै अंधमन। नीडा आया गांव ॥ १८४ ॥ ऐक रतूंधा ज्योतिषी। देखै दिशि आकाश ॥ धरती धन सूझै नहीं। रज्जब ततबितपास ॥ १८५ ॥ गुरुगोबिंद दरबार। गरद मरद लागीन अंग॥सूरज गजलेहि अपार। अहि अवनी छाडैन संग ॥ १८६ ॥ गुरु गोविंद दरबार। रज्जब रज लागीन उर ॥ सुछिन छिन लोटहिं छार । खित खालिकसिरजे सु खर ॥ १८७ ॥ साधूपदरज परसतैं। बहुत लाभसुनिबैठि ॥ रज्जब ऐक अनेक व्है । धान धूलिमैं पैठि ॥ १८८ ॥ मन माया की बंदिमें । बीती उमरिअनेक ॥ रज्जब गुरु गोविंदकूं। जन मदिया नाहैं ऐक ॥ १८९ ॥ अनेक जन्म योंहीं गये। दातहि

दियान ऐक॥ तौ रज्जब जडजीवका। समझया सकल संकेत॥
॥ १९० ॥ वस्तुबिकी अरु बाट रहे धरि। सो संपति कछु
नांहिं॥ जन रज्जबऐकौ विन अैसें। समझि देखि मन मांहिं॥
॥ १९२ ॥ रज्जब कायाकीचकी। सजल सरोवर ऐक ॥ बारि
गयेसु बराय बहु। डल व्है गये अनेक॥ १९२ ॥ सतगुरु बूंडा
आलका। सिखजड टूटे मींच ॥ पुनि ऐसे आये मिलै। तंतू ब-
सुधा बीच ॥ १९३ ॥ दुनियां सों करिदोसती। रज्जब विसरया
पीव ॥ सूक विरछमें फलतकै। अइया मूढमति जीव ॥ १९४ ॥
आतम रामहिं नांवणी। रिधिन मिलहिं अभाग ॥ रज्जब दीसहिं
प्राण पहिं । महा विपति बैराग ॥ १९५ ॥ जीव सीव परचा
नहीं। शक्तिसु दीनि पीठि ॥ रज्जब रह्या दरिद्र घर। दह दिशि
दीसे दीठि॥ १९६ ॥ रज्जब लक्षण जीवके। बातौं ब्रह्मसु होय॥
मनसा वाचा कर्मना । कारिज सरैन कोय॥ १९७ ॥ जन
रज्जब तन रंक गति। सब बातोंसु सकज॥मनबच राजा व्है रहे।
बहि बोलैंसु निलज्ज ॥ १९८ ॥ कूरम ग्रीवागत गिरा। प्रकट
गुपत व्है जंत॥ साधु शब्द निकसैसु यूं। ज्यूं रज्जब गजदंत॥
॥ १९९ ॥ साधु शब्द सत्यसैल सम। सो सरकै नहिं कोय॥
आनन उदै असंतकै । गिरा सुगति गत होय ॥ २०० ॥
मनसाके दाति मति नहीं। कीजाहिं दान अनेक ॥ रज्जब दुलं
बहाथ सौं। करिबेकूं नाहिं ऐक ॥ २०१ ॥ शठसु रता हुये रहै।
देतन समझ्यूं ठौर ॥ पै गतमत कैसे छिपै। आगै पीछै और॥
॥ २०२ ॥ बाध्याँ बाधेकूं भजै । सुकृतहूंकी आश॥ सोरज्जब
कैसै खुलै। यहि झूठे विश्वास ॥ २०३ ॥ चेतनिकनसुणिसी-
लके। सेवै जडहीसु जाय ॥ सो रज्जब कैसे वर्णे। नर देखो निर
ताय॥ २०४ ॥ तन पाका ज्यूं तोरई। मनपाका ज्यूं बीज॥

रज्जब रस बाकस भया । अमृत विषमें चीज ॥ २०५ ॥ सेवक
सिट्टामकई । काचा सेकै स्वाद ॥ पाकिसूकि जड ज्वारिगत ।
बाकस व्हैं गये बादि ॥ २७६ ॥ तनतरुवररजब बडेव्हैं । तबफ
ळ फूलौं सों जांहि ॥ सूकूं सेवक सांणिकै । क्यासब डाढी मांहिं
॥ २०७ ॥ रज्जब रावण सुख सभा । पै बडा बदन रासभ ॥ नर
आनन नीकै कहै । वहि बोलि विगाडै सब ॥ २०८ ॥ घट घोडा
आतम असवार । ऊजु किसहि करावैयार ॥ पाँच बार पौहणकूं
धौवें । यूं ऊजलअस वारनहोवैं ॥ ३०९ ॥ अस अस फौकूं
संजम ऊजु । असंबार सुपतितपलीत ॥ तौ ऊजल क्यों पाक
व्है । चलि ऐसी रस रीति ॥ २१० ॥ सदा पिंड पाणी सूं धौवैं
ऐसे प्राणन ऊज्वल होवैं ॥ जळचर देखि रहै जल मांहीं । रज्जब
मैलन उनके जांहीं ॥ २११ ॥ बोक बक्र डाढी बडी । पैतिसकी
करैन लाज ॥ रींछ रीस रूपी सुतन । कहो सरचा क्या काज ॥
॥ २१२ ॥ सुपिनें संपातिसं चिये । सुपिनें गुरु शिषरत्त ॥ रज्जब
दोन्यूं झूठ हैं । जागे सुतन मत्त॥२१३॥ सुपिनें गुरु शिखगत ।
रज्जब उभै असत्य हैं ॥ जागै सुतन मत्त । यह्व विचार मनमें करो
॥२१४॥क्यासिख सुपिनें सेवकी॥क्या गुरुब्रभू होय॥रज्जब सगपण
झूठहै॥जिनरपतीजै कोय॥२१५॥रंक सगाई राज घरि । जै सुपिने
में होय ॥ रज्जब राता नांगिणहिं । जागे जगपति कोय ॥ २१६ ॥
मूए गुरु मांथै धरैं । निरगुरु हूनें निरताय ॥ जीवतौंसौं जोख्यूं
घणी । सेवाकरीनजाय ॥ २१७ ॥ गुणज्ञान जीवतहुं कनली
या । मूए किये गुरु पीर॥मनवच क्रमवे क्रित घनी । संतन माने
वीर ॥ २१८ ॥ तन तोयंलेतेल नीपजै । घास चरै पशु घीव ॥
तौ रज्जब रूखा क्यूं कहिये । अंनअनीलसजीव ॥ २१९ ॥
तिर जाणें नाहिं हरि बिमुख । सिरले पाप पखान ॥ बिध्या बीसहु

बूडई । रज्जब कह्या बखान ॥ २२० ॥ सुनहि सुरी सुरगी मींन । बहु जात गजणी कडुवा कीन ॥ पै परमारथ उपज्या क्या मांहीं । रज्जब रावण देखौ मांही ॥ २२१ ॥ मातिहीणा मनजब धापई । तब मारग चलेनजोय ॥ ज्यों सुख मूतैं आपणे । बोक मस्त जब होय ॥२२२॥ शारदूल तलपै मरै । सुनि बघंद्रकी गाज ॥ सो सुरपति समझै नहीं । यहु पचन होत बेकाज ॥ २२३ ॥

साखी ३९९२ ।

बखत व्योरेका अंग ।

नर उरहिमगिरज्यूं झरै । साधू सूरिज देखि ॥ जन रज्जब तप तापमैं । बिगता बिगती विशेखि ॥ १ ॥ त्रिविधि भांति कालो गहै । त्रिबिधि भांतिका जोग ॥ जन रज्जब सेवा समझि । सबै लगावैं भोग ॥ २ ॥ दीपमसाल एकनहिं बाती । जैसा देवसु तैसी पाती ॥ रज्जब रोषन कोज बीर । भाग भिन्न काहूं नहिं सीर ॥ ३ ॥ सबकूं सम सरिनां किया । अंधन आर आव ॥ रज्जब बक्कविचारिये । कीये नहीं चबाव ॥ ४ ॥ त्रिविधि भांति त्रिगुणी करी । सो समसरि क्यों होय ॥ आव अलूफै अकलिमें । मनबच कम करि जोय ॥५॥ सिरज्या सिरजन हारका । मेटिन सकई कोय ॥ रज्जब दुरमति दोष धरि । बादि बकैं क्या होय ॥ ६ ॥ रज्जब रिधि सिधि भागकी । पाई पूरबदात्ति ॥ ताहि देखितपितपिउठै । अइयामूरखमात्ति ॥ ७ ॥ दुखसुख सांई कादिया । जीवों पाया सोय ॥ तौ देखि दरिद्री सुरही । क्यू सर तंरवा होय ॥ ८ ॥ देखि पराये भागकूं । रोवहि सदा अभाग ॥ रज्जब वै आनंमें । उनके दिल दुख दाग॥९॥शठ शुनहा निश दिन शुसै । आंख्यों देखि अतीत ॥ रज्जब रिजकन घटि बध्या । वैब

क्यिबि कल बतीत ॥ १० ॥ भौंकहिं गोरख दत्तकूं। कुत्तोंकी यहु बाणि। पै सिरज्या सरकै नहीं। हासिल होयन हानि ॥ ॥ ११ ॥ विभूति बंदगी हरि हुकम। नरहुं प्रासिद्ध होय ॥ जन रज्जब थोडा बहुत। दोषन दीजै कोय ॥ १२ ॥ रज्जब दुःख सुख देखि करी। कीजै नहीं उचाट ॥ ऐकहुकै पाइन पदम। एकहु नहीं ललाट ॥ १३ ॥ मारौंलायक मारपावहीं। मरैजोला यक मौज ॥ ऐकहुके पग कूकर काटहि। एकहुं गैलछुफौज ॥ ॥ १४ ॥ रज्जब सतजतसौं दीमें बडी। रतीज़ुमस्तकमांहिं ॥ रूपराग गुण सबथके। कोई पूजहिं नांहिं ॥ १५ ॥ रतीन पावै रतीबिन। सतीजती व्है जोय ॥ सप्तद्वीप नौखण्ड फिरि। बिन रचनां क्या होय॥१६॥ रचनां बिन नाहीं रती। विषतौ घटिनैं विराट ॥ रज्जब पावै प्राणसो। ठाकुरण्याजु ठाठ ॥ १७ ॥ भगवंत भागमां हैं लिख्या। सोई मिलसी आय॥ताऊपरि वोछा अधिकं। रज्जबलियानजाय ॥ १८ ॥ रती सहित राजेंद्र व्है। रती विहूणां रंक॥रज्जब भाग अभाग विचि। एक रतीका बंक ॥१९॥ रज्जब रूठे तुठे किसीके। घटै वधै कछु नांहिं ॥ राम रच्या सो होयगा। लिख्याजु मस्तक मांहिं ॥ २० ॥ भावी भालौंन ऊतरै। भूतिनभावी भाग ॥ रज्जबरचनां क्यूंटलै। भावै सोयं भावैं जाग ॥ २१ ॥ भगवंत भाग मोटा दिया। छोटा किसकन होय॥ प्रभु पसावै सोक्यों घटै। काहे कलपै कोय ॥ २२ ॥ पैठहि शैल समुद्र मधि। रिधि मुकता कै भाय ॥ भाग बिनां खान्यूं दवै। कहि मगर मच्छखाजाय॥ २३ ॥ बारि लोक वडवानल लहिये। ये उगरहसु अभाग ॥ परबतपर पाणीं मिलै। रज्जब अज्जब भाग ॥ २४ ॥ सारंग चाहै स्वातिकूं। दामिनि दग्ध्या गात ॥ रज्जब कहिये कौनकूं। इन बखतोंकी बात ॥ २५ ॥ आभा तलि वोडे

अहर। सारंग स्वातिहि जान ॥ असाणि अगागौं वोसरै। तहां सुनतकी हानि ॥२६॥ हांडीसूं भांडी भई। छूंकत लागी आग॥ जीवन करतूं जलिमुए । अइया भूंडे भाग ॥ २७ ॥ अइया अभागी ऊंदरा। करंड काटणें जाय॥ कै बखतबली बाती गहै। जासों लागै लाय ॥२८॥ गोला छूटा और दिशि। पंखी आया बीच ॥ रज्जब कहिये कौनसों । भागौं व्हैं गई मींच ॥ २९ ॥ अनलपंख आदित्य जरी।बडवानलसों मीन॥जीवनि ठौर सुजम भई। काहि कहै सुसकीन ॥ ३० ॥ नरतरतारे समनहीं। जो सिरजे करतार ॥ रज्जब घटि बधि बीचके। बाबै हाथि विचार ॥३१॥ चतुर खानिके जीवजागि। नाहीं एक समान ॥ त्यूं रज्जब सुनिहेतरज। येभी यूंहीं जान ॥ ३२ ॥ अठार भार अरु अष्ट-कुल। उडगसुएक न होय ॥ रज्जब लघु दीर्घ रचे । आदम अंगुरी जोय॥ ३३ ॥ प्रभु पारस मैंहगा किया। सौंघे असमसु पान ॥ रज्जब लघु दीरघहु कमि। समझौ संत सुजान ॥ ३४ ॥ रज्जब राजा किनकिए। कौनें किए सुरंक॥ ये अक्षर अविगति लिखे । निरखिललाटहु अंक ॥ ३५ ॥ बड पीपल अरु लांप-तिण। उदै अंकूर सुभाय ॥ लघु दीरघसु दयालदत । दोषन दिया जाय ॥३६॥ कीडी कुंजर किन किए। लघु दीरघदी देह॥ रज्जब दोषन दीजिये। देखि तमाशा येह ॥३७॥ सांई समसरिनां किये। पंच खानिके प्राण ॥ लघु दीर्घ घटि बधि पटा। रज्जब रचे दिवान ॥ ३८ ॥ रज्जब दुविधा दूरिलग। स्वर्ग नरक व्है वास॥ एकूंकू देवल फिरै। एक जीवजांहिं निराश॥ ३९ ॥ कि-नफिरांश निरफल किये। किन किये अंब सुफल ॥ येकै करता उभयका। कौन करै हलचल॥ ४० ॥ रज्जब निरफल जायजग। सुलक्ष डयूंलु दाख॥ दोन्यूं कूंदतदईका । लोग कहो कोई लाख

॥ ४१ ॥ देखहु सिरधरि कखिपगहुं। अंतरि अंतर जोय ॥ जन रज्जब सब ठौरकी। बागहुं विगतिसु होय ॥ ४२ ॥ भाग्य भलाई ऊपजै। भाग्य बुराई भंग ॥ उभय अंग आतम लहैं। जै हरि देहि उमंग ॥४३॥ भाग्य भले गुरुज्ञान पाइये। भाग्यभले सतसंग ॥ भाग्य भलेसूं भगति उपजै। भेंटै अविगति अंग ॥ ४४ ॥ भाग्य विभूति सुपाइये। भाग्य मिलै भगवंत ॥ उभै भाग्यनत आवही। सोधि कह्या सब मंत ॥ ४५ ॥ रज्जब सुखी सभागिये। दुख दीरघ सु अभाग ॥ कहीं ठौर जाइगह कहीं। सुख दुख दोन्यू लाग ॥ ४६ ॥ आकाश मधि आभा अनंत। जगत धाम तहां जांहिं॥ रज्जब पूरेपूरि यहि। नर निरखौ क्यों नांहिं ॥ ४७ ॥ नदीनाथ आवहि नदी। बहु वर्षा तहाँबारि ॥ जन रज्जब भरिये भरे। नर निरखौ सुनिहारि ॥ ४८ ॥ भाग्यराज घर औतरे। भाग्य-गुरु गृहदास ॥ धरया अधर भाग्यहि मिलै। भाग्य भरै उर आश ॥४९॥ बखतौंही बीती पडै। परधन अपनां होय ॥ रज्जब भागी भेलि सब। भागहुं सिवानकोय ॥५०॥ इक कौंडी कौडीकूं फिरही। एक बैठे कोडिनलेही ॥ रज्जब भुतहूं भाग भिन्न। कहौ पटंतर क्यों देही ॥ ५१ ॥ लोह कनक पारस परसि। छत्रपति छांह हमाय ॥ हनुमंत हाक गुरु गिरासुनि। रज्जब बखत कमाय॥५२॥ रज्जब बाजी बखतकी। मांगे मिलहि सुडाव ॥ रंक राव व्है पक-कमें। सब सिधि प्रभु पसाव॥५३॥ भाग्य भले भगवतही गावै। बखतबडेजैं ब्रह्मसुहावैं ॥ रतिसु उति मह्हरि रत होय। तासम तुल्य और नहिं कोय ॥ ५४ ॥ रज्जब सतगुरु साधू घटघटा। सिख सारंग पुकार ॥ बैंन बूंद वर्षा बिपुल। पै भाग्यपरै सुख धार ॥ ५५ ॥ श्वान सुखासन चढि चलैं। सही सुसीरा खांहिं॥ रज्जब वोठें सावटु। लिख्यासु भागहु मांहिं ॥ ५६ ॥ तलिकहार

कसकत चलैं । श्वान सुखासन थान ॥ रज्जब किया रोसक्या । भावीभिन्न सुजान ॥ ५७ ॥ रज्जब कंगही पावडीही । काष्ठ हु लागा एक ॥ भाग भिन्न ठाहर मिलहिं । न्यौरा किया बिबेक ॥ ५८ ॥ रज्जब महंत मयंककन । सभासु मंडल होय ॥ आतम उडग अनेक है । तहांन घाघट होय ॥५९॥ रज्जब भावी भालमैं। सभा सुतिनके पास ॥ रवि शशि बिनमंडल नहीं । अवलोकहुं आकाश ॥६०॥ दाता दिल दरियाव । भावभलां सब त्यागका॥ पैमंगित करि आव । जेतक भंजन भागका॥६१॥ उदार अधिक नदीनांनाथसे । जिनमांहै बहु बस्त ॥ पै रज्जब बासण बखत-का । तेता आवै हस्त ॥ ६२ ॥ बावसरै तोतन सुखी । सूंघण-हार हुं दुःख ॥ तथा संपदा देखि करि । आपद मोडै सुख ॥६३॥

निंदाका अंग ।

निज तीरथ निंदक सही । निंदा नीरसु माँहिं ॥ रज्जब रजमल ऊतरै । घट गंभीर सुन्हांहिं ॥ १ ॥ निंदक नांव समान है । जिन सौं प्राण पवित्र॥मनवच क्रम रज्जब कहै । ऐसे औरनमंत्र ॥२॥ निंदक निजजन सारिखो । मनमल भंजनहार ॥ सदा सनेही संगि है । कदेन छाडै लार ॥ ३ ॥ निंदक औषधिअन्यगति । मंत्र मई गुरुदेव ॥ एकहि ठाहर एक है । पुनि सोधे भिन्न भेव ॥ ४ ॥ नांवनाज उरघर बहैं । बावैं प्राण किसान ॥ रज्जब रिधि दीएबिना । निंदक करै निदान ॥ ५ ॥ निंदकहू नर निस्तरै । कुमति सुमति हूं याद ॥ कहीं भांति जांणैन जड । जनम जात जो बादि ॥ ६ ॥ निंदक निंदा निस्तरैं । दिल सुन्दर व्है दोस ॥ महा पुरुष पारस मई । लोहल गौरस रोस ॥ ७ ॥ निंदाविंदा नरक मधि । घटि बधि कहतौं व्याधि ॥ रज्जब रामनमांनई ।

लागा रोग असाध्य ॥ ८ ॥ निंदकके अगतों नहीं। खलमल धोवहि न्यंत ॥ रज्जब गिनैनरैन दिन। ऊजल करैसुम्यंत ॥ ॥ ९ ॥ निंदकके नित्यनेमयहु। अहि निशकरै अनीति ॥ रज्जब साचन सूं घई। सबझूठीरसरीति ॥ १० ॥ नारायण सुरनर सहित। निंदक निंदै मांझ ॥ रज्जब रुचैन रामकूं। जगत नभावै भांड ॥ ११ ॥ सुरपुर नरपुर नागपुर। निंदककूं नहिं ठौर ॥ रज्जव रामन राखही। कहै औरकी और ॥ १२ ॥ निंदक दुःख दोषों भरया। कहै अजुगती बात॥ रज्जब रोग अपार मनि। घेरि रहीघट घात ॥१३॥ सारंग सरोवर स्वपिन सुख। तीजै निंदक चैंन ॥ जन रज्जब मिथ्यासु सुर। कहु किनपाया चैंन ॥ १४ ॥ निंदक नरक समानि है। बाणी बिबिधिकुबास ॥ रज्जब सुणि सूंघै नहीं। कुमति कानकी नांस ॥ १५ ॥ रज्जब दिल दोषहुं भरया। आतम औगुण पूरि ॥ सोझा अंगि अज्ञानका। करैं कौंन विधि दूर ॥ १६ ॥ तूटे तूटा रूप दिखावहिं। नरनिछत्र निरताय ॥ रज्जब बहनीं बक्र बपि। जुगलसुजलताजाय ॥ ॥ १७ ॥ लोहा बैरी कनकका। सुकतहि पिसण पखाण ॥ यूं असिद्ध साधकों निंदहि। तुलयन बखत बखाण ॥१८॥ मुख रसनां प्रभुजी दिये। अपने सुमिरण काज ॥ सुर नरनिंदामें खरचि। रज्जब खोई लाज ॥ १९ ॥ दोष दोषकन आवई। काया नगरी मांहिं ॥ शरीरहुं दुरमति कढैं। औगुण आवहिं जांहिं ॥ ॥ २० ॥ यादिन आवै तौ भली। बुरी बस्तु मन मांहिं। परकी बुरी विचारतूं ॥ आप बुरा व्है जाय ॥ २१ ॥

साखी ४०७६।

कृतघ्नी निगुणाका अंग।

जन रज्जब गुणचोरका। कबहुं भलानहोय ॥ सतगुरुका

कृत हति करी । सीझया सुण्यान कोय ॥ १ ॥ साधूके गुण चो-रकूं । कहौ कहाहै ठोड ॥ मायामें भीमारिये । रज्जब चोरी चोड ॥ ॥ २ ॥ जैसें अंध उलूक गति । रविगुण मानैं नांहिं ॥ रज्जब रजनी व्है गई । विद्या मान दिन मांहिं ॥ ३ ॥ विद्या लेय विहं गकी । वक्रसु बरछी झेल ॥ रज्जब नटतूं नांव नट । अरि उर बैंठा सेल ॥ ४ ॥ भश्मा सुर भस्में हुवा । महादेव गुण मेटि ॥ तौ रज्जब गुण चौरका । भलान होई नेठि ॥ ५ ॥ रज्जब सांई सूर सम । सतगुरु सलिलसु अंग ॥ सिखस फरीजनजल छदे । दादौं पोते भंग ॥ ६ ॥ देखो सुकर मसंद सुनि । सुखसुख पावक पीठि ॥ रज्जब रविरमितारची । दया दुष्ट विधि दीठि ॥ ७ ॥ दये बिनासु देत है । लिये विनासु लीन ॥ यूं गुरु शिष सन्मुख विसुख । ज्यूं अंधों आदित्य कीन ॥ ८ ॥ अविगति आदित्यकी सत्ता । आतम आँधों मांहिं ॥ पैकृतघनी सारी उमर । इष्टों देखै नांहि ॥ ९ ॥ मूंसल पलटि मंझार किये । पुनह श्वान सिंह साज ॥ तौ कहासे बडे सुख लह्या । गतगुण चौरनिवाज ॥ १० ॥ रज्जब खोटे जीवसों । कछुगुण कियान जाय ॥ केशरी काढ्यो कूपतें । काढण हारही खाय ॥ ११ ॥ जन रज्जब ज्ञुगि जीवजो । दे सतगुरुकौं पीठि ॥ तौ शक्ति सेन सांई सहित । धरहि दुष्टता दीठि ॥ १२ ॥ रज्जब रजनी पतिकी । सदासु धामे दीठि ॥ जगत सुखी जंगम दुःखी । जाके चांदी पीठि ॥ १३ ॥ रज्जब जरकी जंगम मिरत जवासै । चंद इंद्रसौं होय ॥ उभै उभै मेंअैब कहि । बूझै बिरला कोय ॥ १४ ॥ हरिसों हुई हराम खोरी । होली हठिरांडी ॥ बरसा बरससु बालिये । रज्जब जागि भांडी ॥ ॥ १५ ॥ गुरु गोविंद सन्मुख निमुख । नर निरखै नाहिं नींक ॥ ज्यूं आदित्य आकाश दिशि । देखत आवै छींक ॥ १६ ॥ सांई

सूरजकी सत्ता । नरनैनहूंकूं होय ॥ रज्जब बरतै और दिशि । उनकूं सकैन जोय ॥१७॥ पिंड प्राण जगदीशका । ताकी छाडी सेव ॥ जन रज्जब गुण चोरटे । पूजहिं देवी देव ॥ १८ ॥ सुत बीरजले औरकूं । शोभा देसिरि हीज ॥ तौ रज्जब गुण चौरकी साखिभरैनहि धीज ॥१९॥ राज बीजकूं लेगई। कोई ऐक कामिनि और ॥ रज्जब सुत पावै नहीं । सोटीकेकी ठौर ॥ २० ॥ साखि शब्द ले औरका । गुरु करि थापै और ॥ रज्जब निगुण मन सुखी । जाकै ठीकन ठौर ॥ २१ ॥ चेतनिकनि सुणिसीख ले । सेवैजडहीसुजाय ॥ सो रज्जब कैसें बणें । नर देखो निरताय ॥ २२॥ पुत्र जणाया आन मिलि। कहै पुरुष पुनि आन ॥ रज्जब सो व्यभिचारनी । पतिब्रता नहिं जान ॥ २३ ॥ रज्जब पीवै और गुर। बधे और गुरु मांहिं ॥ ज्यूं पीपालिपरिखैजडा। डालपानसोनांहिं ॥ २४ ॥ जैसें अंडा मोरका। मुरगी काढै सेय ॥ रज्जब गुण माने नहीं । अंतिउहैगुणलेहि ॥ २५ ॥ दिल दर्पण गुरु सूर सम । सन्मुख इष्ट प्रकाश ॥ शब्द सत्ता सब दिशि सुभग। फुराहिनते गुण नाश ॥२६॥ बिषै विधनबेटी गई। सोन सगारथ होय ॥ त्यूं रज्जब गुरुबिन गिरा। सीझया सुण्यान कोय ॥ २७ ॥ रिणन उतारया रामका। मनुष्य देह जिन दीन॥ रज्जब तिनहिं उधार दे । मनबच क्रमसो छीन ॥ २८ ॥ गुरबा है मनिष मही। सबकीपूरण आश ॥ कृतघ्नी उठिका तरे। बैरी करैं बिनाश ॥ २९ ॥ जीव सु खेती ज्वारिकी। गुर बाहै मनभाल॥ गुण चोर उठे गंडार व्है। कियासु काल दुकाल ॥ ३० ॥

कलियुगी अंग।

झूठ साचकौं मारही। पैंठि जोरपर पंच ॥ येहु रज्जब कलि युग कला। कपट करमकी अंच ॥ १ ॥ जन रज्जब कलियुग तहां।

जहां कपटका साज ॥ मुख और मांहैं अवर । सोकुसंगतजि भाज ॥ २ ॥ रज्जब गज्जनसों डरै । मति अजगैबी होय ॥ कलि केवल कपटी कला । आयपडैमति कोय ॥ ३ ॥ अपणां अव गुण आवरै । परके ऐब प्रकाश ॥ जन रज्जब जीवकलियुगी । कपटी कंधविनाश ॥ ४ ॥

साखी ४११० ।

कुसंगतिका अंग ।

सकल बुरेका मूल है । ऐक कुसंगति मांहिं ॥ ज्यूं रज्जब समुद्रहि मिल्यूं । तीरथ दीसैं नांहिं ॥ १ ॥ रज्जब गंगा ज्ञानकी । देही दरिया मेल॥ स्वादसमुद्र शरीर संगि । व्है गया ओरही खेल॥२॥ सांई शून्य गुरु आभ गिर । रसनरसातल गंग ॥ रज्जब पैठें उर उदधि । खारूं खैगुन भंग ॥ ३ ॥ रज्जब समझि कुसंगतैं । कदेन होइ वोत ॥ राह केतुकी छांदतैं । शशि सूरज क्या होत ॥ ४ ॥ रज्जब बेंडे विवेक बिन । तिनहिं त्यागि मनशठ ॥ कोहन्दर जाहिर जल्या । मूंसेके मनहठ ॥ ५ ॥ बेली ब्रण चुरावही । मारीजे घड वालि ॥ तौ रज्जब सुणि देखतूं । तजौं कुसंगति काल ॥ ॥ ६ ॥ लंका पति सीता हरै । बांधिजैसुउदधि ॥ तौ कुसंग किनत्यागिये । सुनिमहिमांप्रसिद्ध ॥ ७ ॥ गंगोदक मद्यमें मिल्यूं । सकल महातम जाय ॥ यूंतन उत्तम मन नींच गति । रज्जब नरक समाय ॥ ८ ॥ रज्जब रहे कुसंगमें । कुमति उदय व्है आय ॥ ज्यूं सुरा पानके कुंभमें । खीर रव्वार व्है जाय ॥ ९ ॥ चुल्हेके घरमें रहै । सुचिडिया काली होय ॥ जन रज्जब यहु देखिकै । कुसंग करो मत कोय ॥ १० ॥ येकै बूंटै बांसकै । डरै अठारह भार ॥ जन रज्जब जल जालसी । पापीकौ परिवार ॥ ११ ॥

येकै सरकरगस परै। सबतरकसकूं खोडि ॥ तौ रज्जब तिस तीरखूं। कठिन डारहुं तोडि ॥ १२ ॥ रज्जब नांणी गांठिका। खोटा चलैन हाटि ॥ तासौं मोहनकीजिये। डारि देहु किन काटि ॥ १३ ॥ रज्जब अहि अंगुरी लगै। तंत मंतकरि काटि ॥ तनक तजै तन ऊबरै। तौव बधाई बांटि ॥ १४ ॥ रज्जब काल कुसंग है। काचेकूंतबसेख ॥ जीया चाहै परहरी। मरण मतै करि देख ॥ १५ ॥ पांवर परसै पांव दे। बाइल मिलतौं बाल ॥ रज्जब देखो दृष्टिये। कुसंगति सु सुभाव ॥ १६ ॥ विष मिश्री सानी शहत। खाए होयसु मींच ॥ त्यूं नन उत्तम करणीं कुचल। रज्जब परहरि नीच ॥ १७ ॥ ज्ञानहीनगतगात। ज्यूं कडबी नीरसमें ॥ लगी लोभलू बात। प्राण पशूचरतों मरै ॥ १८ ॥ कालई बाईत करंडमें। धरै कमंकल कंध ॥ रज्जब त्यूं बकुसंग संग। करै अज्ञानी अंध ॥ १९ ॥ परदारा रत पारधी। जूवारि अरु चोर ॥ मद मांस बेश्या गमन। सातौं नरक अघोर ॥ २० ॥

कुसंग सुसंगका अंग।

विमल बारि बादल संवरषै। परैनगरपरि आय ॥ शहर वि कार परसै जेलमें। पानी पियान जाय ॥ १ ॥ पुनिवह सलिल जाय सरितामें। निर्मल नांव कहाई॥त्यूं रज्जब वपु बाइक मेला। अस्थल सांगि बिकाई ॥ २ ॥ पुरुषौं उपजै शील व्रत। सिंहल द्वीपसु थान॥ त्यूं मथुरा जागै मदन। मनवच क्रमकरि मान॥ ॥ ३ ॥ आगिलौंकी पीछलौं लई। तानिमानि सोई ताक ॥ कृष्ण कथा सुणि मर्द व्है। हीजसु हनुमंत हाक ॥ ४ ॥ रज्जब कुसंग सु संगका। केवलकहणबिचार ॥ आतम उरिअरभकउपजि। पोखि पलट व्यवहार ॥ ५ ॥ देखो नारी नींबनर। गहण हमाइ

अतीत ॥ नागिसु भोजन शिशु मनिष । छांह छांनि प्रतीत ॥
॥ ६ ॥ उपकंठ उदधि उत्तम जनहुं । सुख श्रीकसासुलहंत ॥
रज्जब माधिमनांपिगा । धरनर तटसुबहंत ॥ ७ ॥ एक मिलायसु
अमीमें । ऐक हलाहल ऐन ॥ रज्जब संगतिकीजिये । देखिसु
चैंन अचैन ॥ ८ ॥ एक औषध रूपी आतमां । ऐक पीडामें
प्राण ॥ रज्जब संगतिकीजिये । सुख दुःख शोधिसुजान ॥ ९ ॥
सज्जन शशी संदल सही । संगति सुखीशरीर ॥ दुर्जनके बचकष्ट
विष । परसत पिंडहुपीर ॥ १० ॥ सज्जनसुधासुंपती । सकल
सुखोंकी राशि ॥ दुर्जन दुःख दारुण दुसह । पीडा प्राणहुं पास ॥
॥ ११ ॥ साधु सजीवन शब्द है । संसारी विष खात ॥ रज्जब
सुणिये समझिसों । को औषधिको घात ॥ १२ ॥ संसारी भाव-
न घटा । साधु स्वातिविनक्षत्र ॥ बैन बूंदबहु अंतरा । नेंपै निर-
खौ म्यंत्र ॥ १३ ॥ साधू घट अमृत मई । संसारी विष बेलि ॥
जन रज्जब गुण समझि करि । पीछै सुखमें मेलि ॥ १४ ॥
सुसंगति सूरउजासमें । कुसंगतितमऐन ॥ रज्जबकहीविचारि
करि । सो निरखोनरनैन ॥ १५ ॥ लघु दीरघसु दिखावही ।
चशमें चितसब ईंठि ॥ दर्शन रूपी दुष्ट दिल । तहां दीरघ लघु
दीठ ॥ १६ ॥ दर्पणमें द्विप छोटा दीसै । मोटा फटक पखान ॥
ऐसें निर्गुण सर्गुण सों मिलतूं । लघु दीरघसु बखाण ॥ १७ ॥
गंधी हाथि विसालवा । सींगी हाथिहजाम ॥ वहि सुगंधि संग
ति सदा । वहि शोणित सब ठांव ॥ १८ ॥ श्रवण स्रोत है शब्द
जल । काया कूपमें आय ॥ कपट कामनां कांकपडे । रज्जब पि
यान जाय ॥ १९ ॥ इक निवान निरखत खारमें । इक अंभि
खितखार ॥ इक पियूष प्राणी पहम । परिं हरि पियूं विचार ॥
॥ २० ॥ आतम अंघ्रिप खोडि खित । तहां चढै बल वारि ॥ तर

धरि मिलि समजोर जल । रज्जब समझि विचारि ॥ २१ ॥ रज्जब काचे काठकूं । देखो कीडे खांहिं ॥ पाकेमें पैठै नहीं । वज्रसु वेंधै नांहिं ॥ २२ ॥ भलान आदम सारिखा । बुरान ऐसा और ॥ रज्जब देख्या गुरु दृष्टि । सुकृत कुकृत ठौर ॥ २३ ॥ रज्जब अज्जब आदमी । जौहरि सेती होय ॥ परमेश्वसौं पीठिदे । तौयासम बुरानकोय ॥ २४ ॥

अल्पक्षण अपराधका अंग ।

हिरना।हिंराना आपसों । सुण्या बधिकका नाद ॥ रज्जब तन मन यूं गम्या । कासिरि देहि अपराध ॥ १ ॥ यथामीन मिलि स्वादकूं । स्वारथ कालहि खाय ॥ तैसैं रज्जब हम भए । दोष किस हि देहि जाय ॥ २ ॥ ज्यूं भौंरा भिलिवासकूं । कमलवंधांणा आणि ॥ त्यूं रज्जब हम होय करि । हमहि हमारी हानि ॥ ३ ॥ ज्यों दीपककूं देखि करि । पडि पतंग जरिजाय ॥ तैसें रज्जब हम भए । जै देख्या निरताय ॥ ४ ॥ ज्यौं गज कामी कामवश । पड्या विघन विचि आय ॥ त्यों रज्जब हम होय करि । बैठे बाप बंधाय॥ ॥ ५ ॥ ज्यूं मरकटमूंठी भरी । बैठि स्वादकी नौक ॥ यूं रज्जब घरघर फिरि । कासिरि देहिं अलोक ॥६॥ ज्यूं पट छलकै पिंजरै । स्वारथ सिंह समान ॥ त्यूं रज्जब हम होयकर । आपै आप वंधान ॥ ७ ॥ यहुमनबगुला विगतिविन । मायाफानालेर ॥ रज्जब चहुंटै चूंखता । छूटणका नहिं फेर ॥ ८ ॥ बईयर बाती नारि यळ । बनसीजिनिजिनिलीन ॥ जन रज्जब तेते मुए । नरमूं साबगमीन ॥ ९ ॥ ज्यूं जीव काटै जीभकूं । स्वारथ सुखहि च लाय ॥ त्यूं रज्जब हममेंभई । कासिरिदेहिवलाय ॥ १० ॥ जांणि बूझिजे जहरकूं । यथा जीवजोखाय ॥ रज्जब कहिये कौन

सों । अपलाछिनमरि जाय ॥ ११ ॥ प्राणी परलै मनसुखी । स्वाद लागि जिव जाय ॥ रज्जबदीन दयालकूं । उलटा दोषन लाय ॥ १२ ॥ मकडीकी गति माँहिं । मिलि माँड्या माया जाल ॥ रज्जब रूंधै सकल दिशि । माँहिं मरै इस ख्याल ॥ १३ ॥ ज्यूं सूवा शठ ग्यान बिन । नलमी लटकै आप ॥ त्यूंरज्जबहमलट क्किरि । देहिं कौनसिरपाप ॥ १४ ॥ मरकट मानी आगि करि । चिरमी देखिचुटलाल ॥ त्यूं रज्जब माया मनहिं । भूलि परया भ्रम ख्याल ॥ १५ ॥ ज्यूं गजमूवा ज्ञान बिन । देखि फट कमें आप ॥ त्यूं रज्जब हममरत हैं । देहि कौंनसिरपाप ॥ १६ ॥ ॥ यहमन पशु पवंगपरि । पिसणन पेखै नींच ॥ परसै पावक पंच सुख । रज्जब राता मीच ॥ १७ ॥ यथा काचके महलमें । कूकरकी होइ मींच ॥ त्यूं रज्जब हममें भई । भ्रमि भूला मन नींच ॥ १८ ॥ कुमति काचके महलमें । यहमन श्वान समान ॥ रज्जब ऐकं अनेक व्है । निकस्या ऐकै जान ॥ १९ ॥ बिना भार भारी भए । बिनहीं दुःख दुःख पूरि ॥ जन रज्जब त्यूं नींद में । लिया अथारै चूरि ॥ २० ॥ सब दिलदर्पणसारिखे । आत्म ब्रह्मविशेख ॥ रज्जबसन्मुखविमुखतूं । प्रति ब्यंब परि देख॥२१॥ अपणा आप बुरा करै । ताऊपरिक्यारोस ॥ घरकै दीवै घर जल्या। देहिकौंनकूं दोष ॥ २२ ॥

मांनीका अंग ।

गुर मुखि साची नांगहै । मन मुखि बैठी आनि ॥ जन रज्जब सुलझैं सु क्यूं । हिए हलाहलसानि ॥ १ ॥ रज्जब सानि शरीर मैं । कहै औरकी और ॥ पड्या पुकारै धाममै । ले चालै ग्रह ठौर ॥ २ ॥ रज्जब डाली बैठी करि । मूरख काटै मूल ॥ सोशठ

गहिला ज्ञान बिन । भीतरि भारी भूल ॥ ३ रज्जब साधू शोषग ति । दोष धरैं बहुभूल ॥ यथा सांनि याँडाल चाढि । मूरख काटै मूल ॥ ४ ॥ ज्यूं बालक भूंरी लई । सहज खेलकूं ख्याल ॥ रज्जब त्योरी त्यूं फिरहि । जु सब देखै चक्र चाल ॥ ५ ॥

साखी ४१८० अंग १३० ।

मूटक्रमी असाध्यरोग अंग ।

सूता शब्द जगाइये । जागत सुणि सोइ जाय॥ रज्जब मनि ऐसी गही । तासौं कछून बसाय ॥ १ ॥ सतगुरुकी समझै नहीं । अपणे उपजै नांहिं ॥ तौ रज्जब क्याकी जिये । बुरी बिथा मन मांहिं ॥ २ ॥ सतगुरु शब्दन मानई । चलैमन सुखी भाय ॥ औषधि गहै अहार पडि । बिथा बिचारि मरि जाय ॥३॥ मींच बिसारी नीचनें । ताहि कौन उपदेश ॥ रज्जब रोग असाधिकूं । लगैन औषधि लेश ॥ ४ ॥ असाध्य रोग मन ऊपजे । सोगुरि सब दिन जाय ॥ जन रज्जब ज्यूं शंखपरि । रंगन चढै चढाय ॥ ॥५॥ यहुमनि पिंडा गारिका । भ्रमता चक्रसु थान ॥ रज्जब छेदै कौन विधि । लगैन बाइक बान ॥ ६ ॥ बखसख पाखर पहरि करि । भया बजर व्यौहार ॥ रज्जब मारै कौन विधि । कहा करैह थियार ॥ ७ ॥ रज्जब यहुमनका छिवा । काठा अति कठौर ॥ बाहरि सिर काढै नहीं । तौ मारै कहि ओर ॥ ८ ॥ यहु मनकाठा कुल सगति । बहुत खेचरी ठाणि । रज्जब गैंडा व्है रह्या ॥ मरैन बाइक बाणि ॥ ९ ॥ संगतिमें सीझैं सबै । खेचर सीझै नांहिं ॥ जन रज्जब ज्यूं करडकूं । गल्यान हांडी मांहि ॥ १० ॥ श्रेष्ठजु समझै आपसूं । सुधबुध शब्दसु नाय ॥ जन रज्जब खेचर बिमुख । सु क्यूंही गह्यान जाय ॥ ११ ॥ जैसें गोली

गुमठ परि । गहि डाल्यूं गिरि जाय ॥ त्यूं रज्जब बहरी सुरति । शब्द कहां ठहराय ॥ १२ ॥ जै सूई सुरतिके छिद्र व्है । तौ तागा शब्द समाय ॥ जन रज्जब नांके बिना । कहां परोवै जाय ॥ १३ ॥ ज्ञानी गाफिल व्है चलै । पगमग बाहिर देय ॥ तौ रज्जब जानत जडहिं । कहिधौकहि क्या लेहि ॥ १४ ॥ उसरि बैरि अशं खिमण । कण निपजै कछु नांहिं ॥ त्यूं रज्जब शठसि रुखसों । हानि हुई गुरु माँहिं ॥ १५ ॥ शांभरके शर सारिखा । शठसुरताका भाग । रज्जब तहांन नींपजै ॥ भाव भगतिका बाग ॥ १६ ॥ हिमगिरवरतरुतरुल व्है । बंध्यान सुणिये कोय । तौ रज्जब जडजीवेंम ॥ कहुसु कृत क्यों होय ॥ ॥१७॥ हिम गिरिपर पाषाणका । कोटहु वा नहि होय ॥ यूं आ-ज्ञा भंग अचेत उर ॥ क्यूं करै ज्ञान गढ कोय ॥ १८ ॥ सिल दिल परिजामै नहीं । भाव भगति काबीच ॥ रज्जब फल क्यूं पाइये । जै अंतरि गति हीज ॥ १९ ॥ आतम अबला बांझडी । सुकृत सुतहीं बास ॥ रज्जब ऊजड वोद रहुं । गुरुदाई कृत नास ॥२०॥ रज्जब गुरु बरवहु मिलैं । बेश्या विधि भई सांझ ॥ सांई सुत उपजै नहीं । जै बुद्धि वामां बांझ ॥ २१ ॥ मीन माग जलमें रहै । सलिल हिरहैन संधि ॥ त्यूं रज्जब शठ शब्द सुनि । पीछै रहैन वींध ॥ २२ ॥ रज्जब पावन कथा सुणि । पांमर बेधै नांहिं ॥ सोंधे संधिन पाइये । ज्यूं सपंग याथल मांहिं ॥ २३ ॥ नींबहि सींचे दूधसों । नागहि दै पय पान ॥ रज्जब विष परि विष भर-या । नींबहि कडवा जान ॥ २४ ॥ कैलाकाजल दूधसों । धोये श्वेतन होय ॥ तौ रज्जब जो प्राण है । तापरि रंगन खोय ॥२५॥ सेत उसन श्रद्धा सहित । रंग्यो रंगीसोजाय ॥ रज्जब कारली क्यूं रंगै । बहु विधि करौ उपाय ॥ २६ ॥ रज्जब कुमति कुंजका

अंड है। मोमन बिष्या बीस ॥ हो है हिम गिरि ज्ञानतलि ॥ गलै नहीं जगदीश ॥ २७ ॥ ब्रह्म अगनि मनवां बलै। तौ समंद कीटसों बांधि ॥ बैद्य बैदगी क्या करै। रज्जब रोग असाधि ॥ ॥ २८ ॥ शबद सौंदरी क्यूं बंधै। जै काया कुंभ नहिं कान ॥ रे रज्जब रारयूं विनां। कहा दिखावै भान ॥ २९ ॥ बावन बास नवेधिया। मिसरी मिल्यान वंश ॥ यूं न्यारा निजमंतमें। मूढा बरख सहंस ॥ ३० ॥ रज्जब पुरिख पवंगकूं। कीजै शुद्ध उपाय ॥ ऐकत्रियारतरंगिनी। इनकी चिकटीन जाय ॥ ३१ ॥ मनुमंत हाक नर हीज व्है। परि नारिन व्है निहकाम ॥ रज्जब पुरुष प्रमोधिये। परि बोधन बींधै बाम ॥ ३२ ॥ हनुमंत हाक सुणिनां भया। जत सुवत नीके टील ॥ जन रज्जब धन्य साधु सो। जो उनहीं उपावै शील ॥ ३३ ॥ हीरा मिश्री मोती बाइक। फटक बसंत गधूत ॥ रज्जब रंगरस मुक्तमन। जडपोलासुच पूत ॥ ॥ ३४ ॥ मनिष मीन जगदीश जल। सुखि पीवहि नहि मांहि ॥ सो रज्जब जाणंसु क्यूं। सुकृत श्रोणित नांहिं ॥ ३५ ॥ जपतप कसण्यूं माहै कोरा। थाके विविधि बिबेक ॥ रज्जब रहे बेद विधि बाइक। मनिमानी नहिं ऐक ॥ ३६ ॥ मींच विसारी सुगध मनि। भूला आतम राम ॥ रज्जब मूढ करमीं यहु। सरैकौन विधि काम ॥ ३७ ॥ ब्रह्म विछोह विवोगन उपजै। चोरासी आव नहिं चित्त ॥ तौ रज्जब तासों क्या कहिये। महा मूढ मंद भागी मींत ॥ ३८ ॥ ऊसर खित बपिवां झकै। बीजन नहीं प्रगास ॥ त्यूं रज्जब शिष शठोंमे। शब्द शुद्धका नाश ॥ ३९ ॥ शुद्ध शब्द शतखंड हुव। शठसुरतोंमें आय ॥ रज्जब मद भाजन परसि। खीर खार व्है जाय ॥ ४० ॥ गरक ज्ञान गहरै सुजल। आव क्या भरि हाय ॥ पै रज्जब मन मीनकी। दुरमति वासन जाय ॥

॥ ४१ ॥ आतम उर अज्ञान रस। सुनैंन सतगुरु बास ॥ पारस पोरस क्या करे। धरती खाई धात ॥ ४२ ॥ हरि साहितूं बिसारि करि। सुगधसु भूला मींच ॥ रज्जब रोग असाध्य अति। क्यूं नींका व्है नीच ॥ ४३ ॥ रज्जब रोग असाध्य है। राग दोष जिव मांहिं ॥ निकसै गुरु गोविंदसों। नहीं तनि कसै नांहिं ॥ ४४ ॥ सुखि मानें मनमे अमन। क्यूंब फळमत जत ॥ बालक बंझन ऊपजै। विषै विगू चैनित ॥ ४५ ॥ दिनकर दई नदी सई। तौ घूघू बागुलि विसु ॥ रज्जब ज्यूं थीत्यूं कही। कोई करोन रिसु ॥ ॥ ४६ ॥ अविगति बरखै इंद्रज्यूं। अकलि अंब जल आय ॥ रज्जब बंदे बन बधैं। जगत जवासा जाय ॥ ४७ ॥

शिष्यसुत प्रस्तावका अंग।

तातगुरु काष्ट करि। शिषसुत उपजै आगि ॥ तौ रज्जब तिहि ठौरकूं। भागि भले नहिं भागि ॥ १ ॥ आंखि आरसी ऊपजै। सुतफूला अरु दाग ॥ रज्जब तथा कपूत सिख। ठाहर उभै अभाग ॥ २ ॥ मेद गूमडी न्हारुवा। बालक विपतिसु जानि ॥ रज्जब जायें जक नहीं। सो शिष सुत दईन आनि ॥ ३ ॥ रज्जब शिष सुत पहलके। भये कपूत अयान ॥ तौ तिनकूं क्या कीजिये। मूळी मूलगयान ॥ ४ ॥ मणि भुजंग मांखी सुमधु। कीटपट वणी सूत ॥ रज्जब रजसौं सकल नग। कहां बाप कहां पूत ॥५॥ शीसै सुत रूपा जण्यां। क्षीरस सुद्र सुत शंख॥ रज्जब बेटे बापका। मनहुन कीजै मंख ॥ ६ ॥ दीखै जोति कजर जनम। श्याम घटा माधि बीज ॥ रज्जब ऊजळ मैल व्है। मैले ऊजळ कीज ॥ ७ ॥

साखी ४२३४ ।

स्वांगका अंग।

रज्जब स्वांगन शेषकै । सुख देव स्वांगन कीन ॥ वह बांदर वह अवनिमें । उभै भये लैलीन॥१॥दतमत चले चौबीस दिसि । चल्यौ ब्रह्मकी बाट ॥ रज्जब देखो गुरु शिषौं । कौंन भेष ठिकठाट ॥ २ गोरखकै सुद्रा नहीं । कौन भेष हनुमंत ॥ जन रज्जब जग उद्धरै । भजन कियां भगवंत ॥ ३ ॥ सुरअसुरनके गुरहुकनें । भेषन भासै कोय ॥ रज्जब देखो बृहस्पति । पुनि शुकर दिशि जोय ॥४॥ षट्र दर्शन दर्शन बिना । देखो अवनि आकाश॥ चंद्र सूर पानी पवन । कौन भेष उनपास॥५॥एक बृहस्पति वारुनां । शुक शेष शुक देव॥रज्जब ते तन उद्धरे । बिन बानें रट सेव॥६॥ क्ष्त गोरख दर्शन बिनां । स्वांगन शुकदेव शेष ॥ रज्जब उद्धरे रामकहि । बारुन बरतन लेश॥७॥रज्जब रसनां स्वांगबिन । जिन जाया गुरुदेव॥तहांश्रव सिख सबनिके । लहैसुभ बगति भेव॥८॥ तिलक रहितदे तिलक तन । देखौ करसु कपाल ॥ रज्जब साखित भगत को । बेत्ता करो विचार ॥ ९ ॥ टीकायत सारे नवैं । बिण टीकेको जाय॥रज्जब यहु पति शाह दिशि । नर देखो निरताय१० नर नांणे जो घट रचे । दरस अंक देहि छाप ॥ जन रज्जब सबके बिनां । जो नगनि मध्य आप ॥ ११ ॥ छह दर्शन की छापका । बिकरा बसुधा मांहि॥आगे लीजे साचकूं । भेषहु भूलै नांहिं॥१२॥ दर्शन दे देवै किया । लालहि दरशन नांहिं ॥ पै तिमर हरै जे तरंगनी । सु मोलि महँगे जांहिं ॥ १३ ॥ सप्त धातु नाणे सुघट । दरश अंकदे धाप ॥ नांव नीर नग दासमें । सोधण मोल बिन छाप ॥ १४ ॥ नख सख दर्शन देहका । करदीया करतार ॥ रज्जब

ऊपर और करि। बिढंबै कहा गँवार ॥१५॥ बानैं परि छानां करै। बिचि नाहीं वेसास ॥ रज्जब रचना रामकी। रचे न मूरखदास ॥ ॥ १६ ॥ पाव जीव बाने दिये। देही दर्शन देखि ॥ रज्जब भीडी किये के। राखे किसकी रेख ॥१७॥ पट्टा पाया प्राण तब। रज्जब वपु बाना नांहिं ॥ अब विडंब का परि करै। समझि रह्या मन मांहिं ॥ १८॥ अप स्वांगी श्रिकि को गया। बिन पंखों प्रकाश ॥ त्यूं रज्जव राम न रटे बिन। बानें के बेसास ॥ १९ ॥ रज्जब जीव जल बूंद समि। षट्ट दरशन रंग सान ॥ ब्रह्म व्योम पहुँचै नहीं। बिना भजन बिन भान ॥२० ॥ रज्जब देखे देखतैं। द्दग दोयज हरिचंद ॥ भेष भ्रम भासै नहीं। जे नैना मधि मंद ॥२१ ॥ मन मयंक की गहन गति। जुगति जोति गहुं जान ॥ देह दशा देखै नहीं। छाडहु खैंचा तान॥ २२ ॥ अंख्युं हूं अंध अज्ञान गति। काजल तिलक वनाय ॥ रज्जब रामति रामका। दर्शन किया न जाय ॥ २३ ॥ भगवत भजन बिन कछु नहीं। भेष भरम दे नांखि ॥रज्जब लखै न गहनगति। अंजन के बलि आंखि॥२४॥ बुध्दि विद्या के बलि बली। निरखहु नटनी साध ॥ रज्जब शकति न स्वांगकी ! खेलहि खेल अगाध ॥२५॥ षट्ट दर्शन में हंसकन। भेष न भासै कोय ॥ क्षीर नीर न्यारा करै। सो न्यारी गति जोय ॥ २६ ॥ हूं नर हाये न हंसका। वहुत जीव जल गोटि॥खीर नीर न्यारा किया। कौन गूदडी वोटि ॥ २७ ॥ मन पै निज वपि वारि सौं। काटैं साधू हंस ॥ बांनैं बलि छानै नहिं कोई। सप खग बाइस बंस ॥ २८ ॥ कै दुहाग कै सेजपर। कैन्हावत पतिमार ॥ जन रज्जब युवती तजैं। च्यारूं समै श्रृंगार॥ २९ ॥ ज्यूं सुन्दरि सर न्हावतां। आभरणं धरैं उतारि ॥ त्यूं रज्जब रमि रामजल। स्वांग शरीरहि डारि ॥ ३० ॥ सदा सुहाग सु लखणू। कुलखणि

दुःख दुहाग ॥ रज्जब नाँसत क्या करै। न्यारे भाग अभाग॥३१॥ रज्जब साधू स्वांग का। समझ्या संग बिचार॥ जो जल नलनी पत्र परि। सोई सीप मँझार ॥ ३२ ॥ त्यागे छापन पलटई। तनमें तांबा लोह॥ प्रभु पारसु ज्यु परापरी। जबलग मिलै न वोह॥३३॥ साधू पारस लोहमन। परसै कंचन होय॥ रज्जब स्वांग सुमेर मिलि। मन न पलटै कोय ॥३४॥ देखे सुन्दर स्वांग। सुई सुरति सरकै नहीं॥ चिदानंदकन मांग। रज्जब चंबक चेतना ॥ ३५ ॥ बानैं पलटै नांहिं। रज्जब बपु बनराय विधि॥ समझि देखि मन मांहिं। चंदन चित चंदन किये ॥ ३६ ॥ तन मन तांबा लोह। षट् दर्शन षट् छापंदी॥ रज्जब फिरै न वोह। बिना प्राण पारस मिले॥ ३७ ॥ रज्जब सीझै साच। स्वांगन को सीझै नहीं॥ कहां कंचन कहां काच। दिब दरसन देखै नहीं॥ ३८ ॥ सुरति सुई ज्यूं सीस परि। काया कंथा भेष॥ अबलबेत अगाध बिन। रज्जब गलै न देख॥ ३९ ॥ मनकम भवरन भेषधरि। सब दंडक भौं भृंग॥ रज्जब पहुँचे हरि कँवल। पीवै परमल अंग॥ ४० ॥ जन रज्जब भिडि भाजणें। भेष सू भीडी नांहिं॥ लखण सुं कलखण लडै। समझि देखि मन मांहिं ॥ ४१ ॥ रज्जब कायर सूरका। स्वांगन करै सहाय॥ भावै लौटौ भावै लडि मरौं। नर देखो निरताय॥ ४२ ॥ सदा हंस सादा रहै। नहीं स्वांग कोई संग ॥ जन रज्जब जगपति किया। तैसाही है अंग ॥४३॥ रज्जब माला तिलकन हंसकै। बंसहि देखो जोय॥ ये अब तब सादेसदा। बादि बकैं क्या होय॥ ४४ ॥ स्वांगी राखै स्वांगकी। परि सादा राखै नांहिं॥ तौ बधिक हराकी क्यूं बणी। समझि देखिमन मांहिं४५ श्याम घटा स्वांगी सबै। साध स्वेत सुध धार॥ रज्जब रीते रूपरंग। सादे बरखणहार॥ ४६ ॥ खट् दर्शन सुख ऊपरै। कोइन पीवै

धोय ॥ रज्जब सादे सुपंथ पग । तहां चरनोदक होय ॥ ४७ ॥ जै जल रहत कुंभबळि । चित चंप्या कछु नांहिं ॥ त्यूं रज्जब हरि साच में । स्यंभ न स्वांगहु मांहिं ॥४८॥ मंदिर थंभ कटावकारि । मांड्या स्वांग सिकार ॥ रज्जब रती न ले सकै । चित्र थंभका भार ॥४९॥ नकसन राजी पर घणे । भावै कोई नांहिं ॥ रज्जब बहुसी वित निज । चकहुंन चित्रहुं मांहिं ॥५०॥ चित्री सांठी तीरकी । बगतर न पडैनबेह ॥ रज्जब भलकै भावबिन । झूठा स्वांग सनेह ॥ ५१ ॥ बांणहिं बाना पंखरंग । गोळी गोळै नांहिं ॥ चाल चोट में चूक क्या । समझ देखि मन मांहिं ॥ ५२ ॥ मळमंडे मैंगळ मंझे । स्यंगारे सु शरीर ॥ जन रज्जब जुध जीत है । जो बळवंत है वीर ॥५३॥ हैगै बिरख मींठा मरद । मांडे सकल शरीर ॥ रज्जब बरियां काम की । अंति बधे बलबीर ॥ ५४॥ मातंग मोर नर नारियल । केश अकेशों येक ॥ जन रज्जब बित लीजिये । सोभा भिन्न बिबेक ॥ ५ ५ ॥ चिणगी चकमक चित्तकी । बुझै न चोडे चीर ॥ रज्जब बूंटी बुद्धि बिन । अगनि उभै उरसीर ॥५६॥ यथा मुहर की छापकूं । ले पीतळि पर देय ॥ तौ रज्जब क्या स्वांगकूं । सोवन सरभरि लेय ॥ ५७ ॥ स्वांग सिंह का कीजिये । भेड प्राणपरि आण॥रज्जब शकति न सिंहकी । गाडर गति प्रवाण ॥ ५८ ॥ कागहि केशरका तिलक । कंठि पहपकी माल॥ सकल गात पंझर किया । रज्जब चुकी न चाल ॥ ५९॥ तन मनकाला भौंरज्यूं । किया काठमें धाम॥केशरि घरच्या स्वांग सिरि । रज्जब सरया न काम ॥ ६० ॥ कागकपटका भेष धरि । कबहूं हंस न होय ॥ जन रज्जब स्वांगी सबै । जिनिर पतीजै कोय ॥ ६१ ॥ बपु सारे बनराय विधि । भद्र भये पत्रझार ॥ जन

रज्जब सुभाव कामि। तामें फेर न सार॥६२॥सिर मूंड्या अस्थूल का। काम जड्या मन मांहिं ॥ रज्जब मन मूंडे बिना। सिर मूंडे कछु नांहिं॥ ६३॥ काया धोली कुष्टकरि। मन कालाता मांहिं॥ त्यूं रज्जब ऊजल दरशै। प्राण पतीजै नाहिं॥६४॥तन ऊजल मन मैलमें। कपटी का सा जोय॥ जन रज्जब चित चीर ज्यूं। कुसंग सु काला होय॥ ६५॥ बाना देखि न बहसिये। ऊपरि ऊजल जोय॥ रज्जब खूंभी का गुंवा। अंतरि काला होय॥६६॥ऊजल राता तेजसी। तौ भी धीज न कोय॥ रज्जब दीपक जोति में। कारा काजर होय॥ ६७॥ रज्जब मांडे मोर प्रभु। तनपरि चित्र अपार॥ सुखि बाणी मीठी मधुर। भोजन भ्रष्ट सु ख्वार॥६८॥ कली कपट कौं चाहिये। कंचन कली न होय॥ रज्जब स्वांगी साधका। इहै पटंतर जोय॥ ६९॥ जन रज्जब सुधगाइ के। कंठिन बांधै काठ॥ डींगरी तिसकै मेलिये। जू तांके बारह बाट॥ ७०॥ बहुत स्वांग गणिका करै। जाके पुरुष अनेक॥ पतिब्रता सादी भली। रज्जब समझि विवेक॥ ७१॥ जन रज्जब देही दरश। मनो वृत्ति नहिं जाय॥ देखि दिवाली चित्रिये। अति गति गोधे गाय॥७२॥ बानें बानी सौं रँगे। काचा काया कुंभ॥ रज्जब रती न ठाहरै। परसत अबला अंभ॥ ७३॥ मंडे भावों नहिं किये। उतै तन जरि पोसि॥ रज्जब राचे मतिन्ह के। गुझी गालि सु ये पोसि॥ ७४॥ चाम दाम समि स्वांग सम। तामें न फेरनसार॥रज्जब तजे सु जोहरयों।लेसें मुगध गँवार॥७५ दरशन दिल बैठै नहीं। पाखंडी पड़ै न प्राण॥ रज्जब राता राम सौं। समझ्या संत सुजान॥७६॥ बानें कूं बींदै नहीं सब संतनि की शाखि॥ रज्जब राखै कौन विधि। पूजि पुकारे नांखि॥७६॥ मन मयंक समि नीकसै। अबला आदित्य छांहिं॥ जन रज्जब

बैदिहा सु क्यूं । बानें बादल मांहिं ॥ ७८ ॥ रज्जब रहै न स्वांग में । बानें बंदहि मांहिं ॥ आतम राम न सूझई । भेष भाकसी मांहिं ॥ ७९ ॥ षट्र दर्शन के दिरव नहीं । भेषों भावै नैंन ॥ आतम राम न सूझई । रज्जब परै न चैन ॥ ८० ॥ ज्यूं सांभर केशर पड्यूं । पशू पचन ह्वै जाय ॥ तैसे रज्जब स्वांग में । आतम तत्व बिलाय ॥ ८१ ॥ दरंशण चाहै दरशणी । पाखंडी पाखंड ॥ रज्जब चाहै रामकूं । सु लिपै न प्रपंच मंड ॥ ८२ ॥ स्वांग सनेही दर्शनी । साच सनेही साध ॥ रज्जब खोटहुँ खरहुँ का । अरथ अगोचर लाध ॥८३॥ मनहिं जानदे मनिये फेरै । यहु उरि बात न आवै मेरै ॥ छापे दे पर राशि लुटावै । सो रज्जब कैसे करि भावै ॥८४॥ संगि चलै सो साच है । यहां रहै सो झूठ ॥ तौ क्या पण स्वांग शरीरका । रज्जू होह भावै रूठ ॥ ८५ ॥ स्वांग संगाती देह लग । सो देही भी नाश ॥ तौ रज्जब तिस झूठकी । कहु क्या कीजै आस ॥ ८६ ॥ प्राणी आया पिंडले । भेष दिया भरमाय ॥ रज्जब बपु बानें रहै । हंस अकेला जाय ॥८७॥ रज्जब बानें बंध्या रासिबा । बिन बानें भये काल ॥ पाडौं परिहरि करेंगे । जीवके कौन हवाल ॥ ८८ ॥ षटदर्शन अरु खलक सब । पाले परि चित्राम ॥ रज्जब रवि सुत परसतें । घट पट भागे घाम ॥ ८९ ॥परम स्वांग ले साचका । आदि अंति जो होय ॥ जन रज्जब क्या कीजिये । जो दीसै दिन दोय ॥ ९० ॥ बिन शशिहर शशिहर किया । जै न हुनें जग मांहिं ॥ तैसे शशिहर स्वांगका । सु रज्जब मानें नांहिं ॥९१॥ साचा शशिहर साचका । सकल लोक प्रकाश रज्जब शशिहर स्वांग का । द्वादश कोश उजाश ॥ ९२ ॥ मृतक घोडी स्वांगकी । तहि चढि गर्वे जीव ॥ पवंग पलाणा काठका ॥ क्यों पहुंचेंगे पीव ॥९३ ॥ बाना बगतर पहरि करि । लडै सकल

संसार ॥ जन रज्जब सो सूरिमा । जो झूझै निरधार ॥ ९४ ॥ शृंगार सहित होली जली । रह्यो प्रीति प्रहलाद ॥ सो रज्जब जानें जगत । कहा स्वांग परिबाद ॥ ९५॥ हरि बिन होली थंभज्यूं । माला मेलि हजार ॥ रज्जब रहें न इस मतै । जलि बलि होसी छार ॥ ९६ ॥ काया छापी काठ करि । माल मेलि दसबीस ॥ झाड बिलाई होय करि । किन पाया जगदीश ॥ ९७॥ स्वांगी सब घुण सारिखे । पैठे काठहु मांहिं ॥ जन रज्जब जल सें सबै । इहि घर छूटै नांहिं ॥ ९८ ॥ ज्यूं कूदैमें देखिये । रज्जब चोरहि देय ॥ त्यूं स्वांगी संकटि पड़ै । कंठ काठ में देय॥९९॥बंदि पड्या संसार सब । षट् दर्शन बस होय ॥ रज्जब मुकता स्वांग सों । सो जन बिरला कोय ॥ १०० ॥ षट् दर्शन मन रंजना । दुख भंजन गोविंद । जन रज्जब रामहि भजो । स्वांग सबै जग फंद॥१०१॥ माया बेडी तोडकर । कोई कोई निकसै प्राण ॥ रज्जब जडिये स्वांग कूं । आगे लहै न जांण ॥ १०२ ॥ बांधे सांकल स्वांग सूं । बिनहीं ज्ञान बिचार ॥ ज्यों रज्जब पशु बंदि में । बहुते राज दुवार ॥ १०३ ॥ भोला पहरै भेष कूं । पीछैं पण पडि जाय ॥ जन रज्जब जग यूं बंधे । कौन छुडावै आय ॥ १०४ ॥ जो जीव जहि जाय गह जड्या । तहीं जडै ले और ॥ ज्यूं रज्जब मेषा मिरग । मुक्तहि राखै ठौर ॥१०५॥ ऊटेरत शासिव रासिन राखै । पुनि गरंद गयंदै ॥ खाणें कूं कछु नांहीं । दरसणी दरसण बंदै । ॥ १०६ ॥ शील साच सुमिरण बिना । ज्ञान खडग कर नांहिं । सीझी मूखें रवि रोसलागि । बानें बगतर मांहिं ॥ १०७ ॥ गृही ओढै गूदडी । तौउतरै तनताप । रज्जब ज्वरजती यही चढै । गूदडके परताप ॥१०८॥ जाज्वर उतरै जगतकी । जतीचढै तेहिहाप ॥ रज्जब ऐसी गूदडी । वोढत मरिये वाप ॥ १०९ ॥ आरोही सम दीसती

तजि कठोर मत काम ॥ काठौ चढ त्यागी गहैं। मिथ्या कहैं सु राम ॥ ११० ॥ रज छंदहु छीते भये। हेरहु होली लोय ॥ तौ रज्जब वहु बरन करि। क्यूं न बावलो होय ॥ १११ ॥ नांव लिये नर निसतरहिं ॥ ताते लीजै नांव॥जन रज्जब जाणें नहीं। स्वांग सरै क्या काम ॥११२॥ साईं लहिये साचमें। तामें फेर न सार ॥ तौ रज्जब क्या धारिये। इन भेषों का भार ॥ ११३॥ जै तत्व प्रापति तिलक में। माला पहरूं मेल। तौ रज्जब परसै पीव सब। सहज भया यहु खेल ॥ ११४ ॥ जै भेष धरे भौ पार व्है। दरशण दे दीदार ॥ यूं रज्जब साईं मिलै। तौ सबै पहुँचे पार ॥ ११५ ॥ सिर मुंडाय साधू भये। माला मेलिर संत ॥ रज्जब स्वांगी स्वांग धरि। माटी लाय महंत ॥ ११६ ॥ पछणें का परताप सिरि। मांथे माटी मांडि ॥ रज्जब राम न पाइये। नाना विधि तन भांडि ॥ ११७ ॥ भेषों भीड न भागई। स्वांगिन सीझै काम ॥ जन रज्जब पाखंड तज। जबलग भजै न राम ॥ ११८ ॥ भेषों भला न जीव का। स्वांगहुँ स्वाति न होय ॥ जन रज्जब पाखंड परि। जिनिर पतीजै कोय ॥ ११९ ॥ स्वांग सरोवर मिरग जल। दरश येक उनमान ॥ रज्जब तृष्णा तृपति व्है। सो ठाहर परवान। ॥ १२० ॥ भेष भांडली देखि करि। मृग माल मन जाय ॥ रज्जब रीते स्वांग सर। नांव नीर तहां नांय ॥ १२१ ॥ अंब चित्र ज्यूं अंब कहावै। तरु फरु बिना कौन सच पावै ॥ रज्जब दरश दशा यूं जांन। निरफल बिना मिलै भगवान ॥ १२२ ॥ स्वांग सिंघाडी निरफल है। जै जघ जड सुन लाग ॥ अफल सफल से देखिये। रज्जब बडे अभाग ॥ १२३ ॥ भेष भरोसे बूडिये। जै नांव नांवकन नाहिं ॥ रज्जब कही समानि स्यों। पैठे भौजल मांहिं ॥ १२४ ॥ बदन सदन चित्रे चितवि। डरै न इन्द्री

चोर॥ रज्जब सूते स्वांग बलि। शकति न संपति भोग॥१२५॥
भजन भरोसे छूटिये। भेष भरोसे झूठ॥ रज्जब ज्यूं थी त्यूं कही।
रजू रोह भावैं रूठ॥१२६॥ आशा बहु आसण करै। भूष बणावै
भेष॥ रज्जब सादे साच बिन। कबहुन मिलै अलेख॥१२७॥
रज्जब भूष भेष बहुतै करै। तामैं फेर न सार। बपु बदल्या बावनं
बली। बलि मंगण की वार॥१२८॥ भांड भूत बहुतै करैं। भूखे
भेख अपार। रज्जब छलणैं का मता। तामें फेर न सार १२९॥
भेषों भगति न ऊपजै। बाने बसि नहिं पंच॥ जन रज्जब इस
स्वांग में। खैबेही की लंच॥१३०॥स्वांगों स्वारथ खाण का। भेषों
भुगति अनंत। रज्जब यूं बाने बंधे। कदे न छोडै जंत॥१३१॥
पढे पठंगै भेषकै। पामर पालै पेट। जन रज्जब इस वित पै। नहीं
रामसों भेटि॥१३२॥ स्वांग दिखावा जगत का। काया उदर
उपाव॥ जन रज्जब जगकूं ठगै। करि करि भेष बणाव॥१३३॥
ज्यूं घुणकाष्टमें खुशी। गज बाहै सिर धूरि॥ त्यूं रज्जबमाला
तिलक। पशु करै नहिं दूरि॥१३४॥ मांणस मांडे मोर से। दीसै
दुनी अनेक। रज्जब रतरंकारसों। सो कोई विरला येक॥१३५॥
स्वांग स्वांग सारे कहैं। यथा कजलिये राति॥ रज्जब काढहि रूप
बहु। आपडूमकी जाति॥१३६॥ स्वांग स्वांग सारे कहैं। नहीं
नांवकीचीत॥ जन रज्जब भूला जगत। यहु देखो विपरीत
॥१३७॥ मुखि मुखि उकटै छारसे। शहर सियाका देखि॥
महंत मही ऊसर भय। बानौं करै विशेखि॥१३८॥ देही दर्शन
देखिये। दिन देखत सौबार॥ रज्जब मन फेरत कठिन। जोजुग
जांहि अपार॥१३९॥ स्वांग किया सहि नांणकूं। ज्यूं जीव
छिपा बै जीव॥ जन रज्जब इसमा मलै। कहुकिन पाया पीव
॥१४०॥ षट् दर्शनसहि नांणकरि। गुरु खेचरगहि केहि॥ जन

रज्जब ज्यूं स्वानसिष । बधिक्क बांधगे देहि ॥ १४१ ॥ तनमन पतिव्रत चाहिये । रहती सहित शृंगार ॥ कंतन छाडै कामनी । रज्जब विन विभचार ॥ १४२ ॥ शृंगार सहित अथवा रहित । पति परसे सुत होय ॥ रज्जब भामिनी भेषबल । फल पावै नाहिं कोय ॥१४३॥ जंत्रठाट सब चाहिये । नालिहि रंगनरंग ॥ रज्जब धोखै रंगकै । नहीं रागमें भंग ॥ १४४ ॥ जंत्र गवौं रागै बजै । सोई रागसर बेनि ॥ तौ रज्जब सारि शृंगारका । कांधि भार अध-केनि ॥ १४५ ॥ सारिन रचीर बाबकै । गवैंत दूरै धारि ॥ रज्जब रागि सुयेकसे । बधि बंदौं बेगारि ॥ १४६ ॥ गऊदंत दरशन दथा । दूजी दिशि सोनांहिं ॥ यूं स्वामी सादे सदा ; उभे मांड-सुख मांहिं ॥ १४७ ॥ बिन सूनति व्है तुरकनी । बांभनि त्यागै नाश॥ऐसे माला तिलक बिन । रज्जब भगत सुदास॥ १४८ ॥

साखी ४३८२ ।

स्वांग साच निरनैका अंग ।

दत दशाली यूं फिरै । देखि दिगंबर कोडि ॥ परिसो सकलाई कौनमें । अवलोकूं यहि वोडि॥१॥ ज्यूं गोरख गोदावरी । मनिष किये पाखाण ॥ त्यूं रज्जब ओरौ करै । सरभरि सोई सान ॥ २ ॥ भरम भेष धरि भरथरि । सूली हरीन होय॥तौ रज्जब मानैं सुक्यूं । क्यौं पति पावै कोय ॥ ३ ॥ मंदिर फिरैन मूरति पीवै । गडन जीवै जानि ॥ तौ नामदेव सम होय क्यूं । पद साखीसु बखान ॥ ४ ॥ करनी करि सरभरि नहीं । कथा कबीर कहाय ॥ रज्जब मानै कौन विधि । बालदि ऊतरी आय ॥ ५ ॥ इकसा भर अरु शाहपीर । दादू देखै दोय ॥ दरस दशासर भरि घणे । परि कला कौन पै होय॥६॥जहाजकव्याचीरी फिरी । गजबसु रहे मुंह मोडि॥

दादू दीनदयालके। रज्जब परचे कोडि ॥ ७ ॥ बांछै अण बांछै करी। सांई संतस होय ॥ रज्जब देख्या बसतबल। मिथ्या कहीन जोय ॥ ८ ॥ दशा औदशा बहणविय। सद जीवके साथि ॥ जन रज्जब इनसौं परै। सोवित बेत्ता हाथि ॥ ९ ॥ दुःख दोजक सुख स्वर्ग है। दोन्यूं मांझ मंझार ॥ जन रज्जब इनसौं परै। सो जन उतरै पार ॥ १० ॥ प्रतिबिंब पाणीं नांगहै। किरणिं अरवरखै नीर ॥ स्वांग साच निरनै भया। नहंग चढै कहि सीर ॥११॥रज्जब करणी किरण सुले चढी। जीव जलकुंसु आकाश। स्वांग शब्द प्रतिबिंब परि। यहुकृत होइन ताश॥ १२ ॥

साखी ४३९४ अंग १३३।

तीर्थ संस्कारका अंग।

अज्ञान रूप अठसठ फिरहिं। धोखै धोवैं देह ॥ रज्जब मैले नांव बिन। यहुसाची सुणिलेह ॥ १ ॥ तन धोया फिरि तीरथौं। मैल रह्या मन मांहिं ॥ रज्जब पातक प्राणमैं। क्यूं उरके अघ जांहि ॥ २ ॥ जल अचवै आठौं प्रहर। अठसठ तीरथ न्हांहिं ॥ रज्जब रज नहिं ऊतरै। मैली मनशा मांहिं ॥ ३ ॥ अठसठ न्हाई तुम्बिका। मींठी भईन मांहिं ॥ जन रज्जब सो साखिसुणि। कहु कहि तीरथ न्हांहिं ॥४॥ सकल निवाणों नीरसो। कहि जलिपा तलजांहिं ॥ रज्जब एक आकाशका। अंभसु अठसठ मांहिं ॥५॥ अठसठ केजल बूडिये। ऊंडै देखो जाय ॥ रज्जब यूं तीरथ तजे। मांहि मगर मछ खाय ॥ ६ ॥ नांवबिना निर्मल नहीं। बहुविधि करै उपाय ॥ रज्जब रज किसकी गई। दहदिशि तीरथ न्हाय ॥ ७ ॥ सूतीसुत उरलाय करि। सुपिनै भरमी मात ॥ यूं रज्जब पीव जीवकन। भूले दहदिशि जात ॥ ८ ॥ दहदिशि दौडे

दूरिकूं । भ्रमि भ्रमि तीरथ न्हांहिं ॥ रज्जब रामन सूझई । जो इस काया मांहिं ॥ ९ ॥ पण्डित कहै सुपावनी । गंगा गोविंद भांति॥ तामै न्हाये नीचकुल । तौ क्योंन करैं द्विजपांति ॥ १० ॥ ढेढा-डूंमी नीचकी । अठसठ तीरथ न्हाय ॥ तौं रज्जब सुणि साच यहु। नांव निरंजन गाय ॥ ११ ॥ मनिष मीन समिद्धे रहे । अठसठ तीरथ न्हाय ॥ पै रज्जब रज नहीं ऊतरै । दुरमति बास न जाय ॥ १२ ॥ जन रज्जब तन तूंबडी । नर देखो निरताय ॥ कुचि-लन कडवापण गया । अठसठ तीरथ न्हाय ॥ १३ । जाहरनईन जानई । पुरुषतज्या परबीन ॥ रज्जब रामन आदरी । यौं सौंपि समंदहिं दीन ॥ १४ ॥ गंगा गोविंद चरणतजि । खार समंदकौं जाय ॥ रज्जब उधलीकै उदक । अघ उतरें क्यों न्हाय ॥ १५ ॥ हरि सों हुईह राम खोरि । हाड हलाये मांहिं ॥ रज्जब जीव जाणें नहीं । गाफिल गंगा जांहिं ॥ १६ ॥ धारा तीरथ धारतलि । त्यूं सतिजति सुमिरण राम॥रज्जब कारिज शीशपरि । खेतखेत्रहुं नाहिं काम ॥ १७ ॥ तनकूं तीरथ बहुत हैं । मनकूं तीरथ तीन ॥ सत-जत सुमिरण सलिल सुध । रज्जब काढै बीन ॥ १८ ॥

साखी ४४१२ ।

अथ भरम विध्वंशका अंग ।

हथि घडेकूं पूजिये । मोलि लियेकी मांनि ॥ रज्जब अघड अमोलकी । खलक खबर नहिं जान ॥ १ ॥ मूयेबछ समि प्रतिमं । पशू प्राणी सब भोल॥रज्जब ब्रह्मन बैलका । मूलन पावै मोल ॥ २ ॥ क्वारी कन्या सबरमहीं । गुदह गुडी अज्ञान ॥ त्यौं रज्जब भोले भगत । भूले जल पाखान ॥ ३ ॥ पाणीं पांहण पूजतौं । कौण पहुंच्या पार॥रज्जब बूडे धारमें। यहि खोटे व्यवहार

॥ ४ ॥ पाहन सों घडि पूतला । सबै समानें सेव ॥ रज्जब शंभु सबानिमें । ताकाल खैनभेव ॥ ५ ॥ रज्जब सेवा सैल सुत । ज्यूं सुपिनेंकी आथि ॥ सोवत सब कछु देखिये । जागत कछुन हाथि ॥ ६ ॥ जडसेवा जडकी करै । शठहठ समझै नांहिं ॥ रज्जब कूटै रोस चढि । कणनांहीं तू समांहिं ॥ ७ ॥ रज्जब करहिं पूतला मनिषका । सो मनिषौं रीसाय ॥ सौ अमूरति मूरति किये । कैसैं खुशी खुदाय ॥ ८ ॥ रज्जब चेतनि जडगढ्या । सुधिबिन लागै सेव ॥ येती अकलिन ऊपजै । असम भया क्यूं देव ॥ ९ ॥ रज्जब जड लागै जड ठौंरसों । चेतनि चेतनि ठाय॥ स्वान भंभोंडै शैल सुत । सिंह सिंहणी जाय ॥ १० ॥ अमर आतमा अमरकी । ताकी कीजै आश ॥ मिरतक तनि मिरतक घडी । तापरि काबे सास ॥ ११ ॥ मातु पिता पूत अरु पोता । इन ऊपरति सगा नहिं होता ॥ तेउ मूवा सुदीजै डारि । तौ मृतक मूरति हो क्यूं पारि ॥ १२ ॥ रज्जब निपजै धात धर । गिरि तरुवर बनराय । ठग विद्या कैठा कुरहूं । चाकर चितन पठाय ॥ १३ ॥ केश मास असत गूदे धर । तिनतैं प्रितिमातन ॥ रजपूतोंकीं रज्जबा । सेवा करै नमन ॥ १४ ॥ अवनि असत सों देवघडी । जीवों मांडा सेव ॥ रज्जब वहकछु और है ॥ अविगति अळख अभेव ॥ १५ ॥ सप्तधातु सागर सपत । शक्ति सुसलिल अपार ॥ तहां सैल सुत नांव चढि । सुरतिन पहुंचै पार ॥ १६ ॥ अति रजीव आश्रम अतिर । पारंगत क्यों होय ॥ गिरिसुत ग्रीवा बांधिकर । तिरता सुण्यान कोय ॥ १७ ॥ पांनी पांनी पुरुषोत्तमा । तोडै जीव अ-साध ॥ रज्जब पूजि पखाणकूं । सदा करैं अपराध ॥ १८ ॥ पांन फूलफल दीपसों । प्रतिमा पूजैं लोग ॥ रज्जब रामन मानई । प्राण संहारण जोग ॥ १९ ॥ जैहि रदै हरिसेइये । मनशा निर्मल

होय ॥ तौ रज्जब इस बंदगी । जीव मरै नहिं कोय ॥ २० ॥ हरि-
घर माँहैं छाडकरि । परदेशों जाय प्राण॥जन रज्जब सोधी बिनां।
पूजहि जल पाखाण ॥ २१ ॥ एकहि बांधैं कंठसों । दूजै पूजण
जांहि ॥ जन रज्जब बेसास बिन । सौंधा नांहीं मांहिं ॥ २२ ॥
सालिगराम सकल संतहुकनें । जन जावै जगन्नाथ ॥ रज्जव
रीझ्या देखि करि । गुरु ज्ञाता तिन साथ ॥ २३ ॥ भूख भाकसीमें
दिये । गलिगिजहिये पखाण ॥ रज्जब गुरुशिष्य यूं दंडे ।
कहिये कहा बखाण ॥ २४ ॥ खांडे संग फेरे लिए । खुशी
खसम संग होय ॥ त्यूं प्राण पाणी प्रतिमां लगी । हेति और
सब कोय ॥ २५ ॥ व्याहै खांडे तीरसंग । त्यूं प्रतिमां व्यवहार ॥
सब समझैं संदेह बिन । आगै है भरतार ॥२६॥ गोहूं परि गुम्मट
रच्या । सदा रहैसो नांहिं ॥ त्यूं मूरति परिमन महल । सुरति
अमूरति मांहिं ॥ २७ ॥ काल बूत करि काढणां । पहलैहि यहु
भाव ॥ रज्जब तवलग राखिये । जबलग होय लदाव ॥ २८ ॥
मूरति एक पखाणकी । मात पिताकै नांहिं॥रज्जब रसनां उनदई ।
दूध पिया उस ठांय ॥ २९ ॥ कहो कौनकूं पीठिदे । कहो कौन
दिसि जाय ॥ निकट सुन्यारा सबनिसौं । सो सोध्या हम भाय
॥३०॥ रज्जब प्रतिमाके प्रतापसों । प्राणन पलटै कोय ॥ तौ पारस
पत्थर भला । लोहा कंचन होय ॥३१॥ चंबक चलैर पारस पलटै ।
त्यूंभी प्रतिमा नांहि ॥ रज्जब सेवा शक्ति परि । समझि देखि मन
मांहिं ॥ ३२ ॥ हमाय छांह व्है छत्रपती । चंदन पलटै काठ ॥
प्रतिमां इतौन पाइये । गहण दिखावै पाठ ॥ ३३ ॥ प्यंड प्राण
पलटै नहीं । प्रतिमां पूजैकोय ॥ दास देव देखैं दुनी । रज्जब रजू
न होय ॥३४॥ सुमेरु सहित डूंगर सबै । तिन परि बरसै मेह ॥
रज्जब रुचि इस बातकी । तौ सब चरणोदक लेह ॥ ३५ ॥ सांबण-

में सब जीवका। जल चरणोदक होय ॥ सो रज्जब पीवै सबै। सीझ्या सुण्यान कोय ॥ ३६ ॥ माला तिलकन मानई। तीरथ मूरति त्याग ॥ सो दिल दादू पंथमें। परम पुरुषसों लाग ॥३७॥

झूठणिका अंग।

रज्जब रिधि झूठी सबै। सब जग देख्या जोय॥ इलन अभोग ति पाइये। कहु सेवा क्यूं होय ॥ १ ॥ जीव जुठालील छमी। लछी औंढ्या जीव ॥ इहां अभोगत कछु नहीं । कहा समरपै पीव ॥ २ ॥

साखी ४४५२।

आचार उथेलका अंग।

चाकी चूल्है पीसतां। दीपक पाणीं पात। जन रज्जब जीवै मरै। ये षट् करम षट् घात ॥ १ ॥ एक करमसों भाजिये। ये दीसैं षट् करम ॥ रज्जब करैसु कौन विधि। लह्या धरमका मरम ॥ २ ॥ चीठी दस चोकै मरैं। घुणदस हांडी मांहिं॥ जन रज्जब इस सूचिमें। बरकत दीसैं नांहिं ॥३॥ करै आचार विचार विन। सिल दिल बैठा आय ॥ रज्जब उपजै कर्म षट्। करम करम धर जाय ॥४॥ चमदृष्टि चौके चढै। छांटि सुखितगजदोय ॥ रज्जब सो समझै नहीं। जिन सांवण भेई गोय ॥५॥ रज्जब चौकै चहुंकै। जीवहुं च्यारूं खानि ॥ सुलखेविनां लीपते फिरैं। वुलते पींघा आनि ॥ ६ ॥ भांति भांति भोजन भरे। भवैभाणें भगवंत ॥ रज्जब येकहि थालमें। जीवहि जीव अनंत ॥ ७ ॥ अजरी आए उठि गया। इल ऊपरि आचार ॥ रज्जब सूच्या नांरती। बेत्ता करो विचार ॥ ८ ॥ अजरी बजरी प्रस्यकरि। पाक पूरि परिजाय ॥

कहो अचार कहां रह्या । जै पंडित सो खाय ॥ ९ ॥ जीवत गांडै जोति जहि । त्यूं पूजा षट्ट कर्म ॥ रज्जब आये पाप सिरि । धोखै कहिये धर्म ॥१०॥ रज्जब उपजै पाप पुण्य । एक पुण्य व्है पाप॥ अश्वमेध यज्ञ करतज्यों । हयहो मेरे पाप ॥ ११ ॥

अरिल ।

कहैं गृहका धरम पापका मूलहै । मरै उभै पचिप्राण कहो क्या शूल है ॥ मारै पंच पुनीति धर्मकी ठौररे । परि हां रज्जब पापर पुण्यज्ञान करि ब्यौररे ॥ १२ ॥ रसोई रस सब पडे । राक्ष सरूप अहार ॥ रज्जब रूते खाय करि । योंहीं पाक अधार ॥१३॥ पाकपूर महा रह्या । ताकी सुधिनसार ॥ रज्जब सो सुपिनें नहीं । फूले फिरैं गँवार ॥ १४ ॥ पाक अधारी येकको । जाकै पाक अधार ॥ रज्जब नरनां पाक सब । नामबिनां संसार ॥ १५ ॥ रज्जब रिधि रक्त ज्यों काढिये । ब्रह्मंड पिंडकों पाछि ॥ सो अहार सारे करैं । कहां पूछिये आछि॥ १६ ॥पय प्राणी पशुतें लिया । घृत कूपैसु अहार॥तातैं छागल जलपिया । रज्जब करि सुबिचार॥१७॥ रज्जब ऊधाथालन कूटिये । सूधाकरि संत पोखि॥टीडी नहीं उडा वणीं । कपटिन लहिये मोखि॥१८॥ताल पखावज झालरि शंख । ढोल दमांमा भेरि असंख्य ॥ बाहरि सोरसरै क्या काम । मांहैं मौनी कहैन राम ॥ १९ ॥

सखी ४४७१ अंग ३७ ॥

बेद बिकारका अंग ।

रज्जब चहुदिशि चूक है । छहों ठौर छल छेद ॥ जौन राज लीयें खडे । अष्टादश औरं भेद ॥ १ ॥ रज्जब चित चौबीस दि-

शि। वेद बोधकी शाखि ॥ बसत ऐक मत मांग बहु। कहा करै सो राखि ॥ २ ॥ ऐकन कहिं ऊगूण दिशि। एकनवैं आथूण॥ रज्जब बातैं बेदकी। सुनि भूले सुर भूण ॥ ३ ॥ वेद बतावै अठस क्यूं। पूजौ जल पाखाण ॥ रज्जब रंजहिन संत जन। जिनहुं निरंजन जाण ॥ ४ ॥ विष अमृत सब बेद विधि। निर्णय करैसु नांहिं ॥ जन रज्जब जगि जुगल रस। पी प्रांणीं मरि जांहिं ॥ ॥ ५ ॥ ॥ रज्जब वेदहुसो रह्या। परचा भेदमें जाय ॥ दूरिन दौर देह दिशा। निकट लिया मिरताय ॥ ६ ॥ बेद बतावै सबनिकूं। क्रीडा गोपी कान्ह ॥ रज्जब नर नारयों रचे। गति मति गही सु नान्ह ॥ ७ ॥ भागवत कहै भारतकी। लडि मूये दानां देव ॥ रज्जब रुचि उपजै नही। काकी कीजै सेव ॥ ८ ॥

नितगी अंग।

रज्जब देखो दिव्य दृष्टि। दिवसु माहि दै दीप ॥ साच झूठ निरने भया। पावक परस समीप ॥ १ ॥ रज्जब निरखहु नीर निधि। अतिगति नीतगि अंग ॥ साचा राख्या सोचि उर। नहिं झूठे सों संग ॥ २ ॥ मही मध्य माण समरैं। जीवै जलधी नाद ॥ पहमसु पीडानां करी। देखो दिशि प्रह्लाद ॥ ३ ॥ प्रह्लाद प्रतिज्ञा पूरिये। हिरनां कुशहति डार ॥ रज्जब रासन रीस यहु। निर्मल नीति बिचार ॥ ४ ॥ प्रहलाद बच्या होली जली। रही उभे रस रीति ॥ रज्जब पेखि प्रबीनता। अगान करी अनीति ॥ ॥ ५ ॥ रामचंद्र रावणसु रिपु। बिभीषन सों भाई ॥ शत्रुमित्र सोधे करी। ह्येन एकहि घाई ॥ ६ ॥ रज्जब दुविधा दूरिलग। स्वर्ग नरक व्है बास ॥ येकांकूं देवल फिरै। ऐक जीवजाय निरास ॥ ७ ॥ अठार भार आदम घरऊं। ग्रासहि अगनि अतीत॥

कागरि कमाणसटालि चलहिं। यहु आदूरसरीत ॥ ८ ॥ जड तरुवर तोयगहै। रंगहुं रस रुचि नांहिं ॥ तौ अन पाणी बिन आदमी। और गहै क्यों मांहिं ॥ ९ ॥ करता करै किकरम गति। बुरा बुरैकाहोय ॥ नर नराधपति नीति बिन। सुखीन देख्या कोय ॥ १० ॥ बागे देर निवाज यहिं। बागोंकरि निस तान ॥ रज्जब बागों बिगति बहु। बागौं सुखदुख सान ॥ ११ ॥ वप बागे अमृत विष सांनिर। साध असध पहराये ॥ सन्मुख चलैं निवाजे दीसै। विमुखे जीव मराये ॥ १२ ॥ सत्रुहुं सोधिर मारही। करहि मित्र प्रति पाल ॥ जन रज्जब यहु नीति मध्य। सत पुरुषोंकी चाल ॥ १३ ॥ दुष्टों सेती दुष्टता। मिलतौं सेती मेल ॥ रज्जब दोन्यूं कामका। खबर दारका खेल ॥ १४ ॥ बदी बंधन मारिये। नेकी परन निवाज ॥ तौ रज्जब न्यावन नीति कछु। धुंध मारका राज ॥ १५ ॥ रज्जब रोष अनीति परि। नीति मांहिं रस रंग॥आदि अन्त मध्य इस मतै। सत पुरुषोंका अंग॥ ॥ १६ ॥ अंतक सदा अनीतिके। नीति मीति प्रति पाल ॥ रज्जब महंत मही पत्यों। चारिहु युगयहु चाल॥१७॥रज्जब जीवहि जीव दे। सो सब छोटा साज ॥ जिसहि निवाजै सांइयां। सो सबही सिर ताज ॥ १८ ॥ पाचोंथा पीरो टियां। सोतौ पांचों खांय ॥ पै पंचों थापी थापडी। सो चूल्हैमें जांय ॥ १९ ॥ शब्द शरीरों उपजहीं। सो बंदहिं सब लोय ॥ वाई विष्टा पेटकी। मनि खन मांनै कोय ॥ २० ॥ बंदरहूं बाहर चढे। रज्जब नीति विचार॥ राउन जतज्या अनीतिमें। रावन सासिरि मार ॥२१॥ सरिता मिलहिं समंदकूं। चोट चिहन कछु नांहिं ॥ रज्जब सूझहि बूंद निधि। उदै बुद बुदा मांहिं ॥ २२ ॥ सत पथरी ससत्रों सहे। करीन तोवह त्राहि ॥ कुसुम चोटकसके तेऊ। आंनन उचारी

आहि ॥ २३ ॥ अन्या प्योंको व्यापई । करतों देखि अनीति ॥ रज्जब सांई साध घरि । आदि अदलि रस रीति ॥ २४ ॥ सोंगा सों संसा नहीं । बाट चलै बपु मांहिं ॥ ऐकै कण उबटै चलैं । जन रज्जब जक नांहिं ॥ २५ ॥ पीडी पाटा घाव परि । गुलगद सोधि पहार ॥ जन रज्जब बैद्यक यहु । करैन सर्व श्रृंगार ॥ २६ ॥ दिबन दुखावै दोष बिन । न्याय नीति निरताय ॥ तौ आदम अपराध बिन । कहु क्यूं मारा जाय ॥ २७ ॥ धरम अस्थानकवंदिये । कर्म अस्थानकदंड ॥ जन रज्जब यहुजग जुगति । नीति मार्ग नौखंड ॥ २८ ॥ कर्म अस्थानकै कर लगै । धर्म अस्थानक धोक ॥ जन रज्जब रस रीति यहु । हरसि हसेबी थोक ॥ २९ ॥ ऐक ठौर है दंडकी । ऐक ठौर डंडौत ॥ मार मिहर दोउ नीतिमें । नर दुनियां तण नौत ॥ ३० ॥ रज्जब रचनां रामकी । चौरासी लख जोय ॥ ऐक ऐक नेनां करी । अबसु ऐक क्यूं होय ॥ ३१ ॥ खंड खंड खितभुज घने । घटि घटि घाट अनेक ॥ रज्जब वसुधा बहु मती । सु अबिगति करीन ऐक ॥ ३२ ॥ देश राज राजा करहिं । दिलहु राजगुरु पीर ॥ रज्जब साझा शक्तिमें । परिं मतैन मेला बीर ॥ ३३ ॥ गुरु अनंत ज्ञानहु घणे । बहु गोबिंद घण सेव ॥ रज्जब मांडन ऐक मत । घर घर देई देव ॥ ३४ ॥ साधु सुलक्षण सेइये । लाछि लालचिनरपति ॥ सोधन धामहुं नां मिलै । तौ भाजैं भल अति ॥ ३५ ॥ रज्जब रमिता रामका । बहुत भांति मंडाण ॥ मिलहिन आदम ऐक मत । जीव जीव जूवा जाण ॥ ३६ ॥ रज्जब ऐक नकीया ऐकनें । प्राणरु पंचों तत्व ॥ तौ द्वैघट क्यों एक व्है । भानि अबिगति मत्त ॥ ३७ ॥ साधू इंद्री नासिका । च्यारों इन्द्री चोर ॥ रज्जब कटै कुसंग मिलि । नहीं न्यायकी ठौर ॥ ३८ ॥ जेती उपजै आपमें । तेती अपनें

शीश ॥ जन रज्जब व्है गैबकी । सो सिरजी जगदीश ॥ ३९ ॥ रज्जब भाव भूषभै करि भखै । भेजन सुरमर जाद ॥ पै दोन्यूंमै तीन्यूं नहीं । क्यौ करि व्है पर साद ॥ ४० ॥

साखी ४५१९ ।

दिल बादिल सौंदै सौदा । दिल दिये दिल पाइये । दिलहीसों दिल लेय ॥ ज्यूं बजिमी जडमैं लई । त्यूं धरत रस दोय ॥१॥ बनराय बीज पैठै विभू । गात गरद में देय ॥ तौ रज्जब तरु नीपजै । रस सु रसातल लेय ॥ २ ॥ रज्जब हरि हित वित्त खरच्यूं बधै । वपु देव सुधा सब ॥ आतम अरपि मिलै परमात्म । नीति रीति है अब ॥ ३ ॥ त्रिविधि भांति जीव भेट दे । त्यूं प्रभु करै पसाव ॥ जूवै का सा खेल है । लाया पावै डाव ॥ ४ बांकों सों बांका धणी । सूधों सेती सुधि ॥ जन रज्जब साची कही । जो जाणें सो रुधि ॥ ५ ॥ हरि दासों की दास है । बंदों बंदा सोय । सेवग घरि सेवग सुण्या । सौदे सौदा होय ॥६॥

गुरु गतमत सत्य का अंग ।

गुरु पीर जीवते सीप सम । शिष सुकृता सु मुरीद ॥ ज्यंदहुने मूरदेजने । रज्जब चशम बदीद॥१॥शशि खंडित मण्डल अखण्ड। मात अंध सुत नैंन ॥ त्यूं रज्जब गुरु गति बिनां । पै शिख निपजै सत्य बैंन ॥ २ ॥ नर गुरु नाग समानि है । शब्द सु मणि सुख भौंन ॥ सो रज्जब किन लीजिये । जो दारू दुःख दौंन ॥ ३ ॥ अजरी आदम गात गत । शहत सविता बोल ॥ रज्जब अज्जब औषधि । नर निपजै निर्मोल ॥ ४ ॥ देखहु दीपक ज्ञान का । साध असध कर होय ॥ मिमिर हरै उर धाम में जन रज्जब करि जोय ॥५॥ गुरु खोख राखे जडा । सखि साखों नहिं दोख॥रज्जब

मत जल पावहीं। पत्र फूल फल पोख॥६॥परममता पीपल सुफल। कुगुरि कागज उरलीन॥ प्रह्म सु चेले चक्कुहुं परि। सो निपजैं कुलमीन॥७॥ रज्जब मा व्यभिचारिणी। बेटी पति व्रत होय। त्यूं गुरु गृही शिष जती। नाहीं अचरज कोय॥८॥सपत धातु धरती उदै। निधि नग हीरेलाल॥ रज्जब आतम कामके। अशन बसन इल बाल॥ ९॥ दारू दुष्ट दयाल दे। रज्जब हरिये रोग॥ उधरन हारा उद्धरै। मिलै अच्छुगता जोग॥१०॥ शोधि मार उपदेश दे। गुरु गति रहति न नेम॥ पारस साधु असाधु का। करत लोह ते हेम॥ ११॥ रज्जब काव्य किराड कै। किरिया ऊरा ठाट॥ तौभी तिनका लीजिये। बाइक पूरा बाट॥१२॥अबला बली सु बंध हो। मन समुद्र के अंग॥ रज्जब कूखि अबंध ये। निपजैं सदद सुनंग॥ १३॥ दर विहीन दीढि पारखों। नर नग करहिं सु मोल॥ घण मोले धनपति गहैं। रज्जब तिनके बोल॥ १४॥ गुरु सविता सारंग शिष्य। समझे समझो साध॥ जन रज्जब कहु क्या गया। अक्कलि अंब जहां लाध॥१५॥रज्जब महंत मयंतकी। बंक कलंक न जोय॥ श्रवण सुधारस पीजिये। नैंन उजाला होय॥ १६॥

साखी ४५४० अंग १४१

अथ सार ग्राही अंग।

हंस अंशले नीरका। नीरहि निकसै नांहिं॥ जन रज्जब यूं ज्ञान गहि। लै अमृत विष मांहिं॥१॥ ज्यूं सविता तोयं तिमिर। शीत सहित छिताणि॥तैसें रज्जब त्रिगुण तें। तत्व लीजिये छाणि॥२॥ ज्यों मांखी मधु काढिये। शोधि अठारह भार॥ त्यूं रज्जब तत्वही गयो। तीन्यूं लोक मँझार॥ ३॥ जैसे चम्बक रेत में। चुणि ले

कंचन सार ॥ त्यूं रज्जब कण काढिले । केवल हंस विचार ॥ ४ ॥ चेतनि चम्बक रूप । गहै सु गुण कण सारके । रज्जब जुगति अनूप । छाडहिं अवगुण सारके ॥५॥ जै कांटा है रूखमें । छांह मांहिं कछु नांहिं ॥ रज्जब मिलिये सबहुँ सों । गहि निर्गुण गुण मांहिं ॥ ६ ॥ रज्जब साधू गुण गहै । अवगुण दशा न जाय ॥ ज्यूं अलि तिल तजि पहुपकूं । परमल लेय उठाय ॥ ७ ॥ परिहरि कंटक केवडौ । कुसुमहिं लै अलि आय ॥ त्यों रज्जब गुणकूं गह्यो । अवगुण में निरताय ॥ ८ ॥ ज्यों बछ गऊ कूं चूखतौं । मन में बछ न गाय । त्यों रज्जब रस पीजिये । आपा परबाशि राय ॥ ९ ॥ बैंन बूंद बहु वर्षहीं । जलचर होहिं निहाल॥पैं सीप स्वाति जलकूं गहै । उपजै मुकतासु माल॥१०॥ दुयि दुनियां मृतक में लहिये । मुक्ता सुक्त दाति बदंत । रज्जब लहिसो दोयजन ॥ येक मही-पाति पुनिह महंत ॥ ११ ॥ माया पाणी दूध हरी ॥ साधू हंस समान । पै पाणी पीवैजै रुचि ॥ जन रज्जब सुख छाणि ॥ १२ ॥ चंच नीरमें गाडि करि । क्षीरहि पीवै हंस ॥ त्यूं रज्जब रिधि मधि सुजन । लेय रामका अंश ॥ १३ ॥ रज्जब तरु धर मांहिं सु देखिये । नीर लेहिं निरबालि ॥ त्यूं साधू सब शक्ति मधि । सो रस पीवहिं टालि ॥१४॥ साधु सीप सरोज गति । सकति सलिल में बास॥प्यंड पुष्ट व्है और दिशि । प्राण और दिशि आस ॥१५॥ साध असध सुकृत अपराध । चतुर भांति माया फल लाध । ज्यों मसि अखिर गोविंद गाली । रज्जब ले हिये कहिये कटाली॥१६॥ रज्जब मधुरिख मानवी । तरु नरु देइ न पीठि ॥ सबही ठाहर शोधि करि।लिया मधुमत मीठि॥१७॥अठारभार विधि आदमी । शहत सु सांई हेत ॥ रज्जब मधुरिख मुनि मही । प्राण पियूष सू लेत ॥ १८ ॥ रज्जब रिधि रुधिरहु भरी । मन सामात सुजान ॥

अशुद्ध दूध व्है दया सुखी। साधू सुतले पान ॥ १९ ॥ दया देह में आवतैं। अशुद्ध दूध व्है जाय ॥ अग्राहिज ग्राहिज भया। रज्जब पल्टै भाय ॥२०॥ सुकल सु शोणित सीर पुनि। त्रिविधि भांति तन येक। सुगताहूं सुरमत मिलै।रज्जब बडा बिवेक॥२१॥ रज्जब शशी कलंक लागि लागि जटे। सुधा सदा निकलंक। त्यूं सत्य शब्द रस लीजिये। परहरिकीरबपुवंक ॥ २२ ॥ रज्जब महंत मयंकतें। लैबपि उख प्रकाश ॥ करम कलंक घटि बधि लुदे। गुण ग्राही निज दास ॥ २३ ॥ रज्जब शबद सुगंधि समझि लै सोरभ। पहुप प्यंड चाखिये सु नांहीं। परम बिबेक बितकौ गाहक। गुणसु काढिले ओगुण मांहीं ॥ २४ ॥ सुशबदसत्य ज्यूं लीजिये। उत्पाति दशान देखि ॥ रज्जब रसका गाहकों। बिरचै नहीं बिशेखि ॥२५॥ बपि विष पहपि पिपूष मधु। गति वातियहु बोध ॥ तहां रज्जब रस लीजिये। यूंही निज प्रमोध ॥ २६ ॥ षट् दर्शनमें खोजिले। साचा शबद विचारि॥त्यूं रज्जब दुरि त्याग करि ॥ अंबर लेहि उतारि ॥ २७ ॥ पारा कंचन काढिले। राखि रहित रक्षि राखि ॥ त्यूं रज्जब अज्जब मतै। शोधि गहै साति साखि ॥ २८ ॥ सबकाहुकालीजिये। साचै सबदनं दोष ॥ ज्यूं रज्जब बहु धेनुकै। पय पीये व्है पोष ॥ २९ ॥ मिठाईकी मूरतें। सूराति भांति अनेक॥ज्यूं रज्जब जो शबद है। सोरस रूपी ऐक॥ ॥ ३० ॥ नाभिनी झार निवान घट। साखी शब्द सुनीर ॥ रज्जब उभै अंकुर है। कोई सींचहु बीर ॥ ३१ ॥ सकल कुलहुंकी आतमां। सीझी हरिमें जाय ॥ तौ रज्जब साचा शबद। कहु क्यों लीजै नांहिं ॥ ३२ ॥ अवनि मांहि अन्ननींपजै। सो आदम उर धारि ॥ त्यूं साधु संसारतैं। रज्जब लेहु विचारि ॥ ३३ ॥ ज्यूं उभै खलावरकै पवनि। अगनि उभै सुधसार ॥ त्यूं बैंन बिमल

दुहुंवो रकूं। रज्जब कटै बिकार ॥ ३४ ॥ तनमन शकाति समुद्र मधि। काव्या भाव रतन ॥ सार गराही औतरे। सोधण साधु धन्न ॥ ३५ ॥ द्वै सरवर विचि पालि व्है। तापरि तरुवर होय ॥ जन रज्जव तापोखमें । टोटा नांहीं कोय ॥ ३६ ॥ द्वै सरवर बिचि पालिपर। तरवर तोयं लेय ॥ रज्जब तजीसु दुष्टता। जीवहुं दुखन देय ॥ ३७ ॥ बहुत भांतिके घीव हैं। बहुत भांतिले तेल॥ जन रज्जब पावक प्रबल । होय हुताशन मेल ॥ ३८ ॥ चंदन सबही कामका । सबै सुगंधित होय ॥ त्यूं रज्जब निज दास है। क्या छाणेगा कोय ॥ ३९ ॥

साखी ४५७९ अंग १४२।

असारग्राही अंग।

रज्जब साधु समुद्र गति । मोती मानिक साथ ॥ तहां शंख साखी गहैं। चतुराई करि हाथ ॥ १ ॥ रज्जब साधू ताज गति। मांहिं रतन पति राय ॥ मंदभागी मूंठी भरै। तौ कर कंकर चढि जाय ॥ २ ॥ रज्जब साधू आरसी। मैल मोरचा नांहिं ॥ मूढ जीव मुख दोषकूं। देखै दर्पण मांहिं ॥ ३ ॥ अप अपराध उतंग अष्टकुल । नैन मूंद नहिं हेर ॥ अनि अवगुन रजरैनि सम। सायर कियासु मेर ॥ ४ ॥ जथा विथा कोण दिले। बूंटी वपसु मंडारि ॥ रज्जब यूं अज्ञान गति । अवगुण गहै विचारि ॥ ५ ॥ ज्यूं चीचड तजि दूधकूं। लागिरु लोहू पीन॥ त्यूं रज्जब गुण छाडि करि। आधहु अवगुण लीन॥ ६ ॥ रज्जब सकल सुगंधि तजि। मैलहि चाहै मीन ॥ त्यूं गुणतजि अवगुण गहै। शठ सुरता मति हीन ॥ ७ ॥ गुण छाडै अवगुण गहै। जन रज्जब तेलंड ॥ बाजी गरके धाममें। मानौ मुस्या करंड ॥ ८ संत सभामें शब्द सुधा

रस । पीवै पिलावै साध ॥ तहां बाद वैरी करै । अमृत विषमले अपराध ॥ ९ ॥ रज्जब उर अवगुण भरे । नहीं ज्ञानगुण मांहिं ॥ दाहै मारी बोल ज्यूं । सांगि सूल रहि जांहिं ॥ १० ॥ रज्जब निंदक औगुणी । सब श्रवणौं दुख पूरि ॥ भैभीति भांड सुख देखिये । ज्यूं भलकहुं भर पूरि ॥ ११ ॥

शब्द उभै असत्यका अंग ।

संजोग खडी बाइक अखीर । हुता सेती होय ॥ रज्जब मेलिन भ्रितगा । तब सुर्णेन देखै कोय ॥ १ ॥ रज्जब शब्द शरीर बिन । कानहुं सुण्यान कोय ॥ यथा बूंद बादल बिना । दृष्टिन दीसै जोय ॥ २ ॥ ज्यौं सुपिनां नांहीं नींद विन । त्यूं शबदन बाज शरीर ॥ रज्जब समझया ज्ञानमें । ज्ञानी समझौ बीर ॥ ३ ॥ रज्जब पाले पिंड करि । बूंदे बैन प्रकाश ॥ पै दोयन दीसै दोय बिन । देख्या सुण्यान दास ॥ ४ ॥

साखी ४५५४ ।

शब्दका अंग ।

सकल पसारा शब्दका । शब्द सकल घट मांहिं ॥ रज्जब रचनां रामकी । शबद सुन्यारी नांहिं ॥ १ ॥ शबदैं बंध्या शबदैं गही । शबदैं शबद खुलाण ॥ जन रज्जब इस पेचकूं । समझै संत सुजान ॥ ॥ आज्ञा वोओंकार परि । पंच तत्व अकार ॥ उदय अस्त सब शबद मधि । तामें फेरन सार ॥ ३ ॥ शबदैंहीं सुलझे सबै । शबदसरै सबकाम ॥ रज्जब सतगुरु शब्दमें । शब्द गहैं निज ठाम ॥ ४ ॥ गुरु बाइकमें सीझिये । वाहरि सीझै नांहिं ॥ रज्जब सीझे संत सब । जु बैंठे बाइक मांहिं ॥ ५ ॥ जो सतगुरुके शब्द-

में । सो सीझै संसार ॥ शब्द बिना सीझै नहीं । रज्जब कही बिचार ॥ ६ ॥ मत मार्गपर लोकके । शबद सुनारे ठाठ ॥ जन रज्जब जग जीवडे । भूलिपडैं माति बाट ॥ ७ ॥ रज्जब रजतलि नीर निधि । गुरु गगन जल सोय ॥ बैंन बूंद बरखा बिना । नांव नाज नहिं होय ॥ ८ ॥ करी मिमाई मतकी । ब्रह्म अगनि सुपकाय ॥ शब्द पुडी सब ठौरकी । धाव असंका लाय ॥ ९ ॥ असक असंका बहुत हैं । त्यूं औषधि शब्द अपार ॥ रज्जब सो तहां लाइये । तौ रोगन रहै लगार ॥ १० ॥ रज्जब विधिधि भांति बूंटी बिथा । वैद्य सुजाणहिं भेव ॥ यूं असंका अनन्त विधि । समझावै गुरु देव ॥ ११ ॥ शब्द मांहि करि पाइये ॥ तनमन जीवका भेद । रज्जब माया ब्रह्मका । बाइक बीचिन खेद ॥ १२ ॥ रज्जब रसना राहमें । बैंन बटाऊ जानि ॥ तनमन आतम राम की । देय खबरि सो आनि ॥ १३ ॥ साधु शब्द सो तुम्बिका । तिरै तिरावै प्राण ॥ रज्जब राखै जीवकूं । बाइक बंधू जान ॥ ॥ १४ ॥ साधू शब्दसु तुम्बिका । कटि कटि राखै प्राण ॥ सो रज्जब बूडै नहीं । भवजल संतसु जान ॥ १५ ॥ शब्द तुम्बिका भार । भौजल काढै भार धर ॥ रज्जब शुन्य सहार । जैसे पंखी पंखपर ॥ १६ ॥ प्राणसु पंखी पाठपर । करै गवण गैणाग ॥ राह केतु शशि सूरतर । लहै फहम फल बाग ॥ १७ ॥ बोहिथबैनों परि चढयूं । विषम बारि सिरि गौंन ॥ रज्जब पहुंचै पार पदि । भलौं भला सो भौंन ॥ १८ ॥ अहि आदम जबपा वाहिं । पंख प्रवीनसु शबद । सो बावन ब्रह्मै मिलहिं । देखो काजी हिंद ॥ १९ ॥ रज्जब यथा माहके कुंभमैं । शीतल होयसु नीर ॥ तथा शब्द सुहुरती । सुनत होत गुन बीर ॥ २० ॥ सिरजन हारे शब्दके । सदासु शब्दों मांहिं ॥ रज्जब गुरु गोविंद जीव । बचनों बाहरि

नांहिं ॥ २१ ॥ षट्दर्शन खालिक खलक । सत्य शब्दके मांहिं ॥ जन रज्जब श्रीपति सहित । बाहरि दीसै नांहिं ॥ २२ ॥ शब्द सिधसु सदा रहै । सदन सप्तसुर जांहिं ॥ रज्जब कही बिचारि करि । देखि दृष्टि दिल मांहिं ॥ २३ ॥ शब्द सिद्धि घट ऊपजी । पर काया परवेश ॥ रज्जब येक अनेक व्है । रवि रायूं दिशि देश ॥ २४ ॥ शब्द अमर फल नीपजै । अकलि अंघ्रिप मांहिं ॥ अरथ सुधारस पावही । तानि सम प्रीतिम नांहिं ॥ २५ ॥ काचे तानि साचा शब्द । ज्यूं बिरछ बीजसु भाय ॥ गात गतहु सति देखि यहि । ऐक रहै इक जाय ॥ २६ ॥ बैण डांण हनुमंत गति । उदधिहसंका पार ॥ रज्जब सो साबति सही । और कूदकब वार ॥ २७ ॥ऐक शब्द संदेह कट । ज्यूं बावनकी भीख ॥ कोटि साखि सुणि सोच उरि । रज्जब चलीसु लीख ॥ २८ ॥ रज्जब चेत नि [चकवै । चरचा चक्र समांनि ॥ देखि असंका अहि हने । बांनी बल भवांनि ॥ २९ ॥ साधु शब्द भंडार है । अरथ द्रव्यता मांहिं । रज्जब कूंची दृष्टि विन । ताला खुलैसु नांहिं ॥ ३० ॥ साधु शब्द डूंगर भये । भाव गुपत बिचि धात ॥ रज्जब टांकी ज्ञान विन । कोई तहांन जात ॥ ३१ ॥ शब्द सैल मांहै धरया । सब संतहु कामाल ॥ सोवित वेत्ता काढिकर । करहिं दुकालसु काल ॥ ॥ ३२ ॥ काया खानि तनमें सही । तहां विधाता धात ॥ शब्द दीप विनको लहै । रज्जब समझो बात ॥ ३३ ॥ भौजलि बूडै भारसों । शब्द तुम्बिका हाथ ॥ रज्जब पैदै पिंड सों । तूंबी रहै न साथ ॥ ३४ ॥ साध शब्द सीखे सुने उर अंतरलै राखि ॥ रज्जब बिगिनें बीचही । काटहु तासन राखि ॥ ३५ ॥ बाइक बादल अर्थ जल । श्रवै होयसु काल ॥ पै रज्जब बरखा बिना । आतम अवनिहुं काल ॥ ३६ । शब्द शूर सांवत मिल्या । बणीं फहम की फौज ॥

जन रज्जब अंगहु अनंत। ज्यूं मखमल में मौज॥३७॥कान रानमें बास परि।चढहि फ़हम की फौज॥उतारे सु अज्ञान अष्ट कुल। शब्द सु पावै मौज ॥ ३८ ॥ तन तरकस सींगणि सुमति । बैंन बान करि जान ॥ काहू का बैठा मरमि । जन रज्जब पर वाणि ॥३९॥ बायु अकेली बन हलै। देखहु विश्वा बीस॥ सो समीर संग शब्द कै। तौं क्यों न डुलावै शीश ॥ ४० ॥ सूई शब्द पशु प्राण्यू खाये । दिन दिन होत वितारे॥देखो चरते पीवते । रज्जब रोगि सु मारे ॥ ४१ ॥ रज्जब बनसी बैनकी । मीन मनिख जो खांहिं ॥ देखो बारि विभूति में । सो ठहरावै नांहिं ॥४२॥

साखी ४६३६ ।

वाणी विचार का अंग।

रज्जब प्राकृत वो ओंकार है । प्राकृतहि रटि राम ।। प्राकृतही टीका भया । संस्कृत सिरि ठाम ॥ १ ॥ आदिहु प्राकृत मूल है । अंति प्राकृत पान ॥ रज्जब विचि वृक्ष संस्कृत । फलरथ कौंने थान॥२॥ प्राकृत मधि ऊपजै । संस्कृत सब बेद ॥ अब समझावै कौन करि । पाया भाषा भेद ॥३॥ प्राकृत पृथ्वी पवन । संस्कृत घटि सास ॥ एक सजीवन एक मिलि । येक येक बिन नाश॥४॥ प्रकट प्राकृत सूरसम । निगम नैंन उनहार॥ जन रज्जब जगि येक बिन॥चहुं ओर घोरंधार॥५॥प्यंड प्राण बिन कछु नहीं । शबद न सावति होय ॥ तैसे रज्जब संस्कृत । बिनाहु प्राकृत जोय॥६॥ प्राकृत के पेटमें । संस्कृत सुत कोडि ॥ ज्यूं विचि बारी बाग बहु।पै चकहुं बडी चहूं ओडि ॥ ७ ॥ बीज रूप कछु और था । वृक्ष रूप भया और ॥ त्यों प्राकृत तें संस्कृत । रज्जब समझा व्यौर ॥ ८ ॥ प्राकृत पूंजी प्राण पहि । संस्कृत सौदे लेत॥

रज्जब बांदी बीबी यहि । फिरि सुरझाई देत ॥ ९ ॥ वेद सु वार्णी कूपजल । दुःख सुं प्रापति होय ॥ शब्द साखी सरवर सलिल । सुख पीवै सब कोय ॥ १० ॥ विद्या वसि वेत्ता बहुत । वार्णीं वंदि अनेक । रज्जव शारद सिर चढै । बावन वर कोइ येक ॥ ११ ॥ वाणी विविधि विहार करि । साच वाच सों काम ॥ रज्जब राचै ताहि गुणि । जामें जूना राम ॥ १२ ॥ रज्जव वाणी सत्य सो । जामां है निज नाम ॥ कहा प्राकृत संस्कृत । राम विना बेकाम ॥ ॥ १३ ॥ उज्वल मैले भाव द्वै । बहु बाणी चित्राम ॥ रज्जब सन्मुख सबद लै । विमुख बात बेकाम ॥ १४ ॥ त्रिय योजन बोली पलट । बहु बसुधा बहु वाणि ॥ रज्जब लीजै शबद सति । राम नाम निज छाणि ॥ १५ ॥ राम विमुख बाणीं बुरी । कहैं साधु सब वेद ॥ जन रज्जब तिनकूं तजैं । पाया भाषा भेद ॥ १६ ॥ रज्जव बपु बाणीं विधि येक हैं । जीव जगत गुरु नाम ॥ सदा सजीवनि लीजिये । तजिये मृतक ठाम ॥ १७ ॥ वैदिक ज्योतिष जैन मत । मंत्र सु माला नाम । व्याकरण अरु संस्कृत ॥ ताते मैंन पत्यांव ॥ १८ ॥ संस्कृत सांई विमुख । भाषा भगवत भाय । सोने के जल सों लिखी । गाली विविधि बधाय ॥ १९ ॥ सगुण निर्गुण ठौरकी । वाणीं वीचि दलाल । रज्जब गाहक जीवके । खैंचे द्वै दिशि चाल ॥ २० ॥

साखी ४६५६ अंग १४६ ॥

विद्या माहात्म्य का अंग ।

विद्या करि याया मिलै । विद्याब्रह्म गियान ॥ रज्जब विद्या बसत है । सोवहु विद्या थान ॥ १ ॥ विद्या मोहै विदुजनहुं । विद्या बसि सुलतान ॥ रज्जब विद्या परम धन । सीखहु चतुर सुजान ।

॥ २ ॥ चौदह विद्या में चलै। आदम की औलाद ॥ जन रज्जब विद्या बिनां। पशू जनम सो वादि ॥ ३ ॥ बुद्धि विद्या बलवंत जग। पूजा ताकी मानि ॥ रज्जब गजैं गोयगुण। सब इल आदर जानि ॥ ४ ॥ गुण गणेश कूं मानिये। गुण पूजा गुरु पीर ॥ रज्जब विद्याधर बडे। विद्या बावन बीर ॥ ५ ॥ विद्या शारद बंदिये। गुण लुकमान हकीम ॥ रज्जब पावै मान महि। विद्या में जु फहीम ॥ ६ ॥ विद्या संगी जीवकी। सदा रहै सो साथि ॥ जन रज्जब परधानं परि। लिए खजाना हाथि ॥ ७ ॥ विद्या में हूं नर सबै। विद्या में मंत्रादि ॥ विद्या बसि परवरति है। विद्या हरि आराधि ॥ ८ ॥ विद्या बंधू जीवकी। अविद्या कूं काल ॥ धरे अधर बिच देखिये। प्राणहुंकी प्रतिपाल॥९॥ विद्या लघु दीरघ सबै। विद्या पावै ठौर ॥ रज्जब विद्या जीवकूं। करै और से और ॥ १० ॥ नर निगलैं निरमोल नग। त्यूं लें विद्या माहिं ॥ रज्जब आनंद उगल तूं। दुःख दारिद्र सब जाहिं ॥ ११ ॥ विद्याकरि वेत्ता भये। विद्या करि नागर निपुन॥ याते विद्या सीखिये। रज्जब विद्या लीन ॥ १२ ॥ विद्या जीवै जीव लग। सुवौ मरैसो नांहिं ॥ रज्जब रहती देखिये। गुरु गति मति शिष नांहिं ॥ १३ ॥ विद्यौं परि विद्या भजन। काजकरै परलोक॥ और जगतके कामकी। रज्जब पावै लोक॥ १४ ॥ विद्या चौदह रतनहै। बपु सु वारि निधि मांहिं ॥ कोई एक काढै कमठ व्है। नहीं तनिक से नांहिं ॥ १५ ॥ कहै सुणै बुझै बचन। विद्या दे बरदान॥ रज्जब तीन्यूं तनि नहीं। तौ क्यूं परसै गुरु ज्ञान ॥ १६ ॥

सर्व ठौर सावधान का अंग।

मोटे छोटे जीव सब। प्रकट गुपत कलि मांहिं ॥ जन रज्जब

जगदीश सों। कोई छाना नांहिं ॥१॥ पराप संती प्रगट बिन। गोविंद गोपि सु नांहिं ॥ यहु जाणों जाणों नहीं। वहि सों छाना नांहिं ॥ २ ॥ ब्रह्मण्ड पिण्ड के जीवजे। श्रुनिर साहिब मांहिं ॥ नमो नृपति परि रज्जबा। काहू भूलै नांहिं ॥ ३ ॥ सब ठाहर चेतन्न है। रज्जब रमता राम ॥ इस समझै का फल इहै। बुरा न कीजै काम ॥ ४ ॥

अंग १४८।

अकलि चेतन का अंग।

अकलि अखंडित माल है ॥ बहु विद्या वित मांहिं ॥ सदा सु धन आतमकनैं। कबहूं बिछुटै नांहिं ॥ १ ॥ रज्जब गैंबी माल कूं। ज्ञान खानि सम जान ॥ बहुत खरचै खाय बहु। कदे न होई हानि ॥ २ ॥ अकलि कहै गुरु पीर है। अकलि अलह पहिचान ॥ रज्जब अकलि अभंग उर। अकलि अमोलक जान ॥ ॥ ३ ॥ अकलि इनायत अकलि की। जासों व्है गुरु पीर ॥ बपु बैरागर खानि तें। खणि काढै हरि हीर ॥ ४ ॥ अकलि इनायत अकलिकी। आतमकन आवै ॥ सु काया माया मांझ मैं। दिल दुखन न पावै ॥ ५ ॥ धरे अधर बिचि अजब है। अकलि अमोलक अंग। रज्जब राहिये रहम सों अविगति देय उमंग ॥ ६ ॥ रज्जब इस आकार में। अकलि अगम आधार ॥ जहि बिलंब वेत्ता चढै। सिरि सारै संसार॥७॥आदम मां है अकलि का। अजब अनूपम ठाठ। गहण सहित चौदह विद्या। ल है सबनि की बाट ॥८॥ सब अंगहुं आगै खडी। अकलि अकलि पहिचान ॥ रज्जब खबरि अगम की। आतम कूं दे आणि ॥ ९ ॥ अकलि विहूंण। अकल कूं। यहां पिछाणें कौन ॥ रज्जब बुद्धि विचार बिन। रीते आतम भौन ॥ १० ॥ रज्जब आतम राम बिचि दीसै अकलि

दलाल ॥ कूंची कुमति कपाटकी। खोलै ताला साल॥११॥ अकिल अकलि मां हैं धरया। सब विद्या अरु वेद ॥ परापरी पर ब्रह्मका। भूत सु पावै भेद ॥ १२ ॥ अकलि सु अगनि अनंत सुख। सब दिशि करहिं प्रकाश ॥ रज्जब अज्जब तत्व ये। चरहिं असंका घाश ॥ १३ ॥ यँक अकलि के उदरमें। अकल सुकल सब साज ॥ रज्जब तामें पाइये। सिरि साहित सिरताज ॥१४ ॥ रज्जब बोदरि अकलि कै। अरभक वो ॐकार ॥ चतुर वेद बालक सु लघु। ता पीछै संसार ॥ १५ ॥ सहंस नाम सुत अकलि के। सो सुमिरैं संसार ॥ जन रज्जब हैरान है। मति मधि उदर अपार॥१६॥प्राण पुरुष अबला अकलि। मिलि सुत जाया नांव लघु लरिकां माता बची। परि टीका व्है किस ठांव ॥ राग रूप अरु शब्द सुख। पावै कोई एक ॥ रज्जब बुद्धि विलासका। घट घट नहीं विवेक ॥ १८ ॥ चेतनि चूरै सकल गुण। तन मन राखै हाथ। रज्जब काम उभै करै। ताजि पृथ्वी पति साथ ॥१९॥ सूक्षम स्थूल न समझई। आतम अंध अज्ञान ॥ ज्ञान नैंन देखै सबै। जगपति सहित जहान ॥ २० ॥ पूरे पूरे पावहीं। प्राण पियूष प्रकाश ॥ त्यूं रज्जब रस दृष्टि के। दानि दुरस निज दास ॥ २१ ॥ अकलि उकति अनभै उपजि। मति बुद्धि ज्ञान विचार ॥ समझि बूझि सुरति जाणिबा ॥ रज्जब राखणहार ॥२२

साखी ४६९८ अंग १४९

अज्ञान अचेत का अंग।

अचेतन जानें आपकूं। परहि पिछाणें नांहिं ॥ रज्जब रुचै न रामकूं। जीवत मूवौ नांहिं ॥ १ ॥ सोधी बिन सूते सबै। मेलि सुनिरनें नैंन ॥ रज्जब राम न सूझई। जीवन मूये ऐंन ॥ २ ॥ अचेत आतमा अंध गति। तन मन तन भरपूर ॥ रज्जब राम न

सूझई। बाहिर भीतरसूर॥३॥रज्जब अंड अचेत गति। कहुआरंभ क्या होय। भजन भोग दोन्यूं नहीं॥ देखो दृष्टि सु जोय॥४॥ रज्जब अंध अचेत मन। मूढा मुग्ध गँवार॥ शठ सूता समझै नहीं। कहै न सिरजन हार॥५॥ उर घर च्यारों वर्ण के। रज्जब रजनी मांहिं। ज्ञान दीप बिन तिमिर में। सदनों सूझै नांहिं। ॥६॥ काया खानि षद्द दर्श परि। अचेत अँधेरा मांहिं॥ रज्जब लै दीपक बिना। उभै उदीपै नांहिं॥७॥ रज्जब सूते रैनि के। प्राण उठहिं प्रभात॥नर निद्रा हरिसों विमुख। सो जागै दिवस न रात॥८॥ झूठ साचसा देखिये। ज्ञान नैंन जब नांहिं। ज्यूं वानैं दीसै विघन गति। रज्जब रजनी मांहिं॥९॥ रज्जब भोलि भयान की। तन त्रिभुवन तम पूरि। छलबल पकडै सो तहां। बहु विधि विघन हजूरि॥१०॥ रज्जब रैनि अचेत मति। विषै बीज विस्तार॥ पाया सोवत सुपनें में। अकल असंका पार॥११॥ नर नारी हिरदै रहै। नारी नरहु मँझार॥ पैठि कामनां कांवरू। मुग्ध ये न मंत्र धार॥१२॥ रज्जब रैनि अचेतमें। उडगन इन्द्री तेज॥ तिमिर नींद करि पुष्टि व्है। दूहूँ हैरान हिये हेज॥१३॥ इन्द्री घूघू नेत। अचेत रैनि करि पोखिये॥ सही उभै अंग प्रेत। रज्जब रजनी मोखिये॥१४॥ चोर जार बटपार विधू। बन वैरी त्रिय हाथ॥ रज्जब रजनी ज्ञान बिन। बलिवंत इन्द्री नाथ॥१५॥

अरिल्ल।

अस्थल अशुद्ध अचेत। प्रेतपर वार तन। अरि इन्द्री अघ ठौर। पतित मती हीनमन॥ भोलि भूल चक चूक। विघन विस्तारर॥ परिहां रज्जब रैनि अचेत पगै पग माररे॥१६॥ सूनेभवन अचेत उर। भूत बसैंके सांण। जन रज्जब तजि जीवकूं। जीवन ज्ञगहि

न जान ॥ १७ ॥ रज्जब काया कावरू । आया जीव अचेत ॥ मनसा नारी मंत्रमें । प्राण पशु करि लेत ।१८॥ तन ठग मन ठग स्वाद ठग । ठग पंचों प्रसिद्ध ॥ रज्जब भोली आतमा । कैसा राखै कहि विधि॥ १९॥पिंड सु पिसणूं सों भरया । वैर्यों सों ब्रह्मण्ड॥ रज्जब रजमां क्यों रहै । खल छाये नौखंड ॥ २० ॥ देव गुरु सब दिन कहै । मन माया सों तोडि । रज्जब निद्रा निमख में । सहज गई सो जोडि ॥ २१ ॥ रज्जब जोगी भोगी होत है । नर निद्रा में सोय ॥ मींच नींच दीरघ खडी । तहि धकै क्या होय ॥ २२ ॥ रज्जब येक अचेत अंग ॥ अरि अनंत उन मान ॥ चेतनि सज्जन से निजीव । केतक कहूं बखान ॥ २३ ॥ आतम उरहुं अचेत अधारा । चेतनि मनहुं चिराग । रज्जब उसमें कछू न सूझै । तहि सब सूझण लाग ॥ २४ ॥

साखी ४७२१ अंग १५०

दरिद्रता का अंग ।

अबला बली सु आलकस । सब बैरिन सिरताज ॥ रज्जब तन मन सकल कै । करै न चिंता राज ॥१॥ शब्द शरीर जीव मधि । आलस है सुलतान ॥ रज्जब रोके सुर भवन । वाइक बपु अरु प्राण ॥ २ ॥ रज्जब चंपे दरिद्र के । किया न जाई काम ॥ अल जुदी अति आलसूं । कहै कौन विधि राम ॥ ३ ॥ दरिद्र मांहि दोन्यूं गई । माया ब्रह्म सहेत । स्वारथ परमारथ नहीं । खोया काया खेत ॥ ४ ॥ गुरु गोविंद गृह द्वारके । आलस खोये सुख । रज्जब देखे प्राणियें ॥ तब दरिद्र का मुख ॥ ५ ॥ रज्जब प्रभू के पंथ में । नहीं दरिद्र का खोज ॥ सेवा सुमिरण देखतूं । वैठिर मांडहिं रोज ॥ ६ ॥ काम सु मरदहु मरदका । काहलकन क्यूं होय ॥ देखि दरिद्री आलसूं । रज्जब रहे सु रोय ॥ ७ ॥ पांचों

तत्व मयंक सौं। अन्नहि काज मजूर। रज्जब सो दारिद्र में। आवै क्यूं सहजूर ॥८॥ उदर बिना आरंभकरें। देखो अवनि अकाश ॥ तौ रज्जब सुता सु क्यों। पेट लिएरे पास ॥ ९ ॥

मन का अंग।

मन हसती मैला भया। आप बाहि सिर धूरि ॥ रज्जब रज क्यूं ऊतरै। हरिसागर जल दूरि ॥ १ ॥ मन माया त्यागै गहै। निपट छूटि नहिं जाय ॥ जन रज्जब पशुकी विरंति। उगालि उगालि अरु खाय ॥ २ ॥ मन मरकट मूंकै नहीं। माया मूंडी मांहिं ॥ रज्जब केते उठि गये। इनयहुं त्यागी नांहिं ॥ ३ ॥ जै मनकूं माया मिलै। तौ मन चढै अकाश ॥ रज्जब माया चलि गई। तब दुर्लभ व्है दास ॥ ४ ॥ जब मनकूं माया मिलै तन मन आंधा होय। रज्जब माया चलि गई। सब कछु देखै सोय ॥ ५ ॥ जब मनकूं माया मिलै। तब मनका छा रंग। रज्जब माया चलि गई। सहजि भये रंग भंग ॥ ६ ॥ जब मनकूं माया मिलै। तब बहुत नचावै नाच ॥ रज्जब माया चलि गई। तब निश्चल बैठे पांच॥७॥ जब मनकूं माया मिलै। तब जीव चाहै भोग॥रज्जब माया चलि गई। तब जीव उपज्या जोग ॥८॥ चढतों मन शशि चांदणा। उतरत उभै अंधार ॥ आदि अंत्य अवलोकिकर। रज्जब किया विचार ॥ ९ ॥ मन मोत्या घर घर फिरै। अस्थिर बैठे नांहिं ॥ रज्जब रामहिं क्यों मिलै। कूकरकी मति मांहिं ॥ १० ॥ गदहा चंदन चरचिये। ख्याल खोलि सो नांहिं ॥ रज्जब छूटयूं छारमें। यहु सुभाव मन मांहिं ॥ ११ ॥ कूकर काक करंक परि। पाक पूरि तजि जाहिं ॥ त्यूं रज्जब मनकी विरति। तजि अमृत विष खांहिं ॥ १२ ॥ रज्जब परहरि रामरस। मन भुगतै निज काम ॥ सूवर सुधहिं क्या करै। विष्टा में विश्राम ॥ १३ ॥ मन अमली

इस मांडका। उन मन कनें न जाय॥रज्जब तजि जीवन सुगति॥ मरणैं रह्या समाय ॥ १४ ॥ रज्जब गृह वैराग मधि। मन में खरा न खोट॥ मूल चलै ज्यूं और दिशि। करै और दिशि चोट। ॥ १५ ॥ रज्जब मनवां भूत है। सदा सु उलटे पांव ॥ देखा गृह वैराग में। खेलै अपणां डाव ॥ १६ ॥ मन न होय भगवंत का। परमोधत गई आव॥ रज्जब रामति रमणको। ले ले आवै भाव॥ ॥ १७ ॥ मन बैरागी सिर धरया। नांव निरंजन बोझ ॥ सो रज्जब डारयों खुशी। इसा जंगली रोझ॥ १८ ॥ मनके छिप तनकूप गति। जब तब करै विनाश॥ रज्जब येकहि टाहि करि॥ दूजे में प्रकाश॥ १९ ॥ सकल विकारों में खुशी। यहु मनकी रस रीति॥ जन रज्जब कहिये सुवा। हरि सों करै न प्रीति॥२०॥ बहुत ज्ञान गुण सीख ले। जीव न जाने साध॥ रज्जब रहै न उस मतै। बहुरि करै अपराध॥ २१॥ यहु मन चंचल केरटा। ठीक ठाहर कोई नांहिं॥ रज्जब बात भली कहै। बात बुराई मांहिं॥ २२ ॥ मा बेटी मनके नहीं। बाई बहन न कोय। जन रज्जब पशुकी बिरति। सब करि देखै जोय॥ २३ ॥ आंख्यूं ऐन अनंग मध। मुँहडै बाई मात॥ मां है मिहरी करि गया। रज्जब मनकी घात॥ २४ ॥ काया कामी कुटिल मति॥ अंगि अंगि ऐन अनंग। रज्जब बात खरी कहै। मन में खोटा नंग॥ ॥ २५ ॥ यहु मन ऐसा सूम है। मुंहडै कह्या न जाय॥ रज्जब मारै जीवकूं। बहु विधि घात बणाय॥ २६ ॥ रज्जब मनके पेचकूं। लखै न मुनिवर प्राण॥ तौ क्या जाणें जीव जड। सदा अचेत अयाण॥ २७॥ जोड अकोड देय मन छूटै। सुमिरण करै न संकट आय॥महंत मतेको भूलिनमानैं। कविकथिणूं जीवहि ठगि जाय॥२८॥ मन सैतान सूताभला। जाग्यूं जगमें जाय।

रज्जब बीधे व्याधिमें। सुमिरण करैन आय ॥ २९ ॥ रज्जब दुख-
दाई सूता भला। सूतै सों भली मींच ॥ जो जाग्यां जुंहर करै।
दईन जगाई नींच ॥ ३० ॥ ब्रह्म बिछोहन व्यापई। भूलाभूंदू
मींच ॥ रज्जब राता रामसों। कहत सुनत मननींच ॥ ३१ ॥
यहु मनबूंटा बांसका। माया मेघ समान ॥ लघु दीरघ व्है गरज
सुणि। जन रज्जब हैरान ॥ ३२ ॥ यहु मन मृतक देखि कारि।
धीजिनकी जैनेह ॥ रज्जब जीवै पलकमें। ज्यूं मींडक जल मेह
॥ ३३ ॥ सुरमारि जीवत बेरक्या। दामनि मनसा मन्न।
धर धीरजमें राखिये। जन रज्जब सो धन्न ॥ ३४ ॥
खंड खंडकारि काटिये। मनकनसों डर नांहिं ॥ जन रज्जब जड-
जीवती। अमरन डरपै मांहिं ॥ ३५ ॥ रज्जब रखैं कौन बिधि।
मनमें मौज अपार ॥ एक मौजजै मारिये। तौ उरि उठैं हजार
॥ ३६ ॥ जलतरंगतट पौन थिर। रूतेगत आभै अंत ॥ रज्जब
इनके ओरये। मनमै मौज अनंत ॥ ३७ ॥ यहुमन रावण मंड-
ली। मनकम विश्वावीस ॥ रज्जब काटै एक सिर। तौ निपजैं
दशशीश ॥ ३८ ॥ मनकेशरिके पंचमुख। गहि बंध्या मुख
एक॥चारयों मुखचहुं दिशि भखें। रज्जब समझि बिवेक॥३९॥
भूख मारि माराहिं मनहिं। विरह अगनिदे दाग ॥ जाल्यूं पीछै
जीवता। भूत होय जीवजाग ॥ ४० ॥ मनुवांनर नगमाया
मांदी। मुक्त किये मिल जांहीं ॥ जीवज्रुदे कहि विधि करैं।
रज्जब संसामांहीं ॥ ४१ ॥ तनमें मन चंचल सदा। ज्यूं मोती
मधि थाल॥जन रज्जब क्यूं राखिये। यहु अंतर गति साल॥४२॥
जन रज्जब मनबिज्जुली। चमकै दहदिशि जाय ॥ यहु चंचल
कैसें रहै। क्यूंही गह्यान जाय.॥४३॥ मन धनकी चंचल बिरति।
मांड्या रहैन ठौर ॥ जन रज्जब हैरान है। देखि दशोंदिशि दौर

॥४४॥ भांड मथाणीं काढली। मन समुद्रमें जोय॥ जन रज्जब चंचल अजों। पेच पड्या है कोय॥ ४५ ॥ मनमनसा जोडा चपल। राघ्या रहैन ठौर॥बांधे बंधैसु ब्रह्मके। आन उपावन और॥४६॥काष्टकारि पापक प्रबल। सोजल जुगति बुझान॥रज्जब जल मैंजालि उठै। मनवां बीज समान ॥ ४७ ॥ नाग दवनि मृग सिंह मन। इनके बंकन जाँहिं॥ रज्जब सांई साल सुध। सो क्यूं मांहिं समाहिं॥ ४८ ॥ जन रज्जब मन शून्यके। कठिन काठन गाभ॥ यामें इंद्रा अति विषम। वा माँहिंतें आभ॥४९॥ क्रोधल हरि मिलि क्रोधमन! काम लहरि मिलि काम॥ जन रज्जब मन लहरमें। राम लहरि मिलि राम॥ ५० ॥ यहुमन भांड भण्डार-में। राखै रंग अनेक ॥ रज्जब काढैसमैं सिरि। जुदी जुदी रंग रेख॥ ५१ ॥ रज्जब भलके भांड सुखि। ज्यूं अंग अतंत मन मांहिं। यहु विद्या उदर निमित्त ॥ आतम कारिज नांहिं॥ ॥ ५२ ॥ मन मांहें मँडाण सब। भावहि प्रगटै होय॥ रज्जब सून्य समानिकूं। बूझै बिरला कोय॥५३॥प्यंड ब्रह्मंड असंख्य मन।शून्य मई भण्डार॥ शिव शक्तिभासैतहां। मनमांधि उदर अपार॥५४॥ पिहर बाजी चित्राम चौरासी। मन बाजी गृह मांहि अभ्यासी॥ सुपिने निशा दिखावै षेल। जागै दिवस सुधरै सकेल॥ ५५ ॥ रज्जब रहैन ऐक रंग। मनमें मोटी आंट॥पल पलमै पलटै मतौ। जैसी विधि फिर कांट॥५६॥ जन रज्जब मनजींगणां। चमकै अरु छिपि जाय। पलमें ज्ञाता पलमतै॥ जै देख्या निर ताय॥ ॥ ५७ ॥ मनमयंककी येक गति। बधै घटै छिपि जाय। जन रज्जब है रान है ॥ सदा सुयहु गति मांहिं॥ ५८ ॥ मन मयंक कीयेकगति। सदा कलंकी दोय॥ ऐक उठै इष्टों उठयूं। और उपायन कोय॥ ५९ ॥ रज्जब सस धातुके सकल मन। गाडे

गोविंद गोय ॥ कुमति काठ खाये सुषद्र। सोने सपतन सोय ॥ ॥ ६० ॥ रज्जब काचा चपल मन। बिचरै बारह बाट ॥ पाका प गरोपे रहै। भागे सकल उचाट ॥ ६१ ॥ यहु मन पेडबंबूलका। काचा कांटहु पूरि ॥ रज्जब पाका जाणिये। कुलि कांटे जब दूरि॥ ॥ ६२॥ यहुमन बांका जब लगै। तबलग ज्ञानन कोय ॥ रज्जब पोसतहुपहम। बिगसत सूधा होय॥६३॥रज्जब मन मुकता काचे गलैं। संसार समंदजल दोष ॥ निपज्यूं निर्भय सोतहां ॥ सतगुरु सीखसु पोख ॥ ६४ ॥ चौरासी चौपड फिरैं। सुरति सारि सुबि शेष॥रज्जब रतीन सरकही। उभैसु पाके पेख ॥६५ ॥ थकित होत पाका सुमन। ज्यूं कण हांडी माँहिं ॥ काचा कूदै ऊछलै। निह चल बैठै नांहिं ॥ ६६ ॥ पाका पिंडसु पोरसा। काची काया कीच ॥ रज्जब कही विचारि करि। यहु अंतर यहु बीच ॥६७ ॥ काचा तुरसू पुखत है मींठा। आतम बोध अंब गति दीठा ॥ ॥ ६८ ॥ मन पगंग तन तोय गति। तापरि करहि जुमघ ॥ रज्जब अस असवार है। इल ऊपरिसु अनघ ॥ ६९ ॥ जन रज्जब मनकै तलै। चौरासी लख जीव ॥ इन ऊपरि असवार व्है। सो कोई पावै पीव ॥ ७० ॥ जिनि प्रांणीं मनबस किया। ताकै बसि सबमांड ॥ जन रज्जब मनबसि विनां। दोखि दुनीं व्है भांड ॥ ॥ ७१ ॥रज्जब राक्षस मनका। चारा चारयूं खानि ॥ हंस बचै कोई हेतुरज। हुवा अमर सो जानि ॥ ७२ ॥ मनबटा चौगा-नका। जाकूं दह दिशि चोट ॥ जन रज्जब जोरयूं टलै। हुइ भये हरि ओट ॥ ७३ ॥ जन रज्जब रन रोझ मन। गहिला ह्यां-गृहभार॥सो लूटैं सा पुसष बिचि। तौ ताकैं मंगल चार ॥ ७४ ॥ मनफूटै तन फूटई। मनसा रतन सार ॥ मनसा बाचा कर्मना। तोमें फेरन सार ॥ ७५ ॥

साखी ४८०६ अंग १५२।

सूक्षम जन्मका अंग।

रज्जब मनमें मोज उठि । मनकी काया होय ॥ यूं शरीर पल पल धरै । बूझै बिरला कोय ॥१॥ कायामे काया धरै । मन सूक्षम अस्थूल ॥ रज्जब यहु जामण मरण । चौरासीका मूल ॥ २ ॥ प्राण अगनि तन काष्ट मिलि । प्रगटै धूवां मन्न ॥ जन रज्जब इस जनमकूं । जाणे कोई ऐक जन्न ॥ ३ ॥ मन मनसा अरु कल्पना । काया कवलकी बास ॥ रज्जब पसरै दसों दिशि । देही गुण प्रकाश ॥ ४ ॥ स्वाद बाद अरु विषै रस । चौथे निद्रा नेह ॥ चौरासीके रमणकूं । जन रज्जब पग येह ॥ ५ ॥ चौरासी जामिण मरण । मनसु मनोरथ होय ॥ बीज बिना ऊगे नहीं । जानत है सब कोय ॥६॥ काया काष्ठ अगनि आतमां । प्रसत धूवां मन्न॥ रज्जब इस उत्पत्तिकूं । समझै साधू जन्न ॥ ७ ॥

साखी ४८१३ ।

बिषयका अंग।

गुणगण ग्रह गरजै सबै । जबग्रह आई नार ॥ जन रज्जब हार्यो जनम । हरि मेल्यो सिर मार ॥ १ ॥ सरिता सुसैसोचकी । ग्रह सागरमें पूरि॥ जन रज्जब बूडा तहां । कहां होय दुःख दूरि॥ ॥ २ ॥ सुख भागै दुःख दूरि व्है । भाव भगतिकी हानि ॥ जन रज्जब इस जगतमें । दारा दोजक जांनि ॥ ३ ॥ सुंदरि सिलतलि हाथ नर । क्यू कीर निकसै दसत ॥ गौरी गिरकर कंथपर । तौ कहिये ग्रह सत ॥ ४ ॥ जन्म भूमि बाजै नहीं । तबलग आवै जाय ॥ रज्जब विषिया बारिमें । फिरि फिरि गोते खाय॥

॥ ५ ॥ ब्रह्मंड पिंड गति ऐक है। कामल हारि तप होय ॥ रज्जब नखसख बालि उठै। बरसण लागै सोय ॥ ६ ॥ रज्जब विषै बिलोकतें। बपु इन्द्री प्रगास ॥ काया कुंभ चीकट चुवाहिं। सेज हेज तेप त्रास ॥ ७ ॥ संगि सुहागा सुन्दरी। नर कंचन गलि जाय ॥ रज्जब रतीन ऊबरै। पावक प्रीति समाय ॥ ८ ॥ प्राण पुरुषकी सुरति जड। काया कीजड काम ॥ रज्जब करवत कामनी। बिहरै दोन्यूं ठाम ॥ ९ ॥ सुंदरी संग संकट सदा। दिन दिन दीरघ दुःख ॥ जन रज्जब नारी निकट। कहो किन पाया सुख ॥ १० ॥ चाकी चरखा घसि गये। भ्रमि भ्रमि भामिनी हाथ ॥ तौ रज्जब क्यूं होंहिंगे। नर निहचल तिन साथ ॥ ११ ॥ कुलि काया कागद भई। विषै रूप सब बारि ॥ पिंड पुस्तक क्यूं बोरिये। रज्जब नैन निहारि ॥ १२ ॥ पुरुष पचन नारी भुगति। सुदरि सुतहि पिलाय ॥ रज्जष जीव जाणें नहीं। काल तिहूंको खाय ॥ ॥ १३ ॥ रज्जब मोडे लागे मन्नकूं। बहैसु बीरज आंव ॥ खोडि खाट ज्यूं काटदी। रमांठी करा ठांम ॥ १४ ॥ इन्द्री अरिये घाय। सूजै दारा दुःख करि ॥ रज्जब रुधिर रंखाय। निकसै बीरज पीव झरि ॥ १५ ॥ मीच मार सूझै सझै। तीजै दिनबे हाल ॥ रज्जब रामां दरशतें। सोगति व्है तत्काल ॥ १६ ॥

अरिल।

नरनारि चढि चित्त बहुत दुःख पावहीं। सूजै सुध शरीर तपाति तन पावहीं ॥ चोट विनां इस चोटसु भीतरि पावकई ॥ परिहां रज्जब राधिझराहिं बहतको राखई ॥ १७ ॥ सप्त धातु धंधाह। धामनि धंमंगर रूप धरि॥तत्व गहै कीर गाह। काया छाटै कीट करि ॥ १८ ॥ अबला सूके अस्थि सम। मनशठ सुनहां सुख।

रज्जब रसनां रुधिर रुचि॥ फोडि आपणां मुख॥१९॥बिषका अमृत नाम धरि । पीवहिं हित चित लाय ॥ यहिरसरसियारस्स तहीं । रसिकरसातलके जाय ॥ २० ॥ ऐक विषैमें सब विषै । पडै जीवमें आय ॥ रज्जब यहि रस कारस्या । चौरासी में जाय ॥ ॥ २१ ॥ सुंदरि सब सूली चढी । पुरुष पडे सब कूप ॥ जन रज्जब जुगि जुगल दुःख । ऐकल आनंद रूप ॥ २२ ॥ सुन्दरि तरुसें बरसहीं । नौसत पहुप शरीर॥ रज्जब फल बरकति रहति। तहां फूले मनकीर ॥ २३ ॥ जन रज्जब युवती जहर । पागी सकल शृंगार ॥ आरोगहि अज्ञान नर । सूझें मींचन हार ॥ २४॥ जन रज्जब युवती जहर । विष वामा औतार ॥ मूरख मन खैवै हिले । तिनहि मरत क्या बार ॥२५॥ दारा द्रै दूखै सही । तिनहि मरत क्या बार ॥ रज्जब त्यूं बूडै तहां । सु क्यूही निकसै पार ॥ २६ ॥ सुत वित काढणकों बडे । सुन्दरि सैल सुखांनि ॥ रज्जब तेतानिताळि द्बे । बहुरिन निकसै आनि ॥ २७ ॥ रज्जब चिंता राम बिन । साध कहै सो नींद ॥ सकल चिंत सुन्दरि लगी । सुनिवयरके बींद ॥ २८ ॥ पैठि कामनां कामरू । चिंताडायण लेय ॥ रज्जब प्राणी पशु व्है । रिण रैणीं भरि देय ॥ ॥ २९ ॥ मनमधु कर मिहरीकमल । बँधे बांसकै ख्याल॥ रज्जब तामें बल इता । जु फोडे मांडमयाळ ॥ ३० ॥ कलित केतकी मांहिं मिल । मनमधु कर व्है नाश ॥ रज्जब सवि । सहै सही । मरैविषैलगिबास ॥ ३१ ॥ ज्यूं छाया नरनीं बकी । भोजन विष होजाय॥त्यूं रज्जब नारी निकट । बिन परसे कडवाय ॥३२॥ नारी निगलै नैंन मधी । बयर बचनों खाय॥ रज्जब पीवण सर्प ज्यूं । बिन परसें पी जाय ॥ ३३ ॥ नर सुनीं बनारीकी छाया । भोजन भाव । नराखि॥मींठा कडवा होयगा ।

सब संतनिकी साखि ॥ ३४ ॥ विषै रहति परि बंदिमें । नरमा दानग अंग ॥ तौ मुकते नर नारि क्यूं । मुकल सगाई संग ॥ ॥ ३५ ॥ निराकार व्है नीकसै । पुनिसो होय अकार ॥ नरमादा लग निरख तैं । बिरला छूटणहार ॥ ३६ ॥ मनवां नर जामा या मांदी । मुकति कियै मिलि जाय ॥ जीव जुदे कहि विधि करे । रज्जब संसामांहिं ॥ ३७ ॥ अमर बेलि मनसा मरद । अंघ्रिप अबला अंग ॥ जन रज्जब जड बिनहरी । डरीसु यहि पर संग ॥ ३८ ॥ मृतकनर लोहामयी । नारी चंबक भाय ॥ रज्जब झरिये निकट घट । मूये लेय जिलाय ॥ ३९ ॥ सूता मूवों माँहिं है । परि सुपिनै सुंदरि खाय ॥ तौ रज्जब जागत जीवता । तिन आगे क्यों जाय ॥ ४० ॥ मद पीवत माचै मनिष । सुंदरि सुणि मतवालि ॥ यूं रज्जब माता जगत । हरिदिशि सकै न चालि ॥ ४१ ॥ रज्जब हेमहुताशन हसत हल । वारि जीज विष-नाल ॥ ग्रीकरवत मरिबाभला । तजि कामनीका ख्याल॥४२॥ संग्रामसिंह सूली सहित । चढि गिरडी भयलेह ॥ भूख भाकसी पैठि नर । रज्जबा करीन ग्रेह॥४३॥नारी गिरवर नीरके। तहां नाद बजाय॥जोगी राखैं जीवकूं । तौ सुखसुनि समझाय॥४४॥ जिनि कसण्यूं काया पडै । सो सब थोडी जानि ॥ रज्जब रामा मिलि मुवो । उभैसु रतिकी हानि ॥ ४५ ॥ संकट सुलप शरीर लग । दुःखी नहीं यहि दंदि ॥ रज्जब नरनारी मिलै । सदा सुरति विषबंदि ॥ ४६ ॥ माता सब बावों बंधी । बाबा मातहुं मांहिं ॥ जन रज्जब जगयूं जड्या । कोई छूटै नांहिं ॥ ४७ ॥ रज्जब जगि जोडेजडे । चौरासी लखजंत ॥ एकाएकी एकसूं । सो कोई विर-ला संत ॥४८॥ विषै बारकस अतिसुदृढ । बांधी च्यारूं खानि॥ रज्जब यहि ठाहर मुक्त । कोई विरला गुरज्ञानि ॥ ४८ ॥ विषय

विमूचानितीन हैं। नर देखो निरताय ॥ तनछीजैततही तजै। मन सुमिरणसों जाय ॥ ५० ॥ दुरमति दारू घर भरै। अबला पैठी आगि॥जन रज्जब जगयूं जल्या। तूं दोऊदै त्यागि ॥५१॥ विषैबंध बसुधा सुदिढ। जीवजड्याता मांहिं ॥ विलबंधण छूटै नहीं। जे प्रभु छोडहिं नांहिं ॥ ५२ ॥ रज्जब जीव जोडै बंधे। गांठी दई गुरु खोल। सुरनर पेचन पावई। सुक्यूं निकसै जिव खोलि ॥ ५३ ॥ नाद विंदकी गांठिकूं। दईसु खोलण हार॥ बांध्यूं बांध्याना खुलै। मिल्यूंसु कोई हजार ॥ ५४ ॥ मन जंग मतन धोममें। चांदी चाहिसहेत॥तहां शक्ति संगसुधासंगि। छानि छिद्र व्है देत ॥ ५५ ॥ नौ घाटयूं महिमारि यहि। नरनारी निरताय ॥ जीया चाहै जीवजो। सो इनकै निकटन जाय॥५६॥ अणखायूं खाई गई। खायूं खाये जाय ॥ रज्जब रामा अरुचि रुचि। फल देखो निरताय ॥ ५७ ॥ माया सकल विषरूप है। आंख्यूं पाये जांहिं ॥ जन रज्जब जाणैं नजी। मिले मींचकूं मांहिं ॥ ५८ ॥ मानि यहु माया खंहिहम। माया हमकूं खाय ॥ रज्जब रिधि उलटी कला। सिधौं लखी न जाय ॥ ५९ ॥ बाम बिचारै विष हती। शीलसीस गिरजाय ॥ यथा चक्वै चूक धरि। चक्र सुलागै आय ॥ ६० ॥ चाखी चितहिन बिसरै। अण चाखीकी चाह ॥ जन रज्जब दोन्यूं असह। दिलदिल्य नारीनाह ॥६१॥ रज्जब भागे भोगतजि। जोग जुगतिमें आय ॥ परबिलस्यांमन हिन बीसरै। तबलग नरक समाय ॥ ६२ ॥ तन त्यागी लागी मनहिं। तबलग मिहरी मांहिं ॥ रज्जब रोहे संगि यहि। छोडी छूटै नांहिं ॥ ६३ ॥ तन तें विषिया त्यागिये। परमन त्यागै नहिं भींच ॥ तोलौं कछु छूटै नहीं। जौलौं विष सुखचीत ॥ ६४ ॥ छूटी धनपति ध्यानन छूटा। है मिहरीमन मांहिं ॥ रहतों रहतीन

दीसै रज्जब । निरखो जतमत मांहिं ॥ ६५ ॥ विषै बंदि सब आतमां। नरनारी निहकाम ॥ रज्जब मुक्ता ठौर यहि। मुक्ति किये सो राम ॥ ६६ ॥ मनसा नारी नित निकट। मन नरकूं सो खाय ॥ रज्जब छूटै ऐकको। सूक्ष्म विषै बलाय ॥ ६७ ॥ वीर जतैं बालक उदै। करम धरम तिन होय ॥ तिन साझौं साझा स बल। नहीं तनांहीं कोय ॥ ६८ ॥ कूकरकागोंकाछदढ। धनि रासभरस रीति ॥ रज्जब धृग् धृक मानवी। बहुत विषै विप रीति ॥ ६९ ॥ स्वान सिंह रासभ है काग। पशु उपदेश मानि षनहिं लाग ॥ बरस विषै दीसै ऋतु दाना। यहु नर नीच रहै विष साना ॥ ७० ॥ कागरिषीसुररासभदेव। स्वान जती तीन्यूं ऐक टेव ॥ रुतिकै दानि निशाचर निरजर। रज्जब रहाति पूजि पृथ्वीपर ॥७१॥ कूकर कछा कूंण ढै। मनिष मूरख हेर ॥ वरस दिवस ऊपरि विषै। तहां रहया मुंह फेरि ॥ ७२ ॥ मांस मसूडू मांहिला। नाहर चिडा सुखारि ॥ मासा हंस कहता मुग्ध-क्यूं मुख मांहै जाय ॥ ७३ ॥ अबला आदि उपाधि है। भूलै भागसु होय ॥ जन रज्जब जतकी जुगति। बूझै बिरला कोय ॥ ७४ ॥

साखी ४८८७ अंग १५४

कामका अंग।

कामहिं देखतही भये। ज्ञान ध्यान मति भंग ॥ रज्जब जन जोगै गयो। जागै अपत अनंग॥१॥मदन बदन देखै नहीं। सुर नर सुंकसु नांहिं ॥ जन रज्जब रिपु रिंद है। मोटा बैरी मांहिं ॥ ॥ २ ॥ सिध साधक हारे सबै। सुरनर किये निमाम ॥ जन रज्जब जोधार गुण। कहया नमानें काम ॥३॥ काम काल गरजै

सदा। काया नगरी मांहिं ॥ जन रज्जब हारया जगत। सुरनर छूटै नांहिं ॥ ४ ॥ रज्जब रंचक काम रस। करे राम रस भंग ॥ यहु बैरी वैराग मधि। सो साथी है संग ॥ ५ ॥ अनंग दिशा अवलो कतै। आगि उठत उर मांहिं ॥ बपु बासण ताये बिनां। चोपड निकसै नांहिं ॥ ६ ॥ येकहि कूंदे कामके। जब्या जगत जगदीश ॥ रज्जब देई देव सब। उमा सहितसु ईश ॥ ७ ॥ महादेव मधिनां रह्या। मदन महाबलवंत ॥ रज्जब राखै कौन विधि। कीट कालि जुगिजंत ॥ ८ ॥ पारा शोधे कनक कामनी। देख्या राखिर कूवै ॥ जनरज्जब क्यूं रहैजीवता। ये लक्षण जहि मूवै ॥९॥ बैज ताथ सों बिरचि कीर। करै अनति अनंग॥ रज्जब धावै कूपतैं। पारा नारी संग ॥ १० ॥ काम राम रावण डसे। इंद्र आदि लेईश ॥ और कचरकीचक किये। रज्जब विश्वा बीस ॥ ११ ॥ अवला बली अनंग अरि। मारनकूं सुर भौंन ॥ रज्जब दलिये देवदल। आतम उबरै कौन ॥ १२ ॥ अबला बली अनंग अति। गोगंजन ओतार ॥ रज्जब रज बलनां रहया। हारे हद झूझार ॥ १३ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेशकै। मिहरयूं सेती मेल ॥ तौ रज्जब तेसीसमें। कौनतजै यहुखेल ॥ १४ ॥ भांमा मिलि भूले सबै। सुरनर नागसु भौन ॥ रज्जब अनंग असाधकूं। कहो सु साधै कौन ॥ १५ ॥ रज्जब मदन महंतकै। मथुरा मक्के मांहिं॥ ठाहर उभै अनंग बल। जतह रावहि नांहिं ॥ १६ ॥ कीचकरा वण इंद्रसे। भस्मासुरसु विचार ॥ जन रज्जब बीती बुरी। तकत पराई नारि ॥ १७ ॥ रज्जब मदन भुवंग गति। चितवनि चं पेखाय ॥ मनसा वाचा कर्मना। नरदेखो निरताय ॥ १८ ॥ श्रवण नैंन मुख नासिका। इन्द्री बहै अनंग ॥ रज्जब जाय सुजा तनमें। विन वाया प्रसंग ॥ १९ ॥ मदन मेन मधिनां रहया।

व्यौम बीज जल धार ॥ रज्जब अजर अनंगकूं । कौन सुजारन हार ॥ २० ॥ केशिकेशिमध कामकूं । सोनिकसै सब संधि ॥ रज्जब लहिये लहरिमे । वपु व्है जाय बिगंधि ॥ २१ ॥ मैन मांग तनमें इते । ब्यौरे समझि बिबेक ॥ अहुठ कोडि इकई उभै । जन रज्जब पुनि ऐक ॥ २२ ॥ उडहिहुबाताहि बात । इक आतम अरु अवनि अंश ॥ फिर आवहिं धरि धात । रज्जब ल्यावहिं बारि बंस ॥ २३ ॥ रज्जब करडा कालसों । कामछु काया माहिं ॥ वह मारैगा एकदिन । यहु अहनिशि छोडै नांहिं ॥ २४ ॥ अरडा सबल अनंगका । अैन अतीती मांहिं ॥ जन रज्जब वपु विघन बहु । यासम कोई नांहिं ॥ २५ ॥ काम कसाई काल है । पशु प्राणी सब पिंड ॥ जन रज्जब छलकी छुरी । बैरी करै विहंड ॥ ॥ २६ ॥ काम कसाई करम करि । बीधे तनमन प्राण ॥ रज्जब मारे सुर भवन । रोये चतुर सुजान ॥ २७ ॥ मदन महावत देह द्विपि । गृह सागर ले जाय ॥ तहां ग्राह गृहणी ग्रहैं । कौण छुडावै आय ॥ २८ ॥ काम दंड नौखंड परि । प्यंड बिहंडण हार ॥ जन रज्जब जोख्यूं घणीं । सदा कुसंगी लार ॥ २९ ॥ कामकाल कलि कोकलै । हाथी शिशनसमशेर ॥ रज्जब मारै सुवौंकों । छूटणकानहिं फेर ॥ ३० ॥ काम कमंध काटेकवढि । करै काम नां चेट ॥ रज्जब उबरै कौन विधि । जोनलैहैले चोट ॥ ३१ ॥ तनथाके मननाथके । वहै विषैकी बाट ॥ रज्जब भासी भूत गति । देख्या दैरन निराट ॥ ३२ ॥ रज्जब काया कयथ फल । खाये कुंजर काम ॥ निकस्यूं सेर देखिये । भीतरि रीति ठाम ॥ ॥ ३३ ॥ कायाकगरिपु काम घुण । उभैछु उपजैं मांहिं ॥ रज्जब रीता करिगये । उरमैंआटा नांहिं ॥ ३४ ॥ रज्जब खिसतैं बिंदके । नाद निपट घटि जाय ॥ अंग अंगबल भंग व्है । नर देखो

निरताय ॥ ३५ ॥ मदनमेरकूं पिबसतहिं । बपुब्रसुधा चक्र चाल ॥ ज्यूं रज्जब राजा पडयूं । प्रजा कौंण हवाल ॥ ३६ ॥ सकल मेदिनी मदन बस । रोकै घट घट प्राण ॥ जन रज्जब आडा अनंग । आगै लहैन जान ॥ ३७ ॥ सकल मेदिनी मदन बस । दहदिशि काम कपाट ॥ बंदी खानें बंदिकै । रज्जब लहैन बाट ॥ ॥ ३८ ॥ रज्जब मारे कामके । बिसरै आतम राम ॥ कौन प्राण पतिकूं मिलै । रोकिरहीबिचि बाम ॥ ३९ ॥ येकै सांकुल सुक्कलकी । चौरासीकेंबंध ॥ मनिषकूं माया मदन । पड्या दुबागा फंद ॥ ४० ॥ कामकामनाकेंबसि कलियुग । नर देखो निरताय ॥ रज्जब उभैसु आथयूं । आतम ब्रह्म समाय ॥ ४१ ॥ काम कामना कामरू । प्राण पलटण ठौर ॥ रज्जब अज्जब जायगह । करै औरतें और ॥ ४२ ॥ रज्जब शक्ति स्वरूपी सर्पणी । जग जातिगजाणि खाय ॥ इन आगै उबरै सोई । जु अगम अगोचर जाय ॥ ४३ ॥ आठप्रहर आडारहै । काम रामबिचि आय ॥ जन रज्जब कोई कोटिमैं । सुकल सिंह चढि जाय ॥ ४४ ॥ सुकल सिंहतन कूपमें । काटै कुशलन होय ॥ रज्जब मरहि सु धरम धर । पुनिन कीजे सोय ॥ ४५ ॥ राम काम भेले भजहिं । इन्द्रा दिकसु अनेक ॥ रज्जब कंदर्प दर्प दलि । हरि सुमिरैं सो ऐक ॥ ४६ ॥ रज्जब अनंग अतीत । जती युवती जगि जंग ॥ और लडाई लघु सबै । यहुदीरघ रणरंग ॥ ४७ ॥ मेनमदनसों युद्धनित । योगीश्वरकाकाम ॥ रज्जब इस मारेबिना । कहयान जावैं राम ॥ ४८ ॥ त्रिया चरित्र चितना लहै । लगैन पंचौं बान ॥ रज्जब रहता सिद्ध सो । योग योगेश्वर जान ॥ ४९ ॥ और लडाई लघु सबै । यहु दीरघ युद्धकाम ॥ रज्जब मारै मदनकूं । सो बलिवंत वरि

याम ॥ ५० ॥ काम लहर जब ऊपजैं। तब देही दो देय ॥ कोई बुझावैं जाय जलि। नाव नीरसों भेय ॥ ५१ ॥ आकर्षण अरु बसिकरण। उद्मादक द्रवसोख ॥ रज्जब लगैन मदनसर। सोजन नारी मोख ॥५२॥ रज्जब मारे मदनसर। नागे नारी,नाह ॥ चोट चोट लागै नहीं। जहितनि शीलसनाह ॥ ५३ ॥ मदन भुवंगम सबडसे। नारी अरु भरतार ॥ रज्जब रहसी येकको। जो राख्या करतार ॥ ५४ ॥ रज्जब सांकलसुकलकी। बांध्या सब संसार ॥ मनसा बाचा कर्मना। बिरला छूटणहार ॥ ५५ ॥ रज्जब सांकल सुकलकी। बांध्या जंगमजंत ॥ थावर थिर धरती जडे। नमो निरंजन मंत॥५६॥बीरजविधिबपु व्योमाविचि। प्यंड ब्रह्मंड उजास ॥ रज्जब सुंदरी सूरतलि। तन त्रिभुवन तमबास ॥ ५७ ॥ रज्जब सरिता सुकलकी। मीन बहे मुनि जांहिं ॥ उदधिरअंतकखारमें। मिलतमरैतामांहिं ॥ ५८ ॥ सुकल दूध थोहरि सही। देही दहुंसु झारि॥जन रज्जब मनमीनमें। कालकीर कुलमारि ॥ ५९ ॥ मदनमीन समजान। रज्जब उदधि अज्ञान माधि ॥ जतजहाज जेहिभान। कैसे होय सुकाजसिधि ॥ ६० ॥ कामलहर जब ऊपजै। तब रामलहरका नाश ॥ तबही बूंद बालक उदै। तहि भलपण क्या आश ॥ ६१ ॥

साखी ४९४९।

इन्द्रियोंका अंग।

श्रवणों सदा कुरंगमत। नैंनों नितै पतंग ॥ रसना रसकूं मीन मन। सधन स्वादकै संग॥१॥भँरव भाव मिलि नासिका। आठों पहर अभंग ॥ इन्द्री अहनिशि गजमतै। तामें काम अनंग॥२॥ जन रज्जब जीवक्यूं रहै। इन पंचन परसंग ॥ ३ ॥ खोटे संगी

पंचहैं । सदा जीवके पास ॥ जन रज्जब जोख्यूं घणीं । बहु विधि करैं विनाश ॥ ४ ॥ पंचपसारैपडि गये । कनक कामिनी मांहिं॥ रज्जब बींधै व्याधिमें । क्यूंही निकसै नांहिं ॥ ५ ॥ रज्जब पंचों पावन मतैं । तब ऊजल उरि आब ॥ रज्जब पंचै पंच दिशि । तबहीं काम खराब ॥ ६ ॥ गुणगयंद गजराज चढि । पडे भाव पद आय ॥ जन रज्जब गुण ऊठि करि । जल मैला व्है जाय॥७॥ जबलग गरजै देह गुण । तबलग भक्ति न होय ॥ रज्जब रामन पाइये । कोटि करैजे कोय ॥ ८ ॥ रज्जब मन पंचों पिसण । लूटैं देही देस ॥ इन बलवंतों पासि छुडावै । बलिवंत प्राण नरेश॥९॥ पंच पचीसों त्रिगुणमन । अजा जीलसे मांहिं ॥ सैतानोंके देशमें। साधू निपजै मांहिं ॥ १० ॥ सुमिरण सुकृत उपजै नांहीं । द्वै दूधै बैठे दिल मांहिं ॥ मनसा भूत सैतान अजाजिल । रज्जब बाहिरही यूं रीति ॥ ११ ॥ दैत्य दिशावर देह निज । जीव जमपुरी बास ॥ रज्जब रहिये कौन विधि । जीवन झूठी आश ॥ १२ ॥ राहुकेतु छेदे छिके । पै बेलां हाजिर होत ॥ त्यूं रज्जब डरता रही । इंद्री दैत्य सुगोत ॥ १३ ॥ पंचोंके घरि प्राणियां । पडचा ठगोंमें आय ॥ रज्जब रासभकर लिया । सुनिजघरिजीवनजाय ॥ १४ ॥ गुड धरती मद्दुवागगन । बेर जडी विचिबाय ॥ जन रज्जब त्यै तेज मिलि । मदरूपी व्है जाय ॥ १५ ॥ पंचतत्व बिगसे विमल । मिलते मदन समान ॥ जन रज्जब रसपान करि । घट घट माते प्राण ॥ १६ ॥ इन्द्री प्रसन्न जीभरस । नासबास चखिरंग ॥ रज्जब श्रवणों शब्दसुणि । विषै पंचबपु भंग ॥ १७ ॥ चहुं इन्द्रयूंके चारि गुण । जिव्हा होय सुभाव॥रज्जब सैवैकूं खुशी । अरु बकिवेका चाव ॥ १८ ॥ रज्जब इंद्री दोय गुण । रसना लक्षण बीस ॥ गंध दुर्गंध सुनासिका । पंचरंगनैंनों दीस ॥१९॥

सप्त सुरहु श्रवणां सुनहिं ! ये पूरे छत्तीस ॥ साच शब्द रसनां कहै। स्वाद बाद बसिनांहिं ॥ तौ रज्जब सुणि चतुरगुण। क्यूं चालै मत मांहिं॥२०॥जल ज्वाला जिव्हा रहै। सुखदुःख शब्दसु मांहिं ॥ रज्जब रस विसरन मधि। वक्र सुहारै नांहिं ॥ २१ ॥ विष अमृत अरु असत्य सत्य। रज्जब रसनां मांहिं ॥ नर्क स्वर्ग जिंव्हा जड। बाहरि दीसै नांहिं ॥ २२ ॥ श्रवणनैंन मुख नांसिका। सर्विर्णार्वण हार ॥ रज्जब पीछे पंचमां। प्राण पिंड व्यवहार ॥ २३ ॥ रज्जब चहुं मौन्यूं आगै खडी। बकती बक्र मंझार ॥ दूती दस दरबारकी। तापरि कहा करार॥ २४ ॥ रज्जब रसनां साटणीं । करै पंचकी साटि ॥ परबेचंत आपन बिकी। बैठि स्वादकी पाटि ॥ २५ ॥ रज्जब रसनां रीतियहुं। स्वाद बादमें पाव ॥ तहि समय अंतक असध। करै आतमां घाव ॥ २६ ॥ जन रज्जब जगजीव विचि। जिह्वादूजी जाणि ॥ स्वादबादमें बैठि करि। मींच बणावै आणि ॥ २७ ॥ रज्जब रसनां तूतरू। पंच झाडकै मूल ॥ या सीच्यों सारे सिचे। जुदे जुदे फलफूल ॥ २८ ॥ रज्जब बालक बंसलग। बसि घसि पाडहि आगि ॥ पान पेडं बनराय सब। जलहिंजु ज्वाला लागि ॥ २९ ॥ इन्द्रयूं करि आतम बलै। पंचपरपंचन मूल ॥ रज्जब बंसविलोकिये। डालों जाल्या मूल ॥ ३० ॥ शील समुद्रन ठाहरै। इन्द्री पंच अगस्त॥रज्जब रीता सिंह सो। जहां पैं दस हस्त ॥३१॥ रज्जब लहुडे वहु बुरे। देखि वडहु घरघाल ॥ लघु टीड्यों दीरघ हस्या। किया सुकाल दुकाल ॥३२ ॥ जन रज्जब घणजीतसदा। लघुदीरघन-विशेख ॥ पेखै पन्नग पपीलकूं। प्रत्यक्ष खाया देख ॥३३॥ देखो जीव जगदीशसम । सो गुण इन्द्रिसांय ॥ रज्जब हारा देखतू। एक अनेकंमांय ॥ ३४ ॥ सीहगोससिन हुततां। सिंह आत्मा

एक॥ चणा चुकाव कौनविधि। तातेखे अनेक॥ ३५॥ दीवक ग्रास दान कौ। घुणकाष्ठकौं खाय॥ यूं इन्द्रौं आतम गिलि। स-मझ देखि मनमाय॥ ३६॥ एक अनेकहुं सौंडरहिं। मनवच कर्म विचारि॥ कोमलकलहुंन किया। वर्ज्रसार विधि वारि॥ ३७॥ तनमन पंचूं पिसनपरि। प्राण एकये साथ। रज्जब क्यूंकरि झारिये। क्युं रसि आवैबात॥ ३८॥ इन्द्रौ बस आतम भई। मिटा महातम आघ॥नाहरत्योर निरखिये। बकरिणु बांध्या वाघ॥ ३९॥ रज्जब रामरिसायकर। दिया पेट तलि प्राण॥ ओदाबस आतम भई। लतन बाहरजाण॥ ४०॥ रज्जब भागै कौन दिशि। करैकहां कुंशैल॥ जहां जाय तहां संङ्गही। पेट पडाहै गैल॥ ४१॥ प्राणि परलपेटतलि। अहानिशिजाकी चित्य॥ जन रज्जब जीवयुं विमुख। हरि सुंकरैन प्रीत॥ ४२॥ अस आतम उपर चढा। अरि बीरर असवार॥नचावैत्युं नाचिये। रज्जब फेरनसार॥४३॥रज्जब पीसण पेटसम।मनबच करम कहिंसाच॥ असही खवाय अनकीकर। वहुत नचावैनाच॥ ४४॥ पिंड धरसो पेट तलि। सुरनर पृथ्वी प्राण॥ रज्जब किये कैद सब। फिरि उदरकी आण॥ ४५॥ पीसण कोई पेटसम। अरिन उदरसो और॥ चौरासी चेरेभये। चाहि चूनकी ठौर॥ ४६॥ अरिनही और सारिखा। पिशणन पेट समान॥ जाकारण अन रथ करें। घर घट आतम जानि॥ ४७॥ काया तरुवर जीभ-जड। पौरुयौं वधै कुरूंख॥ जन रज्जब सौख्युं सुखी। ज्यौं ज्यौं मारैभूख॥ ४८॥ जे जिह्वाकुं बंध दे। तो सब गुणबंधे मांहि॥ जन रज्जब जिह्वा खुल्यौं। सारेगुण खुलि जाहिं॥ ४९॥ रज्जब विरचचहुंन तैं। दे दशद्वार निपीठ॥ रसना लागी रामरस। जौ आतमकी ईठि॥५०॥ पाचुं इन्द्रि पांडुहैं। देह द्रौपदी जान॥

ये रज्जब तोऊ धरैं। जे गलैंहिमालय ज्ञान ॥ ५१ ॥ इन्द्रिमारै इन्द्रसैं। देवातीन तेतीस ॥ जो साधु साधु ईसाति। सोसबहीकै सीस ॥ ५२ ॥ रज्जब पावक पंचकी। पिप्राणकों दोष॥अरगसु काठ्या कुंभनि। आतम कनकन पोख ॥ ५३ ॥ पंचोंके घरमें रहै। चलै पंचके ज्ञान ॥ सो रज्जब क्यूं परि हरै। पंचों थाप्या थान ॥ ५४ ॥ प्रथम पंच तपके तपै। मनकी मांनैं नांहिं॥ रज्जब थापी पंचकी। सो उथपै जगमांहिं॥ ५५ ॥ अरि अनंत आतम-कनैं। जोध बडे जीवमांहिं ॥ सो रज्जब छूटै नहीं। तौ घर छोडे कछुनांहिं ॥ ५६ ॥ सकल कुसंगी कायमें। क्या छांडै घरबार॥ रज्जब जीव जीवै नहीं। माहै मारनहार ॥ ५७ ॥ रज्जब बंटा भावका। गुण औगुण सुखिलार॥एकहि जीत्यूं स्वर्ग व्है। एकहुं नरक व्यवहार ॥५८॥ मन पंचोंदस द्वारलै। नौसतबीतीबात ॥ सुध पडे ते हारिये। सन्मुख जीतै जात ॥५९॥ पंचतत्वसम मित्र-न बैरी। प्रीतम पिसणन और ॥ रज्जब ये सन्मुख विमुख। देखे दोन्यूं ठोर ॥ ६० ॥

साखी ५००७ अंग १५७।

रहतिका अंग।

रहता गुरुगोविंद है। बहता शिषसंसार ॥ रज्जब बोलै आदि यूं। तामै फेरनसार ॥ १ ॥ रज्जब रहता संतजन। अतिगति मँह गा होय ॥ ईष पान दृष्टांतकूं। चंदनकी दिशि जोय ॥२॥ रज्जब रहती धातुकूं। बहती पूजै आय ॥ आदि अंतिमधि मांडमें। नर देखो निरताय ॥ ३ ॥ मोर पंख मस्तक धरया। सु अधिकारी सुरभौन ॥ तौ रज्जब जतजगतमें। कहिसिन वंदैकौन ॥ ४ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश मिलि। जती यहि बैदेबीर ॥ रज्जब रहता जगतगुरु। धनि धनि सिद्ध शरीर ॥५॥ रज्जब वपु बैरी बहुत। तामें मदन महंत ॥ मारै सेन सेनाधिपति। सो आतम अरिहंत ॥ ६ ॥ रहत बडी संसारमें। जैरहिदेखैकोय ॥ रहतैं रहतैं रज्जबा। रहते सरिखा होय ॥ ७ ॥ रज्जब रहते पुरुषका। सेवक सब संसार ॥ जहां जाय तहां जगतगुरु। महिमाअनंत अपार ॥ ८ ॥ मन बच टीका रहतिकूं। सब वहते नरदेहि ॥ रज्जब रंध्र जती जुगल। जगम मस्तक परि लेहि ॥ ९॥ निरखि निशाचर सिरिधरैं। शुक्र जतीकूं जाणि ॥ रज्जब रहते पुषरुदिशि। पग प्रकटतकलिकाणि ॥ १० ॥ रज्जब जीव आया जगति। यं दीसोंदेकाज ॥ सो संहारि सुमिरण करैं। महासंत सिरताज ॥ ११ ॥ रज्जब पूजा रहतिकी। तीन लोकतेतीस ॥ मनसा बाचा कर्मना। जती जगतके शीश ॥ १२ ॥ रहता गुरुगोविंद सम। जै देख्या निरताय ॥ रज्जब सुरही शीलमें। कहै कन्ह-सोगाय ॥ १३ ॥ कामधेनु कामै रहति। और सबै पशुपन्न। पै एकहि गुण गोविंदतांहिं। नांम धराया कन्ह ॥ १४ ॥ फल फूल बिवरजित बावन। रहति रहीतन छाय॥ रज्जब जत परमल परसै। बेधि गई बनराय ॥ १५ ॥ तन तांबा कंचन भया। पाकै पारै मेल ॥ रज्जब अज्जब रसायणी। देखो अद्भुत खेल। १६ ॥ पारामारहिं पिंडही। सोईबेत्ता वैद्य ॥ रज्जब हद हकीम व्है। काम करैंजे कैद ॥ १७ ॥ ईशफकूं अवलोकिये। इन्द्रयूं परस्या नांहिं ॥ तौ महलौंमें मार्गहुवा। जै धरमरह्या दिलमांहिं ॥१८॥ गंधी गये सुगंधा हुजे। गंधी गये सुदेव ॥ जन रज्जब जल बूंदका। विरला जाणें भेव ॥ १९ ॥ पाणीं राखि रहै ज्यूं पाणीं। आव ऊतरयूं उतरै आब ॥ जन रज्जब जतजोध जुगत

यहु । उभै ठौर कलह्याजुवाब ॥ २० ॥ साधू मँहगे साधिजलि । नांहीं तो कछु नांहिं ॥ जन रज्जब ज्यों सकल नग । महँगे पाणी मांहिं॥२१॥रहते बहते फेरबहु । बिरला बूझै कोय॥ज्यूं रज्जब पाछे अपछा येकै मोलिन होय॥२२॥रज्जब रहतापूजिये । जतमें जोति स्थान ॥ बहतेको बंदैन कोइ । अवलोको जगआन ॥ २३ ॥ शक्ति सुन्दरी शिर रह्या । जती जवाहिर नीर ॥ रज्जब रामा चूसिले । दाडयूं दाणें बीर ॥ २४ ॥ रहता दीपक रतनका । नारी नागन मंद॥ विषै वायु जो नांबुझै । कलि अजरावर कंद ॥ २५ ॥ कुलिसकमठगेडें कठिन । साउसील सुमत॥बामा बांन न लागई । सो रज्जब जतरत ॥ २६ ॥ रज्जब रहती अचाहके॥ शिव शक्ती सुगुलाम ॥ मनसा बाचा कर्मना । सुंदरी करै सलाम ॥ २७ ॥ अहिअबलादेखतबुझै । अगनि दीप आदंम॥ तहां हीरा हरिजन अबुझ । नैंनों देखै सुझ ॥ २८ ॥ युवती ज्वालामें पडै । जती जवाहिर आय ॥ रज्जब राखसु व्हैगये । मणि मोल उठिजाय॥२९॥जो रहत काम देव है । बहत कामही भूत ॥ रज्जब उभै अनंग अंग । कहैं सकल अवधूत ॥ ३० ॥ मदन भुवंग अंगार है । मोरचकोर अहार ॥ अन्य पंखी सुन आदरहिं । देखो कोटि हजार ॥ ३१ ॥ तेतीस कोटि त्रियहुं बंधे । और सबै जीवजंत ॥ येतहुमें मुकता जती । नमो नमो निजमंत॥३२॥सकल कलों ऊपरि कला ।जो जीवजीतै काम॥ बाई बांधै बाम परि । सो बरियामो बरियाम ॥ ३३ ॥ जन रज्जब बहते बहुत । रहता कोईयेक ॥ तरुणी नदी बिरले तिरहिं । बूडण हार अनेक ॥ ३४ ॥ गुण इन्द्रयूं प्रकृति तन । बतैरणीं व्यवहार ॥ रज्जब बूडैजीवसब । बिरला पहुंचै पार ॥ ३५ ॥ बेतरणी सुतरंगिनी । विषय वारिता

मांहिं ॥ रज्जब तारुत्रि भवन । ज्यु इहिं जल बूडै नांहिं ॥३६॥ रज्जब बिरचै बिषयसो । महाबली बरि याम॥ सोई सूरासोसुभट । सोकालियहिनाहिंकाम ॥ ३७ ॥ बामा बलि बाई दई । सोई बाई बंध ॥ रज्जब रहता जगत गुरु । कलि अजरावर कंध ॥ ॥ ३८ ॥ सकल मेदनी मारनां । मदन महाबल वंत ॥ रज्जब साधै साधसो । बलिवंतों बलिवंत ॥ ३९ ॥ रज्जब अबला बली-न बाइ सब । जोध किये बसि जोय ॥ कंत कलित कलिये नहीं। अकले कहावैंसोय ॥ ४० ॥ पंचतत्वमनसों रहित । प्रकृतिन परसै प्राण ॥ रज्जब रहता पुरुषसो । साधू संतसुजान ॥ ४१ ॥ देखो अनल अतीतके । अंडे अरु अभि काष ॥ सोधर धामनि नांपरे । रज्जब जतमत भाख ॥ ४२ ॥ अगसत आतमां ग्रासंहीं । सरिता सहित समुद्र ॥ रज्जब रहती बसेखहै । उगलिन डाले बूंद ॥ ४३ ॥ बहुत राज रिधि छाडि करि । जीवगये जत वोडि ॥ तौ रज्जब रहते बडी । निरखि निनाणवें कोडि ॥ ४४ ॥ सब सुकृत व्है शकति सों । जतमत चाहै जीव ॥ यूं जती यहि पूजै सती । रहति पियारी पीव ॥ ४५ ॥ रज्जबरंचकरहतिकी । बातन बरनी जाय ॥ यहां खलक खिदमत करै । आगै खुशी खुदाय ॥ ४६॥ जोग मांहि जतजीव है । सब अंग और शरीर॥ जन रज्जब जग सब कहै । रहतेकूं गुरु पीर ॥ ४७ ॥ तन जाता मन मुकति गति । कह्या शबद सति आथि ॥ जन रज्जब जगि जतीकै । रहति रूखिफलहाथि ॥ ४८ ॥ रज्जब जती युवती ज्वाला टलै । जतिजामणमिलनास ॥ जतमें जोबन जोर नित । जति निरद निवास ॥ ४९ ॥ रज्जब रहतों काछ दृढ । बाचा साची होय ॥ सो बाइक कहु गुण भरया।सुणि मानें सब कोय॥ ॥ ५० ॥ कहणहार सबकहि गये । रहतिबडी जगमांहिं॥

रज्जब प्राण पशु परै। जो जीवमानैं नांहिं॥ ५१ ॥ चंदसूर पाणी पवन। धरती अरु आकाश॥ ये रज्जब रहते सबै। पै रहते हरिके दास॥ ५२ ॥ रतन रहे समुद्रमें। मरजीवौंलिये काढि॥ यूं नर नारियों नांठगे। सो साध समुद्रसो बाढि॥५३॥ तन सारे त्रिभुवन कितक। मनसारेकोइऐक॥ रज्जब रावण बपुबली। धन्यमन राखण ऐक॥ ५४ ॥ रज्जब कोई कोटिमें। धन्य तन राखण हार॥ पै मनवारैविषै सों। ते बिरलासंसार॥ ५५ ॥ तारहुं शुक्र गरुड खग। चक्रहुं चरनर और॥ कत्रस्याम गोरख हणु। जति लखमण षट ठौर॥ ५६ ॥ सुक्र जोति रथ ग्रह। कत्र श्याम सुत सेत॥ गुरु गोरख जती हण्यू हद। लखमण खरासु खेत॥ ५७ ॥ शक्ति सूरमन भवर विधि। तन लंकापति भूप॥ रज्जब मारै रहति सर। प्राण लखै मनरूप॥५८॥ इन्द्री आभोंमें रहे। नीर नराजी रूप॥ जन रज्जब मारे तबै। सुख सुकाल अरि भूप॥५९॥ मेन सेन सब संग्रही। फिरी दंग दिल आन॥ रज्जब गरज्या रहति मत। शील चढ्या सुल तान॥ ६०॥ रज्जब साधू रहैसु ज्ञान गढ। सूरा तन शारदूल॥ कामकटक्कलागै नहीं। यह रहति कामूल॥ ६१ ॥ लिया अहार अच्यंतमें। पीछै पडि गई च्यंत॥ रज्जब नींदन हंग माणि। उभैन उपजै म्यंत॥ ६२ ॥

अरिल।

शार्दूल अरु संत जती जागि जोर है। जारै अजर अहार। अ-नंग अरि मोर है॥ और परैवे प्राण सुदारा दासरे। परिहां रज्जब रजन पखांहिं विषैत्रासिवासरे॥ ६३ ॥ गै ग्रासै त्रासै मदन। शार्दूल बलवंत॥ त्यूं रज्जबसुआहार ले। सुकल सहारै संत॥

॥ ६४ ॥ जन रज्जब रवि शशि पले । डांडी लगन बिनाश ॥ जिव्हा जोती बाट बिंद । तोलिनांव निज दास ॥ ६५ ॥ ज्यों नैंनों आंधा नीर बिन । त्यूं उरि आंधा तजि काम ॥ रज्जब घोर अंधार है । कदेन सूझै राम ॥६६॥कायासूं काया मिलै। सुकल सगाई सीर॥रज्जब मेला ब्रह्म जीव । बीजाबिब्राजित बीर ॥६७॥ रज्जब रहति बिषम है । आसंधि सकैन जंत ॥ रचना मेटै राम-का । तब उपजै जतमंत ॥ ६८ ॥ भावी भानी भूतनें । जब जीव जाग्या भोग ॥ तौ रज्जब सुनि रामसों । जोरावर जत जोग ॥ ६९ ॥ काची आज्ञा मेटि करि । पाकीसोंलैलीन ॥ रज्जब स्याणासाध सो । पाका प्राण प्रवीन ॥ ७० ॥ आज्ञा कारी बंधि यहि । आज्ञा भंग मुकत ॥ रज्जब रजतज छांणतूं । समझचा सांई मंत ॥७१॥ प्यंड प्राण नारी पुरुष। जगपति राखै जोडि॥ सोई हुकम हति हरि मिलै । निरखि निनाणवें कोडि ॥ ७२ ॥

साखी ५०७९ अंग १५८ ।

जतनका अंग ।

जन रज्जब राखे विनां । नामन राख्या जाय ॥ जैसें दीपक जतन बिनां । विश्वा बीस बुझाय ॥ १ ॥ रज्जब भोडल भवनं मधि । दीपनांवठहराय ॥ जन विनां जोख्यूं घणी । जोति जाप बुझ जाय ॥ २ ॥ जतन बिनां जोख्यूं घणीं । बोहित वि-घन अनंत ॥ ज्यूं रज्जब राखे बिनां । उदधिन उतरै संत ॥ ३ ॥ ज्यूं चाकी चौडै घरयूं । सब पीस्या उडि जाय ॥ त्यूं रज्जब सुणि जतन बिन । कहो सुकृत कोखाय ॥ ४ ॥ करणें करि कांठें हुवा । रहणां रहता होय ॥ जन रज्जब सुणि जतन बिन । बहुत गये धन खोय ॥ ५ ॥रज्जब रतनहुंका जतन । करैजोहरीप्राण ॥

बारं बारन कर चढैं । मनबच क्रम करि मान ॥ ६ ॥ कनक कटोरै बाहिरा । रहैन बाघणिखीर ॥ त्यूं रज्जब साधु शबद । राखै घट गंभीर ॥ ७ ॥ साधू शब्द कपूर है । जुगति जतनि ठहराय ॥ रे रज्जब राखे बिना । उभै अंग उडि जांय ॥ ८ ॥ स्वाति बूंद राखैं सुकति । साधु शब्द यूं राखि ॥ रज्जब निप जहि सुकति मन । सब समझौंकी शाखि ॥ ९ ॥ देही अरु दरियावका । पाणी परसै नांहिं ॥ तौ मन मोती नींपजै । सुरति सीपकै मांहिं ॥ ॥ १० ॥ रे रज्जब आधानकै । अबला चलै जतन ॥ तौ सुत साब नीपजै । आदम अजब रतन ॥ ११ ॥ रंचकरंचकरिधि करि । राजा भरहिं भंडार ॥ रज्जब बूंद बूंदहिं मिलि । होत समुद्र अपार ॥ १२ ॥ रज्जब जोड्या पवन जुडै खजानू । नीर रहैत छतेणि नडौ ॥ शबदहि शब्द साध बड कहिये । ज्यूं बूंदहि बूंद समुद्र बडौ ॥ १३ ॥

अंग १५९।

सहकाम निष्कामका अंग।

सहकामी सौंखे सदा । निह कामी निर मोल ॥ जन रज्जब पाये परखि । समझैं साधू बोल ॥ १ ॥ सह कामी संकट सदा । निह कामी निरबंध ॥ रज्जब आशा नाश व्है । अमर अनासा कंध ॥ २ ॥ आशा उळझी आसिरै । निर आसा निरधार ॥ रज्जब वह राम तिरली । वह रमिताकी ळार ॥ ३ ॥ सह कामी संसार बसि । गुडी रूप उनहार । जन रज्जब निष्कामकै । आभैका औतार ॥ ४ ॥ सहकामी दीपक दशा । पाये तेळ उजास ॥ रज्जब हीरा संतजन । सहजि सदाप्रकाश ॥ ५ ॥ सहकामी फळले फिरै । मिलैन सांईमांहिं ॥ रज्जब रीझै राम बिन । सो सेवक

कछु नांहिं ॥ ६ ॥ चौरासी लख जीवकी । चरण सरण तलि चाहि ॥ रज्जब अधर अकाज रुख । ऊंची अगम अचांहि ॥ ७॥ तबलग चेरा लक्ष्मीका । चाहितलै व्है चित्त ॥ रज्जब रही गुलाम गति । होत अचाही नित्त ॥ ८॥ संतोष सु साहिब लूडा लोभ । जैसे थे तैसी कहि सोभ ॥ साच कहत मानहुं मति रोष । दुवा देहु भावों दिन दिन कोस ॥ ९ ॥ तमैकनीजक चेरी स्वाति । उभै नांव लोडीहै आय॥ सब जीव बीदीकै बांदा । रज्जब कहतन राख्या छांदा ॥ १० ॥ आशा बंधण आतमां । मुकति निराशा नित्त ॥ रज्जबकही बिचारिकरि । सोधिर साधूमत ॥ ११ ॥ सहकामी कंचन किया । तिनकूं जबतब फेर ॥ निहकामी पलटै नहीं । साखी सोवन मेर ॥ १२ ॥ कामी कैलौंकी कला । बुझ्यूं बुझी सो नांहिं ॥ रज्जब अबला आगि मिलि । येक मेक व्है जाहिं ॥ १३ ॥ दुरमति दारू सों भरे । बपु सु बान विधि मांहिं ॥ रज्जब त्रिगुणी जरे बिन । निहचल उभै सु नांहिं ॥१४॥ मुकति निराशा बंधण आयुष ॥ खबर मांहिं कही करि बास । येक ज्ञान घरि एक अज्ञान । रज्जब समझे सुख दुःख थान॥१५॥ रज्जब खुले न ब्योम विधि । मही न मुकता होय । पाताल सु पासीनां कटै । आशा बस सबकोय ॥ १६ ॥ सकल प्राण स्वारथ बस । उलझे आशा फंद । रज्जब रट रज काटि करम । मुकता सोई छंद ॥ १७ ॥ काम कंद पसरैनहीं । सुरति सुंदरी भूल । जन रज्जब रंकार रत । सो आतमा अमूल ॥ १८ ॥ येक मना रत एकसूं । काटि कामना कंद । उरि अंजन उलझै नहीं । वह आतमा अबंध ॥ १९ ॥ उरि औरै आशा नहीं । मिलै न माया मन । रज्जब मुकता मांझ में । सुलझा साधू जन ॥ २० ॥ ब्रह्म भजै माया तजै । मनमांहै निहकाम ॥ जन रज्जब ता संत सों ।

प्रत्यक्ष रीझै राम ॥ २१ ॥ निहकामी सेवा करै । ज्यूं धरती आकाश ॥ चंद सूर पाणी पवन । त्यूं रज्जब निजदास ॥ २२ ॥ नारायण जाचै नहीं । सुरपति मांगै कब ॥ रज्जब राते इस मतै । निरिताई सो सब ॥ २३ ॥ रज्जब रिधि सिधि नां रुचै । जा जीव में जगदीश ॥ निरिईहा निहकाम सो । मन बच विश्वा बीस ॥ २४ ॥ व्है फकीर अरु मांगै नहीं । गृही रहित रहै गृह मांहिं ॥ तिन समान नांहीं संसारा । मन बच कम सु कीन्हे विचारा ॥ २५ ॥ रज्जब कांटा चाहिका । बिस रूपी सु बिमोल ॥ सोव बुझ्या चित चरन में । रही सु गोविंद गैल ॥ २६ ॥ बंदा गंदा होत है । जब मांगै कछु और ॥ चरन छुडाया चाहिने । किया आपना चोर ॥ २७ ॥

साखी ५११९ । अंग १६० ।

प्रवृत्ति निवृत्ति का अंग

रज्जब बसुधा व्योम विचि । बीज वृक्ष विस्तार ॥ त्यूं प्रवृत्ति निवृत्ति मधि । आतम वो ओंकार ॥ १ ॥ कौण दशा फूलै फलै । कौण दशा निरधार ॥ रज्जब जनकन गाहकूं । कहि दिशि करै विहार ॥ २ ॥ येक वृक्ष ऊपरि फलै । येक फलै घर मांहिं ॥ येकदुहु दिशि सु फल है । येक उभै दिशि नांहिं ॥ ३ ॥ सत जत सोधी साध मत । चतुर दशा चहुं आंखि ॥ रज्जब सु फल लीजिये । निरफल निखर सु नांखि ॥ ४ ॥ सुकृत फल प्रवृत्ति मधि । निवृत्ति नाम निरधार ॥ सत जत कूं यहु आसरा । रज्जब समझि विचार ॥ ५ ॥ सुकृति फल प्रवृत्ति माधि । निवृत्ति नांव निराट । नरनारायण सुख चढे । आए येकहि बाट ॥ ६ ॥ शिव तरुवर छाया शक्ति । जुगल महातम जान ॥ रज्जब जनि मांखि जिमि । फल पावै किन थान ॥ ७ ॥ धरणी धरै सो बीतलै ।

तरु नरु धरहिं आकाश ॥ सो परमारथ मैं पडै । जन रज्जब सुनि दास ॥ ८ ॥ प्रवृत्ति धोरा रेतका । निवृत्ति है गजगीर ॥ मन जल कहि मग मेलिये । ब्रह्म विडै जाय नीर ॥ ९ ॥ निवृत्ति प्रवृत्ति द्वै कथा । वो ओंकार शब्द ॥ निर्गुणी निर्गुण आदरी । सर्गुण करी सुरद्द ॥ १० ॥ बटक बोल तो द्वै द्वै चालै । स्वारथ जड परमारथ डाल ॥ इहि दिशि निरफल वहि फरु फूल । नीचै ऊंचै येकै मूल ॥ ११ ॥ साच झूठ द्वै चरन हैं । जीव चलै इन मग ॥ इक ठग्यूं की ओर है ॥ जहां न दूजा पग ॥ १२ ॥

पाप पुण्य निर्णय का अंग ।

पाप पुण्य का मूल है । तामें फेर न सार ॥ धर्म कर्म करि ऊपजै । रज्जब समझि बिचार ॥ १ ॥ जै जड पैठै जिमी में । अंकुर जाय अकाश ॥ त्यूं पाप पुण्य का मूल है । सुनहु बिवेकी दास ॥ २ ॥ प्रथम पाप कै पेड परि ॥ स्वारथ सुकृत डाल ॥ रज्जब शाखा तौर है । किये पेड प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जड सींचत तरु वर बधै । पुनि पुष्टि त्यूं पाप ॥ रज्जब कही बिचार करि । बिकट बणाई बापि ॥ ४ ॥ कुकृत करि सुकृत सबै । आदि अंत्य मधि होय ॥ जन रज्जब जग देखिये । जै करि जाणें कोय ॥५ ॥ प्राण पूजे हतें सेवा शकति । पंचहते शिव सेव॥ पूजे जाय न पाप बिन । रज्जब देई देव ॥ ६ ॥ येक पापी परलै गये । एक पापी पर सिद्ध ॥ रज्जब समझिरु कीजिये । पाप पुण्यकी विधि ॥ ७॥ येक कर्म कर्म ऊपजै । येक करम करम जाय ॥ रज्जब करम है करम कूं । नर देखो निरताय ॥ ८ ॥ रज्जब आरंभ अघ चढैं । आरंभ हि अघ जाय ॥ तौ आरंभे आरंभ फेर है । समझि देखि मन मांहिं ॥ ९ ॥ कुकृत बेडी लोहकी । सुकृत छीणी तास ॥ एक कृत्य कर्म उदै व्है । येक कृत्य कर्मनाश ॥ १० ॥ आरंभ सबही

निर्दयी। तिनकरि सुकृत होय। यूं चलतौं सीझै सबै। काज न विनस्या कोय॥११॥खचर बीछणि केलि गर्व। पापपुण्य प्रकाश। रज्जब निपजै चतुर फल। मूल महातम नाश॥ १२॥ पाप करत पातक चढै। पुण्य प्रकटत घट जाहि॥ रज्जब मैले कूप खणि। तहि निर्मल जल न्हाहि॥ १३॥ चोरी की तब चोर है। धर्म कर्म व्है साध॥ भाव फिरत भावी फिरी। तिनहुँ सुकृत फल लाध॥ १४॥ कुकृत करि सुकृत करै। तौ कुकृत लागै नांहिं॥ चोरौं छूटैं पुण्य बल। समझि देखि मन मांहिं॥ १५॥ गुरु गोविंदरु देव रिख। देवा सबै दयाल॥ पूजा करि पापी तिरे। सबहुं करि प्रतिपाल॥१६॥ रज्जब सुकृत सेवा चोर ठग। पापी तिरहिं अपार॥ ज्यों बूडयूं बूडे नहीं। नाव काठ के भार॥ ॥ १७॥ रज्जब पाप पुण्य सम। पुण्य काष्टकी नाव॥ जग जल तिरिये बैठि कहि। तिहि प्राणी चढि जाव॥१८॥ करहि जीव कृत पेठकूं। लावहिं पर उपकार॥ सो रज्जब सीझै नहीं। तामें फेर न सार॥१९॥ मात पिता मैले मिले। सुत निपज्या विधि साध॥ कुकृत मैं कीर्ति भई। रज्जब खेल अगाध॥ २०॥ इन्द्र अवनि अपराध बिन। प्यंड पडै हो पाप॥ परिजन विषय सु बंदगी। जगजीवन जडि जाप॥ २१॥

झूठ साच निर्णय का अंग।

झूठ भूमि है खार छा। सत्य कण उगै नांहिं॥ उभै ठौर निरफल सदा। समझि देखि मन मांहिं॥१॥ साच झूठ जोडा सदा। ज्यूं तरुवर संगि छांह॥ एक सुफल एक अफल है। समझे समझौ मांहिं॥ २॥ वपु वाइक मनमें सदा। झूठ रहै तिहुं ठौर॥ तिनका बासा नरक में। अस्थल नाहीं और॥ ३॥ झूठ रहै यूं साचकन। ज्यूं तिमिर दीप तलि जाय। रज्जब बुझतो

जोति कूं। अँधियारा भरि जाय ॥ ४ ॥ झूट मरै सुणि साच में। साच मरै सुणिं झूठ ॥ रज्जब ज्यूं थी त्यूं कही रिझु होइ भावै रूठ॥५॥जब लग प्राणी पिंडमें। कणकूकसमाधि होय ॥झूठ साच दोऊ मिलि चलैं। तहां न दीसैदोय ॥ ६ ॥ झूठ साच समानहै॥ समये सम सरि होय ॥ जन रज्जब इस पेचको। बूझै बिरला कोय ॥ ७ ॥ तन मन आतम झूठ थे। लगै साच कूं जाय ॥ सो रज्जब साचे भये। नर देखो निरताय ॥ ८ ॥ साच आतमा झूठ तन। लागिर झूठी होय ॥ रज्जब कही विचारि करि। देखत है सब कोय ॥९॥ झूठ बोलिये धर्म हित। सो मिलै साच कूं जाय। यहु रज्जब अज्जब कही। नर देखो निरताय ॥ १० ॥ झूठ पाप का मूल है। समये मिथ्या साच ॥ मार महमदकी सरणि। क्या बोलैं सो बाच॥११॥रज्जब राखा मारतहु। झूठ बोलि करि प्राण॥ जो मिथ्या मानी सबहु। साईं सत्य सु जाण ॥ १२ ॥

करणी बिना ज्ञान का अंग।

दीपक ज्ञान बताय दे। जोत सकत तन मांहिं ॥ रज्जब पकडै प्राण उठि। दीवा पकडै नांहिं ॥ १ ॥ दीपक दोन्यू एकसा। चोर साह चित नांहिं ॥ तैसे रज्जब ज्ञान गति। मन प्राणी के मांहिं ॥ २ ॥ हीरा हरसी तिमिर कूं। परशीत हरया नहिं जाय ॥ त्यूं रज्जब दीपक ज्ञानका। जो देख्या निरताय ॥३॥ रज्जब दीपक ज्ञानका। तिमिर हरैदेत। परिभजन बिना भाजै नहीं। इन्द्री अरि दल खेत ॥४॥ जै आतम उरि अंध गति। ज्ञान दीपकर धारि ॥ रज्जब पडती कूप में। दीप न सकई टारि ॥५॥ रजनी माया मोह की। इन्द्री आभै मांहिं ॥ रज्जब रती न सूझई। ज्ञान दृष्टि कछु नांहिं ॥ ६ ॥ रज्जब ज्ञान दीप नहिं दूरि व्है। तिमिर पिंड ब्रह्मंड॥ जब लग मिलहि न राम रहि। तिनकी जोति प्रचंड ॥ ७ ॥

रज्जब प्राण पिपीलका। ज्ञान पंख प्रकाश। वह न मिलै अविगति कूं। वह न जाय आकाश॥ ८॥ रज्जब जोबन भादवा। इन्द्री आभे मांहिं॥ विषै बारि बारिष विपुल। ज्ञान भानु दुरि जांहिं॥ ॥९॥ रज्जब रैन अचेत मत। बनमन जरि नहिं जाय॥भानु ज्ञान उगत दहै॥ उलू इन्द्रिपावाय॥१०॥इन्द्रिय आभा ऊनबन। ज्ञान उन्हालै होय॥ तौ रामा रोली चढै। रज्जब साख न कोय॥११॥ आभे इन्द्री रैनि अचेत। सूझै नांहिं सबनि के नेत॥ भानु ज्ञान आभे न अधार। आंखि मूंदि किया अंधियार॥ १२॥

ज्ञान बिना करणी का अंग।

करणी करै विचार बिन। तबै बंधै ता मांहिं॥ रज्जब उलझि अज्ञान में। कबहूं सुलझै नांहिं॥ १॥ भगति भेद बिन कछु नहीं। ज्यूं सुपिनैं बरडाय॥ रज्जब रसनहिं पाइये। पढ्या रैनि दिन गाय॥ २॥ नांवहिं भजै विचार बिन। यथा अकलि बिन राज॥ रज्जब रहै न येक पल। तबहीं होय अकाज॥ ३॥ गज गुमान बहुते करै। जोर न जाया जाय॥ रज्जब बुद्धि विचार बिन। बेडी खुलै न पाय॥ ४॥ करणीं आंधी जोर बर। ज्ञान पांगुले नैंन॥ जन रज्जब दोन्यूं जरहिं। जुदे न पावै चैन। ॥५॥ करणीं कण चावल सही। ज्ञान छ्यूत के मांहिं॥ रज्जब ऊगै येकठे। जुदे जुदे सो नांहिं॥ ६॥ राम विना रीति रहति। रहति विना त्यूं राम। पछ वोखद संजोग सुख। विजोगि वेऊ बेकाम॥ ७॥

साखी ५१७२ अंग १६१

नाम विवेक का अंग।

नावहिं भजै विचार सों। सो भूलै नहिं संत। रज्जब नांव निरूप रहि। पहुँचे प्राण अनंत॥१॥ राम नांव निज नांव गति।

खेवट ज्ञान विचार ॥ जन रज्जब दोन्यूं मिलै। तबै पहुँचै पार ॥
॥ २ ॥ औषधि हरिका नांवले। पछ पंचों वसिराखि ॥ रज्जब जीवन रोग व्है। सतगुरु साधू साखि ॥ ३ ॥ औषधि अविगति नांवले। पछ पंचों बसि जोग ॥ रज्जब रहतों अहि जुगति। आतम होय निरोग ॥ ४ ॥ सब सुकृत ले ज्ञान सों। करहु नांव सों सीर ॥ ज्यूं घृत सकर कणक सों। लाडू बांधहिं बीर ॥ ५ ॥ सकल गंवे सोध्यों बँधै। यथा अकल्य में राग ॥ त्यूं रज्जब सुकृत सबै। विधि विचार ले लाग ॥ ६ ॥ गहर ज्ञान समुद्र में। चलै नांमकी नाव ॥ रज्जब रज लागै नहीं। मिटै तपति के ताव ॥७॥

उपजणि का अंग।

रज्जब अज्जब ऊपजी। सबको करै बखाण ॥ ब्रह्म भजै माया तजै। सो प्राणी परवाण ॥ १ ॥ भाव भगतिकी ऊपजी। भक्ति कहै सब कोय ॥ जन रज्जव जगपति खुशी। जनम सुफल यूं होय ॥ २ ॥ उपजी आतम रामकी। सो छानी क्यूं होय ॥ रज्जब दीसै सकल सिरि। प्राणी प्रकट जोय ॥ ३ ॥ रज्जब उपजी आप सों। सबते न्यारा होय ॥ अंतरि परचै येक सों ॥ क्या समझावै कोय४सूरहिं क्या बरभाइये। सती न मानै सीख ॥ रज्जब उपजनि आपसें। भरैं विघन दिशि विष ॥५॥ मिनषा देही पायकर। लही ज्ञान गति मांहिं ॥ जन रज्जब जीव जापकी। इहि दिशि या परि नांहिं ॥ ६ ॥ जन रज्जब आतम ऊपजी। शिशु शक्ति तिरै नीर। ज्यूं बतक बचा सुर दिवसि। पानी पै रै बीर ॥ ७ ॥ रज्जब देखो मीन सुत। तिरन सिखावै कौन ॥ ऐसे उपजण आपसों। गहै ज्ञान मग गौन ॥ ८ ॥ रज्जब अरभक आडिका। ताहि तिरावै कौन ॥ जनमतही जलनिधि तिरै। करै नीर परि गौन ॥ ९ ॥ बत्तक बचे मीन सुत। अरभक आडि तिरंत ॥ कौन सिखावै कौनकूं। जब

उपजै यहु मंत ॥१०॥ अनल अंड जब उग्र है। तब अरभक ऊँचा जाय ॥ त्यूं रज्जब उपजणि जुगत। आतम ब्रह्म समाय ॥ ११ ॥ जा जीव में यहु ऊपजी। साहिब कीजे यादि ॥ रज्जब रोक्यूं क्यूं रहै। बसुधा बकैं सु बादि ॥ १२ ॥ राम उपाई कामकी। अबिहड अबिनाशी ॥ जन रज्जब जीवकी ऊपजी। सब तिसकी दासी। ॥ १३ ॥ येक उपजनि इंद्रमें। सकल उपजि आधार ॥ रज्जब उभै पिछानिये। येक येक की लार ॥१४॥ येक धरे की ऊपणि। लाये प्राण अनेक। रज्जब उलटा येक सों। उपजाणि यहि कोई येक ॥ १५ ॥ बुरी ऊपज्यूं बूझिहै। भली ऊपज्यूं भाग ॥ रज्जब येक आनंद में। दूजी दिल दुख दाग ॥ १६ ॥ येक ऊपजी ऊजलकर। येक उपजि मलमूल॥ जनरज्जब उपजी उभै। उपजी देखि न भूल ॥ १७ ॥ रज्जब उपजी सों नीपजी सही। कृषि करणी दत माल ॥ उपजीही आशा बंधे। निपज्यूं सकल सुकाल ॥ १८ ॥ अनभै मह दीखै तखित। उपजत बिषम उपाय ॥ पै रज्जब उपज्यूं पिछै। बेगावे गिन जाय ॥ १९ ॥

गुप्त पाप का अंग।

मनमें विषिया बिलिसि ये। पानी मैं पेशाब ॥ रज्जब जाणें जगत गुरु। जगत न बूझै ज्वाब ॥ १ ॥ मन चोरी चिंता मजा। गाति गुनह तन मार ॥ रज्जब रचना रामकी। नर सिरि नीति बिचार। । २ ॥ गुप्त पाप गुप्तहि सजा। मार होय मन मांहिं ॥ रज्जब समझैं समझणां। सो सठ समझैं नांहिं ॥ २ ॥

लोक लज्जा का अंग।

निगुरा नेकी कूं मरै। मतिने की घटि जाय ॥ रज्जब रन कुंजर किये। नाक बधी लग पाय ॥ १ ॥ करम स्थानि सब निलज। धर्म अस्थानक लाज ॥ जन रज्जब यहु जीव गति। क्यूं

करि सीझै काज ॥ २ ॥ लोक लाज लोई लिए। संका सांकल घालि ॥ रज्जब तोडै प्राण पग। हरि दिशि सकै न चालि ॥ ३ ॥ सुख सौं काणि काणि ऊलै। उवडे उवडी ठौड ॥ जन रज्जब सब जगत का। लज्जा कीया चौड ॥ ४ ॥ रज्जब रीसें राखै लोकलजा बहती बूडै नांहिं ॥ सर्वस सौंपै सगह कूं। अरु उनकी आज्ञा माहिं ॥ ५ ॥ पति राखे परिवार की। परमेश्वर पति खोय ॥ रज्जब शठ संकठ पडे। मुक्ति कहांते होय ॥ ६ ॥ लोकलाज शूरा सती। लोग लाज दत शीश ॥ जन रज्जब रोटी न देहि। नर मुनि मति जगदीश ॥ ७ ॥ भरम धरम करि जो भले। साधू श्रवनिन धार ॥ रज्जब ऊजल रैंनि के। सु दिवस न दीसें तार ॥ ८ ॥ कुल पीहर कुल सासरो। गुरु कीया कुलवंत ॥ रज्जब अकुलन उरि बस्या। अकुलन सोध्या संत ॥ ९ ॥

साखी ५२१०

मन मुखी का अंग।

अपनी अपनी खुशी में। चलै सबै कोई चाल ॥ जन रज्जब ज्यों हरि खुशी। त्यूं कोई सकै न चालि ॥ १ ॥ मन मानें सौदा करै। मन नाहीं तो नांहिं ॥ रज्जब मानै रामजी। सो कछु नाहीं मांहिं ॥ २ ॥ षट् दर्शन अपणी खुशी। खेलै सब संसार ॥ जन रज्जब रुचि रामकी। बिरला खेलणहार ॥ ३ ॥ मनकी भावहि सब चलै। चौरासी लख जीव ॥ तौ रज्जब इस चालमें। कहो किन पायापीव ॥ ४ ॥

मैवासी का अंग।

मै वासा भागै नहीं। सेवा भांति सहंस ॥ जन रज्जब जीव जो लगैं। सोपैं नहीं अबस ॥ १ ॥ दुर्मति दुरग न ऊतरैं। तजै न वैग्रट बन ॥ मैवासा मेटै नहीं। मरण कबूलै मन ॥ २ ॥ मन

मैवासा देही दास ॥ सेवग स्वामी गतवेसास ॥ बाहरि रूपा भीतर लोह । नर नाणें बंधै नहीं मोह ॥ ३ ॥

दुर्जन का अंग ।

दुर्जन दिल दर्पन सह । नहीं दिखावै मांहिं । रज्जब मैला देख तूं । पल इत उत सो नांहिं ॥ १ ॥ मुखपर मीठा बोलणा । पस-गीबाति प्रपिष्टि । रज्जब दुर्जन दोजकी । दई न दियाई दृष्टि ॥ ॥ २ ॥ रज्जब सर्प सिंह अजरी कमंध । जीवत मूवौ मार ॥ कंट केशजी सु माणि जुधि ॥ दुर्जन देत विचारि॥३॥रज्जब करग स्वरूप है । दुर्जनकी औलाद । पंखों पूतों रहि गई । आदित्य बडहु सु आदि ॥ ४ ॥ सज्जन समै समानि है । आवत करै नि-हाल ॥ दुर्जन दुसह दुकाल में । जब दीसैं तब काल ॥ ५ ॥

खेचर का अंग ।

उष्ण तेल अरु आरसी । जीते खरकामांस ॥ रज्जब सुधरैं राख सों । त्यूं खेचर का मांस ॥ १ ॥ रज्जब आपै ऊंटनें । तोडी नीति नकेल ॥ ते ऊनौंकनुकतैरहै । कैवककसौटी बेल ॥ २ ॥ सुध बुध सीले डरपि तूं । ठग ठंढे सों भागि ॥ ज्यूं चूनैं का कांकरां । रज्जब जल मिलि आग ॥ ३ ॥ डरिये खोटी खिमांसों । परघर घालणहार ॥ रज्जब जाहिर युद्ध में । किया सर्प संहार ॥ ॥ ४ ॥ मुख मीठे जल मुकर जिमि । पै ज्वाला मे अंग ॥ रज्जब कदे न कीजिये । तिन कपटयूं का संग ॥ ५ ॥ रज्जब दीसै सो नहीं । अण देखे भरपूरि ॥ मुकर सरभरि मानवी । तिनते रहिये दूरि ॥ ६ ॥ आरास के अंभ का । सबको करै बखाण ॥ जन रज्जब सो अगनि में । विरलौं बन्हि जान ॥ ७ ॥ मुख साधू मन में असध । पहरि कपटी मंत ॥ रज्जब देखे द्विपि दरस । दोय मतहु चोदंत ॥ ८ ॥ दुर न दिलदरपन सही । मुख पाणी

मधि आग ॥ तिनका संग न कीजिये । भौला भूंदू भागि ॥९॥ मुख मीठे कडवे कवलि । दुरसदि नाई ऐन ॥ रज्जब मिलि मुख मेलतों । कहु क्या पावै चैन ॥ १० ॥ ऊपर अमृत बीच बिष । देहु दिनाई डारि। सोखाए खैमानछे। बिरचों बीर विचारि॥११॥ दुष्टि दिनाई दानि है । सुख मिश्री में पागि । यहु बिष अमृत देखिये । भाग्य बली तौ भागि ॥ १२ ॥ जीव मरायण बीज सम । जिह्वा छूत समान ॥ तिनके ऊपर लीजिये । तजिये उर अस्थान ॥ १३ ॥ अमित अज्ञान उरगनी । जो जातिग जणि खाय ॥ रज्जब छूटै एकको । जो मोह मरदप तजि जाय ॥ १४ ॥

साखी ५२३६ अंग १७३ ।

क्रोधका अंग ।

क्रोध काल कहिये सदा । अंतकहै अहंकार । जन रज्जब जोरै जुलम । पाया भेद विचार ॥ १ ॥ रज्जम अंतर आतमां । अंत कहै अहंकार ॥ प्राणी परलै पीसण ।। होत न लागै बार ॥ २ ॥ क्रोधी डरै न कलंकते । मारै माता बाप ॥ बहन विहरि बंधू बधै । पिसण न पेखै पाप ॥ ३ ॥ गुरु शिख रासिख राजा चाकरहु ॥ तामस तनित निकाल ॥ रज्जब रीति नरोशमें । कहिये क्रोध चण्डाल ॥४॥ क्रोध न मानें बोधकूं । जैसे बीन सु बारि ॥ रज्जब देखो घट घट में । उभै सु एक विचारि ॥ ५ ॥ बडवानल सो बारि निधि । सजल घटा मधि बीज॥त्यूं रज्जब तजि जो रहै । न करि धका धाकि धीज ॥६॥धात अस्थानिक सों जल निकसैं । सो उन्हां अंभ अंभ आवै । त्युं रज्जब बल बीजि रहति में। गाति बाति सु लखावै ॥७॥जीवत मृतक मसाण विधि । मूवो मानसी रोस । रज्जब क्रोध न बोध कोई । भूत देव करैं दोस॥ ८ ॥ रज्जब धन्वंतरि रूप मुनि धारि है । अहि इन्द्री व्यौहार ॥ ताखै तामस

सौं डरी। बैद्य बिधलणहार ॥ ९ ॥ साधु शब्द सिरक काठ। सो शीतल तापहि हरै। परि घसै उभै अंग पाठ॥ जन रज्जब ते उजरै ॥ १० ॥ मान महंतन में रहै। क्रोध कलंकी नेम॥ ज्यूं पारस पावक बसै। जा लगि लोहा हेम॥ ११॥ रज्जब साधू शेष गति। माणि मुख नांव उचार॥ सब दिन महणां रंभ करि। बुधि विष होत न बार॥ १२॥ गोष्टी गोरख दत्तकी। जन रज्जब जागि जोय॥ तिनहुँ चमकि चक्कर चलै। तो क्षमा करैगा कोय॥ ॥१३॥ औतारहु अहंकार की। हुई सबन बिच बात॥ रज्जब देखो दसों दिशि। कहु किन छोडी घात्त॥ १४॥ रावण मारया लक्ष-मणही। लंकदही हनुमंत॥ रज्जब उभै अनंग जित॥ कहिये साधू संत॥ १५॥ जीवत ज्वाला में रह्या। मुवै मसाणहु आगि॥ जन रज्जब अति क्रोध फल। रावण तरुवर लागि॥ १६॥ रज्जब पाके क्रोधकी। महिमां सुनौ सु कान॥ मिलतामस ताखा हुवा। अगनिअखंडित ठान॥ १७॥ रज्जब रागरुदोष का। सकल सु रहै माधि खोट॥इन्द्र धनुष धोखे बिना। सूर भखि दुर भखि चोट॥ १८॥ बाइक डाला जल हरि। सुकाल दुकालहि चोट॥ राग दोष रवि शशि भरे। नहीं पडदा नहिं ओट॥ १९॥ बेत्ता बावनकै निकट। भोला भूतबबूल। सोहबति सोंधा होत है। पै गातबातगत सूल॥२०॥ सूके तरु सोख्यंत नर। अगनि उदै अहंकार॥ रज्जब मथिवा गुष्टि तजि। वन्ही बैन निवार॥२१॥ काया काठ सूकै उठै। गोष्टिमथतैं आगि॥ रज्जब सरसे ज्ञान जलि। जलै नहीं सो जागि॥ २२॥

अथ हिंसा दोष का अंग।

तेज तेजकूं नांखवै। त्रिगुणीमैंजुबिशेष॥ उडग अभ्यासै त्रुंगनी। दिन दीसै नहिं देख॥ १॥ मंछ गलागलमेदिनी।

सबला निबलहि खाय ॥ रज्जब यहु मंडाण मत । नर देखो निरताय ॥ २ ॥ द्वै सुख उपजै दोष। लागे येकहि पिंडसों। तिनहुन सुखसंतोष । तो द्वै षट्ट क्यों मिल्योंचलहि ॥ ३ ॥ उभै बकर विचि बैरता । काया येक कुंड ॥ तौ रज्जब क्यूं मिलि चलै । जै दीसै द्वै पिंड ॥ ४ ॥ ऐक पिंड माहैं रहै। पंचे पंचों बाट ॥ तौ रज्जब क्यूं होयगा। द्वै खटका इक ठाठ ॥ ५ ॥ पय पाणीकी प्रीतिकूं । बदन नबरणी जाय ॥ पैं हेरि हंस हंस्या भरै। मित्र विछोहे आय ॥ ६ ॥

सात्विक तामस निदान अंग।

मन मोतीज्यूं नीपजै । स्वाति शबदके पोख ॥ रज्जब उदधि उपाधिमें । मन मोतीकूं दोष ॥१॥ दीन दशादिन कर उदै । चकवै चित्त मिलाहिं ॥ रज्जब रजनी रोशकी । आप आपकूं जांहिं ॥ २ ॥ बाइ बैन यैके दशा। बहि बोलत द्वै अंग ॥ ऐकहि मिलैसु घटा घट। ऐक कहि होयसु भंभ ॥ ३ ॥ मानिगी रूपी साधु है। तहां राजसी दास ॥ ज्यूं रज्जब रवि ऊपरै। सदासु शशिहर वास ॥ ४ ॥ तामस रूप मिल्या मन फाटे । सात्विक फाटाही मिल जाय ॥ कांजी छाछि दूधकों जैसै। जन रज्जब देखो निरताय ॥ ५ ॥ दुखमें दोयन ठाहरै। घर सुख शीतल मांहिं ॥ रज्जब रहैन ताप तप । मनपारा उडिजाय ॥ ६ ॥ दुष्ट बचन अरु दुणि दनव । मनतन तीन्यूं जरि जांय ॥ रज्जब शबदसु शरद शशि। सब ठाहरसु सिराहिं ॥ ७ ॥ रज्जब कुबचन काल है। सु शबद सुबहुसु काल ॥ वह अंतकहै आतमहूं। वह प्राणहुं प्रतिपाल ॥ ८ ॥ सुखठाहर आवैं सबै। रज्जब समझो बीर .. पारा उतरै ठंढि परि । त्यूंही ताकि शरीर ॥ ९ ॥ सूरज

सोखै सृष्टिकूं। जै तस्तक व्हैनमयंक॥ज्यूं इस शीश शशि राखतूं। तब समिटी विषधंष ॥ १० ॥

जरणाका अंग।

रज्जब साध अगाध सो। शब्द जरै यूं मांहिं ॥ ज्यूं पावक जल शून्यमें। पैठीनि कसै नांहिं ॥ १ ॥ ताते सीले शब्द सब। मिले शुन्यके मांहिं ॥ जन रज्जब गंभीर गति। सुखी दुखी सो नांहिं ॥ २ ॥ साधू श्रवण समुद्र गति। शब्दसु सरिता जांहिं ॥ जन रज्जब गंभीर गति। सोभरि फूटै नांहिं ॥ ३ ॥ रज्जब चलैन क्रोधबल। रहै क्षमां जहां साध ॥ ज्यूं दामिनी दरियाव पडि। करसी कौन उपाधि ॥ ४ ॥ रोस रंकका क्या चलै। क्रोध तहां कंगाल ॥ जन रज्जब जब जीवनें। जरणा जोध संभाल ॥ ५ ॥ रज्जब सबलौं सब लहै। आकल अव्वल अतीत ॥ अपणां बैरी मारि करि। बैठा त्रिभुन जीति॥ ६ ॥ बुधि बारि बहु उरि उरिधि। तहां बैनहनि टेम ॥ रज्जब रज उकटै नहीं। समसा बाचा नेम ॥ ७ ॥ पाणी पत्थर मारिये। वोछै उपजै कीच ॥ गहरे गारिन ऊकटै। सैल समुद्र घो बीच ॥ ८ ॥ रोषहि रोषि रिसाइण ऊपजै। कालहि काटि कलपाष ॥ जरणां जडी चाबी जगि जीवनि। रज्जब जानसु जान ॥ ९ ॥ जरणाजारै जगतकूं। क्षमा खलककूं खाय ॥ सात्विक सुखदेसंगतैं। नर देखो निरताय ॥ १० ॥ बामा विप्रसु व्याध सों। क्षमा करी खल जानि ॥ जरणां अति महँगी करी। औतारहु उर आनि ॥ ११ ॥ सुकृत सरिता सब जरै। कोई साधु समंद ॥ जन रज्जब गंभीर गति। उझलिन डाली बूंद ॥ १२ ॥ गुण इंद्री जारै अजर। जारै जगपति दान ॥ सो रज्जब गंभीर घट। आतम राम

समान ॥ १३ ॥ अजरा जारै एकको । माया मांखी खाय । जन रज्जब जोधार जन । महिमां कहीन जाय ॥१४॥ रज्जब उतरैं मंत्र विष । शीत अगनि सौं जाय ॥ त्यूं पूरहु प्रातिरूकटै । फिर लाग हि कहि आय ॥ १५ ॥ मोर चकोर षात विष वन्हि । पेट पचत पुनि पुष्टि ॥ तैसै साधु असध गुन ग्रासैं । दीन दलतहै दुष्ट॥१६॥

साखी ५२९० ।

परम जरणा दुष्टदातारका अंग ।

सहन साल सुकृत लिये । सैसली पह दहेत ॥ रज्जब अरि उबित रही । माया सुकता देत ॥ १ ॥ असम घालि उरि उधाधिकै । कठिन कसौटी कीन ॥ रज्जब अवगुण सुणि गया । रतन चवदह दीन ॥ २ ॥ घनसौं पारस फोडतूं । लोहा कंचन होत ॥ बैरी परि बभ्रु भये । नमो बडोंका गोत ॥ ३ ॥ रज्जब रईसु काठकी । दीन्हीं दधि मधि आनि ॥ मारे परि मांखण दिया । देखि भलौं की वाणि ॥ ४ ॥ पूरै प्राणर पोरसा । परमारथ सब देत ॥ रज्जब काटे परिकृपा । बुधि बित बधि बधि देत ॥ ५ ॥ कुठार करोती शीश सिल । संदल किया सुगंध ॥ बास लगाई विवन परि । देखि बडहुंका बंध ॥ ६ ॥ माता महँदीपीसतौं । करहर लावै काल ॥ ऐसै परिकै सीकरी । पिसण पाणि पग लाल ॥ ७ ॥ पापी मारै पाथरहुं । धरमी तरुफरु दान ॥ रज्जब दुष्ट दयालका । कहिये कहा बखान ॥ ८ ॥ उत्तम उर अवनिसु सम । गुण किसान नहिं लेत ॥ रज्जब बैरी बीजकूं । सहंस गुना करि देत ॥ ९ ॥ पूरौ पृथ्वी रूप । ऊरै दुखदेनोड ज्यूं ॥ रज्जब खनैसु कूप । नेहनीरअधिकहु बढै ॥ १० ॥ रज्जब कमंद कपासकूं । कठिन कसौटी कौडि ॥ दुख दानहु परि सुख श्रवहिं । रहै नहीं

सुख मोडि ॥ ११ ॥ दुष्टसुदंत समान है। रसना रूपी साधु ॥ अवगुण रूपी गुण करहिं। रज्जब अकलि अगाध ॥ १२ ॥ दुःख दाता दुंदर दुष्ट। साधू सुख संजोग ॥ औषधि आप उठाय करि। रोगहि करैनिरोग ॥ १३ ॥ सब दुःख दार्यो सुख दिया। नहीं आनि सम आन ॥ रज्जब रीझ्या देखिकरि। कहिये कहा बखान ॥ १४ ॥ बकसु बीथी तन शहर। बाणी बकसु नीर ॥ ज्ञान गंगकूं मिलतही। उभै अमल व्है बीर ॥ १५ ॥ बैराग रकी खान सम। विमल प्राण बुधिवंत ॥ कुदाल कसौटी खोदिये। नग अंग देहि अनंत ॥ १६ ॥ पारस पिसण परसत तन पलटै। लगे लोहके राछ ॥ रज्जब जमगुन जन भये। बदले काठर बाच ॥ ॥ १७ ॥ अवगुण ऊपरि गुण करहिं। यहै बडोंकी रीति ॥ रज्जब जारहिं विष बसु। गये जगतसोजीति ॥ १८ ॥ करैं भलाई बुरे परि। तासम औरन कोय ॥ रज्जब रीझै रामजी। घट घट सुजस सु होय ॥ १९ ॥ परमारथ पीडा सहै। भले बुरहुंके मीत॥ रज्जब पर दुख काटहिं। भये विक्रमां जीत ॥ २० ॥ अति उदार दुःख दवन। साहससीलअपार ॥ चतुर रंग रज्जब रचे। यहु विक्रम व्यवहार ॥ २१ ॥ बुरे बुराई नांतजैं। भले भलाई मांहिं॥ प्राणहुंकें पानें पडी। सुरजबछोडहिनांहिं ॥ २२ ॥ अमृत मांहिं विष नहीं। विषमें अमृत नांहिं॥रज्जब कसिये कोटि विधि। निकसै सोजो मांहिं ॥२३॥ सहन शील सुकृत लिए। सांई साधू दोय। रज्जब आतम अवगुणी। तौ पारंगत क्यूं होय ॥ २४ ॥

साखी ५३१४।

सरवगुण अरथी अंग।

रज्जब दीन उरमी कामकी। उपजै अरथ विवेक ॥ ज्यूं नीचे ऊंचे करचलत। डोरीमें बलएक ॥ १ ॥ रज्जब दुष्ट दीनता

कामकी। जेहरिमारगहोय ।' ज्यूं वर्षा बादल मिलैं । आंभे सांभे जोय ॥ २ ॥ रज्जब प्राण पखावजी । पिंड पखावज साज ॥ द्वै दिशिनौ सत मारिये। सो सेवा सुर काज ॥ ३ ॥ रज्जब जीव जंत्री तन जंत्र है । पंच मोरने लाग ॥ उलटे सूधे फेरिये । हरि मेलनकूं राग ॥ ४ ॥ रज्जब त्रिगुण चलावैं गीध ज्यूं । निज जन नटके हाथ ॥ भामा भूमि परै नहीं । तोरीझै नर नाथ ॥ ५ ॥ राम रहम आवहिं सुकाम । जै गुनहुं गालिसुमिरैसु राम ॥ ज्यूं कर द्वै दिशिखैंचैसुकमान । बल ऐकठ होइ मधि बाण ॥ ६ ॥ रज्जब राजसि उपजै वंदगी। सात्विक सेवा पोख ॥ तामस तन-मन मारिये। आतम पावहिं मोख ॥ ७ ॥ लागी अक्षरके अर्थ। लग मात्रासु अभंग ॥ तौ रज्जब सब कामके। जेगुण निर्गुण संग ॥ ८ ॥ अठारै भार अमृत श्रवै। मधुरि खिल्यावहिं शोध ॥ तैसे शिशन सुधामई । रज्जब पैठें बोधि ॥ ८ ॥ रज्जब ज्ञाता गारडी। इंद्री अहि बसि जासु ॥ देखो जमि जीवन जडी। दुष्ट दर्शन भये नाश ॥ १० ॥ रज्जब अहि इंद्री निर्विष करै। दुष्ट दशन करी भंग ॥ बेत्ता वादी बालकहु । विघन न-व्यालहु संग ॥ ११ ॥

सांख्य योगकामत।

जन रज्जब यहु सांख्य मत । जीव सीवन विभाग ॥ जैसे माला सूतकी। सोई मणियां सोई ताग ॥ १ ॥ सांख्य जोग तौहि दमें । एकै जाण्यां जाय ॥ त्यौं रज्जब इक टंक अंग। दूजा नांहिं पाय ॥ २ ॥

व्यभिचार बरदाई अंग।

गोपी कूबरी सुकति बिभीषण। देखो द्रौपदी चीर ॥ विभिचारों इनकी बनि आई। त्यूं आतमां शरीर ॥ १ ॥ शरीर सौं

संसार मिलनकी। बाबै दई बनाय ॥ जन रज्जब यूं आज्ञा मेटै। जीव ब्रह्म व्है जाय ॥ २ ॥ पट्टा डाल्या पंचनैं। विरचे स्वारर्थ साह ॥ सो चाकर किन राखिये। पति शाहूपति शाह ॥ ३ ॥ घर बर छाड्या घण दिहूं। उमहिं मीनत संभाल ॥ हूंझलि हारीसा पुरुष। अब अपणें घर घालि ॥ ४ ॥ विमुख भये संसारतैं। साचा सांई जानि ॥ चरण लगावो बापजी। कीजै दोयन हानि ॥ ५ ॥ रज्जब स्त्री आतमां। प्यंडपुरुष भरतार ॥ उधरी माधौ मित्र मिलि। जबैकिया व्यभिचार ॥ ६ ॥ विषै वंदि बसुधा सवै। नरनारी घट दोय ॥ रज्जब रजा जानिकर। कोई ऐक मुक्त होय ॥ ७ ॥ गोली गातन खाई भली। बाग बपु पद रासुनां नांहिं ॥ रज्जबरजारंजानी प्रभुकी। पंच राति जिये जपि मांहिं ॥ ८ ॥

प्रस्ताविक अंग।

रज्जब समय विष अमी। कुसमय अमृत विष ॥ यथा मधुरै माक्षिका। मिश्री मरता विष ॥ १ ॥ रज्जब शोभै समैं सबै। क्षमा क्रोध कहु मौन ॥ अवसर हांसी रोवणां। अवसर बैठक गौन ॥ ॥ २ ॥ दरजी कबि बागा बिरद। बपु बणता सुणाव ॥ रज्जब घट घटनां कराहिं। चिह रावैन चवाव ॥ ३ ॥ तरुनरु छाया मिहरि निज। येव्है सहज सुभाव ॥ पै रज्जब फलदल बसन। सो लहिये ऋतुपाय ॥ ४ ॥ समय समुद्र रतन दिये। समये इंद्र उधार ॥ समय शुक्ति मुक्ताहु फलै। समये भार अठार ॥ ५ ॥ नारायण निर्जर सहित। गुरु नराधिपति जोय ॥ नुकतै रीझै रज्जबा। भृतकृत परिदत होय ॥ ६ ॥ पारबती पूछ्या नहीं। महादेव मुख मौन ॥ आरति बिन उघड्या नहीं। आदम अहर सु

मौंन ॥ ७ ॥ रज्जब हँसनां रोवनां । चुप बोलना विचार ॥ चारौं नग समये भले । विन अवसर सुनिवार ॥ ८ ॥ समये मीठा बोलना । समये मीठा चुप ॥ उन्हाले छायाभली । ज्यूंव सियालै धूप ॥ ९ ॥ तरुवर सम त्यागी नहीं । त्रिविध भांति सो होय ॥ कबहूं छाया कहूं फलै । कबहु पत झड जोय ॥ १० ॥

साखी ५३४५ अंग १८२ ।

खेलका अंग ।

रज्जब रवाह रयूं रमणरुचि । जोय जुगल लगि मेल ॥ प्राण पिंड ब्रह्मंड माधि । खलक सुखालिक खेल ॥ १ ॥ खेलहिं मेला खडग कसौं । खेलहि खालिक मेल ॥ रज्जब रीझ्या देखकरि । विविध भांतिका खेल ॥ २ ॥

सुर प्रसंगी अंग ।

रज्जब द्वैद्वंद्वर मिलत । उपजै विघ्नरु बाद ॥ नर नारी संजोग सुख । बकता सुरतैस्वाद॥ १ ॥ रज्जब राजहूं रिद्धि बल । सिद्धहूं कैवल सिद्धि ॥ साधूकेवल सांईयां । येही तेज त्रिविधि ॥२॥ रज्जब जतमें जोग सब । धर्म दया रु स्थान ॥ नांव ठांव निर्गुण रहै । मनवच कमकरिमान ॥ ३ ॥

साखी ५३५०अंग १८४ ।

चतुर जवाबी अंग ।

रज्जब धर्म शास्त्रदिलदया । वैद्यक अल्प आहार ॥ कोकशास्त्र कामिनी कथा । लेखायहुसुलझार ॥ १ ॥ दरद बिना दरवेस क्या । पीर बिना क्या पीर ॥ धर्म बिना धर्मी नहीं । अपढन बावन बीर ॥ २ ॥ गुरु गोविंद साधू शब्द । गुन गंजन गुन

ऐक ॥ जन रज्जब देखे सुनें । पातक कटैं अनेक ॥ ३ ॥ रज्जब नीतिनराधिपति । जतही जतमत जाप ॥ सुनि सुकृत प्रजा करै । सो सुख पावहि आप ॥ ४ ॥ काया करि सुकृतकरै । शब्द सकल सुल झार ॥ रज्जब आतम सों उभै । ब्रह्म तिहुं आधार ॥ ॥ ५ ॥ चौरासीआतमबडा । अद्भु बडासुअन्न ॥ धनबडा धर्महिं लगै । उन मन लागे मन्न ॥ ६ ॥ उत्तम आतम देह है । उत्तमही गति साध ॥ उत्तम संगति कीजिये । उत्तम हरि आराध ॥ ७ ॥ च्यारि दाग चहुं जुगमें । च्यारि वेदकी साखि ॥ जारि गाडि परवाह जल । भावै छायाराखि ॥ ८ ॥ सीता कुंतीअरद्रोपदी । चौथी गौतम नारि ॥ तारालोचमंदोदरी । सती सुये संसार ॥ ९ ॥ जती भ्रष्ट जतके गये । सती सुकृत नास ॥ रज्जब राजा नीति गत । तीन्यू जांय निराश ॥ १० ॥ तन औषधि आकारकी । मन औषधि सु शब्द ॥ आतम औषधि नाम निज । सीखी साखी पद ॥ ११ ॥ ॐकार अविगति नग । बपु बीरजबपहोय ॥ गुरु शब्द निज ज्ञान है । सतजत निपजहि दोय ॥ १२ ॥ प्यंड प्राण पालक इसै । नीर नाज निज नांव ॥ ज्ञान गुरुसो गठनकूं । चतुर्बस्तु बलि जांव ॥ १३ ॥

साखी ५३६३ ।

अथ निंदा स्तुतिका अंग ।

सखीन सांई सारिखा । सूमन ऐसाऔर ॥ रज्जब देख्या निर्णयकरि । समेंसुद्रभखि ठौर ॥ १ ॥ रविमें रावन मारिये । अण्डोंके प्रतिपाल ॥ रज्जब नांहीं रामसा । दूजा दुष्ट दयाल ॥ २ ॥

अमर अपराधका अंक ।

तन तुच्छ जाता देखिये । रहता मन अपराध ॥ रज्जब नांहीं कालबस । अघआरि अमर अगाध ॥ १ ॥

भोले भावका अंग ।

भोळे भाई मिळे भगवंत । थापन उथपैहि साधूसंत ॥ अश्महि सेवैं अबिगतिहेत । टोटाकहतसुरोटीदेत ॥ १ ॥ सत्र मित्र काशीरहै । भोला भावसु मांहिं ॥ रज्जब रंचक भेद परि । तीनि मिले त्यूं नांहिं ॥ २ ॥ भोलेकूं भोजन मिळै । जै सुखिमेलहि रेत ॥ डाहेकूं डगलों गिलत । रज्जब राखा देत ॥३॥ भगवंत भोला भावले । सेवा सुफल सुजान ॥ रज्जब बिचिके बाद सब । खेचर खोटे प्राण ॥ ४ ॥ चोर पै वारहुनें लिया । बपु बंधण सोखोळि ॥ मूवा आया मुलकफिर । रज्जब लहणी भोळि ॥ ५ ॥

साखी ५३७० ।

रतन माला अंग ।

सतयुग सांण समानहै । ब्रह्म अगनिलेछानि ॥ रज्जब निपजै मिश्री मन । हूंहिं सोळहे जानि ॥ १ ॥ पनवहुं मांहै पवन सत्य । सुमिरण भरया समीर ॥ तेहीं चढि आवहि शब्द सत्य । फरमावैगुरुपीर ॥ २ ॥

लांबीका अंग ।

भगवंत भक्ति मांहै सदा । सोई सदगति साध ॥ रज्जब आतम रामळग । सुमिरैअंगअगाध ॥१॥ रज्जब आतम रामसों । सदासु

सेवक भाय ॥ मिल्याअमल मिळतारही । यहुमतमनठहराय
॥ २ ॥ दैवसुदेता नाथकै । लेताथकैनदास ॥ रज्जब रसरसिया
अमित । जुगिजुगि पूरैप्यास ॥ ३ ॥ रज्जबराम रुचैसदा ।
अंतरि व्है न अहुंख ॥ भगवंत भोजन भावता । मेरे भीतरि भुख
॥ ४ ॥ बेहद भजिबेहदमतै । हद्काहेत उठाय ॥ रज्जब रमिये
रामसौं । अतिगति लांबै भाय ॥५॥ आतमइळ आरति अगनि।
मिहरि मेघ घिवधार ॥ जन रज्जब दोऊ अथक । जुगिजुगि यज्ञ
अपार ॥ ६ ॥ रज्जब उदधि अगाधमें । सरिता आतम जांहिं ।
एकमेक चलती रहै । डेरैडेरा नांहिं ॥ ७ ॥ सेवक सितिया जोति
जळ । मिलिमिलि एकसुहोय॥रज्जब अज्जब रूपमें । सेवा स्वाद
सुहोय ॥८॥ सर्वंगी सांईसहित । रसरूपी रसएक ॥ रज्जब सोधे
पाइये । शक्तिरु स्वाद अनेक ॥ ९ ॥ ज्यूं दृष्टयूंमें दृष्टिबहु । बुद्धि
विद्या अरुवेद ॥ त्यूं रज्जब जीव ज्योतिमें । एकमेक भिन्नभेद
॥ १० ॥ बादळ बिजुली सलिलसमीर । निर्गुण सगुण धरैं
शरीर ॥ शून्यमई सेवाकूं दूजे । यहिविधि साधूसांई पूजे ॥ ११ ॥
रीरेहीरा बेधिये । कै प्यंडकै प्रकाश ॥ यूंहीं मन उनमन मिलै ।
रज्जब किया विमास ॥ १२ ॥ नांमनाज सुमिरहि बर्वहिं । थोडा
बहुतसु होय॥ रज्जब साधु किसाणकै । भावन दूजा कोय॥१३॥
मनमाया धापै नहीं । क्षुधा जो बधती जाय॥यूंहीं रज्जब रामकूं।
भजिये लांबै भाय ॥ १४ ॥ सरितों समुद्रन धापई । इन्द्रीतृप्तिन
काम ॥ तैसें भूखन भागई । रज्जब रटतूं राम ॥ १५ ॥ अग्नि न
काष्ठसौं तृप्तिहो । लोचन तृप्तिन रूप ॥ तैसें रज्जब रामसौं।
रुचिहै तत्व अनूप ॥ १६ ॥ मारूकै थलजल पडै । पय
पानी प्रकटनभास ॥ तैसें रज्जब साधकूं । राम भजनकी
प्यास ॥ १७ ॥

साखी ५३९० अंग १९० ।

धीरज सहज स्वातिका अंग ।

शनैः संथा शनै. पंथाः । शनैः शनैः गिरिपर्वताः ॥ शनैः गुरु शनैः चेला । शनैः ज्ञान प्राप्त ॥ १ ॥ दादू निबहै त्यूंचलै । धीरै धीरज माँहिं ॥ परसैगापीवएकादिन । दादू थाकैनांहिं ॥ २ ॥ दादू सहजें सहजें होयगा । जेकछु रचिया राम ॥ काहेकूं कलैपमरै । दुःखीहोतबेकाम ॥ ३ ॥ रज्जब बेगाबेग न पाइये । बेत्ता करो बिमास ॥ श्रावणहूमें आवई । स्वाति सु चौथै मास ॥ ४ ॥ तीन मास बरसा बिपुल । वाणीवन प्रकाश ॥ पै मन मुक्ताजहि नीपजै । स्वातिसु चौथे मास ॥ ५ ॥ ब्रह्माण्ड पिंड वर्षा विपुल । पै स्वातिनीरतों पिष्टि ॥ मुक्ता मनफलसमहुंके । दुरमिकन दीसैं दृष्टि ॥ ६ ॥ नीरनिर्मल नभनिर्मल । तिनकेनसु घासु आश ॥ शशिहु श्रवै शरदूऋतु । फलपति चौथै मास ॥७॥ धीरैं धर्मसु ऊपजै । धीरैं ज्ञानविचार ॥ धीरैं बंधन सबखुलैं । धीरैं हरिदीदार ॥ ८ ॥

निकारिज नपुंसक अंग

ब्रह्म व्यौम मांहैं रहै । तत्ववेत्ता तनतार ॥ रज्जब गिरयोंन गोय परि । कोइन पावनहार ॥ १ ॥ रहैन कँवला केलिमधि । शब्द सुमिरचों मांहिं ॥ मन कपूरकूं दोइघर । बिछुटयुं लहिये नांहिं ॥२ ॥ उतरै उडिग अकाशतैं । करतैं जाय कपूर ॥ त्यूं मन टूटा द्वै दशा । लहिये निकटन दूर ॥ ३ ॥ अमलचेतसु आतमा । सूई सुरति तहां जाय ॥ जन रज्जब सोयूं गलहिं । सोधे लहिये नांहिं ॥४॥ आतम तूटैं रामसों । जैसें उडिग आकाश॥ तौ तिन कीआवसकहा । केतकबेरउजास ॥ ५ ॥

साखी ५४०३ अंग १९१।

खालसेका अंग।

देवल ग्रुमठ देह सब। लिखी लिखाई साखि॥ तहां पढै पठि सीखली। ग्रुरुक्यूं रखैसु राखि॥ १॥ अचेत आतमा अवनिगाति। पड्या बचन वितलाध॥रज्जब पाया पारखूं। किसका करै अराध॥ २॥ अपने अपने रंगमें। राते माते प्राण॥ रज्जबको मूरख नहीं। समझे सबै सयांण॥ ३॥ करि काटा छिमसतागि धरिहिं। सोई होय अनूप॥ बारं बारुसुबेन परि। तौ क्यूं नहोय रसरूप॥४॥ दादू दरिया रामांनंदकी। दहदिशि आइ मिलैं बहिवंदी॥ गाजै घोरै जबलग दूरि। मिलत सुमुखि बौलैं नहिं मूरि॥ ५॥ मथुरामें मालाखुली। तिलक ऊतरे मंथि॥ रज्जब छूटै रामजन। पडिदादूकैपंथि॥ ६॥ बपु बिगंधजो जीवतहुं। सुसुयेहू क्यूं न गंधाइ॥ रज्जब देखो दीपदिशि। बुझतन सूंघा जाय॥ ७॥ कुंभार कुंभारी मातुपितु। खानांमईसुखोडि॥ रज्जब बालक बाल बय। बसत सकेनाहिं जोंडे॥ ८॥ स्रकूचंदन सर्पहु जड्या। मिनषतहाँनहीं। जाय॥ अहिसु आदम्यूंनां बनै। पासगये सो खाय॥ ९॥ भगतबछल सुरही प्रभू। सुमिरयां करहिं संभाल॥गोधाज्ञान सनेह गति। काढहुं केशरि काल॥ १०॥ काया कुंभन निकसहिं। नारू नागसु और॥ ऐकसु चरि चुगि बहुडिह। ऐकहुकी नहिं ठौर॥ ११॥ नींदन आवहिं ठौर तिहुं विषय बंदगी बैर। ज्ञानी देखो ज्ञानकरि॥ रज्जब कहीन गैर॥ १२॥ ग्रुरुन रयंदतैं गतनर जांहीं। तिनका सोचन उपजै माहीं॥ तरुवर पत्रशीशतैंकेशा। त्रुच त्रुटोंकूंकोनअंदेशा॥

॥ १३ ॥ भार सहित भार धरहलका । भार उतरयूं भारी ॥ बिकट कला बिकट गतिब पुमै । वेत्ता लेहु विचारी ॥ १४ ॥ ऐक जांण पणें अरु चपलता । मेटी मतकी लीक ॥ भूखन भासै भरत हरि । पांणी लगाई पीक ॥ १५ ॥ बालै बूढे ऐक गति । प्रत्यक्ष देखो जोय ॥ दोइजअमावसनिकट । शशिसु रूपी होय ॥ १६ ॥ दृष्टि सुखी मनबुद्धि व्हे मांहिं । तौ लिखतमसंचर नांहिं ॥ चतुर्बस्तुमें बिछुटै कोय । रज्जब पाठ शुद्ध नाहिं होय ॥ १७ ॥ पहुनेंकीन करीपहुंनाई । घरके भगति भूलिगये भाई ॥ तब महमान करी महमानी । उलटी कलान जाय बखानी ॥ १८ ॥ अठारह भार छऋतु लिए । उदै अस्त व्यवहार ॥ उन्हालूं स्यालूं दोय दिपैं । तामें फेरन सार ॥ १९ ॥ काया कुंभ जलसों भरे । ज्ञान तेल भरपूरि॥मारुत बाती शब्द उजाला । अचेत तिमिर व्है दूरि ॥ २० ॥ अगनि जीवतूं जीवते । अगनि मुवों मरि जाय ॥ दोन्यूं दिपहिं दुणिदासिरि । नरदेखोनिरताय ॥ २१ ॥ देखीसमैदुकालमें । साहिबकीव्हैदीठि ॥ रज्जब सन्मुख कौनसों । कहो काहिदे पीठि ॥ २२ ॥

अथ पुस्तक नांमा लिख्यते ।

संदेह सत्र सत्यशास्त्र । आशंका अभिनाश ॥ जगत गुरु जग जोगमत । परम तत्व प्रकाश॥१॥खानि पंचमी अमर फल। आतम ब्रह्म दलाल ॥ अंतक इंद्री अघनिके । प्राणहुंके प्रतिपाल ॥ २ ॥ तलबतसल्लिहतालिबां । चिगुफतमऔसाफ ॥ रज्जब सैर समुद्र है । मिसलसि खुरद मुसाफ ॥ ३ ॥

साखी ५४२८ अंग १९४ ।

इति साखी सम्पूर्णम् ।

समग्र साखी जोड ५४२८ अंग जोड १९४ ।

अथ श्रीस्वामी

रज्जबजी महाराजके पदलिख्यते ।

राग रामगिरी ।

सतगुरु सोजोचाहिबिन । चेला बिनकीया यूं परिदोषनदी-
जिये । मिलि अमृतरस पीया ॥ टेक ॥ ज्यूं शशिके सरधा नहीं ।
कोइ कमल बिगासै ॥ मुदित कुमोदिनि आपसों । बांधी उस
आसै ॥ १ ॥ ज्यूं दीपकके दिलनहीं । कोपडैपतंगा ॥ तनमन
होमै आपसों । मोडैनहिंअंगा ॥ २ ॥ ज्यों कमल कोष आपै
खुलै । मनमधुकरनाहीं ॥ भँवर भुलाना आपसों । बींधा यूं
माहीं ॥ ३ ॥ ज्यूं चंदन चाहै नहीं । कोई बिषधर आवै ॥ जन
रज्जब अहि आपसों । सो सोधिर पावै ॥ ४ ॥ ॥ १ ॥ ॥
प्रीति गुरु गोविंदसों । ऐसी विधि कीजे ॥ आदि अंत मधि ऐक
रस । जुगजुग सुख लीजे ॥ टेक ॥ प्यंड प्राण न्यारा भये । सो
नेहन नासै ॥ बेलिकलीज्यूंजायकी । द्रूट्यों प्रकाशै ॥ १ ॥
ज्यों हनुमंत हितजत सों जड्या । सदई सो साचा ॥ हाक सुनत
नरहीजव्है । अजहूंफुरैबाचा ॥ २ ॥ ज्यूं दृढ डोरी गुण आत्मा
जीवत मृतपासा ॥ गुरु गोविंद सों सुत्रयूं । सुणि रज्जब
दासा ॥ ३ ॥ ॥ २ ॥ संतोबाटबटाऊमाहीं । सो आपनै

समझै नाहीं ।। बिरला गुरुमुखपावै । सो फिर बहुरिन आवै ॥ ॥टेक॥ मति मारगमें गवनां । तहां नाहीं तीन्यू भवना ॥ ओ३म् ॐकार अलेला । सो आप आपमें खेला ॥ १ ॥ सेरी समझ सया ना । यहु आतम अगम पयाना । यूं चलि चौथै आवै ॥ सो परम पुरुषकूं पावै ॥ २ ॥ तहां पंथ पथिक पति एकै । यहि रमिवै रंगविवेकै ॥ जन रज्जब रह पाई सो आसन करैन भाई ॥ ३ ॥ संतो बसुधा बिरखि समाई ॥ अद्भुत बात कहीको मानें । कौंण पतीजै भाई ॥ टेक ॥ मूल डालसों अधिर अधिरपा । बेलि कहां बिल बांवै ॥ १ ॥ रहता रूंख फूल फल नाहीं । त्रिगुनन गूंद परकाशै । दीरघ द्रुम देखैगा कोई ॥ छाया तिमिरन भासै ॥ २ ॥ ककल विरछ कंठिक करम नाहीं । पारजात पद पूरा ॥ जन रज्जब सो जुगि जुगि निहचल । सबकी जीवन मूरा ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ संतो अद्भुत खेल अगाधा । सो खेलै कोई ऐक साधा ॥ टेक ॥ जोग तरवरत्व चाबिहुना देख्या विहंगनवठन पावगनगा।ठिकूंसोधै । सो पंचन कूंपर मोधै ॥ जो बाइबैल गहिलादै । सो बित बापिन दादै ॥ १ ॥ जो तेज माहिं तृण राखै । सो महिमाकौनसुभाषै ॥ २ ॥ जो पानीमें घृत काढै ॥ सो माति सबतें बाढै ॥ ३ ॥ धर पृथ्वी पुंडि दूजै । सो रज्जब रामति बूझै ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ अब मोहि नाचत राखहु नाथ । च्यार प्रहर च्यारों जुगनाच्यो ॥ पर परवसि पर हाथ ॥ टेक ॥ तृष्णा ताल पखावज पाखण्ड । स्वर स्वारथ सब बाजे ॥ क्यूं नरकुमति उपंगई राखा । रागरु दोष निवाजे॥ १ ॥ नाना नेगपहर पगनूपुर ॥ चंचल चरण चलाये । चौरासी घट भेष रेष सोई ॥ सब संगीत खिलाये ॥ २ ॥ फोरि फिरयो मान मनमानी ॥ हुरमि हेत सुडारी । स्वर्ग भूमि

पाल परे पग ॥ भीखन लही भिखारी ॥ ३ ॥ रज्जब रम्यों रजाकी कर्मगति । कौलन कुजन पावै लाल ॥ रीझै राम दरस दतकीजै । पूरौ तौ दीजै प्रतिपाल ॥ ४ ॥ ॥ ६ ॥ बुद्धि बेलि लो बुद्धि बेलिलो । निपजै भागसु भेलीलो ॥ बाइक बीज भाव भवैबाह्या । अंकूरआदिउदैलीलो ॥ टेक ॥ जल सोई जुगति माहिला माली। नृपति क्रिया निदणैं लीलो ॥ पान प्रकाश ताक तत्व तूरूं । रूख रटणि बिल बैलीलो ॥ १ ॥ अहिनिशि बेली बधै विधि लागी । बाइन बिषै बहे लीलो ॥ फहम फूल फूली फल कारन । मन मधुकर मिल आवहिं लो ॥ २ ॥ बाडी विरह विघन कछु नाहीं । मृग माहैं नाहैं आवहि लो ॥ बागवान पुनि रहै बधिक विधि । बैरी बेलिन भावहिं लो ॥ ३ ॥ फलहरि दर्शलता तहिं लागे । रखवारे व्यौं सावहिं लो । जन रज्जब जुगि जुगि सो जींवै ॥ ऐन अमर फल खावहिं लो ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥ सूक्ष्म सेव शरीरमें । कोई गुरुमुख जानैं ॥ मन मृतक तन पैठि करि । पाति पूजा ठाणें ॥ टेक ॥ पछिम पाटक हुको रचै ॥ सत्य सेवा साजै । विविध भांति बहु बंदगी ॥ विचि ब्रह्म विराजै ॥ १ ॥ साच शील जल सापडै । सुचि संजम साचा ॥ व्रत उनमनी अहि निशा । मन मनसा वाचा ॥ २ ॥ पाती पंच चढाई लै । सत्व सुकृत सुगंधा ॥ धूप ध्यान ज्ञानै दिया । यहु आरंभ धंधा ॥ ३ ॥ घंटा घट रट रामकी । ताली तत्व ताला ॥ बाणी। बेण मृदंग मत । सब सब्द रसाला॥ ४ ॥ सर्वस्वले आगे धरै । भजि भोग सु लागै ॥ युग युग जगपति आरती । जीव जूठणि मांगै ॥ ५ ॥ दीन लीन साचै मतै । झरके डंडोता ॥ भय भीत भयानक भगत सो। निज निर्गुण न्योता ॥ ६ ॥ सारी सेव शरीर में । सब करै बखाना ॥ रज्जब राम रंजाय यूं। जन

जोति समाना ॥ ७ ॥ ८ ॥ संतो मनमोहन मिलि नावै। ज्यूं बलै बघूला आंधी माहीं। निकसि न भरमण पावै॥टेक॥ ज्यूं वृक्ष बीज परसि बपु छहनी । बसुधा माहिं समावै ॥ उदै अंकूर कौन विधि ताको। कैसे अंग दिखावै ॥ १ ॥ स्वाति बूंद जो सीप समानी। सो फिरि गगन न आवै। अलि चलि कमल केतकी बींधै। अन्य पहुपनहिं धावै ॥ २ ॥ अम्मल बेत सुई जो पैठी सो बागेन सिवावै । रज्जब रहै राम सौं मन यूं। समरथ ठौर सुभावै ॥ ३ ॥ ९ ॥ यूं मन मृतक व्है रहै। तौ मारै नाहीं ॥ माया में न्यारा रहै । जीव जगपति माहीं ॥ टेक ॥ ज्यूं मुरदा अरथी पड्या। बरताणि बहुबानी। औरोंकी भाँवर भई। उन कछू न जानी ॥ १ ॥ निष्कामी न्यारा रहै। प्रतिमा परि खेलै ॥ बरतनि बरतै बिगत सौं। उर आपन मेलै ॥ २ ॥ बाजीगरकी पूतली। बाजीगर हाथै ॥ रज्जब राखै त्यूं रहै नहीं अवगुण साथै ॥ ३ ॥ १० ॥ बधिक विवेकी प्राण है। सति साध शिकारी ज्ञान बानकर कवलमें । ध्वनि ध्वनिहि धारी ॥ टेक ॥ आखेट वृत्ति आतम लई। दिल दया सु लोपी ॥ बपु बसुधा नौखंड में परि ॥ बुधि बावरि रोपी। १ ॥ बैठेमूल सु मारतै। पारधी परिप्राना ॥ पंच पचीसोंमृगलालाये लुक बाना ॥ २ ॥ अंगि अहेडी आकरे उरि आवनि चढाई ॥ मारहि स्यावज सोधि सब। कुलि करम कसाई । ऐसे दुष्ट सु उद्धरैं। तनमनगुन द्रोही। जन रज्जब कहै रामजी ॥ सो पावै मोही ॥ ४ ॥ ११ ॥ रेप्राणी यहु खेलि शिकाररे। बन वपुढूँढि स्यावजहू माररे ॥ टेक ॥ मन मृग माहिं तीसतहिं लाररे। चेतनि चीता त्यांह परि डाररे ॥ १ ॥ गुण गज हस्ती अनल अहाररे । तृष्णा तीतर वाज विचाररे। ॥ २ केशरि काम अधिक अधिकाररे। शारदूल सुमिरन सुखि

जाररे ॥ ३ ॥ ये आयुध सुणि समझि खिलाररे ॥ जन रज्जब उठि हो हुशियाररे ॥ ४ ॥ १२ ॥ रेमन सूर संत क्यूं भाजै ॥ मुँह म्यलि भयूं मरण जे डरपै। तौ दुहुं पवाडा लाजै ॥ टेक ॥ उलटयूं उजह कहो क्यूं पावै। जब लग दलहि न गाजै। मरतो मानि जीवतौं जाहिर। जनम मरन अघ माजै॥जै सेवक संकट से डरपै। तवै स्वांग कहां छाजै। देइ उठाय फौज में आपै। तब सब बीर बिराजै ॥२॥ अरिदल जीति सकल सिर ऊपर। सूर सरोतरि गाजै ॥ रज्जब रोपि रहयूं रणमांहै। नाम नगारा बाजै ॥ ॥३॥१३॥ रेमन सूर शंक क्यूं मानै। मरणेमाहिं येकपग ऊभा ॥ जीवन जुगतिनजाने ॥ टेक ॥ तन मन जाका ताकों सौंपे ॥ सोच पोच नहिं आने। छिन छिन होय जाय हरि आगे ॥ तौभी फेरि न वाने ॥ १ ॥ जैसे सती मरैं पति पीछैं। जलतो जीवन जाने ॥ तिल में त्याग देय जग सारा। पुरुष नेह पहि-चानें। नख सख सकल सौंज सिर सहता। हरि कारिज परि वानें। जन रज्जब जगपति सोई पावै। उर अंतरि यूं ठानैं ॥३॥ ॥ १४ ॥ रेमन सूर समैं क्यूं भागै। ताथे मरण मांडि हरि आगे ॥ टेक ॥ सूरा सिर परि येलै। तब राव रंक करि पेलै। जब दूजा दिल नाहीं ॥ तब डाकि पड्या दल माहीं ॥ १ ॥ चिर-कालहु कोई जीवै। तब सार सुधारस पीवै। ते चाकरि चित माहीं जे चोट मुँह मुँह खांहीं ॥ २ ॥ जब उतरि उतारै झूझै। तब ज्या-पक सबहीं बूझै। जब सूरा सिर डारै। तब रज्जब राम सुधारै ॥ ॥ ३ ॥ ५ ॥ रेमन ऐसे राम कहीजे। मरण उरै मरि प्राण पतीजै ॥ टेक ॥ जैसे सती सकल तजि बोलै। निहचल राम कहीं नहिं डोलै ॥ १ ॥ जो पहले सिर त्यागै। सोरण संग्राम न भागै ॥२॥ मरजीवा मरि समुद्र समाई। सो रज्जब नग निरखै जाई ॥ ३ ॥

॥ १६ ॥ संतो मरनै मंगल मीठा ॥ सो गुरु सुखि बिरलै दीठा ॥ ॥टेक॥ जो प्रथम मांडते मूये ॥ सो राम कहण कूं हूये ॥१॥ दूजे देहसु त्यागी सो आतम रामहिं लागी ॥ २ ॥ तीजे आतम भूलै । तिनि सुरति सुखाया मूलै । चौथे चिंतन कोई । तहां रज्जब येक न दोई ॥ ४ ॥ १७ ॥ पहले दुःख पीछे सुख होई । ताको सहज कहैं जन कोई ॥ टेक॥ ज्यूं जी भई पैठावै पाठ । अहि निशि दुःख अंतर गति गाट । पढै पाठ पीछे सुख जान । सहजैं पढै जीभ कूं वाणि ॥ १ ॥ ज्यूं कुरंग कसणी में आणी । दगध्यूं तजै बाहिली बाणी । संकट पड़ि मृग मनुष्य मेल । पीछें भया सहज का खेल । जैसी बिपत्ति बाज सिर होय । तिल तिल त्रास रहे मति सोय ॥ पहिले कठिन कसौटी खाय । पीछे सुकता आवै जाय ॥ ३ ॥ मन इन्द्री ऐसी विधि साधि । सबसौंतोरि नांव विचि बादि । रज्जब संत असहज समाई । पीछै मिलै सहज कै जाई ॥ ४ ॥ १८ ॥ जीव जुदा जगदीश में । सो जानि न जाना । अंतरही अंतर रह्या माया मन माना ॥ टेक ॥ ज्यूं अक्षर परचै आंखि व्है । पै अरथ न आवै । ज्यूं प्राणी पिंडहि रचै । पति परखन पावै ॥ १ ॥ शून्य स्वरूपी राम है । ओ ॐकार सु आभा । चितचातक अटकैतहां वित बूंद सु लाभा ॥ २ ॥ प्राण पिंड रस पोखिया । पिया पंचों भाया । रज्जब कीडै कडव कै । कण स्वाद न पाया ॥ ३ ॥ १९ ॥ संतो मन न्यारा मत माहीं । साखी शब्द सीख सतगुरुकी पापी परसै नाहीं ॥ टेक ॥ साधू ज्ञान महा मिश्री मत । बंश खाप खटकीने मीठेसंग सु मोलि बिकाणें । अंति काढि सोदीने ॥ १ ॥ बणें विश्वंभर मोती माणिक । मनकै सूत पिरोये । अरसपरस अरु बेग रदीसैं । प्राण प्रवीण सु रोये ॥ २ ॥ मोमन फटक हरीजस हीरा । सन्मुख सोई रंगा । जन रज्जब पडदै सो पलकै । काढै

कपटी अँगा ॥ १ ॥ २० ॥ रामराय अइया मन अपराधी । जोय जोय बात जीव छिटकावै । सोई उलटि इनणि नांधी ॥ टेक ॥ जासों कहो पलक मति परसै । सोई फेरि इन खाधी । निश दिन निकट रहत नित निरखत । मनकी घारतन लाधी ॥ १ ॥ यहु मन जौध जीव परि बैठा । पंच बाण सर सांधी । मानेंनाहिं शब्द सुणि तेरा । काढि रह्या यूं कांधी ॥ २॥ छलबल बहुत ज्ञान गुन ऊरमै । और महामन स्वादी । रज्जब कहै राम सुणि चुगली । कृपा करै मन बांधी ॥ ३ ॥ २ ॥ रामराय महा कठिन यहु माया ॥ जिन मोहि सकल जग खाया ॥ टेक ॥ इन माया ब्रह्मा से मोहे । शंकर सा अटकाया । महाबली सिद्धरु साधक मारे ! तिनका मान गिराया ॥ १ ॥ इन माया षट्दर्शन खाये । बात निजग बौराया छलबल सहित चतुर जन चकृत । तिनका कछू न बसाया ॥२ ॥ मारे बहुत नाम सूं न्यारे । जिन यासों मन लाया । रज्जब मुक्ता भये माया सों । जोगहि राम छुडाया ॥ ३ ॥ २२ ॥ रामराय राखि लेहु जन तेरा । कोई नाहिं बुद्धिबल मेरा । मन मैमंत फिरै माया संग । घर आवै नहिं घेरा ॥ टेक ॥ पंच प्रचंड प्राण महि पैठे । घरही में घर घेरा । निशि दिन निमष हेत नहिं न्यारे देय रहे दिल डेरा ॥ १ ॥ बाहरि विघ्न बहुत विधि बैठे । पर कीरति विचिपेरा ॥ सुनहु पुकार सुरति करिसांई । दुःख दीरघ बहु तेरा ॥ २ ॥ ये सब मारि मिहर सोंभागै । तब जाय होय निबेरा॥ आनउपाय वोतनाहिं जीवकूं । जन रज्जब सबहेरा॥ ३ ॥ ॥ २३ ॥ भक्ति भावै राम भक्ति भावै । होहि कृपालतौ प्राण पावै ॥ स्वर्ग पाताल मध्यलोक मागूं नहीं । और दतदान नहिं अंगि आवै ॥ टेक ॥ भक्ति भोहरन भगवान बा भक्तिकै । सिधि नवनिधि भक्तिमाहीं । सो देहुदाता करतार करुणामई । दास-

कै आसउर और नाहीं ॥भक्तिमैं मुक्ति पदार्थ सब सहित। भक्ति भगवंत नहिं भेदभीना ॥ परम उदार पसाव सोकीजिये। दान दीर्घ पावै सोदीना ॥ १ ॥ भक्तिभंडार भीतरिभरि सकलनिधि। तुम्हबिनाकौंन यहु मौज होई ॥ रज्जब रंककूं रहमकरि दीजिये। और ऐसानदातार कोई ॥ ३ ॥ २४ ॥ संतोस्वांगमारियेकेखै। झूठा रोष करै मति कोई ॥ कामउजडतादेखै। दाढी मूंछ केशकरि कानें ॥ कामनिरूप बनावैं। नारी व्है नारीकूं भुगतै। यूं अपराधक मावैं ॥ १ ॥ काया रासि राखिबे कारण। गुरु सहनांदे छाये ॥ सो देखत सब बाटल्लु टाई। सबल सजाइ सपाये ॥ २ ॥ काठों चढि मांटीके लिए। कहुकिन विषय कमाई। मतक स्वांग भांडि इन भगतों। रज्जब भक्ति गँवाई ॥ ३ ॥ २५ ॥ संतो स्वांग सरै क्या काम। सौंज सुफल साचे मग चलतांनि शतारै निजनाम ॥ ॥ टेक ॥ शील रहै संयम व्है प्राणी। भक्ति किये भवपारा ॥ ज्ञान गहै तनमनकूंमारे। बानें क्या उपकारा ॥ १ ॥ दीन हुए द्वंद्वरम ति नाशै। सेवा सब सुखदाई ॥ प्रेम प्रीति परमेश्वर मानैं। भेषों में क्या भाई ॥ २ ॥ छाजन भोजन सिर ज्याल हिये। बिन रच नामें कछु नाहीं ॥ तोये बरण करैं किस ऊपर। क्याहै दर्शन मांहिं ॥ ३ ॥ नामहीतिरैत्रिगुणीमाया। नामनिरंजन पावै ॥ जन रज्जब जीव नाम विहूंणां। झूठाझूठबणावै ॥ ४ ॥ २६ ॥ संतो स्वांग करै क्या जानि। नाम विनानाही निस्तारा ॥ और सकल विधि हानि ॥ टेक ॥ शिव विरंचि मुनि नाम दृढावै। नामही नारदशेषा ॥ उनकीसमझिनाम मनलागा। कौनकरै भरम भेषा ॥१॥ बेदकुरानदृढावैंनामही। नामही साधु सयाना ॥ सोई नाम नितायलियानिज। कहाकरै कहुबाना ॥ २ ॥ नामलिए

सरै सब कारिज। नाम निरंजन रीझै॥ जन रज्जबजीवनाम बिहूनां। कोटि स्वांगनाहिं सीझै॥ ३ ॥ २७॥ संतोभेष भरमकछु नाहीं। छह दर्शन छयानवें पाखंड। भूले परपंचमाहीं ॥ टेक॥ स्वांग सलिल संपूर्ण दीसै। मृगतृष्णां मन धावै ॥ नाम नीरतामें कछुनाहीं। दौडि दौडि दुःख पावै ॥ १ ॥ शीतकोट माहैं छिपि बैठें। कहौ वौत क्या होई ॥ तैसी विधि दर्शनमें पैठें। कालन छोडया कोई॥ २॥ सकल चितरचिरमीकी पावक। मन मरकट सब सेवैं॥ जन रज्जब जाडा नाहिं उतरै। उर आंधे जब देवै॥ ३ ॥ २८॥ दर्शन साचजु साँई दिया। आदू आप उदरमै कीया॥पिछला सब पाखंड पसारा। ऐसैं सतगुरु कहै हमारा॥ ॥ टेक॥ सुनति झूठ जुबाहर काढी। कपट जनेऊहाथैं बाँटी॥ मनसुखिमुद्रा मिथ्यासींगी। भरमभगौहा धींगाधींगी॥ १॥ कपटकलाजैनहु जगि ठाटी।फाडि कान फोकट सुखिपाटी॥ परपंच माला तिलक जुबानै। यहांही आय देहीपरि ठानै ॥ २ ॥ षट्ट दर्शन खोटे कलिकीने। अलिपल आय इलापरिलीने॥जन रज्जब सो मानैं नांहीं। पहली छापनहीं इनमाहीं॥ ३ ॥२९॥ संतो आवै जाय सुमाया ॥ आदिन अंत मरै नहिं जीवै। सोकिनहुंनाहिं जाय॥ टेक ॥लोक असंख्य भयेजा मांहीं।सोकहि गर्भ समाया॥ बाजीगरकी बाजी ऊपर। यहुसबजगतभुलाया ॥ १ ॥ शुन्य स्वरूप अकलिअविनाशी। पंचतत्वनहिं काया॥ अवतार अपार भये आभुज्यूं। देखत दृष्टि बिलाया ॥२॥ ज्यूं मुखयेक देखि द्वै दर्पन। भोलौं दशकर गाया ॥ जन रज्जब ऐसी विधिजानें। ज्यूं थात्यूं ठहराया ॥ ३ ॥ ३०॥ अवधू कपटकला एक भारी॥ यूं सतगुरु साखी बिचारी॥ षट्ट दर्शन दीर्घ ठगबैठे। कालरूप व्यापारी॥ टेक॥ स्वांगी सबै स्वांगदैलीने। बैबिचिने जाधारी॥

ऐसी साटिभई सबऊपरि । सौंज सिरोमणिहारी ॥ १ ॥ बांधिकिये बसिबैल विचारे । तपतीर्थ कैलारी॥ऐसें धरचा काल व्है बैठ्या । लांबी पासिपसारी ॥ २ ॥ कुल बांधेकृत्तम सौं कसि कसि । मन बचकर्मविचारी॥स्वर्गनर्क मधिमही ऊपरि । यूं ठगि करी ठगारी॥ ॥ ३ ॥ सुरनरनाथि दिये गुंठ्यूतलि । पीठ्यूं छई सहारी ॥ जन रज्जबजो इनसे मुक्ते । तिनऊपरि बलिहारी ॥ ४ ॥ ३१ ॥ संतो ऐसा यहु आचार । पाप अनेक करै पूजामें ॥ हृदयेनहीं विचार ॥ टेक ॥ चीटीदश चौकैमें मारै । घुणदश हांडीमाहीं ॥ चाकी चूल्हैजीवमरैंजो । सो समझै कछुनांहीं ॥ १ ॥ पाती फूल सदाही तोडै । पूजनकूं पाषाण ॥ पचनपतंगे होंहिं आरती । हिरदै नहीं बिनाण ॥ २ ॥ सारे जन्मजीवसंघारै । इहिखोटेषट्कर्मा ॥ पाप प्रचंड चढै सिर ऊपर । नामकइवैधर्म्मा ॥ ३ ॥ आप दुःखी औरां दुखदायक । अंतर रामनजाना ॥ जन रज्जब दुःखकरै दृष्टि बिन । बाहरिपाखंडठान्या ॥ ४ ॥ ३२ ॥ संतो प्राण पखानन मानें । परमपुरुष बिनपाखंडसारा ॥ तहांन आसतिजानें ॥ टेक ॥ सरितासैलसगे सुतबंधु । सेये मुक्तिन द्यावें ॥ सो स्वामी संकटमें बांधे । घर घर मोल बिकावैं ॥ १ ॥ जाकाइष्ट अवनि नहिं । छाडै।सेवग स्वर्गन जाई॥यामें फेरसार कछु नाहीं । भरमन भूलो भाई ॥२॥ कांधेकंठि हमारे चालै । जोर्‌यूं पावक पाणी ॥ रज्जब घडे सुनारसिलावट । सो सकलाईजाणी ॥ ३ ॥ ३३ ॥ संतो कहे सुणेंकछु नाहीं ॥ जबलग जीवजंजालनछूटे । बिकल बिषै सुख माहीं ॥ टेक ॥ करै अनीतिमगन मायामें । कहै अगमकी बानी॥ सो बिपरीतसंतनहींमानें । झूठिमांहिली जानी ॥ १ ॥ बातैं सीखि ब्रह्म व्है बैठा।निर्भय बिषयकमावै॥पूछयूं सों परपंची प्राणी॥ साखि अगमकी ल्यावै ॥ २ ॥ पद साखिन सिध साधिक दीसै ।

इंद्र नहै अपराधी ॥ तेहि घट नामनहीं निजनिर्मल । देह दशा नहिं साधी ॥ ३ ॥ जो कछुकरै अजान अज्ञानी । सोही समझि सयाना॥जन रज्जबतासों क्या कहिये । देखत दिवसभुलाना॥४॥ ॥ ३४ ॥ हेरि हेरि हेरै हरी । हिरदैकी हेरे ॥ राखणकी राखै प्रभु । फेरणकी फेरै ॥ टेक ॥ ताकि ताकि ताकै मनहुं । त्रिगुणी में न्यारा ॥ उरझे सेती अहिरा भाय । सुर झेसों प्यारा ॥ १ ॥ देखि देखि देखे दिलहूं । दूजे नहि धीजें ॥ मनबच क्रम त्रिशुद्ध व्है । सोई सुणि लीजें ॥ २ ॥ परखि परखि परखै तहां । पति पारिख पूरा॥रज्जब रजतज काढही । हरि हेरि हजूरा ॥ ३ ॥ ३५ ॥ सुणि संसारी सीखकूं । मति भूलै भाई ॥ जेहि पंथ प्रीतम पाइये । तेहि मार्ग जाई ॥ टेक ॥ विषियासों बिगता रही । मति करै सगाई ॥ मूसा मींनीकूंमिलयूं । मेलैगटकाई ॥ १ ॥ सुरही सिंहहि क्यूं बनैं । सो सोधिर खाई ॥ अइया मूढ अज्ञान मन । घर बैठा जाई ॥ २ ॥ जो जंजाल जीवसों कट्या । सो फेरिन लाई॥ जन रज्जब गत ऊपरे । बित भूलन जाई ॥ ३ ॥ ३६ ॥ कीरन कुसंगति आतमा । गुरुज्ञानबिचारी । सकल बुरेका मूरु है । सुणि सीख सुसारी ॥ टेक ॥ चोर जारबट पार है । बहु करैं बुराई ॥ संगति करि संकट सबै । नींके निरताई । काया संगति कपटमें ॥ मन मनसा मैली।प्राण पाप पूरण करै । पंचनिकी सैली ॥ ॥ २ ॥ माया मिलि मैले सबै । सबलोकमंझारा ॥ जन रज्जब रजऊतरे । रटिरामपियारा ॥ ३ ॥ ३७ ॥ हिंदू तुरक सुनो रेभाई । काहूंसे मतिहोहिदुःख दाई । बीज्या होहि उधारा देणां ॥ कियानकाढें जाई ॥ टेक ॥ मारहिं जीव सोच बिन मौदा । मनमुखि मांस गरासै ॥ लेखालि यूं लखैंगे प्राणी । यहुनटैगी हांसै ॥ पगकी पीड अजान करि उन्हां । दुःख ऊपरि सुलगाया ॥

संतपुकार सुणी साईंनें । हजरत दांत तुडाया ॥ २ ॥ जोकी रोटी भाजी सेती । मुहमद उमर गुजारी ॥ आगे ज्वाब जबह कामांगे । यूं कर फिर धलधारी ॥ ३ ॥ ऋषि रहते जंगल जाय बैठे । झडे पडे फलपाये ॥ जठरा अगनि जुगति सौं टाली। जीवन जगत सताये ॥ ४ ॥ हुये हमाली ओलिया साधू । बे अजार सुखदाई ॥ जन रज्जब उनकी छायामैं मिहरि दया तिन पाई ॥ ५ ॥ म्हारोमंदिरसूनोंरामबिन । बिरहनि नींदन आवैरे ॥ पर उपकारी नामिले । कोई गोंविंद आन मिलावैरे ॥ ॥ टेक ॥ चेती बिरहनि चिंतन भाजै । अविनाशि नहिं पावैरे ॥ यहि वियोग जागैं निशि बासर । विरहा बहुत सतावैरे ॥ १ ॥ बिरह वियोग विरहनी बींधी । घरबन कछुन सुहावैरे ॥ दह दिशि देखि भयो चित चकृत । कौनद शादर शावैरे ॥ २ ॥ ऐसा सोच पड्या मन माहीं । समझि समझि धूंधावैरे ॥ बिरह बान घट अंदर लागे घायल ज्यूं घूमावैरे ॥ ३ ॥ बिरह अग्नितन पिंजर छीनां । पिवकूं कौन सुनावैरे ॥ जन रज्जब जगदीश मिले बिन । पल पल बज्र विहावैरे ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ओधू सुरही शक ति संभाली । दह दिशि विघन बसुधामें ॥ मींच माया करिटा ली ॥ टेक ॥ नौखंड मांहिं फिरै चर नोही । सात समुद्र जलपा नी । तवलब गायगरज नहिं सारै । समझी ग्वालसयानी ॥ १ ॥ स्वार्थ सांझ रामागम होता । आधीन उदर आधाना ॥ व्याये बच्छसु पांच पचीसों । राग दोष सब नाना ॥ २ ॥ लौहकी लाठि हेतु हाथीले । चेतन पगरख बारी ॥ ऐसे तंबा त्रा सिपासिकरि । कारिज सारै भारी ॥ ३ ॥ अगम उछेरी उलटि आकाशहि । नाम नाजसुचराई ॥बायक वृक्ष छांह सुनिशीतल । संतोष सरोवर पाई ॥ ४ ॥ काम धेनु व्है कामन व्यापै ।

दूध दरश निजथाना। जन रज्जब है धन्य धेनुसो॥ पीवै अमृत पानां॥ ५ ॥ ४० ॥ काल करम बाँसिको नहीं। कहु काहि बताऊं॥ जे आयेते सबगये। खुर खोजन पाऊं॥ टेक॥ ब्रह्मा विष्णु महेश शेष। सब मंच मंझारा॥ केई चालै केई चालसी यहु एक बिचारा॥ १॥ चंद्र सूर्य पानी पवन। धरती आकाशा॥ षट् दर्शन अरु खलकसो। सब सुनियेनासा॥ २॥ अंतक मुख आकार सब। यहु भोला नाहीं॥ जन रज्जब जगदीश भंजि। जन जसे माहीं॥ ४१॥ आई आंधी अकलिकी। अभि अंतरि देशा। बरणं बाढि सब उडिगई॥ लहिये नहिं लेशा॥ टेक॥ वृक्ष बडाईके पडे। रज राजस उडी॥ पर कीरति पक्षी सुए। खैमानसु पुडी॥ १॥ कर्मकजोडा उडिगयो बुद्धि वावर आए। छानि मानि सारी चली॥ भाए अनभाए॥ २॥ सुमति शरीर समूहतैं। पट पडदे मागे॥ बादल बिरह विमासिए। नैंनों झर लागे॥ ३॥ अनल अनीलसु ऊलटे। उरअवनी सुधाई॥ रज्जब नेपै नामकी। आतमा अघाई॥ ४॥ ॥ ४२॥ संतहु बोध विमल बरदाई। जाति पांति जीवकी नहिं जानैं॥ परसत होत सहाई॥ टेक॥ दृग अनंत ज्यूं देखि दिवाकर। तम तारौ खुलि जाई।ऐसें ज्ञान अज्ञान उठावत॥ उर आंखिनरु सनाई॥ १॥ इन्द्र अकलि धर ऊपरि वर्षत। घटि बंधि करतन घाई॥ नीर ज्ञानके गति मति एकै। नरतरु तानि निरताई॥ २॥ देवा दृष्टि नाहि तहां दुबिधा। पंच तत्व परि पाई॥ रज्जब रही तहां लघु दीरघ। समता सुरति समाई॥ ॥ ३॥ ४३॥ सुनि सुनि बातैं बेदकी। चखि चौंधि समाने॥ दह दिशि दौडे दूरिकूं। उर अठसठ ठानें॥टेक॥भागवत कहै भगवंत दश। भोले सुणि भूले॥ स्वर्ग नर्क माधि लोकमें। मत

माना सुझूले ॥ १ ॥ सगुण निर्गुण एकहै । नित निगम बतावै। यूं आतम उर झीउरै । सोसुलझिनआवे ॥ २ ॥ संसार सबलन भागई । व्याकरणी विचारा ॥ जन रज्जब सतगुरु बिना । जीव होयन पारा ॥ ३ ॥ ४४ ॥

राग माली गौंडा ।

जालिम दिवानतेरा॥कोई नाहिबदीनेरा॥सब रोज गुन हमार बंदा॥क्या हवाल मेरा॥ऐक॥चंदी जाहिर गुनाहा॥नेकी नही नेरा॥ नामनेस दिगरपेश । पुरद रोग देरा ॥१॥तालिब खुद ख्वाब कर द । गाफिल बहु तेरा ॥ बदी विसियार फैल । होय क्यूं निबेरा ॥ ॥ २॥ तरसम पुरसीसदोस । जाहिर जब घेरा ॥ रज्जब विचार करि पुकार । और सहन सेरा ॥३॥ सतगुरु घर जारा हो सतगुरु घर जारा । प्राण पोष धाम ॥ दोष अगनिके आहारा ॥ टेक ॥ ज्वाला जल मांहि डारि । सब समुद्र चारा ॥ मीन मगन अगनि मधि । अचरज व्यवहारा ॥ १ ॥ दौ प्रसंग दगध होत । धरनी नीर सारा । है है है रान है । हरी अठार भारा ॥ २ ॥ रज्जब यहु कहै काहि । कौन सुनन हारा ॥ देखै कोई कोटि मधि ॥ अग निका पसारा ॥ ३ ॥ २ ॥ रामहीं नाम मन लीन्हों । गुरु प्रसाद परम रस पूरण ॥ प्राण पियूषसु पीनौं ॥ टेक ॥ सहज समाधि सुरति सदा साबति । भाव भगति करि भीनौं ॥ अंतरि गगन मगन मन मातौ यहु आरंभ उर कीन्हों ॥ १ ॥ आदि अंकूर गुरु सुखी गरज्यो । कठिन कर्म कृत छीन्हों ॥ रज्जब राम रटै निशि बासर । आप उचित दत दीनौं ॥ ३ ॥

राग गौडी ।

गुरु प्रसाद अगम गति पावै । पलटै जीव ब्रह्म व्है आवै ॥ टेक ॥ हरि भृंगी गुरुडंकसमान । मार ततनमेंभयेच्छ प्राण ॥

॥ १ ॥ चंदन राम गुरुगति बास । भेदै भेदनहिं बनादास ॥२॥ ब्रह्म सूरगुरु किरण प्रकाश । रज्जब जीव जल परसि आकाश ॥ ३ ॥ गुरु सुखि सिख गोविंदमें जाई । ऐसें धरया अधर है भाई ॥ टेक ॥ सूरज सजा चढैनभनीर । त्यूं सब देश मांहिं शुन्यमें सीर ॥ १ ॥ दीप ज्योति मिलि तेल आकाश । त्यूं बचन प्रसंग निरंतर बास ॥ २ ॥ धोम गगनमातिम तरुतमाग । त्यूं जीव सीव व्है उनमन लाग ॥ ३ ॥ शब्द सुरति संग आरामथान । त्यूं प्राणज्ञान गलि पदनिर्वान ॥ ४ ॥ यूं अंजनपलटि निरंजन होई । रज्जबबाम बाईसंगि जोई ॥ ५ ॥ २ ॥ इहि परदेपरदे सब जांहिं ॥ गुरुप्रसाद परमपद मांहिं ॥ टेक ॥ चाहि चाखिन चश्मां गुरु दीजै । तब दयालुका दर्शन कीजै ॥ शब्द सैलमें नैननिहारै। इहिलाखिन रावण मनसारै ॥ २ ॥ अधिक अहार अजीर्ण होय । बूंटीबैनै जरै पुनिसोय ॥ ३ ॥ रज्जब जलणिजरेकीजाई । ज्ञान अग्नि जैसंकै आई ॥ ४ ॥ ३ ॥ ऐसा सतगुरु शोधिरकीजे । जाकी संगति युगयुग जीजे ॥ टेक ॥ धर्म कर्म धोका धुर तोडै । तीर्थ ब्रत रहति ल्यौ जोडै ॥ १ ॥ निहकामी नौखंड नियारा । सुमिरण ब्रत निबाहन हारा ॥ २ ॥ निर्पेक्ष रहै रामगुण गावै । भरम भेष पक्ष प्रीति न लावै॥३॥ दश अवतार देखि दिल नांखै । अविनाशी उर अंतरि राखै ॥ ४ ॥ नख शिख नाम निरंजन राता । प्रेम मगन पीवै रसमाता । बेसासी बसि पंच पराना । जन रज्जब ता गुरुरना जीवका मिटै जामन मरना ॥७॥ ॥ ४ ॥ आज्ञाकारी बोलबिं साधु । आदि अंकूर गुरुमुखी गरजै । सुनि सुनि शब्द कटैं अपराध ॥ टेक ॥ शाही संत चढे गिर गोविंद । पृथ्वी हेतु पुकारे । भाजि भजौ भय भंजन सांई । ज्यूं यमदूत न मारै ॥१ ॥ बाणी बंब बजावै बंधू । जागणहार जगाये ।

जो सुनि चले सुपार पहूंचे। रहतौं वित्त लुटाये॥ २ ॥ परम पुरुष परब्रह्म बुलाए। नर निस्तारणहारा। जन रज्जब जड सुनिकर सूते। चेत्या चेतनहारा ॥ ३ ॥ ५ ॥ रामरस पीजियेरे। पीये सब सुख होय। पीवतही पातक कटैं। सब संतन दिशि जोय। ॥ टेक ॥ निशिदिन सुमिरण कीजिये। तन मन प्राण समोय। जन्म सुफल साईं मिलै। जीव जपि साधहु दोय ॥ १ ॥ सकल पतित पावन किये। जै लागे लैं लोय। अति उज्वल अघ ऊतरै। काल विषराले धोय ॥ २ ॥ यहि रस रसिया सब सुखी। दुखी न सुनिये कोय। जन रज्जब रस पीजिये। संतौं पीया सोय ॥ ३ ॥ ॥ ६ ॥ संतौ मगन भया मन मेरा। अहि निशि सदा एक रस लागा। दिया दरीबैं डेरा ॥ टेक ॥ कुल मर्य्यादा मैंड सब भागी। बैठा भाठी नेरा। जाति पांति कछु समझौ नांहीं। किसकूं करैं परेरा ॥१॥ रसकी प्यास आस नहिं औरा। इहिमत किया बसेरा। ल्याव ल्याव याही लय लागी! पीवैं फूल घनेरा ॥ २ ॥ सो रस मांग्या मिलै न काहू। सिर साटै बहुतेरा ॥ जन रज्जब तन मन दे लीया। होय धणी का चेरा॥ ३ ॥७॥ नाम लिवाय निरंजन स्वामी। अंतर मेटो अंतरयामी ॥ टेक ॥ तुम सबही के हो प्रतिपाला। तव सुमिरण दे दीनदयाला ॥ १ ॥ तुम कहियो मनसा के दाता। तौमन मांगै नाव विधाता ॥ २ ॥ रज्जब याचक हरि दातारा। भजन पसाव करौं करतारा॥ ३ ॥ ८ ॥ विरद विराजै वोपम लायक। सेवक की सुनिये सुखदायक ॥ टेक ॥ अधम उधार पतितके पावन। ऐसी सुणि लागे गुन गावन ॥ १ ॥ कर्म कटा अघ मोचन स्वामी। अंतर मेटो अंतरयामी ॥ २ ॥ तुम गर्व गंजन होहकि नाहीं। ये द्वंद्वर गरजै घट माहीं ॥३॥ अशरण शरण अनाथहु नाथा। तौ निरधारहु दीजै हाथा ॥ ४ ॥ दीन

दयालु गरीब निवाजे। सदा सुयश के सुनिये बाजे ॥ ५ ॥
बिरद तुह्मारा तुह्मसिर भारा। जन रज्जब की सुनहु पुकारा ॥
॥ ६ ॥ ९ प्राण पति न आए हो। बिरहनि अति बेहाल। बिन
देखे जीव जात है। अब बिलंब न कीजै लाल ॥ टेक ॥ विरहनि
व्याकुल केशवा निशि दिन दुखी बिहाय। जैसे चंद्र कुमोदिनी।
बिन देखे कुमिलाय ॥ १ ॥ अति गति दुखिया दुगधिये। बिरह
व्यथा तनपीर घरी पलक में बिनाशिये। ज्यूं मछली बिन नीर।
॥ २ ॥ पीव पीव टेरो पिक भई। स्वाति स्वरूपी आय। सागर
सरिता सब भरे। पर चातक के नहिं चाव ॥ ३ ॥ दीन दुखी
दीदार बिन। रज्जब धन बेहाल ॥ दरस दया करि दीजिये। तो
निकसै सब साल ॥ ४ ॥ १० ॥ भाईरे संत जुदा जगि ऐसे।
जैसे कमलनीर में न्यारा। हरिसेनही तैसे ॥ टेक ॥ ज्यूं दधि बि-
लोय मांखन मथिकाढै। उलटि मिलै तक्र कैसे। तैसे साध सकल
गुण न्यारा ॥१॥ ज्यूं पाखान पाणी नहिं परसै। कल्प गये जल
पैसे। त्यूं रज्जब जन मांहिं निरंतर। मणि भुजंग मणि जैसे ॥२॥
॥ ११ ॥ यूं निर्पक्ष निज दास कहावै। निर्पक्ष नाम निरंजन
गावै ॥टेक॥ भाव भक्ति षट्दर्शन न्यारी। निर्पक्ष ज्ञान ध्यान
ध्वनिधारी ॥१॥ सत जत सु मरण जुदे जहांनै। प्रेम प्रीति काके
पखियानैं ॥ २ ॥ दया धरम काकीदिशि कहिये। रज्जब क्षमा
गरीबी गहिये ॥ ३ ॥ १२ ॥ राखै राम रहै जनसोई। बल बैरयूं
का चलैन कोई ॥ टेक ॥ जैसें जतन जननितै किया। त्यं करि
निजतनि जीवसु जीया ॥ १ ॥ संकट सकल माहिं सों खोलै।
जिनसुं हरि कृपाकरी बोलै ॥ २ ॥ विविध प्रकार बिघन सब
टाले। जैसांई करि सुरति संभाले ॥ ३ ॥ पिंड ब्रह्मंड पिशुन प-
चिहारे। जन रज्जब जग पति रखवारे ॥ ४ ॥ १३ ॥ साधू प्राण

पुष्ट्यूं भाई भजि भगवंत कालकूं खाई ॥ टेक ॥ मोर सप्त अ-
हिगुग्रासि। आतमउदैभखै गुणरासि ॥ १ ॥ अगनि अहार
ज्यूं चैंन चकोर । त्यूं जीव जैंराजीत्या जोर ॥ २ ॥ यूं मन
इन्द्री भुगते प्राण । सो वृद्ध कहै संतसुजान ॥ ३ ॥ अजरहि
जारै मेटै दोय ॥ रज्जब सदास जीवनिहोय ॥ ४ ॥ १४ ॥ सोई
सूरा सो बलवंत । इन्द्री अरिदल जीते संत ॥ टेक ॥ जीतैं काम
क्रोध अहंकार । आशातृष्णा गर्दनमार ॥ गुण गयंद कायाकूं
मारि । परकीरतिपैंदलकूं जारि ॥ २ ॥ पंचों जोधहु जीतै शूर।
आपा आगी काढै दूर ॥ ३ ॥ मनमेंवासी मारैं जाय । रज्जब
शूर सोई सतिभाय ॥ ४ ॥ १५ ॥ सिरजन हारकरै त्यूं होय ।
जीव बिचारे बल नहिं कोय ॥ १ ॥ टेक ॥ इकराना इक रंक उ
पाये । भले बुरे ज्यों भगवंत भाये ॥ ऐकौं पाये छत्र सिंहासन ।
येकहुं हाथिन फूटा बासन ॥ १३ ॥ येकौं पीछै पलैं हजार ॥
येकूं पाय नहीं पैजार ॥ ३ ॥ इक ईश्वर विलसै सुखराशी । ऐक
दरिद्री दुःखकी पासी ॥ ४ ॥ आज्ञा अंकसमाझि सुख पावै ।
जन रज्जब सबके मनभावै ॥ ५ ॥ १६ ॥ संतौ विषै विगूचनि
होई । पंचों तत्व पोखि मायारस ॥ सीझ्या सुण्यान कोई ॥ टेक॥
येकै प्राण सुरति जडऐकै । येक भोमि अनरागै ॥ सतगुरु संत
कहैं सब साधू । द्वैद्वैठौडनलागै ॥ १ ॥ यहुमन दूध दही ।
क्यूं जामै ॥ कामिनीकांजीवाहैं । बात बनाय कहौकोकामी ॥
जीवन धीजै माहैं ॥ २ ॥ विषै विलास सदा सुखदाता । देखै
भुगतन हारे ॥ जन रज्जब जुगि जुगि जगमांहीं । साधिक सिद्ध
बिगारै॥३॥१७॥ मनकी प्यास प्रचंडन जाई । माया बहुत बहुत
विधि विलसै तृति नहीं निरताई ॥ टेक॥ ज्यूं जलधार असंख्य
अवनि स्थल। परतन सो ठहराई तैसैं यहु मन भरया भुखसौं।

देखि परखि सुधि पाई ॥ १ ॥ अशन बसन बहु होमि अगनि सुख नाहिं संतोष मिलाई । ऐसी विधि मनकी है क्षुधा । बुझती नाहि बुझाई ॥ २ ॥ भूखपियास संगलेसूता । सो स्वप्नेन अघाई इहै सुभाव रहै मन मांहै ॥ तृष्णा तरुन बधाई ॥ ३ ॥ मन मायासौं कदेन धापै । सतगुरु साखि बनाई ॥ जन रज्जब याकी यहु औषधि ॥ रामभजनकरिभाई ॥ ४ ॥ १८ ॥ अकालि बिना आपाहाति होय । बुद्धि बिना बलसु करै सबकोय ॥ ॥ टेक ॥ज्ञान बिना गर्व तन भारी । गोविंद कहिये गर्व प्रहारी ॥ १ ॥ मतिबिनममित मांहिं मन भीनें । दीन दयालु मिलै मन दीनैं ॥ २ ॥ जुगतिन जानैं तौ जिय जोरा आयो नहीं अतीत निवौरा॥३॥ऊरा उरमी काढोकानि । रज्जब गुरु गोविंदहि जानि ॥ ४ ॥ १९ ॥ हूतौ हठिरा तौरै । मानत नाहि गुरुउर बाइक ॥ भांति भांति मनकूं समझावत । समझत नाहि माहि मन मूरख॥ सूतौ सुधिहीन विषैरसखाइक ॥ टेक ॥ च्यार प्रहर सुगति बीते ।साची सुनत नाहि दुःख दायक॥माया मगन फिरत निशि वासर । काम करत दोजखके लायक ॥ १ ॥ शठहठ चाल चलत दशहूं दिशि । राख्यो रहत नाहिं धनदायक ॥ जन रज्जब जंजाल जड्यो मन । छाड्यो सकल सृष्टिको नायक ॥ २ ॥ २० ॥ नाम बिना नाहीं निस्तारा । और सबै पाखंड पसारा॥ टेक॥भर्म भेष तीरथ व्रत आशा । दान पुण्य सब गलके पासा ॥ जपतप सा धन संकट सूना । लै बिन लगत सेवै अलूना ॥ २ ॥ पान फूल फल दूधा धारी मन मनसा बिगरे सब ख्वारी ॥ ३ ॥ काशी करवत गिरितै गिरनां । हेम हुताशन मूरख मरना ॥ ४ ॥ नाना विधि धारै बहु धर्मा । हरि सुमिरण बिन कटतन कर्मा ॥५॥ जन रज्जब रतमतरंकारा । प्राण प्रवीनसु उतरत पारा ॥ ६ ॥ २१ ॥

निर्गुण रामन आवै जाई। सगुण फिरि फिरि करम कमाई॥ ॥ टेक॥ निर्गुण रामन जामें मरई। सगुण संकटे जोत निधरई ॥ १॥ निर्गुण राम अवतरे नाही। सगुण जीव फिरै जग माही ॥ २॥ निर्गुण स्वामी सगुण दासा। साधू संत कहै गुणतासा॥ ॥ ३॥ सगुण रूप बिलै व्है जाई। जन रज्जब निर्गुण दिशि धाई॥ ४॥ २२॥ जाति जगत गुरु देखै नाहीं। मिलहिं प्राण पति प्रीतिहि माहीं॥ टेक॥ नाम कबीर दादूजन त्यारे। नाम नेह नौखण्ड उजियारे॥ १॥ सधनासे नरकीता थोरी। हरि हित सीझै हैं कुलकोरी॥ २॥ आदिजै देव अंतिरै दासा। भाव भग ति काटै कर्म फासा॥ ३॥ जन रज्जब करुणामय केशो। प्रेमनेम भजि भजि भानि अंदेशौ॥ ४॥ २३॥ सतगुरु विनस मता नहिं आवै। नीच ऊंच निगुरासु दृढावै॥ टेक॥ येकही पवन ये कही पानी बुद्धि बिन बीच बैरता ठानी॥ १॥ येकै आतम येक शरीरा। समझबिना बड अंतर बीरा॥२॥ सौंजै सबै विधि येक ब नाई। दुविध्या दुरमति हैरे भाई॥ ३॥ सबकै नखशिख येक बि- चारा। येकै सबका सिरजन हारा॥ ४॥ गुरुके ज्ञान माहि सब ऐकै। रज्जब अंध अज्ञान अनेकै॥ ५॥ २४॥ ७१॥

राग आसावरी।

गुरुका कह्या करावहु सांई। येबातें मेरे मनभाई॥ टेक॥ गुरुकी आज्ञामें मन राखो। दीनदयाल दूरमति नाखो॥ १॥ गुरुकी सीखे सन्मुख कीजै। समरथ साहिब यहुदत दीजै॥ २॥ गुरुका ज्ञान चलावहु मोसों। यहि अरदास करुं प्रभुतोसों॥ ॥ ३॥ गुरुकी गति मति माहैं मारी। रज्जब मागैं भीख भिखारी ॥४॥१॥ संतो देख्या अद्भुत खेला। मछीमध्य समुद्र समाना॥

अजा सिंहसों मेला ॥ टेक ॥ आदित्य मांहि आकाश उदीप्या । सीप समानी मोती ॥ ऐसी हुई कहीको समझै । दीसै सो अण होती ॥ १ ॥ आभ्र बूंद असम सो बरसै । तीर कमान चलावैं ॥ चीटी मांहि चकुहु सो पैठी । ढूढ्यों हाथिन आवै ॥ २ ॥ पर्वत उडी पंख थिर बैठी । राहु केतु शशि खाये ॥ जन रज्जब जगपतिके मारग । पंगुल परचढि धाये ॥ ३ ॥ २ ॥ संतोमीन गगनमें गाज्यो । निर्जल ठोर निशान बजायो॥सोजल निधि सों भाज्यो ॥ टेक ॥ चकवा चकवीरैं नमिले हैं । चातक चिता समाना ॥ मांखी सों मकडी मिल बैठी । पीवै अमृत पाना ॥ १ ॥ पर्वत ऊपर पहुप प्रकाशयो । ओला अवनिजमाया । आभों ऊपरि ति-णका रज्जा । गुरुमुख सो निरताया ॥ २ ॥ दादुरखियो दामिनी सूती । सुनि सतगुरुकी बानी ॥ जन रज्जब यहु उलटी रचना । बिरले पुरुषों जांनी ॥ ३ ॥ ३ ॥ संतो यहुगति उलटी जानी । मूरति माहि देहुरा आया ॥ सुनि सतगुरुकी बानी ॥ टेक ॥ बीरज मांहै वृक्ष समानी । हांडीकणमें पाकी ॥ कूआ भरै कूंभमें पानी । कहतन आवै ताकी ॥ १ ॥ ब्रह्म बूंदमै घटा समानी । बाइ बीजुली सेती । अवनि आकाश गये ताहीमें ॥ चपल चातकही लेती ॥ ॥ २ ॥ अक्षर माहैं पोथी पैठी । बंचक बीज बिलाना ॥ जन रज्जब यहु अगम अगोचर । गुरुमुखि मारग जाना ॥ ३ ॥ ४ ॥ संतोकण चाकीको पीसै । तामें फेर सारकछु नाहीं ॥ गुरु प्रसाद सु दीसैं ॥ टेक दीपक जले पतंगे मांही । मूसैमीनीखाई । किडीकुं जर मारग रास्यो । हिलीसु हाथों जाई ॥ लाकडि पकडि कुहाडी काट्या । तिणके तंबाचाबी ॥ दीन दादुरो अहि आरो गै । बाछी बाघनी दाबी ॥२॥ अद्भुत बात उरहू क्यूं आवे यहु सब उलटी सारी जन रज्जब सो प्रत्यक्ष देखी । कुही कन्दतरि मारी

॥ ३ ॥ ५ ॥ संतोयहु गति बिरला बूझै । गुरुप्रसाद होय यहु जाकै । ताहीकूं यहु सूझै ॥ टेक ॥ आंधी अनंत दीपनें दाबी । दीवा बुझि नहिं जाई । जाकै द्वार दीपथा ऐसा । तिनयहु कीर्ति गाई । सरिता सकल समंदसों पैठी । कमल कोशमें आई । ऐसा एक अचंभा देख्या । नदी कमलमें न्हाई ॥ २ ॥ पृथ्वी सकल प्रजापुनि सारी । ले आकाश बसाई।जन रज्जब जगपतिकी कृपा । घर घर हौंहिं बधाई ॥ ३ ॥ ६ ॥ औधू अकल अनूपअकेला । महा पुरुषमांहैं अरुबाहर । माया मथिन मेला ॥ टेक ॥ सबगुन रहितरमैं घट भीतरि । नाद बिंदमें न्यारा । परम पवित्र परम गति खेलै । पूरण ब्रह्म पियारा ॥ १ ॥ अंजन माँहिं निरंजन निर्मल । गुण अतीत गुणमाहीं ॥ सदा समीप सकल विधि समरथ । मिले सु मिलि नहिं जाहीं ॥ २ ॥ सरबंगी सम सरिसबठाहर । काहू लिपतिन होई ॥ जनरज्जब जगपतिकी लीला । बूझें बिरलाको॥ ॥ ३ ॥ ७ ॥ औधू यहि विधि जुगि जुगि जीजे । दह दिशि उलटि आवघर अपने ॥ अमी महार सपीजे ॥ टेक ॥ देहीमाहिं देहसे न्यारा । नाम निरंजनलीजे । आरंभयहै रटौ निशिबासुर ॥ कारज औरनकीजे ॥ १ ॥ आतममाहिं अनंत सुधारस आपा रहत रमीजें । जे कछु आप माहिं कण सारा । सो सब तामहिं दीजें ॥२॥ आया भूलि मूल मन लागै । रहतें रहता रीझे । ऐसें अमर होय जन रज्जब । लांबा कारज सीझे ॥ ३ ॥ ॥ ८ ॥ मनरेकरि संतोष सनेही । तृष्णा तपति मिटै जुग जुगकी । दुख पावैं नहिं देही ॥ टेक ॥ त्यागूं तजैं माहिं सो सिरज्या । गह्या अधिक नहिं आवैं ॥ तामें फेरसार कछु नाहीं । रामरच्या सो पावै ॥ १ ॥ बाछै सरग सरग नहिं पहुँचैं प्रीति पतालिन जाई । ऐसे जानि मनोरथ मेटहु । समझि सुखी रहु भाई ॥ २ ॥ रेमन

मान सीख सतगुरुकी । हृदय धरि विश्वासा । जन रज्जब यों जा-
नि भजन करि गोविंद हैं घर दासा ॥ ३ ॥ ९ ॥ मालिक मिहर
करी भरपूर । काफिरा करि कतरु केसो ढूंदरां दिल दूर ॥ टेक ॥
रहम में रिपखि सत पालक गर्व गंजन सूर । इहतलब तालिब
पुकारे । राखि नाम हजूर ॥ १ ॥ जानराय जाहिर तुही तैं नहीं
कोई दूर । बीचही बटपार कैसे । रहे मारग पूर ॥ २ ॥ फरजंदकी
फरियाद फारिक नफसरा करि चूर । रज्जबा अरवाहिर आतुर रहौ
मिलि मासूर ॥ ३ ॥ १० ॥ माया माहिं भज्या हरिजाय । सकल
संत देखो निरताय ॥ टेक ॥ जैसे चंद कुमोदनी नेह जल बिछुरैं
पुनि त्यागै देह ॥ जैसे सीप स्वाति रतहोय ॥ सायर बिन जीवैं
नहिं सोय ॥ २ ॥ ज्यूं तरवैं पाणी की आश । धरती बिछुटै
मूल विनाश ॥३॥ काया माया तजै न कोई । रज्जब भजैं सकल
सिद्धि होई ॥ ४ ॥ ११ ॥ गुरुके गमन दुखी शिष्य सारे । सब
सुख निधि के बिलसणहारे ॥ टेक ॥ श्रवणा दुःखि सुनत सतबानी ।
नैन दुखित डारैं बहु पानी ॥ १ ॥ दुःखी रसन सुखी बातैं करते ।
शीश दुःखित गुरु चरन नधरते ॥२॥ तनमन दुखितु फेरि सँवारे
अंतरि ध्यान भये गुरु प्यारे ॥ ३ ॥ जन रज्जब रोवे दुख आदू ।
परम पुरुष बिछुटेगुरु दादू ॥ ४ ॥ १२॥८३॥

राग टोडी ।

भक्ति अखंड करैं हरि माहीं । एक मेक अरु दूसर नाहीं॥टेक॥
ज्यूं सुखिम गुण आतम माहीं । हैं भासही दूसर नाहिं । यूं
जन जगपति एक होइ ॥ तउपरि भाजिबे दोइ ॥ १ ॥ जैसे राग
अकल मिलीएक । जब चाहै तब भिन्न विवेक । ऐसे जीव ब्रह्म दै
आथि ॥ भजै भिन्न और साईंसाथि॥२॥ ऐसेभक्ति असंगअपार॥

दादू को दीन्हीं करतार ॥ रज्जबटीला बिले माहिं ॥ जातभये और भजते जाहिं ॥ ३ ॥ १ ॥ ऐसे गुरुगोविंद अगाध । अखिल अनंत नियावही साधु ॥टेक ज्यूं चकमक पाहणप्रसंग ॥ अग्निअपार उपाई अभंग ॥ १ ॥ ज्यूं दिनकर दर्पण दिशि देखि । प्रगटै अनल रूपरि विसेखि ॥ २ ॥ सूरज क्रांति असम गति जाणी ॥ बहुत हुताशन होई न हानी ॥ ३ ॥ द्वै दीपक में दीपक जोई ॥ रज्जब जोति मंद नाहिं होई ॥ ४ ॥ २ ॥ साधु संग भक्ति रंग ॥ गुरुप्रसाद पावैं ॥ परम प्रीति परम रीति परम पुरुष गावैं ॥ टेक ॥ सतगुरु के दर्श स्पर्श ॥ दीरघ दुख भागे ॥ कर्मकाल विघ्नव्याल ॥ बहुरि नहीं लागैं ॥ १ ॥ अचल नाव अगमठांव ॥ आनन्द घरबासा ॥ सकल सिद्धि अकल विधि ॥ सतगुरु संगीदासा ॥ २ ॥ अधिक भाग श्री सुहाग ॥ सांई संग खेलै ॥ जन रज्जब गुरुप्रसाद ॥ जीव ब्रह्म मेलै ॥ ३ ॥ ३ ॥ साचागुरू दिखावैं राम ॥ निर्लोभी खरतर निह-काम ॥ टेक ॥ परमार्थी प्रमेधैंप्राण ॥ बिषयों माहिं न देवैजाण । काम प्रसिद्धिकर मनलाई ॥ स्वारथी संग सरक नहीं जाई ॥ १ ॥ दीरघदशा देईहिली आण ॥ त्रिगुण रहित निर्गुण निज ठानि ॥ जाग्रत मैं सीझै सब और ॥ सो ले देइ नाम निजठौर ॥ २ ॥ नखसिख फेर करैं निजरूप ॥ विषय बिकार काट गृह कूप ॥ जीवमाहिं जीव नि लेदेई ॥ यूं रज्जब सतगुरु करिलेई ॥ ३ ॥ ४ ॥ लोभी गुरू कहैं सुखराम ॥ मनमाहीं सुधेसे काम ॥ टेक ॥ जैसें बधिक बाणगहि लेई ॥ मुखिटाटी धीजणको देई ॥ मूढांतरि आवजाप्राण ॥ सो जीव लहै नहीं बाहरि जाण ॥ १ ॥ जैसी विधि बगमडै ध्यान ॥ अन्तरगति और कछु आन ॥ जोमनसामन धीजैआई ॥ ताहीको बैठै गटकाई ॥ २ ॥ बीच बधेरा छुठक लगाई । सिषश्वान सब लेपरि भाई ॥ जन रज्जब जोपरसै प्राण । ताहीकों लागासो

खाण ॥ ३ ॥ ५ ॥ नाम निरंजन प्राण कहै। पंचगहै दुःख द्वन्द्वद है ॥ टेक ॥ अकर अमर ल्योलाइ रहै। कलकुत गसिरि नाहिं सहै ॥ १ ॥ सुमरण सरिता माहिं वहै ॥ द्वैदिसी दुविध्याटे मट है ॥ २ ॥ अगम अगोचर जोतिल हैं। जन रज्जब जगिका महि है ॥ ३ ॥ ॥ ६ ॥ रामसौं रता रामसौं मता। राम रसायन प्राण पीवता ॥ टेक ॥ रामसौं लीना रामसौं भीना। राम रटन उर अन्तर कीना ॥ १ ॥ रामसौं संगा राम सेरंगा। राम सनेही मित्र अभंगा ॥ २ ॥ रामसौं मीठा सबमैं दीठा । अंतर्यामी आतम ईठा ॥ ३ ॥ रामसु प्यारा प्राण हमारा। जन रज्जब कहै फेरन सारा ॥ ४ ॥ ७ ॥ मेरौ मन रातो माई। प्राण पियाके संग मौज अनेक अनूपम आछी ॥ चोल चरनकै रंग ॥ टेक ॥ मिहरिम जीठ रहम कीरैणी । मनबुधि सुरति सुरंग रज्जब लाल लाल कील्यौ मलि ॥ जुगजुग अचल अभंग ॥ १ ॥ ८ ॥ आवरे हरि आवरे। उर अन्तरी यहु भावरे। यहु औसर यहु दावरे॥टेक॥ यहु अंदेसा नाही संदेशा जीवन कैसा दातरे ॥ १ ॥ ताला वेली पीव अकेली । रैंनि दुहेली आवरे ॥ २ ॥ अबल अधीरा पंजरि पीरा। नैनन नीरा आवरे ॥३॥ रज्जब नारी बिरहैं जारी। उभ्रपरि वारी आवरे ॥ ४ ॥ ९ ॥ कहर कांम राखि राम। मैं अनाथ तेरा। करि सहाई राम आई ॥ अरि अनंग घेरा ॥ टेक ॥ मदन बाण बेधे प्राण।आतम उर झेरा बेध व्याधि अति असाधि रोक्या नित सेरा ॥ १ ॥ विधिध अंग सदा संग। उर अंतरि नेरा ॥ कामका ऊकारिवेहाल ॥ त्यागै नही केरा ॥ २ ॥ विषय वास मनही पास । राम करनिबेरा ॥ जन रज्जब दीनक्षीन । नाही बलमेरा ॥ ३ ॥ १० ॥ ज्यूं साहिब सबल हमारा। यह रोक्या प्राण तुम्हारा टेक ॥ विरह विचार प्रसन्नही कबहूं। इन्दर

अधिक अपारा ॥ प्रकट गुप्त गुप्त हरि प्रकटै । सेवक दुःखित तुम्हारा ॥ १ ॥ संसार बल सदाही व्यापै । पलक पलक प्रजारा। पंच अहेडी चढे बधिक ह्वै । जीव जबहकरि मारा॥२॥चढो पुकार सुरति कीरं सांई समरथसिरजनहारा । जन रज्जब जीव जाई ॥ इंद्रिमैं।।स्वामी करहु सहारा ॥ ३ ॥ ११ ॥ यूं पावन पतित उधार। हम अपराधी आदि अन्तके साहिब लेहुसु धारि ॥ टेक ॥ दीन दयालु दीन सुखदाई । सेवक शोच निवारि ॥ कामक्रोध व्यापै निज अन्तर । देही द्वन्द्वर टारि ॥ १ ॥ पंच पसारै पलपल दौरैं। तिनहु माहिं निवारि ॥ कीयो जाय बंदि वशकीयो । बाहुडि बिरद संभारि ॥ २ ॥ सेवक सदा संभारे स्वामी । तुम अपनी ऊनहारि ॥ जन रज्जब पर प्रेम कृपाकरी । आडा अंतर जारि ॥ ॥ ३ ॥ १२ ॥ हरि नाममैं नहीं लीन्हां । पंच सखा पांचू दिश खेलै ॥ मनमाया रस भीना ॥ टेक ॥ कौन कुमति लागी मन मेरे ॥ प्रेम अकारज कीन्हां । देख्यो उरझि सुरझि नहीं जान्यूं ॥ विषम बिषय रस पीना ॥ १ ॥ कहिये कदा बिकल मति अपनी । बहु वैरन मनखीनां ॥ आतम राम सनेही अपनै । सो स्वमै नही चीन्हां ॥ २ ॥ आन अनेक अनिउर अंतर । बहुत भान्ति तन ठीन्हां ॥ जन रज्जब क्यूं मिलै जगत गुरु ॥ जगत माहींजी दीन्हा ॥ ३ ॥ १३ ॥ गुनह गार गुनह गार । लेखा कछु नाहीं मार ॥ एवहैं अपार ॥ टेक ॥ बहुत मैल बुरे फैल । बेहद्दबदकार ॥ अबल रोगादिलदरोग बदीबिसियार ॥ १ ॥ तर्क खैरसूंमसैर । नेकी वेजार । बहुत ढीलमनबखील ॥ पावैं क्यूंपार ॥ २ ॥ बहु गुमान ताजिसुभान ॥ नाहीं असतपर । रज्जब रंजूल गुफत सूल ॥ सांई सतार ॥ ३ ॥ १४ ॥ भाई मिलै भगवन्तही आई । नेह विना कोई नहीं उपाइ ॥ टेक ॥ प्रथम भाव भक्तिका मूल । सुकृतसब

डाली फलफूल ॥ १ ॥ भाव चढै भव सागरपार। जैसे नावहिं नीर विचार ॥ २ ॥ ज्यूं पंखोपरि अनल आकाश। त्यूं भावहिं चढि चरन निवास ॥ ३ ॥ जन रज्जब जगपतिकै आण। प्राण पुरुषको भाव बिवाण ॥ ४ ॥ १५ ॥ सब सुखकी निधि आये साध। कर्मक्लेश कटे अपराध ॥ टेक ॥ दर्शन देख कीये दंडवत। अघ उतरैं अंकुर उदौत ॥ प्रदछिन्ना देतै दुखदूर। चरणोदकलेते सुख पूरि ॥ श्रवणों कथा सुनत सुखसार। साधु शब्द गहि उतरे पार ॥ ३ ॥ साचे संत सजीवन मूर। रज्जब तिन चरन नरज धूर ॥ ४ ॥ १६ ॥ सुनले साची सीखमन। जपराम छिन सब पापहन ॥ जगसूं तोरी जोरी हरि सेती। गृहदारा सुत त्याग धन ॥ टेक ॥ बिगता बिरच सकल गुण न्यारा। सूक्ष्म मोटा पाप बन ॥ कारज सरै समझ मन सुन्दर। सतगुरु साधु साखि जन॥ ॥ १ ॥ विषिया संग जरै जगसारा। दुःख दीरघ अधिकार सुन। निहकामी शीतल हो बैठे ॥ उर अतरि लै नामधन। रहते संगि राखले रजमा ॥ आयु अल्प यहु जाई तन ॥ २ ॥ जन रज्जब रामहिं रटलीजै। अवसर समझ रहै कषिन ॥ ३ ॥ १७ ॥ डरे हैरे मूढ डरे हैरे। पलपल आयु घटै तन छीजै ॥ जम बैरी शिरपर हैरे ॥ टेक ॥ बादल बिपति बीजली मनसा। बिबिध बिघ्नका झर हैरे ॥ चोरासी लख जीव जवासें तेरी केतुकजरु हैरे। मिहरि मेघ बिन कौन बुझावै ॥ तनमन न्हांते नुसरू हैरे ॥ २ ॥ दीरघ दुःख दीखै दशोदिसि। मीचसु सचरा चरे हैरे ॥ कालक साई प्राणसु पशुये। सबके सिरपर करू हैरे ॥ ३ ॥ त्राहि त्राहि यहत्रास देखकर। हरि समरण कोहरु हैरे ॥ जन रज्जब गोव्यूं टारनको। एकरामको बरु हैरे ॥ ४ ॥ १८ ॥ भय हैरे मूढ भय हैरे ॥ टेक ॥ मनुष्य जन्म चौससो दूबातों। रैन परीतममें हैरे।

जन्म मरण खांहि जीवगोते ॥ दूतर आझीनै हैरे ॥ १ ॥ जमसु लुहार जीवसोईलोहा । आपा अग्निसुत हैरे ॥ घरघर आरणि सुरति संडासी । गुणघण मारै सुंदे हैरे ॥ २ ॥ चौरासी चोपड फिर आयो । अब दवेकोपे हैरे ॥ करनी हीन होई सोही काचां चोटच हूंदिसिषै हैरे ॥ ३ ॥ जुगजुग जीव कालको भक्षण । यम धाप्यो नहींधै हैरे॥ जन रज्जब यूं समझ सियाने । छूटन कोहरिले हैरे ॥ ४ ॥ १९ ॥ पारै वार पुकार लोई । वारपारकी खबरन कोई ॥ टेक ॥ पारकहे सोई सबवारा । समझ शोच कछु करौ विचारा ॥ भेष भरम करतूति सुवारा । तीरथ बरत सुमांझ मंझारा॥१॥ जपतपसाधनवै लीवोरा । स्वरग पताल इनींमैं दौरा ॥२॥ ऋद्धि सिद्धि सबै सुवैली आसा । आगम निगम जगतमें बासा ॥ ॥ ४ ॥ पारपरम गुरू सबतैं आगे । रज्जब वारापारयूं त्यागै ॥ ५ ॥ २० ॥ कारण कारज समझा भाई । सतगुरु नै आंटी समझाई ॥ टेक ॥ कारण मांटी कारज भांडा । ज्ञानरूप फूटा भरम आडा ॥ १ ॥ कारण गिरि नर कारज मूरति । ताऊपरि भूला श्रुति सूरत ॥ २ ॥ कारण कर्ता कारज देही ॥ रज्जब भरम भान्यासु सनेही ॥ ३ ॥ २१ ॥ यूं निर्पात मन भयाहमारा । इन दोनोंका देख पसारा ॥ टेक ॥ माला पहरूतसबीलागै । यासीहूं कछु नाही ॥ ऐसे समझ तजे सब बंधन । क्या पहरै गल माहीं ॥ १ ॥ बरत कुयूरोजेरीसमान । इनमें कहा बडाई ॥ ऐसे जाति तजे सब लंघन । संकट पासि छुडाई ॥ २ ॥ देवल जांव मसीत मरै जलि यामैं क्या सिधि पाई । ऐसे समझ रहे दोनोंसुं ॥ उर अंतर ल्योलाई ॥ ३ ॥ दाग देवतो गोर गुमानाणी । गाडैं माण मसाण ॥ ऐसे जाणि धरचा चौडैमैं । दोनों रहेझि फाण ॥ ४ ॥ एकही तज्यूं एक बलबांधे । टलैन सौंकि अडी॥ ऐसे समझ

रहत जनर जब ॥ दोनों त्याग खडी ॥ ५ ॥ २२ ॥ प्राण परख बिन खोटा खाई । अक्कल आंख दिब दृष्टि सुनाही ॥ टेक ॥ प्रथम प्रक्ष बिन अंध अज्ञानी । तापरि ठगन ठगाई ठानी ॥ १ ॥ परख बिना प्राणीपंथ भुलाना । परख बिना मनमूलन जाना ॥ ॥ २ ॥ पारख बिना मनोरथ क्षीना । पारख बिना भेषबहु किन्हे ॥ ३ ॥ पारख बिना बहु देह दहावैं । पारख बिना सुकष्टैकाया ॥ परख बिना तेतीस मनाया ॥ ५ ॥ पारिख बिन अवतार आराधैं । पारख विनाकांकरकंठिबांधै ॥ ६ ॥ पारिख बिना वैकुंठ बिसासा । पारख बिना ऋधि सिद्धिकी आसा ॥ ७ ॥ पारख बिन सोई प्राण अनाथा । रज्जव परख परम धनहाथा ॥ २३ ॥

पद १०६ ।

राग गुंड ।

गुरू गरवा दादू मिल्या । दीरघादिल दरिया हसन प्रसन्न होतही ॥ भजन भल भरिया ॥ टेक ॥ श्रवण कथा साची सुणी । संगति सतगुरुकी ॥ दूजा दिलि आवैनही जब धारी धुरकी ॥ १ ॥ भरम भुजागल बांधदी । शंका सब तोडी ॥ साचा सगाई रामका । लेता सौं जोडी ॥ २ ॥ सतगुरूकै सदिक कीया । जिनि जीव जीलाया ॥ सहज सजीवन करलिया । साच संगलाया ॥ ३ ॥ जन्म सफल तबका भया । चरनौं चितलाया ॥ रज्जब राम दया करी । दादूगुरुपाया ॥ ४ ॥ १ ॥ नटनी निरख निहारले । मतमाहीं समाना ॥ मन इन्द्रिय निजना मसैं । ऐसी विधि ध्याना ॥ टेक ॥ व्रत चढी बहु देखतां । तनमन चित बांधी ॥ सहज समाना डोरीमैं । दडादिशि है आंधी भांवरि भरि

चौकसी लई चेतन चढि वासा तनमन तामैं रलगया नहींन जरतमासा ॥ २ ॥ ऐसे सुरत न चाईलै । हरि आगे खेला ॥ रज्जब राम उमंग कर । दे दर्शन मेला ॥ ३ ॥ २ ॥ ऐसे गुरू संसार यह । सुण समझि विचारा ॥ जे चाहै उपदेशको । तो पूछ पसारा ॥ टेक ॥ चौरासी लख जीवका । लछिन लै माही ॥ माया मिली मरदी गये । परमेले नाही ॥ १ ॥ अवल मता उर लीजिये । गिरतखरताकी जहाँ रोपे तहाँ रहगये । सुन सतगुरु साखी ॥ २ ॥ चंद्रसूर पाणी पवन । धरणी आकाशा ॥ रज्जब सामिता पूछलै । षट् दर्शन पासा ॥ ३ ॥ ३ ॥ एक नाम भजिमें भेद । कोईएक पावै संतन खेद॥ जेज्यूं भजे तहीं त्यूं होई । महल महलका हासिल जोई ॥ टेक ॥ प्रथम नाम भजे संसार । कर मलाका तिसंगि लार ॥ मनमें नहीं एक इकतार । तो इहनाम मरत गयो हार ॥ १ ॥ दूजे महल नामकी आस । भज बेलागा सासै सास ॥ अंतर ऊंघउठ सब ओर । अहनिसि लाग रहे निज ठौर ॥ तीजे महल पंचशर पूर । पंच स्वभाव काढदे दूर ॥ जब उपजै अन्तर यह माहीं । तब पहुँचे संशय कछु नाहीं ॥ ३ ॥ चौथे महल जाई जब लेई । नरैसे उलट नाममें देई ॥ नौ निधि निपजै रहे तन माहीं । तब प्राणीका दारिद्र जाई ॥४॥ पूरे महलपंचपरि जाई । रोम रोम रटि राम अघाई ॥ जनरज्जब जुग जगयह डाट । सतगुर सही नाम निज बाट ॥ ५ ॥ ४ ॥ ज्यूं पहिले पीछे त्यूं होई । कारजहो सत्यकर जोई ॥टेक॥ तीन मास रखस्यो कछु नाहीं । साख सभंगल चौथे माहीं ॥ १ ॥ पहले सवाण लई नहीं आस । पिछले सवणि पडेबेसास ॥ २ ॥ मुहं मिली भयें नाही कछु नाति । रज्जब रोपि रहे रिण जाति ॥ ३ ॥ मन चाल्यूं पीछै कछु नाहीं । ऐसे समझ देखि मनमाही ॥ टेक ॥

मन दीपक देहीतैं जाई । तबही तिमर भरै घर आई ॥ १ ॥ मन अधीर देहील गजाणि । मिथ्या लग आखिर बुझाणि ॥ २ ॥ मन प्राणी त्यागै तन अंग। तब रज्जब मिरत प्रसंग ॥ ३ ॥ चेतन चित चौर कहाँ जाइ। निद्रा नेह मुसेघर आई ॥ टेक ॥ ज्यूं रजनी गत रवि प्रकाशा। तारे सकल भये बळनासा ॥ १ ॥ जब मंदिर माहैं मार जार तब चूहे त्यागैं घरबार ॥ २ ॥ तिमिर कहाँ जब दीपक जोई। जन रज्जब जागेयूं होई ॥ ३ ॥ ७ ॥ नेह निरंजनसे नहीं। सब अंजन ध्यावैं ॥ बयरसौ बयर मिल्यूं। सुतको नहीं पावैं ॥टेक॥ पार ब्रह्मको पीठिदे। दिली देई देवा ॥ मायासौं माया भजे सबझूठी सेवा ॥१॥ गुणगहि गुणसौं पूजिये। तेती सब झूठी जलबूडतजलको गहै। मन मूरख मूढा ॥ २ ॥ सकल बिकल वाहर रहो गुरुज्ञाननपाया। जन रज्जब सोधीविना ॥ दहदिशि मनलाया ॥ ३ ॥ ९ ॥ मेरे मंगल मन माहीभये। दीरघ दुःख मेटे ॥ अंग अंग अति उच्छाह। दादू गुरु भेटे ॥ टेक ॥ पारस पग प्रसतही। कुंदन भई काया ॥ फिर कलंक लागै नही सतगुरूकी छाया ॥ १ ॥ सब दंडक सरवन लागी। कीट भृंगकीये ॥ जन्म फेरदुषतवेरी। अपने संग लीये ॥ २ ॥ दादूगुरू दृष्टि भानु। आतम जल काढै ॥ जन रज्जब धरती सौं। ले आकाश चाढै ॥३॥ आजह मार भयो आनंद। मिले संत भागे दुखद्वन्द्व ॥ टेक ॥ मंगल चारमैं गुनगावैं ॥ अमृत धार होई झरलावै॥ सुखसागर घरसंत विराजे ॥ महापतित जीव आई निवाजे ॥२॥ अधिक उछाह कहीनहीं जाई ॥ किती एक महिमा कहुं बडाई ॥ ॥ ३ ॥ आदि अंतके कारज सारे ॥ जन रज्जब आघेसो प्यारे ॥ ॥ ४ ॥ १० ॥ आये मेरे पार ब्रह्मके प्यारे ॥ त्रिगुणरहित निर्गुण निजसमरत ॥ सकल स्वांग गहिडारे ॥ टेक। माला तिलक

करें नहीं कबहूं ॥ सब पाखंड पचिहारे ॥ साचे साध रहते सादी गति ॥ सकल लोकमें सारे ॥ १ ॥ नाम प्रताप प्रपंच न मानै ॥ षट् दर्शनसों न्यारे ॥ भज भगवन्त भेष सब त्यागे ॥ एक साचके गारे ॥ २ ॥ जिनके दर्शस्पर्श उपजै ॥ सो आये चलद्वारे ॥ जन रज्जब जगपतीसों ऊंचे ॥ प्राणउधारण हारे ॥ ३ ॥ ११ ॥

पद ॥ ११७ ॥

राग मलार।

रामबिन श्रावणसह्योन जाई ॥ कालीघटाकालह्वो आई ॥ कामनी दगधै भाई ॥ टेक ॥ कनक आवास वास सब फीके ॥ बिनपियके प्रसंग ॥ महाबिपति बेहाल लालबिन ॥ लागै बिरह भुवंग ॥ सूनींसेज हेजकहूं कासों ॥ अबला धरैनाधीर ॥ दादुर मोर पपीहा बोले ॥ ते मारतहैं तीर ॥ २ ॥ सकल शृंगारभारहो लागे ॥ मन भावै कछुनाहीं ॥ रज्जब रंग कौनसे कीजे ॥ जै पीव नाहींमाहीं ॥ ३ ॥ १ ॥ ब्रह्मागिन निशदिन विपति बिहात ॥ दर्शन दूर परसपीय नाहीं ॥ नाहीं संदेश सुनात ॥ टेक ॥ पीर प्रचंड खंडकर नाखत ॥ बैरी बिरह बिषखात ॥ सांई सुरत करौ सुंदर दिसि ॥ शोचनसिह शंकात ॥ १ ॥ नखशिख शूलमूल मनबेधत ॥ बनतबने नहीं बात॥झालीझाल लाल बिनल पारत॥ सोक्यूंहूं नबुझात॥ २ ॥ सबसुख हीनदीन दीरघ दुख ॥ बिसरी पांच रुसात ॥ रज्जब रहीचतुरपुतरी है ॥ मानहुं संत रंज-मात ॥ ३ ॥ २ ॥ ११८ ॥

राग केदारा ।

मनरेसीखसतगुरूकीमानि॥ब्रह्मसुखदुःखरूपयामा॥कहीलाभरु हानि ॥ टेक ॥ भज अनंत आनंद ॥ खलकखलहलखांनि॥ सकल मत सबसोधि साधू॥ कहीत्तोसौंछांन ॥ १ ॥ अमरअधर धरादिक बिनशै । तोलित्तुलाकरि कांनि ॥ साच झूठ विचार लीजै ॥ मिहारि होय दीवानि ॥ २ ॥ मुक्ति प्राण प्राण भजिश क्ति संकटजानि ॥ बांसबसति कीजिये मन । रचिन रज्जब रानि ॥ ३ ॥ १ ॥ मनरेगहो गुरमुख बंध ॥ सकल बिधि सबकारिज उनमनी लेसंध ॥टेक॥ शब्द साधू सीसधरकर । रटण आतमरंध॥ शुन्यमार्ग गमनकर गमन करतैं ॥ अमर आतम कंध ॥१॥ मत महंतसुमानि मनकम॥परहरगोरख धंध एक आतमलागि एकही॥ दहदि शिहे अंध ॥२॥ बोधवेध अबेध पंचनि ॥ निकुल नामसु नंध ॥ मिलै रज्जब जोति जावही ॥ जोई तनुबरूगंध॥ ३ ॥२॥ मनयहमान मुग्ध अचेत ॥ समझ शठहठ छोड मूरख ॥ कहतहूं कारिहेत ॥टेक॥ देह झूठसुपरत पलमें । लाईकजमलेत ॥ कालक कवाल काट । देखले सिरसेत ॥ १ ॥ सीतकोटरसुपनि संपति । सुनहु राहुसकेत ॥ छिनकमें सब छाडिजेहैं । मारि मूंढही बेत ॥ ॥ २ ॥ मातापिता सुतसखा बांधव । सकल कालर खेत ॥ कर किर खिनूं परयौरीतौ । खोलि देखहु नेत ॥ ३ ॥ ३ ॥ त्याग तन धनगेह गाफिल । सीख सतगुरू देत ॥ रज्जबाजमजोरिलेहै । देस मोहडेरेत ॥ ४ ॥ ३ ॥ संतहु अगहुगहे गुरुज्ञान । मनसा बाचा कबहुन छूटै ॥ बैठाये निजस्थान॥ टेक ॥ चंचल अचल भये बुधि गुरुकी । मनहुमनोरथ मानि ॥ अस्थिर सदा एकरस लागै । माते अमृत पान । बहते रहै मानमती गुरकी ॥ समझ परऊन आंन ॥ पंच पचीस स्वाद सब छूटैं॥ ले जातेजो थांन ॥२॥ थाके अथक

परे पंगुलहो। चंचलता देदानि ॥ जन रज्जब जगमें नहीं पसरै। गुरबाइकसुने कांन ॥ ३ ॥ ४ ॥ है हरिनाम सैं सब काज। आदिअंतसुं प्राण तारन ॥ विषम जलधि जहाज ॥ टेक ॥ प्राण पोषण शोषण। फेर मंडणसाज ॥ गुंनहुं गंजन पीरभंजन। देत अविचलराज ॥ १ ॥ सुकृत जागैं कुकृत भागैं। सुनी भजनकी गाजै ॥ उरहुं मंडण अघहुं खंडन। देखते दुःख भाजै ॥ २ ॥ धरे काढण अधरचाढण। जीवकी सब लाज।नामनीका धरम टीका॥ रज्जबा सिरताज ॥ ३ ॥ ५ ॥ ऐसा तेरा नामबहु गुनवंत। सकल बिध प्रतिपाल प्रानन ॥ जपनिवा जैजंत ॥ टेक॥ शेषशंकर विश्व ब्रह्मा। ररंकार रटंत ॥ सुरनसत्य सुमरन बतायौ। भागभूत करंत ॥ १ ॥ हरि अराधसु हरत पापन। आत्मा उधरंत ॥ गिन्नूंकेते ज्ञान नांवे। सृष्टि साधूसंत ॥२॥ आदि अंतरु मध्यमनिष। नाम ठांम चढंत ॥ जांहिजलनिधि उतरि आतम। नींच ऊंच अनंत। सकल विधि सुखराशि सुमिरण। अनंतकाज सरंत। रज्जबा क्या कहै महिमा। भजन बधि भगवंत ॥ ४ ॥ ६ ॥ है हरिनामनरनि कलंक। पतितपावन प्राण परसत। राव सुमिरो रंक ॥ टेक ॥ नाम चंदन लागि पलटत। बयबनी बंसबंक॥होत सकल सुगंधि संगति। बास दुरगंध टंक ॥ १ ॥ नाम पारस लागलोहा। भेटि मेटत अंक ॥ साधु सोना होतहै स्वत। विकत मंहगे टंक॥ २ ॥ अराध औषधिजावरोगी। राखि पछनित फंक ॥ रज्जबा यूं रहत निशदिन। होत निमन निशंक ॥ ३ ॥ ७ ॥ ऐसा तेरा नाम निधाना। करै कोबक्रवखानां ॥ शिव विरंचिसुख आदिशेष सहस्रमुख। व्है न परमान॥टेक॥ नेतिनेति कहि निगम पुकारत। जायन जाना॥रज्जब कहाकहैको रसना। सब्र जानतहैराना॥१॥ ॥८॥नामबिनमननिर्मल नहिं होय।आन उपाय अनंत अवलागैं।

बहुत भांति करि जोय ॥ टेक ॥ योग यज्ञ जप तप व्रत संयम । करता है सब लोय ॥ धर्म नेम दान पुण्य पूजा । सीझया सुण्या न कोय ॥ भेषपक्ष नहीं घर बाहर । ज्ञान अज्ञान समोय ॥ ज्ञानी गुनी शूर कवि पंडित । ये बैठो सब रोय ॥ २ ॥ भरम न भूलि समझि सुणि प्राणी । यहु सागुण नहिं सोई । जन रज्जब मन होय न निर्मल । जल पाखा नहिं धोई ॥ ३ ॥ ९ ॥ भजन बिन भूलि परयो संसार । पछिमकमजात पूरबदिशि । हृदये नहीं बिचार । बाछैं अरध धरे सो लागैं । भूले मुग्ध गँवार । खाय हलाहल जीयो चाहै । मरत न लागै बार ॥ १ ॥ बैठे सिला समुद्र तिरनको । सो सब बूडणहार । नाम बिना नाहीं निस्तारा । कबहुन पहुँचै पार ॥ २ ॥ सुख के काज धसे दीरघ दुःख । ताकी सूधिनसार । जन रज्जब यूं जगत विगूचै । इस माया की लार । ॥ ३ ॥ १० ॥ हमारे सबही विधि करतार ॥ ४ ॥ धर्म नेम अरु योग यज्ञ ! जप साधन साईं सार ॥ टेक ॥ पूजा अर्चा नौधान वे । सोधि कियो व्यौहार तीरथ ब्रत सुनाम तुह्मारा । और नहीं अधिकार ॥ १ ॥ वेद पुराण भेष पष भूधर तुह्मी श्रीभरतार । बुद्धि विवेक बलज्ञान गुसांई । और नहीं आधार ॥ २ ॥ सकल धर्म सुकृति कमाई । सब तुम ऊपर वार । जन रज्जब के जीवनि रामा । निशिदिन मंगलचार ॥ ३ ॥ ११ ॥ नाहर बिन निशि विघननकी खानि ॥ बिरहनि बहुत भांति दुखपावै । सकल सुखों की हानि ॥ टेक ॥ शशि नहिं शंक कलंकी जातें । काहूकी नहिं काणि । विरह भोजनिमें भामिनि बैठी । ध्यौ नावतहै आनि ॥ १ ॥ तारेतरु नितपति सिरऊपर ॥ शशि बंधू पहिचान । देखोदुख दायक दशहूं दिशि । नौलख बैरीजान ॥ २ ॥ महल मसान सेजभई सिंहनी । मारत मीच समान । रज्जब रामबिना रजनीदुख । कतो कि कहो

बखान ॥ ३ ॥ १२ ॥ आज निशन क्यूं हूं घटत । प्राण पियारे बाझहो दीरघ रैंन भई बिन दर्शन आतम रामहिं रटत ॥ टेक ॥ एक सरैनि अधिक अरिहुन ते । तारे तीरनि तकि तकि जट्त । चंद्रहि चंद बाण व्है छूट्त । मारुत नेक न हटत॥१॥जामनि जुग प्रमाण अति बाढी । कामनि कंत बिना क्यूं कहत । रज्जब रुदन करत करुणा में। बिकसि बिकसि उरफटत ॥ २ ॥ १३ ॥ बेगि न मिलै आतमराम । जात जनम अमोल अद्भुत लेतहु हरिनाम ॥ टेक ॥ भूखभंग अभंग चिंता । गिणत छांहन घाम । मग अमग यहु भाम भूली । समसु अरण्य ग्राम ॥ १ ॥ विरह पीर सुनीर नैनों महा बिह्वलबाम । ठगीसी ठीक ठौर बिसरी । कोकरै गृह काम ॥ २ ॥ दीन दुखित अनाथ अबला । गये यहि विधिजाम । मांस गूंद सु बिरह विलस्यो । रहे अस्थीरु चाम॥३॥ और कहत सु और आवत । नहीं मन मतिधाम । रज्जबा रही रोज हांसी । ज्यूं सती सलठाम ॥ ४ ॥ १४ ॥ सखी सुंदर सहज रूप । देखि ले जगत भूप । प्राणनि में प्राणपति त्रिकुटीके तीर ॥ ॥ टेक ॥ बैठो क्यूं नवल नारि । कही सो श्रवणों धारि ॥ निकट नाह निहारि । नैन नितै नीरा ॥ १ ॥ विधिसों विलोकि बाम । सेइले साजनराम । पूरन सकल काम । थापनि सूंथीरा ॥ २ ॥ उठीतू आतुर धाय । पूजिले परम पाय । अंतरि अनन्य भाय । पीरनकूं पीरा ॥ ३ ॥ विमल ब्रह्म अंग सर्वंगी सर्वे संग । सोधिले आतमा दंग । हिरदै को हीरा ॥ ४ ॥ रज्जब भामिनी भाग । आदिको अंकूर जाग । देहि जो सेज सुहाग । मीरनको मीरा । ॥ ५ ॥ १५ ॥ माधो करौ क्यूं न सहाय । तुम बिना कोई और नाहीं । कहुँ तासों जाय ॥ टेक ॥ काम बैरी क्रोध बैरी । मोह बैरी माहिं । पंच मारे सो न हारै । क्यों हरि आवो नाहिं ॥ १ ॥

काया बैरी माया बैरी। परकीराति भरपूर। दीनको फरियाद सुनिये। करो ये सब दूर॥ पिशुन सारे मैन मारै। मोह मारैं जाय। बहुरि तुम कहा आय करिहौ। जन रज्जब जबनहि॥ ३ ॥१६॥

पद १३४

राग मारू।

दुख अपार बिन दीदार। लेखा कछु नाहीं। बिकल बुद्धि नाहिं सुद्धि। मृतक भई माहीं॥ टेक॥ सुख बिलास सकल नाश। आतम उर भागे। मध्यपीर नाहीं धीर। बिरह बाण लागे॥ १ ॥ बहु बियोग परम सोग डगमगाति डोलै। नाहिं चैन बिरह बैन। ब्याकुलभई बोलै॥२॥ तपत पूरि नाहिं दूरि। मिलिये सुखदाई। रज्जब की जलणि जाय। प्रगटो हरि आई॥ ॥ ३ ॥ १ ॥ सखि शून्य में दुःख सोधि लियो। महा निठुर अपने रंग रातो। सोई कंत कियो॥ टेक॥ जाके बिरह बस मन माहिं। सब जग त्यागि दियो। सो पुनि पीय परसे नहीं अजहुँ। हारी देखि हियो॥१॥ जगपति मिले न जगत सुहावै। फाटो दिल न सियो। द्वै दुख देखि भयोचित चकृत। विषहुन बांटिपियो॥२॥ कहिये कहा कवन मति उपजी मन माने न बियो। जन रज्जब रुचि रूप न पावै। धृक् धृक् यह जियो॥ ३ ॥ २ ॥ सखी सुनि कैसे रहिये। हरि वियोग बिरहतन। कासों कहु कहिये॥ टेक॥ बिरहनि वियोग सोक। रैनि दिवस दहिये। दीरघ दुख देखि देखि। कौन भांति सहिये॥ १ ॥ बिरह पीर नैन नीर। तामें बहिये। दीसत नहीं सो जहाज जो बूडत गहिये॥२॥ देखो दुख मीन भीन। चातक चहिये। जन रज्जबही क्यूं जीवन नहिं लहिये ॥३ ॥ ३ ॥ सखी हूँ बिरह घेरी। लहियत नहीं मोहन मग सुख

की सेरी ॥ टेक ॥ विपतिराजबैठे अरज दीन दुखित टेरी। बिरहे की आनदान दोही फेरी ॥ १ ॥ बिरह आगि मनहुँ लागि जरत देह मेरी। बरसत नहीं पिहारि मेघ दशो दिशि हेरी ॥ २ ॥ जनम जाय मिलहु आय। चेरी तेरी। रज्जब कों दरस देहु,राखहु नेरी ॥ ॥ ३ ॥ ४ ॥ सखी हूं मोहने मोही कन कन करि काटि लीनी। ऐसे सोई ॥ टेक ॥ भूली सब काम धाम। तनमन दोही अशन बसन बिसरि गई। सूका छोही ॥ १ ॥ श्रवणहुँ बाणी अधारि। समझा वोही। जन रज्जब जोये बिन। रंग बिरोही ॥ २ ॥ ३ ॥ नाम राती हो। सु तेरे नाम राती। पंचों ये पीय पीकरैं। भई प्रेमकी पाती हो ॥ टेक ॥ लीन भई तिस नामसों। जो कर्मकी कातीहो। चलतां बैठत सोवतां। सुझ तेरी रातीहो॥१॥नामसदा ले नेहसों। नाना विधि भांती हो। देखो भाग्य उदय भये। पाई पूरण थातीहो॥२॥जो भजि भजि साधू भये। तामें लई पाती हो। जन रज्जब बलि रामके। दई दीरघ दातींहो ॥ ३ ॥ ६ ॥ नाम रंगी हो सु तेरेनाम रंगी। नैनों नाहन देखिये। येता दुख अंगीहो ॥ टेक ॥ पीय पीय टेरै रैनि दिन। दीदार उभंगीहो। सो दीदार न पाइये। यूं नारि न चंगीहो ॥ १ ॥ सुमरि सुमरि सुधि बुधि गई। कहि कहि सर्बंगीहो। बन बन ढूंढों रोवती पीय हैं किस दंगीहो ॥ २ ॥ नाम न छाडूं नाहका। भई गति अपंगी हो। रज्जब रजनी यूं गई। कब मिलिहौ संगीहो ॥ ३ ॥ ७ ॥ जागिरे जप जीवन भाई। काहे सोवै नींदभरि। उठि अवधि आई ॥ टेक ॥ सौंजसि रोमनि सब गई। कछु ठोड न लाई। काया कुंदन सारिखी। कलि बादिग माई ॥ १ ॥ कौन ठाठ किस कामको। यहु चित्त न आई। अंतक ऊभादमागैने। कछु नाहिं भलाई ॥ २ ॥ यहु अवसर बहुरयों नहीं। मन सुनि धुनि लाई।

रज्जब ढील न कीजिये । उर ऊंघ उठाई ॥ ३ ॥ ८ ॥ रेमन राम रटि अघाई । जन्म सुफल सुमिरन करि । तनमन लय लाई ॥ ॥टेक॥जागि लागि सकल त्यागि । काल कठिन खाई । यहु बिचार सुमिरसार । आयु अल्प जाई ॥ १ ॥ बिरचि बीर विषै सीर । देखौं निरताई । हरि संभालि सील पालि । ऐसो तन पाई ॥ २ ॥ साधु साखि नाम भाषि । अंतरगति आई । रज्जब रुचि रामनाम आतुर उठि धाई ॥ ६ ॥ ९ ॥ सेवक रामकारे । सतगुरुकी सुनि धारि ॥ रामनाम उर राखिये भाई । आतम तत्व उबारि ॥ टेक ॥ दीन लीन ह्वै लीजिये । जीवकी जीवनी सोई । समये सुमिरन कीजिये । वहु औसर नहिं होई ॥ १ ॥ साई सन्मुख राखिये सदा सुरति इकतार । ऐसी विधि अघ ऊतरैं भाई युग युग मंगलचार ॥ २ ॥ भक्ति अखंडित कीजिये । अगम अगोचर ठौर । जन रज्जब जगदीश भजि । भाई अति आतुर उठि दौर ॥ ३ ॥ ॥ १० ॥ कठिन काम भजनराम । करिबे कों कोई । येक आध सुमिरसाध । आपै गति होई ॥टेक॥ बिकट बाट बहुत घाट । मारग मरि चलना । कोटि माहिं एक जाहिं । अरि अनन्त दलना ॥१॥ अचल चाल नहीं ख्याल गवन गुननि न्यारा । यहु बिचारि आप मारि । चलै चलन हारा । अति अपार हरि दीदार । बीच बिघन भारी । रज्जब कोई येक जाय । देही गुन मारी ॥३॥११॥१४५॥

राग भैरूं ।

मार भली जो सतगुरु देय । फेरि बदल औरै करिलेय ॥ टेक॥ ज्यों माटी सिर फिरै कुंभार । त्यूं सतगुरुकी मार विचार । भाव भिन्न कछु औरै होय ताते रेमन मारन जोय॥ १ ॥ जैसे लोहा घडै लुहार । कीट काटिकर लेवै सार ॥ भृंगी मारि मिहरि करि

लेय। तौ निपजै फिरि मारन देय॥ २॥ ज्यूं सांठी संकट में आनि। सूधी करै तीरगर जानि। मन तोडन का नाहीं भाव। जै तुच्छ तुटि जाइ तौ जाव॥ ३॥ ज्यूं कपडा दर्जी के जाय। टूक टूक करि लेय बनाय। त्यूं रज्जब सतगुरु का खेल। ताते समझि यार सब झेल॥ ४॥ १॥ ऐसा सतगुरु बंध बताया। आपा मेटि मिले हरि राया॥ ज्यूं अति नीद मिलै मन आई। तब मनकी रामति सब जाई॥ १॥ यथा बघूलै आंधी मेल। तबका भागा भरम खेल॥२॥ ज्यों पाला गलि पानी माहिं। तब रज्जब दूजा कछु नाहिं॥ ३॥ २॥ सेय निरंजन दीनदयालु। पेडपर सिपूजी सब डाल॥ टेक॥ शिवबिरंचि सब देवदयाल। जैते सेया श्रीगोपाल॥ १॥ नबी साथि सब पीर पसारा। सेवक सबका सबहु पियारा॥ २॥ सिद्ध साधक सबहुने सुख पाया। जेतें जीव जगतपति धाया॥ ३॥ मूल बिना डालों सच नाहीं। रज्जब समझि लागिरहु माहीं॥ ४॥ ३॥ कलियुग कपट करम का रूप। पहरा पाखंडी भव भूप॥ टेक॥ पाप प्रधान लोभ सोई लसकर। अंग अज्ञान अनंत उमराव। परपंच पाण अनरथ भरम भुवन बरतै यहु भाव॥ १॥ कपटी केलि करै कलि माहीं। खोटी खलक खुसी तिनसंग झूठ सु मीत साच सोई बैरी। विधि कलियुगका रंग॥२॥ चाम दाम चालै यहि औसर। कोई बनिज करै संसार। खोटे खरे न परखैं प्राणी। गुण इंद्री गरजै सु बिकार॥३॥ लंपट चोर चौधरी दीसैं। ठग ठकुराई करहि सुआज। जन रज्जब कलियुग सो ऐसा। कैसे सरै सुआतमकाज॥४॥४॥

पद १४९ ।

राग ललित ।

गुरु गुणका कछु अंत न पार । अल्प बुद्धिका करौं बिचार । ॥ टेक ॥ लांबी मीच माहिंते काढे । अमर अभै पुरि अस्थल चाढे ॥ १ ॥ दुख दरिया दूजी दिशि टाले । सुखके संघ माहिंले डाले ॥ बिबिधबिलास बिषय फंदजारे । येकारज गुरु किये हमारे भांति भांति के काटे साल ॥ जन रज्जब गुरु किये निहाल ॥ ॥ ४ ॥ १ ॥ विनती सुनो सकलपति साई ॥ सो सेवक पहुँचै तुम ताईं ॥ टेक ॥ चिंतामणि प्रभु चिंता निवारौ ॥ चरण कमल चित अंतर धारो ॥ १ ॥ कामधेनु कल्पतरु केशो ॥ अन्तरयामी भानि अंदेसो ॥ २ ॥ जन रज्जब को दीजै दादि । तुम बिन और न आवै आदि ॥ ३ ॥ २ ॥

राग बिलावल ।

जिन जिन जन हरिनाम रटैवा । आदि अंतमध्य मुक्ति भये सब । अखिल अभै धन प्राण खटैवा ॥टेक॥ आनंद अधिक गये अघऊतर । उर अंतर यहभाव डट्यो । सदासुखी साईंसे सन्मुख । प्रेम पियासों नाहिं घट्यो ॥ १ ॥ अदभुत बात कहे को मुखतैं हरिहीरो हिय हेम जट्यो । मंगल मुदित मध्य मन माहिं । दुख दारिघ दिल दूरि छट्यो । कुशल कल्यान जीयक युग युग ॥ जमके कागर कर्म कट्यो ॥ जन रज्जब जगमें नहीं आवै । जप जगदीश संसार सट्यो ॥ २ ॥ १ ॥ नाम निरंजन निर्मला ॥ नरकेमलधोवै । सकल पतित पावन भये । कोई जाति न जोवै ॥ ॥ टेक ॥ जैसे जलदल जगतकी । तिसक्षुधामेटै । तृप्त करै तिहूँ लोक में ॥ जाजीवहीभेटै । ज्यूं औषधि दुखको देवैं । सबहीन

सुखदाई । व्यथा बिले बपु बिमल है । पथ्य राखि जु खाई ॥ ॥२॥ ज्यूं बोहिथ बूझै नहीं । कोई वर्ण बिचारा ॥ जन रज्जब कुल कोरके । सबकों करै पारा ॥ ३ ॥ १ ॥ महिमा सुनिये नामकी साधौं श्रुति भाषी । जहां तहां संकट पडै । सुमिरनकी राखी ॥ ॥ टेक ॥ प्रथम पेख प्रल्हादको ॥ निज निरखो नामा भृत्य भंजनकी भीरकी ॥ भयभंजनरामा ॥ १ ॥ नाम सु दीपक राग है ॥ जेहि जोति प्रकाशै ॥ आन कष्ट कुल रागिनी । तिन तिमरन नाशै ॥ १ ॥ नाम सु नरहरि जीवहै । तन आतमरामा । रज्जब जपत जोग जानि ॥ यह होई निकामा ॥ ३ ॥ ३ ॥ हरि हिरदै आया तबैं । जब और न आवै । देख दिवाकरके उदय तम ठौर न पावै ॥ टेक ॥ चंदणि चील न ठाहरै ॥ जब गरुड गलारै ॥ ऐसे अरि उर क्यूं रहै । प्रभुजी पाव धारै ॥ १ ॥ सिंह शब्द सुन जात है ॥ शारंग सब डारा त्यूं गुणगणत्रासैं सही । हरि हेरी पियारा ॥ २ ॥ अग्निउद यहोते उठै । गुणभार अठारा ॥ रज्जब बिले विकार यूं । मिले रामपियारा ॥ ३ ॥ ४ ॥ सोई साध सराहिये । जोईसकतिन राता ॥टेक॥ प्रथम चंप पावन करै । परलोक सु साधै ॥ सुखदाई सब आत्मा । अगाध अराधै ॥४॥१ ॥ राग दोष राखै नहीं गुण अवगुण न्यारा । प्रेम पुरुष पूरै मतै । परमेश्वर प्यारा । भेषभरमसास नहीं उर आतम दृष्टि । पखियाने प्रपंच ले । सब डारे पिष्टी ॥ स्वर्ग नरक संशय नहीं । तीर्थ व्रत त्यागी । आदि अंत सब शोधकर । लय अबगति लागी ॥ ३ ॥ रज्जब राम पहिचानले जो ज्ञानिन पाया । सारा साधु सुसेइये ॥ गुरुज्ञान लखाया ॥ ४ ॥ ५ ॥ सारा साधु सुसेइय । परमेश्वर प्यारा ॥ आदि अंत मध्य एकरस । यहजु असवारा ॥ टेक ॥ फूटे में सारा रहै । बहते में रहिता ॥ ऐसे अगम अतीतको । अंकूर सुलहिता

॥ १ ॥ अंजन माहिं निरंजना ॥ निर्गुण गुण माहीं । भगवंत भक्ता एकसो । भलभाग मिलांही ॥ २ ॥ अंड ब्रह्मांडपरे रहै । इलमाहिं अकेला रज्जब पुनिसो पाइये ॥ सुनिसुनियर मेला ॥ ॥ ३ ॥ ६ ॥पतिब्रताके पीवबिना । कोई पुरुष नजाया । एकमनी उर एकसों ॥ मन अनंत न लाया ॥ टेक ॥ ब्रह्मबिंदको बसकरै । बामा ब्रतधारी । सदा सुहागण संगरहै ॥ परमेश्वर प्यारी ॥ १ ॥ प्रेम नेम न्यारा नहीं । निज निर्गुन नाहा । अगम निगम सुंदर करै सतशील सुलाहा ॥ २ ॥ आज्ञाकारी आतमा । अविनाशी लागै । जन रज्जब रत रामसों । पूरण बडभागै ॥ ३ ॥ ७ ॥ हेरत हों हरिनाम तुह्मारो । दीनदयाल दयाकर दीजै । संतन जीवन प्राण अधारो ॥ टेक ॥ जीवन बिना जीव कैसे जीवै । ज्यूं पानी विन मीन बिचारो । चातक चिंतरहीघन वर्षा । तृषावन्त पीव पीव पुकारो ॥ १ ॥ कारज करो सरै कहुँ कैसे ॥ जैसे पहि नहीं स्वाति सहारो । मनमोती कैसेकर निपजै । घनसमुद्र अति अहि पसारो ॥१॥ बालक दूध बेग नहीं पीवे । देही दग्ध होत प्रहारो । जन रज्जब कैसे करि जीवै ॥ नाम बिना यह हाल हमारो ॥ ३ ॥ ८ ॥ जागो जागो जीव जन्म जाई । कौन नींद घोली । भजिये भगवन्त राई । तजिये माया उपाई ॥ ऐसे तन ठौरलाई । देखो द्दगखोली ॥ टेक ॥ सतगुरुकी सुनहु कांनी । साची जीय माही मानी ॥ होताहै प्रेम हानी । हारनिरमोली ॥ १ ॥ ऐसो अव सर विहाय । करिलै कछु भक्ति भाय ॥कांधे परजमरिसाय । शीश सांगिरोली ॥ २ ॥ सूतेहो कवन हेत । आए देखोनश्वेत ॥ द्वरहिंगे मूंडवेत । छाडहु मतिभोली ॥ ३ ॥ लालच कहि रहे लागि । दसों दिशि जम दीन्हीं आगि । जन रज्जब जागभागि । होती है होली ॥ ४ ॥ ९ ॥ भक्ति जाति कूं क्या करे । सुणियोंरे

भाई। बेटी सहारै बापकै। भेजै तहां जाई ॥टेक॥ नाम कबीर सु कौनथे। कुनरंका बंका॥ भगति समानी सब घरहु। तजि कुलकानांका ॥ १ ॥ लघुकुल घोगू दीपथे। कीता सुकणेरी॥ भक्तिभेद राख्या नहीं। किनकै घर चेरी ॥ २ ॥ विदुर बांदरा बंससे। सो भक्तिन छोडै॥ नींच उंच देखै नहीं। मनिमानैं मोडै ॥ ३ ॥ आदि मिलीजे देवकूं। रै दास समानी ॥ सो दादू घर पैठहू। क्यों रहै निमानी ॥ ४ ॥ रज्जब रोकीना रहै। आज्ञा ले आई ॥ रावरंक सब भगतिकै। भाव धारयों पाई ॥ ५ ॥ १० ॥ ॥ १६१ ॥

राग सोरठ।

मनरे रामन सुमरयो भाई। जो सब संतन सुखदाई॥टेक॥पल पल घरी पहर निशि वासुर। लेखैमेंसों जाई ॥ अजहुं अचेत नैंन नहीं खोलत।आयुअवधिसो आई ॥ १ ॥ बार पक्ष वर्ष बहुबीते। कहि धोंकहाक माई ॥ कहतही कहत कछु नहिं समझत। गति येको नहिं पाई ॥ २ ॥ जनमजीव हारयो सब हरि बिन। कहिये कहा बनाई ॥ जन रज्जब जगदीश भजेबिन। दहदिशिसों जग-माई ॥ ३ ॥ १ ॥ रे सुनिकोली प्राण हमारा। तूं करिलैं काम संवारा॥ करगहि बैठिगजीबुणि लीजै। वढता भला तुम्हारा॥ ॥ टेक ॥ नौसे पूरि निरंतरताणां। भावभक्ति करि भेवो ॥ मांडी मिहरि तेल तत्व निर्मल। प्रेम बाटदे लेवो ॥ १ ॥ बैठि विचार सुणीं फणिफहमकी। सरब सूत भरि लीजै ॥ मनचितलाय करत करि कोली। तारन टूटण दीजै ॥२॥ बाणेंबाहि बस्तुवित ऊंचा ज्यूं। उसहाटि विकावै ॥ लेऊराम महाअति चौकसि औरन नीडै आवैं ॥३॥ ऐसी समझि बुणींरेबुणकर। फेर उलटि नहिं आवैं ॥

रज्जब रहैंराम घर रेजा । दरस दातिबित पावैं ॥ ४ ॥ २ ॥ मेरो नाह निकुल निजज्ञानीहो । कहाकरूं कछु कहतन आवै ॥ प्रकट गुप्त नहिं छांनीहो ॥ टेक ॥ अंतर्यामी अंदर देखै । तासों कहा दुरानीहो ॥ बक्र बताय कहै विचिऔरै । यापरि अरजनमानीहो ॥ १ ॥ सर्बंगी समझैं सबठाहर । जो नखसख मनमानीहो ॥ न्याय नीतिवासमकोनाहीं । छाने दूधरुपानीहो ॥ २ ॥ सूधी सुरतिन साची उपजा । हिलसों दिलन ठहरानीहो । रज्जब रुचि भरि कैसें पावैं । गतिगोविंद नहिं जानीहो ॥ ३ ॥ ३ ॥१६४॥

राग बसंत ।

मतवालेरे मतवाले । निर्मल भक्तिप्रेमरस पीवै ॥ देह गलित गुणगाले ॥ टेक ॥ विरहदरीबै मंजनबैठे । पलपल पीवैं प्याले ॥ बिसरे देहगेह सुखसंपति । माया बोडण डाले ॥ १ ॥ भाठीभाव सुधारस निकसै । सुरतिमंडी तिसनाले ॥ मगन होय पंचोंमिलि बैठे । निमष सकै नहिं चाले ॥ २ ॥ अहिनिशा सदा एक रस लागे।बैठि इकंत निराले ॥ रज्जब चरनशरन तिनचेरा । जे रस रूप बिचाले ॥ ३ ॥१॥ बसंत बन्यौ खेलैं गोपाल । अंतर्यामी सुनि दयाल ॥ टेक ॥ बयवन मौरे रामराय । रमहुराम अवसर बिहाय ॥ १ ॥ पंचसखीरही करिशृंगार । रमोराम लाओनवार ॥ २ ॥ सब अंगन सकल काम । जानराय जब मिलैन राम ॥ ३ ॥ तन मन मंगल व्है उच्छाह । जन रज्जब पायेसुनाह ॥ ४ ॥ २ ॥ ऋतु जाय माधव रमि बसंत । यहु योगजानि घर आओ कंत ॥टेक॥ अवसर अजब अनूपवार । तातें सुंदरीठाढी करि शृंगार ॥ अब अवलाका राखहु मान । यहु दर्शपियासी देहुदान॥ २ ॥ सुंदरी-चाहै सेजसंग । अंतर्यामी दे उमंग ॥ तब दर्शन देखैं अघाय ।

यहु चरननिकट लीजै लगाय ॥ ३ अतिगति आतुर अहीं भाई । यहु आयुअल्प रजनी विहाई ॥ अबनारीका निरखिनेहु । विपति जानि दर्शन देहु ॥४॥ दयासिंह दीजे निवास । इस महापातितकी पूरि आश ॥ तब तीमीसिरि होय भाग । जन रज्जब पावै सुहाग ॥५॥३॥ सखी सुखसेजन चाहडीरे । सुदेही दुख दुमाहडीरे ॥ टेक ॥ न देवै प्रेम पियालारे । कहवै दीनदयालारे ॥ करै किमयेतलाटालारे ॥ १ ॥ न देवै अंग अपानीरे । सुनेहनां जीव नी जानीरे । सुसहुवै दुःख बिहानीरे ॥ २ ॥ कहुंकेन्हे दुखनी बातेंरे । राखै सैंणसंघातेंरे ॥ सु रज्जब वारणें जातेंरे ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ १६८ ॥

राग कनडा ।

रज्जब रामसनेही आवहिं । तनमन मंगल होय परमसुख ॥ आनंद अंगनमावहीं ॥ टेक ॥ अधिक उच्छाह मुदित मनमेरै । चौंहुं दिशी चौक पुरावहीं ॥ बलि बलिजाऊं अघाऊंन कबहूं । प्रेम मगन गुणगावहीं ॥ १ ॥ सकल सुहाग भाग सुंदरीके । मोहन रूप दिखावहीं ॥ जन रज्जब जगदीश दयाकरि । परदा खोलि खिलावहीं ॥ २ ॥ १ ॥ कबहूं देखिहूं हरिचरण । मनकर्म वचन जाऊं बलिहारी । जो पाऊं सिरधरन॥ टेक ॥सारंगभई सकल तजि सजनी । नामरटन उरिकरन ॥ तनमन सकल करौं नौछावरि । जो आवैं पतिघरन ॥ २ ॥ सुरतिसीपसांईर सब त्यागे । नाम स्वातितासरन ॥ जन रज्जबकी विपति दूरि करि । आय मिलौ दुःखहरन ॥ २ ॥ २ ॥ भक्ति करिलेहु । प्राणपतिलाल ॥ ऐसें समझि देखिउरअंदर । और सकल तजि ख्याल ॥ टेक ॥ जिन जिन भक्तिकरी केशवकी । ते सब भये निहाल । मनवच कर्म

मानमन ऐसें । नामानिकट गोपाल ॥ १ ॥ नामनेह केते पति परसे । तोरि सकल जंजाल ॥ ऐसें जानि बाणिरटि रज्जब । संत-मिलैं इसचाल ॥ २ ॥ ३ ॥ निश्चलको निश्चल व्है भजिये। चंचल मति चंचल सब तजिये॥ टेक ॥ रहतेसों रहता व्है रमिये । मनुष्य जन्मबादि क्यूं गमिये ॥ १ ॥ स्थिरसोंजु स्थिर व्है रहिये । बहतेसंग काहेकूं बहिये ॥ पोतहि पोतमेलि सब सेवा । जन रज्जब भजअलख अभेवा ॥ ३ ॥ ४ ॥ मनकि नतजहूं । निजविषिया हठ ॥ हठक्यों रहत नांहि हरि हार्यौ । विषैखेतखूंदे धरणीधठ ॥ टेक ॥ मगनमुदित मनबहत दसहुंदिशि राख्यौ रहतन नव निकट नट॥श्रवणों सुनतनाहिं मतिमेरी । रोम रोमरलागी रामही रट ॥ १ ॥ चंचल चोरचरन निजभूल्यो । खलकहि लागि किये खालीघट ॥ सतगुरु साधु वेदबुद्धि बरजत । कहतहिं कहत सुक्र तनि घरघट ॥ २ ॥ विविध भांति मनकूं समझावत । इनन गह्यौसुंदरसरितातट॥रज्जबरचंदरूठि रह्यो हरिसों ।पुकारि पुकारि प्राणतोरीलट॥३॥अरेमन करिरे सूक्ष्मत्याग।सतगुरुशब्द समझि उर अंदर । मेलि मनोरथ माग ॥ ४ ॥ आन अनेक चिंत तजि चेतन । परम पुरुषसोंलागि सकल ज्ञानगुण समझि सयाने ॥ थांभि दसों दिशि माग ॥ ५ ॥ स्वर्ग पाताल जंजाल छाडिमन । तोरि जगतसों तागि॥अकलि अनंत विलोकि विचारहु । विविध बासना दाग ॥ ६ ॥ स्वपनेंकी संपति करि संग्रह । सब समझो गे जाग ॥ जन रज्जब जगदीश भजन करि । जेसिरमोटेभाग॥ ॥ ७ ॥ ५ ॥ अरेमन भजरे आतमराम । कार्य यहै करो मन मेरे ॥ यहि अवसर यहिधाम ॥ टेक ॥ मनुष्य जनम मानि मन माहीं । कहौनिरंजनराम पंचो गुण पंचो दिशि रमि हैं ॥ करिलीजे निजकाम ॥ १ ॥ ऐसें समझि तजो मन मूरख । गृह

दारा धन धाम ॥ जन रज्जब जगदीश भजन करि बीते च्यारों याम ॥ २ ॥ ६ ॥ मन मानसीख मेरी त्रिगुण त्यागि निर्गुण लागि। मनसा गहि फेरी ॥ टेक ॥ पंच बंधि अगम संधि। रैन दिवस टेरी ॥ सब सकेलि ब्रह्म मेलि। परम गति नेरी ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ सकल झूठ देह पूठ। ज्ञाननैंनहेरी ॥ रज्जब जोधमन प्रमोध। रिद्धि सिद्धि चेरी ॥ २ ॥ ७ ॥ मन मिंत चिंत कीजे ॥ ॥ टेक ॥ अगमरूप तत्वअनूप गोबिंद भजलीजै। जन्म जाय करि उपाय। छिन छिन छिन छीजैं ॥ यहु विचार सुमिरसार। अमृतरसपीजैं ॥ १ ॥ सुनहु कान तजहु आन। सीसईशदीजै ॥ रज्जब शूर हरि हजूर। जुगि जुगि जुगि जीजैं ॥ ॥ २ ॥ ८ ॥ पीयकैं भाय बैठी न्हाय। विगसत ज्यूं जाय नौसत साजे श्रृंगार ॥ पलक पाट खोले द्वार देखन हरि चायरे। राखी रती सेज बानि ॥ नखसख सब सौंज आनि। प्यारे पीयकूं सुजानि ॥ लागन कूंपाय खेलनके सकल साज। कामिनी सब किये आज ॥ बोलनकी छाडी लाज। बामहि राम रमाई ॥ १ ॥ दीपक मन महल जोय। ठाढी पति ध्यान होय ॥ कब आवत कहै कोय। रायनके राई ॥ बिविध भांति बाजैं तूर। प्रीति पंथ चौक पूरि ॥ रज्जब धनहै हजूर। मिलिये प्रभु आई ॥ २ ॥ ९ ॥ तनमन तप्त रहत निज नाहा। निशि दिन दुःखी पुकार तपिय पिय ॥ दर्शन देहु कृतहू दाया ॥ टेक ॥ नखसख पीर धीर नहि तुम बिन दीन खित दीरघ दुःख दाहा। सकल क्लेश लेश नहिं सुख कूं। लाल बिना नाहीं जग लाहा ॥ १ ॥ अंतर अग्निज रावत जीवकूं। विपत्ति विछोह विधनमें चाहा ॥ रज्जब रहति येक टग। कामिनी ॥ चरन दिखाय कंत बलि हाहा ॥ २ ॥ १० ॥ परम प्राण सुख निधान। रहत कौंने थान। विरहनिबेहाललाल ॥ अंतर

गति बिरह जाल । देखे विन अधिक साल ॥ सुनहुं पीव सुजान ॥ टेक ॥ कबकीहूं दुःखित राम । बीते निशि च्यार याम ॥ तुम पूरण सकल काम । होत है जुहरि बिहान ॥ मिलहु आय परम राय । अंतरगति अवसर विहाय॥ हिरदैं नाहिं दुःख समाय । हीरा प्रभु मान ॥ १ ॥ पीय बिन फीके शृंगार । सूने गृह दुःख अपार ॥ कुसुस सेज होहिं अंगार ॥ दीरघ दुःख आन कासोंयहु कहै नारि । बैठी सब जन्महारि ॥ रज्जबकूं मिलि मुरारि ॥ दीजै जियदान ॥ २ ॥ ११ ॥ मिहरवान करि असान । राखो रहिमान ॥ चंदी बदकार फैल । दिल दरोग बहूत मैंल ॥ कैसें व्है सैर सैल आवैं क्यूं जान ॥टेक॥ तुम्ह बिन तालि बसुमार पंचों मिलि करि गुजार । दरद वंदकरि पुकार ॥ सिकतां सुविहान । कैसें करि गुजर होय जिक्र फिक्र नाहिं कोय ॥ पहुंचे नही कपट दोय । देखें दिवान ॥ १ ॥ दुशमन देखौ दिल माहिं । कबहूं नहिं दूरि जांहिं ॥ बैठे औजूद माहिं । वैरी सैतान॥ सांई सुनिये फरियाद बंदेकीदेहुदादि ॥ रज्जब है खाना जाद । हाजिर हैरान ॥ २ ॥ १२ ॥ अहो देव नाम निरंजन तेरा । यूं प्राण पियासा मेरा ॥ टेक ॥ पीय दीनदया करि लीजे । निज नाम निरंजन दीजें ॥ ऐसें प्राण पतीजे ॥ १ ॥ पीय दीन दुःखी यहुचा है । कब नाम निरंजन वाहै ॥ यहु जन्म सुफल यहि लाहै ॥ २ ॥ तुम्ह दाता सुखदाई । यहु नाम निमित्त चालि आई ॥ दिल देह निरासन जाई ॥ ३ ॥ पीव जानि जीवनि यहु पावै । तेरा नाम निरंजन गावै । जन रज्जब बलि जावै ॥ ४ ॥ १३ ॥ राम रंगलैकै रंग राती । परम पुरुष संग प्राण हमारौ ॥ मगन गलित मद माती ॥ टेक ॥ लाग्यो नेह नाम निर्मल सों।गिनतन सीली ताती। डगमग नहीं अडिग उरबैठी । सिर धरिकरवतकाती ॥ १ ॥

सबविधि सुखी रामज्यूं राखैं। यहु रस रीति सुहाती॥ जन रज्जब धन ध्यान तुम्हारो! बेर बेर बलि जाती॥ २ ॥ १४ ॥ मुझे लागै नाम पियारा! सब संतनकै जीवन मूरी॥ मेरे प्राण अधारा॥ टेक॥ नाम नाम जग जीवनि तारक। भवसागर करै पारा॥ परदा तोरि प्राण पहुंचावै॥ दरशनका दातारा॥ १॥ सबसुख राशि बिलास बिमल रस॥ विपति विदारन हारा। जन रज्जब रटि नाम निरंजन॥ छिन छिन बारँबारा। २॥ ॥१५ ॥१८४॥

राग काफी।

मुझे लागै नामही चंगा। नवखंड मांहि नाम निस्तारण॥ भक्ति मुक्तितासंगा॥ टेक॥ योग यज्ञ जपतप ब्रत नाहीं। औरन आवै अंगा॥ भरम करम करतूति कसौटी। बैठैनहिं दल दंगा॥ १॥ साधु वेद गुरुनाम दृढावै। करत ज्ञानकी गंगा॥ जन रज्जब रुचि सूरत नामही। अहिनिशि भजत उमंगा॥२॥१॥ मुझे लागै नाम रस मीठा। और सकल रस रुचैन आतम॥ सकल रसायन दीठा॥टेक॥ तनमन सकल सौंज देपायो। नाम निरंजन दीठा॥ परम पियास प्रीतिसों पीवत प्राण पियूष सुईठा॥ १॥ हरिरस रसिक पीवत सिर ऊपरि। निडर निरंकुश दीठा॥ रज्जब सुमिर सुधारस लागा। देय जगतसों पीठा॥॥ २॥ २॥ पीयहूं तेरै रंगि रँगी। परम सनेह लग्यो मन मेरै॥ सुनि सुनि गलौं चंगी॥ टेक॥ तनमन प्राण धरहुं तुम्ह आगै। चूकन राखौं अंगी॥ सकल वंजाय मेड माया मन। सजन सोन उमंगी॥ १॥ निशिदिन अंग संग सुख पाऊं। शून्य अधार सर्वंगी॥ रज्जब धन तेरै रंगि रंगत। दायम कायम संगी॥ २॥ ३॥ १९७॥

राग कल्याण ।

बीनतीसुनियेहोनिजनाथ । सरिता शक्ति बहावत आतम यहि अवसर गहो! हाथ ॥ टेक ॥ जोख्यूं जल सफरी सुशिषन सब । माहिं मझार मनमारनहार ॥ गर्व गोह जलचर सुपची सों । बिरद विचारहु बार ॥ १ ॥ त्रिगुण भवर भयमीत तरंगे । संशय सोचसंबूह सिवार । चिंता तटधन ध्यान धारमें ॥ रज्जब कीजे पार ॥ २ ॥ १ ॥ दीनकी सुनिये अरदास । प्राण पुकार कर्ण करि केशव ॥ काटि कठिन कर्मकी पास ॥टेक॥ ब्रह्मा विष्णु ईशतेतीसों । बसौंन तिनकै बासि ॥ आदि अंति माधि मुक्ति करौ तुम्ह । यहु जीवयहुविश्वास ॥ १ ॥ और ठौर नाही ठिकठा हर । मोचन नवग्रह राशि ॥ जन रज्जब जीव जड्यो जंजीरन । निरखत निकट निवासि ॥ २ ॥ २ ॥ काछिरे मन रामके आगै । करिलै निरंतर निशदिन ॥ और सकल संसारहि त्यागि ॥ टेक ॥ तनमन सकल सौंज सिर सहिता । ताहूमें विगता वैरागै ॥ यूं मन लेय लायउन मनसे । ज्यूं चकोर चंद हित लागै ॥ १ ॥ सबरस रहित रसिक रमि तासों । ब्रह्म विचारि विषैसन भागै ॥ परवनिपानसमानसुरत धरि । चरन कमल ऐसै अनुरागै ॥ ॥ २ ॥ ऐसें काछ निरंजन आगै । अंजन नेह नींदसौ त्यागै ॥ जन रज्जब जगपति यूं परसै । जाय मिलै उस बिछुटे बागै ॥ ३ ॥ ३ ॥ तीन रूप आज्ञा अंकूर । हरि सुख मनसुख गुरुसुख दूरि ॥ टेक ॥ हरिसुख हिरदै हरिसो लागै । गुरुसुखि गुरु संगति सो जागै ॥ मनसुख मूढ महानिधि त्यागै ॥ १ ॥ हरि सुख हिरदै हरिका बास । गुरुसुख ज्ञान गुणे परकाश ॥ मनसुख हिरदै जीव जनमका नाश ॥ १ ॥ अंकूर हरिसुखी है ब्रस कालू खि जीव जनमका नाश

गुरुमुख आहि अंकूर उन्हालू । मनमुख होत महामधि कालू ॥ २ ॥ त्रिबिधि रूप अंकूर पिछाने । हरिमुख गुरुमुख मनमुख बानैं ॥ जन रज्जब साधु सो जाने ॥ ४ ॥ ४ ॥ २०१ ॥

राग नटनारायण ।

तुम बिन तुमसी कौन करै । और दान दत बैण बोल ॥ यापरि नाहिं परै ॥ टक ॥ कलिकुल हीन निका जिल आतम । सो प्रभु आप बरै ॥ यहु अधिकार अपार अमित अति । सुरनर पाय परै ॥ १ ॥ पाप प्रचंड प्राणमे पहिले । सोहरि सकल हरै ॥ महा मलिन उज्वल करि आच्छयो ॥ अबिगति अंक भरै ॥ २ ॥ नर नारायण होत नाम बलि । सुमिरत ऐक करै ॥ रज्जब कहा कहै यहु महिमा सुत पति कंध्य धरै । सदा गरीब निवाज ॥ ३ ॥ यहु अरदास पास प्रभु राखौ सारो सेवक काज । आतम रामहिं कौन मिलावै ॥ काहि कहैं तुम बाज ॥ ४ ॥ यहु अंतर मेटो यहि अवसर । अंतर्य्यामी आज ॥ बारंबार बहुरि नहिं लहिये । नर नारायण साज ॥ ५ ॥ त्राहि त्राहि कहिये कोहिं आगै । पुत्र दुःखी पितुराज ॥ रज्जब रुदन करूं तो करुणामय । बहौ विरदकी लाज ॥ ६ ॥ १ ॥ निंदक नरक निवारत नरकूं । कहै अमीति अधिक अघ लागै ॥ पातक उतरत परकौ ॥ टेक ॥ ज्यूं सुरही सुतसो तन चाटत । सुखमल लेतनधरको ॥ यूं निंदक माता मतधारैं । काज करत घर घरकौ ॥ १ ॥ ज्यों शूकर साति सुग बिहूनें । होत सुधार शहरकौ ॥ त्यौं रज्जब निंदक करि निर्मल । धोवत कारो छिरको ॥ २ ॥ ३ ॥ मोसो पतितन पापी और । प्रथम देह धरि नाम बिसारयो ॥ अरु तरुणी तन त्यौर ॥ टेक ॥ चरन विमुख चूकयो यहि अवसर । करतदसौं दिशि दोर ॥ देखो

हरत परत दोय हारे । स्वर्गनर्क नहिं ठौर ॥ १ ॥ अति अपराध । कुधी प्राणी ॥ दे दे पारयौ कौर । सो प्रीतिपाल पिछानि पीठदई॥ यहि चोरी भयो चौर ॥ २ ॥ बहुत ज्ञान गुण सीखि साच बिन । गहत झूठ झक झौर ॥ रज्जब कहै रामजीके टुक । सब गुन हीन सिर मौर ॥ ३ ॥ ४ ॥ मेरे मनमति हीनन मानी । सतगुरु सीख विविध परि दीन्ही ॥ प्रकट कही अरु छानी ॥ टेक ॥ साधु वेद गुरु साखि सुनावत सुनि शठ दीन्ही कानी । अधम अज्ञान अनीति अंधगति ॥ धरम भेंड सब भानी ॥ १ ॥ भांति भांति मनकूं समझावत । मनहुं लीकलखपानी ॥ सोगति समझि भई यामनकी । कहिये कहा बखानी ॥ २ ॥ नमोनमोहारे मन आगै कौन कुमति है सानी । जन रज्जब जुगि जुगिया जीवसों ॥ रह्यो रधंइगी ठानी ॥ ३ ॥ अकलहि कौंन कलै कलि माहीं । आदि अंत मध्य महा पुरुष सब। पारहि पावै नाहीं ॥ टेक ॥ ब्रह्मा आदि विचारत थाके । शंकर सोच शरीरा ॥ नारद सहित सकल । सिध साधक ॥ कोऊन लहैतटतीरा ॥ १ ॥ शेष सहसद्वैरसन रटत नित ॥ परम प्रमानन जाना । नेति नेति कहि निगम पुकारत ॥ तेऊहै हैराना ॥ २ ॥ ख्यालपरे षट्दर्शन खोजे । कोऊ खबरि नहिं पावै ॥ अगम अगाध गगन गति गोविंद । रज्जब खग कहां धावै ॥ ३ ॥ ६ ॥ प्रभु मेरो पूरण है सर्वंग । सेवकके संदेह दवन दुःख दिखरावत रुचि रंग ॥ टेक ॥ चरन चिंततौ चितवत चरनमें । सुरति किये सरब सीस ॥ श्रवण नैन नासिका मुख रसना । जिताहिं तिताहिं जगदीश ॥ १ ॥ भुज भावहिं भगवंत भुजा भरि । उर रूपी वह अंग ॥ पेट पीठि पहिचान सुपावत। निकट सुन्यारे नँग ॥ २ ॥ नरकै नेह नखस खनख करि । नाहिं सुनजरि दिखाये ॥ जैसें शीत कोटि शून्य स्थल । रज्जब पेखिन

पाये ॥ ३ ॥ ७ ॥ आये मेरे प्यारेके प्यारे दर्शन देगि दृगन सुख पायो। नखसख लौं ठारे ॥ टेक ॥ मंगल चार मुदित मनमेरे।मोहन मित्र पधारे। अंग अंग आनंद अति बाढ्यो ॥ नेही नाह निहारे ॥ १ ॥ परम पुनीत प्रीतम पति पेखत। पावन प्राण हमारे ॥ सुख सागर सोसैंन सनेही। मिलत महा दुःख टारे ॥ २ ॥ प्राणसु पीव जीवकी जीवन। जोवत कारज सारे ॥ श्रीपति सहित सकल बस जिनकै। जन रज्जब शिरधारे ॥ ३ ॥ ८ ॥ २०८ ॥

राग जैतश्री।

दुःखित वंत कारण कंत। परम पीर मन अधीर ॥ नौसत सब भूले चीर। नैंनों नित श्रवत नीर ॥ बिरह बपु हेत ॥ टेक ॥ दीरघ दुःख रह्यौ छाय। दुःसह अति सह्योन जाय ॥ कासौं यहु कहौं माय। बैरीमैमंत। दशवें कुलको लाग्यो नाग ॥ देखि सखी मेरे भाग्य। प्यंड प्रान होत त्याग ॥ नाहीं तंत्र मंत्र ॥ १ ॥ बीचों बीच बहुत मार। तनमन शिर बहत धार ॥ प्यारे पिव बिन पुकार। शठलन जिये जंत ॥ रज्जब धन्य राखि लेहु। नारीको निरखि लेहु हरि उमंगि दरश देहु ॥ लीजे नहिं अंत ॥ २ ॥ १ ॥ पीयकै प्रेम बांध्यो नेम। अवनी नीर नाह सीर ॥ दसौं दिशि पानी गंभीर। पीवै नहीं ताल तीर। चित चातक जेम ॥ टेक ॥ अंतर गति यहु बिचार। परसै नहिं जग बिकार ॥ सुमिरै हरि बारबार। मन मानैं मतियेम। अंबुज ज्यूं अंभस्थान ॥ मन मयंकरहै आन। करै हो सुधासु पान।तनमन गति तेम ॥ १ ॥ सीपज्यूं समुद्र बास बारि बूंदसौं।निराश।ऐक स्वाति सुरति प्यास।उर बोले नहीं हेम॥ रज्जब धन्य धन्यभाव बरत बंध चित्त चाव। मंगल मन मध्य गाव। सकल कुशल क्षेम ॥ २ ॥ २ ॥ गोविंद राखि सकल नाखि।

सत गुरूकी श्रवण धारि ॥ वेदहु विलोक चारि । पंचनकूं पटकि मारि ॥ सब संतनकी साखि ॥ टेक ॥ ऐसौ कछु और नाहिं। सेवा सम जगत माहिं ॥ जासों अघ दोष जाहिं । निशि दिनसो भाखि ॥ जपिलै जीव जगत मौरि । अंतर गति अगम ठौर आतुर दिन रैन दौर ॥ पहिलैही पाखि ॥ १ ॥ चरन कमल बांधि नेह । जीवन धन सुमरि लेह ॥ सुतदारा त्यागि गेह । अमृत रस चाख ॥ रज्जब भजि भानि भोलि। भक्तिरूप आनि मोलि ॥ दीजै मननंग खोलि । सौंधी सिरि लागि ॥ २ ॥ ३ ॥ गोविंद पास सुख बिलास श्रवण सुखी सुनत बैन । बदन ज्योतिन राखि नैंन ॥ आतम राम मिलत चैन। मगन मुदित दास ॥ टेक ॥ परम पुंज परत हाथ । विविध भांति भरत बाथ ॥ सर्व बोल सांई साथ ॥ पूरण मन आश । जीव ब्रह्म बनत खेल ॥ रोम रोम करत केल । रसरूपी रेल पेल ॥ पाये निधि बास ॥ १ ॥ सकल कुशल सांई संग । अति उच्छाह अंग अंग ॥ दरस परस है अभंग । जनम सफल तास ॥ जीवन मूरि हरि हजूरि । विमल रूप प्राण पूरि ॥ रज्जब प्रकटे अंकूरि । आनंद बारह मास ॥ २ ॥ ४ ॥

राग धनाश्री।

॥ आरती ॥

आरती तुम ऊपरि तेरी । मैं कछु नाहिं कहा कहूं मेरी ॥ ॥ टेक ॥भाव भक्ति सब तेरी दीन्ही । ताकरि सेव तुम्हारी कीन्ही ॥ १ ॥ मन चित सुरति शब्द सब तेरा । सो तुम लै तुमहीं पर फेरा ॥ २ ॥ आतम उपजि सौंज सब तुमसे । सेवा शक्ति नाहिं कछु हमसें ॥ ३ ॥ तू अपनी आप प्राणपति पूजा । रज्जब नाहिं करनकूं दूजा॥ ४ ॥ १ ॥आरती आतम राम तुम्हारी । तन मन सेवा सौंज उतारी ॥ टेक ॥ दीपकदृष्टि गुरुकी दीन्हीं । घंटा-घट धीरज ध्वनिकीन्हीं॥ १ ॥ ध्यानधूपहितको करिहारा । पाती पहुप अठारह भारा ॥ २ ॥ नखसख चंदन नान्हांन्हांटे । केशर

करनीसौं हरि छांटै ॥ ३ ॥ ऐसी विधि उर अंतर सेवा । जन रज्जब क्या जाने भेवा ॥४॥२॥ आरती अविगति नाथ तुम्हारी । करि कहा जानें सुरति हमारी ॥ टेक ॥ अपने पाट प्रभु आप विराजें । सेवक उर आसन कहा साजै ॥ १ ॥ पहुपपान अंगि अंगनमावै । हमकहा पाठी प्रराति चढावै ॥ २ ॥ ज्योति प्रकाश सकल उजियारा । ज्ञानअग्निका दीपक जारा ॥ २ ॥ शून्य सरोवर सलिल अनंता । काया कूंभ कहा भरै संता ॥ ४ ॥ अहि निशि अनहद गोपिसु गाजै । घंटाचामोधर कहा बाजै ॥ ५ ॥ संकलसौंजसांई कनसाची । रज्जब आरती करहिं सुकाची॥ ६ ॥ ॥ ३ ॥ आरती कहुकैसी विधि होई । सौंज शिरोमणि सारी खोई ॥ टेक ॥ प्रथम पाट उर बैठें ओरे । परम पुरुषकूं नाहीं ठौरै ॥ १ ॥ बामा बायुबही विचि आई । ज्ञान दीपदि लदिया बुझाई ॥ २ ॥ स्वाद शिलापर घण्टा फूटी । पवन चामरडांडी सुरति छूटी ॥ ३ ॥ पाती प्रीति पहमपरि डारी । पहम फूलकी माल विसारी ॥ ४ ॥ चिंता चोरलिया चितचंदन । क्यों कीजें अरच प्रभुबंदन ॥ ५ ॥ ठाकुर खडेखोहिकूं खडिया । खोस्यो खल षट् पेडापाडिया ॥ ६ ॥ रज्जब मांगैसोजसु दीजै । अंतर्यामी आरती कीजै ॥ ७ ॥ ४ ॥ यूं आरती गुरु ऊपर कीजै । जामे आतम रामलहीजै ॥ टेक ॥ ज्ञान ध्यान गुरुमाहैं पाया । विषम विषयसौं प्राण छुडाया ॥ १ ॥ दुःख दरिया माहैं सेकाढ्या । नाम जहाज जीवले चाढ्या॥२॥माया मोहकाढिमन धोवैं । परमपवित्र गुरु तैं होवैं ॥३॥ जिन अंगों प्राणीपति सेवैं । ते सब अंग गुरुदिलदेवैं॥४॥ गुरुप्रसाद परमपद पावै । जन रज्जब जुगिजुगि बलिजावै ॥ ५ ॥ ५ ॥

इति श्रीस्वामी रज्जबजीकृत पदभाग समाप्तम् ।

पद संख्या २१८ ।

अथ श्रीस्वामी दादू दयालजीका भेटका सवैया श्री रज्जबजीकृत लिख्यते।

भगवांजुभावै नाहिं। विभूति लगावै नाहिं। पाखंड सुहावै नाहिं। ऐसी कछु चालहै॥ टीका मालामानैं नाहिं। जैन स्वांग जानैं नाहिं॥ प्रपंच परवाने नाहिं। ऐसा कछु हालहै॥ सींगी मुद्रा सेवै नाहिं। बोधविधि लेवै नाहिं॥ भरमदिल देवै नाहिं। ऐसा कछु ख्यालहै॥ तुरकौं तौ खांदि गाडी। हिंदूनकी हदछाडी॥ अंतर अजरमांडी। ऐसो दादूलाऊ है॥ १॥

निष्पक्षनिजका अंग।

मिलैन काहूके संग। रंग्यो जुहरीकैरंग॥ हृदयेहंस ज्ञानहै। चालमाहिं चालकाढी। दोऊ पक्ष रहे ठाढी। कांबी ले अधिक बाढी॥ परवीन विनान है। नीच ऊंच छाडिदोय॥ आत्मा लईजी जोय। ऐसी विधि रमै सोय॥ अधिक सयानहै। कबीरजैसे पंथधायो॥ कीट भृंग होय गायो। ऐसी विधि पतिपायो॥ दादूजी सुजान है॥ २॥ बाईये बंधन स्यंदनिकंदन। येकलिमल अमिट करारो॥ राजापातशाहगये युद्धवांहिं। अटैन मिटयो कहुखेति जुझारो॥ चाली सब्ददसु आये बेहद। फोरिकियो ढुंढुंबीचिदरारो॥ रहीरजरेख सुनी शशि शेष। हो ऐसो भयोकलिमैं दादू पीवप्यारो॥३॥हलैन चलैन पिछै न ढिलै। ऐसे रोपिरह्यो बलिबंड षिहारी॥ अटैन मिटयोन बटयो न लुटयो। अजुमाया रुमांन गए पचिहारी॥ हलायो चलायो झुलायोन डोलई। देखहु साधु सुमेरुतें भारी॥ हो दादू व साधू

व आदि अनादि शिरोमणि। रज्जब देखि भयो बलिहारी ॥ ४ ॥
दियोहरि आजगरीबौंको राज मिल्यो सब साजहो छउछत्रो
लेके शीश बिराजै । जहां लगभानु तहांलग आन । अगमहू
जान शब्द निशांन । प्रकट बाजै । उठै सब शालदयूं अरिकाल
रह्यो बिचिलाल हो ज्ञान गयंद चढयो शिरगाजै।हो दादूको राज
गरीब निवाज अनाथकी लाजहो रज्जब रंकके पूरणकाजे॥५॥
नौलक्षतारौंको तेज गयो चलि । एकहि सूरकी ताबही देखत ॥
कोटिकगायगईज्यु दशौंदिशि । एकही सिंहकी आंख्यू हूं पेखत ।
बाजे अनेक गये सुनिवेसूंजु । येकही इंद्रकी घोरहि लेखत । यौं
लोक अनेक अकेलोहै दादूजी । हो एकहि अंटघने खतछेकत
॥६॥ मनसे मयमंत उछारे आकाशकूं । फेरपरेनहिं ऐसेते नांखे ।
नौकुलीनागज्यूं कीलिकरंडमैं । ऐसे प्रकार इंद्री अटिराखे । शरीर
सरोवर सूर ज्यूं सोखे।मानो दरियाव अगस्त ज्यूं चोखे । हो दादू
दयाल कहुं कौन ऊपमा । मेरे विचार बयनमैं भाषे ॥७॥ येकके
एक कियेज्यु अनेकसो। पेखिपुरातन सोधिसगाई । अनंत अनीति
उठाय उरहुसौंजी । आत्मारामके पंथचलाई । नारी पुरुषकोनेह
रह्यो जगि । मानौं हनूतनैं कहा सुनाई । हो रज्जब दादूके काम
नकी कछु । न्योरे विचार कही नहीं जाई ॥ ८ ॥ बेद कुरानको
बोध विलोकि भरम करममैं नहीं भयो है । भेषरु पक्ष रहे सब
लखि । गये सब झखि निरखि निरंजन पंथ गह्यो है । अवतार
अपार भये केई बार । सु देखि तिन्हौं दिशि नांहि चह्यो है । हो
रज्जब रत्त अनंत अनूपम । दादून दूजेको दण्ड सह्यो है ॥ ९ ॥
मरेहु जरेसूकरेजु कटाछिमैं । छायाछबीलेकीते उनछीने । नामन
ठांवन गांवन ज्ञानमैं । तेऊजी चंबक ज्यूं सब बीने । बहेहु रहेज्यु
गहे अपने कर । कालके गालसे सोगहि लीने । हो दादूदयालु

कृपालु कृपाकारि । रज्जब देखि अचंभेजु कीन्हे ॥ १० ॥ दादू सोदानी नहीं दृग देखत।दुर्ग दरिद्र को तोरन हारो।रंकसौं रानभये दिशि देखत।आपद् फेरित क्यौं नहि द्वारो । जुजासु कृपाकारिते भये ईश्वर । नामसूं बित्त चढ्यो करसारो । हो रज्जब संतसुखी सब मंगित।दादूमिले मन मंगल चारो ॥११॥ नामकी ढांवर नीतिको आगर । ज्ञानकी गंग बहै मुख मांगै । साचकी सीमासु दृढसु मेरुसो । शीलकी साल मंडीसुख आगै।समाई समुद्र सुगंधिको चंदन।पारस रूपसुमन करम लागै।हो रज्जब राम दियोदतदादूको । अंग अनंत बडे बड भागै ॥ १२ ॥ ऊपमा अनंत भाय । काहूपै कहीन जाय । कहै कहा जन बनाय । कौन अंगकै समान । दादूजी बखानिये । इन्द्र चंद्र है समुद्र । येक येक माहि दिंद । तहांन आनंद कंद । मांडमैं शोभा सयान कोऊ नाहिं जानिये । पारस पोरसन सति । काम धेनु पशूगति । तिनमैं नाहिं भजन मति । सतगुरु सम सत्यरूप । इनमैं क्या बानिये । सुकछु नाहिं जगत माहिं । पटंतरकूं कहे जाहिं । तेन त्रिगुणमैं समाहिं जन रज्जब गुरुगोबिंद । मनबचकर्म मानिये ॥ १३ ॥ दादू गुरुके गुणौं नहीं अंतज्यू । कौन समानसु अंग बखानौं । उरैं उन चाससु अवनी अंकूर । नक्षत्रन आगै नहीं नभ जानौं । बूंदन छेह बरसि बिरारत । नीरहि तीर समुद्र समानौं । हो रज्जब आभहु और ऋतुगत । पवनको पार बहत बिलोनौं ॥ १४ ॥ बीनती कौन करे तुमसेतीजु । कौनकै भाव भयो तुमलायक । कौनकै लागुर देव बुलाइये । कौनके मुख बन्यो ऐसो बायक । कौनकै प्रीति प्रचण्ड भई उर । जापरि गौन करै गछ नायक । रज्जब रंक रिझावै कहाकहि आपसौं जानि चलै सुखदायक ॥ १५ ॥ बीनती निकट बात । कैसे करूं गुरुतात । सु कछुन मुख जीभ ।

जाहिके बुइलाये तैसी नाहिं भाव सेव । जाहिरीझें गुरुदेव । प्रीति पानि कौन आनि । ठौंरते हलाइये । सर्व अंग हीनदीन । चाकरीकदेनकीन्ह । कौनभांति मानतान जोरकै चलाइये । कहत कहोन जाय । दादूजी दयालु होय । पयानौं दिलाइये ॥ ॥ १६ ॥ दादुरपिक मोर सीप । इन्द्र आश सकल द्वीप । चाहैं सब सुख समीप। जीवन जगि भावै ॥ तिनरु भेलयौं बिलास । किरन कुसम कुसट नास ॥ चाहैंजु चकोर दास । कब मयंक आवै ॥ चकवा चकवी सुम्यंत । दृष्टि इष्टकमलकंत ॥ रवि प्रकाशरैन अंत । जगतकूं जगावै॥ तैसे दादू दयाल कीजे सबकी संभाल । दरस परस ह्वै निहाल रज्जब सुखपावै ॥ १७ ॥ सेवक संतोष काज परम पुरुष आये आज । पूरे समस्त काज ॥ पावन मनकीन्हे । जिनकूं जनौंकी लाज । सो पधारे शीश ताज॥उपजै आनंद राज । पाप पुञ्ज छीने ॥ बैठाये नाम जहाज । दिये हैं सकल साज ॥ पूरौंकी पूरी निवाज । राम नाम दीन्हे ॥ दीसै दीरघ साज । दादूगुरु गृह बिराज ॥ संकट दुःख सकल भाज । अपने करि लीन्हे ॥ १८ ॥ दादू दयालके संग सदादल राम रंगीले दशौं दिशि ढाढे।जिनके प्रताप प्रपंच गये भाजि । भेष भर मरु मांझ सौं काढे ॥ महा प्रचण्ड निश्शंक निरंकुश सरगुण रूप सुशीशन चाढे । रहति कहति सबै बिधि समथ ॥ रज्जब राम भजनसौं गाढे ॥ १९ ॥ दादूजी मात बुलाय पिता हरि । बालक बालसु गोदसौं डारे॥ सांई समीर लियौ घन दादू । चहुं दिशि चात्रिक चित्त पुकारे । आदित्य आप सरोवर दादूजी ॥ सालनही सफरी शिष्य मारे । हो दादूको गमन दुःखी शिष्य रज्जब ॥ प्रीति प्रचंडसु अंतरजारे ॥ २० ॥ दीन दयालु दियो दुःख दीनन । दादूसी दौलत हाथसौं कीन्ही ॥ रोष अतीतनसौंजु कियो

हरि । रोजीज्जुरंकनकी जग छीनी ॥ गरीब निवाजगरीबहते सब । संतन शूलज्जु अतिगति दीन्हीं ॥ हो रज्जब रोय कहै यहु काहिजु । त्राहिजु त्राहि कहा यहु कीन्हीं ॥ २१ ॥

अथ श्री स्वामी गरीबदासजीका भेटका सवैया लिख्यते।

दादूके पाटद्दिपै दिनहीं दिन। दास गरीब गोविंदको प्यारो॥ बालयतिरु जन्मको योगीज्जु । शूरसधीरमहामनसारो ॥ उदार अपार सबै सुखदाता । होसंतनजीवन प्राणआधारो ॥ हो रज्जब राम रच्यो ज्जुगजानिकै। पंथको भार निवाहन हारो ॥ ॥ १ ॥ दादूही प्रसाद पुरातम चीरी। गरीबीकी गोय गरीबकै साथि है ॥ तीये तुरंग चढ्यो मन चेतन। ज्ञान चौगान सुहे तको हाथी है। काया मैदानरु बंदगी बंटो ॥ लिये सोई जायसु संतन आथि है। हो रज्जब पंच पचीसन पूजें ॥ भई हरिहूंददई दीनानाथ है॥ २॥ गरीबकै गर्व नाहिं । दीनरूप दास माहिं॥ आये न विमुख जाहिं ।आनंदको रूपहै ॥ दादूजीके पाटपरि । बैठायोज्जु आपहरि ॥ उपज्यो सु बीरधर ॥ भक्ति भूमि भूप है। यौंबनमें राख्यो जत ॥ पूजवान पूरिमता। राम रंग प्राणरत्त। निर्मल लौनि कूप है॥ आतमाको रक्षपाल। पठायोज्जु दीनदयाल॥ पंथकै तिलक भाल। रज्जब अनूप है॥ ३ ॥ २४ ॥

अथ श्री गुरुदेवका अंग लिख्यते।

सीरसत्य गुरुमैं सब शिष्यनको।नीतिकी बात कही निरताई। साझो दियोगुरु देवसुज्ञानमैं। भावरु भक्तिकी खानि बँटाई॥ दृष्टि सो ज्ञानदियौदतदीरघ। जोतिमैं जोति लै जोति जगाई। हो

रज्जब भेल्यो सुभागमैं भाग तौ छाजन भोजनकी कहा भाई ॥ १ ॥

बिरहका अंग ।

उठी उरजागि विरहकीआगि । गई मन लागि भई तनकारी ॥ पीर प्रचंड भई नवखंड । जुबीचिविहंडि गई सुधि सारी ॥ भई चकचाल कहै बिकराल । नहीं कछु हाल सुलाज बिसारी । हो रज्जब रोय कहै पिय जोय।दुःखी अति होय वियोगकी मारी ॥ १ ॥ हो पीयवियोगतजैसब लोग । न भावहिं भोग भई बनबासी । जु भूषण भंग दिगंबर अंग । रंगी यहि रंग अनाथ उदासी । वैराग्यकी रीति गई तन जीति । भई विपरीति दुःखी दुःख त्रासी ॥ हो रज्जब राम मिले नहिं बाम।गये सब याम कहो कब आसी ॥ २ ॥ दुःखी दिनरात परी बिललात । कहूं किसे बात जनमकी जाती । जुमांझके सुखभये सब दुःख । बिना पियसुख विगसत छाती॥ गई सब वयसन आये नरेश जु । याही अंदेशपरी उरकाती । हो रज्जब कंतसु लेत है अंतजु । हेत सुहंत जरी जिय जाती ॥३॥ परीडर माहींजु निकसत नाहिं।बिना वर बाँहै कहो कहा कीजै।हो श्वास उश्वास रहैं किसपासजु। देखिनि राश नहीं धर धीजै॥पलपल पीरसु होत गंभीर । धरै कहां धीरजु छिन छिन छीजै । हो रज्जब रटभई जरि मठजु । पिय प्यारे प्रठदरशन दीजै ॥४॥ हो ब्रह्म वियोग ब्रह्मण्डमैं शोक लिये जिय जोग सबै दिशिरोवै । नहीं नभ धीर परैं बहु नीर । सहीउर पीर घटातन खोवै । फिरैं शशि भानु समीर समान । रहैं नहिं ठान दशौं दिशि जोवै।।गिरै गिरिधारकहैं पत्रझार । सुखो सहिबार क्यों रज्जब गोवै ॥ ५ ॥ हरि वियोग विघ्न मूल अंतरा अनंत शठपति प्रदै पाप

मूल मनबच कम मानी ॥ बिरचि बींद बिपत्ति हाल गुप्तकंत कीन्हौं काल सन्मुख नाहिं साल सुंदरी जिय जानी ! अत्रोळनो अनीसुसार पिय पीठि बहत धार मन मरोर मीचमारयासम नाही हानी ॥ दीरघ दुःख दिलन ठोर । तुपक तीर तरक त्योर । वैंन बाघ कहत और रज्जब धन मानी ॥ ६ ॥ ३१ ॥

अथ सूरातनके सवैये ।

जे प्रसूर लहै समहूरत । साहिब संगितहांसिरडारै । बाहर दोखि खरोतिहि ठाहर शूर संग्राम मरै अरु मारै ॥ शरीरको सोच करैन डरैं कछु आरण माहिं अरयूं ललकारै । हो रज्जब रामके काम तजैंतन ताहि निरंजन नाथ बधारै ॥ १ ॥ शब्दकी सांगी लगी जहि आगिसुमारहुवोसोई स्वादहिजानैं । ज्ञान चोट रही नहीं ओट हो हाथ लहिये परचौं पहिचानैं ॥ सुबुद्धिकौ सेल गुरु गहिमेल । होमारि लियो महा चंचल मानैं ॥ परयो सोई घाव गिरयो मन रावहो रज्जब पैंडन छाडहि थानैं ॥ २ ॥ सिंइनी सुरति काढि जेलहै जुगति चाढि बैंन बान धाय बाटि सतगुरु सहाई । कपट करम फोरि कुमति करीकूंतोरि निकस्यौ पैली जीवोरि ऐसे कसि बाहई ॥ निज ठोर लागो तीर लायोजीवि बेकी वीर लागतन रही धीर पानी हन चाहई । ऐसी विधि मारयो बान तनमन कियो घान अंतरि बेध्योजु प्रान रज्जब अज्जब चोट रह्यो खेतना हई ॥ ३ ॥ गंभीर धीर बिराचि बीर खेतमैं गलारई रोपि पाव युद्ध चावशूर बीर । आये दाव आप मरै मारई । शरीरकी सुरति बाढि अमृतमैं अमल चाढि पिशुन जानि तेग काढि फेरिहून बारही । जुत्यागिदे शरीर धाम रज्जब सु राम काम राखई जु एक नाम सो कदेन हारई ॥ ४ ॥ सूर सिंह छेरे खाय तासौंन

कीजै उपाय देखत विहंडि जायसोन युद्धकीजिये । दारूके भवन माहिं पावक ले संग जाँय तिनकी जु आश नाहिं बादिही जरी जिये । हिमगिरीके लागि कोट देत हैं निशान चोट उबरहिंगे कौन ओट देखतैं गरीजिये । तैसी विधि ह्वै अयान साधु सौंन माडि ज्ञान रज्जबकी सुनहु कान चिंतामन मधि मागि काछकूं नलीजिये ॥ ५ ॥ भजैं संसार लौं न पुकारन होई करार न होय विचार हो नाम अपारसु येक लहैगो । पक्षी हजार उडैं सब डारसु आवन हार रहैन करार अकाश अनिल ज्यूं एक रहैगो । चले बहुसंगसु देखन जंगन आवई अंग ह्वै सूरति भंग सतीज्यूं सलौकोईयेकगहैगो । चले बहु पूरसु बाजें हिंनूर भये भगभूर रहे रणशूर । होजब राम कोई येक कहैगौ ॥ ६ ॥ ३७ ॥

अथ सवैये साधुका अंग लिख्यते ।

साधुकी दृष्टि सौं साधुकौं देखिये जोहौं हि आंखिसौं आखिन सानी दीप उदीपसौं दीपक पेखिये प्राण पतंगनैं जोति यूं जानी । चंद्रकांति लखै चखि चंद्रहि चाहि चकोरसुधारति मानी॥हो रज्जब सूरहि सूर दिखावत बात प्रकट है नाहीं छानी । ॥१॥ संत प्रताप मिलै जिव संतन पाव पसाव विना नहिं पावै । कमलकी बास गई बस लीकनैं संगि सुगंधि तहां अलिआवै ॥ शीतल अंगमद्धासकुसीरभपाइपरमलकूं अहि धावै । हो रज्जब देखि हैं स्योबल चंबक सूती सुई श्रुति अंगहि लावै ॥ २ ॥ साधु मिलै तो सुधारसपीजिये आतम आनंद होत अपारो। ज्यूं शशि देखि मुदित कमोदिनि । कूंचीकैलगै खुलैजु किवारो । होसीपको संपट स्वाति सौं उघरे । रोजा खुलै जब देखिये तारो । हो रज्जब

रैनचकवाकी ज्यूं । आय मिल्यो मानो सूर पियारो ॥ ३ ॥ साधु समागम होतहि पाइये । रामको नाम शिरोमणि साचो । निर्मल ज्ञान गोविंदको उपजै । कंचन होत पलटिकै काचो । तामहि फेरन सारमनकर्म । साधुकैसंग कोईनरराचो ॥ हो रज्जब सुख सदा सत्संगति । जामहिं लागै नहिं यम आँचो॥४॥ पाप प्रचंड कटैं सत संगति । पानीपाषाणसौं पापन जाहीं । चंदन संग सुगंध बनी सब । निंब सुगंधन बागहुँ माँहीं। चंबक चाहि सुई सब चेतन । सोवल और पाषाणहु नाहीं । पारस लागि पलटत लोहज्यूं रज्जब त्यूंन सुमेरुशिलाहीं ॥ ५ ॥ साधु सचित्तसौं काम सरै सब नाहिं अचितसौं कारज सीझै।सनीर सरोवर प्राणी सुखी सब । सूखे सरोवरमैं कहा पाजै। बरसत बारि भले सोई बादर । नाहिं जु नीर घटा कहा कीजै । हो रज्जब धाहसु पाथर प्यारो । पैनीरसधाह पाषाणन लीजै ॥ ६ ॥ सुधबुध आप भजै भगवंतही । श्रेष्ठ कजै अनंतकै सहारै।विप्रकी मींचभई अपने जिये । सूर संग्राम कितेनर मारै । पावक आप पचैसु पतंगाहौं । चूल्हेकी आगि घन घर जारै । होरज्जबपानितिरै अपनेअंगबोहिथवरि बहुतबपु तारै ॥ ७ ॥ ४४ ॥

साधु मिलाप मंगल उछाहका अंग।

देश दशानि भूमिसो स्थल । जापरि जीवन संत विराजै । दरस परस प्रकटै सब पातक।काल जंजाल निरखत भाजै।प्रेमकथा सुनि हौंहिं सुखी सब नाम.निशानसु प्रकट बाजै। हो रज्जब भाग उदय मिलि साधु । सो संतप्रताप सदा सबगाजै ॥ १ ॥ ज्ञानके थान विवेकके वासन । देश दयाके दया करि आए । आनंदके कंद विलासकी राशि । सुखहूंके समुद्रसु भागसौं पाये । भक्तिकी

भूमि भंडार भजनके। प्रेमके पुंज मिले मनभाये। प्राणके प्राण रुजीवके जीवन। रज्जब देखिदरशअघोए ॥ २ ॥ उत्तम ठौर अतीतकौ बासौंजु। साधु समायन मध्यमकेघर। मान सरोवरसी निधि छाडिकै। हंस रहैं कतआयथली परि। विविध प्रकारके बाग बिनांअलि। केतकवेर व्हैं कैरकली हर। कोकिल कीर औबैरचैं रज्जब। नाहिं समागम आकहुं कैंसर ॥ ३ ॥ ४७ ॥

उपदेशका अंग।

आपसौं होय सुतौ कछु कीजिये जोबन होयसु रामकै सहारैं। सूरसु दोसन नैंन मुंदेपरजोलौंन प्राण पलक उघारै। मेघसु मान कहो कहा कीजिये। जो खेतकिसौंजु किसानन धारै। हो रज्जब त्यौंसुनसुकृत बाहिरै। साहिब साधुकहो कैसे तारै ॥१॥ आरन काढे सौं सारहो शीतल। सारकी आगिसुं औषधि मारिये। बंबूरके बिछुरे बीज व्है चीकनो बीचि। अंकूरसु पावक जारिये। सालरि बाट्यो रहि वढिबेसौंजु उगिबा जाय जैछयूत उपारिये। हो रज्जब सुख कटूबक छाडैं। कुबुद्धिकें छाडेसौं कारज सारिये॥ २॥ शरीरको नाशकरै सुस न्यासी।जु जोगी सोईजु जुगतिसौं जारैं। दरवेश सोई जहि देहन व्यापै। बोध सोई जोई बाप बिसारै। भक्त सोई सब भूलै बिना हरि। जैन सोई जोई जीव उद्धारै। ऐसेही ज्ञान मिले भगवंतहि। रज्जब रामन स्वांगसौं तारै ॥ ३ ॥ देह धरैंतनमैं मन निश्चल। तीन प्रकार प्रकट पेखतूं। अतिगति शीत सरोवर बेधत। पानी पखानसुं आहिविशेषतूं। ज्यूं अस्तु उभौं रहै जाटि चंबक चालर दौर नहीं कछु देखतु। मूसौंजु पारा पिये पग पंगुल। रज्जब राम रमौंलि एलेखतूं ॥ ४ ॥ नींदके नेह निर्मूल भयो नर। श्वास उश्वासकी

चालन थाकी, पक्षी कोप्रान परयोतमनीदहि पायसुदृढ रहे रुपिसाखी । राहुरु केतुग्रसैं शशिसूरज । चालन सालरि हैं नही राखै ॥ राहरु केतु ग्रसैं शशि सूरज, चालनि साल रिहै नहिं राखी । हो रज्जब पिंडनप्राण गह्यो यूं ,पलैन गहीजि जीयौं जहि बाकी ॥ ५ ॥ जैपर साधुकै साचीजु उपजै, तौं कहा मायारु मोहकरैंगो । ज्यूं शशि सूर घटामधि ऊगत तौब कहा कछुआभा हरैगौ । कमल कौनाल परयो पग हाथीकैं, तौ कहा बेडीको काम सरैगौ । जैर सुमेरु समुद्र मैं डारिये, रज्जब सोधर जाय परैगो ॥ ६ ॥ येकको ठौर सहीउर अंतर माया रहै भावै ब्रह्म विचारै । ज्यूंसुख कीरीकै येक कनूं को जु, दूजौ गहै जब दारू है झारै । तिनै परिवूंदरहै सुनि येकहि तापरि ओर कहै कैसे चारै । हो ज्यूंकीव्है वायुतरंग व्है त्यूंहींकि, रज्जब सामौंही लोरो न मारै ॥ ७ ॥ हीरेकेदीवेसौं आगि न लागे जु चित्रको सिंह कहा कहु खाई । जरी जेवरी सौं प्रय्यंक बुने कोऊ, बिभ्रम के नीर कहा तिस जाई । मकरीके सूत सितारौंन नीपजै, शीतके कोटको ओट रहाई । हो रज्जब साधुकों लोगन चाहै, जगत्रय को संत कहा करै भाई ॥ ८ ॥ ५५ ॥

सुकृत का अंग।

देतहि देत बयौ ज्जुउ गावत, भावतहैभगवंत भलाई । कृपालु, कबीर दई द्विज दोवटी, ताहीते ताकै जु बालद आई । धानकी पोट धन्ना दई विप्रहि, बीज बिना सुकृषि निपजाई । हो रज्जब रंग रह्यो दिये दान जु, दादू दयालु पाई सौदे पाई ॥ १ ॥५६ ॥

समता निदान का अंग।

जैन जोग अरु शेख सन्यासी भगत बोध भगवंतहि धावैं । बोवत बजपरैं क्योंहूं,अंकूरधरउदै होय ऊँचेहीआवैं । नवकुळीनाग

परे नवखंड मे, पंख लहैं सोईचंद निनजावें। दसौं दिशि नीर बहै सरिता सब रज्जब सोई समुद्र समावैं ॥ १ ॥ काष्ठरु लोह पाषाण की पावक, येकहि रूपरु येकसी ताती। वृक्षअठारहभार बहु विधि, पानके पान मधुर मधु जाती। मच्छ अनेक अनेकहि जातिके यामत येक जु नीर संघाती। हो रज्जब रामको नाम भजै जु, सु आतम येकजु येकसौं राती ॥ २ ॥ साधुके शुद्ध भये मन पंचों तौ, जाति कुजाति को बंक न कोई। चंदन बंक भुवंग न भागई, चंद्रकी बंक चकोरन जोई। बंक बुरी नहिं ईख जु लेबेकी, स्वाद के संगि गई सब योई। हो रज्जब बंक विचारन बोहिथ, जापरि प्राण पारंगत होई ॥ ३ ॥ जाति कुजाति भई सम सारिखी नाम निरंजन मैं जब आए। तांबैरु लोहको अंतर भागौजी, कंचन होतहै पारसलाये। भारअठारह जुआमल आकलै चंदन संग सुगंध, कहाये। होरज्जब आगिमैं आगिभये सब काष्ठहीकेकुल भेद जराये ॥ ४ ॥ जाति कुजातिरु उत्तम मध्यम, जातिके जोरिन जोतिको ज्वेहै। बेरी भली नहिं सोनेरु लोहकी पाय परैं कछु पंथ न व्हैहै। नीदको नाशन जौंन अंधेरी मैं, सूर बिना सुख नीद हासिवैहै। हो रज्जब राम मिलै न ऐसे,जुलोनपै मकौ बौहडो व्वै हैं ॥५॥ हिन्दूकी हद न ताप तुरक्की, मुद्राकी मानि न मौनि सुहावैं। माला न मेल्त जीत सबी सब, गेरू न गतिभस्मन भावै। गूदड झूठन गिनैं नहिं कछु, मूढ मुग्ध सौं मूंड खुसावै। पखापख प्रीति न भूलै सभेखौ, हो रज्जब राम रटै सोई पावै ॥ ६ ॥ कौन कुलीन को देवल फिरयो जु कौन कुलीनकै बाळद आई। कौन कुलीन को शंख बजायो, ऐकौन कुलीनके बेर सुखाई। कौन कुलीन के गात जनेऊ, हो कौन कुलीन सु देखि कसाई। हो रज्जब राम रचै नहिं जातिन प्रीति प्रसंग मिलैहैरे भाई ॥ ७ ॥ ६३ ॥

भजन प्रताप का अंग ।

केलेको नाशभयो फल लागत । कागद नाश भयौफल पाये । पापको नाश भयो पुण्य ऊगत बीछिन नाश भयो सुतजाये । फूलको नाश भयो फल आवत । रैनको नाश भयो दिन आए । हो तैसेहीनाश भये जन रज्जब । जामन मरन जगतपति ध्याये । ॥ १ ॥ ६४ ॥

पीव पिछाणन का अंग ।

धरे को ज्ञान धरेहीको ध्यान । धरेहीके गीत घरि घरि गावैं । धरे को विवेक धरे को बिचार । धरे कोहि नाम बडौं को दिखावैं । धरेहीकीबात धरेहीकीच्यंत । धरेहीकी घातअनेकमिलावैं । धरेहीसौं लेन धरेहीसौं देन । हो रज्जब राम धरयोही बतावैं ॥१॥ कहै सब हद गहै सब हद बेहद नहीं अनुमान मैं आवै । गुडीको उड्डान डोरीके प्रमाण हो । चक्रा हूं डोरीके बोरि व्है आवै । तीरकूं जान जहांलगपान जु । गैंदको गौन पैंड दशपावै । तरंगकीचाल जहांलग पाल हो । रज्जब बडा गुल दौर का धावै ॥ २ ॥ ६६ ॥

साक्षी भूतको अंग ।

लोक लियेरु लिपैनहिं लोकनि । प्रानकूं प्रानरु प्रानन्यारो । ज्यूंजल जीवनिमैं जलचरी । नीरनसिग्सु सैन सहारो । मारुत मैं पपु बैनरु बादर । बाइ बिरचिरहीरअधारो । सूरसु दूरिरु नैनन नीरो हो रज्जब ये हो । बिवेक विचारो ॥१॥ श्वान शिला सरिता संग सोई जु । शूकर सिंह सुसेगिलखावै । देवल स्थंभरु मूरतिके मधि । छान छबीलो सुसतकी छावै । गौरीरु गौर गयंममैं गोविंद सेवक संत कहां कहां धावै । हो रज्जब राम रह्यौ रमि सारे मैं । रूपहि छाडि अरूपहि पावै ॥ २ ॥ ६८ ॥

साच चाणक का अंग ।

विरक्तरूप धरयो बपु बाहरि । भीतरि भूख अनंत विराजी । ऊपरिसौं पुनिहीं पुनि त्यागी ज्ञु । माहीं तृषा तिहूँलोक की साजी । कपट कलाकरि लोक रिझायो हो । रोटीकूं ठौर करी देखो ताजी । हो रज्जब रूपरच्यो ठगको जिय । साधु लखैसब लाखिर । पाजी ॥ १ ॥ निराश रहै अरु नगरनसौं हित । देखि महंतनि माया ज्ञु त्यागी । टोपीरु कोपीकी नाहीं कछु मन । प्रीति प्रचंड बजाज हूँ लागी । अति गति ध्यान धनाढ्यसौंकीजिये । लोग सुनाइन कोडिहु मागी । हो रज्जब रिंद कपट छिपावत। साधन कों सब दीसत नागी ॥ २ ॥ निराश निरूप करैं निशिबासर । दासकी आश के धाम न आवै । सेवक सेव रचैंतहां बैरिज्ञु । विरक्त बात अनेक चलावै । गांव द्वै चारिमैं चित्त अटक्यो हो । चील्हकी नाईंतहां मंडलावै । हो रज्जब औरकी और कहै कछु । आपनु दुःख दशामैं दिखावै ॥ ३ ॥ ३ ॥ निर्गुणरूप दिखाय दुनीकहुं । देखहुं लोग ठगेठग सारे । को पीरठोपीगरैं गरगुद्र । मानौं डको तबजार उतारै । जैसी जुगतजगत खुशी सब तै सीयशठलके स्वांग सँवारे । हो रज्जबदास दुनीके भये उर । बानैं किरानेके बेचनहारे ॥४॥ रोगके जोगसौं लोगरिझायहो । हीजसुंफेरि इंद्रीजित कीन्हौं । घंनेघनघाम सहेबिनधाम जगत्र सुनाय कहैं तपखीनों । अभागकी चूरगये सुखदूरकहैं । कछु जानि देहीदुःख दीन्हौं । हो रज्जब दुःखदशामैं बनाय । कहीं को प्रसंग कहीं करि लीन्हौं ॥५॥ जगत्रयको जोगचलै जगिमारग ।तासों खलक खुशीकिनहोई । संसारके सेरेसबै लिये स्वामीजु काहेकूं दोष करैं कहुकोई।ताहिमाधिपाग मुदित ज्यूं मेदिनी । भांड

मतै मनसाछु मिलोई। हो रज्जब प्रान पुलै पृथीपंथी प्रीतिप्रजा परलोकसौं खोई ॥६॥ सुधबुधको कामसरैं सतसंगतिखे। चरस्यंद कदे नहिंसीझै। नागरनिंम्बकूं दूधसौं पोखिये।देखहु जातिस्वभाव नछीजै। क्षार समुद्रनहोय सुधारस। पाहनपानीहोमाहिन भीजै। कोईलाकुटिल करैकूंन उज्ज्वल। रज्जब रंगक्यूं शंखहि दीजै ॥ ७॥ तेलकोकूंपोन तेलसुं कोमल। नीकीनरम व्हैं और अघौरी। गायकै दूध महाबलि बाछरो।गाय गई अपने बलिबौरी। मनिसौं विषऔर मनुष्यकूं उत्तरै। सर्प समीप सदाइकठौरी। हो रज्जव सुख सदा सुरतैत्रकातिकै बिनाशकदे नहिं त्यौरी ॥८॥ शब्दकीचो भरहैन अचेतकै।कोटिसुनैं कछु हाथन आवै। भुवंग अनेक थलै बिलपैसेजु।पीछैन आगे सुपोलिलखावै।मीन अपार चलैं जलमाहिं पै सोधिन संधिकहीं कोई पावै।पक्षी अनन्त उडैंबहु बायुमें।रज्जब पवन सुफाटिन जावै ॥ ९॥ दशा करि हीन दिवानौं बकै कछु। सोही कहा कछु कान धरैगो। थोथेसे बान चलावैं बिना बल। एसेवगेडा होक्यूंही मरैगो। तूपक पुरिपलीतौंन पावकाफूंककै फूंकैं का फोर करैगो।बूंटीन बैद्यठडोरत टाटी हो रज्जब कैसेवापीर हरैगो ॥ १० ॥ चालछै चोरकी बोलिबै साधुको।ऐसेन साधुकै बोलि बिकायगो। हंसकीबोलीसु सीखीजुकागनें तौबकहा कछु हंस कहाय गो। पोथीको पानूलह्यौ जडपक्षीनैं। तो सब शास्त्रक्य सोधिमैं आयगो। पक्षीको पंथ धरयो नरकै सिंरि।रज्जब सोन अकाशकूं जायगो ॥ ११ ॥ कापदशाखि कवितकै जोरैजे। कायाकी सौंजनिजोरीजु जाई। रसना रसनैंन निरखि दसहूं दिशि।नासिकाबासगईलपटाई। इंद्री अनंग सुने श्रवनां गये। माहिं गये मन सुधिन पाई। हो रज्जब बातबहु विधि जोरीपैं। कहनी रहनी बिनकामन आतम रामन जोरी रे भाई ॥ १२ ॥

आवई अंधक्यूं दीपले कूपटरैंगो । नरतै सुनि नामलियो सुकृता रौनतौबकहा कछु काम जरैगो।विद्याधन्वंन्तरिकी सीखीजी।बादि न मूयेको बिषन कोई हरैगो । साधु शब्द असाधन सीखे हो रज्जब यूं नहिं काम सरैगो ॥ १३ ॥ कहै कछु और गहै कछु और।लहैगो सोयजामैं चित्त समायो। कहै सुखराम गहै करचांम। हो मालीनैं अति चरसही पायो। जरयो सबगाम उठै गिरै ठाम।ज्ञो बात कहै कछु नांहिं सिरायो । पेटके पाहि जगावत गोरख।हो रज्जब जोगी कुंदकहि आयो ॥ १४ ॥ साखी कहीसु कहा कहि साखि।ज्ञहैंसु सिलेकसु लोकन पायो । जौरैं कबित्तन वित्त जुरयो तत्व।गीत गयेगत माहिंन आयो। गाथाग्रंथ ग्रथ्यो नहिं गोविंद। पाठपदौं पदमैंन समायो।हो रज्जब रामरटे बिनबादि।संवारि सइये सुव्हैन समायो ॥ १५ ॥ कूंडरियूं सकर मनकूं डरी दुहरौंद्धर सोन दुःखीनौं ।अरिल्ल उचारि अरयोन उरंतरि। आरिजकीसु आजन कीन्हौं। गाहकू गाह गह्योनतन मन।छंद कहे छरनैं लीनैं।हो रज्जब पंथपरापग पाग चवत चवपई है मतिहीनौं॥१६॥ बैंनबे अरथ बिकैं बसुधामैं ।जु अंध अज्ञान कहैं गहलोई । रमती सुगाडी रुपांडीसौं उखरी । देखत दृष्टि कहैं सबकोई । जडकहैं जायरु पंखीकूं बामौ । सुनिसुनि बैनअचंभोजु होई । हो रज्जब दीपबुझेकूं बडोकहैं । शठ संसारनें मतिजु खोई ॥ १७ ॥ अंध अचेत अज्ञानकें आगर आनकी आनकहैं मुख माहीं । साधु असाधुकौं साधजु साध सिरूपसुरति मैंनाहीं । सत्य असत्य असत्यकूं सत्य है प्राणमैं पंचप्रपंचकी छांहीं।नीति अनीति अनीतिसौं नीतिगि।रज्जब जानिजम पुरि जाहीं ॥ १८॥ सेवक अंधजाचंध गुरुपायासो कहा ब्रह्मकी बाटबतावै । पानीको बूडतो पानीही पारकरै । ऐसे मतैकैसे पारकूं जावै । बाझ्य बांझरहीं जकौ

भेटिबो ऐसे उपायन पुत्र व्है आवै । दीपकछाडि पतंगज्यु चुल्हेमें हो रज्जब बैन कितौंइक पावै ॥ १९ ॥ झूठेगुरु गृह कौटिक त्यागिकै साचे सेती गुरुकौं सिरनावै । काठको नीकस्यो कोठै नठाइरै धूमको धामज्यु शून्यसमावै । कूपको काढ्यौ रहै कही क्या रीमैं नीर निहारसू सूरमैं जावै । हो रज्जब रोक्यो रहैन बिवेकीज्यु सेइये ताहिज्यु राम मिलावै ॥ २० ॥ मोटे अभाग उदय भये जीवके साधु समागमसौं लयछूटी । मनौं गढगाढसौं घेरियरे अरि दुर्गमैं नीरकी सीरनिखूटी । रोग अपार महा दुःख संकट ताहूंमें गांठिगई खुलिबूंटी । हो रामभजन बिना सतसंगति रज्जब खानिमैं धाहसी टूटी॥२१॥ गुरुतैं विरचै शिष्यहोय सुखीकत सो कोई ठोहन ठाहर सूझै । भूमितैं पाय उठाय धरैकत काहेकूं बादि बृथा कोईझूझै मीनजै मानकै जायजलहितजि बाहरिजाय सबै सुखबूझै । कागकुमातिकै बोहिथछाडि हो रज्जब राहनहीस्थल दूजै ॥ २२ ॥ नहीं ब्रतबंध फिरै अरि अंध उठाय जोकंध कहौ कहाकीजै । गुरुकृत हंति रंगे बहुभांति गईगति मतिनहिं जनधीजै । महागुणमेटिभयेबसिपेट छिपै नहिं नेठिसु कौडी-नलीजै । हो साधुसौं तोरिजगत्रयसौंजोरि लगीवहुखोरि सुचुल्हेमें दीजै ॥ २३ ॥ ५१ ॥

मायामध्य मुक्तिका अंग।

बरतानि बरतै अपार मनमैं नाहीं लगार बैठे हैं कीर विचार एक अंगिलागे । सूरका सुनहुं खेल संपति बहुकरत करत केत । मनमैंन कोडीमैं मेलपलमैं सबपलकि जाय बाहरके बागे । देखिलै सतीसौं अंग मायासंबूह संग मनमैला गान रंग पवप्रहार होतही देखतगृह त्यागे । साधूयूं कमल भाय दहदिशिपाणी अघाय

रज्जब सिरि चढीन जाय मुरझावै भितवोट मायाजल आगे ॥१॥ दास निराश रहैं दिशि मायाकी आय मिलैं मनतनहिनलावैं उदधिकी विधिन नेहनदियोंसुज्यु माहि मिल्यूं नहि स्वाद समावैं। शून्यकी भौन्यज्यूं आभेरु धूमसौं। घेरैं घटाघटि मेलन जावैं। हो बवके भखवन बासरुचैकोऊररज्जब सोन तहां ठहरावै ॥२॥९३॥

स्वांगका अंग।

सिलकसौं तिलकदेय छापेसैं अघायलेयरूपसौं रूपकसेय कहाकीधौंजायगो। कठमांटी मनलाय झूठेसेती झूठगाय धरसौं धर्यो रिझाय कौनमैं समायगो। नित्यप्रति मांडिन हांन प्रीतिसौं पूजिपखान शुचि सेतीखायखानकौनपतिपायगो। स्वांगसौं शरीर मांडिसाचसौं सनेह छाडि रज्जब जनम भांडि देखते ठगा यगो॥ १ ॥ स्वांगी सर्प फिरैं चितकाबरेकाहूकेसैनैनकाहुके साथी। बानौं बनाय बिगूचे विषसौंज्यु पुत्रीन पीठि मिटे नहिं माथी। भृंदूजी भेषधरैं पशुकी गति शुकर श्वानभरे विषबाथी। हो रज्जब चित्र किये चित्तचंचल बैल दिवालीके ईदज्यूं हाथी ॥ भेष अलेष मिले नहिं भाई रेजोलौंन जीव जगतपति धावें।गणेश गोरखकै नादनमुद्रापैसिद्धप्रसिद्धसु देशकहावैं। द्वादश दूण गुरुदत्त थापेसु देखिदर्शन कौंन बनावैं। हो रज्जब शेषशुक देवन स्वांगन ओनिसु ओदस्मैंलिव लावैं॥ ३ ॥ ९६ ॥

अज्ञानकसौटीका अंग।

छायाको छेदे छिदै नहिं पक्षीज्यु बांबीके मारे क्यूं व्याल मरैगो। काठके काटे कढैनहुताशन पानीको पीटेक्यूं मीनड रैगो। होखोरौं व्है ऊंटरडांमिये गादह ऐसे अज्ञान क्यूं काम

सरैगो। कायाकी त्रासन त्रसिये सोमन रज्जब यूंन गुमान गिरैगो ॥ १ ॥ शठकै हठतजै पटबानहिं साधुसों दोष संसारसों रागी। दावे दिखावेकूं होय दिगंबर कोपीरु टोपी कुमतिकै त्यागी। मांन मिलन चले पगनागेव्है आंटी भरेसु अज्ञान अभागी। हो रज्जब रीझयो देखै रसरोषहिं कौनं कपट कसौटीहै लागी ॥ २ ॥ हिलावै गैररुहुताशन पैसैसु मनकौ मान रती नहिं छीजै। शीशकरोत समुदकै झंपिबैगर्वगुमान सुनेकनभीजै। दीपक देह खुलाय खपै किनमनमेबासी सुखैटन लीजै। हो कायाके कष्ट करौ कोऊक्यूंहूंसु रज्जब राम बिना नहि सीझै ॥ ३ ॥ काचौं तनमन आशिरै ऊबरै जोलौं सुरति शरीरमें सानी। भूखकी ऊख आहारहि उतरै त्रास तृषाकी गई पियपानी। शीतकी मार उबार व्है अंबर घाम धनेकूं छवाइलैछानी। हो रज्जब औटहि चोट टरी सब पानहि त्यागि कहाठग ठानी ॥ ४ ॥ १०० ॥

असार ग्राहीका अंग।

अबगुण लेत तजैं गुणगाफिल ज्ञान हीनही हृदयके फूटे। ईक्षुको कोल्हूं ज्यूं अमृत छाडि अचेत गहै दिलथोथेरखूटे। चालनी चूंन तजै तुषपाकरै जामें छिद्रसहं सकछूटे। हो रज्जब भाठीमें नाकसठा हरै ऐसे अज्ञान्यूंहू अवगुण लूटे ॥ १ ॥ १०१ ॥

कामका अंग।

कामसों राम रसे रस रावण इन्द्र अनंगसे ईशनवाये। बीरजकै बसि बास बिरंचिसु नारदने सुतसाठही जाये। मीच मदनने मारिली मेदिनी इबही खात तपाते ऊखाये। हो रज्जबकायानकूपि रहे ठग ताहि ठगै सुनिरंजन भाये ॥ १ ॥ त्रियाको त्योरीमें देख-तही नर सुंदरसीमपाय गये हैं। नारीसु नागभये नरदीपक

देखत दृष्टि बुझाय दियेहैं । ज्यूंगज देखि बिभ्रमकी हस्तिनी संकट पाय प्रचंडनये हैं । मनो कपि काठकी पूतरि देखि हो रज्जब वित्त लुटाय भये हैं ॥२॥ यूं नारीके हेतहते नरसारेजु अल्प सुखी दुःख होत अपारा । मच्छ मुग्धकूं मीचन सूझई स्वादके संगि व्है बाहरि डारा । ज्यूंवपु बुद्धि बिनावपुहारत चूखेनाले रुन जीवन हारा । हो रज्जब मूंसेमरैंतुच्छ लालच बातीचुरायकियो तन छारा ॥ ३ ॥ नारीकी छाया मैंनग रहै चकि यद्यपि जाय समागम नाहीं । ज्यूंनर निंब निकटहीं आवत मीठेते खारो व्है छायाही माहीं । छायामें निपजै काठ व्है कोमल वृक्ष पखान मिलापन जाही । होतीनप्रकार त्रियाताकि त्यागिये रज्जब रंग महीगहे बाँहीं ॥ ४ ॥ १०५ ॥

बिश्वासका अंग ।

साधु है संतोष माहीं ब्रतनीकी चिंत नाहिं आवै सब सहज माहिं आश बिनहूवै । आभे ज्यूं अर्थ अंग नाहिं कछु सुरम संग गृहगृह अगनि उमंग पोखत तेऊधूवै । रहते भँवरभाय करते नाहिं उपाय पावै तेऊवासभाय बारी बिनकूवै । जैसे मृतक अचेत नाहिं कछु लेनहेत अशन बसन आनि देत रज्जब ज्यूं मूवै ॥ ॥ १ ॥ १०६ ॥

तृष्णाका अंग ।

लोभसु पाप पाखंड प्रपंच छंदरबंदसु दंदउपावै । अनीति उपाधि अलेखै उदैगल स्वार्थ शैल समुद्र समावै । चाकर चोट ठगाई बटकुट भूषभगलसु भांडहीभावैं । होशीतनघाम गिनेन निशिदिन रजब चाहि घिताजु जरावै ॥१॥ लोभिलगे सकलजंत तिहूंलोकहैमंत फलकूं सेवैं अनंत सिद्ध साधक देवा । एक भाक्ति

मुक्ति आशकेइ रिद्धि सिद्धिप्यासबहुत शब्द फुरतदास दीनलीन लेवा । तृष्णा तपकष्ट देखकामना सुपाठभेख स्वार्थसंगीत रेखहि रदैहिरानिहेवा । चतुरखानि चितचाहि प्राणप्यंड पोखि पाहिं । जन रज्जब त्राहि त्राहिकैसी कलिसेवा ॥ २ ॥ १०८ ॥

शब्दका अंग।

अनादि अविगति सेओंकार उपाय ब्रह्माण्डसु प्यंड सँवारे । शब्दकी मांडरु मांडमै सोईजु गोई गुरुशिष्य सुरति सुधारे । वाइक बंदिचलै त्रिसलोयजु देवदयाल बचनसु सारे । अक्षरमाहिं अगमसु गमहै हो रज्जब बैठिसु बैन विचारे ॥ १ ॥

जरणाका अंग।

श्वानहिं सठहठ रटें बहुतेरेपै कुंजरकै कछु कानन आवें । जंबुकजीव पुकारैं अनेरेपैसिंहन काहूहो स्यालकूं धावै । सूरहीसन्मुख खेह उडावत तौवकहा कछु मैलसमावै । हो रज्जब राम रटै निशि वासर मूर्ख भूखभलैं सचपावै ॥ १ ॥

कालका अंग।

बारिबुदबुदओरेकीआवतिनेपरिबूंदकहाठहरावै । ज्यूं शीतके कोट सभाशशिमण्डल सैंनसु विन साघरन समावै । बारू वर निबयार मुठीभरि माहिं मूहूर्तमैं चलिजावें । हीतारों तूटे रवि कंतर विज्जुरी रज्जब जोति विलंबन लावै ॥ १ ॥ १११ ॥

खालसाका अंग।

ज्ञानीकूं गौंनदशौं दिशि एकसौ पंखी। उडै कहीं ओरअरैगो जलकै पगशीश सबै दिशिसारिखो। प्यासपीर सब औरहरैगो । सूर समंगलओर उजागर शीत अंध्यारे कौंसोधि चरैगो । लोहरिको घाट समस्तहिं धारमें रज्जब लागत घावपरैगो ॥१॥ पापरु पुण्यतो

ज्ञानसों देखिये ज्ञानको पापन पुण्य दिखावै । राईर मेरसो सूरसौं पेखिये सूरको राईन मेर दिखावै धामकी सौंजसुदीपसों लेखिये दीपको सौंजनकोई लखावै । हो रज्जब धातु परखि पिछानिये धातुनकोई परख सिखावै ॥ २ ॥ पाथरराय परयूं खरजाम्यूजु फाटे बिनांक फूसको बासै । भोडल भेदपरे परिपूरण याहीते ताको भयोहि खिनाशै । मंदिरमध्य बिरायबुरीगति पानी प्रवेश पन्नग निवासै । हो रज्जब रामसों रायपरेंदिल देखतकाम करै परकाशै॥ ३ ॥दुष्टकी हांसी रुहेतहतैनर तामहिं फेरन सारजु कोई । ज्यूंशठ सर्पडसै पशुमानस पेटन खायभरै जियसोई । करैकपि कोलि बुरे दिनबइयोंके धाम विध्वंसजु ठाहरखोई । हो रज्जब मूंसमनोरथ मोदक चीरकुटतहांनिन जाई ॥ ४ ॥ कुसंगसों भंगभयो सबहीकोजु देखहुमान महातम जाई । गंगगुमान गयो सबही जब जायके क्षार समुद्र समाई । उदधि उपाधि करीन हरी कछु रावण संगशिलाजु बँधाई । हो रज्जब रंगरहैन कुसंगति सोच विचार तजोकिन भाई ॥ ५ ॥ ११६ ॥

श्री स्वामी रज्जबजीके भेटके सवैये।

गर्वगंभीरधीरबुद्धिअनंतयंत्रथीरबानीबिगसुषैंसीरचक्रसों बखानिये । लाधाहैजु ब्रह्मभेद कियोनींकैनखेद संशयकरि सकल छेद निरखैनिजपरमतंत्र संतनमें मानिये । समझे हैं सकल घाट ज्ञानगम्य अगमबाट चैनकहैं परमठाठ रज्जब जगजानिये ॥ ॥ १ ॥ महाबलवंत चढ्यो गुरुज्ञानजु सूर संग्राम अडोलहै हीयौ। केशरी सिंहज्यूं कामपरे परियेक अनेकहुं जायन लीयो।जुस्याव-ज स्यालगयेदशहुंदिशि देखत भाजिपयानोंजु दीयो । हो रज्जब अज्जब रामको सेवक आकिल येक अलखकूं कीयो ॥ २ ॥

भानसो ज्ञानप्रकाश महामुनि सोमसोशीतलकुंडअमी है । बानीमना विधि सिद्धिगणेशरु बुद्धिमहाविसकरमसमीपहैं । शीलहनुशुक्र देवकि गोरख ब्रह्मअगनिमें देहदमी है । शेषभजन तजन फरस ज्यूं रज्जब ऊपमा रामठमी है ॥ ३ ॥ ज्ञान अनंत रुध्यानअनंत होबुद्धिअनंतदई दीनानाथै । विवेक अनंत बिचार अनंत हो भाग्यअनंत लिख्यो जेहिं मांथै । सिद्धि अनंत रुनिधि अनंत रिद्धि अनंत रहै नितिहाथै । सब बोल अनंतर पापको अंतहो क्षेमकहै गुरुरज्जडसाथै ॥ ४ ॥ विद्यावंत विशेषजतीपाणिजोबनबालं महाराज मानिये । भेटले मिलैं श्रुआलं । अष्टसिद्धि नवनिधि एव ऐनउभी मोह आगै भक्तिराज सिरताज भयं कर इन्द्रभागै । सकलबोधशो भागालियेयेकाणि अंगिपेख्या अज्जब खेमहेम नैणाहुवें । दरशन देख्या गुरु अज्जब ॥ ५ ॥ ज्ञानवंत गंभीर शूरसावंतसुलक्षण पंचपचीसों मेलि भरमगुण इन्द्री भषिण । दुर्जन द्वैदलदमें मोहमद मच्छर मायाख लखिसब पेशवेकी धरइकरजीकया । मस्तमन गुरुज्ञानमें बोध बुद्धिले अरिहतैं ध्यान अडिगधरधीर धूरजन रज्जब पूरैमतै ॥ ॥ ६ ॥ बुद्धि अनंत बहुजानि बानि मुख अमृत बाइक । ज्ञान अगम गमिकिये साधुगंत मनसुख दायक ॥ धीर थीर धरम ध्यान शील समता सत्य संगादि अंत अहर्निशि रहै रसयेक निरंगा । विमल उवर उज्जल बदन परम साधुपति परखिया । जन रज्जब निर्पंकजल निर्मल गंगसानि रखिया । वेदभेद बखान । कुरानकदै तुरककी । आखिरधरउपम । मतगाहन फोरकी योगेश्वर सिद्धांत ।ज्ञानसब अनुभव सारी । भटंती चारणीं । भक्ति विगतिनौधारी । षट्भाषा सुरसपतल । प्यंड ब्रह्मांड व्यौरे किये । सब अंगराम रज्जब रता । दादूगुरुदत बीदिये ॥ ८ ॥

कवित्त निसरणी बंध ।

येक ब्रह्म आधार दोयगुण तजे त्रिगुणतनि । च्यारि जुगवसि पंच । छहोंरस छाडिदियेमनि । सातों धातु शरीर । योग आठोंमआनें । नौ नाडी दसदस द्वार । एकादश मारग जाणें । बारह अंगुल बाइव पत रसतत्व लागे रहे । चौदह विद्यापति पंद्रहवेंसोरज्जबसुमिरणगहे ॥ १ ॥ येकसूरसुभट बियो कोई हिरदैंनहरि बिन । तीन लोकको नाथ।च्यारि सबखानि सिरजी जिन । पंचतत्वतिणसेव । छठामन उनमनि लागा । सप्त धातु अष्टसिद्धि नवनिधि ठाढी आगा । दसमी भक्ति दिलपर मण्डी । ग्यारारुद्र ज्यों अनंगत । बारवेंकला रवि रज्जब हिसो । प्रकाश प्रकाती रामभरत ॥ २ ॥ १० ॥

कवित छत्रबंध ।

है करता अतिहित तवेसन कादिक तिणवत । छाडिरस रती छको ।हैसो जोरज्जुगति रतालेद्वार दीरव । बसिकरि कृष्ण सुकल पखजस रतनजपि जाप । रहस्य सांमतसुरपि भखनि मधभारु अदभू चिरहुर । जसन खसखसों कहै । अमरदासऊपमा अनंत जन रज्जब शिर छत्र है ॥ १ ॥ ११ ॥

सवैया ।

मारुतमें भयो जैसे हनुमान महाबीर जतिगति जोर जोगजु गति परवानिये । अतिकाइ पितहूंतें दत्तभयोरिखिराय । ताकी शोभासरभरि कौंनउर आनिये । मछंद्रतें भयो जैसे गोरखज्ञा-नकी गंगसिद्ध चौरासी नवनाथनमें मानिये । तैसे भयो दादूसे रज्जब अजब रूपभक्तिको भूपभलें कल्याण बखानिये ॥ १ ॥ जतीहनुमान किधोंसतीहरिचंदहोंमें परदुःख कन्निबेकूंविक्रम

विशेषिहीं।ध्यान जैसेंईशअरुज्ञानगति गोरखसे कथाकीरतन सुख चारसमिलेखहीं।दत्तात्रयसे मुनि अरुगुणि ऋषि नारदसे दुर्वासासे वैनसुतो ऐनकरि देखिहीं।दादूजी परताप एतेहीं रज्जब अज्जबम्यंत और हैं अनंत कहिसकतनशेषही ॥२॥ रसनाहूं मांगिल्यूं सहस्र फनी शेषहूपै जासों गुरुरज्जबको।सुयशबखानिये।नयन जायजाचें शक्कवत्रहूंविलोकिवेकों जासों सबशोभाउर अंतरमें आनिये। सहंस बाहपैजागाहकव्है मागौं बांहजासों सेवासोंजत्तुसहंस विधि बानिये।लंकेशपै शीसलेंय बंदनकरू कल्याणत ऊहै अगाध अतिसाध नाहीं मानिये॥ ३ ॥पावनसो भावगुरु दिशि कीजु रुचि होत पावनसो पावहींव पंथी जबधावैहीं। पावनसोहि पैंनेन देखियतऐन अंगपावन सोहीपै शीसचरननिनावहिं। पावन श्रवण तब सुनियेत सुखबैन होतकर पावनजु सेवकूं लगावहीं। रोमरोम पानपरसे गुरु रज्जबकूं गये सबअघ अब आगिले विला वहीं॥ ४ ॥

कवित्त।

अर्क जेम उजास। सुधाश्रवै जिमि शशिहर । पावस जिमि पाल्हग धरा धर। तजि ममाणि स्रकू जिमि बास सुबास । गह-रने लंभगणिजै। आसण ध्रू जिम अचल भूमि जिमि गुरु भ-णीजै। कामधेनु तरु कल्पसम पारस पोरस पेखिया । चिंतामणि चिंता हरत रज्जब अज्जब देखिया॥ १॥ गिरापति जिमि मेरसहू सरपति जिमि सायर सुरापति जिमि संक्रग्रहापति जिमि देवाइर। उड गणपति जिमि इंदु नदी नवसैपति गंगा। धातुपति सुवर्ण। द्रुमपति कल्प तरंगा। सिद्धनाथपति गोरख जिमि । मुनिपति दत्त प्रमानिये। रज्जब अज्जब साधुपति दादू पंथ बखानिये॥२॥

अकल ध्यान आधार। आकल निजज्ञान उचार। अकल प्रीति रसरीति। आकल मन नेम अधारणं। अकल जत सत अकल। आकलमति शील सुजान। अकलनाम विश्राम। अकल रहिता रहिमान। अकल त्याग बैराग अंगि। अकल भाव लगाभल। रज्जब अज्जब गति अकल। अकल सिद्ध आपै मला ॥३॥१८॥

कवित्त छत्रबंध।

रसम सहस करम रिस। धरतीताइ बेद भेद धुनि। तब तिराग सुजस भाष। छवति गति जोग जुगति सुनि। बदति नाम हरि जाम। जतन मारुत जा जिसहि। अग्नि भुवटा आतम। बदनि शशिकला सब कहि। जस पुराण जाण जुगति। रचति विश्वा जोग करि। वंदे शिव सनकादिसुर। रज्जब अज्जब छत्रधारि ॥ १ ॥ १९ ॥

कवित्त कमल बंध।

श्रीत्रीमंग प्रहरण। स्वाद विषबाद विदारण। मीत माहत्र संभरण। रसण रंकार उचारण। जगत बिसत सजरण वपु जम तपह उबारण।जीति परकीरति तरण। चीत अणजीत श्रीयारण॥ रज्जब गुरुमें ध्रुव शरण। जीवहूं पल न विसारण। श्रव पापताप हरण। दान दरस पावै करण ॥ १ ॥ २० ॥

सवैया।

रज्जब दयालु सुत ब्रह्मको बजाज है। कुरान पुरान कहै वेदहूं शास्त्र विधि संधिसार सुत जाकै पूंजी हूं को साज है॥ अनभै बनिजै अंगकूं लेहु माडौ कानअरध सवाई न फौरे तो उदरलाज है। जेउजे बनिजै जाय खोटो कौ उनहीं खाय बोलत बचन सुध पुण्यही पाज है। व्यास शुकदेव ब्रह्मा यहां अवतरे आय

रज्जब दयाजहै ॥ १ ॥

कवित्त।

दादू दयाल बधती प्रकट। जन रज्जब पारस परसैं॥ दरस सकल दुःखहरन। करन मंगल हरिजन परम धरन परवान। आन मारग सब भंजन करुणा सिंधुकृतरा अखिल संपद विसारन। मन संकल्प विकल्प जलपि दुःख द्वंद्व निवारन। निर्लेप निरंजन गुण मगन। मोहन अघनाशन दरस दादूदयाल ॥ १ ॥ २२ ॥

सवैया।

ऐसो जन रज्जब प्रसिद्धि जग जानिये। सज्जन सु कवि संत शाह शशि धीर बीर। जानें परपीर सिद्ध सभान मैं मानिये। प्रमदा उर सब जीव उपकारकर-सिंधुवारपार जाकी कीरति बखानिये। दादू दरिया उपदेश समज्ञान अकल निरंजन सुजस नित गानिये। सुखको निवास सु विलास पुरवन आश ऐसौ जन रज्जब प्रसिद्ध जग जानिये॥ १ ॥ ज्यों बसि मंत्रके आवत बीर नहिं जस जोग तहां तसमूंके। ज्यूं धर्मराज के काज करैं सब दूत अनेक रहैं टिकटके। ज्यों नृपके तप तेजते कंपत पारस रहैं नर आइ कहूंके। ऐसी भांति सबै दृष्टांत हो आगे खडे रहे रज्जबजूके ॥ २ ॥ संध्या समै ज्यूं सबै सुरही घर आवैं चली जैसे बछके रागै। भूपतिको भयमानि दुनीजु अनीति विसारि सुनीति सों लागै ॥ मोहन ज्यौं बसि मंत्रके बीर प्रभाति चटा चटसारकों जागैं। घन ज्यूं घिरि यूंही कथाके समैं दृष्टांत आए रहैं रज्जब आगे ॥ ३ ॥ त्यागि बहु हरीचंद पढंतरी भाग्य ज्यूं इन्द्र कुबेर भण्डारी। राग बढूं मुनि नारदसे अनुरागी सदा शिव ज्यों धर्म धारी। ज्ञान बढूं गीत गोरखकी पुनि ध्यान बढूं दत्त ज्यूं दृढ-

तारी । रज्जब रंग अनंत अपार सु मोहन देखि भयो बलिहारी ॥ ॥ ४ ॥ सूर ज्यूं नूर दिपै अंग उज्जल चंद्रज्यों शीतलता तन भारी । चंदनरूप सुगंध सदा पुनि पारसरूप पराक्रम धारी ॥ सुधीर ज्यूं धीर नहीं भने घनसीर सुधापरपीर निवारी । रज्जब अंग अनंत अपार सु मोहन देखि भयो बलिहारी ॥ ५ ॥ मणी ज्यों मुख सरप सदा संगही रंगहीन मिली अहिके विषसों । बडवानल वारि में न्यारी सदा पुनि लोइ में सूत सितै निकसों । नीरमें कौलर सीप जुदे नभिदजलके रगि अंगि बसों । ऐसे रज्जब अज्जब मांडि मंझारिन मोहन मेलि मयारिखसों ॥ ६ ॥ आयो साधु शूर अंगि नूर भरपूर दिपै सोधि सब अरिनके अखारे उठारे हैं । मार्यो ह मदन सु सदनकी न सुधि कहूं क्रोधसे न जोध फेरि द्वारन झंकारे हैं । ठौर ठौर रामराज कीन्हों दादूदास केनै मोहन मैंवासा मारि पाई पिसि डारे हैं । रज्जब दहार सों पहार फाटि पैंडे भये काम क्रोध लोभ मोह मूला ज्यों उखारे हैं ॥ ७ ॥ रज्जब के चरणनकूं छुवे को प्रताप ऐसो । पापके पहार मानो फाटे पराकि दै । युग युग जीवजम द्वारे बंदिवान हो तो संकलके संधि साल खूंटे हैं खराकिदें । गौतमकी तरुनी करुनी ज्यों कृपालुभये, साचे हे सराय तूटे तांति ज्यूं तराकिदै । ज्ञानके गयंद चढि चलेहैं मोहन मन, ऊंचे अशमान जाय बैठे हैं फराकि दै ॥ ८ ॥ जती हनुमान से न सती हरिचंद्र सम तेजवंत सूरसेन रंगन सबज से । अचल सुमेर से न धनी और समाई समुद्र सै नखतन कबज से । गोरख से जोगीन वियोगी महादेव सम रूपवंत काम कनें और न अज्जब से । मोहन मंडान में उडान सारूं सारे भले. गोरख से जुडे जोगी ज्ञानी न रज्जब से ॥ ९ ॥

॥ गीत ॥

तुरक सिरताज पतिशाह दिल्ली तणों हिंदुवां शीश सिरताज राणों। राज सिरताज अधिपति ज्युं आंबेररो। पंथ दादू तणें रज्जब जाणों। अष्टकुल पर्वत मेरु सर्वरै सिरै। नौकुली नाग सिर शेषहुं जान। नौलखतारा इणि सिरि शशि ज्यु सबरैशिरै। त्यूं पंथ दादू तणों रज्जब बडजाण। हिंदुवांहद हुई जकासाखिगीताकही। तुरकवा मुसाफ सुनि राडि मूंकी। अध्यातम अनभै जीति भगति भाषातीति। तठै रज्जब कह्या परि आंटचूकी। पावपति साहरा परसि चाकरथक्यो अलिथक्यो परसि परजात फूल चाढ। आंनरो ज्ञान सुनि थिर न आतम भई। रज्जबरी कथा सुणि पडी अनि आडि। भूख भागी जब भेट अन्नसुं भई। प्यास भागी जबै नीर पीयो। रज्जबरी रहम थैंफ हम लाधौ सकल। अकल रटि मोहनूं अंकजीयो॥ १॥ २२॥

कवित्त।

नग सिर शोभा सु नीर। नीर शोभा सु म्रिणालं। शोभ निशाकर निशा दिवस शोभा सविताळं। भैकारि सोभग ज्यंद। तुरंग शोभा सुतताई। अवनि सू शोभ अनीळ शीळ शोभा प्रमदाई। हंसनिकर शोभंत सर। मोहन मनहुँ बिशेषिया। दादू दयाल पंथ शोभसिर। रज्जब अज्जब देखिया॥ १॥ २३॥

सवैया।

पूरोही भागी अनुरागी कहन पूरोही ज्ञान अरु ध्यान जत सतसौं। पूरोही साहिबी में सावधानी पूरौ प्रसिद्ध पूरोही पीर पायो दादू राम रतसौं। पूरोही रहनी बैराग पूरोहीतसौंही पूरो पूरै पटै परमनूर निरख्यो गुरुमतसौं। मोहन मंगिनौं गावै दयाको

दान पावै रज्जब कों रिझावै । गावै गुन हितसों ॥ १ ॥ ३४ ॥

इतिश्री रज्जबजी का गुण कवित्त समाप्तम् ।

छंदजाति त्रिभंगी, सुमिरण का अंग ।

वंदों गुरु गोविंद नित्य । प्राण उध्दारणहार ॥ जन रज्जब युग युग सुखी । किया अगम उपकार ॥ प्रथम पग गुरुदेवके । मनमें सग उरधार । जन रज्जब ताकैशब्द । समझ्या सिरजनहार ॥२॥ तौ नमोनिधानं । प्राण सुपानं । करन जहानं । जगजानं । देन सुदानं । ओर न आनं । खानसुखानं । नहींछानं । अकसगानं । लगैन बानं । सोतत्तं।दादूजी दत्तं । दीरघ वित्तं । रज्जब अघआप दहत्तं । जो रज्जब अघ आपद हत्तं ॥ नमो अपारं । निज निर-कारं । तारणहारं । जनपारं सारमसारं । जग जहिलारं । मित्र हमारं । सब धारं । जहि सिर भारं । सब सिरधारं । मंगलचारं । सेवग सूरा खैनत्तं ॥ ४ ॥ नमो सरामं । पूरण कामं । आतम ठामं । जग जामं । निकुळ निनामं । पुरुष न बामं । जीवन चामं । पुनिपामं । शीत न घामं। अगमसुधामं । रावणमामं । सो छतं ॥ ६ ॥ नमो सपूरं । निर्मल नूरं । जगत जहूरं । सब शूरं । सकल अकूरं । नाहीं दूरं । हेत हजूरं । नहीं ऊरं । देण हिलूरं । दाता शूरं । दारिद्र चूरं । ॥ ७ ॥ नमो गंभीरं । सबगुण जीरं । धीर सुधीरं । परपीरं । निकट सुनीरं । छिनख सखसीरं । लिपै न वीरं । हरिहीरं । मीन सुमीरं । थिति सुथीरं । तटनतीरं । तहि रत्तं ॥ ८ ॥ तो नमो अलाहं । बेपरवाहं । अगम अगाहं । निगम अगाहं । नहखाहं । आवन जाहं । ठौर न ठाहं । च्यंत न चाहं । सोडाहं । अतिर अथाहं । नाहीं ठाहं । लोकि सुलाहं । घरघत्त ॥ ॥ ९ ॥ तो नमो सु अंगं । रूपन रंगं । सब सरबंगं । नहखंगं ।

शुन्य सुसंगं । अलख अलंगं । भूपअमंगं । सोमंगं । रूप न हंगं । दीरघदंगं । तुच्छनतंगं । अहिघतं ॥ तो नमो अनंदं । आनन्द कंदं । पूरणचंदं । सबछंदं । मुनि सुरंदं । मतिनमंदं । तहि इंदं । सब जग बंदं । देण सुपंदं । काटण फंदं । सिरिखतं ॥

कवित्त ।

नमो सकल सिरताज । नमो सब संत सनेही । नमोपरम गुरु देव । नमो निकळंक सुदेही । नमो गरीब निवाज । नमो निज दीनदयालं । नमो अनाथहु नाथ । नमो पूरण प्रतिपालं । नमो विरद नहिं पारब्रह्म शिव कहे न जाहीं । जन रज्जब हैरान रहे तुव नाव सु छाहीं ॥ १ ॥

गुण छेद मधि अंग ।

रज्जब तांबा लोह पखि । पारस है हरिनाम । परसे सो कंचन भये । यहु निरपख निजठाम ॥ १ ॥ कुरान कहै पछिमदिशा । पूरब दिशि कहै वेद । रज्जब दिल दिवान था । सु गुरुबताया भेद ॥ २ ॥ तौ वेद कुरानं । उभयअयानं । बहसि विलाणं । हैतांणं । द्वै दिशि ठाणं । जुगति न जाणं । जगत भुलाणं । यहु हाणं । रंकसुराणं । पखि बखाणं । कीया छाणं । निज जाणं । अरजोध जु वाणं । देव सदाणं । आये घाणं । चतुरवर्ण बांधे बरखं ॥ ३ ॥ दादू का शिखं । प्रीति न पखं । मधि मारग रज्जब रिखं । जीमधि मारग रज्जब रक्खं । तौ हिंदू न तूरकं । द्वैरह थकं । पाई जकं । गुरु वक्कं । सूर न सक्कं । डरै न धक्कं । मधिमध तक्कं । नह चक्कं । उन मनि छक्कं । प्राण सु पक्कं । हासिल हक्कं । अहि नक्कं दारिकमक्कं । बाज्या डंकं । सब सुणि ढक्कं । ऐसी विधि साहिब अक्खं ॥ ४ ॥ तौ द्वै पख त्यागं । माया मागं । पंथि सु लागं । निज पागं । सो विचि वैरागं । यूंज जगि जागं तोडरा तागं । जगरागं । सब झूठ सु झागं । थांभी बागं । धोयादागं । हैभागं । गहिज्ञान सु खागं

निज करि नागं। बैरी भागं। समकियाल खंख्खं ॥ ५ ॥ तौ घर व्योम निरालं। अदभुत चालं। मघमरालं। बिगतालं। घेरेघालं। कोमलनालं। पैठालं तहां रसआलं। प्राणसुपालं। करमन कालं। मतिवालं। भाग सुभालं। हरि संभालं। टूटा सालं। ऐसी विधि अमृत चक्खं ॥ ६ ॥ तौं उभैं न रीतं। पाई थीतं। कारिज कीतं। जगजीतं। सोअगम अजीतं। निर्मल चित्तं। इहिमतमीतं। निज नीतं। भरम सु मीतं। इहि विधि वितं। लाहालीतं। घुनिधीतं। करि हरि हीतं। दान सु दीतं। नाहीं ईतं। कहा होय काहू झख्खं ॥ ७ ॥ तौ गुरु शब्दं। निरख्या नदं। चेत्या तदं। यहु गुदं। माया कामदं। उतरया तदं। ज्ञान गरदं। करि बदं। द्वै पख हद्दं। देखी रद्दं। विचि ग्रेहद्दं। सो पदं तौ दिति न क्षरद्दं। लाहालद्दं। घटै न कद्दं। दीरघ गुरु दीरघ दख्खं ॥ ८ ॥ तौ सुण्यं सुकनं पखि न वनं। यहु मत मनं। सोजनं। जग मत भिन्नं! पक्व्या रत्नं। केतकगन्नं। हैधन्नं। गुणगण हन्नं। तिरे सुतन्नं। नाहीं छन्नं। सोछन्नं। देवन दन्नं। लहैनथन्नं। सो विधि बन्नं। ऐसी जगमग नख्खं ॥ ९ ॥ तासम नहिं कोई, त्यागी दोई, गुरुमुखि जोई, कहि होई, गोपि सु गोई, आतम धोई, खलमत खोई, यहु छोई, मेवासा मोई। जगमत चोई। ढाल सु ढोई। रिपुरोई। सब जगटोई, लिया सोई। लाल सुलोई। यूं तन मन काढि दख्खं ॥ १० ॥

कवित्त।

नर नारायण रूप निरखि निपखि निज न्यारा। सो योगेश्वर जानि प्राण परवान सुप्यारा। आतम अगम अगाध नजरि गुण युगल सु नाहीं। मधि मारग चलि चाल। मिले मोहनकूं माहीं।

येकहि सों है उभै । उभै गुण मेटि सु येकै । रज्जब सीझ्यासंत । काटि कर्म कुल विवेकै ॥ १ ॥ ११ ॥ २२ ॥ २ ॥

गुण छंद सूरातनका अंग । जाति त्रिभंगी ।

माहैं मारे गुणहु कूं । बाहिर जगसों जुद्ध । जन रज्जब सो सूरिमा, रोपि रह्या कुल शुद्ध ॥ १ ॥ सब शूरौं सिर सूरिमा, जो जीतैं गुण जोध । जन रज्जब झूझार सो, ताका उत्तम बोध ॥ २ ॥ तौ खत्री चारं । खेत बुहारं । काया मंझारं । गहि सारं । उठे अपारं । करते मारं । ठाही ठारं । तहिबारं । काया कर्म कारं । तीर्थ धारं । अंग अपारं । दिल ठारं । जीत्या सिरदारं। उतरयाभारं,पायापारं,नावनराजी यूंमेलं, दादूकाचेलं पंच सुपेलं। रज्जब रण चौरंगखेलं । जी रज्जब रण चौरंगखेलं ॥ ३ ॥ तौ तजि सब ओटं । काया कोटं । चौडै चोटं । वैलै वोटं । काटे गुणसोटं । बहुविधि वोटं । राजस धोटं । काल्या सब खोटं । मंगल मोटं । कर्मसु छोटं । हरि छोटं । बांधी पुनि पोटं। भान्या टोटं। तासन जोटं । ऐसी विधि आदोलं ॥ ४ ॥ तौ सूरसु भट्टं । करि खल खेट्टं । वैरी कट्टं । गहि चट्टं । दुर्जन थट्टं । कारि दह बट्टं । फेरि घरट्टं । यूं दट्टं । द्वंद्वर घट्टं । किये पट्टं।खागसु झट्टं । सो हट्टं । घेरे घट्टं । नारद नट्टं । अनंत अवट्टं । प्राण विसणं । ऐसे ठेलं॥ ॥ ५ ॥ तौ खोये खलखाहं । महीसुमाहं । ठौरन ठाहं । रिभराहं । गिरवर गाहं । गोपिससाहं । करें सुहाहं । बंदी साहं । काटे दुःख दाहं । पडैन धाहं । वे परवाहं । निजनाहं।जलयुद्ध अथाहं । निकस्याठाहं । लाया लाहं । करकीये साचा सेलं ॥ ६ ॥ तौ सूरसं भालं । गहि करवालं । अरि घरि घालं । कर्म सुकालं । मारे भालं । पडैन रालं । गुणगालं । करिभव चालं । पिसण सुपालं ।

बसुधा वालं । विगतालं । सब तोडे सालं । निबह्या लालं । उठेन झालं । सारसन्मुख यूंझेलं ॥ ७ ॥ तौतातेवं । घाले घावं । मारे रावं । यहु सावं । बीरारस चावं । पाया डावं । आगैं पावं । है भावं । सिंहसु छावं । करैसु धावं । मिलैसु बावं । यशगावं । अगमसु आवं । लाधी ठावं । कदेन जावं । जीव ब्रह्म ऐसे सेलं॥ तौ भूपति भ्राजं । कीये वाजं । राखी लाजं । सिरताजं । सिद्धि सुकाजं । पाया राजं । गुणसिर गाजं । सब साजं । नदी अदाजं। खट्टन खाजं । बांधी पाजं । उर आजं । माथा माजं । ऊंचा छाजं । अधिक अवाजं । तिहूं लोक फूटा हेलं ॥ ७ ॥ तौ बैरी बासं । हूदर दासं । खाई त्रासं । गुण ग्रासं । विसण अवासं । फेरया घासं । दोषी नासं । नह सासं । जुधज्जु जासं । कहिये कासं । बीर बिलासं । नह हासं । प्राणी पाशं । कीलत रासं । बारह मासं । काटि करम करता केलं ॥ १० ॥

॥ कवित्त ॥

करि सुजोग संग्राम । खेलि खट खोहणि खेसै ॥ सुभट सूर विख्यात । सुणरनव खंडनरेशै । दुर्जन काढि सु दूरि । मारि मैवासामोई । रण सु राख रजरेख । करैसम सरिकहु कोई । राजकाज सामरथ । बीरधीराधि बिराजै । जन रज्जब जगजोध । लेकि राखी धर्म लाजै ॥ १ ॥ ११ ॥ ३ ॥ १२० ॥

गुण अरिल गुरुदेवका अंग ।

चंद सूर आकाश अवासहै ज्यूं दिया । तैसें उरघर मध्य गुरु गोविंद जु किया।ठौरठौरकी वस्तु न सूझै इन बिना।परिहां रज्जब कही सु साच सत्यमानी मना ॥ १ ॥ देखो गुरु उरु पैठिकैं न कारजकरैं । काढै मांडमंझार मिलावैसबपरै । दीसैबीचि

दलाल दुहुंदिशिकाधनी । परिहां रज्जब राम उमागि । आप सोंपी घणी ॥ २ ॥ मेघ बिनाज्यूं मूढ मेदिनी सब मरैं । चौरासी कीचूंणि न उपजै कथा चरैं । त्यूं काया मधिकाल गुरुमाते बाहरै। परिहां रज्जब पिंड ब्रह्माण्ड कौन विधि ठाहरै॥ ३ ॥ गुरुका कामन होय सुकाहु जीवतैं । मनबच कम तिरशुद्ध इहै मानी सु भैं । सब साधनकी साखि वेदयूं भाखहीं॥परिहां रज्जब गुरु प्रताप।शीश पर राखहीं॥ ४ ॥ गुरु गोविंद समान । शिष्य करि जानई । मन बच कमतिर शुद्ध । इहैउरआनहीं । तो कारज प्रसिद्धहोत कहा बेरे । परिहांजैरज्जब इकभाय न करई फेरे ॥ ५ ॥ गुरुगोबिंद तैं बाट हमहूंकूं सुझई । औरैं समझचो कोय । अकलमें बूझई । मक्के बडा जहाज जाहि चढि जाइये । परिहां रज्जब पीर परसंग खुदाइहि पाइये ॥ ६ ॥ कहिये गुरुगोविंद पीरमन है खुदा । उभै उरहूंमें आप ऐन नाहीं जुदा । मारहिं गुणतासीर जिलावहिं जीव जो । परिहां रज्जब रामरहीम कहीजै सत्यसो ॥७ ॥ आतम शून्य समान, गुरु बिनको गढै । पीवमिलै जहि पाठ पीरहीसौं पढै । यहु न औरतैं होय दुहाई रामकी । परिहां रज्जब सोचि बिचार कही निजकामकी॥८॥ पय पाणी मिलिजायहंसनिरवारई। मधु मिश्रत बनराय मधुरिखटारई । सतगुरु शोधि शरीर करै जीवकूं जुदा । परिहां यहु न औरतैं होय पीरपरि है सुदा ॥ ॥ ९ ॥ कारे आतमरामपरिपरणावई । यहु इनहींका काम इन्हुकै आवई । नहीं तमेलानाहिं निकटन्यारे सदा । परिहां रज्जब मेटै नाहिं । गुरू गुरुका हुदा ॥ १० ॥ अपने सिरजे दूरिहुजूरि गुरु गढे । अतिरअवनि आकाश आवघु घटेबढे । साधु वेदकी शाखि । सुप्रत्यक्ष बोलई परिहां रज्जब साखित भगत न समसरितो लई ॥ ११ ॥ उभै अंग बिचऐन गुरु गहणां मई । यूं आतमले

राम आतमलई। पीरपटू दरम्यांन देखि द्वै दिशि सुखी। परिहां रज्जब सौदा होय मिटै नहिं गुरुमुखी ॥ १२ ॥ गुरुविना गोविंद सगा नहिं जीवका। देख्या सोच बिचार मताहरि पीवका। जलदल कपडा देय कियेकी लाजरे। परिहां रज्जब रामनमिलै। सकल सिरताजरे ॥ १३ ॥ पहले बावन तीस जु अक्षर जानिये। पीछै बेदकुरान सु बोलि बखानिये। तैसे गुरुमुख मागजू प्राणी पाइ हैं। परिहां रज्जब पंथिक सोय शून्यपुर जाय हैं॥ १४ ॥ पंच तत्वके पंथ पंचतत्व आवई। तैसे गुरुमुख मागजू परम रस पावई। तालेहुंकी बस्तु सुकूंचीकर चढै। परिहां रज्जब ऐसे जांणि पीर पदंति पढै ॥ १५ ॥ ज्यूं ज्योति चाढि जीव गहनगति पेखई। तैसे गुरुकेज्ञान परमपद देखई। दूरदरसै सिद्धि साधके आवतैं। परिहां रज्जब लहिये राम। संतपद पावतैं ॥ १६ ॥ खोजी बिना सुखो जकाहु कनकढै। हय गयनर असवार फौजकिहिं दिशिचढै। बित्त विना बाजारहाथक्या आवही। परिहां रज्जब तैसे राम न गुरु विन पावई ॥ १७ ॥ बिना पुरुष प्रसंगन सुत कारण रहै। ऐसे गुरुते बिमुख गोविंद क्यूं लहै। तामें फेरनसार उघारी बात है। परिहां रज्जब साधू साखि बेदयूं कहै ॥ २८.॥ शक्ति सुख अरुसीतज माहितन हेमज्यूं। आतम अंडसु कुंजबँधे बपुधारि यूं। सतगुरु सूरज तेज बिरहबैशाखरे। परिहां बहैनैंन नादिपूरि। मिलै संत मातरे ॥ १९ ॥ रजक्रूप गुरुदेवसु पंचोंकपडे। सब विधि सब संजोग मिलावहि बपु पडे। ऐसे उज्जल होय सुबागा जीवका। परिहां रज्जब सभा समाइ दरशन पीवका ॥ २० ॥ नीच ऊंचपल माहिं गुरु प्रतापतैं। सो निरखे निरतायसु अपने नैंनमें। देखो दिशिरैदास सु कीतौ कौनरे। परिहां रज्जब धन्य सत्संग पुनीत सु भोनरे ॥ २१ ॥ पीरपैगंबरभयेपीरपंदिआवतैं। यहुन और

तें होय सुराना रावतैं । खालिकखलकसहेत सुरीदहि देत है। परिहां रज्जब रीति ठौर भली भरिलेत है ॥ २२ ॥ होतमुरीदबिहाल सु सुरीसदमौजतैं। दुख दारिद्र सु जाहिं सत्यमानीसुमैं पीरप्राण प्रीतिपाल पियारे पीवके । परिहां रज्जब कृपा कटाक्ष काज व्है जीवके ॥ २३ ॥ गुरुगरीब निवाज अनाथौं नाथहै। निरधारूं आधार अकेलूं साथहै । परम पतंगा प्राण पीवको पेखिये । परिहां यासम और न ओट सु रज्जब देखिये॥२३॥नाम निरूपन गुरुनरहुं निस्तारना।माधव मंदिर थान सु साधु बारनां, पीर पोरिमें पैठि मंदिरमें आइये । परिहां रज्जब अज्जब ठौर न इन बिन पाइये ॥ २४ ॥ गुरुकी दयादयालु दर्शन देत हैं। सुत संतनकी बात तातसुनि लेत हैं । पूरे पीरदयालु सुयहि सौंदे सदा। परिहां रज्जब साधू दूरितिनहुं पाई बिदा॥ २५ ॥ मरहि अमर अरि अंग।अपरदल जीवहीं। जामण मरण सु जाहि परम रसपीवहीं । यहुसब गुरु प्रसाद भक्ति भगवंत लौं। परिहां रज्जब तनधन देहलेहजौ तोहिलौं ॥ २६ ॥ सुकृतके प्रतिपाल कुकृतकूं काल है। मारहि द्वंद्वर शोधि सुदीनदयाल है । सतगुरु बिन यहकाम जीवके कोकरै। परिहां रज्जब मन मंडान फेरि उलटा धरै ॥ २७ ॥ गुरुके दान समान न नौखंड पाइये। स्वर्ग लोक सब शोधि पातालौं जाइये । सुरनर सबही याच न पावै शोधना। परिहां रज्जव अज्जब मौज सत्यमानी मना ॥ २८ ॥ पायेगुरु घर दान दरिद्र सु नारहैं । देखैं सृष्टिसु दृष्टि भिखारीहु कहैं । येक न वमें आप सकलले रमि रह्या । परिहां रज्जब पीर पसाय सोही प्राणहुं लह्या ॥ २९ ॥ गुरु गोविंद अगाध सु महिमा क्याकहूं । मनबुद्धि शब्द न माहिं अलह गुनक्यूं लहूं । यहु अपना अनुमानजु बोलि बखानिये।परिहां रज्जब प्रभुता पीर परिमाणन जानिये

॥ २० ॥ युगयुग गुरु प्रताप शिष्यसाचही बढैं । पदयूं परि पग धारि अगम ऊंचेचढैं । गुरु दादूकी दादि रज्जबा है सुखी । परिहां औरौंभी आनंदसु जेते गुरुमुखी ॥ २१ ॥

अरिल उपदेश चितावनीका अंग ।

यहु पूरा उपदेश श्रवण सुनधारिये । सौंजशिरोमणि पाय वृथा क्यों हारिये । यहु अवसर यहु बेर न कबहुं पाइये । परिहां रज्जब सोच विचार रामगुण गाइये ॥ १ ॥ नर नारायण देह नामकी सीररे । तामैं बारंबार कहै गुरु पीररे । त्यागि अनेक अयान एकउर आनिये । परिहां रज्जब रटिये राम समयये जानिये ॥ २ ॥ मनुष्य देह यहस्थान जीव कबआयं है । चौरासीके फेर दुर्लभ पुनि पाइहै । तकि अवसर तत्काल रामरस पीजिये । परहां रज्जब विश्वाबीस विलंबनकीजिये ॥ ३ ॥ अकालिसु आतम जोर मनुष्य स्थानरे । नर नारायण होत देखि दृढ मानरे । चौरासीके माहिं सु बहुते बपुबली । परिहां रज्जब तनकै तेज न मूर्ति हरिमिली ॥ ४ ॥ यहिकाया कल्याण भजनकी ठौर है । चौरासी लखमांहिं न ऐसीऔरहै । तामैं कीजै काम राम रटिलीजिये । परहांरज्जबयाहिबेर बिलंब न कीजिये ॥ ५ ॥ रज्जव अज्जब सौंज सु सुमिरन लाइये।नर नारायण रूप सु बहुरि न पाइये । काया रतनहुंमालरैंनदिनगुरुरटै । परिहां कीजैं सोइ उपाय जु यहु गोविंदचढै ॥ ६ ॥ विविध भांतिकी देह उधारी देत हैं । अवधि पूरिसौं आप आपनी लेत हैं । ऐसे जानिरु जीव बिलम्ब न कीजिये । परिहां रज्जबरटिजटिराम सु लाहालीजिये ॥७॥ कोडी लगै न कोरि सु सुमिरण रावरे । ऐसा सौंघा नामन लेहीं बावरे । श्वास सुरतिकाकाम रामरटिलीजिये । परहां रज्जब

परमपियूष प्राणकिनपीजिये ॥ ८ ॥ नामइसाहिलेजाय उसहि आनें यहीं । सुमिन दलाल कष्ट कोई कहीं । मेला आत्म राम भजनकरिहोत है। परिहां रज्जब रटियें राम परया निजपोत है ॥ ९ ॥ जप तप संयम दान शीशकरवतधरैं । साधन कष्ट अनेक देहनारथ फिरैं । प्रकट गुप्त पुनि और नामबिन कीजिये । परिहां रज्जबबिनभगवंत कदेनहिंसीझिये ॥ १० ॥ सुकृत सबसुख मूल श्रवणसुनिकीजिये । मनुष्यजन्मसफलहु करिलीजिये । यहु अवसर यहि बेरबहुरिनाहिंपाइहै । परिहां रज्जब बिछुरैं देह न हरि गुणगायहै ॥ ११ ॥ यहि शिक्षासुन लेय न भूलौ बावरे । मिनषा देही मोज न लहियेदावरे।यहि अवसर यहि देहनाम निज लीजिये । परहां रज्जब समझि अचेत बिलंब न कीजिये ॥ १२ ॥ सारे श्वास शरीर सुमिरन योग्यरे । जबलग आए,नाहिं जरातन रोगरे । रुके है स्थानजब नामनहिंआवई । परिहां रज्जब ऐसे जानि अबहिकिनधावई ॥ १३ ॥ ४५ ॥ २ ॥

अरिल कालके अंगकी ।

बिनसैं पंचों तत्व आदमी कौन हैं । एकबिनाजो औरसबनि कूमौंनहैं । कालकर्म बसनाहिं सु मोहिबतायरे । परहां रज्जब जंतहु अंतकाल पुनि जायरे ॥ १ ॥ मतै मेदिनी मारि उपाई सृष्टि है। तबकी मृतकरूप सु देखी दृष्टि है । मीचहीं लागी मीचन जीवन पाइये । परहां रज्जब ऐसी जानि रामगुणगाइके॥२॥४७॥

अरिल सुमिरणकी ।

सुमिरन सब सुख मूलस्थूल क्यूं भूलिये । तेज पुंजके होत भजन करि धूलिये । सीझैं हिंदू तुरकयेकानिज नामसौं । परिहां रज्जब रटियें राम प्राणकीठांवसूं ॥ १ ॥ जबजग देख्या जोयन

सुमिरण साकछू। अमर औषधि येहलेरराखीरपछू। रज्जब रोग अपार सु छिनमें जाय हैं। परहां भाग भलेतेहिं भाल जु रुचिसैं खाय है॥ ऐकनामकी ओट चोट सारी टरहिं। इंद्री अरिदल काल देखि दीरघ डरहिं। सुख समूह अपार जुगे जुगपाइये। परिहां रज्जब रुचिसैं राम रैंनदिन गाइये॥ ३॥ भय भंजन भगवंत भजे भयभानई। गुणइंद्री कर्मकाल निकट नहिं आनहीं। टूटैजर जंजाल न जीव जगमें परै। परहां रज्जब अज्जब काम जु अब सुमिरन करै॥ ४॥ सब संतनका धाम राममें देखिये। अमर अभय पदठाम जु यहि बिशेषिये। काल करमकी चोटन सुमिरणमें सही। परहां रज्जब साधू साखि वेदहूं यूं कही॥५॥ मंगल कल्याण आनन्द सुमिरण सुख होत हैं। दुःख दीरघ सब जांहिं बहुतही ओत है। कीजै क्योंन अघाय भजन सुनि रामका। परिहां रज्जब क्यागुण कहै सर्वही कामका॥ ६॥ सुमिरण सर्वशृंगार सुकृत तों देखिये। तामिंहि फेर न सार सु बीर विशेषिये। भागभले तेहिं भालभजन भूषण किया। परिहां रज्जब तिनहुं सुहाग सत्य साँई दिया॥ ७॥ छैसो सहस्र इकीस मालम नियां करै। हृदय हेतकैहाथरैन दिनसो फिरै। यहु योगेश्वर जापजीवजोजानई। परिहां तों रज्जब निजनाह कहो किन मानई॥ ८॥ बाजैनाभि स्थानं सु नोवत नामकी। सो सुनिये सबलोक आवाजसु टामकी। देखि कहांकी बातकहालौं जानिये। परिहां रज्जब छिपैन नाम जु गोप्य बखानिये॥ ९॥ ऐक नामकै संग नारायण डोलई। भजनीकूं सौभाय बुलाये बोलई। येसुनिका नन बात सु आनन लाइया। परिहां रज्जब तिनकै पास परमगुरु आइया॥ १०॥ सुकृतरूप शरीर भजन भूषण करै। सुंदर यहि शृंगार सु पियकामन हरै। तनमन सावतराखि रिझाया रामकूं।

परिहां रज्जब धन्य धन्य भागकरी इस कामकूं ॥ ११ ॥ जीवको नाम जहाज सुकरतानें किया । विषम समुद्र शरीर सु ताकै शिर धरया । चढैंसु प्राणी पार शून्य पुरजाइहैं । परिहां रज्जब अज्जब दरश जुगेजुग पाइ हैं ॥ १२ ॥ सुमिरण करैसु संतसही सुखपाइ हैं । मनबचकर्म तिरशुद्ध जु हरिगुणगाइ हैं । यहु आनंद स्थूलसु मंगलजीवका । परिहां रज्जब लीजे नामरैंन दिन पीवका ॥ १३ ॥ करी आतमाराम देखिरेकहिरैं । अलिफ लागि अल्लाह सु पीरपगंबरै । नमो नमो निजनाम सु माहिमांको लहै । परिहां रज्जब अल्प सु बुद्धियेकमुखक्याकहै ॥ १४ ॥ निष्फल कदेन जायतरुवर नामका । नेहनीरसौं सींचि निरंतर ठांवका । जुगति जतन करिराख बाडिवैनहुकरी । परिहां रज्जब फलहरि दरस आँखिवोडी भरी ॥ १५ ॥ ६१ ॥

अरिल दयाके अंगकी ।

यहेदया सुनि सत्य सजीव न मारिये । मनबचकर्म तिरशुद्ध पिशुनता टारिये । सबसुकृत तिनकीन्ह मिहरमनसा धरी । परिहां रज्जब रीझे रामरही क्या अनकरी ॥ १ ॥ जो न जिलाया जाय सु जीव न मारिये । सिरसाटै सिरलेय सु क्यूं न विचारिये। लेखालेय खुदाय ज्वाब क्या दीजिये । परिहां पीछै भोरिहोइ सु पहलन कीजिये ॥ २ ॥ ऐसी सोच विचारमांस क्यूं खाइये । हांसे टलैंसु नाहिं अंतदुःखपाइये । रज्जब बाणिज विकार न कबहूं कीजिये । परिहां आपा परसमदेखि दयादिल कीजिये ॥ ३ ॥ दयापरै नहिं धर्म न सुकृत देखिये । मिहरि मयामहि माहिं परसनिधि पेखिये । यासम और न अंगसाखिसारेकहैं । परिहां भागभले तेहिभाल जीवजोयहुलहैं॥४॥सकल भलेका मूल

दयामें देखिये । धर्मदान पुनि पडे तेहीमें पेखिये । सुखदाई दुःख दमन मांडमें है मया । परिहां रज्जब अज्जब काम सु दिल लीजै दया ॥ ५ ॥ वडे दिलनकी दयाबहुत सुखपावई । सो सहस्रगुण होय तहां फिरि आवई । तामहि फेर न सार मयामन कीजिये । परिहां रज्जब सोवन होय दोषमोहि दीजिये ॥ ६ ॥ कोटि भांति कल्याण दया दरसावहिं । उनकी मयामनुष्य और सुखपावहिं । हुए हमायसों ऐन आत्मा यहिमति । परिहां रज्जब उनकी छांह सु निपजै नरपति ॥७॥ दया धर्मकी बात गात जेहि जानिये । तामें दीन दयाल सत्यकरि मानिये । सब सुकृततेहि ठौर भलाई भासई । परिहां रज्जब मिहरिसुमांझ आप परगासही ॥ ८ ॥ दयारूप दिल होयतो येकार्य्य करैं । निरबैरी सब जीवन सोमारे मरैं । काहू धका न देय नसो फिरि पावई । परि हां रज्जब जगजगदीश सबनकूं भावई ॥ ९ ॥ दया दृढावै धर्म दुष्टता दिलहरै । उरगिरिवज्र विशेष कठिन कोमलकरै । आपा परसमयेकआत्माजानई । परिहां उपजै परमार्थ पीरपर मानई ॥ १० ॥ बैरागरकी खानि मिहरिकी है मही । सुकृत सुयश अनंत सु नग निपजै सही । यहां भरै भण्डार सु आगै संबला । परिहां रज्जब या उपरान्त कहो क्या है भला॥ ११ ॥७३॥

अरिल विरहके अंगकी ।

सुखी सकल संसार विरहनी दुःखभरी ॥ बाम मिलतबरबारि अमिल अग्नि जरी । चौरासी चितचैन सु मुंहआगै सुदा । परिहां रज्जबचाहैरामदुःखीदीरघजुदा ॥ १ ॥ विरहविथातनपीर धीरकेहिविधिधरै ॥ ज्यूं मोती मध्यथालतनहिमन यूं फिरै । दर्शन बिन बेहाल वियो-

गिनि बावरी। परहां रज्जब कृपा कछिकबहि ह्वै रावरी॥ २ ॥ शक्ति सुखशशि सीर सुधारस बरषहिं । पीवत प्राण पियूष सबै मनहर्षहिं। मोमनबाज विशेषि बिरह बपुचां दिया। परिहां रज्जब रसविष होय उभै सुखबादिया ॥ ३ ॥ दुःखयह निजतन जाय दुःखित मन बसिनहीं। दौहैं दिशि दीदार न दीसै सो कहीं। ये पीरा है प्रचंड जीव जरता रहै। परिहां रज्जब विविध वियोग कहौ कासौं कहै ॥ ४ ॥ विरहनि ब्यथा विछोह दरसदारू रटै। मानहुं रोगी रोग औषधीसौं कटै। ज्यूं नर बूडत नीर नावसु चढाइये। परिहां रज्जबके ये हाल हेरिहरि आइये॥ ५ ॥ ७० ॥

अरिल चाणक्की।

सुखही प्रकाशै और मध्य मन और है। यह पूरण प्रपंच साच केहि ठौर है। दगाबाज ठग ऐन सु देखि न धीजिये।परिहां रज्जब तिनका संग कदेनहिं कीजिये॥ १ ॥ शिष्यनहोए आप शिष्य औरनकरै। यह पूरण प्रपंच ठगारनकसौं परै। पूजत बहु दुःख होय पुजायेसौं सुखी। परिहां रज्जब कही बिचार सु निगुरामन सुखी॥ २ ॥ ८० ॥

अरिल अज्ञान कसौटीकी।

अगणितकष्ट अनेक अज्ञान न कीजिये। नाम बिना नहिं ठाम छलावै छीजिये। मृगतृष्णाका नीर सु मरकट आगिरे। परिहां रज्जब रीझो साच झूठदेत्यागिरे॥ १ ॥ अज्ञानी कसि देह न मनकूं मारिहैं। ज्यूं संकट मध्य सर्प विषहि अधिकार हैं। तैसैं शठ हठ देखि न कबहूं लीजिये। परिहां रज्जब परखो प्राण प्रपंच न धीजिये॥ २ ॥

अरिल बीनतीकी ।

धरे अधरका सुख दान दीवानका । दिया लियाजाय सपिंडही प्राणका । बहु विधिधन वियोग सुकाया हंसके । परिहांतेसब तुमतें जाय तुम्हारे अंशके ॥ १ ॥ ८३ ॥

अरिल सवैया ॥ कवित शब्द संपूर्णम् ॥ अरिल ॥८३॥ सवैया कवित ॥ २०४ ॥ पद ॥ २१८ ॥ छंद ॥ ८७ ॥ श्री रज्जबजीके भेटके सवैये ॥ ३४ ॥ सर्वजोड ॥ ५३८ ॥

॥ श्री रामदास ॥

अथ श्री रज्जबजीका ग्रंथ लिख्यते ।

॥ प्रथम बावनी ॥

बावनअक्षर बहुविस्तार । अक्षर सहित सु विनसनहार । निरक्षरसो इनमें नाहिं।रेमन समाझि तहां चलि जाहिं॥१॥ ॐकार आदि दे माया । तामें तीनों लोक उपाया ॥ उपायेमें उपज्या सोय।जिस घटध्यान धणीका होय॥२॥कक्का केवलपकडहु बाट।कर करवत लेकर महि काट। काले सूं उज्जल यूं होय।विविध विकार ध्यान सों धोय ॥३॥ खख्खा खाली खेसहु खेल । खलकही छाडि खसम सों मेल । खैंचि खुलखट खोहणि खाहू । खारे समुद्र भूलि मतजाहू ॥४॥ गग्गा गर्व गुस्सा गुन गालि। गहो गरीबी गुरमुख चाल। तौ गर्जे गगन गहरि ध्वनि होय । मरि मैदान मारिले गोय ॥५॥ घघ्घा घरही में घर बात । घरके घेरि बडी यहु घात । घूघू व्है घोलो मति नैन । साई सूरज उझा ऐन ॥ ६ ॥ नन्ना नीडो निर्मल नीर । सो निधि निरखि जहु मति दूर ॥ नमो नमो निज निर्मल देव । निशिवासर कर ताकी सेव ॥ ७ ॥ चचा चित्त

चिंता मणि राख । चंचल व्है दीजै नहिं नाखि ॥ चंद चरन करि नैन चकोर । चेतनि व्है चाहौ वहि वोर ॥८॥ छछ्छा छोडहु छोटी बाणी । लेहु कहा सुनि छारहि छाणी ॥ छडि छडि छटि करहु छछीन । छलबल छेदै द्वंद्वरदीन ॥ ९ ॥ जज्जा जगजीवन जस गाय । ज्यूं जोख्यूं युग युग कीजाय ॥ जानि बूझि तजि जग व्यवहार । निशिवासर जपि जैजैकार ॥ १० ॥ झझ्झा झटपट कीजै काम । झूठ झाडि झुकि भजियेराम । झांथे बडि झोले मतिखाहू ॥ झूरि झूरि पिवकूं मिलि जाहू ॥११॥ नन्ना नरनारायण अवतार । निर्गुण सुमिरण आवहु बार ॥ नै नीचा व्है नांखू दोय । निरखि निरंतर न्यारा होय ॥ १२ ॥ टट्टा टूटा जोडहु संधि । टूक टूकले उनमन बंधि ॥ इकटक अटल रहो दरबार । टोला टाली फेर न सार ॥ १३ ॥ ठठ्ठा टीक ठाहरले शोधि । ठोकि ठोकि पंचों पर-मोधि ॥ ठंठणपाल होइ मति रहै । ठाली ठोठमन सुखी बहै॥१४॥ डड्डा डिढ डोरी उरराखि । डगमग डिंभडील सुं नाखि ॥ डिगे डंड दीजै दरबार । अडिग अडोल सु उतरै पार ॥ १५ ॥ ढढ्ढा ढांढे की मति त्याग । ढूकि ढूकि हरि सेती लाग ॥ ढंहि ढाहै तोडहि मति पाव । ढाढस करि गोविंद गुण गाव ॥ १६ ॥ राणा रिण जू नाश बधोय । चरण हेणि हरिजीकी होय ॥ रहणा इररसके मैं न्हाहु । ऐसे रंक राणा व्है जाहु ॥ १७ ॥ तत्ता त्रिगुण तिरै तत्काल । तकि औसर तीखी गतिचाल ॥ ताइत तस्कर तनत्रास । त्राहि त्राहि करि तामस ग्रास ॥ १८ ॥ थथ्था थिर क्यूं थोडी बेर । थान थीतिले आतुर हेरि ॥ थरसलि थून थोथी थाप । थकित होय बैठो मति बाप ॥ १९ ॥ दद्दा दूजी दशा न देखि । दैतो दगाधि राखि रज रेखि ॥ दायमदि मैं देखो नूर । दीनदयाल रहे भरपूर ॥ २० ॥ धध्धा धन्य धन्य धरिये ध्यान । धुकि धुकि

लेहु गुरूका ज्ञान ॥ धरि धीरज धुनि धर्महिं साधि । यापर और नहीं कछु बाधि ॥२१॥ नन्ना नीका है निज नाम । नित नौबत बाजै बलिजाऊं ॥ नाशै पातक निकसै तेज । नारी नाह अमोलक हेज ॥ २२ ॥ पप्पा पीव पुरातन जानि । प्रेम प्रीति पूरी उर ठानि ॥ परमेश्वर का कहिये पास । पाप पुंज पलमा हैं नाश ॥ ॥ २३ ॥ फफ्फा फहम फकीरी लेहु । फिरि फूटै जागि मन मति देहु ॥ फोकट फकटै दीजै त्यागि । फारिक व्है फारिकसों लागि ॥ ॥ २४ ॥ बब्बा बिरचहु विषय विकार । बोध विमल बुद्धि अंतर धार । बैन विश्वंभर बारह श्वास । कबहूं न होवै कंध विनाश ॥ ॥ २५ ॥ भभ्भा भूलि न भवजलजाहु । भरमि भरमि गोते मति खाहु ॥ भीतर भूख काढि सब देहु । भजि भगवंत भलाई लेहु ॥ ॥ २६ ॥ मम्मा मरना है संसार । मान मुग्ध माथेपर धार ॥ ममता मान मैल मन धोय । मोहन सुमिरे मंगल होय ॥ २७ ॥ जज्जा जोडहु आतम राम । जरा जोर करि जीते जाम ॥ जोग जाय जनकी नहिं जीति । जामण मरण जीव भयभीति ॥२८॥ रर्रा रोकहु मूलहु द्वार । रोम रोम रटि राम अपार ॥ यहु रसरीति सकल सिरमौर । रीति रहै न कोई ठौर ॥ २९ ॥ लल्ला लालच यूंहि जानि । व्है लवलीन लाल उर आनि ॥लोक असंख्य लंघि यूं जाहू ॥.लांबी लगन काल कूं खाहू ॥ ३० ॥ वव्वा वैली और न आव । उल्टा उर अंतर धरि भाव । वारि वारि उस ऊपर जीव । उमगि उमगि उत्तम रस पीव ॥ ३१ ॥ सस्सा सुमिरण करहु संबाहि । साच शील उर अंतर बाहि ॥ सूधे मारग में सिर देहु । सो साईं अपना करि लेहु ॥ ३२ ॥ खख्खा खिदमति करि इकतार । खडे रहो खालिक दरबार ॥ खान खजाना खीजे नाहिं । जैसे वाउरि खोटी नाहिं ॥ ३३ ॥ शश्शा साईं सिरपर

राख। सतगुरु साधुकहैं सबसाखि॥ सुमिरसनेहीसमझो दास। सुखके संघ माहिं करि बास॥ ३४॥ हहा हरिभजि हरिही होय। हंसहिहंस मेलिनहिंदोय॥ हुये होहिं है साधू खेत। है हुशियारकरौ हरिहेत॥ ३५॥ बावन अक्षर न्यौरे बीर। निर्अक्षरसों नाहींसीर॥ जनरज्जब के सो मन माहिं जो कछु इन अंकन में नाहिं॥ ३६॥ १॥

ग्रंथ बावनी अक्षर उद्धार।

बावन अक्षर ब्रह्म भजि। वेत्ता बावनबीर। मन सिख मानहु मनयहु। कहैप्राण गुरुपीर॥१॥ओ अक्षरतैं ओंकारा। ओ आराध आतम उर धारा। उत्तम गति अक्षर ओ माहिं। उनमन लागि अनन्य जन जाहिं॥ २॥ कक्का केवल है करतारा। कलि कश्मल सो काटन हारा। काम इहै बरजौ मति कोई। केवल कहतां केवल होई॥ ३॥ खख्खा खालिक अक्षर खेवै। खिलै नाहिं खसमहिं जो सेवै॥ खलक बंध खोहणि खालि जाहीं। खर तर खेल सुख खै माहीं॥४॥ गग्गा गुरु गोविंद गहि ज्ञाना। गुप्त गातगत मत सु गराना॥गरकगूझ गहनीयूं आवै। गग्गा गगनही स्थान लखावै॥ ५॥ घघ्घा घन सुंदरघन जाना। घण नामीका करहु बखाना॥ घणहुँ घणां घण लोक घणेरा। यूं घघ्घै अक्षर सब घेरा॥६॥ नन्ना निराकार करि नेहा। निर्गुण सुमिर सफल निज देहा॥ नर नारायण करै सु नना। नीकी बात मानरे मना॥ ७॥ चच्चा चिदानंद चितराखी। चिंतामणि चंच सु भाखी॥ चिह्न धारि चखि चारों आये। चरण कमल चर्चै सु समाये॥ ८॥ छछ्छा छह दर्शन प्रतिपाला। छिन छिन छत्रपति सु संभाला। छैल छबीला छाना नाहीं। छत्तीस बस्तु सु छछै

माहीं ॥ ९ ॥ जज्जा जपि जगपति जगन्नाथा। ज्यूं जीव चढै नाहीं जम हाथा ॥ जूना जोगी जस पुनि ईसा। जजै माहिं सु जन जगदीशा ॥ १० ॥ झज्झा झीणहुँ झीणा सांई। झीणा ह्वै झीणा यश गाई। झिलि मिलि उपजै झिझ सु नाहीं। झाझी बसत सु झझै माहीं ॥ ११ ॥ नन्ना नरहरि निशि दिन गावहु। रैनर निरालं भयूं पावहुं ॥ निर्मल नूर सुनि राखौ नैना। अक्षर ननै में निज ऐना ॥१२॥ टट्टा टलै नाहिं सो राजा तासौं टिकि रही सरैं सो काजा। मानहिं टेकटेक जो धारी। अक्षर टट्टै बस्तु पियारी ॥१३॥ ठठ्ठाहै ठाकुर हूं सों ठाकुर। मनवच कर्मतेहिं ठाहर चाकर ॥ ठाकुर नाम सु ठठ्ठै माहीं। ताते ठठ्ठा त्यागै नाहीं॥१४॥ डड्डा डाल मूल तेहि नाहीं। अडिग अडोल बसै सब माहीं ॥ डावड़ है तासौं डिढ रहिये। यूं डड्डा अक्षर डरि गहिये ॥ १५ ॥ ढढ्ढा ढाकण जगत जहाना। सो ढिग ढूँढि लेहु मति काना ॥ ढेर अनंत ढूँढे न ढिगारा। मापरहित ढढ्ढै मझारा ॥ १६ ॥ राणा रावण होय न रहिये। राणहुँ राणा सो निज गहिये॥ लोक अनंत जासकी आणा। अक्षर राणे माहिं समाणा ॥ १७ ॥ तत्ता त्रि-भुवन है निज सारा। ताहि जपे जीव का निस्तारा ॥ ताकूं नाम धरे रहु सीसै। ततमाला तत्ते में दीसै ॥ १८ ॥ थथ्था थापिउ थापण सोई। थापें थाह न आवै कोई ॥ थूल मूल थितना हिर नाहीं। थानि थानि थिति थिर थथ्थै माहीं ॥ १९ ॥ दद्दा दायम कायम दाना। दीन दयालु नहीं सो छाना ॥ दीनबंधु दूजा कोई नाहीं ॥ दीरघ दौलत ददैही माहीं ॥२०॥ धध्धा ध्यान धणी का कीजै। धरणीधर धुनि अंतरि लीजै। धर्म धारलेखै मैं नाहीं ॥ धन्य धन्य धूधध्धैमाहीं॥२१॥नन्ना निकुल निर्बसीकाया। नित्य नवीण नाथ लिवलाया ॥ नाम अनंत उधारणजीके। सहस्र नाम

नन्नै मैं नीके ॥२२॥ पप्पा पारब्रह्म पदपूरा।परमतत्व जपि जीवन मूरा ॥ पुरुषोत्तम पावन जिहिं नामा। परापरी पप्पै मैं ठामा ॥ ॥ २३ ॥ फफ्फा फहम जु फारिक ध्यावै। फल रस रूप सोही फल पावै ॥ फहम इहै जु फकीरी गहिये। फूटै नाहिं सु फफ्फै लहिये ॥२४॥ बब्बा बिश्वंभर बनवारी। विभव रूप व्यापक बुद्धि धारी ॥ बेहद बिपुल सुविघ्नबिनाशा। बस्तु बित्त बब्बै विचि बासा ॥ २५ ॥ भभ्भा भगवंत भाय भरपीजै। भूरि भाग्य भगवान गुणीजै ॥ भूधर भूत भेद कहुँ नाहीं। भली बस्तु सो भभ्भै माहीं ॥ २६ ॥ मम्मा मनमोहन मनधारी। मुखे माधव कहिये सु मुरारी ॥ महाराज मधु सूदन बोलै। अक्षरमम्मै वस्तु अमोलै ॥ २७ ॥ जज्जा जगमोहन जस गावो। जगत जोति जगबंधन धावो ॥ जमका जस जोरावर जाना। जगतरूप जज्जै सु समाना ॥ २८ ॥ ररा रमिये राम रहीमा। इहै जाप जपि जीव फहीमा। रसियालै रसिया ह्वै रहिये। रसरूपी रवर रैमें लहिये ॥ २९ ॥ लल्ला लायक है निज लाला। लच्छीवर लोकहुँ प्रतिपाला। लघुसों लघु दीरघ सु अगाधा। अक्षर लल्लै में सो लाधा ॥ ३० ॥ वव्वा वह है सिरजन हारा। वही गहै याका निस्तारा। उन मन लागि सु यहु दिशि सोई ॥ वह वह कहत होइ यहु वोही ॥३१॥सस्सा समरथ सिरजनहारा। सुख निधान श्रीपति सिरधारा ॥ सर्वंगी सबही सिरताजा। अक्षर सस्सै माँहि बिराजा ॥ ३२ ॥ षष्षा एक खुदायहि ध्यावै। चतुर खानि सो जीव न आवै। खोटा त्यागि खरालै येकै। यूं षष्षै अक्षर खत छेकै ॥ ३३ ॥ शश्शा शंभू साहिब सांई। श्रीधर श्री रंगकूं शिरनाई। श्वास उश्वास सुमरिये रामा।अक्षर-सस्सै कीर सब कामा ॥३४॥ हहा निशिदिन हरिहरि कहिये। हरिहरि कहत सु

हरि व्है रहिये । हूंण हद सोई सब हुवा । हेरिहंस हहै नहिं जूवा॥ ॥ ३५ ॥ एक लागि अक्षर सब सीझै । सरबंगी सब ठाहर रीझैं । पावन परस पाट सब पावन । रज्जब रोग हो उतरचा बावन॥३६॥ औषधिमें अक्षर सब लागे । जे पचास प्राणहूं थे त्यागे । अब आतम अक्षर अक्षर प्यारे । अन अक्षर अक्षर सु उधारे ॥ ३७॥ ॥ ७३ ॥ २ ॥

अथ ग्रंथ पन्द्रह तिथि लिख्यते।

सतगुरु ज्ञान उदयसों सूझी।यूं पंद्रहातिथि तनमें बूझी। अमावस उर अनंत अंधेरा। तहां सहाय भया गुरु मेरा ॥ १ ॥ पडवा पीठि दईतम भूला। पृथ्वी माहिं उदै करि शूला । परम अंकूर प्राणमें जागै। परम पुरुष की सेवा लागै ॥ २ ॥ दोज सु दमदम सुमिरण कीजै । द्वैद्वै दोजक दहनित जीजै। तो दिल उगै दोयज चंदा। दिन दिन देखै अति आनंदा॥ ३ ॥ तृतीया त्रिशुद्ध होय तनतावै। त्रिगुण तोरितेहितत्व समावैं ॥ त्यागै धरणीं तकै आकाशा। तहां न कोई तस्कर त्रासा ॥ ४ ॥ चौंथ सु चेतन व्है चित्त माहीं। चंचल चोर सु आवैं नाहीं। चूकै चकै न आये दावैं॥ चरणकमल देखनकाचावैं ॥ ५ ॥ पंचमी पंचों पलटै प्राणा ॥ पल पल पीवै प्रेम सुजाना। यहु पतिब्रत प्राणके पासा। प्रीतम परसै परम प्रकाशा ॥ ६ ॥ छठसु छिन छिन छांटैसोई। ताहिन छलै छलावै कोई ॥ छाक्या रहै छानिरसपीवै । छत्रपतीकी छाया जीवै ॥ ७ ॥ सातें सप्त द्वीपके सागर। सोखे होय अगस्त उजागर । सदा सु शीलरु सुमिरण सारा।सन्मुख सांई संत पियारा॥ ॥ ८ ॥ आठैं इष्ट सु अंतर राखैं । अष्टधातु काया कुलनाखै। अष्टांग योगमें आतम लोटै। अष्टसिद्धि दासी पाव पै लोटै ॥९॥

नौमीनिकुल निरंजन धावै । नीची नजरि न नौखंड आवै । निर्मल नामकियां ध्वनि गाजै । नित नौबत निजठाहर बाजै ॥ ॥ १० ॥ दशमी द्वौलत दसवें द्वारा । तहां दृग देखै देखनहारा । दरिगह बैठा दर्शन होई । दहदिशि दीसै दीरघ सोई ॥ ११ ॥ एकादशी एक दिशि जानें । एकमेक व्है रस रुचिमानें । एक आधार एककूं गावै । यूं व्है एक येककूं पावै ॥ १२ ॥ द्वादशी द्वादश लहरि मिलोवें । द्वादश अंगुल बाई धोवै । द्वादश द्वारन देइठताला । द्वादश मास मगन मतवाला ॥ १३ ॥ तेरसींते तत्वसार बिचारे । तृष्णा त्रिगुण तजै तस्कारे । तोलै तुलै संतन समपूरा । तौ त्रिभुवन पतिलेहि हजूरा ॥ १४ ॥ चौदश चिंता चाल चुकावै । फिरि कबहुं चसदृष्टि न आवै । चरणकमल चितवित लेबाना । चवदह भवन भया सोही राना ॥ १५ ॥ पून्यू पूरा व्है मन चंदा । परलै गये परम दुःखद्वंदा । पाये पास पसारा नाहीं । परम पुरुषमें प्राण समाहीं ॥ १६ ॥ सोलह कला सम्पूरण सारा । सब दिशि देखै राम पियारा॥ गुरु दादू दिनरैंन दिखाये । जन रज्जब घट भीतर पाये ॥ १७ ॥ ९० ॥

अथ सप्तवाराः ।

बारबार गुरुबंदन कीजे । रैंन रहित दिनदिन रस पीजे ॥टेक॥ आदित्यबार आदि सों लेहू । काहेकूं दी मिनषा देहू । सो शोधि करि समझि विचारी । आदू रचना अंतर धारी ॥ १ ॥ सोमवार समता घरआनी । नखशिख समझि समाधि सु ठानी । सर्बस्व-देय सुधारस लीजै । सहज सुषुम्ना भरि भरि पीजे ॥ २ ॥ मंगलवार मगन गुणगावै । महा पुरुष मंदिरमें पावै । मध्य मुदित मनमाहिं उच्छाहा । माथै भाग मिलै निजनाहा ॥ ३ ॥ बुधवार

बुद्धि ब्रह्म बखानैं । विमलरूप व्यापकविचि जानैं ॥ तनु सरवर जीव पहुप प्रकाशा । बसली बेधै बसत सुबासा ॥ ४ ॥ बृहस्पतिवार विकल बुधि बारै । बैसि बीचिधन धाम बुहारै ॥ बपुबन माहिं विश्वंभर न्यारा ॥ बितविसतीर न करि व्यवहारा ॥ ५ ॥ शुक्रवार सब सूधा कीजै । सौंजसुफल सुमिरन सुभरीजै॥सन्मुख सांई आवअनंता । सदा सुखी सो साधूसंता ॥६॥थावर थकित सुथानिक आई । पायेथलि बाहरनहिंजाई ॥ थोथीत ज्यूं चढै थिति हाथा । थोरा बहुत होत हरि साथा ॥ ७ ॥ बारंबार करौ यहुकामा । अनदिन सुमिरौ केवल रामा ॥ ससबार सुमिरनमें राखैं । गुरुप्रसाद सु रज्जबभाखै ॥ ८ ॥ १८ ॥

अथ ग्रंथ गुरु उपदेश आतमउपाजि ।

गुरु उपदेश सरैंसब कामा । आतम उपजि मिलै पुनिरामा ॥ गुरुमुखि दीवै दीवा होवै । आतम उपजी मथें पुनिजोवैं ॥ १ ॥ गुरुमुखि अग्नि आनि दौं लागै । आतम उपजि बंस घसिजागै ॥ गुरुमुखि माता सुत पय पानै । आतम उपजि गऊबछजानै ॥२॥ गुरुमुखि नर चंदनकूं पावै । आतम उपजि तहां अहि धावै । गुरु मुखि सीपस्वाति रत होती । आतम उपजि भये गजमोती ॥३॥ गुरुमुखि नटवर छींको झेलै । आतम उपजि कौडिला खेलै । गुरुमुखि कीरे तिरैं बहु पानी । आतम उपली मीनकन जानी॥ ४॥ गुरुमुखि घटा शब्द घन दरसै । आतम उपजि घटा बिन बरसै॥ गुरुमुखी कूप अचैजल जीजै।आतम उपजि खोदि पुनि पीजै॥५॥ गुरु सूरही देखि दृढ पीला॥पति बाम उपजै सो लीला । गुरुमुखि ज्ञान गुरजतारि मरिये । आतम उपजि आपहति हरिये ॥ ६ ॥ गुरुमुखी नेत्र कढाये अंधा । मोतिय बिंद उपजि दृढ बांधा ॥

गुरुमुखी कान मूंदि व्है बौरा । बाहरी बायु सुनैं नहिं शोरा॥७॥ गुरुमुखी इंद्री काढे खोजा । आतम उपजि हीज पुनि रोजा॥गुरुमुखि बांझ आतमा नारी । वांझव्यथा पुनि होय विचारी॥ ८ ॥ गुरुमुखि पंखा शीतल बाय । सहज चलै ठंढा करि जाय ॥ गुरुमुखी शेष सकल सुनिधायल । आतम उपजि भये जबरायल ॥ ॥ ९ ॥ गुरुमुखि गोरख अलख समाना । आतम उपजि महादेव जाना ॥ गुरुमुखि होहिं सकऊ सन्यासी । आतम उपजि सु दत्त उदासी ॥ १० ॥ गुरुमुखि जैन तिथंकर ध्यावै । आतम उपजिं नेमलौल्यावै ॥ गुरुमुखी भक्त भक्ति पति परसै । आतम उपजिं गुरु गुरु दरसै ॥११॥ गुरुमुखि बोध इष्टकूं गावै । आतम उपजि बोध पति पावै ॥ गुरुमुखी बहुत ज्ञान ले माते । आतम उपजि गुरूपुनिराते ॥ १२ ॥ इन दून्यूं माति एकगति । लघु दीर्घ कोई नाहिं । रज्जब दीन दयालके । दोन्यू अंग समांहिं ॥ १ ॥ ५ ॥

अथ ग्रंथ अविगांते लीला ।

अवगतिकी गाति उलटी :भाई । सो काऊ पै लखी न जाई॥ ब्रह्म अंश जीव क्यों होई । नाहीं अंश मिलै: क्यों सोई ॥ ज्यों प्रकट हुताशन काष्ठ विनाशा । सोई पावक काष्ठ निवासा॥ अचरज एक अजब घनमाहीं।पावक बीज बुझावै नाहीं । श्रावन भादू समुद्र घटावै । ऋतु गये पुनिताहि बधावै । ज्यों अधर आकास उसन में बोलै ॥ पाणीसों कैसे घडी छोलै ॥ सतगुरु संग सिषशठ कीजै । बिनगुरु जीव ब्रह्ममें लीजै ॥ बोवें जुवारि कागवा कीजै॥ यों उलटी गति देखपतीजै ॥ ज्यों वर्षा ऋतु वनहिं बधावै ॥ जोय जवासैकों दौं लावै ॥ हांडीमें कनकोरा राखै ॥ ता अविगतिकी उलटी साखै ॥ पाहन मांहिं प्राणको पोखै ॥ मुकता मरैं

भूकके दोषै ॥ जावन्हि सों जगत जरावै ॥ सो करि चूनि चकोर चुगावै ॥ जैसे केश कृष्ण ह्वैस्वेतै ॥ ता अविगतिका उलटाहेतै ॥ सारी मांझ अधर धरि राखी ॥ शशिहर सूर अकाशों साखी ॥ जीव रचैसोहोय न कामा ॥ उलटी और करै कछु रामा ॥ गर्व गंजन गोविंद बिनाणी ॥ ढायदेय अपनी पुनि ठानी ॥ सरबंगी सब ठाहर न्यारा ॥ मनबच कर्म न जाय बिचारा ॥ अविगतिकी गति लखी न जाई ॥ नेति नेति कहि वेद सुनाई ॥ अविगति अलख अनंत हूं। चित्त चिन्ता नहि जाय ॥ जन रज्जब सबयों रहे ॥ ठगके लाडू खाय ॥ १ ॥

अथ ग्रंथ अकल लीला।

सेवक पूछै साहिब रामा। कौन प्रकार किया यहू कामा ॥ कै मनसा करि मांझ अधारी। कै गुण रहित बहि यहू सारी ॥ १ ॥ इष्ट बिना यहु सृष्टि न होई। झूठी बात कहै मत कोई ॥ बिन चिंता चित्राम उपाया। ज्यों तरवर संग दीसै छाया ॥ २ ॥ शशिमें सुरम सु दीसै नाहिं। कमल केश रहित खुलि जाहिं ॥ त्योंपर आरम आतम सारी। समर्थ इच्छा रहित सवारी ॥ ३ ॥ चन्दन चाहि सुचिविन बंधी। भार अठारा भई सुगन्धी ॥ यूं कर्म हित करता कर्म कीना। ऐसी विधि यहू प्राण पतीना ॥ ४ ॥ चम्बक कब चंचल मति साची। जाकै संग सूई सब नाची ॥ ऐसैं अचल चलाये प्राना ॥ समझै कोई सन्त सुजानां ॥ ५ ॥ बादल विजुली बून्दरु बाय। शून्य शरीरसों उपजै आय ॥ त्यों निर्गुणसों सगुणही रूपा। अकल निरंजन अमल अनूपा ॥६॥ समुद्र सुरति विन जलचर जागे। राग द्वेष क्रीडा कृति लागे ॥ पाप पुण्य पानीको नाहीं। ऐसे ब्रह्म सकल घटमाहीं ॥ ७ ॥ आँखि

अनन्त आदित्य आधारा। देखैं विविधभांति व्यवहारा॥ भले बुरेमें नाहिं भान। ऐसें राम रामकी आन ॥ ८ ॥ दीपक जोति जुवारी सारे । इक जीते येको धनहारे । हरष शोकमें नाहिं उजासा ॥ त्यों परमेश्वर प्राणहुं पासा ॥ ९ ॥ नीद निवास मनोरथ आये । अकर्म कर्मसु खेली समाये ॥ संकट मुक्ति समाधिहि दूरी । इहिं विधि जीव ब्रह्मभरपूरी ॥ १० ॥ बायु बन्द बपु बिसन अनेकै । मारुत माहिं न जाने एकै ॥ त्यों सकल गुणहुं निर्गुण आधारा । बीच बसत नहिं लिपै विकारा ॥ ११ ॥ ज्यों सफल बिरछ खग सेन्या बासा । काम क्रोध करि तनका नाशा ॥ रुंख रहितहत्या अरु हेतै । त्यों जगपति जगमाहीं सेतै ॥१२॥ कमल कृतघ्न देखो दीठी । जामें उत्पत्ति ताजलपीठी ॥ वारि विमुखमन शोक उच्छाहा । यूं सुखसागरमैं जीव दाहा॥ १३ ॥ सकल प्राण पृथ्वी परि मेला॥ नाना विधिके खेलहिं खेला ॥ धरणी न धारै तिनके रंगा । त्यूं पर आतम आतम संगा॥१४॥दर्पणमें दीसै सब देशा। ताकूं भार नहिं दुःख लेशा ॥ यूं गुण रहित सु अंतर जामी । ता माहैं खेलैं सब कामी ॥ १५ ॥ अग्नि अठारह भार समीपा। स्वादहु संगि स्वाद नहिं छीपा ॥ यूं अंजनमाहिं निरंजन आपै । ताकों परसै पुण्य न पापै ॥ १६ ॥ मणिगण अनंत सूत मधि येकै । अरस परस अरु भिन्न बिबेकै ॥ ऐसी बिधि दीसै जगन्नाथा । सबसे न्यारा सबकै साथा ॥ १७ ॥ मणि भुजंग ज्यूं माहैं रहई । उभय परमगुण नाहीं गहई॥त्यूं तनमाहैं है तत्वसारा । गुरु प्रसाद सु किया विचारा ॥ १८ ॥ तुम समान नाहीं अनुमाना । विषम संधि क्यूं करौ बखाना ॥ अकह ठौर यहु तुमहुं कहाई । गुरु प्रसाद यहु ज्ञान सु पाई॥ १९॥सकल करै करसमाहि न आवै। परम भेद पूराजन पावै ॥ सर्वंगी समरथ गति न्यारी । जन रज्जब तापरिबलिहारी ॥२०॥ ॥ ग्रंथ ७ ॥

अथ ग्रंथ परमपारिख ।

प्राण पुरुषको पारिख पाई । जा गुण मिलै ताहि समभाई । ज्यूं जल पैठि ईख गुड होई । पोसत परस अफीमों सोई ॥ १ ॥ अठारह भार माहिं जल पैठै । जैसी विधि यहु रंगति नीरा । श्याम श्वेत व्है राता पीरा । ऐसी विधि आतमहु पिछानी । तासम तुल्य जाहि गुनसानी। शीतलाग जलहेमहु होई। अग्नि प्रसंग उष्ण पुनि सोई॥दो०॥ज्ञानदृष्टि करि देखिया । आतम उदक स्वरूप । सरगुण मिलि सरगुण सही । निर्गुण मिलि निजरूप ॥ १ ॥ आतमभावयेकसो ऐसा । जागुण मिलै ताहि गुण तैसा । येकै भाव रागबहु परसै । राग समान भाव विचि दरसै । सोई भाव परै बहुबानी । बेदकतेब भाव द्वै जानी । नाना विधि हूं नर द्वै भावै । गुणसमान व्है बीचि लखावै । एकै भाव पंचरस भोगी । सोई भाव उलटि पुनि योगी। नाना विधि देही गुण भावै । यहु पारिख पूराजन पावै ॥ जिन अन्नूं प्रानी पति मेला । ते सब अंगभाव के खेला॥दो०॥आतम परखी लगन सम । जस लागी तस अंग॥ जनरज्जब जीव फटक गति । धरय। अधर द्वै रंग ॥ २ ॥ ८ ॥

ग्रंथ उत्पत्ति निर्णय का अंग ।

॥दो०॥ उत्पत्ति निर्णय कीजिये।गुरु दादू के ज्ञान॥नाद विंद यहु येक है । कै कछु भिन्न विनान॥१॥ आदू आप अलेख तैं आतम ॐकार । सोचे तीन जड पंचकरि । पैठा निकसनहार ॥ २ ॥ काया पुतरी काठकी । हलै नहीं दश पांच ॥ आतम अँगुरी ओर

की। आय नचाया नाच ॥ ३ ॥ टूंटा सुंदरि सांण थलि। सुकल सुकीरची सार॥आई चंबक्क चेतना। मुये जिलावनहार ॥४॥रज बीरज तन काठकठ। सूने शब्द न कोय ॥ हाथा जोडी जीवसौं। यूं मिलि खेलैं दोय ॥ ४ ॥ बपु बसुधा माटी मदन। माता चक्र निवास ॥ सुत शरीर दीपकरचा । आयौं और उजास ॥ ५ ॥ काम काठ करि नीपज्या। उदर उदधि के माहिं ॥ बालक बोहिथ क्यूं चलै। प्राण पवन जे नाहिं ॥ ६ ॥ गुडिया गंदी बूंदथी। मृतक माता पेटि ॥ बाव बोलतैं बाहिरी। उडै न उडसी नेठि ॥ ॥ ७॥ खलक खलावर नीपजै। मात पिताकूं मारि। मारुत रूपी माहिला। औरै फूंक विचारि ॥ ८ ॥ सार शरीरों नीपजै। देही दर्पण पूत। प्राण पड्या प्रति बिंब ज्यूं। वह औरै अवधूत ॥ ॥ ९ ॥ दोतिकंत मसि मंत्रमळ। कागद का मन ठौर ॥ लेखनी लिंग शरीरकी। शब्द समाना और॥ १०॥बाबा बादल मा मही। बीजही बूंद प्रवेश॥किरणि समानी सूरतैं। वह कछु औरै देश ॥ ॥ ११ ॥ जैसे सुमिरण सुरति में। त्यूं देही में हंस ॥ मृतक जीवै देखतैं। गुरु गोविंद के अंश ॥१२॥ अनपढ आंखि अनंगगति। येकरूप उनहार॥ पाठरूप पढि प्राणियां। विविध भांति व्यवहार ॥ १३ ॥ ऐसे तन अरु बाहि द्वै। ज्यों श्वास शब्द में राग। उभै अनामति देखिये। जैसें मस्तक भाग ॥ १४ ॥ पाणी रूपी पिंड है। शीत शक्ति जिव आन। द्वै मिलि तामैं कुंभथलि। समझै संत सुजान॥ १५॥ समुद्र सुन्दरी नीपजहिं। सूने सीप शरीर। आतम बूंद आकाशकी। स्वाति स्वरूपी नीर ॥ १६॥ बूरी पिता पहाड की। मातमा दुरीमेल ॥ पलटै पारस प्राण मिलि। वहु कछु औरै खेल ॥ १७ ॥ बिरछ बीज माता पिता। अरभक उदर अंकूर। पलटै चंदन चेतना। और बास बलिनूर॥ १८॥मात पिता

तिल रूप है । सुत शरीर बिचि तेल ॥ फहम फूल मिलि मगन व्है । पलट्या औरै खेल ॥१९॥ धरगिरि रूपी मातु पितु । चेतकि चकली धातु । छाप छबीलै छिपि दई । करने लागी बात॥ २०॥ नारि पुरुष सुकाठतन । लट्टू चकरी बाल ॥ डोरी झिडता भिन्न भलि । अचल चलाये चाल ॥ २१ ॥ लोहतार तिवी सुतन । तहां सूई सुत होय ॥ तेज तागकूं ताकतूं । वो है औरै कोय ॥ ॥ २२॥ मणियां औरै जातिका । औरै कुलका ताग । पिंड प्राण ऐसे मिले । नारी पुरुष सुहाग ॥२३॥ असत कडी तन पाठडी । उपजी रीती ठांम । जीव समाना जुगतिसों । गोरख धंधा नाम। ॥ २४ ॥ गोप्य बात गोविंद की । लहै न मन मति लेश । रज्जब पाई रहम सों । सतगुरु के उपदेश ॥ २५ ॥ २६ ॥ ९ ॥

अथ ग्रन्थ गृह बैराग्य बोध ।

॥ गृहस्थ उवाच ॥ गृह ज्ञानकरि पूछिया। सुनहु विपत्ति वैराग ॥ कहा घटै सुंदरि किये। कहा बढै करि त्याग ॥ १ ॥ ॥ वैराग्य उवाच ॥ वैराग्य बुद्धि गहि बोलिया ॥सुनहुं गृही कछु ज्ञान । तुम नारीकै बसि भये । हम अबंधजु स्थांन ॥ २ ॥ गृहस्थ उवाच ॥ तुम अबंध कैसेभये । कहो विगति बैराग ॥ हम विषिया बपुसों करी । तुम्हहिं मनोरथ लाग ॥ ३ ॥ वैराग्य उवाच ॥ जैसी चोरी मन करै । तैसी जै तन होय ॥ रज्जब तोड तडाकि दे । सूली दीजे सोय ॥ ४ ॥ गृहस्थ उवाच ॥ जे मनसे चोरी करी । तौ पीछैं को शाह ॥ जनरज्जब झूठी दशा। किसका व्है निर्वाह ॥ ॥ ५ ॥ वैराग्य उवाच ॥ मन सरवर तन पालगति । जल तरंग नहिं जाय ॥ रज्जब रोपै पालिपग । उलटि उमंग समाय ॥ ६ ॥ ॥ गृहस्थ उवाच ॥ जे मन तरंग तन ना चलै । कहो काम क्यूं जाय ॥ रज्जब झरता देखिये । उल्टा क्यों न समाय ॥ ७ ॥

वैराग्य उवाच ॥ काम गया तौ का भया। बिन नारी प्रसंग ॥ रज्जब काया कुंभभरि। ऊपर गया अनंग ॥८॥ गृहस्थ उवाच ॥ कहा कुंभ जडकी दशा। रज्जब रुचि नहिं माहिं ॥ यहु तन मन चेतन दशा। सहज काम क्यूं जाहिं ॥ ९ ॥ वैराग्य उवाच। सहजकाम ऐसे गया। ज्यों लोही नकसीर ॥ रज्जब जोरू जाके गति। कसि काढै कुलिहीर॥१०॥गृहस्थ उवाच ॥ गृहीपति स्तुति किये। धनि धनि तूं वैराग। कामिनी तो तुमपरहरी। कनकलता तुमलाग॥११॥ वैराग्य उवाच॥कामिनी ज्योति समानहै। कनक रूप आकाश ॥ पचन पतंगा जोति में ! रज्जब रहै उजास॥१२॥ ॥ गृहस्थ उवाच ॥ कनक कामिनी येक गति। दोनों दुग्धन हार ॥ रज्जब तोडै रामसों। विगता कहा विचार ॥ १३ ॥ वैराग्य उवाच ॥ जो कामिनी कनकही तजै। सो क्यूं कसकन लेय ॥ रज्जब यहु वैराग्य बुद्धि। दोन्यूं चित्तन देय॥१४॥गृहस्थ उवाच॥ बहुत भांति करि देखिया। गृहीजु सेवक अंग॥रज्जब स्वामी विरह बुद्धि। यहु इनका परसंग ॥ १५ ॥ वैराग्य उवाच ॥ अविगति गति गोविंदकी। रज्जब लखी न जाय ॥ सेवक कों स्वामीकरै। स्वामी सेव समाय॥ १६ ॥ १० ॥

ग्रन्थ परा भेद।

प्रथम प्राण परम गुरु पावै। परम पुरुष का भाव उपावै ॥ परम भेद सो देय बताई। तब परै अंग अंगनिसुध पाई ॥ १॥ जन्म परागुरु घर शिख जावैं। घूंटी परादेय निज नामैं ॥ मनमें रोग सु उपजै नाहीं ! बालक उपज्या निजमत माहीं ॥ २ ॥ भाव भक्तिपरा भगवंतहि जानैं। भेद परापरवरतहि छानैं। भक्तिपरा भग-परा भगवंतहि जानैं। आगपरा ऐसी निधि पावै ॥३॥ सेवा परै सु सेवा वानहि भावै।

भाई। ब्रह्मांडपिंड तें अगम बताई। सेवक सेवा माहिं समावै। सो फिर योनी द्वार न आवै॥ ४॥ नाम परैं वहु नाम कहावै। जामें आपहि आप न पावै। तबतहां बस्तु रहै भरपूरी। ज्यों दिन आए रजनी दूरी॥ ५॥ परमधर्म कीये सो भाई। जा भीतर कामना नकाई॥परम पवित्रहु पुनि पुनि सोई। जामाहैं बांछा नहीं कोई। ॥ ६॥ परम ज्ञान जेहि गर्व न भावै। गहर गरीबी माहिं समावै परम विचार मुक्त व्है माया। परम पुरुष प्राणी तहि पाया॥७॥ ध्यानपरा जु निधानहिं धारै। सो प्राणी कबहूं नहीं हारै॥ मारुत बिना मसकती होई। भेदी भेद लहै यहु कोई॥८॥ तीर्थ परापरी सतसंगा। जिनमें अगम ज्ञानकी गंगा। संयम परा जु पंचों धोवै। मनका मैल युगनिका खोवै॥९॥ परमशूर इन्द्रिन सों झूझै। ज्ञान खड्ग धारा कूं बूझै। सतयहु ब्रह्म अग्नि में ज-रिये। मरण परा जो जीवत मरिये॥ १०॥ बावन अक्षर अक्षर सों परै। स्याही सुत उपजै अरु मरै। चतुर दशों के परैसु विद्या। परम बोध ताभीतर भिद्या॥ ११॥ देणें परै ब्रह्म दिल दीजै। लेणे परै बंदगी लीजै॥ देण लेण या ऊपर नाहीं। समझे समझि लेयँगे माहीं॥ १२॥जीवन परै जीवना सोई। आतमराम जु मिश्रत होई। मिलै बस्तु बलहोय अनंता। समझै समझ्या साधू संता॥ १३॥ राज परै सो राजहि भावै। माया त्याग सु ब्रह्म समावै। लाज परै राखी तेहि लाजा। जीवसीव मिलि सारे काजा॥ १४॥ ठाहर परै सो ठाहर साची। पिंड ब्रह्मांड परै लौं काची॥ वही स्थल सो प्राण समावै। सो फिर मिथ्या माहिं न आवै १५॥ दर्शन परैं सु दर्शन साचा। सतगुरु मुंहडे सुण्या सु बाचा। जो दीसै सो जाय बिलाई। ठांवी ठौर न सो ठहराई॥ ॥ १६॥ ठाकुर परै सु ठाकुर ईशा। जिन सिरजे चाकर चौबी-

सा । आदि नारायण वेदहुं गाया । स्याणहुं साधू सो ठहराया ॥ ॥ १७ ॥ तत्वौं परै तत्व सो सारा। ज्योत्यूं परै सो ज्योति अपारा। निर्गुणपरै सु निर्गुण रहिता । सूक्ष्म कूं सूक्ष्म नाहिं गहिता॥१८॥ बलहु परै सो बलबलवंता । वासम जोर नहीं कोई जंता । पलमें ब्रह्मांड भांनि सँवारे । ताके जोरहि वार न पारे ॥ १९ ॥ अंगहुं परै सु अंग बताए । गुरु दादू परसाद सु पाए । जनरज्जब यहु किया न खेदा । भूरिभाग्य जो पावै भेदा ॥ २० ॥ ११ ॥

॥ ग्रन्थ दोष दरीबै ॥

दोष अनंत चलै क्यूं जीव । सुनहु संत परसै क्यूं पीव ॥१ ॥ प्रथमही देह पापका मूल । दोष सकल डाली फलफूल ॥२॥ तैसे मैं निपजै क्यूं प्राण । सकल संत मिलि सुनहु बखान ॥ ३ ॥ बहुत भांति बहु ज्ञान अपार । तिनमें मिलै न सिरजनहार ॥४॥ ज्यों ज्यों करै तहीज्यूं मार । कैसी विधि व्हैगा सु उद्धार ॥ ५ ॥ जैरु गहै रहनीकी रेखा। तौ मोसम तुल्य और नाहिं पेखा ॥ ६ ॥ जैरु कछु करनी में आवै । तौ आपा करि तत्काल लुटावै ॥ ७ ॥ जैरु कदे तुरकी रहि जाये । तौ करै खून तिनके फरमाये ॥ ८ ॥ जैरु गहै जोगी की छाया । तौ चेटक नाटक बहुत बताया ॥९॥ जैरुगहै भगवां कीओटा । तौ आपा अधिक मान सिर पोटा॥१०॥ जैरु गहै ब्राह्मण की किरिया । तौ ब्रह्म छाडि भरम में परिया ॥११॥ जैरु पंथ जैनहुके जावहु । तौ धणी नाहिं चौबीसों ध्यावहु ॥ १२ ॥ जैरु गहै भक्तनके भेखा । तौ स्वांगहु पहरि साच नहिं पेखा ॥ १३॥ जैरु गहै षट्दर्शन संगा ॥ तौ साहिब नाहिं स्वांग सों रंगा ॥ १४ ॥ जैरु गहै खेचर गति ज्ञाना । तौ प्रगट सींग अरूप सु समाना ॥ १५ ॥ जै तीरथ करैं आदि दे जेते । तौ भ्रमि मूवा हरिसौं नहिं हेते ॥ १६ ॥ जैरु करै साधन के करमा ।

सौ संत छुडाय गये ये धर्मा ॥ १७ ॥ जैरु गहै घर बनसूं मेला । तौ अंतरगति हरिसौं खेळा ॥ १८ ॥ जै काशी करवत गरैहिमारै । तौ जगसों रुचि राजसंभारैं ॥ १९ ॥ जै ध्यान धरै हरिजीकी ओरा ॥ तौ मागिलेय कछु औरही ठौरा ॥२०॥ जै नामहि भजै भिस्तके भाई । तौ साहिब बिनशैंसमैं जाई ॥ २१ ॥ जैनामहि भजै मुक्ति की चाहे । तौ तासम शठ कहू कह काहि । यूं लैलीन अमर ह्वै जांव । तौ साहिब बिना बसाया गांव ॥ २२ ॥ जैरु करै कछु ऐसा सोच । तौ आगम निगम नाम बिन पोच ॥ २३ ॥ जैरु समाधि लगावै जाय । तौ खोटा भाव ब्रह्महुं आय॥ २४ ॥ दोष अनंत कहां लौं कहै । परि येते दोष सकल जग बहै ॥२५ येते दोष रहित भजि राम । जनरज्जब केवल निष्काम ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ १२ ॥

॥ अथ ग्रन्थ जैन जंजाल ॥

सुनहु संत यहु जैन जंजाल । कर्म कपटकी बांधी चाल ॥ नाम निरंजन सौं मन नाहिं । भूलि रहे चौबी सौं माहिं ॥ १ ॥ द्वादश दूने भूले आय । ज्यु आतम लाई अपने भाय । यहु मोटा कीना व्यभिचार । क्यूं छोडै भगवंत भरतार ॥ २ ॥ तांबा लोहा पलटहिं अंग । सदा सु सुनिये पारस संग ॥ पर सोने सोनाकदे न होय । तौ चहु छकि न सदगति कोय ॥ ३ ॥ जती कहावैं जडे जंजाल । देश देहुरे कीन्ही साल । तिन आरंभों वार न पार।परहि प्राण सिर पाप पहार ॥४॥ सत रजै सुधिहीने जाय । आगे पाथर बोलै नाहिं । मारहिं जीवहु आवतजात । तहां चढावै फूलरु पात ॥ ५ ॥ पाथर पूजहिं जती न जाय । गहीयौं को सो देयँ दृढाय । विषं समान गुरु हाथ न लेय । शिष्य सुतकूं सु हलाहल देय ॥

॥ ६ ॥ वैश्यवर्ण समझै नहिं बात। जैन जत्यों में मोटी घात। आप न पूजें तिनहुं पुजावैं। फीटे फंफ फलौदी आवैं ॥७॥ दया दृढावैं दुष्ट शरीर। मरतों देय न भोजन नीर॥ करैं पंचों सतगुरु कनजाय। कहैं पुण्य बणियें मिकि खांय ॥ ८॥ ज्यूं बिन पारिछै रहट स्वरूप। पाणी पडै सु भीतर कूप। ऐसा धर्म सु दीसै जैन। सुनहुँ सकल ये साचे वैन ॥ ९ ॥ नाक न कपती जीव विचार। रमैं देशान्तर कोस हजार॥ काचा पानी भींटैं नाहिं। चलते पैठें नदियों माहिं ॥ १० ॥ श्रावण मास शहरकी भीख। मारैं जीवहुँ भीखै भीख ॥ उनके हेतु उघाडैं हांडी। मरहिं भाफ जीव पूरी भांडी ॥ ११॥ पृथ्वी अप तेज नभ पवन। तिनके जीव सु टालै कवन। बाहर भीतर येही पांच। तिनमें सारे नाचही नाच॥१२॥ मैली मनसा मनसा भेष। लागहिंपापउपारहिकेश। मनमथ कर्मकरैं घट माहिं। चमदृष्टि देखैं सो नाहिं॥१३॥लेखै पाप सु उतरैनाहिं। चोरीचूक जडी जिवमाहिं। येकहि अघउतरैं सो दूरि। चौबीसौं सुमिरे भगभूर॥ १४॥ हाथ न कौडी हृदये कौडि। बैठे बनियों सों मन जोडि। बिन विश्वासी फेर न सार। भिक्षा मागहिं द्वै द्वै वार ॥ १५ ॥ अशन वसन सब आछे लेहिं। फासू कहि कहि फीटेदेहिं। फासू कहिये तेती बात। विष्टा वस्त्र बाहरजात ॥१६॥ रिखमूरख फासू करिलेहिं। घरके धणी.पाप सब देहिं। यहु पाखंड कह्यो समझाय। सो अघराशि व कौन घरजाय ॥ १७ ॥ अन्न पानी काचे सों भागै। सोई सांझ सवारे मागै। नीली भाजी दोष लगावैं। पाकी पत्रही माहिं घलावैं ॥१८॥निषध नारियल सिर सम होय। फोड्यां पीछै दोष न कोय। ऐसे कपट घणे घट माहिं। संसारी सो समझै नाहिं॥ १९ ॥ नौ विधि बाडि सु

बामा बोंडे। करी आस्वज्या सो सब तोंडे। बोलैं झूठ नाम बिन नीच। सिर ऊपर सूझी नहिं मीच॥ २०॥ आगि अनंत सुख सेकैं नाहिं। मूए सों दीजै ताही माहिं। सकल ब्रतकी फोडी पाल। जन रज्जब जग जैन जंजाल॥ २१॥

इति श्री स्वामी महर्षि श्री दादूरामजी के सुयोग्य शिष्य
श्री स्वामी रज्जबजी महाराज की वाणी समाप्तम्।



॥ ओ३म् ॥

अथ श्रीस्वामी महर्षि दादूरामजी के सुयोग्य शिष्य--

॥ श्री रज्जबजी के कवित्त ॥

टिप्पणी सहित लिख्यते ।

प्रथम गुरुदेव का अंग लिख्यते ।

मंगलाचरण ।

दादू नमो नमो निरंजनं । नमस्कार गुरु देवतः ॥
बंदनं सर्व साधवाः । प्रणामं पारंगतः॥

वैरागर मय विभो । अष्टकुल पारस धरिये । कल्पवृक्ष वनराय । फूलफल अमरस भरिये॥ सप्तसमुद्रहु सुधा । सोई सरितासु तलाबहु । पीवन कूं सु पियूँष । तिहिं मारग गुरु आवहु ॥ नगर पुरी बैकुण्ठ विधि । चिन्तामणि घरदरचिणै । रज्जब गुरुपूजा सजीव । नामहु सरभर ना गिणै ॥ १ ॥ गुरुको दीजै कहा । धर्म विधि जिनते पाई । भावभक्ति भलभीख । गिरा गोरख ज्यूंगाई॥ साच शीलसन्तोष दृष्टि दत्त दीरघ दीन्हा । जीवजड्या जगमाहिं।काटि कर्म सुक्ता कीन्हा ॥ सकल अंग साईं सहित। कूनमौज ऐसी करै । दादू दीनदयाल बिन । रज्जब रीता को भरै॥२॥गुरु हंस मधुरिखँ पुनः चम्बक ज्यूं सारा । तनमन काढे सोधि किरंचि कंचन ज्यूं पारा ॥ करै सु दूंई कर्म । नित्य न्यारे जिमि धोवहिं । रजलागी पटप्राण । रजक जिमि करमल खोवहिं॥गुरुवैद्य रोगहि हरै। सरजीवे

---

१ हीरा २ पृथ्वी ३ अष्टकुल पर्वत ४ अमृत ५ खुल्ला ६ उत्तम लक्षण ७ शहद की मक्खी ८ लोहा ९ कणिका १० बच्चों के अंग सुधारने वाली ११ रेत छानने वाले न्यारिये १२ धोबी १३ पाप १४ समुद्र में डुबकी लगाने वाले ।

लावैं सु धन । जन रज्जब बलबेल[1] सदा । भृंगी[2] ज्यों पलटैं सु तन ॥३॥ परमपद सुगुरुदेव । परम सो प्राण प्रमानं। परमपिता परप्रान। परम सो मित्र बखानं॥ परमही निधि दातार। परम भंडार लुटावै । परम सुख दैं सबन । परम सो भेद बतावै ॥ परम सिद्धि खानंन[3] क्षिता[4] परम सुक्त मुक्ती करै । परम सु रीती ठौर परै । गुरू रहमें[5] रज्जब भरै॥ ४ ॥ मणी पन्नंग[6] पत्री[7] विहंगँ । उडै गुटका सुखधारं । अतरै[8] तिरावै तुम्बि सु,नाव पेख पाषाण सुपारं॥ सिध सु बिचारि परपिण्ड[9] धारि,अचरजहै हैरानं । सुद्दरै[10] सु ताग नहिं अग्नि लाग,दिव देत सु पानं,गुरुदेव साथ दीजे सुनाथ,यों मागत काष्टमुँका ।रज्जब बधत गुरुज्ञान मति[11] कर बावन जिमि लष्टिकों[12]॥ ५ ॥ कूपें[13] छांह गज पंकें[14] मूसें[15] पारापी पंगुल । साधनें[16] समीर नरनीदँ, सधै सरकै नहिं अंगुल ॥ अनंगें[17] हनू मिरचन कपूर, चम्बक अस्व[18] नालें । अहमनें चक्रव्यूँह,जहाजन वायस चालै॥ गुरू वैद्य पारासुमन,गरुड भँवंगं[19] करगह्या । निर्धां सु पाज तोरे भंवर, रज्जब परपंखी रह्या ॥ ६ ॥ चन्दें[20] कुमोद अचाह। अलीकरें[21] कमल बुलावै । दीपक दलन पतंग, आप अहि चन्दन आवै ॥ सरितहु समुद्र निरास धूम आकाश न आशा । धीर उर ध्यान न धाम, होय घर बडा तमाशा ॥ सुकरें[22] मनोरथ कूं न सुख, पाठों पाठ न भावही । रज्जब गुरु विश्वास विधि, सिरज्या सिर सो आवही ॥ ७ ॥

१ बलिहारी २ भौंरा ३ खानि ४ पृथ्वी ५ रहस्य ६ सर्प ७ चिट्ठी पहुंचाने वाला कबूतर ८ न तैरने वाला ९ दूसरे के शरीर में प्रवेश करना, भोज राजा का दृष्टान्त भी है कि सवा के शरीर में प्रवेश किया था १० चुप ११ बुद्धि १२ लकडी, बावन भगवान का शरीर बढा तो साथ में दंड भी बढगया तैसेही गुरुसंग जिज्ञासु की बुद्धि बढती है १३ कूप की छाया कूपमेंही रहती है १४ कीचड से हाथी नहीं निकल सका १५ चूहा पारापीने से चल नहीं सक्ता १६ प्राणायाम १७ वक्तपर भावना १८ कामदेव हनुमानजी मेंही रहा १९ घोडा २० अभिमन्यु २१ चक्रव्यूह रचना २२ सर्प २३ इस कवित्त में यह दर्शाया है कि चन्द्रमा को कुमोदिनी की परवाह नहीं, कमलको भौंरे की, दीपकको पतंग की, ये तो स्वभाव सेही वहां जाते हैं तैसेही विश्वास से आपही प्राप्त होता है । २४ काम २५ काच (दर्पण)

भोगी योग बखानै, शील गणिकासु सु नावै। सूमै दृढावै पुण्य। कौन के हिरदै आवै॥ अंध अंध करगहैं। नारै रोगी ज्यु टटोरै। अतर तिरावै अतर। बूड सो औरहि बोरै॥ सकल अंगभंगै सु गुरु, किये कारजकहो कौन सिधि। आप मरै औरहि अमर। रज्जब करै सु कौन विधि॥ ८॥ वस्ती पूजै आश। शरण जिहिं धका न आवै। सो राजा प्रतिपाल। सकल परजा सुख पावै॥ वैद्य सु खोवे रोग। राग जिहिं दीपक जागै। सोई तीरमदाज चोट, निशाने लागै॥ खोजी खोजन चूकई, सो सराफ परखै खरा। आतमराम मिलावई। रज्जब सो गुरु सिरधरा॥ ९॥ ॥ इति ॥

अथ उपदेश का अंग।

श्रवण परीक्षित रूप। शब्द शुकदेव सु गावै। पवन भजन प्रहलाद। मनसा श्रीपद सु ध्यावैं॥ पूज अरच पृथु प्रेम। अंकुर अक्रूर सु बन्धन। हेतदास हनुमन्त। प्राणपारथं सु प्रीतिपन॥ बलि ज्यूं बलचलहारिकर। रज्जब रामहि दीजिये। इहिप्रकार नौधा भक्ति सु। आतम अंतर कीजिये॥ १॥ आतम अगम आकाश भवन तिहिं बसै विश्वम्भर। मन पवन शशि सूर, प्रीति परदक्षिन ऊपर। तारे तत्व तहांचलैं, सन्तहुइ सेवक सारे। इन्द्री आभय पञ्च। गगन में गुप्त सुगारे॥ खिवैं न मनसा बीज। सलिल श्रवै नहीं लेसै। जन रज्जब यूंथसन्त देखले सूक्ष्महि देसै॥ २॥ मतिमराल मधु-रिख। वारि वनराय सु छानै। देखि कबूतर काम, पंख पंत्री घर आनै॥ चन्दनजाय पन्नगं। स्वाति ऋतु सीप सु लोडै। अजौं न बैठे कूप। रूख रैनी" कर जोडै॥ आदम सन्यास परखै मिनेष

१ कामी २ वेश्या ३ कृपण ४ नाडी ५ असमर्थ ६ अर्जुन ७ समूह ८ चिंटी ९ सर्प १० चकरी ११ रात्रि १२ मनुष्य।

श्वान[1] व्रत दिन ठानिया । रज्जब मानुष देह धृक्कं[2] । जिहिं आतम-राम न जानियां॥३॥देहिं अमरफल डारि तजैं पारस चिन्तामणि कामधेनु तरुकल्पं[3] । काटि आवैं सु कहाचन[4]॥ गुरू सजीवनछाडि । पाय पोरसं सिर काटहिं । ज्ञान रसायन त्यागि। बीर बहुते वित्तं[5] बांटहिं ॥ चक्रही चक्कवै तैं गया छाप सलेमा खोइये । मिनखादेही[6] हरि विमुख । रज्जब हानि सु रोइये॥४॥उडै कपूरहि देख । सोन-कर[7] क्योंही आवे । सितियाँ परै समुद्र । सोध कैसी विधि पावै ॥ कदली[8] एकही बार।फूलफल होय सो होई।कागद ऊपर अंक।दूसरे किखैं न कोई ॥ सती शृंगार सु एकही । ओला[9] गलै न पाइये।त्यूं रज्जब मिनखा जनम,हरिभज ठौर सु लाइये॥५॥ शीतकोट संसार झूठ स्वपना रिध रागी । मृगजल जगत स्वरूप माया मरकटकी आगी ॥ शक्ति सलिलके झाग । अजाकुच कंठ न काजै । कहा सु विगंत[10] उजास । बाल[11] बालूगृहं[12] साजै ॥ अति अयान । कपि कूड मति, कृत्रिमकाष्ठ सु पूतली । रज्जब रैन भुजंग रज्जु, अहि अथार[13] आतम छली॥६॥अघ अंघ्रि[14] अवतार। एक सुर[15] इन्द्रि हारै। पुनि गोते बिन ज्ञान,जीवजल जोनि सु डारै॥ करम किरमि कुलगात, लात सबकी सिर लागहिं । विपत विहंग विहार, देख मानिष उड भागहिं॥पशुश्वान परवश सदा । विविध[16] विघ्न कासूं कहैं । रज्जब जोख्यूं जाय, जग जे मिनख[17] देह उनमन रहैं ॥ ७ ॥

अंग २ कवित्त १६ ।

मिलाप माहात्म्य का अंग ।

आज दिवस धन्य उदितं[18] । आजदर वै जगदीशं । आज दरिद्र

१ कुत्ता २ धिक्कार ३ कल्पवृक्ष ४ सोने का पूतला ५ द्रव्य ६ नरशरीर ७ मिश्री ८ केला ९ जल १० जैंगना-अर्थात् आज्ञा जिसे खद्योत भी कहते हैं ११ बालक १२ रेतका घर १३ अहि अथार छातीपर हाथ आ जाने को कहते हैं। १४ वृक्ष १५ तीन १६ अनेक प्रकार के कष्ट १७ मनुष्य १८ उगना ।

दुःखदूर। आज दीरघ दत दीशं॥आज भावकर भक्ति।आज पुनि प्रेम प्रकाशं। आज अगम सब सुगम।आज रस राम विलासं। आज काज सारे सरहिं। आतम आंख्यूं पेखिया। जन रज्जब साफल्य जन्म।दरश साधु सो देखिया॥१॥आज अगम आनन्द। आज उर पूरी आँशं॥आज सकल संतोष। आज विचँ ब्रह्म विलासं॥ आजहु परम पुनीत।आज आतम मधि एकं। आज गुप्त वित्त प्रकँट। आज अंकूर अनेकं॥ आज नीच ऊंचे निरखि। लाभ जन्म फल लेखिया। जन रज्जब साधु दरश। दुःख भंजन सुख पेखिया॥ २॥ अंग ३ कवित्त १८

साधुका अंग।

पारस पलटै लोह। बनी संगति ज्यूं बाँवन॥ वाँरि वारुंणी विविध।पैठि गंगामधि पावन॥चम्बक हलचल लोह।आँख आदिंत्य संग खोलहिं। रोगी होय निरोग। औषधी मुखमधि मेलहिं॥ साधुसंग जहाजजग। यथा स्वाँतिसीपहि पडी। रज्जब छांहहुमाँयु-सिर। त्यूं सतसंगतिकी घडी॥ १॥

अंग ४ कवित्त १९।

साधुपारखका अंग।

अग्नि चुगै चकोर। पेखवडवाँनल पानी॥ समुंद्र जीव जग आगि। बातयह नाहीं छानी॥ पारसँतिरहीं नीर। हेर हीरा नहीं

१ नेत्र २ सफल ३ हृदय ४ मनोरथ ५ मध्ये ६ धन ७ दीखना ८ बावना एक प्रकारका चन्दन होता है ९ मलीन जल १० दारु-(शराब) ११ सूर्य १२ जैसे १३ स्वातिबिन्दु १४ हुमायु एक प्रकारका पक्षी होताहै उसकी छाया जिस मनुष्यके उपर पडजाती है वह मनुष्य राजा हो जाताहै ऐसा सुननेमें आताहै एसेही सत्संगतिकी घडी भी अमूल्य है १५ अग्नि १६ अग्निकीट १७ पारद-यह पारस तीन प्रकारका होता है उत्तम मध्यम-कनिष्ट-उत्तम पारससे लोह स्पर्श करतेही सुवर्ण हो जाता ॰ फिर लोहा कदापि नहीं होताहै-मध्यम पारसके स्पर्शसे १०००० दश हजार वर्ष परियन्त सुवर्ण रहै फिर लोहा होजाताहै-कनिष्ट पारसके स्पर्शसे १००० एक हजार वर्ष पारियन्त सुवर्ण रहै फिर लोहा हो जाता है.

बूडै । विनपंखन हैरान । पंखजो गुट्का ऊडै ॥ घटा सजीवन ज्यूं उलटि।उदधि उनालै छोडिया ॥ जन रज्जब यों साधुगति । उलटा चलै सु ओलिया ॥ १ ॥

अंग ५ कवित्त २० ।

माया मध्य मुक्तिका अंग ।

कमल सीपजल जुदे । वसै अहिमाणि सुख माहीं । वडवानल पुनि बीज । बारिमाधि भींजै नाहीं ॥ दर्पणमें प्रतिबिंब।सु न्यस्त-वही घट न्यारी॥ लोंई रंगै न सूत । देखि अचरज है भारी ॥ अठार भार अग्नि रहित।सूर सलिल ले दे जुदा । यों रज्जब साधूसकति। मिले अमिल पाया सुदा ॥ १ ॥

अंग ६ कवित्त २१ ।

निर्पक्ष मध्यका अंग ।

काफिर ईमां नाहिं।जमी जाहिर जगजानैं । जलहू दीसै जुदा। पेख काके पख पानैं ॥ अग्नि उभय गुणरहित । करो कुछ ज्ञान विचारा ॥ मारुत मध्य शरीर । निरखि निर्पक्ष निजन्यारा॥रज्जब रूह आकाशरुख । तो हिन्द इलम पढिये वरक । इन पंचनसों पिंड यह । तो क्यूं कहिये हीन्दु तुरक ॥१॥ फक्कर जाति खुदाय।तुरक हिन्दू न कहावै । पारस तांबा लोह।नाम सोनामिलि पावै॥ निर्पक्षमोती होय । पेखपक्ष सीपहि न्यारा । मणि उपजे मुखसर्प।जहर जोडै सु मझारा ॥ कलम अंट कुलदोय । नित्य अलफ अतीत अलाहदा । बीजडाल रज्जब सुरज । होइ अंकुर फल दिहिं दिशि-विदा ॥ २ ॥

---

१ समुद्र २ सर्पमणि ३ दर्पणमें छाया ४ लोई एक प्रकारके ऊनीवस्त्रकी संज्ञा है इसके साथमें जो सूतके तागे (तन्तु) बुननेमें आए हुए हैं वह तन्तु ऊनको रंगते समय जिस रंगसे ऊनरंगी जाती है वह रंग सूतपर नहीं चढता है. यह भावार्थ है ५ सूर्य ६ जल ७ दो ८ वायु ९ शरीर.

अंग ७ कवित्त २३।

बिबेक समता का अंग।

अठार भार एक अग्नि।एक धूवाँ एक धरणी॥ एक सु मधुपय एक।वनीतं।बीवहु वरनी॥ इक वन्हिं बहुद्दीप। अनंत आभा इक पानी॥ कुलभूषण गलकनक।पात्र पुहमी नही छानी॥चतुर वर्ण षट् दर्शमधि। एकरूप एकहि मिलै। रज्जब यह समता सुरझि। समझि साधु सो मिलचलै॥ १॥

अंग ८ कवित्त २४।

भजनप्रतापका अंग।

सूर तेज तमँ तारँ।मोर चन्दन सु भुजंगा।सुनत तुपक की त्रास। वृक्ष सब तजैं विहंगा॥ शीतकोट ज्यूं भानु। जानि जागैं ज्यूं स्वप्ना। गरुड़द्दार विषदूरि। औषधी रोग सु अपना। सिंह हेर सुरँही गई।ओले आदित्य देखिकरि॥ रज्जब अघं ऐसेरमें।हिरदै आवत नाम हरि॥ १॥ मुख्य ब्रह्मा कुलकमल। मींडकी मांडपं जाया॥ वेद व्यास सु समुद्र। उभयमच्छी गर्भ आया॥सारंगी के पेट।साधु शृंगीऋषि होई॥हनू अंजनी मधिकुल सूं।कारण नहिं कोई॥वालमीकि वंबी जन्म। गरुड जती पंखी कुलै। रज्जब जाणी जाति सब।ब्रह्म भजन सारे भले॥ २॥ रंकानाम कबीर। सैन सदना कुलहीना॥ पदम, परस, रैदास,।धन्ना नापा सु कमीना॥ देगू दीप सु कौन।कौनकीता सु कनेरी॥विदर वानरावंश।जाति सब ही की हेरी॥ शुकदेस से गोतगति।नींच न को इनतैं करैं। रज्जब भजन प्रताप से। सकल वंश सिर पै धरै॥३॥ क्षार समुद्र

---

१ गउ २ अग्नि ३ पृथ्वी ४ अंधेरा ५ भागजाना ६ गरुडद्वार नाम मोरकी पांखोंमें से निकला हुआ ताम्बा, इस से विष दूर होता है इसको मोहरामी कहते हैं ७ गऊ ८ सूर्य्य ९ पाप १० मांडव्य ऋषि मेंडकीसे पैदा हुएथे.

कुलसुधा । सहत अंजेरीमधि जाया ॥ अहिमुख मणि उत्पन्न । पाट-किहिं ठाहर आया ॥ मंजारी कुरुभेद । पद्मिनी नींच घर आणै । सूर वीर कोई जात । अप्सरा वर वरियाणै ॥ सीसै सुत रूपाजण्यां कागज निपजैं टाट के । रज्जब हरिभजगोतगति । पलटै अंक ललाट के ॥ ४ ॥ पूजा पाज न आज । समुद्र सो शिला तिराई । दारै देव नहिं सेव । हरी शूली होय आई ॥ खेतहेत नहिं कोय । धनैं सब कोई जानैं । रामनाम निजठोर । करै मूर्ति पय पानै ॥ रज्जब मृत्तक धेनुजिय । जग पग लगै न गायके । छाप सु छींपैकी परी । हिरदै राणा रावके ॥ ५ ॥

अंग ९, कवित्त २५ ।

अथ पीव पहचानका अंग ।

आदि नारायण अमरवेद । भागवत सु बोलहि । विविध भांति वपुधार । डारजग नांहिन डोलहिं ॥ दो दो गुणसे रहित । भलै सिध साधकभाखहिं । पूरे पूरुष पहिचान । रतमत तासूं राखहीं ॥ साचे थापैं साच नित्य । रज्जब रीति विचारिये । परम पंथ प्राणी चलैं । रहते की रह धारिये ॥ १ ॥

अंग १० कवित्त ३० ।

अथ हित स्नेहका अंग ।

नेत्र कमल शशि सूर । दूरि हाजिर हितमाहीं । पाप पुण्य जिव करहीं । दिवस दश अन्तर नाहीं ॥ कहीं सूर कहीं सती । मरण विच विघ्न बिलाणै । नमो नमो निजनेह । जन्म जिहिं और ही जाणै ॥

१ मक्खी २ रेसम ३ पद्मिनी जाति की स्त्री। नींच कुलमें पैदा होती है ४ चांदीकी उत्पात्ति सीसे से है ५ काष्ठ की शूली—इसका वृत्तान्त यह है कि एक समय किसी चोर के भरोसे पर भक्तों को शूली पर चढाने लगे तो लोहे की शूली पर चढाया तो वह शूली मोम-हो गई और काठ की शूली हरी हो गई अर्थात् कौंपलें फूट आईं.

साधै सिधि सोंई सहित।हित चितमें आगे खरे । मूए जिलावै मंत्रहीं।रज्जब सोठाहे करे ॥ १ ॥

अंग ११ कबित्त ३१ ।   अथ पतिव्रतका अंग ।

अस्थल अनल आकाश । अवनि ऊनर मठ मांडही । ज्यूं जोगी मृगसींग । जनेउ विप्र न छांडहीं ॥ वायस वास न तजहीं । श्वान हित सदन सु सांई । गही सु त्यागै नाहिं।वीर वंधै जे बांई ॥ हारेल ज्यूं लकरी लगन।शशिचकोर आख्यूं गहै॥ रज्जब गुरु गोविन्द सूं।शिष्य ऐसे पतिव्रत रहै ॥१॥ मणि भुजंग जलमीन । प्रेम सारस पतिवरता । सारंग[1]सीप[2] सु स्वाति।नेम निशदिन मनधरता ॥ नरमादा नगनेह।किरण सूरज के संगा । सती कन्त के साथ।भानि तन करै सुभंगा ॥ तरवर छाया शशि कमल।व्रत सु ऐसा वानिये । गुरुगोविन्द सुं इंहि जुगत । रज्जब पविव्रत ठानिये ॥ २ ॥ आदित्य संग उजास । सुधा शशिहर[3] अनुरागै[4]॥ वाई बादर[5] बूंद।बीजरी शून्य[6] सु लागै॥ सरितँ[7] हु समुद्र सनेह । वनी[8] वसुधा[9]के संगा ॥ लघुमात्रा की लगन । अजब अक्षर के संगा ॥ शक्र[10] उदय संजोग मधि । धनुं अरु घटा सु देखिये ॥ जन रज्जब यूं रामसूं । सोई पतिव्रत लेखिये ॥ ३ ॥

अंग १२ कवित्त ३४ ।

अथ सर्वंगी पतिव्रतका अंग ।

सूर[11] सैल[12] दिशि एक । दृष्टि सवही दिश देखै ॥ कायथ कथा अनेक । लगन चूकै नहीं लेखै ॥ चक्र[13]चाल चोगरदँ[14] । जाय सूधां[15] नीसानैं[16] ॥ विगत विघूले फेर । गमन गगनहि दिश ठानै ॥

१ पपीहा २ हीरा हीरी विना रहताही नहीं. ३ चन्द्रमा ४ प्रीति करताहै ५ बादल ६ आकाश ७ सरिता, नदी ८ जंगल ९ पृथ्वी १० इन्द्र धनुष जो कई रंग का होता है वर्षाके अन्तमें दृष्टिगोचर होता है. ११ सूर्य्य १२ चाल १३ चाक १४ चो तरफ १५ सीधा १६ निशान पर.

अंकुर बीज बूंटी व्यथा । पत्र रोमरम ठोर लिये । जन रज्जब यों रामसूं । सर्वंगी पतिव्रत किये ॥ १ ॥

अंग १३ कवित्त ३५ ।

अथ आज्ञाकारीका अंग ।

नित्यनेम पतिव्रत्त । कृत्यं[2] उत्तमं[3] तिन कीन्हें । हित सनेह रस रंग । इष्टआज्ञां[4] पग दीन्हें ॥ अदब मेंड मरजाद । बंदगी सेव सुधारी । बुद्धिं[5] विवेकं[6] मतिं[7] सार्चं[8] । बडोंकी बात विचारी ॥ लेखै चूकन चोट कोई । धर्म धारते सब भले ॥ जन रज्जब तिन सकल[9] किए । गुरु आयसुं[10] सिरधरि चले ॥ १ ॥

अंग १४ कवित्त ३६ ।

अथ आज्ञा[11]भंगका अंग ।

ईश्वर आज्ञा भंग । राशि रत्नों विष पाया । त्यूंही रावण सीत । लीक लोपै सु मराया ॥ हजरत हुकुम सु हन्त । करी काकामैं कैसी ॥ हुठ मूसेका हेर । सहतको तूरसुतैसी ॥ पाषाण पिण्ड गोदावरी । अजा जील गहि रानिया ॥ चक्कर चकवै चोट तिंहि । रज्जब शब्द न मानिया ॥ १ ॥ १ ॥

अंग १५ कवित्त ३७ ।

अथ सारग्राहीका अंग ।

हंसगहै निजक्षीर । वनी मधुरिख मधु काढहिं । अलि ज्यूं परमल[12] लीन । पहुप पंखरिन डाढहिं॥चम्बक चुणले सार । पुनः पारा

---

१ शुभकार्य्य अनेक प्रकार के करतारहे किन्तु पतिव्रत एकही का रक्खे अर्थात् हर वक्त ईश्वर को याद करता रहे. २ कार्य्य ३ अच्छे ४ अपने उपास्य देवका हुकुम ५ स्मर्ण शक्ति ६ ज्ञान ७ विचार ८ सत्य९तमाम १० आज्ञा,११ईश्वरकी आज्ञा न मानने से समुद्र मथन कर जब१४रतन निकाले तो फिर शिव को जहर ही पीना पडा तैसेही लक्ष्मणजीकी निकाली हुई कार को लोपने से सीता और रावण को मरना ही पडा तथा दुःख उठाना पडा इत्यादि १२ सुगन्ध.

ज्यूं कञ्चन । त्यूं तत्ववेता तत्वगहै।पिण्डपर हरगुन पंचन ॥ छाज नाज कण काढिले।गऊदूध ज्यूं वच्छमुख। त्यूं रज्जब गुणकों गहै। आपा पर उपजै सु सुख ॥ १ ॥

अंग १६ कवित्त ३८ ।

अथ असारग्राहीका अंग ।

चलणी कोल्हू ईख । कनहि तज कूकस राखैं । मीन मैलसुख गहै।पाय परमलको नाखैं ॥ धोवण धांवण लेहि।जैन तज निर्मल नीरा । विरचै वावन बास । निरखि सो नर्क सु कीरा ॥ चींचड त्याग सु दूध धेनु।मींडक माता कीचही । रज्जब विधि बूंटी व्यथा। यूं अवगुण लें नीचही ॥ १ ॥

अंग १७ कबित्त ३९ ।

अथ पारखका अंग ।

गाहणतें[3] वैद्य वैदंग।पाणिं[4] निरत सिर हारं । सूंघत धन धमगर धातुखबर।अहनिशि खनि बारं ॥ श्वान व्रत अजकूप । पन्नग परमल गति जानै । निशि वायस दिन स्याल।बोलें सोही विघ्न वखानै ॥ सहदेवनें समझी ग्वाल गम । सुत संकट माता थणहु । रज्जब सीझन सूणलगि । यह आगम जाणें घणहू ॥ १ ॥ रैन दिवस नहीं दुरहिं । दुरै नहीं चन्द्र प्रकाशा । दामिनि दम क न दुरहिं । गोप्य नहिं उरकी आशा॥छिपै न भुव भूचाल।ग्रहण गति सबकोई जानै । इन्द्रगाज वडनोल । बोल छूटै नही छानै ॥ जगजाणै जामण मरण । उगै बीज सु वोइये । जन रज्जब मन

१ मैल २ ग्रहण ३ वैद्यसे मुराद ज्योतिषी है. ४ जमीनमें जलवताने वाला सूंघा ५ सहदेव ज्योतिती वरसाकी गति को न जान सके कहाकि आज वरसा नहीं वरसेगी और ग्वालन ने मूंज की रस्सी को स्वयंही भीजी जान कर कहाकि वरसा आजही वरसेगी सोई हुआ, इसही भांति जब माताके स्तनोंमें दरद हो जान जावे कि उसके पुत्र में कहीं संकट है ६ तोप.

माहिंली । कहो कौन विधि गोइये ॥ २ ॥ भोडल दीपन दुराहिं । पुनः पाननके खाए । घास घुसेरी आग। छिपै नहीं सूंधा[1] छाए ॥ जलतर शीशी माहिं। पान पातर सु लखावै। असैल[2] न छाना होय । निरखि नखसिख जब आवै ॥ अंक फिटकडी उघडहिं। जन रज्जब जलमें यथा । तैंसी विध मन माहिली। वाहिर दीसै है तथा ॥ ३ ॥ घर उरमें रिध रहत । प्रगट मस्तक मधि दीपही । साच न दूरही दिव्य। आप अग्नि नहिं छिपही॥ होय ऊत घर पूत। यथा जीते सु जुवारी । कहो क्यों गोई जाय। महा मंगल मनभारी ॥ सिध संकट आगै खडी। शक्ति सिध सोई आठकी । रज्जब छिपैन मांहिली जैसे रसना पाठकी ॥ ४ ॥

अंग १८ कवित्त ४३ ।

अथ शब्दका अंग ।

शब्द होय सब सृष्टि । शब्द सबही घट माहीं । शब्दरूप गुरु देव। सुरति शिष वाहर नाहीं ॥ शब्दहु वेद कुरान। शब्दसें सबै पढावै । शिव शक्ती को भेद । शब्दशब्दों सु बतावै॥ प्रकट शब्द संजोग लगि। पुनि वियोग गुप्ता रहै । रज्जब कहिए कौनसूं। शब्द भेद विरला लहै ॥ १ ॥ शब्दोंमें निधि सकल। गुरू गोविन्द वता वहीं । शब्दैं सन्तों सबकहा । शब्द सोध सब पावहीं ॥ उरझे सुरझैं शब्द। शब्द सब संशय भागहीं । शब्दों माया तजहिं। शब्द सुन ब्रह्म सु लागहीं ॥ आदि अन्त मधि मांडमें। सबकारज शब्दौं सरै । रज्जब साधु शब्द सुनि । धन्य श्रोता श्रवणों धरै ॥२॥ पूणी विना न सूत। तार मकरीलग होई । बादल विन वारिबूंद । दरसैज्यु नहीं कोई॥ सोवत स्वप्नही होय। जागि विनसै सोई वाखर[3] । खरी हरी घटजाय । निरखि निकसै नहीं आखर ॥ तथा शब्द संयोग

---

१ एक सुगन्धित वस्तु का नाम है जो एक जाति की विलाई के फोडे का पीप है २ फुलैन कहीं छिप नहीं सक्ता ३ मिथ्या.

लग।उदय अस्त वायक कहीं ॥ रज्जब फेर न सारही।सत्य सत्य मानो सही ॥ ३ ॥ गातबात निजज्ञान। शीस तिहिं समझ सुजानी। नयनों निरत स्वरूप । सुरत श्रवणों असथानी ॥ नास कपण सुखमत्त। कण्ठ भाषा सुच्छतीसै । कर विवेक उर रुचि। जीव जगदीश्वर दीसै ॥ रज्जब पग वावन तिसहि।रसन रसातल डोलहि।सूता अचेत आसन सु चुप।चल्या सु जब उठ बोलहि ॥ ॥ ४ ॥ शब्दामिलैं संसार। शब्द सुन पक्ष समावै । शब्दधरै सब स्वांग।शब्द अठ सठकों ध्यावै ॥ शब्द करै षट्कर्म।शब्द सब देव अराधै[1]। शब्द संगकुल कष्ट।शब्द साधन सब साधै॥ शब्द मांहि सारे भरम।शब्द माहि संकट परै। जन रज्जब निज शब्दका।साधु शोध विरलां[2] करै ॥ ५ ॥

अंग १९ कवित्त ४८ ।

अथ भयभीत भयानकका अंग ।

करै वरतं[3] पर वाट। निरख नटणी भय मेला। वायस बैठि जहाज।रहत्य। उडवेका खेला ॥ उभय सिंह विच अजा।आहारसु पोख न पावही। नमोनमो डररूप।कीट भृंगी होइ आवही ॥ चोर जार भयराज नित्य।सिर न उकासै सो कहीं।रज्जब सांई सोचमधि। गुण इन्द्रि एसे रही ॥ १ ॥

अंग २० कवित्त ४९ ।

अथ लघुताका अंग ।

लघु अंगुरी निजछाँप। पेख पंचनमें पावहिं ॥ त्यूंही शशिहर शेख। देख सवही सिरनावहिं ॥ अर्भक लीजै गोद। मातपितु सुखी सु राखहिं ॥ कलीसु कैरी संग। फूलफल तरवर नाखहिं ॥

१ पूजन करै, चिन्तन करै २ कोई एक ३ लाव तथा चमडेके चडसको कुएमें से निकालने वाली जो मोटी रस्सी होती है उसपर नटनी चढा करती है ४ अंगूठी ५ बालक.

लघु मूर्ति नित्य कंठसिर । दीर्घ स्वरूप दीसहु जुदा ॥ बावन तरु मेवा मधुर । जन रज्जब पाया मुदा ॥ २ ॥

अंग २१ कवित्त ५० ।

अथ कसौटीका अंग ।

मेंहदी चन्दन चाह । समझ सुरमा कर केशर ॥ कंचन पैंनी कपास । कसै काष्ठ कंघी सिर ॥ मसिं कागज तिल ईख । तीरपारै पचि पेखं । असुकस उज्जल केश । काचकस चश्मा देखं ॥ लोह तार अन्न कणकनक । सकल कसौटी कर भले ॥ यों रज्जव रामहि मिले । जो गुरुमुख कसणी हुइ चले ॥ १ ॥ कर कुंभार कस खाय । पुहमी पात्र होइ आई॥लेखनी शीश कटाय।कानकर ठोर सु पाई॥ जंत्रें ही चढै सुतार । निकसि जंतीमें सारे ॥ जिह्वा बाज कुरंग।पाठ पीडासह प्यारे॥लौंल कंठ वेधे वंधैं । सतजुग अग्नि सु सोलहों ॥ रज्जव निपजहिं शिष्यगुरु । कठिन कसौटी होइ जहां ॥ २ ॥

अंग २२ कवित्त ५२ ।

अथ जीवतमृतकका अंग ।

मारया पारा सार । रोग रोगीका टारै । बैठै मृतक जंहाज । अतँर आतम होइ पारै ॥ जीवतडूवै जलहि । मुवां उपर तिर आवै ॥ मृतक महातम देख । कंघ कपडा पिंड पावैं ॥ स्वर्ग न देखै मीर्ष विन । आदि शब्द एसैं कहैं ॥ रजंब रमिये रैन ज्यूं । सांई सूर्य तो लहैं ॥ १ ॥

---

१ पनडी २ स्याही ३ सितार ४ माणिक ५ सुवर्णको अग्निमें बारह बार तपाकर शुद्ध किया जाता है इसे पन्नामी कहतेहैं यह पुराणी चाल है सुवर्ण शुद्धिकी ६ सूके काठका बना हुआ जहाज ७ नहीं तैरनेव ला ८ मरेविना। ९ अज्ञानरूपी रात्रिके दूर होनेसे तथा मरनेसे सूर्यरूपी परम स्माको प्राप्त होता है.

अंग २३॥ कवित्त ५३ ।

अथ विश्वासका अंग ।

अंडे कूंजी[1] अनल । पोखै[2] कैसी विधि पावहिं ॥ अश्मै[3] कीट अहिकँरंड[4] । अशँन[5] किहिं ठाहर आवहिं ॥ पहले स्तँन[6] होय क्षीरँ[7] । पुनः पीछे होय बाळॉ[8] ॥ अजगँर[9] ठोर आहाँरँ[10] । देवे ऐसे प्रति पाळा ॥ धँरँ[11] अम्बँर[12] पहनावही । भार अठारै आभा अनन्त ॥ मूरति मुरदा पँट[13] लहै । रज्जब गहि विश्वास मत ॥ १ ॥

अंग २४ कवित्त ५४ ।

अथ तृष्णाका अंग ।

तृष्णानँग[14] जमभूख । अवधि मुद्रा नहीं नेरी ॥ ज्वाला मुखी सु आग । हटत नहीं अशन सु हेरी ॥ सरितौं[15] समुद्र समावहीं । सलिलैं[16] वंबीस्थल जाहीं ॥ वडवाँनल[17] रुचिनीर । अरुचि कहौं दीसै नाहीं ॥ तिस क्षुधा स्वपने बढी । सो सूतां नहिं भागही ॥ रज्जब होय संतोष सुख । हरि सुमिरण जिव जागही ॥ १ ॥ पेट काज तजलाज । देह हूनँर[18] सब साजै ॥ षद्र दर्शन पुनि पाठ । नृत्यैं[19] नर राग निवाजै॥नाज काज भूपतिहिनरहु । नरशीस निवावहिं । भुख भोजपति शाह । लेण धरणीकों ध्यावहिं ॥ सुतैं[20] पुत्री सिर देहिं सब । अन्नकाज अन आँन[21] करै । रज्जब ऊंडौं[22] उदरँ[23] अति[24] । करणँहार[25] विन को भरै ॥२॥

---

१ कुरज एक प्रकारका पक्षी होता है अकसर इनका समूह उडता हुआ देखने में आता है. २ पोषण ३ पथ्थरका कीडा ४ सर्पेकी छाबडी ५ भोजन ६ कुच ७ दूध ८ वछडा ९ एक जातिका सर्प है जो बहुत ही मोटा होता है १० भोजन ११ पृथ्वी १२ कपडा १३ वस्त्र १४ एक प्रकारकी जातिका हीरा १५ नदियां १६ जल १७ अग्नि १८ हुक्म १९ नाचना २० पुत्र २१ अन्य अन्य कार्य २२ गंभीर २३ पेट २४ जियादा २५ ईश्वर.

अंग २५ कवित्त ५६।

अथ कामका अंग।

काम राम हल चल्ल[1]। काम रावण घर खोये॥ अनंग जु ईश्वर ठगे। बीज ब्रह्मा[2] जु विगोये॥ काम किचर कीचक किए। इन्द्र गोतम घर आए॥ मेण मच्छंदर मोड। साठ सुत नारद जाए॥ भरतरी भरम्या दूब भख। कहो सुन्नत[3] कैसे चली॥ रज्जब मारे धोम्यँ ऋषि[4]। अतिगति मदनसु महावली॥ १॥

अंग २६ कवित्त ५७।

अथ रहतका अंग।

रहत गुरु गोरख अनंग। जिन अजर सु जारया॥ लक्ष्मण लांगसु दृढ। रहत वलि रावणी[5] मारया॥ शुक्रयती आकाश। असुर सारे सिर राखहिं॥ पतिरथ गरुड विशेष। वेद च्यारुं मुख भाखहिं॥ कतर श्याम मारै मदन। वरैविहोंडे बापका॥ रहत हेत मनुमंत हृद। रज्जब मोल न मापका॥ १॥ ईख मिठाई रहत। रहत पानौं मधि लाली॥ जतमत नैंनों ज्योति। जौन

---

१ महादेवजी मोहिनी रूप देखकर पीछे भगे २ ब्रह्माजी अपनी पुत्री पर कामातुर होकर पीछे भगे यह कथा भागवत में है ३ मुसलमानोंमें सुन्नत होना कबसे शुरु हुआ हजरत मुहम्मद साहिबके दो बीबीथी एक समय हजरत मुहम्मद एक बीबीपर नाराज हुए उसे दुहाग दिया वह किसी दूसरे स्थान में रहने लगी उसके गर्भसे एक प्रतापी बालक पैदा हुआ तो उसकी तारीफ हुई यह सुनकर मुहम्मद साहिब वहांपर उस बीवी के पास गए कामातुर होनेपर बीबी से सम्बन्ध किया तो दूसरी बीबी जो मुहम्मद से दण्ड भोगने का इकरार करा चुकीथी कि तुम दूसरी बीबीसे बात चीत करोगे तो मैं तुमको दण्डदूंगी उसे मालूम हुआ कि मुहम्मद साहिब दूसरी बीबी से बातचीत कर आए मुहम्मद से बीबी ने कहाकि दण्ड भोगिए—दण्ड यह है कि मुखसे मुख मिला है इसलिए तो बीच की मूंछें कटवा डालो और नीचेका अंग मिला है इसलिए सुन्नत कराडालो तब से सुन्नत चली ४ पाराशर ऋषिने झीवरकी कन्या से संग किया ५ मेघनाद—इस कवितमें रहत शब्द जो लिखा है अर्थात् काम देवसे कोन कोन बचे—गोरखनाथजी, लक्ष्मणजी हनुमानजी इत्यादि.

इन्द्रि वह चाली ॥ नगपाणी नर मोलावंजतो[1] जाय सुगंधी ॥ बावन वेधक वास । अवसि जिन इन्द्रि वंधी ॥ रज्जब रीझै रहत पर । मोर पंख मस्तक चढै ॥ निरख मैंन विनु घेनु । नाँव कन कनहि कढै ॥ २ ॥

अंग २७ कवित्त ५९ ।

अथ स्वांग साधुनिर्णयका अंग ।

मनुष्य भये पाषाण । सिद्धिसो गोरख पाई ॥ भईभर्तृ माय । हरी शूली होइ आई ॥ लहा जलंध्री जोग । पुहमी माहि प्रति पाली ॥ अजैपालके चक्र । कोंन करनी जगचाली ॥ उलटे खेडे धोंधली[2] । चोरंगी[3] कार्य सरहिं ॥ जन रज्जब यह वस्तु वल । दर्श दिशा बहुते कराहिं ॥ १ ॥ जलजोख्यूं नहीं साच । पुहमी प्रहला दन पीरा ॥ गिरिवर गिरतन मीच । विविध संकट नहिं नीरा ॥ गरुडद्वार[4] सुखनाम । जहर विष[5] जोर न हुआ ॥ कंचन विविध प्रहलाद । अग्नि घूंघाचि तन भूआ ॥ खड्ग खंभ माहीं निकासि । वैरी वाप सु मारिये ॥ रज्जब कहि दर्शन दिशा । बालक लघु सु उवारिये ॥ २ ॥ मूर्ति दूध पिलाया । नाँमजन गाय जिवाई ॥ देवल फेरयो द्वार । पुनःघर छान छवाई ॥ अन्तर्यामी लख्या । श्वांनमाधि सांई जाना ॥ सुगलरूप होइ मिल्या । सोइ छीपै पहिचाना ॥ अतुल राख रंकार । निधि सरिता सेज मंगाइये॥ रज्जब कहु दर्शन दिशा । ग्यारंस विप्र जिमाइये॥ ३ ॥ वालद द्वार कबीर । आवती सबजग जानी ॥ तारकंद रैदास । जनेऊ जगत न छानी ॥ पीछै चंदवा बुझै । भवंन[11] खाँडै पतिराखी ॥

१ सुगंधित वस्तुका नाम है २ धोंधलीनाथ, इतना नाम है ३ चोरंगी पूर्णमल्लका नाम है ४ विषदूर करनेका मोहरा ५ संखिया ६ छपविपादि ७ नामदेवजी भक्त ८ देवता ९ कुत्ता १० एकादशी ११ भवनसिंह नाम है किसीका इनकी कथा भक्तमालमें लिखी है. काठकाखांडा लोहेका बन गया था.

विनहिं बीज होइ खेत । धनाकै साधु जु साखी ॥ नाई उवरयो। नामवल । सत्य न दिव्य देही जरै ॥ रज्जब सोझै साचमें । स्वांग झूठ तबअब करै ॥ ४ ॥ विलंद खानकी वेर । दुनीदादू दोइ देखै ॥ साहपुराके समय । उभयं ठाहर पुनि पेखै ॥ चीरी पलटे अंक । जहांज जल निनिसे काढे ॥ सांभर खाद्र हस्ती रहे । मह मत्त जुठाढे ॥ कूंस ल्याय काजी मुआ । अरुउर मायल घरजरे ॥ रज्जब साचे साधुके । विनवाने कार्य सरे ॥ ५ ॥

अंग २८ कवित्त ६४ ।

अथ स्वांगसाच निर्णयका अंग ।

व्योम वायु शशि सूर । सलिल धरणी मतलीया । षट्दर्शन यह आदि । इनहु कोइ वरनैं न किया ॥ शेष वेशैं कहो कोन । कोनशुकदेव जु वाना ॥ दत्तदेह नहीं दर्श । गुरुचोवीस न छाना ॥ सकल सुरन गुरु वृहस्पति । शुक्रयती सादै सदा ॥ रज्जब नरनग छाप विन । पेखि प्राण पायासुदा ॥ १ ॥ चन्दन सर्प जु जाहिं । पंख पत्री घर आनै ॥ मधुरिख मधुले शोधि । हंस पय पानी छानै ॥ ज्यों ज्योतिषी जिय पैठि । ग्रहण गति गिरा जियाई ॥ जानैं जौहरी अधिक । रत्नकी पारख पाई ॥ नट आशन देखे अधर । शिशु सुरही कूं थण लिया ॥ रज्जब साचे साधुयों । कहो किस ने वाना किया ॥ २ ॥ विनसे नांहमर सूर पहर वगतर पुनि अंगा ॥ तज श्रृंगार जु सती । करैनोसत तन

१ दो जगह पर २ चिट्ठीके अक्षर ३ समुद्रसे ४ वगैर किसी सांगके ५ पट् दर्शन का यह महत्व है--दोहा--व्योम सन्यासी वायु शेखा शशिसे वडे जान। सूर्य जंगम वोधजल-वौध अठारा अंगम, चोवीस जैन वखान, दश संन्यासी वारा जोगी चे दव शेख प्रमानाद् हवा जोगी धरणी पहिचान--इनसे फिर ९६ छिनवे पाखंड प्रकट हुए-- वह यह हैं. अठारा ७ चन्द्रमा ८ सूर्य ९ पानी १० धरती ११ सांग १२ हूेश वगैरा. १३ सबका १४ वगत८.

भंगा ॥ मांडे मेंगल मल्ल सोई । साधू बल होई ॥ खड्ग सुयाने वहे । निकसका फेर न कोई ॥ रहित सहित कण्ठले सुत । पूत पियारे बापकों ॥ रज्जब सोना[3] साधु शुद्ध । छाडै नाहीं छापकों ॥ ॥ ३ ॥ शादी सहित शृंगार । नारिनर मिल फल पावहिं ॥ नालहिं रंगन रंग । जन्त्र चढतानन आवहिं ॥ होय ऊत घर पूत । दोउ दुःख संधहु संधी ॥ माला वन्दर वाल । वार वन्धी अनबन्धी ॥ घटा श्वेत वहुवर्णकी । वरषत बादल सबभले ॥ रज्जब सीझै साचमें । विन दर्शन दर्शन चले ॥ ४ ॥ गणिका सजै शृंगार । वेश बहु करहि भवैये[4] ॥ चित्रे हस्ती बैल । नाहीं साधु पद पइये ॥ बानैं रासभदेव । पीर कहिये लीलहरिया ॥ वह कुंभार घरवैहै । वाहीसु काष्ठ कृत करिया ॥ मोहर छाप पीतल धरी । कली लोहपर कीजिये ॥ रज्जब धारे रूपबहु । तिन्ह समान नहीं लीजिये ॥ ५ ॥ एकदिगंवर फिरहिं । एक पहरै सु वाघंबर ॥ एकहु पट पटकूल । एकदीसै श्वेताम्बर ॥ एक सु भगवां करहिं । एकहु काथियों[6] माहिं । एकमैलेहु मधि एक पहरै पट नीला ॥ एक सु काथियों[6] माहिं । एकमैलेहु मधि कीला ॥ एककंथा मुंडित जटा । एक सु खुशी खुशावहीं ॥ रज्जब कीये बहु वरण । आतमराम न पावहीं ॥ ६ ॥

अंग २९ कवित्त ७० ।

अथ अज्ञानकसौटीका अंग ।

एक सु भूखा मरहिं । एक खायके होइ भारी ॥ एकसु वजरी भखहिं । एकहोइ पवनआहारी ॥ एकसु नीली[7] तजहिं । एक कन्दमूल सु खाहीं ॥ एक सु पीवैं दूध । एक मनमें औं माहीं ॥ एकरूखा एक तैलकोहि । सुमरण सुरति न ठाहरै ॥ मनवृत्ति

१ रामरज २ रहित सहित से मतलब यह है कि ग्रहण हो या न हो ३ सुवर्ण. ४ वेहरू पिया—(सांगवनाने वाला) ५ रेशमी कपडा ६ काला ७ शाकफल फूलादि.

जग ठगनको । रज्जब बहु पाखंड करै॥ १ ॥ पंच अग्नि तन सहै । शीत वर्षा जलमाहीं ॥ उभय द्वादश वर्ष । विशेषसु बैठें नाहीं ॥ ऊंधै घोटै धूम । नग्न होइ देह जरावहिं ॥ अठसठ तीर्थ करहिं । देह दर्शनार्थ आवहिं ॥ अज्ञान कष्ट आतम परी । गुफासु वनकों ध्याइये ॥ जन रज्जब निज नामबिन । निरालंब नहीं पाइये ॥२॥ हेर हिमालय गलहिं । होइ पुन झंपा[१] पाती॥शंकर सेव सु करहिं । शीश काटै निज काती ॥ काशी करवत लेहिं । कठिनकूंडी[२] सु करावहिं ॥ कांष्ठ भखहिं भयभीत। देख देही सु जरावहिं ॥ सकल कष्ट हदमींच लग।आदम[४] सो सब आदरै ॥ रज्जब राम न पाइये । बिन अक्षर एकै ररै ॥ ३ ॥

अंग ३० कवित्त ७२ ।

अथ अज्ञान दानका अंग ।

कनक तुला चढदान । दान पुनि गुप्ता दीजै ॥ हयगय पटपर वाह । विविध वेदो गति कीजै ॥ कोटि गऊ कुरुक्षेत्र । देहिं दिनकर पर्व देखे ॥ अठसठ तीर्थनहाय । दान जगकरै अलेखै ॥ भोजन भूमि भंडार दें । सुत नारी उदकै धरम ॥ सुमरण बिन सीझैंन जीव । जन रज्जब पाया मरम ॥ १ ॥ देहिं रसायन दान । दान पुनि पारस कीजै ॥ पोरस करै प्रवाह । द्रुमगिरि कंचन दीजै ॥ सप्तधातु कीखानि । देहिं वैरागर संगा ॥ तोयानिधि सब त्याग । जहां निपजैं बहु नंगा[५] ॥ अवनि उदक अवतार ।विधि । अब विन दीन्हीं क्या रही ॥ कहै रज्जब हरिनाम बिन । जीव न सीझै सो सही ॥ २ ॥ करामाति देहिं दान । सिद्धि घर सिद्धि सु दीजै॥नवनिधि का परवाह।कहीं ठाहर यों कीजै॥कामधेनुका पुण्य। दत्त दीर्घ कर देखे ॥ चिन्ता मणि मन मंत्रादिक । यहुपुनि कीजै

१ पहाडके ऊपरसे गिरके मरना २ गढेमें बैठकर जल जाना ३ खोखरे पीपलमें बैठ कर जल जाना ४ मनुष्य ५ हीरा.

अलेखैं[1] ॥ कल्पवृक्ष संकल्प कर । कमलों[2] सहित सु दीजिये ॥ रज्जब नाम आधार बिन । दान असंख्य न सीझिये ॥ ३ ॥

अंग २१ कवित्त ७६ ।

अथ साच चाँनकका[3] अंग।

लेहिं अमावस दान । ग्रहण थावरको मागहिं ॥ तजहिन सती अरु ऊँत। मृतक मुख मिसँर न खांगहि॥सूतक पातक लेहिं। पेखि पिरोजन सु करावहिं ॥ जुथलेहैं लखि लगन । देवदिन जीव मरावहिं ॥ करम अशौच[4] उच्छिष्ट लहि । शंका शोच न ब्राह्मणहु ॥ रज्जब आए पापसिर । तोल माप नाहिं न मणहु ॥ १ ॥ पलक सु काढै घडी । घडी काढै पहरोंतहि॥पहर दूर दिन करहिं । दिवस टारै मासों महिं ॥ वारहिपून्यूं वर्ष । करैं सो तेरह मासा ॥ द्वादश सूर्य चन्द्र । कहैं यहुबडा तमासा ॥ पलक घडी अरु पहर दिन । मास वर्ष सरकै कवै ॥ रज्जब विप्रसु बाल बुद्धि । फिरत फिरत देखै सबै ॥ २ ॥ परशु राम भरमाय । मही मुँ बार सु लीन्ही ॥ पुनि दूजे अवतार । देख उर लात सु दीन्हीं ॥ विप्ररूप वपुधारि । उठे वलिसों नहीं थोरे ॥ देखडरे द्विजरूप । करणके दांतसु तोरे ॥ प्रहलाद पिंड पाडे सु परि । पूतबाप विच क्या धरी ॥ हरिचन्द्र हेरि रज्जब रहसि । ब्रह्मवंश संगति करी ॥ ३ ॥

अंग ३२ कवित्त ७९ ।

अथ कुसंगतिका अंग ।

राहुकेतु शशि सूर्य । नूरकी ठोर उठाई ॥ रावण संग समुद्र । शीशपर पाज वंधाई ॥ वंशवनी पापिष्ट । नावपर करगस तीरं ॥ गंगोदक मद मिलित । क्षारमद भंजन क्षीरं ॥ तीर्थगए समुद्र मिलि । दूधदेखि कांजीपरे ॥ रज्जब अज्जबता गई । एक कुसंगतिके करे ॥ १ ॥

१ गुप्त २ लक्ष्मी ३ चाबुक ४ वंश नष्ट जाना ५ मरे हुएके मुंहमेंसे सोना निकालै ६ अपवित्र कर्म ७ तीनवार.

अंग ३३ कवित्त ८१ । अथ झूठणका अंग ।

मनसात मैल मंडाण । गैल मल थूल सु मूलं॥ जल थल मल होइ किरखि । मलहि क्षित खात सु धूलं ॥ मल मिष्टान्न सु मेल । मलहि सांभर सुत सीरं॥ मलसुख लेहिं अफीम । मैल मल श्रुगतैं बीरं ॥ घृत हींग केहा कौन मद । सूपं चालणी शोधिये ॥ रज्जब लीजै मेदमधु । क्या आचार प्रमोधिये ॥ १ ॥

अंग ३४ कवित्त ८१ ।

अथ अपलक्षण अपराधका अंग ।

शारंग स्वँर सु विनाश । मीनरसना रस आशा ॥ पावक देख पतंग । भँवर नाशक विधि वासा ॥ पटसैल वारुंण वाघ । सुग्धँ मति मरकट सूआ ॥ मूष चुरावत वाति । पगंग पार्वक जर मूआ ॥ श्वान मीच दर्पण महल । मकँरी मूंदैं द्वारकों ॥ रज्जब मरै संधोरै वग । पाया नहीं विचारकों॥ १ ॥

अंग३४कवित्त८१ । अथ असाध्य रोगका अंग ।

वांझ न होवे बाल । कहा ऊषरके बाहे॥ अन्नकण चढैन हाथ । देखकूंकेसके गाहे॥ चन्दन विधै न वंशै । अंध अंजन क्या होई॥ वहरे आगे बात । बहुत कर देखो कोई ॥ असाध्य रोग औषधि नहीं । गाझाँ ज्ञानहीं क्या करै ॥ श्याम ऊन शंख न रंगहिं । रज्जब क्यूं गुरुपचि मरै॥१॥सांभर सरगिर हेम । बाग तरवर नहीं जामहीं ॥ मीन माँगे खगपंथ । व्याल थलै पोलनतामहिं॥कच्छप गेंडा वान । छिंदैनहिं चक्रसु पींडा॥मेल सहस्र एकमार।वार दूरसै नहीं छींडा॥हनुमंतै हाक हारी त्रिया । गोली गुमठसु गिरपरै ॥ अस्याध्यरोग औषधि बिना । रज्जब वैद्य सु क्याकरै ॥ २ ॥

१ खात वगैरा २ छाज ३ मृग ४(स्वरगना)५हाथी पकडनेका गढा ६ हाथी ७ मूर्ख ८ अग्नि ९ कुत्ता१०मकडी ११ नारियल–बुगला नारियलसे लगकर जाता है. १२ तूतडा १३ वांस चन्दनकी सुगंधिको ग्रहण नहीं करता है. १४ अंधा बधिर गूंगा लंगडा इन सब अवगुणवालोंको गांझा कहते हैं. १५ रास्ता १६ पोल १७ कुंभारके चाकपर पींडा नहीं वेधा जाता है गोळीया तीरसे १८ हनुमानजीके हाक करनेसे संगलद्वीपमें पुरुष हिजडे हो जाते हैं परन्तु स्त्री नहीं होती हैं.

अंग ३६ कवित्त ८४ ।

अथ क्रोधका अंग ।

तामस ताँखा होत । अचल उर रह सु आगी ॥ रावणै रतमत रोष । चिता पावक रहै लागी ॥ समुद्रजीव किस ठोर । चकोर आहार अंगारे ॥ शैलँसुदामा होय । प्राण पाहण हंकारे ॥ वैर रूप बपुँ वंशधर । आप जारि जारै सुतैर ॥ जन रज्जब जुगजुग दुखी । प्राणसु पैठै क्रोधघर ॥ १ ॥ राहु केतु शशि सूर । ग्रहण गति दोष विचारै ॥ रामानुँज पतिशीर्त । वैर विधि बानन मारै ॥ कंसासुर अटबीज । परै कांसन पर टूटी ॥ होरी हित प्रहलाद । बरी बारन नहिं छूटी ॥ देखो हजरत दलैंदाशि । पाहन बदला दीजिये ॥ जन रज्जब यहु साख सुन । वैर न काहूकीजिये ॥ २ ॥

अथ जरणाका अंग ।

सरिताँ समुद्र समाव । वारि वडवानलै जारै ॥ चोरासीके चरण । धमसु धरणी सिर धारै ॥ लाँत गातसइ विष्णु । क्षमा खलु कैसी हढाई ॥ गत उरमें अहंकार । जासुके हिरदै आई ॥ साधु श्रवण शत शून्यँसम । कुवचनसु छलबल नाचलै ॥ क्रोध काष्ठ नाशत जहां । कहो रज्जब तहां क्या चलै ॥ १ ॥

१ सर्प २ रावण की मरण तिथि को रावणका श्मशान सालभर में एक दफा प्रज्व-लित होता है ३ अग्निकीट ४ अहंकारी पुरुष मरकर पहाडका पत्थर बनता है ५ शरीर ६ दूसरा ७ लक्ष्मणजी रामानुज अवतार हुए मेघनाद काबुलमें पठान के घर जन्म लेकर रामानुज के बाण मारा ८ रामको कृष्णावतार में बालीने भील होकर तीर मारा ९ मुहम्मद साहिबने पत्थर को गरम करके अपना फोडा सेका था तो इस पर पत्थर ने बदला लिया तो हजरत मुहम्मद के दांत उसही पत्थर की टक्कर से टूटे—यह सोचकर किसी से वैर नहीं करना चाहिए. वैर करेगा तो बदला जरूर भरना होगा. १० नदी ११ दावाग्नि १२ चोरासी योनियोंके चरण पृथ्वी सिरपर धारण करती है, ऐसी क्षमा होनी चाहिए १३ भृगु महर्षि ने विष्णु भगवान की छातीमें लात मारी तथापि विष्णुने कहा कि आप के चोट तो नहीं आगई है'' इससे भृगुजी लज्जित हुए ऐसी क्षमा प्रशंसनीय होती है. १४ सैंकडों आकाशोंकी तरह.

अंग ३८ कवित्त ८७ ।　परम जरणा दुष्टदातारका अंग ।

शैलै¹ सीपै² पौरखैं³ सु वैर । यों वित्तसु दीया॥ईख मिठाई पान । कष्ट रसरंग सु कीया॥ वैरागरैंकी खानि । त्रास तरवर फलदाता॥ रसना दन्त न वैर । क्षीरैं सरवै सुतमाता ॥ बावन कुठार पारस घनहि । निधि दधि मैणारंभ करि ॥ रज्जब औषधि अन्न ज्यूं । करहिं आप उपकार मरि ॥ १ ॥

अंग ३९ कवित्त ८८ । अथमूलविस्तारका अंग ।

कुलाॅल पात्र तरुपत्र । जलही जलचर सब होई ॥ बादल निपजै बूंद । वात विगती नाहिं गोई ॥ चित्र चितेरे माहिं । खाॅनि निपजै सब नानै ॥ त्यूं साधु शब्द हरिजीव । होई सब नाहि न छानैं।उजास अमीनित्य सूर शशि । किएन करतहुको करै॥ अब यापै उल्टी कहै । जन रज्जब तासूं डरै ॥ इति ॥

इतिश्री महर्षि श्रीदादूरामजीके सुयोग्य शिष्य योगीराज श्रीस्वामी रज्जबजी महाराजकी बाणी तथा श्रीरज्जबजी कृत कवित्त सम्पूर्णम् ॥ २१ ॥ ग्रन्थ संख्या ॥ १३ ॥ अंगसंख्या ॥ ॥ १९४ ॥ साखी संख्या ॥ ५४२८ ॥ पद संख्या ॥ २१८ ॥ कवित्त सवैये भेटके संख्या ॥ १५० ॥ अरिल्ल संख्या ॥ ८३ ॥ कवित्त संक्षिप्त टिप्पणी सहित ॥ संख्या ॥ ८९ ॥

समग्र ग्रन्थोंका जोड (१०,०१३)

कवित्तोंकी टि०क०महा०श्रीरामदासजी दूबल धनियां मंडलीश्वर। आपका विनीत-संशोधक पं०कृपाराम:साधु:वैद्यभिवानी निवासी। विनीत—परिश्रम कर्ता शेखावाटी प्रान्तस्थः ।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

१ पहाडको दुष्टने दुष्टता करके खोदा किन्तु सहनशील पर्वतने पदार्थ अर्पण किए २सीपको दुष्टने मारा किन्तु सीप ने क्रोध न करके मोती दिया. ३ पौरस मनुष्याकार एक देव पदार्थ होता है उसके हाथ पैर काटनेसे कटे हुए हाथ पैर सोनेके हो जाते हैं दुष्ट के दुष्टता करने परभी धन्य है पौरस जिसने वित्त दिया. ऐसेही सब दृष्टान्त जानो४हीरा५दूध ६मथन करना७कुम्हार८खानिमें अनेक प्रकारकी वस्तुऐं उत्पन्न होती हैं सुवर्ण ताम्र इत्यादि.

विशेष सूचना ।

॥ दोहा ॥

इस ग्रंथ संसारमें । देवतरू यहपद्य ॥ पढ़ैं सुनैं ते नर लहैं सुख शान्ति सुलभ्य । विनीत परिश्रम कर्ता

[शेखावाटी प्रांतस्थः]

विशेष निवेदन यह पुस्तकें साधु महात्मा तथा सज्जन गृहस्थोंको बिना किसी प्रकारका मूल्य लिये दी जावेंगी ।

पुस्तक मिलनेका पता।

श्रीदादूजीका मन्दिर और दादू वैश्यसमाज

मु० नारनौल, रियासत (पटियाला)

विशेष सूचना—इस पुस्तक की द्वितीयावृत्ति शीघ्रही छपने वाली है द्वितीयावृत्ति मूल्य लेकर दी जावगी और इसके बिक्री से जो द्रव्य संचित होगा वह द्रव्य नारनौल निवासी दादूओंकी इच्छानुसार हरिद्वार कनखल (जि० सहारनपुर) की श्रीदादू पाठशालामें अथवा नराना फुलेरा जंक्शन के पास के मेले में सन्त सेवामें खर्च किया जावगा । द्वितीयावृत्ति भी आपलोगों को पूर्वोक्त पतेपर मिलेगी छपते ही सूचना दे दी जावगी ।

नोट—इस पुस्तक को पुनः छपाने व प्रकाशित करनेका सर्वाधिकार श्रीदादूसमाज के अतिरिक्त किसी को नहीं है ।

आपका कृपाकांक्षी—

विनीत परिश्रम कर्ता (शेखावाटी प्रांतस्थः)

परिश्रम कर्ताकी आज्ञानुसार-आपका दासानुदास-लेखक

पं० कृपारामः साधुः (भिवानी नगरस्थः)